
Class No.....

[illegible]

सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

६८

(१५ अक्टूबर, १९३८-से २८ फरवरी, १९३९)

सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

६८

(१५ अक्टूबर, १९३८ से २८ फरवरी, १९३९)



प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

नवम्बर, १९७७ (कार्तिक, १८९९)

© नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, १९७७

साढ़े सात रुपये

कापीराइट

नवजीवन ट्रस्टकी सौजन्यपूर्ण अनुमतिसे

निदेशक, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली - १ द्वारा प्रकाशित
और शान्तिलाल हरजीवन शाह, नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद-३८००१४ द्वारा मुद्रित

भूमिका

प्रस्तुत खण्डमें १५ अक्टूबर, १९३८ से २८ फरवरी, १९३९ तककी सामग्रीका समावेश है। जिन दिनोंकी सामग्रीसे खण्डकी शुरुआत होती है, उन दिनों गांधीजी उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्तमें थे। वहाँ गांधीजी ६ अक्टूबरको गये थे और अब्दुल गफ्फार खाँके अतिथिके रूपमें ९ नवम्बर तक रहे। यह प्रवास गांधीजीको सुखद प्रतीत हुआ, क्योंकि उस जगहकी आबहवा बहुत अच्छी थी और वर्णनातीत शान्तिका वातावरण था (पृ० २४)। उस प्रान्तमें वे बहुत ज्यादा घूमे-फिरे और इस दौरान खुदाई खिदमतगारों तथा स्थानीय लोगोंसे मिले-जुले तथा उनके साथ बातचीत की। सीमा पारसे वजीरी कबायलियों द्वारा हिन्दुओंपर नित हमले किये जा रहे थे, इसलिए गांधीजी ने यह स्वीकार किया कि हिन्दुओंको आत्मरक्षाका पूरा अधिकार है। उन्होंने कहा: “आपको अपने बीच सहयोगकी भावना पैदा करनी चाहिए। कायरता का आचरण तो आप किसी भी हालतमें न करें। . . . मैं भारतमें एक भी कायर आदमी नहीं देखना चाहता।” लेकिन उन्होंने अहिंसाके मार्ग — अर्थात् एकपक्षीय प्यारके सक्रिय व्यवहार — के रूपमें आत्मरक्षाका एक बेहतर विकल्प सुझाया। “आप व्यापारी जातिके लोग हैं। अपने व्यापारमें से आप संसारकी सर्वोच्च और सर्वाधिक मूल्यवान वस्तु — अर्थात् प्रेम — को अलग न करें। आप कबायली लोगों पर जितना प्रेम बरसा सकें, बरसायें। फिर आप देखिएगा कि बदलेमें आपको भी वैसा ही प्रेम मिल रहा है” (पृ० ६३)। यद्यपि डॉ० खान साहबके नेतृत्वमें बने कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलका पुलिसपर कोई प्रभावकारी नियन्त्रण नहीं था, सेनापर तो बिल्कुल ही नहीं था, फिर भी उन्हें आशा थी कि वे एक ऐसी योजना तैयार कर देंगे जिसके अन्तर्गत खुदाई खिदमतगार अपनी अहिंसाकी “खुशबू” से कबायलियों तकको प्रभावित कर लेंगे और शायद उसीमें से सरहदके सवालका कोई स्थायी हल निकल आयेगा।

खुदाई खिदमतगारोंके साथ बातचीतमें उन्होंने अहिंसा और सेवापर बल दिया। “संकल्प-शक्तिके धनी और अपने उद्देश्यकी सचाईमें अपरिमित श्रद्धा रखनेवाले उत्साही लोगोंका एक छोटा-सा दल भी इतिहासकी धाराको बदल सकता है। ऐसा पहले भी हो चुका है और यदि खुदाई खिदमतगारोंकी अहिंसा केवल बाहरी चमक-दमकवाली चीज नहीं, बल्कि कुन्दनके समान शुद्ध और सच्ची है तो ऐसा फिर हो सकता है” (पृ० ९०)। ईश्वरके सच्चे सेवक बननेके लिए खुदाई खिदमतगारोंको अहिंसामें जीवन्त आस्था रखनी होगी, क्योंकि “हम जिस हद तक अहिंसाको अपना लेंगे उस हद तक हम ईश्वर जैसे होंगे। . . . अहिंसाका असर रेडियम-जैसा है। . . . सच्ची अहिंसाका छोटा-सा अंश भी चुपचाप, सूक्ष्म और अदृश्य रूपसे

अपना काम करके समूचे समाजका रूपान्तर कर देता है” (पृ० ३२)। खुदाई खिदमतगार ईश्वरकी सेवा किस भाँति कर सकते हैं? गांधीजीने कहा कि ईश्वरकी सेवा ईश्वरके बन्दोंकी सेवाके जरिये ही हो सकती है। “बेरोजगार लोगोंको रोजगार मुहैया करना, रोगियोंकी सेवा-शुश्रूषा करना, लोगोंकी गन्दगीकी आदतोंको छुड़वाकर सफाई-स्वच्छतासे रहनेकी शिक्षा देना खुदाई खिदमतगारका काम होना चाहिए” (पृ० ४६)। “कारण, ईश्वरको तो व्यक्तिगत सेवाकी न कोई जरूरत है और न वह किसीसे ऐसी सेवा लेता है। वह अपनी सृष्टिके प्राणियोंकी सेवा तो करता है, लेकिन बदलेमें उनसे अपने लिए कोई सेवा नहीं लेता। . . . इसलिए जो खुदाका खिदमतगार है वह उसकी सृष्टिके प्राणियोंकी सेवा करके ही अपनेको उसका खिदमतगार साबित कर सकता है” (पृ० १३०)।

लेकिन जहाँ गांधीजीने खुदाई खिदमतगारों और आम लोगोंको अहिंसासे प्राप्य शक्तिको अपनेमें विकसित करने तथा उसीके सहारे हमलोंके खतरेका मुकाबला करनेकी प्रेरणा दी, वहाँ लगातार हो रहे हमलोंके लिए उन्होंने ब्रिटिश शासन द्वारा अपनाई गई नीतिको पूरी तरह जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा: “ये हमले होते रहते हैं, यह बात मेरी दृष्टिमें भारतके इस हिस्सेमें ब्रिटिश शासनकी विफलताकी द्योतक है। उसकी सीमा-नीतिके कारण देशके हजारों लोगोंको प्राण गँवाने पड़े हैं और भारतको करोड़ों रुपयेका नुकसान हुआ है . . . प्रान्तके अधिकांश हिस्सोंमें जान-माल सुरक्षित नहीं है” (पृ० ६१-२)।

इस खण्डमें यह भी देखनेको मिलता है कि उत्तरदायी सरकारकी स्थापनाके लिए देशी राज्योंकी जनता द्वारा किया जा रहा संघर्ष किस कदर जोर पकड़ रहा था। गांधीजीकी रायमें इस जागृतिको लानेमें सबसे बड़ा हाथ समयकी माँगका था न कि कांग्रेसके प्रभावका, इसलिए उन्होंने राजा-महाराजाओं तथा उनके सलाहकारोंसे कहा कि वे जनताकी माँगको उचित मान लें। उन्होंने आगे कहा: “दो ही रास्ते हैं। या तो रियासतोंके अस्तित्वका ही अन्त हो जाये और या फिर राजा-महाराजा जनता को ही शासन व्यवस्थाकी जिम्मेदारी सौंप दें और स्वयं जनताकी ओरसे न्यासी बनकर शासन चलायें और इसके लिए मुनासिब मेहनताना कमायें . . . और यदि राजा-महाराजा यह विश्वास रखें कि जनताके कल्याणमें उनका अपना कल्याण भी है, तो वे कृतज्ञभावसे कांग्रेसकी सहायता माँगेंगे और स्वीकारेंगे” (पृ० १६८-७०)। उन्होंने राजाओंको यह भी स्मरण दिलाया कि “अगर वे सच्चे हैं और उनकी प्रजा वस्तुतः उनके साथ है, तो उन्हें रेजिडेंटोंसे डरनेकी कोई जरूरत नहीं है। निस्सन्देह उन्हें यह महसूस करना चाहिए कि सर्वोच्च सत्ता न तो शिमलामें है, न व्हाइट हॉलमें, उसका निवास तो उनकी प्रजामें ही है” (पृ० ३०३)।

त्रावणकोर, राजकोट, जयपुर, हैदराबाद तथा उड़ीसाकी कुछ रियासतोंमें जन-जागृतिकी यह लहर विशेष रूपसे सक्रिय थी। अपनी प्रजामें व्याप्त जागृतिका स्वागत करने तथा राज्यके शासनमें उसे हाथ बैटानेके लिए कहनेके बजाय, राजाओंने हर जगह उसे कुचलनेका प्रयास किया। और तो और, सर्वोपरि सरकारकी ओरसे उन्हें

ऐसा करनेका बड़ावा भी दिया गया। इसलिए अंग्रेज पोलिटिकल एजेंटकी हत्याके बाद गांधीजीने अनुभव किया कि उड़ीसाकी एक छोटी-सी रियासत, रणपुरमें “भयानक वीरानी” छा गई है। उन्होंने आगे बताया : “निर्दोष और दोषी सभी भाग-भागकर इधर-उधर छिप रहे हैं। दमनसे बचनेके लिए वे घर-बार छोड़-छोड़कर गाँवोंको वीरान करते जा रहे हैं। . . . किसी-न-किसी रूपमें वहाँ आतंक फैलाया जा रहा है, और सारे हिन्दुस्तानको लाचार होकर यह सब देखना पड़ रहा है” (पृ० ३३४)।

लीम्बड़ी, राजकोट, ढेंकनाल एकके बाद दूसरे राज्यमें “सर्वोपरि सरकार द्वारा भेजी गई पुलिसकी छत्रच्छायामें” राज्यके लठैतों द्वारा अमानवीय क्रूरताके बरतावकी कहानी दुहराई गई (पृ० १६९)। यहाँ तक कि एक अवसर पर पुलिसने गोली भी चलाई जिसमें अनेक लोग मारे गये। तलचरकी कुल ७५,००० की आबादीमें से कमसे-कम २६,००० लोगोंको तलचर छोड़ना पड़ा और ब्रिटिश उड़ीसामें शरण लेनी पड़ी।

राजकोटमें उत्तरदायी सरकारके लिए चल रहे आन्दोलनका मार्गदर्शन वल्लभभाई पटेल कर रहे थे। वहाँ पर ठाकुर साहबके साथ एक समझौता हुआ था जिसे ठाकुर साहबने भंग कर दिया। लोगोंको कैद करना, जेलमें कैदियोंका सताया जाना तथा रीजेन्सी पुलिसकी “सुसंगठित गुण्डागर्दी” (पृ० ४०५) यह सब राजकोटमें चलता रहा। कस्तूरबाको यह व्यक्तिगत आह्वान-सा लगा और वह सत्याग्रहमें शरीक हो गई। गांधीजीने लिखा कि जिस सत्याग्रहमें इतने तमाम विश्वसनीय साथी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया हो, उससे कस्तूरबा कोई ताल्लुक न रखे, यह कैसे हो सकता था? “सत्याग्रहकी लड़ाई एक ऐसी लड़ाई है, जिसमें अगर दिल मजबूत हो तो, वृद्ध-से-वृद्ध और कमजोरसे-कमजोर शरीरवाला भी हिस्सा ले सकता है” (पृ० ४२८)। दमन-चक्र पूर्ववत् चलता रहा, अतएव “शान्तिके संदेशवाहकके रूपमें” राजकोट जाना स्वयं गांधीजीको आवश्यक लगा। गांधीजी यह उम्मीद कर रहे थे कि “कोई सम्मानजनक समझौता हो जायेगा” (पृ० ५१८)। परन्तु शीघ्र ही उनकी यह आशा दुराशा मात्र ही साबित हुई। यहीं पर इस खण्डकी समाप्ति होती है।

त्रावणकोरमें व्यवस्थित रूपसे तथा बेरहमीके साथ दमन हुआ। वहाँपर बड़े पैमानेपर गिरफ्तारियाँ हुई, अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलीं, लोगोंकी सम्पत्ति जब्त की गई तथा समाचारपत्रों पर प्रतिबन्ध लगाया गया। गांधीजीने राज्यके कांग्रेसी नेताओंको सलाह दी कि वे उत्तरदायी सरकारकी माँग पर ही अपना सारा ध्यान लगायें। इस पर वहाँके ईसाइयोंने उनपर यह आरोप लगाया कि वे हिन्दू दीवानके साथ पक्षपात कर रहे हैं। गांधीजीने कहा : “मेरा अन्तःकरण बिलकुल साफ है। . . . उत्तरदायी सरकारके लिए चल रहे संघर्षको दीवानके खिलाफ आरोपोंसे जोड़ा जाये, मैं इस बातके विरुद्ध रहा हूँ। . . . यदि उनका जोर उत्तरदायी सरकार पर है, तो इन आरोपोंको लेकर कोई कार्रवाई करनेका कोई अर्थ नहीं है। इससे देशका ध्यान बँटेगा . . .” (पृ० ३१८)। इस खण्डकी पूर्वोक्त अवधि तक गांधीजीके सुझावपर इस राज्यमें

सत्याग्रह बन्द रहा। जयपुरमें प्रजामण्डल पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। गांधीजी ने वाइसरायको लिखा : “क्या कोई रियासत भाषण, सभाओं और इसी तरहकी अन्य स्वतन्त्रताओंका दमन कर सकती है, और इसके बावजूद वह सर्वोपरि सरकारसे यह अपेक्षा रख सकती है कि यदि उसकी प्रजा अपनी स्वाभाविक स्वतन्त्रताके लिए, जिसका कि किसी भी अच्छे समाजमें हर मानवप्राणीको अधिकार होता है, अहिंसा-त्मक संघर्ष करे तो उसके दमनमें वह उसकी सहायता करेगी ? ” (पृ० ३६६)।

जहाँ आम तौरपर सभी रियासतोंमें जनआन्दोलन दबाया जा रहा था, वहाँ कुछ प्रबुद्ध नरेश ऐसे भी थे जो प्रजाकी न्यायसंगत आकांक्षाओंको माननेसे पीछे नहीं हटे। रामदुर्ग, जामखंडी, मीरज तथा औंधके लोगोंको अपने-अपने नरेशोंसे अनेक सुविधाएँ प्राप्त हुईं। इन रियासतोंमें गांधीजीने प्रजाके संगठनोंसे अपनी माँगें रखते समय संयमसे काम लेनेको कहा। मताधिकारके लिए औंधके संविधानमें प्रस्तावित अक्षरज्ञानकी योग्यता पर टिप्पणी करते हुए गांधीजीने कहा कि मत एक खास अधिकार माना जाना चाहिए और इस कारण उसके लिए कुछ योग्यता भी आवश्यक समझी जानी चाहिए और मताधिकारकी इस शर्तसे अक्षर ज्ञानके प्रसारमें मदद भी मिलेगी (पृ० ३२३)। जब यह खबर लगी कि रामदुर्ग प्रजा संघकी ओरसे “राजा को आतंकित करके और ज्यादा छूट देनेके लिए विवश” (पृ० ५०६) करनेका प्रयास किया जा रहा है तो गांधीजीने इसका समर्थन नहीं किया। उन्होंने कहा : “यह हो सकता है कि उसकी माँग अपने-आपमें ठीक हो। परन्तु . . . वे अपनी माँगको हुल्लड़बाजीसे और डरा-धमकाकर नहीं लाद सकते। कर्नाटकके प्रतिनिधि कांग्रेसजनों को चाहिए कि रामदुर्गके राजाका साथ दें और उनका प्रयत्न होना चाहिए कि वहाँ के लोग समझौतेका पालन करें, भले ही इस कोशिशमें लोगोंके साथ उनका संघर्ष हो और उसमें उनकी जान ही क्यों न चली जाये” (पृ० ५०६)।

इस अवधिमें कृषि तथा औद्योगिक क्षेत्रोंमें संघर्ष और अधिक तीव्र हो गया था। हड़ताल, तालाबन्दी, किसानोंका कूच और प्रदर्शन, यह सब आम बात हो गई थी। बात यहाँ तक बढ़ गई थी कि इन आन्दोलनोंका नेतृत्व भी प्रायः कांग्रेसजन ही कर रहे थे। हिंसाका वातावरण तैयार हो गया था। गांधीजीने लिखा : “. . . बिहारके मंत्रियोंको किसानोंके विद्रोह तथा प्रदर्शनका सदा भय बना रहता है। अभी दो दिन पहलेकी बात है जब खानदेशसे एक सुप्रसिद्ध कांग्रेसी कार्यकर्ताके नेतृत्वमें कलेक्टरके बंगलेपर किसानोंके प्रस्तावित कूचकी तार द्वारा खबर मिली थी” (पृ० ३५६)। इसमें गांधीजीको आन्तरिक ह्रास होता दीख पड़ा और उन्होंने चेतावनी दी : “इस समय कांग्रेसकी जो हालत है उसमें मुझे देशके अन्दर अराजकता और सर्वनाश फैलनेके सिवा और कुछ होता नजर नहीं आता। क्या त्रिपुरीमें हम इस कठोर सत्यका सामना करेंगे ? ” (पृ० ३५७)

लेकिन गांधीजी जैसा चाहते थे, बिल्कुल वैसा हुआ नहीं, और सुमाष बोसके अध्यक्ष चुने जानेके बाद कांग्रेसका नेतृत्व ऐसे लोगोंके हाथमें आ गया जो पूरी तरह से “उन सिद्धान्तों और उस नीतिको स्वीकार” नहीं करते थे जिनका कि गांधीजी

प्रतिपादन करते थे। गांधीजी इस हारसे “खुश” थे और उन्होंने “अल्पसंख्यक” वर्गको कांग्रेसके वास्तविक कार्यमें लग जानेको कहा। वह कार्य था रचनात्मक कार्यक्रम जिसके मूलमें थी खादी। जवाहरलाल नेहरूने खादीको हमारी “आजादीकी बर्दी” कहा था और गांधीजीने कहा: “मेरे लिए तो खादी पहनना आजादीका बाना धारण करना है। . . . स्वतन्त्रता किसी भी कीमतपर महँगी नहीं है। वह तो जीवन का प्राण है। अपनी जिन्दगीके लिए कोई कौन-सा खर्च करनेको तैयार न होगा?” खादी उन लाखों आदमियोंको “सम्मानपूर्ण धन्धा” भी देती है जो सालके लगभग चार महीने बेकार रहते हैं। “. . . लाखों आदमी अगर मजबूरन बेकार रहें तो आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक दृष्टिसे वे जरूर मुर्दा बन जायेंगे” (पृ० १९२-३)। पुनः उन्होंने कहा: “जो भूखे और बेकार हैं उन्हें भगवान केवल एक ही विभूतिके रूपमें दर्शन देनेकी हिम्मत कर सकते हैं; यह विभूति है काम और अन्न के रूपमें वेतनका आश्वासन” (पृ० ४९६)। रचनात्मक कार्यक्रम एक स्थायी मूल्यका साधन था, जबकि सविनय अवज्ञाकी अपनी मर्यादाएँ थीं और “. . . अवसरकी माँग पर उसे स्थगित करनेकी जरूरत” (पृ० २२२) पड़ सकती थी। रचनात्मक कार्य स्वराज्य आन्दोलनका “स्थायी पहलू” था, सविनय अवज्ञा प्रतिकारात्मक पहलू था और इसीलिए स्वभावतः अस्थायी था। सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित किये जानेसे रचनात्मक कार्यका महत्व दुगुना हो गया (पृ० २६९)।

ईसाई मिशनरियोंको आश्चर्य करते हुए उन्होंने राय व्यक्त की कि अहिंसा किसी भी रूपमें निष्क्रिय नहीं है, वह तो वास्तवमें “विश्वकी सबसे सक्रिय शक्ति है” (पृ० २२३)। पुनः उन्होंने लॉर्ड लोथियनसे कहा: “जब तक अहिंसाको खाली नीतिके बजाय एक जीवित शक्ति, एक अलंघ्य सिद्धान्तके रूपमें स्वीकार नहीं किया जायेगा . . . वैधानिक या लोकतन्त्रीय शासन एक दूरका स्वप्न ही रहेगा” (पृ० ४३१-२)।

चीनमें जापान द्वारा की जा रही लूटखसोट और जर्मनीमें यहूदियोंपर किये जा रहे अत्याचारपर भी गांधीजी चिन्ता व्यक्त करते रहे। लेकिन, यहूदियोंके प्रति प्रशंसाका भाव तथा सहानुभूति रखते हुए भी, गांधीजी न्यायके तकाजेकी ओरसे अपनी “आँखें बन्द” नहीं कर सके। उन्होंने कहा: “यहूदियोंके लिए एक अलग देशकी माँग मुझे कोई खास नहीं जँचती। . . . संसारकी अन्य अनेक जातियोंकी तरह वे भी उसी देशको अपना देश और अपना घर क्यों नहीं बना लेते जहाँ उनका जन्म हुआ और जहाँ वे जीविकोपार्जन करते हैं? . . . फिलिस्तीन अरबोंका है — ठीक उसी तरह जिस तरह इंग्लैंड अंग्रेजोंका और फ्रांस फ्रांसीसियोंका है। यहूदियोंको अरबोंके सिर थोपना गलत और अमानवीय कार्य है। . . . यहूदियोंके वतनके रूपमें फिलिस्तीन उन्हें पूर्णतः या अंशतः वापस मिल जाये, इसके लिए स्वाभिमानी अरबोंको तबाह करना निश्चय ही मानवताके विरुद्ध अपराध होगा” (पृ० १५३)

नाजी अत्याचारका मुकाबला करनेके लिए उन्होंने यहूदियोंको अहिंसाका सहारा लेनेकी सलाह दी। उन्होंने कहा: “मेरा निश्चित विश्वास है कि यदि उनमें से कोई

साहसी और सही दृष्टिवाला आदमी उन्हें अहिंसक संघर्षमें नेतृत्व प्रदान करनेके लिए आगे आ जाये तो उनकी निराशाके शिशिरको क्षण-भरमें आशाके वसन्तमें परिवर्तित किया जा सकता है” (पृ० १५६)। अहिंसक लोग भय नहीं जानते और तानाशाहके आगे न तो झुकेंगे, न उसके सामने नाक रगड़ेंगे और न ही उसके प्रति अपने मनमें कोई दुर्भाव रखेंगे; उनको तो उसपर दया आयेगी (पृ० २७८)। जो आलोचक यह दलील दे रहे थे कि ऐसी अहिंसा सिर्फ थोड़े-से अत्यन्त विकसित व्यक्तियोंके लिए ही साध्य है, उनको गांधीजीने जवाब देते हुए कहा: “उपयुक्त प्रशिक्षण और नेतृत्व मिलनेपर सर्वसाधारण भी अहिंसाका पालन कर सकते हैं” (पृ० २१२)। इसी तरह उन्होंने चीनवासियोंको सुझाव दिया कि यद्यपि उन्हें जापानियोंके आक्रमणका सामना करना चाहिए, तथापि आक्रमणकारियोंसे घृणा करनेकी बजाय प्यार करना चाहिए। उन्होंने कहा: “इतना ही काफी नहीं है कि उनके गुणोंका स्मरण करके उन्हें प्यार किया जाये” (पृ० २९७)। गांधीजीको विश्वास हो गया था कि विश्वकी समस्याओंका समाधान सिर्फ प्रेम और अहिंसाके द्वारा ही हो सकता है। यह “हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय जीवनका नियम है” (पृ० ४३१)। गांधीजीने समझ लिया कि अभी तो हिंसा का ही सर्वत्र बोलबाला है। लेकिन इससे वे हतोत्साह नहीं थे, क्योंकि “अन्धकार जितना ही अभेद्य होता है”, उनका विश्वास उतना ही प्रखर होता है (पृ० ४३२)।

गांधीजीको यकीन था कि अहिंसाकी राह विश्व केवल तभी अपनायेगा जब भारत इस गुणका ठीक विकास कर लेगा, लेकिन उन्होंने बड़ी विनम्रतासे यह समझा कि उनकी इस आशाकी पूर्तिके मार्गमें शायद खुद उनकी अपनी अशुद्धि ही मुख्य बाधा है। उन्होंने एक पत्रमें लिखा: “जैसा कि मुझे लगता है, मेरे शब्द अपनी शक्ति खो बैठे हैं . . .। फिर भी मैं श्रद्धापूर्वक आगे बढ़नेकी कोशिश कर रहा हूँ। अपने विचार, शब्द और कर्मके परिणामोंके प्रति मुझे अनासक्ति प्राप्त करनी है। सतत प्रयत्नके बावजूद मैं अपनी अशुद्धिसे छुटकारा नहीं पा रहा हूँ। परन्तु, इसी कारण, मैं कैसा हूँ, इसके बारेमें मैं अन्तिम रूपसे कोई निर्णय करने नहीं जा रहा हूँ और न अपनी प्रवृत्तियोंका त्याग ही करने जा रहा हूँ” (पृ० ५४-५)। “शुद्ध-देवजीकी-सी स्थितिपर पहुँचनेकी” उनमें बड़ी ललक थी (पृ० २७६)। अशुद्धिसे छुटकारा पानेका उनका मार्ग, मौन और प्रार्थनाका मार्ग था। इसका वे अधिक-से-अधिक सहारा लेने लगे। उन्होंने एक ईसाई मिशनरीको बताया: “आजकल शामको प्रतिदिन प्रार्थनाके समय मैं मौन धारण कर लेता हूँ और दो बजे मिलने आनेवालोंके लिए उसे तोड़ता हूँ। . . यह अब मेरे लिए शारीरिक और आत्मिक दोनों कारणों से आवश्यक हो गया है” (पृ० १९१)।

मशीन द्वारा बड़े पैमानेपर उत्पादनके सम्बन्धमें उनकी जो राय थी, वह भी उन्होंने स्पष्ट की। यह पूछे जानेपर कि क्या वे बड़े पैमानेके उत्पादनके खिलाफ हैं, उन्होंने कहा: “मैंने ऐसा कभी नहीं कहा। यह विश्वास तो उन गलतफहमियों

पर ही आधारित है जो उनके बारेमें फैली हुई हैं। . . . मैं तो उन चीजोंके बड़े पैमाने पर उत्पादनके खिलाफ हूँ जिन्हें गाँववाले बिना किसी कठिनाईके पैदा कर सकते हैं” (पृ० २८४)। इसी तरह “शहरोंका काम तो यह है कि गाँवोंमें जो-कुछ पैदा हो, उसका वे उपयुक्त रूपमें वितरण करें” (पृ० २८५)।

प्रार्थनाके बारेमें उन्होंने कहा : “प्रार्थना स्रष्टाके साथ सम्पर्क स्थापित करनेकी तीव्र आकांक्षा है। यह प्रयत्न बुद्धिके धरातलपर नहीं, हृदयके धरातलपर किया जाता है” (पृ० १११)। आध्यात्मिक क्षेत्रमें अपनी उपलब्धिके बारेमें गांधीजीकी धारणा बहुत ही विनम्र थी (पृ० ४४)। अपने एक प्रशंसकको एक पत्रमें उन्होंने लिखा : “मैं साधक हूँ, वे (रमण महर्षि और श्री अरविन्द) सिद्ध माने जाते हैं। शायद हैं भी।” वस्तुतः उन्होंने दावा किया कि जिसका ईश्वर मार्गदर्शन करता है उसे न तो कुछ सोचना चाहिए और न उसके लिए सोचना जरूरी ही है। वास्तवमें तो वह कुछ सोच ही नहीं सकता (पृ० ५१३)। इस विचार-शून्य स्थितिपर टिप्पणी करते हुए (पृ० ५४३) रमण महर्षि अन्तमें कहते हैं : “गांधीजीका सत्य केवल अहं है।” ईश्वर न तो हमारे विचारमें प्रकट होता है, न वाणीमें, वह हमारे सामने न तो सशरीर प्रकट होता है और न वह दिव्य-दर्शन ही देता है। वह तो, हम जो कार्य करते हैं, उसीमें प्रकट होता है। गांधीजीके इस विश्वासकी स्पष्ट अभिव्यक्ति जॉन मॉटके साथ हुई उनकी बातचीतके दौरान हुई (पृ० १९०)। मैरिसबर्ग रेलवे-स्टेशन पर हुए अपने रचनात्मक अनुभवकी चर्चा करते हुए गांधीजीने बताया : “मैंने यह अनुभव किया है और मैं विश्वास करता हूँ कि ईश्वर आपके आगे सशरीर कभी प्रकट नहीं होता। वह तो उस कार्यमें प्रकट होता है जो गहनतम अन्धकारमें भी आपकी मृत्तिका कारण हो सकता है।”

आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम निम्नलिखित संस्थाओं, व्यक्तियों, पुस्तकोंके प्रकाशकों तथा पत्र-पत्रिकाओंके आभारी हैं :

संस्थाएँ : गांधी स्मारक निधि और संग्रहालय, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली; साबरमती आश्रम संरक्षक तथा स्मारक न्यास और संग्रहालय, अहमदाबाद और आन्ध्र प्रदेश सरकार ।

व्यक्ति : श्री आनन्द तो० हिगोरानी, इलाहाबाद; श्रीमती एफ० मेरी बार, कोट्टागिरी; श्री एम० आर० मसानी, बम्बई; श्री कान्तिलाल गांधी, बम्बई; श्री गुलाम रसूल कुरेशी, अहमदाबाद; श्री घनश्यामदास बिड़ला, कलकत्ता; श्री जयराम-दास दौलतराम, नई दिल्ली; श्री डा. ह्याभाई म० पटेल, अहमदाबाद; श्री नारणदास गांधी, राजकोट; श्री पुरुषोत्तम के० जेराजाणी, बम्बई; श्रीमती प्रेमाबहन कंटक, सासवड़; श्रीमती मनुबहन सु० मशरूवाला, बम्बई; श्रीमती मीराबहन, आस्ट्रिया; श्रीमती लीलावती आसर, बम्बई; श्रीमती विजयाबहन एम० पंचोली, सणोसरा; श्री शान्तिकुमार न० मोरारजी, बम्बई; श्रीमती शारदाबहन गो० चोखावाला, सूरत; श्री सतीश द० कालेलकर, अहमदाबाद; सरदार पृथ्वीसिंह, लालरू, पंजाब और श्री सुरेशसिंह ।

पुस्तकें : 'इंस्टिट्यूट ऑफ गांधीजीज लाइफ', 'ए पिल्ग्रिमेज फॉर पीस', 'ए बंच ऑफ ओल्ड लेटर्स', 'टॉक्स विद श्री रमण महर्षि', 'पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद', 'बापुना पत्रो-४ : मणिबहेन पटेलने', 'बापुना पत्रो-२ : सरदार वल्लभभाईने', 'बापुना बाने पत्रो', 'बापुनी प्रसादी', 'बापूकी छायामें मेरी जीवनके सोलह वर्ष' १९३२-१९४८, (द) ब्रदरहुड ऑफ रिलिजन्स', 'मध्यप्रदेश और गांधीजी', और 'महात्मा : लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गांधी', खण्ड ६ ।

पत्र-पत्रिकाएँ : 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' (फरवरी, १९३८ से जनवरी, १९३९), 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 'बॉम्बे क्रॉनिकल', 'सर्वोदय', 'हरिजन', 'हरिजनबन्धु', 'हिन्दुस्तान टाइम्स' और 'हिन्दू' ।

अनुसन्धान और सन्दर्भ-सम्बन्धी सुविधाओंके लिए सूचना और प्रसारण मन्त्रालयके अनुसन्धान तथा सन्दर्भ विभाग, राष्ट्रीय अभिलेखागार और श्री प्यारेलाल नैयर, नई दिल्ली हमारे धन्यवादके पात्र हैं । प्रलेखोंकी फोटो-नकल तैयार करनेमें मदद देनेके लिए हम सूचना और प्रसारण मन्त्रालयके फोटो-विभाग, नई दिल्लीके आभारी हैं ।

पाठकोंको सूचना

हिन्दीकी जो सामग्री हमें गांधीजीके स्वाक्षरोंमें मिली है, उसे अविकल रूपमें दिया गया है। किन्तु दूसरों द्वारा सम्पादित उनके भाषण अथवा लेख आदिमें हिज्जोंकी स्पष्ट भूलें सुधार दी गई हैं।

अंग्रेजी और गुजरातीसे अनुवाद करते समय उसे यथासम्भव मूलके समीप रखनेका पूरा प्रयत्न किया गया है, किन्तु साथ ही भाषाको सुपाठ्य बनानेका भी पूरा ध्यान रखा गया है। जो अनुवाद हमें प्राप्त हो सके हैं, उनका हमने मूलसे मिलान और संशोधन करनेके बाद उपयोग किया है। नामोंको सामान्य उच्चारणके अनुसार ही लिखनेकी नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोंके उच्चारणमें संशय था, उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा गांधीजीने अपने गुजराती लेखोंमें लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठकोंमें दिये गये अंश सम्पादकीय हैं। गांधीजीने किसी लेख, भाषण आदिका जो अंश मूल रूपमें उद्धृत किया है, वह हाशिया छोड़कर गहरी स्याहीमें छापा गया है। लेकिन यदि ऐसा कोई अंश उन्होंने अनूदित करके दिया है तो उसका हिन्दी अनुवाद हाशिया छोड़कर साधारण टाइपमें छापा गया है। भाषणोंकी परोक्ष रिपोर्ट तथा वे शब्द जो गांधीजीके कहे हुए नहीं हैं, बिना हाशिया छोड़े गहरी स्याहीमें छापे गये हैं। भाषणों और भट की रिपोर्टोंके उन अंशोंमें जो गांधीजीके नहीं हैं, कुछ परिवर्तन किया गया है और कहीं-कहीं कुछ छोड़ भी दिया गया है।

शीर्षककी लेखन-तिथि दायें कोनेमें ऊपर दे दी गई है; जहाँ वह उपलब्ध नहीं है, वहाँ अनुमानसे निश्चित तिथि चौकोर कोष्ठकोंमें दी गई है और आवश्यक होनेपर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोंमें केवल मास या वर्षका उल्लेख है, उन्हें आवश्यकतानुसार मास या वर्षके अन्तमें रखा गया है। शीर्षकके अन्तमें साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशन की है। गांधीजीकी सम्पादकीय टिप्पणियाँ और लेख, जहाँ उनकी लेखन-तिथि उपलब्ध है अथवा जहाँ किसी दृढ़ आधारपर उसका अनुमान किया जा सका है, वहाँ लेखन-तिथिके अनुसार और जहाँ ऐसा सम्भव नहीं हुआ है, वहाँ उनकी प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिये गये हैं।

सोलह

साधन-सूत्रोंमें 'एस० एन०' संकेत साबरमती संग्रहालय, अहमदाबादमें उपलब्ध सामग्रीका; 'जी० एन०' गांधी स्मारक निधि और संग्रहालय, नई दिल्लीमें उपलब्ध कागज-पत्रोंका; 'एम० एम० यू०' मोबाइल माइक्रोफिल्म यूनिट द्वारा तैयार कराई गई रीलियोंका; 'एस० जी०' सेवाग्राममें सुरक्षित सामग्रीके फोटोस्टेटोंका और 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय (क्लेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी) द्वारा संगृहीत पत्रोंका सूचक है।

सामग्रीकी पृष्ठभूमिका परिचय देनेके लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट भी दिये गये हैं। अन्तमें साधन-सूत्रोंकी सूची और इस खण्डसे सम्बन्धित कालकी तारीखवार घटनाएँ दी गई हैं।

विषय-सूची

भूमिका	पाँच
आभार	तेरह
पाठकोंको सूचना	पन्द्रह
१. पुर्जा : महादेव देसाईको (१५-१०-१९३८ के पूर्व)	१
२. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ-१ (१५-१०-१९३८ या उसके पूर्व)	१
३. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ-२ (१५-१०-१९३८ या उसके पूर्व)	३
४. बातचीत : अब्दुल गफार खाँके साथ (१५-१०-१९३८ या उसके पूर्व)	५
५. पत्र : महादेव देसाईको (१५-१०-१९३८)	६
६. पत्र : मीराबहनको (१५-१०-१९३८)	७
७. पत्र : महादेव देसाईको (१५-१०-१९३८)	७
८. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (१५-१०-१९३८)	९
९. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको (१५-१०-१९३८)	९
१०. पत्र : विजया एन० पटेलको (१५-१०-१९३८)	१०
११. पत्र : शारदा चि० शाहको (१५-१०-१९३८)	१०
१२. पत्र : एच० पी० रंगनाथ अर्घ्यगारको (१६-१०-१९३८)	११
१३. पत्र : अमृत कौरको (१६-१०-१९३८)	१२
१४. भाषण : नौशेरामें (१६-१०-१९३८)	१२
१५. भाषण : होती मरदानमें (१६-१०-१९३८)	१४
१६. पत्र : शामलालको (१७-१०-१९३८)	१६
१७. पत्र : सिकन्दर हयात खाँको (१७-१०-१९३८)	१६
१८. पत्र : बी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको (१७-१०-१९३८)	१७
१९. पत्र : नारणदास गांधीको (१७-१०-१९३८)	१८
२०. पत्र : लीलावती आसरको (१७-१०-१९३८)	१८
२१. पत्र : कान्तिलाल गांधीको (१७-१०-१९३८)	१९
२२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (१७-१०-१९३८)	२०
२३. पत्र : अमृत कौरको (१७-१०-१९३८)	२१
२४. पत्र : महादेव देसाईको (१७-१०-१९३८)	२१
२५. भाषण : स्वाबीमें (१७-१०-१९३८)	२२
२६. पत्र : रायकुमार सिंहको (१८-१०-१९३८)	२३

अठारह

२७. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (१८-१०-१९३८)	२३
२८. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको (१८-१०-१९३८)	२४
२९. पत्र : मूलचन्द अग्रवालको (१८-१०-१९३८)	२४
३०. हिन्दुस्तानी, हिन्दी और उर्दू (१९-१०-१९३८)	२५
३१. प्रस्तावना : 'दादाभाई नौरोजी' की (१९-१०-१९३८)	२७
३२. पत्र : रुस्तम मसानीको (१९-१०-१९३८)	२९
३३. बातचीत : अब्दुल गफ्फार खाँके साथ (१९/२०-१०-१९३८)	२९
३४. टिप्पणी : मिस्टर और एस्क्वायर बनाम श्री, मौलवी, मौलाना, जनाब वगैरह (२०-१०-१९३८)	३४
३५. पत्र : अमृत कौरको (२०-१०-१९३८)	३५
३६. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको (२०-१०-१९३८)	३६
३७. पत्र : हीरालाल शर्माको (२०-१०-१९३८)	३६
३८. पत्र : बल्लभभाई पटेलको (२१-१०-१९३८)	३७
३९. पत्र : बलवन्तसिंहको (२१-१०-१९३८)	३८
४०. जव्व की गई जमीनें (२२-१०-१९३८)	३९
४१. तार : घनश्यामदास बिड़लाको (२२-१०-१९३८)	४०
४२. पत्र : अमृत कौरको (२२-१०-१९३८)	४१
४३. पत्र : महादेव देसाईको (२२-१०-१९३८)	४१
४४. पत्र : प्रभावतीको (२२-१०-१९३८)	४२
४५. भाषण : कोहाटकी सार्वजनिक सभामें (२२-१०-१९३८)	४३
४६. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको (२२/२३-१०-१९३८)	४४
४७. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ (२२/२३-१०-१९३८)	४४
४८. पत्र : महादेव देसाईको (२३-१०-१९३८)	४७
४९. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ (२३-१०-१९३८)	४८
५०. राष्ट्रीय झण्डा (२४-१०-१९३८)	५२
५१. पत्र : अमृत कौरको (२४-१०-१९३८)	५४
५२. पत्र : महादेव देसाईको (२४-१०-१९३८)	५५
५३. पत्र : शारदा चि० शाहको (२४-१०-१९३८)	५६
५४. स्त्रियोंका विशेष कार्यक्रम (२५-१०-१९३८)	५७
५५. पत्र : मोतीलाल रायको (२५-१०-१९३८)	५९
५६. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (२५-१०-१९३८)	६०
५७. पत्र : विद्या आ० हिंगोराणीको (२५-१०-१९३८)	६०
५८. भाषण : बन्नूमें (२५-१०-१९३८)	६१
५९. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ (२६-१०-१९३८ या उसके पूर्व)	६४
६०. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (२६-१०-१९३८)	६७
६१. भाषण : लक्कीमें (२६-१०-१९३८)	६८

उन्नीस

६२. खण्डन (२७-१०-१९३८)	६८
६३. पत्र : अमृत कौरको (२७-१०-१९३८)	६९
६४. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ (२७-१०-१९३८)	७०
६५. पत्र : मीराबहनको (२७-१०-१९३८)	७२
६६. पत्र : महादेव देसाईको (२७-१०-१९३८)	७३
६७. पत्र : नारणदास गांधीको (२७-१०-१९३८)	७४
६८. पत्र : छगनलाल जोशीको (२७-१०-१९३८)	७४
६९. पत्र : एम० आर० मसानीको (२७-१०-१९३८)	७५
७०. सच हो तो भयावह (२८-१०-१९३८)	७६
७१. पत्र : अमृत कौरको (२८-१०-१९३८)	७७
७२. पत्र : मीराबहनको (२८-१०-१९३८)	७७
७३. पत्र : महादेव देसाईको (२८-१०-१९३८)	७८
७४. पत्र : मणिबहन पटेलको (२८-१०-१९३८)	७९
७५. पत्र : विजया एन० पटेलको (२८-१०-१९३८)	८०
७६. पत्र : कृष्णचन्द्रको (२८-१०-१९३८)	८१
७७. भाषण : डेरा इस्माइल खाँकी सार्वजनिक सभामें (२८-१०-१९३८)	८१
७८. जन-शिक्षा आन्दोलन (२९-१०-१९३८)	८२
७९. पत्र : अमृत कौरको (२९-१०-१९३८)	८३
८०. पत्र : महादेव देसाईको (२९-१०-१९३८)	८३
८१. पत्र : पुरुषोत्तम गांधीको (२९-१०-१९३८)	८४
८२. पत्र : अमृत कौरको (३०-१०-१९३८)	८४
८३. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (३०-१०-१९३८)	८५
८४. सदस्योंकी प्रतिज्ञाकी व्याख्या (३०-१०-१९३८)	८६
८५. पत्र : महादेव देसाईको (३०-१०-१९३८)	८७
८६. पत्र : अमृत कौरको (३१-१०-१९३८)	८८
८७. पत्र : महादेव देसाईको (३१-१०-१९३८)	८८
८८. भाषण : टाँककी सार्वजनिक सभामें (३१-१०-१९३८)	८९
८९. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ (३१-१०-१९३८)	९०
९०. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ (३१-१०-१९३८)	९१
९१. पत्र : अगाथा हैरिसनको (१-११-१९३८)	९२
९२. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ (१-११-१९३८)	९२
९३. पत्र : मीराबहनको (२-११-१९३८)	९४
९४. पत्र : महादेव देसाईको (२-११-१९३८)	९४
९५. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (२-११-१९३८)	९५
९६. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको (२-११-१९३८)	९५
९७. पत्र : चिमनलाल एन० शाहको (२-११-१९३८)	९६

९८. पत्र . अमृतलाल वि० ठक्करको (२-११-१९३८)	९६
९९. सन्देश : पेशावर खादी-प्रदर्शनीके उद्घाटन-समारोहके निमित्त (३-११-१९३८ या उसके पूर्व)	९७
१००. भाषण : पेशावर खादी-प्रदर्शनीके उद्घाटन-समारोहमें (३-११-१९३८)	९७
१०१. काठियावाड़-यात्राकी छाप (४-११-१९३८)	९८
१०२. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको (४-११-१९३८)	९९
१०३. टिप्पणियाँ : औध-राज्यमें सुधार; आर्य समाज और गन्दा साहित्य; पत्र-लेखकोंसे (५-११-१९३८)	१००
१०४. बड़ी शक्तियाँ क्यों नहीं ? (५-११-१९३८)	१०३
१०५. पत्र : मीराबहनको (५-११-१९३८)	१०५
१०६. पत्र : महादेव देसाईको (५-११-१९३८)	१०६
१०७. भाषण : पेशावरके वकील मण्डलके समक्ष (५-११-१९३८)	१०७
१०८. पत्र : महादेव देसाईको (६-११-१९३८)	१०७
१०९. बातचीत : विभूतिमें (६-११-१९३८)	१०८
११०. भाषण : हरिपुरकी सार्वजनिक सभामें (६-११-१९३८)	१०९
१११. पत्र : अमृत कौरको (७-११-१९३८)	११०
११२. पत्र : देव प्रकाश भाटियाको (७-११-१९३८)	१११
११३. पत्र : मीराबहनको (७-११-१९३८)	१११
११४. पत्र : महादेव देसाईको (७-११-१९३८)	११२
११५. पत्र : कान्तिलाल गांधीको (८-११-१९३८)	११२
११६. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ (८-११-१९३८)	११३
११७. भाषण : मानसेहराकी सार्वजनिक सभामें (८-११-१९३८)	११४
११८. बातचीत : अल्पसंख्यकोंके शिष्टमण्डलके साथ (८-११-१९३८)	११५
११९. भाषण : ऐबटाबादकी सार्वजनिक सभामें (८-११-१९३८)	११६
१२०. पत्र : सरस्वती गांधीको (९-११-१९३८ के पूर्व)	११८
१२१. पत्र : सुशीला गांधीको (९-११-१९३८)	११९
१२२. पत्र : मणिलाल गांधीको (९-११-१९३८)	११९
१२३. पत्र : एम० आर० मसानीको (९-११-१९३८)	१२०
१२४. पत्र : विजया एन० पटेलको (९-११-१९३८)	१२१
१२५. सन्देश : कमाल अतातुर्कके देहावसानपर (१०-११-१९३८)	१२१
१२६. पत्र : अमृत कौरको (१०-११-१९३८)	१२२
१२७. पत्र : महादेव देसाईको (१०-११-१९३८)	१२२
१२८. बातचीत : साम्यवादियोंके साथ (११-११-१९३८ के पूर्व)	१२३
१२९. खुदाई खिदमतगार और बादशाह खान (११-११-१९३८)	१२७
१३०. पत्र : अमृत कौरको (११-११-१९३८)	१३३

इक्कीस

१३१. पत्र : महादेव देसाईको (११-११-१९३८)	१३३
१३२. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको (११-११-१९३८)	१३४
१३३. तार : रा० स० रुइकरको (११-११-१९३८)	१३४
१३४. पत्र : लॉर्ड लिनलिथगोको (११-११-१९३८ या उसके पश्चात्)	१३५
१३५. बिहारमें जन-शिक्षा अभियान (१२-११-१९३८)	१३५
१३६. पत्र : अमृत कौरको (१२-११-१९३८)	१३६
१३७. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (१२-११-१९३८)	१३६
१३८. पत्र : महादेव देसाईको (१२-११-१९३८)	१३७
१३९. पत्र : महादेव देसाईको (१३-११-१९३८)	१३७
१४०. पुर्जा : कंचन मु० शाहको (१३-११-१९३८)	१३८
१४१. कांग्रेस और खादी (१४-११-१९३८)	१३८
१४२. पत्र : अमृत कौरको (१४-११-१९३८)	१४०
१४३. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (१४-११-१९३८)	१४१
१४४. पत्र : महादेव देसाईको (१४-११-१९३८)	१४१
१४५. पत्र : कान्तिलाल गांधीको (१४-११-१९३८)	१४२
१४६. पत्र : अमृत कौरको (१५-११-१९३८)	१४३
१४७. पत्र : महादेव देसाईको (१५-११-१९३८)	१४३
१४८. पत्र : कान्तिलाल गांधीको (१५-११-१९३८)	१४४
१४९. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको (१५-११-१९३८)	१४५
१५०. बातचीत : त्रावणकोर राज्य कांग्रेस शिष्टमण्डलके साथ (१५-११-१९३८)	१४६
१५१. पत्र : अमृत कौरको (१६-११-१९३८)	१४९
१५२. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको (१६-११-१९३८)	१५०
१५३. राजकोटके ठाकुर साहबके लिए वक्तव्यका मसविदा (१९-११-१९३८ के पूर्व)	१५०
१५४. सेलम जिलेमें मद्य-निषेध (१९-११-१९३८)	१५१
१५५. तार : अमृत कौरको (१९-११-१९३८)	१५२
१५६. पत्र : बल्लभभाई पटेलको (१९-११-१९३८)	१५२
१५७. यहूदी लोग (२०-११-१९३८)	१५३
१५८. पत्र : कान्तिलाल गांधीको (२०-११-१९३८)	१५७
१५९. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको (२१-११-१९३८)	१५९
१६०. पत्र : अमृत कौरको (२१-११-१९३८)	१५९
१६१. पत्र : गिरधारीलालको (२१-११-१९३८)	१६०
१६२. प्रस्तावना : 'ब्रदरहुड ऑफ रिलिजन्स' की (२३-११-१९३८)	१६०
१६३. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको (२४-११-१९३८)	१६१
१६४. पत्र : अमृत कौरको (२५-११-१९३८)	१६१

चौबीस

२३६. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (१०-१२-१९३८)	२२१
२३७. बातचीत : ईसाई मिशनरियोंके साथ (१२-१२-१९३८ के पूर्व)	२२२
२३८. सन्देश : सी० के० गिब्वनको (१२-१२-१९३९ या उसके पूर्व)	२२९
२३९. हिन्दू-मुस्लिम एकता (१२-१२-१९३८)	२२९
२४०. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (१२-१२-१९३८)	२३०
२४१. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको (१२-१२-१९३८)	२३१
२४२. पत्र : बलवन्तसिंहको (१२-१२-१९३८)	२३१
२४३. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको (१२-१२-१९३८)	२३२
२४४. पत्र : हरसरन वर्माको (१२-१२-१९३८)	२३२
२४५. भेंट : सेलिस्टीन स्मिथको (१३-१२-१९३८ के पूर्व)	२३३
२४६. देशी राज्योंके सम्बन्धमें कांग्रेस कार्य-समितिके प्रस्तावका मसविदा (१३-१२-१९३८)	२३३
२४७. पत्र : बलवन्तसिंहको (१३-१२-१९३८)	२३५
२४८. तार : पट्टम् ताणु पिल्लैको (१४-१२-१९३८)	२३६
२४९. पत्र : भूलाभाई जे० देसाईको (१४-१२-१९३८)	२३६
२५०. पत्र : सुशीला गांधीको (१६-१२-१९३८)	२३७
२५१. तार : जैनब र० पटेलको (१६-१२-१९३८)	२३७
२५२. तार : पट्टम् ताणु पिल्लैको (१७-१२-१९३८)	२३८
२५३. तार : पट्टम् ताणु पिल्लैको (१७-१२-१९३८)	२३८
२५४. सन्देश : इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्र-संघको (१८-१२-१९३८ के पूर्व)	२३९
२५५. पत्र : सुभाषचन्द्र बोसको (१८-१२-१९३८)	२४०
२५६. पत्र : बल्लभभाई पटेलको (१८-१२-१९३८ के पश्चात्)	२४१
२५७. टिप्पणियाँ : कांग्रेसजनोंके खिलाफ शिकायत; सिर्फ हिन्दुस्तानी (१९-१२-१९३८)	२४२
२५८. मद्य-निषेध (१९-१२-१९३८)	२४३
२५९. जिला बोर्ड (१९-१२-१९३८)	२४५
२६०. पत्र : अमृत कौरको (१९-१२-१९३८)	२४७
२६१. पत्र : अगाथा हैरिसनको (२०-१२-१९३८)	२४८
२६२. पत्र : महादेव देसाईको (२०-१२-१९३८)	२४८
२६३. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको (२०-१२-१९३८)	२४९
२६४. पत्र : एन० एम० जोशीको (२१-१२-१९३८)	२४९
२६५. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको (२१-१२-१९३८)	२५१
२६६. पत्र : पृथ्वीसिंहको (२१-१२-१९३८)	२५१
२६७. पत्र : शामलालको (२१-१२-१९३८)	२५२
२६८. पत्र : जमनालाल बजाजको (२१-१२-१९३८)	२५३

पञ्चीस

२६९. पत्र : मनुबहन सु० मशरूवालाको (२१-१२-१९३८)	२५३
२७०. पत्र : बल्लभभाई पटेलको (२१-१२-१९३८)	२५४
२७१. सन्देश : अखिल भारतीय महिला सम्मेलनको (२२-१२-१९३८ के पूर्व)	२५४
२७२. पत्र : अमृत कौरको (२२-१२-१९३८)	२५५
२७३. पत्र : मणिबहन पटेलको (२२-१२-१९३८)	२५५
२७४. पत्र : बलवन्तसिंहको (२२-१२-१९३८)	२५६
२७५. भाषण : स्काउटोंकी रैलीमें (२२-१२-१९३८)	२५७
२७६. पत्र : लॉर्ड लिनलिथगोको (२३-१२-१९३८)	२५९
२७७. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको (२३-१२-१९३८)	२६०
२७८. पत्र : सर्वेपल्ली राधाकृष्णनको (२३-१२-१९३८)	२६०
२७९. पत्र : इन्दु एन० पारेखको (२३-१२-१९३८)	२६१
२८०. पत्र : बलवन्तसिंहको (२३-१२-१९३८)	२६१
२८१. पत्र : सरस्वतीको (२३-१२-१९३८)	२६२
२८२. अहिंसा ही एकमात्र मार्ग (२४-१२-१९३८)	२६३
२८३. निर्देश-पुस्तिकाकी जरूरत (२४-१२-१९३८)	२६३
२८४. पत्र : च० राजगोपालाचारीको (२४-१२-१९३८)	२६४
२८५. भेंट : एच० वी० हॉडसनको (२५-१२-१९३८ के पूर्व)	२६५
२८६. सन्देश : त्रावणकोर राज्य-कांग्रेसके अध्यक्षको (२५-१२-१९३८ या उसके पूर्व)	२६७
२८७. मणिबहन और चरखा (२५-१२-१९३८)	२६७
२८८. हैदराबाद राज्य-कांग्रेसके लिए वक्तव्यका मसविदा (२६-१२-१९३८ के पूर्व)	२६८
२८९. विद्यार्थियोंके लिए लज्जाजनक (२६-१२-१९३८)	२७०
२९०. पत्र : अकबर हैदरीको (२६-१२-१९३८)	२७४
२९१. पुर्जा : जमनालाल बजाजको (२६-१२-१९३८)	२७४
२९२. पत्र : जमनालाल बजाजको (२६-१२-१९३८)	२७५
२९३. पत्र : मीराबहनको (२७-१२-१९३८)	२७६
२९४. भेंट : अमेरिकी अध्यापकोंको (२९-१२-१९३८ के पूर्व)	२७७
२९५. पत्र : अमृत कौरको (२९-१२-१९३८)	२८०
२९६. पत्र : मीराबहनको (२९-१२-१९३८)	२८०
२९७. पत्र : चन्दन पारेखको (२९-१२-१९३८)	२८१
२९८. भाषण : मगन संग्रहालय और उद्योग-भवनके उद्घाटन-समारोहमें (३०-१२-१९३८)	२८२
२९९. बातचीत : अर्थशास्त्रियोंके साथ (३०-१२-१९३८)	२८४
३००. पत्र : वल्लभभाई पटेलको (३१-१२-१९३८)	२८६

छब्बीस

३०१. पत्र : राधाकृष्ण बजाजको (३१-१२-१९३८)	२८७
३०२. पत्र : हीरालाल शर्माको (३१-१२-१९३८)	२८७
३०३. भेंट : टिमोथी टिंगफांग ल्यूको (३१-१२-१९३८)	२८८
३०४. पत्र : अमृतुस्सलामको (१९३८)	२९०
३०५. पत्र : अमृतुस्सलामको (१९३८)	२९१
३०६. पत्र : अमृतुस्सलामको (१९३८)	२९१
३०७. सुसंस्कृत अराजकता-राजनैतिक आदर्श (जनवरी, १९३९)	२९१
३०८. बातचीत : मॉरिस फ्रीडमैनके साथ (१-१-१९३९ या उसके पूर्व)	२९२
३०९. पत्र : एस० वेल्डु पिल्लैको (१-१-१९३९)	२९३
३१०. पत्र : सम्पूर्णनिन्दको (१-१-१९३९)	२९४
३११. भेंट : टिमोथी टिंगफांग ल्यू, वाई० टी० वू और पी० सी० शूको (१-१-१९३९)	२९५
३१२. भेंट : एस० एस० तेमाको (१-१-१९३९)	३००
३१३. राजकोट (२-१-१९३९)	३०२
३१४. क्या अहिंसाका कोई प्रभाव नहीं पड़ता ? (२-१-१९३९)	३०४
३१५. तार : च० राजगोपालाचारीको (४-१-१९३९ या उसके पश्चात्)	३०७
३१६. तार : कृष्णस्वामीको (५-१-१९३९)	३०७
३१७. पत्र : शुएब कुरेशीको (५-१-१९३९)	३०८
३१८. पत्र : रणछोड़लाल पटवारीको (६-१-१९३९)	३०८
३१९. तार : पट्टम् ताणु पिल्लैको (७-१-१९३९)	३०९
३२०. तार : जी० रामचन्द्रनको (७-१-१९३९)	३०९
३२१. तार : घनश्यामदास बिडलाको (७-१-१९३९)	३१०
३२२. जमनालाल बजाजके लिए समाचारपत्रोंको दिये जानेवाले वक्तव्यका मसविदा (७-१-१९३९)	३१०
३२३. जमनालाल बजाजके लिए पत्रका मसविदा (७-१-१९३९)	३११
३२४. पत्र : एफ० मेरी बारको (७-१-१९३९)	३१४
३२५. पत्र : बलवन्तसिंहको (७-१-१९३९)	३१४
३२६. पत्र : प्रभुदयाल विद्यार्थीको (७-१-१९३९)	३१५
३२७. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (७-१-१९३९)	३१५
३२८. अप्रमाणिक खादी-विश्रेता (८-१-१९३९)	३१६
३२९. सरदार पृथ्वीसिंह (९-१-१९३९)	३१६
३३०. त्रावणकोर (९-१-१९३९)	३१७
३३१. जमनालालजी पर प्रतिबन्ध (९-१-१९३९)	३२०
३३२. तार : अकबर हैदरीको (९-१-१९३९)	३२२
३३३. पत्र : जमनालाल बजाजको (९-१-१९३९)	३२३
३३४. औंधका संविधान (१०-१-१९३९)	३२३

सत्ताईस

३३५. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको (११-१-१९३९)	३२४
३३६. पुर्जा : वल्लभभाई पटेलको (११-१-१९३९)	३२५
३३७. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको (१२-१-१९३९)	३२५
३३८. पत्र : कृष्णचन्द्रको (१२-१-१९३९)	३२६
३३९. बातचीत : तोयोहिको कागावाके साथ (१४-१-१९३९)	३२६
३४०. जयपुर (१६-१-१९३९)	३३१
३४१. मेथिलेटेड स्फिरिट पीना (१६-१-१९३९)	३३२
३४२. हिंसा बनाम अहिंसा (१६-१-१९३९)	३३२
३४३. पत्र : मीराबहनको (१६-१-१९३९)	३३४
३४४. पुर्जा : अमृतलाल वि० ठक्करको (१६-१-१९३९)	३३५
३४५. पत्र : सर डब्ल्यू० बीकम सेंट जॉनको (१८-१-१९३९)	३३६
३४६. पत्र : चन्दन पारेखको (१८-१-१९३९)	३३७
३४७. पत्र : रवीन्द्र आर० पटेलको (१८-१-१९३९)	३३७
३४८. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको (१८-१-१९३९)	३३८
३४९. पत्र : बलवन्तसिंहको (१८-१-१९३९)	३३८
३५०. प्रेम एक सार्वभौम गुण (२०-१-१९३९)	३३९
३५१. पत्र : अकबर हैदरीको (२०-१-१९३९)	३४१
३५२. पत्र : ना० र० मलकानीको (२०-१-१९३९)	३४३
३५३. पत्र : मीराबहनको (२०-१-१९३९)	३४४
३५४. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको (२०-१-१९३९)	३४५
३५५. तार : बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' को (२१-१-१९३९)	३४६
३५६. पत्र : जयरामदास दौलतरामको (२१-१-१९३९)	३४६
३५७. पत्र : सुशीला गांधीको (२१-१-१९३९)	३४७
३५८. पत्र : चन्दन पारेखको (२१-१-१९३९)	३४७
३५९. पत्र : पुरुषोत्तम के० जेराजाणीको (२१-१-१९३९)	३४८
३६०. पत्र : सर डब्ल्यू० बीकम सेंट जॉनको (२२-१-१९३९)	३४९
३६१. पत्र : ना० र० मलकानीको (२२-१-१९३९)	३४९
३६२. पत्र : सुशीला गांधीको (२२-१-१९३९)	३५०
३६३. पत्र : मनुबहन सु० मशरूवालाको (२२-१-१९३९)	३५१
३६४. पत्र : रामीबहन के० पारेखको (२२-१-१९३९)	३५१
३६५. पत्र : डाह्याभाई म० पटेलको (२२-१-१९३९)	३५२
३६६. पत्र : अमनुस्सलामको (२२-१-१९३९)	३५२
३६७. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको (२२-१-१९३९)	३५३
३६८. देशी राज्य (२३-१-१९३९)	३५३
३६९. अन्दरकी गन्दगी (२३-१-१९३९)	३५५
३७०. 'कितने भगवत्परायण' ! (२३-१-१९३९)	३५७

अट्टाईस

३७१. इस्लामी संस्कृति (२३-१-१९३९)	३५८
३७२. तार: जमनालाल बजाजको (२३-१-१९३९)	३६०
३७३. पत्र: अमतुस्सलामको (२३-१-१९३९)	३६०
३७४. पत्र: रामेश्वरी नेहरूको (२३-१-१९३९)	३६१
३७५. भेंट: 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के प्रतिनिधिको (२४-१-१९३९)	३६१
३७६. पत्र: मणिलाल गांधीको (२५-१-१९३९)	३६४
३७७. पत्र: सुशीला गांधीको (२५-१-१९३९)	३६५
३७८. पत्र: लॉर्ड लिनलियगोको (२६-१-१९३९)	३६५
३७९. पत्र: चन्दन पारेखको (२६-१-१९३९)	३६७
३८०. पत्र: ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको (२६-१-१९३९)	३६८
३८१. भाषण: किसानोंकी सभामें (२६-१-१९३९)	३६८
३८२. पत्र: सर डब्ल्यू० बीकम सेंट जॉनको (२७-१-१९३९)	३७०
३८३. पत्र: अमतुस्सलामको (२७-१-१९३९)	३७१
३८४. तार: विश्वनाथदासको (२८-१-१९३९ के पूर्व)	३७१
३८५. तार: जानकीदेवी बजाजको (२८-१-१९३९)	३७२
३८६. जमनालाल बजाजके लिए वक्तव्यका मसविदा (२८-१-१९३९)	३७२
३८७. बातचीत: नगरपालिकाओं और स्थानीय मण्डलोंके प्रतिनिधियोंके साथ (२८-१-१९३९)	३७३
३८८. पत्र: जनरल शिन्देको (२९-१-१९३९)	३७९
३८९. पत्र: मैसूरके महाराजाको (२९-१-१९३९)	३७९
३९०. पत्र: अमतुस्सलामको (२९-१-१९३९)	३८०
३९१. भाषण: किसानोंकी सभामें (२९-१-१९३९)	३८०
३९२. राजकोट (३०-१-१९३९)	३८१
३९३. आधुनिक लड़की (३०-१-१९३९)	३८४
३९४. जयपुर (३०-१-१९३९)	३८६
३९५. पत्र: कान्तिलाल गांधीको (३०-१-१९३९)	३८९
३९६. पत्र: कान्तिलाल गांधीको (३०-१-१९३९)	३९०
३९७. "लताइ और प्यार" (३१-१-१९३९)	३९०
३९८. पत्र: लॉर्ड लिनलियगोको (३१-१-१९३९)	३९४
३९९. पत्र: पुरुषोत्तम गांधीको (३१-१-१९३९)	३९५
४००. नारायण मोरेस्वर खरेकी स्मृतिमें (३१-१-१९३९)	३९५
४०१. वक्तव्य: समाचारपत्रोंको (३१-१-१९३९)	३९६
४०२. वक्तव्य: समाचारपत्रोंको (३१-१-१९३९)	३९८
४०३. तार: घनश्यामदास विड़लाको (२-२-१९३९)	३९९
४०४. पत्र: जे० सी० कुमारप्पाको (२-२-१९३९)	३९९
४०५. प्राक्कथन (२-२-१९३९)	४००

उनतीस

४०६. पत्र : मीराबहनको (२-२-१९३९)	४०१
४०७. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (२-२-१९३९)	४०१
४०८. पत्र : हीरालाल शर्माको (२-२-१९३९)	४०२
४०९. पत्र : सम्पूर्णानन्दको (२-२-१९३९ के पश्चात्)	४०३
४१०. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (३-२-१९३९)	४०३
४११. तार : जमनालाल बजाजको (३-२-१९३९ या उसके पूर्व)	४०६
४१२. तार : घनश्यामदास बिड़लाको (३-२-१९३९)	४०६
४१३. पत्र : मीराबहनको (३-२-१९३९)	४०७
४१४. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको (३-२-१९३९)	४०८
४१५. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको (३-२-१९३९)	४०८
४१६. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको (३-२-१९३९)	४०९
४१७. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (३-२-१९३९ के पश्चात्)	४०९
४१८. बातचीत : अध्यापक प्रशिक्षणार्थियोंके साथ (३/४-२-१९३९)	४१०
४१९. तार : महादेव देसाईको (४-२-१९३९)	४१८
४२०. तार : जमनालाल बजाजको (४-२-१९३९)	४१८
४२१. पत्र : इन्दिरा नेहरूको (४-२-१९३९)	४१९
४२२. पत्र : जनरल शिन्देको (४-२-१९३९)	४१९
४२३. पत्र : शारदा चि० शाहको (४-२-१९३९)	४२०
४२४. रोमन लिपि बनाम देवनागरी लिपि (५-२-१९३९)	४२०
४२५. क्षमायाचना नहीं (५-२-१९३९)	४२२
४२६. पत्र : सुभाषचन्द्र बोसको (५-२-१९३९)	४२३
४२७. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको (५-२-१९३९)	४२४
४२८. पत्र : जानकीदेवी बजाजको (५-२-१९३९)	४२४
४२९. पुर्जा : अमृत कौरको (५-२-१९३९ या उसके पश्चात्)	४२५
४३०. भेंट : दक्षिण आफ्रिकाके भारतीय विद्यार्थियोंको (६-२-१९३९ के पूर्व)	४२५
४३१. महात्माकी मूर्ति (६-२-१९३९)	४२६
४३२. कस्तूरबा गांधी राजकोट क्यों गई? (६-२-१९३९)	४२७
४३३. अहिंसाका पालन (६-२-१९३९)	४२८
४३४. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (६-२-१९३९)	४३२
४३५. पत्र : जानकीदेवी बजाजको (७-२-१९३९)	४३२
४३६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको (७-२-१९३९)	४३३
४३७. तार : चन्द्रभाल जाँहरीको (७-२-१९३९ या उसके पश्चात्)	४३३
४३८. तार : राजेन्द्रप्रसादको (७-२-१९३९ या उसके पश्चात्)	४३४
४३९. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको (७-२-१९३९ के पश्चात्)	४३४
४४०. पत्र : गोरधनदास चोखावालाको (७-२-१९३९ के पश्चात्)	४३५
४४१. तार : लीम्बड़ी प्रजामण्डलको (८-२-१९३९ के पूर्व)	४३५

तीस

४४२. तार : जेठानन्दको (८-२-१९३९)	४३६
४४३. तार : डॉ० खानसाहबको (८-२-१९३९)	४३६
४४४. पत्र : मोतीलाल रायको (८-२-१९३९)	४३७
४४५. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (८-२-१९३९)	४३७
४४६. पत्र : कृष्णचन्द्रको (८-२-१९३९)	४३८
४४७. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (८-२-१९३९)	४३८
४४८. तार : घनश्यामदास बिड़लाको (९-२-१९३९)	४४०
४४९. तार : जवाहरलाल नेहरूको (९-२-१९३९)	४४०
४५०. पत्र : ना० र० मलकानीको (९-२-१९३९)	४४१
४५१. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको (९-२-१९३९)	४४१
४५२. पत्र : हरेकृष्ण मेहताबको (९-२-१९३९)	४४२
४५३. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको (९-२-१९३९)	४४२
४५४. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (९-२-१९३९)	४४३
४५५. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (९-२-१९३९)	४४३
४५६. तार : जमनालाल बजाजको (९-२-१९३९ या उसके पश्चात्)	४४५
४५७. पत्र : एफ० मेरी बारको (११-२-१९३९)	४४६
४५८. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको (११-२-१९३९)	४४६
४५९. पत्र : एल० एम० पाटिलको (११-२-१९३९)	४४७
४६०. पत्र : च० राजगोपालाचारीको (११-२-१९३९)	४४७
४६१. पत्र : कान्तिीलाल गांधीको (११-२-१९३९)	४४८
४६२. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (११-२-१९३९)	४४८
४६३. पत्र : वल्लभभाई पटेलको (११-२-१९३९)	४४९
४६४. पत्र : कृष्णचन्द्रको (११-२-१९३९)	४४९
४६५. हैदराबाद (१२-२-१९३९)	४५०
४६६. पत्र : लॉर्ड लिनलिथगोको (१२-२-१९३९)	४५१
४६७. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (१२-२-१९३९)	४५२
४६८. पत्र : वल्लभभाई पटेलको (१२-२-१९३९)	४५३
४६९. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (१२-२-१९३९)	४५३
४७०. अखबारोंमें असत्य (१३-२-१९३९)	४५४
४७१. त्रावणकोर (१३-२-१९३९)	४५७
४७२. शिष्टाचारका सवाल (१३-२-१९३९)	४५९
४७३. मेवाड़ (१३-२-१९३९)	४६०
४७४. तार : घनश्यामदास बिड़लाको (१३-२-१९३९)	४६१
४७५. पत्र : मीराबहनको (१३-२-१९३९)	४६२
४७६. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (१३-२-१९३९)	४६२
४७७. पत्र : वल्लभभाई पटेलको (१३-२-१९३९)	४६३

इकतीस

४७८. पत्र : हीरालाल शर्माको (१३-२-१९३९)	४६३
४७९. बातचीत : डॉ० चेस्टरमैनके साथ (१३-२-१९३९)	४६४
४८०. पत्र : नारणदास गांधीको (१४-२-१९३९)	४६८
४८१. पत्र : गुलाम रसूल कुरेशीको (१४-२-१९३९)	४६९
४८२. पत्र : सुरेशसिंहको (१४-२-१९३९)	४६९
४८३. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको (१५-२-१९३९)	४७०
४८४. पत्र : विजयाबहन म० पंचोलीको (१५-२-१९३९)	४७०
४८५. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (१६-२-१९३९ के पूर्व)	४७१
४८६. पत्र : च० राजगोपालाचारीको (१६-२-१९३९)	४७१
४८७. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको (१६-२-१९३९)	४७२
४८८. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (१६-२-१९३९)	४७२
४८९. पत्र : मणिबहन पटेलको (१६-२-१९३९)	४७३
४९०. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको (१७-२-१९३९)	४७४
४९१. तार : धनश्यामदास बिड़लाको (१८-२-१९३९)	४७४
४९२. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको (१८-२-१९३९)	४७५
४९३. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (१८-२-१९३९)	४७५
४९४. पत्र : विजयाबहन म० पंचोलीको (१८-२-१९३९)	४७६
४९५. पत्र : मणिबहन पटेल और मृदुला साराभाईको (१८-२-१९३९)	४७७
४९६. टिप्पणियाँ : जयपुर; सच्चा स्वदेशी (२०-२-१९३९)	४७७
४९७. फिर त्रावणकोर (२०-२-१९३९)	४७९
४९८. लीम्बडीमें अन्धेरगर्दी (२०-२-१९३९)	४८१
४९९. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको (२०-२-१९३९)	४८५
५००. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (२०-२-१९३९)	४८५
५०१. पत्र : विजयाबहन म० पंचोलीको (२०-२-१९३९)	४८६
५०२. पत्र : बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' को (२०-२-१९३९)	४८६
५०३. तार : अकबर हैदरीको (२१-२-१९३९)	४८७
५०४. पत्र : अकबर हैदरीको (२१-२-१९३९)	४८७
५०५. पत्र : लॉर्ड लिनलिथगोको (२१-२-१९३९)	४८८
५०६. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (२१-२-१९३९)	४८८
५०७. बातचीत : हैदराबाद राज्य-कांग्रेसके प्रतिनिधियोंके साथ (२१-२-१९३९)	४८९
५०८. शरारतपूर्ण सुझाव (२३-२-१९३९)	४९०
५०९. तार : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको (२३-२-१९३९)	४९२
५१०. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (२३-२-१९३९)	४९२
५११. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (२३-२-१९३९)	४९३
५१२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (२३-२-१९३९)	४९३

वत्तीस

५१३. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (२३-२-१९३९)	४९४
५१४. तार : वाइसरायके निजी सचिवको (२४-२-१९३९)	४९४
५१५. पत्र : कस्तूरबा गांधीको (२४-२-१९३९)	४९५
५१६. बातचीत : एक आश्रमवासीके साथ (२४-२-१९३९)	४९५
५१७. पत्र : विजयाबहन म० पंचोलीको (२५-२-१९३९ के पूर्व)	४९६
५१८. दानकी जगह काम (२५-२-१९३९)	४९६
५१९. पत्र : लॉर्ड लिनलिथगोको (२५-२-१९३९)	४९७
५२०. पत्र : अकबर हैदरीको (२५-२-१९३९)	४९७
५२१. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको (२५-२-१९३९)	४९८
५२२. पत्र : मणिलाल गांधीको (२५/२६-२-१९३९)	५०२
५२३. वचनकी रक्षाका प्रश्न (२६-२-१९३९)	५०३
५२४. अकालसे राहतके लिए खादी (२६-२-१९३९)	५०७
५२५. क्या यह अहिंसा है? (२६-२-१९३९)	५०७
५२६. तार : राधाकृष्ण बजाजको (२६-२-१९३९)	५१०
५२७. पत्र : महादेव देसाईको (२६-२-१९३९)	५११
५२८. पत्र : सतीश द० कालेलकरको (२६-२-१९३९)	५११
५२९. पत्र : अमृत कौरको (२७-२-१९३९)	५१२
५३०. पत्र : मीराबहनको (२७-२-१९३९)	५१२
५३१. पत्र : महादेव देसाईको (२७-२-१९३९)	५१३
५३२. भेंट : एसोसिएटेड प्रेसके प्रतिनिधिको (२७-२-१९३९)	५१३
५३३. तार : अमृत कौरको (२७-२-१९३९)	५१४
५३४. तार : मीराबहनको (२७-२-१९३९)	५१४
५३५. भेंट : एसोसिएटेड प्रेसके प्रतिनिधिको (२७-२-१९३९)	५१५
५३६. भेंट : 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको (२७-२-१९३९)	५१५
५३७. तार : राधाकृष्ण बजाजको (२७-२-१९३९ या उसके पश्चात्)	५१६
५३८. बातचीत : मुसलमान प्रतिनिधियोंके साथ (२८-२-१९३९)	५१६
५३९. बातचीत : गिरासियोंके शिष्टमण्डलके साथ (२८-२-१९३९)	५१७
५४०. भेंट : 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको (२८-२-१९३९)	५१८

परिशिष्ट :

१. एक पवित्र समझौतेकी निर्मम अवहेलना	५१९
२. भारत सरकारका वक्तव्य : राजकोटके बारेमें	५३७
३. कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्योंका त्याग-पत्र	५३९
४. सुभाषचन्द्र बोसका वक्तव्य	५४०
५. गांधीजीकी मनःस्थितिके बारेमें श्री रमण महर्षिकी टिप्पणी	५४२

सामग्रीके साधन-सूत्र	५४४
तारीखवार जीवन-वृत्तान्त	५४६
शीर्षक-सांकेतिका	५४९
सांकेतिका	५५४

१. पुर्जा : महादेव देसाईको

[१५ अक्टूबर, १९३८ के पूर्व]

अंग्रेजी 'हरिजन' के लिए इसका अनुवाद कर डालो। इस गाँवमें अच्छा काम हो रहा है और वह इस योग्य है कि उसका उल्लेख किया जाये।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६६१) से।

२. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ - १

[१५ अक्टूबर, १९३८ या उसके पूर्व]^१

गांधीजी ने उनसे कहा कि हालाँकि आपकी इस बातमें मुझे कुछ दुस्साहसकी गंध लगती है, तो भी अपनी आदतके मुताबिक मैं, आप जो-कुछ कह रहे हैं, उसपर विश्वास किये लेता हूँ।^२ उन्होंने अहिंसाके स्वरूप और मर्मके बारेमें अपनी अवधारणा उन्हें सविस्तार समझाते हुए कहा कि जहाँ विरोधी ज्यादा ताकतवर और हथियारोंसे लैस हो वहाँ निष्क्रिय अहिंसा बरतना अपेक्षाकृत सुगम है। लेकिन जब आपको रोकनेको कोई बाहरी ताकत नहीं रहेगी तब क्या आप आपसी व्यवहारमें और अपने देशवासियोंके साथ भी अहिंसासे काम लेंगे? और फिर आपकी अहिंसा बलवानोंकी अहिंसा है अथवा कमजोरोंकी? अगर आपकी अहिंसा बलवानोंकी अहिंसा है तो तलवारको छोड़ देनेके फलस्वरूप आपको और ज्यादा ताकत महसूस करनी चाहिए। लेकिन अगर ऐसी बात न हो तो आपको चाहिए कि आप अपने उन शस्त्रोंको फिरसे उठा लें जिन्हें आपने अपनी ही इच्छासे एक तरफ रख दिया है, क्योंकि निहत्थे रहकर पुंसत्वहीन बन जानेसे बेहतर यही है कि आप हथियार उठाकर बहादुर सिपाही बनें। उन्होंने आगे कहा :

१. एक कार्यकर्ता द्वारा पीपेदरासे महादेव देसाईके नाम लिखे गये इस पत्रमें २१-९-१९३८ से २-१०-१९३८ तक उस गाँवमें मनाये गये गांधी-जयन्ती समारोह का विवरण दिया गया था। उक्त सप्ताह के दौरान अन्य कार्यक्रमोंके अतिरिक्त अखण्ड चरखा-यज्ञका भी आयोजन किया गया था। गांधीजी की टिप्पणियों के लिए देखिए "पत्र : महादेव देसाईको", १५-१०-१९३८।

२. गांधीजी ने पेशावरके खुदाई खिदमतगारोंके आखिरी जल्येसे १५ अक्टूबरको मुलाकातकी थी।

३. खुदाई खिदमतगारोंने कहा था कि चाहे अब्दुल गफ्फार खॉं अहिंसाको छोड़ दें, लेकिन हम नहीं छोड़नेवाले हैं।

मुझपर और खान साहबपर यह आरोप लगाया गया है कि हम बहादुर और लड़ाकू सरहदी लोगोंको अहिंसाका सन्देश देकर हिन्दुस्तान और इस्लामका अहित कर रहे हैं। कहा जाता है कि मैं आपकी शक्तिको क्षीण करने आया हूँ। वे कहते हैं कि सीमाप्रान्त भारतमें इस्लामका गढ़ है, और पठान लोग तलवार तथा बन्दूक चलानेमें अपनी सानी नहीं रखते, और मैं उनसे शस्त्र-त्याग करवाकर उन्हें नपुंसक बनानेकी कोशिश कर रहा हूँ तथा इस प्रकार इस्लामके गढ़को, उसकी सुरक्षाको कमजोर करनेकी कोशिश कर रहा हूँ। मैं इस आरोपको बिल्कुल अस्वीकार करता हूँ। मेरा तो विश्वास है कि अहिंसाके सिद्धान्तको उसके समग्र रूपमें अपनाकर आप हिन्दुस्तानकी, और उस इस्लामकी भी स्थायी सेवा करेंगे जो आज मुझे खतरेमें पड़ गया दीख रहा है। अगर आप अहिंसाकी ताकतको समझ गये हैं तो हथियार छोड़ देनेके कारण आपको अपने अन्दर और ज्यादा ताकत महसूस करनी चाहिए। इससे आपको वह रूहानी ताकत हासिल होगी जिसकी मददसे आप न केवल इस्लामकी, बल्कि अन्य धर्मोंकी भी रक्षा कर सकेंगे। किन्तु यदि आपने इस ताकतके रहस्यको नहीं समझा है, यदि शस्त्र-त्यागके फलस्वरूप आप अपने-आपको पहलेके मुकाबले ज्यादा शक्तिशाली नहीं बल्कि कमजोर महसूस करें, तब आपको अहिंसाकी बात छोड़ देनी चाहिए। मैं अपने प्रभावके कारण किसी भी पठानको कमजोर या कायर बनते नहीं देख सकता। बल्कि वैसी हालतमें तो मैं चाहूँगा कि आप दूने जोर-शोरसे हथियार उठा लें।

आज सिख लोग कहते हैं कि यदि वे कृपाण छोड़ दें तो सभी कुछ छूट गया समझो। लगता है उन्होंने कृपाणको अपने धर्मका अंग बना लिया है। वे सोचते हैं कि उसे त्यागकर वे कमजोर और कायर बन जायेंगे। मैं उनसे कहता हूँ कि उनका यह भय निराधार है, और आज वही बात आपसे कहनेके लिए मैं यहाँ आपके बीच आया हूँ। मैंने 'कुरान' को भी उतने ही ध्यान और श्रद्धाके साथ पढ़ा है जितने ध्यान और श्रद्धाके साथ 'गीता' को पढ़ा है। मैंने इस्लामके बारेमें अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें भी पढ़ी हैं। मेरा दावा है कि मेरे मनमें जितना आदर अपने धर्मके प्रति है उतना ही इस्लाम तथा अन्य धर्मोंके प्रति भी है, और मैं दावेसे कह सकता हूँ कि इस्लामके इतिहासमें यद्यपि तलवारका इस्तेमाल किया गया है, और सो भी धर्मके नामपर किया गया है, तथापि इस्लामकी स्थापना तलवारके जोरसे नहीं हुई थी और न उसका प्रसार ही तलवारके जोरसे हुआ। इसी प्रकार ईसाई धर्ममें भी तलवारका खुलकर प्रयोग किया गया, लेकिन उसका प्रसार तलवारके जोरसे नहीं हुआ। इसके विपरीत, तलवारके प्रयोगसे उसके उज्ज्वल यशको धब्बा ही लगा है। यूरोपमें करोड़ों लोग ईसाई होनेका दावा करते हैं, लेकिन ईसा मसीहकी शिक्षाओंके विपरीत वे भाई-भाईके बीच रक्तपात और हत्याका नंगा तांडव रचा रहे हैं जोकि सच्चे ईसाई धर्मका खण्डन है। मैं आपको जो-कुछ बताता रहा हूँ, यदि आप उसे आत्मसात् कर सकें तो आपका प्रभाव आपकी भौगोलिक सीमाको पार करके दूर-दूर तक फैल जायेगा और इस प्रकार यूरोपको भी रास्ता दिखायेगा।

आज १७,००० अंग्रेज सैनिक हमारे ऊपर शासन कर पा रहे हैं, क्योंकि उनके पीछे ब्रिटिश सरकारकी ताकत है। शस्त्र-त्याग करनेके फलस्वरूप खुदाई खिदमतगारों को यदि अपने अन्दर आत्म-बल उमड़ता हुआ लगे तब तो भारतको अपनी आजादी पानेके लिए १७,००० लोगोंकी जरूरत भी नहीं पड़ेगी, क्योंकि उनके पीछे ईश्वरकी शक्ति होगी। इसके विपरीत, यदि आप दस लाख लोग भी अहिंसाको माननेका दावा तो करें पर आपके मनमें हिंसा छिपी हो, तो ऐसे दस लाख लोगोंका भी कोई महत्व नहीं है। आप शस्त्रका त्याग करें तो इस कारण करें कि आपने समझ लिया है कि वह आपकी शक्तिका प्रतीक नहीं बल्कि आपकी कमजोरीका प्रतीक है, क्योंकि शस्त्रोंसे सच्ची बहादुरी नहीं आती। किन्तु यदि बाहरी तौरपर तो शस्त्र-त्याग कर दें, लेकिन आपके मनमें हिंसा मौजूद हो, तो ऐसा मानिए कि आपने शुरुआत गलत की है और आपके इस त्यागमें कोई श्रेयकी बात नहीं होगी। बल्कि वैसी हालतमें वह खतरनाक भी साबित हो सकता है।

हृदयसे हिंसाको जड़-मूलसे उखाड़ फेंकनेका क्या अर्थ है ?

यह प्रश्न करके गांधीजी ने समझाया कि इसका मतलब अपने गुस्सेपर काबू रख सकना ही नहीं है, बल्कि गुस्सेको बिल्कुल खत्म कर देना है।

यदि कोई डाकू मेरे दिलमें क्रोध या भय पैदा कर दे, तो इसके मतलब हैं कि मैंने अभी तक हिंसासे मुक्ति नहीं पाई है। अहिंसाको समझनेका अर्थ है अपने अन्दर उसकी ताकतको महसूस करना, वह ताकत जिसे आत्म-बल कहते हैं। संक्षेपमें कहें तो इसके अर्थ हैं परमात्माको जानना। जिस मनुष्यने ईश्वरको जान लिया है, वह क्रोध या भयका कितना ही प्रबल अवसर आनेपर भी अपने अन्दर क्रोध या भयका अनुभव नहीं करेगा।

[अंग्रेजीसे]

ए पिल्ग्रिमेज फॉर पीस, पृ० ५७-९

३. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ - २

[१५ अक्टूबर, १९३८ या उसके पूर्व]^१

गांधीजी ने एक स्थानपर खुदाई खिदमतगारोंसे बातचीत करते हुए उन्हें बताया कि खुदाई खिदमतगारको सबसे पहले खुदाका बन्दा होना चाहिए, अर्थात् मानव-जातिका सेवक। इसके लिए उसमें कर्म, वचन और मनकी शुचिता और अनवरत सच्ची उद्यमशीलता होनी चाहिए, क्योंकि मनकी शुचिता और आलस्यका परस्पर कोई मेल नहीं। अतः उनको कोई दस्तकारी सीखनी चाहिए जिसे वे घर बैठे कर सकें। यह धन्धा ओटाई, कताई और बुनाई ही होना चाहिए, क्योंकि यही धन्धा है

१. गांधीजी ने पेशावरके खुदाई खिदमतगारोंके आखिरी जल्येसे १५ अक्टूबरको मुलाकात की थी।

जिसमें लाखों लोगोंको काम मिल सकता है और इसे वे अपने घर बैठे ही कर सकते हैं।

तलवारके सिद्धान्तको त्याग देनेवाला आदमी एक मिनटके लिए भी बेकार नहीं बैठ सकता। कहावत है न कि खाली दिमाग सैतानका घर होता है। आलस्य, आत्मा और बुद्धि दोनोंका ह्रास करता है। हिंसा त्याग देनेवाला आदमी हर साँसके साथ खुदाका नाम लेता रहेगा और चौबीसों घंटे अपना काम करेगा। वहाँ निरर्थक विचारके लिए कोई स्थान नहीं होगा।

इसके अलावा हरएक खुदाई खिदमतगारके पास अपने जीविकोपार्जनका एक स्वतन्त्र साधन होना ही चाहिए। आज आपमें से बहुतोंके पास अपनी जमीन है किन्तु वह आपसे छीनी जा सकती है, परन्तु आपकी दस्तकारी या आपका हुनर तो कोई छीन नहीं सकता। यह सच है कि खुदा अपने सेवकको रोजकी रोटी जरूर देता है, किन्तु केवल तभी जबकि वह उतनेके लिए भी मेहनत करे। कुदरतका नियम है कि यदि कोई काम न करे तो वह खा भी नहीं सकता और यही आपका भी नियम होना चाहिए। आपने लाल कमीजको अपनी वर्दी बनाया है। मैंने आशा की थी कि आप खादीको भी अपनायेंगे जोकि आजादी की वर्दी है। किन्तु देखता हूँ कि आपमें से बहुत कम लोग खादी पहने हुए हैं। इसका कारण शायद यह है कि आपको खुद अपनी वर्दी बनवानी पड़ती है और खादी कुछ महँगी बैठती है। लेकिन यदि आप खुद कातें तो ऐसा नहीं रहेगा।

गांधीजी ने उनसे कहा कि आपको हिन्दुस्तानी सीखनी चाहिए, क्योंकि उसके सहारे आप अपनी बुद्धिका परिष्कार और विकास कर सकेंगे और बाहरी बड़ी दुनियाके सम्पर्कमें आयेंगे। आपको सफाई और प्राथमिक चिकित्साका बुनियादी ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। अन्तमें मैं कहना चाहूँगा कि यह कम महत्वपूर्ण नहीं है कि आपको सब धर्मोंके प्रति समान आदर और श्रद्धाका भाव अपनाना सीखना चाहिए।

आप लाल कमीज पहनकर ही या कतारोंमें खड़े होकर ही खुदाई खिदमतगार नहीं बन जाते, आप तो वह तब बनेंगे जब आप अपने मनमें खुदाई ताकत महसूस करें जो हथियारोंकी ताकतसे ठीक उलटी है। आप अभी अहिंसाके द्वार तक ही पहुँचे हैं। अभी तो आपको बहुत-कुछ करना है। सोचिए कि उस पवित्र भवनमें प्रवेश कर जायें तो आपको और कितनी भारी उपलब्धि हो जायेगी ! जैसाकि मैं कह चुका हूँ, उसके लिए पहलेसे तैयारी और प्रशिक्षणकी जरूरत है। इस वक्त आपमें दोनोंका अभाव है।

[अंग्रेजीसे]

ए पिल्ग्रिमेज फॉर पीस, पृ० ६०-१

४. बातचीत : अब्दुल गफ्फार खाँ के साथ

[१५ अक्टूबर, १९३८ या उसके पूर्व]*

अब्दुल गफ्फार खाँ : यहाँ गाँवोंमें कुछ पठान हैं जो खुदाई खिदमतगारोंको असह्य रूपसे सताते हैं। उन्हें पीटते हैं, उनकी जमीनें छीन लेते हैं इत्यादि। हमें उनके खिलाफ क्या करना चाहिए ?

गांधीजी : हमें धैर्य और दृढ़ताके साथ उनकी जोर-जबर्दस्तीका सामना करना है। उनके अत्याचारोंका हमें उसी प्रकार सामना करना है जिस प्रकार हम अंग्रेजोंके अत्याचारोंका करते थे, अर्थात् हिंसाका जवाब हिंसासे नहीं, गालियोंका जवाब गालीसे नहीं देना है और न ही अपने मनमें रोष रखना है। अगर हम ऐसा करेंगे तो निश्चय ही उनका हृदय पिघल जायेगा। यदि यह तरीका सफल न हो तो हम असहयोग करें। अगर वे हमारी जमीनें छीन लें तो हम उनकी मजदूरी न करें, चाहे हमें भूखों ही क्यों न रहना पड़े। हम उनके कोपका सामना करेंगे, परन्तु उनके सम्मुख झुकेगे नहीं और अपनी अन्तरात्माके विरुद्ध भी काम नहीं करेंगे।

अब्दुल गफ्फार खाँ : क्या हमारे लिए उचित है कि हम पुलिसमें उनके खिलाफ शिकायत दर्ज कराकर उन्हें सजा दिलवायें ?

गांधीजी : कोई भी सच्चा खुदाई खिदमतगार अदालतकी शरण नहीं लेगा। अदालतमें लड़ना तो हाथ-पैरसे लड़ने जैसा ही है, फर्क सिर्फ इतना ही है कि आप खुद बल-प्रयोग न करके दूसरेके जरिये बल-प्रयोग करवाते हैं। आततायीको पुलिससे दण्ड दिलवाना एक प्रकारका बदला ही है जिसे खुदाई खिदमतगारोंको त्याग देना है। एक व्यक्तिगत दृष्टान्त देकर मैं अपना तात्पर्य समझाता हूँ। सेवाग्राममें मेरे पास कुछ हरिजन आये और मुझसे बोले कि यदि मैं मध्यप्रान्तके कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलमें किसी भी हरिजनको शामिल नहीं करवाता तो वे भूख-हड़तालके रूपमें सत्याग्रह करेंगे।^१ मैं जानता था कि सब एक शैतान आदमीकी कारस्तानी है। पुलिस-अधीक्षक कुछ सिपाहियोंको तैनात करना चाहते थे, क्योंकि उन्हें डर था कि गुण्डे कुछ शैतानी न कर बैठें। मैंने उन्हें मना कर दिया और हरिजनोंसे कहा कि वे लोग बाहर धूपमें न बैठें बल्कि आश्रमका जो भी कमरा उन्हें पसन्द हो उसमें चाहें तो बैठ जायें। मैंने उनसे कहा कि यदि वे चाहें तो मैं उन्हें भोजन भी कराऊँगा। उन्होंने मेरी पत्नीके स्नानागारमें बैठना चाहा तो मैंने उन्हें वहीं बैठने दिया।

१. यह बातचीत गांधीजी के १५ अक्टूबरको मरदान और नौशेराके दौरेके लिए रवाना होनेसे पहले उटमंजई में हुई थी। गफ्फार खाँके उटमंजई स्थित मकानपर गांधीजी कुछ दिन के लिए ठहरे थे।

२. देखिए खण्ड ६७, पृ० ३२३-४ और ३२७।

हमने उनकी सब जरूरतोंकी देखभाल की और उनमें से जब एक बीमार पड़ गया तो उसकी शुश्रूषा की। परिणाम यह हुआ कि वे हमारे मित्र बन गये।

[अंग्रेजीसे]

ए पिल्ग्रिमेज फॉर पीस, पृ० ६१-२

५. पत्र : महादेव देसाईको

उटमंजई

१५ अक्टूबर, १९३८

चि० महादेव,

इस पत्रका^१ अनुवाद देखनेसे तो लगता है कि इसमें बहुत-से तथ्य छूट गये हैं जिससे रिपोर्ट अच्छी नहीं लगती। क्या उसमें बालकोंके अतिरिक्त १८ व्यक्तियोंने भाग लिया था? इस प्रकार क्या कुल मिलाकर २२+१८ लोग थे? इनमें मुसलमान कितने थे? क्या एक ही चरखा अखण्ड चल रहा था? सूत कितने अंकका था? सोमाभाई स्वयं शिक्षक हैं या कार्यकर्ता? यदि शालामें मुसलमान बालक हैं तो कितने हैं? पीपोदराकी आवादी कितनी है? अधिकतम गति कितनी थी? सूतका अधिकतम अंक कितना था? औसत मजबूती क्या है? यदि तुम यही पत्र भेजना चाहो तो भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

आजसे दौरा शुरू हो रहा है, इसलिए जो परम शान्ति मिल रही थी वह भंग हो रही है। फिर भी आशा है कि मेरा स्वास्थ्य इसी प्रकार उत्तम बना रहेगा। पहले दौरेका कार्यक्रम इसके साथ है। इसके बादका कार्यक्रम भी तैयार हो चुका है। ८ नवम्बर तक तो हम यहीं हैं।

खान साहबका तो एक ही काम है : मुझे कैसे आराम पहुँचाया जा सकता है और अन्य लोगोंको कैसे खिलाया जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

राजकुमारीसे कहना कि आज मैं उसे नहीं लिख रहा हूँ।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६६२) से।

६. पत्र : मीराबहनको

पेशावर

१५ अक्टूबर, १९३८

चि० मीरा,

तुम्हारे पत्र मिल गये हैं। डॉ० बेनिस तो लगभग निर्वासित^१ ही हो चुके हैं, तो भी तुम्हारा पत्र अगर अबतक उनके पास नहीं पहुँचा हो तो यथासमय पहुँच जरूर जायेगा। अगर उनमें सही भावना जग गई है तो इस निर्वासनसे कोई अन्तर नहीं पड़नेवाला है।

यहाँ तो मौसम बड़ा ही अच्छा है। तुम्हारे यहाँ असाधारण वर्षा हो रही है। बम्बईमें भी यही हुआ। मेरा खयाल है, फसलें बर्बाद हो गई हैं।

अफसोस है कि ९ नवम्बरसे पहले मैं इस प्रान्तको नहीं छोड़ सकता। कार्यक्रम अखबारमें देख लेना। दौरेमें स्वास्थ्य कैसा रहता है यह तो आगं मालूम होगा।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४०९) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००० से भी।

७. पत्र : महादेव देसाईको

पेशावर

१५ अक्टूबर, १९३८

चि० महादेव,

जीवराज लिखते हैं कि तुम्हें चढ़ाई नहीं चढ़नी चाहिए। तुम भी लिखते हो कि तुम्हारे ऊपर इसका असर अच्छा नहीं होता। वहाँ रिक्शे तो हैं ही। बीमारीकी हालतमें उनका उपयोग अनुचित नहीं है। जहाँ भी चढ़ाई हो वहाँ रिक्शेमें बैठकर जाओ। इस तरह, घूमनेके लिए रोज कोई नई जगह चुनी जा सकती है। इसमें मैं कोई दोष नहीं देखता। शिमलाके प्रवासका पूरा लाभ इसी तरह लिया जा सकेगा।

१. नाजी जर्मनी द्वारा सुडेटनलैंडपर कब्जा कर लेनेके बाद ५ फरवरीको एडुअर्ड बेनिसको राष्ट्रपतिके पदसे त्यागपत्र देने और देश छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया गया था। देखिए खण्ड ६७, पृ० ४५२ भी।

दुर्गति विषयमें शम्मी इससे कुछ उलटा ही कहता मालूम होता है। ऐसा हो तो मेरी सलाह बेकार मानी जाये। हाँ, यदि मैं वहाँ होता तो इस बात पर शम्मीके साथ बहस जरूर करता।

यह तो तुम जानते हो कि मेरे पत्रके साथ यदि [दूसरोंको लिखे गये] कोई अन्य पत्र होते हैं तो उन्हें मैं पढ़ता नहीं हूँ। यह मेरा स्वभाव है। लेकिन एक पत्रके उत्तरमें सुशीलाके नाम तुम्हारे दो पत्र थे। उन्हें मैंने पढ़ लिया। इसके लिए मैं अपनी जिज्ञासाके सिवा कोई दूसरा कारण नहीं दे सकता। पिछले पत्रमें तो मुझे केवल चन्द्रमाका चित्र याद रह गया है; बाकी सब भूल गया हूँ। लेकिन कलका पत्र मैं महत्वपूर्ण मानता हूँ। मैं नहीं जानता कि सुशीलाने विकारोंके सम्बन्धमें क्या लिखा था। किन्तु मेरे लिए तो यह प्रश्न सत्यासत्यका प्रश्न बन गया है। तुमने उसे ऐसा लिखा है कि मेरे अन्तिम वक्तव्यके बाद अब वे सब निश्चिन्त रह सकते हैं। यह बात मुझे खटकी। कोई भी क्यों न हो, यदि उसे विकारका अनुभव होता है तो उसके विषयमें हम निश्चिन्त नहीं हो सकते। किन्तु अपने विषयमें तो मुझे यह कहना चाहिए कि जो अनुभव मुझे अभी हो रहे हैं वे यदि इस अन्तिम वक्तव्यके समय हो रहे होते तो मैं ऐसा वक्तव्य प्रकाशित ही नहीं करता। मैं यह भी नहीं कह सकता कि मैंने उस हालतमें अपना प्रयोग बन्द किया होता या नहीं। इसलिए मेरे विषयमें तुम लोग या कोई भी निश्चिन्त नहीं रह सकता। इस अन्तिम वक्तव्य को वापस लेनेकी या उसकी जगह संशोधित वक्तव्य प्रकाशित करनेकी अभी तो मैं कोई जरूरत नहीं देखता। अलबत्ता, इसका अर्थ यह नहीं है कि तुम लोगोंमें से कोई चिन्ता करने लगे। अभी तो मैं इससे ज्यादा नहीं कहना चाहता। सत्यकी खातिर इतना कहना जरूरी मालूम हुआ, अतः उसके लिए समय निकाला। तुम्हें और ज्यादा जाननेकी इच्छा तो होगी पर उसे रोकना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

विकारोंके विषयमें यहाँ मैंने जो-कुछ कहा उसकी जानकारी राजकुमारीको देना ताकि मुझे न लिखना पड़े।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६६३) से।

८. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

पेशावर

१५ अक्टूबर, १९३८

बा,

इस बार तूने मुझे अच्छी चिन्तामें डाल दिया है। मुझे तेरा विचार भी करना है और अपने कर्तव्यका भी, सो मेरा मन इन्हीं दोके बीच झूलता रहता है। मन कहता है कि मैं तेरे पास दौड़ा चला जाऊँ। कर्तव्य कहता है कि जहाँ हो वहाँका काम पूरा करो। अब यदि तू जल्दी अच्छी हो जाये तो मेरी चिन्ता दूर हो।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० २९

९. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको

पेशावर

१५ अक्टूबर, १९३८

चि० अमृतलाल,

तुम्हारे दो पत्र एक साथ मिले।

सोप्टेकरको २५ रुपये चुका देना। बत्सलाको पढ़ानेके बारेमें तो मैं तुम्हें लिख चुका हूँ। चक्रायाने पुस्तकके बारेमें मुझे लिखा था। मैंने उसे उत्तरमें लिख दिया है कि वह तुम्हें बता दे। तुम्हें जैसा उचित जान पड़े सो करना। जो नये भाई आये हैं उनका कैसा चल रहा है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०७७६) से।

१०. पत्र : विजया एन० पटेलको'

पेशावर

१५ अक्टूबर, १९३८

चि० विजया,

तू कैसी लड़की है! तेरा कोई पत्र ही नहीं मिला? अमृतलालके पत्रसे देखता हूँ कि तेरी तबीयत सँभली नहीं है। मैंने तुझे लिखा था कि तू मरोली चली जा। जब मैं सेगाँव पहुँचूँगा तब तो तुझे वहाँ आना ही है। तेरी तबीयत चाहे जैसी क्यों न हो, किन्तु उसे अपने हाथों बिगाड़ मत। मैंने जो लिखा है उसे मान। यदि मरोली जानेमें किसी तरहकी दिक्कत हो तो मुझे लिख। मुझे नियमित रूपसे समाचार अवश्य मिलने चाहिए। पेशावरके पतेपर लिखना। बा दिल्लीमें बीमार पड़ी हुई है।

बापूके आशीर्वाद

श्री विजयाबहन

मार्फत श्री रामभाई हीराभाई पटेल

सौराष्ट्र सोसाइटी

एलिस ब्रिज, अहमदाबाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१००) से। सी० डब्ल्यू० ४५९२ से भी;
सौजन्य : विजयाबहन एम० पंचोली

११. पत्र : शारदा चि० शाहंको

पेशावर

१५ अक्टूबर, १९३८

चि० बबुड़ी,

तेरा पत्र मिला। एक महीनेसे अधिक तो लग ही जायेगा। यहाँ रहनेका कार्यक्रम ९ तारीख तकका है। तेरी चिन्ताको मैं समझता हूँ। मेरा मन तो वहाँ है, किन्तु यहाँका काम इतना महत्वपूर्ण है कि मुझे उतावली नहीं करनी चाहिए। तू धीरज रखना, भविष्य चाहे जैसा क्यों न हो। तुझे सेविका बनना है, भले तू

१. अहमदाबादके पतेपर भेजा गया यह पत्र सौराष्ट्र स्थित दक्षिणामूर्ति ग्रामको अनुप्रेषित कर दिया गया था।

विवाह करे या न करे। और उसके लिए तुझे अपनी योग्यता बढ़ानी है। मैं यह जानता हूँ कि तू मेरे प्रहार भी सहन कर सकेगी, क्योंकि वे प्रेमके प्रहार ही होंगे। मैं तुझे क्षण-भरके लिए अपनी नजरोंसे दूर नहीं करना चाहता, किन्तु मैं लाचार हो जाता हूँ।

मुन्नालालके बारेमें तू जो कहती है, ठीक वैसा ही है। वह चला जायेगा। लगता है उसके जानेमें ही उसका श्रेय है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००२२) से; सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला

१२. पत्र : एच० पी० रंगनाथ अय्यंगारको

पेशावर

१६ अक्टूबर, १९३८

प्रिय मित्र,

आपके दोनों पत्र मीराबाईने मेरे पास भेज दिये हैं। मुझे दुःखके साथ कहना पड़ता है कि मैं आपकी सहायता नहीं ले सकूंगा; फिर भी, आपने सहायता देनेकी उत्सुकता बताई, इसके लिए आपको धन्यवाद।

मेरे खयालसे, आप जहाँ हैं वहीं रहें और जब जैसी सेवाका अवसर आये वैसी सेवा करते रहें। श्री महादेव देसाईकी हालत बेहतर है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री एच० पी० रंगनाथ अय्यंगार

बी० ए०, एल-एल० बी०

९३०, नायडू स्ट्रीट

डाकखाना चिकनागलूर

मैसूर राज्य

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३३५) से।

१३. पत्र : अमृत कौरको

पेशावर

१६ अक्टूबर, १९३८

प्रिय पगली,

हमारे पेशावर लौटनेपर तुम्हारे दो पत्र पड़े मिले। दाहिने हाथको कुछ आराम देना जरूरी है। जितना काम यह सुगमतासे कर सकता है, उससे ज्यादा काम इसे करना पड़ रहा है।

मेरा स्वास्थ्य अब भी बिल्कुल ठीक है। दौरेमें इसकी क्या हालत होगी, यह नहीं मालूम। मौन सहायक रहेगा।

जोशीका पत्र ठेठ उसीके ढंगका है।

महादेवसे कहना कि कल मुझे एक तार मिला है, जिसमें सूचित किया गया है कि शुक्ल^१ नहीं रहे। वे मेरे पुराने मित्रोंमें से थे—जब मैं इंग्लैंडमें पढ़ता था, उन्हीं दिनोंके। वे राजकोटमें वकालत कर रहे थे।

सेगाँवमें अभी भी वर्षा हो रही है। यहाँ मौसम बिल्कुल सूखा है।

साथमें महादेवके लिए कान्तिके पत्र भेज रहा हूँ। ये बड़े दिलचस्प हैं। महादेवसे कहना कि उसे जो-कुछ कहना है, थोड़ेमें तुम्हें बता दे।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६४०) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन ६४४९ से भी।

१४. भाषण : नौशेरामे^२

१६ अक्टूबर, १९३८

आपने यह आश्वासन दिया है कि अहिंसाके सिद्धान्तको आप लोगोंने भली-भाँति समझ लिया है और आप लोग सदा इसपर दृढ़ रहेंगे। आपका यह आश्वासन मैं पूरा-पूरा स्वीकार कर लेता हूँ। इसके लिए मैं आप लोगोंको बधाई देता हूँ और

१. तात्पर्य शायद दलपतराम शुक्ल से है; देखिए खण्ड ३९, पृ० ३९ और ४१।

२. प्यारेलाल नैयरके “इन द फ्रंटियर प्रोविन्स-२” शीर्षक विवरणसे उद्धृत। वहाँके खुदाई खिदमतगारों ने गांधीजीको एक मानपत्र भेंट किया था और उन्हें भरोसा दिलाया था कि अहिंसामें उनकी पूरी और अडिग अद्वा है तथा वे इससे कभी पीछे नहीं हटेंगे।

यह भी कहता हूँ कि अगर आप अहिंसाके सिद्धान्तको पूरी तरह अमलमें ला सके तो यह समझिए कि आप एक नये इतिहासका निर्माण करेंगे। आपका कहना है कि आपके रजिस्टरमें एक लाख खुदाई खिदमतगारोंके नाम दर्ज हैं। यह तादाद कांग्रेसके स्वयंसेवकोंकी आजकी तादादसे कहीं ज्यादा है। आप सभी लोगोंने निःस्वार्थ सेवाकी प्रतिज्ञा की है। किसी तरहका आर्थिक भत्ता भी आप नहीं ले रहे हैं। यहाँ तक कि अपनी पोशाक भी आपको खुद ही जुटानी पड़ती है। आपका दल एक सूत्रमें बँधा हुआ है और अनुशासित है। खानसाहबकी बातको आप कानून समझते हैं। आपने बदला लेनेके लिए कोई हरकत किये बिना चोट सहनेकी अपनी क्षमता प्रमाणित कर दी है। लेकिन यह तो अपनी योग्यता सिद्ध करनेके आपके प्रयत्नका अन्तिम नहीं, बल्कि पहला चरण है। भारतकी आजादी हासिल करनेके लिए कष्ट-सहनकी क्षमताके साथ-साथ अविरत परिश्रम करनेकी भी योग्यता होनी चाहिए। आजादीके सेनानीको सबके हितके लिए निरन्तर कार्य करते रहना चाहिए। सामान्य सैनिकोंके साथ आपकी इतनी ही समानता है कि आप भी एक खास ढंगकी पोशाक पहनते हैं और शायद आपने उनके कुछ नाम भी अपना लिये हैं। लेकिन उनकी प्रवृत्तिका मूल जहाँ हिंसा है, आपकी प्रवृत्ति अहिंसाके आधार पर खड़ी है। इसलिए आपका प्रशिक्षण, आपके पेशे, आपके कार्यके तौर-तरीके, यहाँ तक कि आपके विचार और आपकी आकांक्षाएँ सब उनसे भिन्न ही होने चाहिए। हथियारबन्द सैनिक हत्याके काममें प्रशिक्षित होता है। यहाँ तक कि वह स्वप्नमें भी हत्याकी ही बात सोचता है। वह युद्ध-क्षेत्रमें अपने बाहुबलसे लड़ने, आगे बढ़ने और यश कमानेका स्वप्न देखता है। उसने हत्या-कार्यको एक कलाका रूप दे दिया है। इसके विपरीत कोई सत्याग्रही, कोई खुदाई खिदमतगार सदा मौन सेवाके अवसरकी ताकमें रहता है। वह अपना सारा समय प्रेममय सेवामें लगाता है। अगर वह स्वप्न भी देखेगा तो दूसरोंकी हत्याका नहीं, बल्कि दूसरोंकी सेवामें अपनेको मिटा देनेका। उसने किसीका कोई अपकार किये बिना अपने मानव भाइयोंके लिए मर मिटनेको एक कलाका रूप दिया है।

इसके बाद गांधीजी ने यह प्रश्न उठाया कि “आपको इस कामके लायक बनानेके लिए प्रशिक्षण कैसा मिलना चाहिए ”; और इसका उत्तर स्वयं देते हुए उन्होंने कहा कि निस्सन्देह विभिन्न प्रकारके रचनात्मक कार्योंका प्रशिक्षण ही उन्हें इस योग्य बनायेगा।

आगे उन्होंने उनसे कहा कि रचनात्मक अहिंसा-शास्त्रमें पारंगत एक लाख खुदाई खिदमतगारोंको सीमा-पारसे होनेवाले हमलोंकी सारी सम्भावना मिटा सकती चाहिए।

आपके इलाकेमें यदि एक भी चोरी-डकैती हो, तो इसे आपको अपने लिए शर्मकी बात समझनी चाहिए। चोर तथा सीमा-पारके हमलावर भी तो आखिर मनुष्य ही हैं। अपराध वे इसलिए नहीं करते कि उन्हें उससे कोई प्रेम है, बल्कि इसलिए करते हैं कि अधिकांशतः उनकी जरूरतें उन्हें उसके लिए मजबूर करती हैं। अपनी जरूरतें

पूरी करनेका कोई और उपाय वे जानते ही नहीं। उनके साथ अभी तक केवल शक्तिसे ही काम लिया गया है। उनके साथ न रहमदिलीसे काम लिया गया और न वे ही किसीपर रहम करते हैं। डॉ० खानसाहब इनके सामने लाचार हैं, क्योंकि सरकारके पास उनसे निपटनेके लिए कोई और रास्ता ही नहीं। लेकिन आप इस समस्याको सुलझानेके लिए कोई अहिंसक रास्ता अपना सकते हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि जहाँ सरकार असफल रही है वहाँ आपको सफलता मिलेगी। कुटीर-उद्योग-जैसे कामोंमें उन्हें लगाकर आप उनसे वैसी ही ईमानदारीकी जिन्दगी बसर करनेको कह सकते हैं जैसी जिन्दगी आप बिताते हैं। आप उनके बीच जाकर उनके घरोंमें उनकी सेवा कर सकते हैं और उन्हें स्नेह और सहानुभूतिके साथ अपनी बात समझा सकते हैं। ऐसा करनेपर आप खुद देखेंगे कि प्रेमसे समझाने-बुझानेका असर उनपर न हो, ऐसी कोई बात नहीं है। आज आपके सामन दो रास्ते हैं। एक तो पशुबलका रास्ता है, जिसे आजमाकर देख लिया गया है तथा जो निष्फल साबित हुआ है, और दूसरा रास्ता है शान्तिका। आपको जो रास्ता चुनना था, लगता है उसे आपने अन्तिम रूपसे चुन लिया है। ईश्वर आपको इस मार्गपर दृढ़ रहनेकी शक्ति दे और इसके योग्य बनाये।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २९-१०-१९३८

१५. भाषण : होती मरदानमें'

१६ अक्टूबर, १९३८

गांधीजी ने उन लोगोंको समझाया कि अहिंसा कोई अंशोंमें स्वीकारने या नकारने की चीज नहीं है। इसका महत्व तो तभी है जब इसका पूर्ण आचरण किया जाये।

सूर्य उगता है तो उसकी गरमी सारी दुनियाको मिलती है। उसका अनुभव अन्धे भी करते हैं। इसी प्रकार जब एक लाख खुदाई खिदमतगार अहिंसाकी सच्ची भावनासे ओतप्रोत हो जायेंगे तो संसारके सामने अहिंसाकी महिमा स्वयं ही प्रकट हो जायेगी और इसके प्राणदायी वायुका अनुभव हर आदमी करने लगेगा।

मैं जानता हूँ कि यह बात कठिन है; किसी अपमानको सिर झुकाकर स्वीकार कर लेना पठानोंके लिए कोई आसान काम नहीं है। पठानोंको मैं अपने दक्षिण आफ्रिकाके प्रवास-कालसे ही जानता हूँ। मुझे उनके निकट और अन्तरंग सम्पर्कमें आनेका सुअवसर मिला था। उनमें से कुछ मेरे मुक्किल थे। वे मुझे अपना मित्र, विवेकशील बन्धु और मार्ग-दर्शक मानकर बिल्कुल मुक्त भावसे अपनी राजकी बातें

१. प्यारेलाल नैयरके “पेट मरदान” शीर्षक विवरणसे उद्धृत। गांधीजी खुदाई खिदमतगारोंसे आमतौर पर यह सवाल पूछा करते थे कि क्या वे हर परिस्थिति में अहिंसापर दृढ़ रहेंगे। यहाँ भी उन्होंने उनसे यही सवाल पूछा। इसपर एक ने उत्तर दिया कि हम और सब-कुछ तो सह लेंगे, लेकिन अपने नेताओंका अपमान हमसे बर्दाश्त नहीं होगा।

भी बता दिया करते थे। यहाँ तक कि वे मेरे पास आकर अपने छिपे हुए अपराध भी कबूल कर लिया करते थे। वे बड़े ही उद्धत स्वभावके और कटने-मरनेको तैयार रहनेवाले लोग थे। वे लाठी चलानेमें लासानी थे, तनिक-सी बातपर भड़क उठते थे और दंगोंमें सबसे आगे बढ़कर हिस्सा लेते थे। जिन्दगीका तो उनके लिए कोई मोल ही नहीं था। वे किसी आदमीकी हत्या ऐसे कर सकते थे जैसे वह आदमी नहीं, मेमना या मुर्गा हो। ऐसे लोग एक आदमीके कहनेपर अपने हथियार छोड़ दें और एक श्रेष्ठतर हथियारकी तरह अहिंसाको अपना लें, यह तो परियोंकी कथा-जैसी अविश्वसनीय बात लगती है। यदि एक लाख खुदाई खिदमतगार मन, वचन और कर्मसे सच्चे अहिंसावादी बन जायें और हिंसाको इस तरह छोड़ दें जैसे साँप अपना बेकारका केंचुल उतार फेंकता है तो यह चमत्कार ही होगा। इसीलिए अहिंसामें अपनी श्रद्धा होनेका आपने मुझे जो आश्वासन दिया है उसके बावजूद मेरे मनमें झिझक है और अपनी बातमें मैं “अगर ऐसा हो तो” जैसे मुहावरोंका प्रयोग कर रहा हूँ। मेरी झिझक केवल इस बातकी द्योतक है कि यह कार्य कितना कठिन है। लेकिन बहादुरोंके लिए कोई भी कार्य इतना कठिन नहीं होता कि वे उसे कर ही न सकें, और मैं जानता हूँ कि पठान लोग बहादुर हैं।

जिस कड़ी कसौटीपर मैं आपको परखूँगा वह यह है : क्या आपने अपने हलके के एक-एक व्यक्तिको अपना मित्र बनाया है, क्या उनमें से प्रत्येकका विश्वास प्राप्त किया है ? लोग आपको प्रेमकी निगाहसे देखते हैं या भयकी दृष्टिसे ? जब तक एक भी आदमी आपसे भय खाता है, समझ लीजिए आप सच्चे खुदाई खिदमतगार नहीं बन पाये हैं। खुदाई खिदमतगारकी बोल-चाल, तौर-तरीकेमें नभ्रता होगी; उसकी दृष्टिसे ऐसी स्निग्ध ज्योति फूटेगी कि किसी अजनबीको भी, किसी स्त्री या बच्चेको भी सहज ही लगने लगेगा कि यह रहा उसका वह सच्चा मित्र और हमदर्द, खुदाका वह बन्दा जिसपर वह भरोसा कर सकता है। खुदाई खिदमतगारसे समाजके सभी वर्गोंके लोग सहयोग करेंगे। लेकिन लोग उसकी आज्ञाका पालन करेंगे तो उस भावसे नहीं जिस भावसे वे अत्याचार और दमनकी असीम शक्तिके स्वामी किसी हिटलर या मुसोलिनीकी आज्ञाका पालन करते हैं, बल्कि ऐसे प्रसन्न और सहज भावसे करेंगे जैसे कोई किसीके प्रेमके वशीभूत होकर ही उसकी आज्ञाका पालन करता है। प्रेमकी यह शक्ति केवल सतत स्नेहमय सेवा और प्रभु-भक्तिसे ही प्राप्त हो सकती है। जब मैं देखूँगा कि आपके प्रभावके कारण लोग अपनी गन्दी और स्वास्थ्यके लिए हानिप्रद आदतें धीरे-धीरे छोड़ रहे हैं, शराबी शराबखोरीसे विमुख हो रहे हैं और अपराधी वृत्तिके लोग अपराधोंका त्याग कर रहे हैं तथा लोग खुदाई खिदमतगारोंका स्वागत सर्वत्र अपने सहज रक्षकों और सच्चे मित्रोंकी तरह कर रहे हैं तब मैं समझूँगा कि हमारे बीच अन्ततः ऐसे लोगोंका एक दल तैयार हो गया है जिन्होंने सचमुच अहिंसा-वृत्तिको आत्मसात कर लिया है और भारतकी मुक्तिकी घड़ी अब दूर नहीं है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ५-११-१९३८

१६. पत्र : शामलालको

मरदान

१७ अक्टूबर, १९३८

प्रिय लाला शामलाल,

आपका पत्र मिला। कह नहीं सकता कि इस सम्बन्धमें मैं क्या कर सकूंगा।

हृदयसे आपका,

मो० क० गांधी

लाला शामलाल, विधान-सभा सदस्य

७, बेगम रोड

लाहौर

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२८५) से।

१७. पत्र : सिकन्दर हयात खांको

पेशावरके पतेपर

१७ अक्टूबर, १९३८

प्रिय सर सिकन्दर,

मुझे अभी-अभी बन्दी इन्द्रपालकी पत्नीका करुण पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें उसने लिखा है कि उसका पति, जो कि ८ सालसे सजा भुगत रहा है, इस समय लकवेका शिकार है। क्या मैं उसकी रिहाईके लिए अनुरोध कर सकता हूँ?

हृदयसे आपका,

मो० क० गांधी

सर सिकन्दर हयात खां

मुख्य मन्त्री

लाहौर

अंग्रेजीकी प्रतिसे: प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य: प्यारेलाल

१. पंजाबके कैदियोंके बारेमें; देखिए खण्ड ६६, पृ० ४२४।

१८. पत्र : बी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको

पेशावरके पतेपर

१७ अक्टूबर, १९३८

प्रिय भाई,

कल ही महादेवसे आपका पत्र मिला। जैसा आप चाहते हैं वैसा कर सकूँ तो मुझे कितनी खुशी हो ! क्या आपको मालूम है कि मैंने राजकुमारीको खास तौरसे बीच-बचाव करनेके लिए^१ ही भेजा था ? लेकिन वह कुछ कर नहीं सकी। कोई बाहरी आदमी हस्तक्षेप करे, यह सर सी० पी० को मंजूर नहीं है। मैंने उनसे बड़ी विनती की कि सारे मामले^२ की जाँचके लिए वे आपको बुलायें। मगर कोई जवाब न मिला। अब फिर शर्म-हया छोड़कर मैंने उनको तार भेजा है कि वे मुझे अपना कोई प्रतिनिधि भेजनेकी इजाजत दें। बल्कि अगर उन्हें गवारा हो तो मैं खुद भी वहाँ जानेको तैयार हूँ। लेकिन वे तो, चाहे जितनी युक्तिसंगत बात कहिए, कुछ सुननेको तैयार ही नहीं हैं। ऐसा कहनेके लिए माफ कीजिएगा। इस मामलेमें उनका जो रवैया रहा है उसे देखते हुए मुझे तो ऐसा ही लगता है। ऐसी कोई बात सामने नहीं आई है जिससे मेरी इस दृढ़ मान्यतामें कोई अन्तर पड़ सके कि यह आन्दोलन बहुत ठीक है और जहाँ तक नेताओंका सम्बन्ध है, वे हर तरहसे अहिंसापर आरुढ़ हैं। अब आप ही बताइए कि मैं क्या करूँ। आशा है, आप स्वस्थ-प्रसन्न होंगे।

हृदयसे आपका,

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८८२०) से।

१. त्रावणकोर राज्यके अधिकारियोंके साथ; देखिए खण्ड ६७, “पत्र : सी० पी० रामस्वामी अय्यरको”, पृ० २८३।

२. देखिए खण्ड ६७, पृ० २४७-८।

१९. पत्र : नारणदास गांधीको

मरदान

१७ अक्टूबर, १९३८

चि० नारणदास,

क्या कमलाको किसी मामलेमें तुम्हारा पथ-प्रदर्शन रुचा नहीं? पालीताणा या पोरबन्दरके पैसेमें से खादी या राष्ट्रीय शालाको कैसे हिस्सा दिया जा सकता है, यह मुझे समझाना।

वहाँ जो आन्दोलन चल रहा है उसके बारेमें लिखना।

पुरुषोत्तमने^१ आखिर क्या निर्णय किया?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५५२ से भी;
सौजन्य : नारणदास गांधी।

२०. पत्र : लीलावती आसरको

१७ अक्टूबर, १९३८

चि० लीला,

तेरा पत्र मिल गया है। मैं चाहता हूँ कि तू उतावलीमें सेगाँव मत जा। वहाँ रहकर अपना वजन बढ़ा ले। मेरे पहुँचनेपर वहाँ आ जाना।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। फिलहाल इससे अधिककी आशा मत करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३७६) से। सी० डब्ल्यू० ६६५१ से भी;
सौजन्य : लीलावती आसर।

१. नारणदास गांधीके पुत्र।

२१. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

पेशावर^१

१७ अक्टूबर, १९३८

चि० कान्ति,

तेरे तीनों पत्र मिले। तेरे तर्कोंमें मैं कोई दोष नहीं देख सका। वे ठीक तरीक़ासे रखे भी गये हैं। तूने यह तो नहीं माना है न कि यदि लड़ाई हो ही तो हम किसी भी रूपमें अंग्रेजोंसे कोई समझौता न करें। इसके अतिरिक्त, यदि हम किसी भी शर्तपर लड़ाईमें भाग न लें तो यह चीज़ अपने-आपमें उनके लिए परेशानीका कारण होगी। यदि कांग्रेस मेरी बात माने तो इस मामलेमें हम और कुछ कर भी नहीं सकते।

किन्तु फिलहाल मुझे यही उचित जान पड़ता है कि तू अपनी पढ़ाई-लिखाईको भूलकर इस ओर ध्यान न दे। तेरी विचारधारा तो चलती ही रहेगी और तेरे विचार परिपक्व होंगे, किन्तु मैं यही उचित मानता हूँ कि उन्हें किसीको समझानेमें तू अपना समय न गँवाये।

तेरे स्वास्थ्यके कारण मुझे चिन्ता बनी रहती है। यह निश्चित मानना कि स्वास्थ्य सुधारनेके कारण यदि एक वर्ष अधिक लग जाये तो उसमें कोई नुकसान नहीं है। खोया हुआ स्वास्थ्य फिर नहीं लौट सकता। तू कसरती है, तेरा शरीर भी सुगठित है। तेरो काठी तो मजबूत है ही। उसे टूटने मत देना। सेगाँव आ जाना और वहाँ कुछ दिन रहकर ढंगसे खा-पीकर और आराम लेकर यदि स्वास्थ्य सुधारा जा सके तो सुधार लेना। इस मामलेमें मेरी बात मान लेना और आलस्य मत करना। यह अभिमान मत रखना कि तू बादमें किसी तरह अपना स्वास्थ्य सुधार लेगा।

सरस्वतीके दादाको मैंने पत्र^२ लिखा है। प्रभाको तो लिखा ही है। यदि वह आ जायेगी तो मैं उसकी देख-भाल करूँगा। नर्सिंगका लोभ मत रख। यदि वह प्रशिक्षित हो जाये तो शेष सब-कुछ हो जायेगा। मुझे आशा है कि यदि वह मेरे पास रहेगी तो उसकी बुद्धि खुलेगी और विकसित होगी। तू यह तो स्वीकार करेगा ही कि आश्रममें रहनेवालोंकी बुद्धि खुली है और विकसित हुई है। यह ठीक है कि उनके दिमागमें तथ्योंकी जानकारी बहुत ज्यादा नहीं ठँसी जाती, क्योंकि पाठ्यक्रम वैसा नहीं होता। किन्तु वहाँ रहनेवाले बालक-बालिकाओंकी बुद्धि उनके द्वारा चुने गये विषयोंमें अच्छी चल सकी है।

१. साधन-सूत्रके अनुसार; हालाँकि गांधीजी इस तारीखको पेशावरमें नहीं थे।

२. यह पत्र उपलब्ध नहीं है।

यदि यह बात तुझे न जँचती हो तो मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

हम यहाँ ९ नवम्बर तक तो हैं ही।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३५०) से; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

२२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

मरदान

१७ अक्टूबर, १९३८

मेरे पास दो शिक्षकों और साथ ही कुछ आम लोगों के भी पत्र आये हैं, जिनमें त्रावणकोरके विद्यार्थियोंकी उपद्रवी प्रवृत्तियोंके खिलाफ शिकायत की गई है। कोट्टायमके सी० एम० एस० कालेजके प्रधानाचार्यने लिखा है कि विद्यार्थियोंने कक्षामें जानेवालोंका रास्ता रोक लिया। जो छात्राएँ इनकी बात सुनने को तैयार नहीं थीं उन्हें इन्होंने दो बार वापस लौटनेपर मजबूर किया। कक्षाओंमें धुसकर वे शोर-गुल करने लगे, जिससे कक्षा चलाना असम्भव हो गया।

जो लड़ाई त्रावणकोरमें चल रही है, उसके प्रणेता तो यह दावा करते हैं कि वह सर्वथा शान्तिमय संघर्ष है। इसलिए उसमें इस हिंसात्मक ढंगसे भाग लेनेसे संघर्षकी प्रगति असम्भव नहीं तो कठिन तो अवश्य हो जाती है। जहाँ तक मैं जानता हूँ, इस आन्दोलनके नेतागण यह नहीं चाहते कि विद्यार्थी अगर इसमें भाग लेनेपर आमादा ही हों तो वे अहिंसाका मार्ग छोड़कर चलें। रास्ता रोकना, उपद्रव करना आदि साफ हिंसा है। लोगोंका खयाल है कि विद्यार्थियोंपर मेरा प्रभाव है। अगर उनपर सचमुच मेरा कोई प्रभाव है तो मैं उनसे मन, कर्म और वचनसे अहिंसक बने रहने को कहूँगा। लेकिन जो लोग इस आन्दोलनका सूत्र-संचालन कर रहे हैं वे यदि हिंसात्मक तत्वोंपर काबू नहीं पा सकते हों तो उन्हें इस बातपर विचार करना चाहिए कि क्या सविनय अवज्ञाको स्थगित कर देना ही इस आन्दोलनके हकमें बेहतर नहीं होगा।

इतनी दूर रहकर वहाँके आन्दोलनके सम्बन्धमें कोई नियम निर्धारित करनेका दम मुझे नहीं भरना चाहिए। लेकिन जो प्रमाण मेरे सामने हैं, उनको देखते हुए मुझे यह तो जरूर लगता है कि यदि नेतालोग विद्यार्थियोंको इस भ्रममें रहने देते हैं कि उनकी हिंसात्मक प्रवृत्तियोंसे आन्दोलनको कोई लाभ पहुँचनेवाला है अथवा वे मन-ही-मन प्रवृत्तियोंको पसन्द करते हैं तो वे एक बहुत बड़ा खतरा मोल लेंगे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २२-१०-१९३८

२३. पत्र : अमृत कौरको

स्वाबी

१७ अक्टूबर, १९३८

प्रिय पगली,

यह तुम्हें सिर्फ प्यार भेजनेके लिए लिख रहा हूँ। इस यात्राके दौरान मुझे अपना समय और शक्ति बचाते हुए काम करना है न।

यूरोपकी स्थितिके सम्बन्धमें मेरा दूसरा लेख^१ तुम्हें कैसा लगा, लिखना। सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६४१) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६४५० से भी।

२४. पत्र : महादेव देसाईको

स्वाबी

१७ अक्टूबर, १९३८

चि० महादेव,

मैं यह स्वाबीमें रातको लिख रहा हूँ। कल रात हम मरदानमें सोये थे। फिलहाल तो मैं खुदाई खिदमतगारोंके अधिकारियोंके साथ लम्बी बातचीत कर रहा हूँ। शेष पूरे समय मौन रखता हूँ। 'हरिजन' में लिखनेका लोभ तो छोड़ ही देना। किन्तु उसके बारेमें अपनी आलोचना मेरी जानकारीके लिए भेजना। यदि प्रूफकी भूलें रह जाती हों तो चन्द्रशंकरको सूचित करना। मैंने शास्त्रीको^२ जो पत्र लिखा था उसकी नकल प्यारेलाल भेजेगा। साथका पत्र राजकुमारीको पढ़वा देना।

लीला सेगाँव जानेको अधीर हो उठी है। उसे रोकना। मेरे वहाँ पहुँचनेके बाद वह आये। राजकोटमें रहकर अपना स्वास्थ्य सुधार ले।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६६४) से।

१. देखिए खण्ड ६७, पृ० ४५९-६२।

२. देखिए पृ० १७।

२५. भाषण : स्वाबीमें'

[१७ अक्टूबर, १९३८]

यहाँ गांधीजी ने जो भाषण दिया वह खुदाई खिदमतगारोंसे आत्मनिरीक्षण करने-का एक उत्कट अनुरोध था। उन्होंने कहा, आपने सैकड़ों-हजारोंकी संख्यामें जेल जाकर अपने पौरुषका परिचय दिया है। लेकिन यह काफी नहीं है। जेलोंको भर देनेमात्रसे ही भारतको आजादी मिलनेवाली नहीं है।

जेल तो चोर-उचक्के भी जाते हैं, लेकिन उनके जेल जानेकी कोई महत्ता नहीं है। असर तो पुण्यात्मा और निर्दोष लोगोंका कष्ट-सहन ही दिखाता है। जब अधिकारियोंको अधिकसे-अधिक पवित्रात्मा और निर्दोष लोगोंको जेल भेजना पड़ता है, तभी उनका हृदय-परिवर्तन सम्भव होता है। सत्याग्रही जेल जाता है तो कोई अधिकारियोंको परेशानीमें डालनेके लिए नहीं, बल्कि उन्हें अपने निर्दोष होनेका पूरा विश्वास दिलाकर उनका हृदय-परिवर्तन करनेके लिए जाता है। आपको यह बात समझ लेनी चाहिए कि यदि आपने जेल जानेके लिए सत्याग्रहके सिद्धान्तमें अपेक्षित नैतिक योग्यताका विकास अपने अन्दर नहीं कर लिया है तो आपका जेल जाना बेकार होगा और उससे आपको अन्तमें केवल निराशा ही मिलेगी। अहिंसाके भक्तमें जेल-जीवनका अपमान और उसकी कठिनाइयाँ सहनेकी क्षमता होनी चाहिए, और इन कष्टोंको सहनेमें वह बदलेकी कोई कार्रवाई न करे या उसके मनमें क्रोध न आये, इतना ही काफी नहीं है; उसमें तो उसपर मुसीबतें ढानेवालों और उसका अपमान करनेवालोंके प्रति दयाका भाव होना चाहिए। इसलिए आज आप सबसे मेरा यही निवेदन है कि आप मेरी इन बातोंको ध्यानमें रखते हुए अपने मनको टटोलकर देखिए, और अगर आपको लगे कि आप इस राहपर इतनी दूर तक नहीं जा सकते या नहीं जा रहे हैं तो अपना अहिंसाका बिल्ला उतार फेंकिए और खानसाहबसे कहिए कि वे आपको आपकी प्रतिज्ञासे मुक्त कर दें। वह एक किस्मकी बहादुरी होगी। लेकिन मैंने अहिंसाके सिद्धान्तकी जो व्याख्या की है उसके अनुसार यदि आपकी उस सिद्धान्तमें पूरी श्रद्धा है तो आप सच मानिए कि परीक्षाकी घड़ीमें खुदा आपको आवश्यक शक्ति देगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ५-११-१९३८

१. थ्यारेलाळ नैयरके “पेट मरदान” शीर्षक विवरणसे उद्धृत।

२. गांधीजी इस तारीखको स्वाबीमें थे।

२६. पत्र : रायकुमार सिंहको

१८ अक्टूबर, १९३८

प्रिय मित्र,

आपने जो प्रश्न उठाये हैं, उन सबपर तो मैं अपने लेखोंमें लिख ही चुका हूँ। निस्सन्देह, यदि इंग्लैंड और फ्रांसमें इस बातकी हिम्मत हो तो मैं चाहूँगा कि वे अपने शस्त्रास्त्र त्याग दें। और निस्सन्देह मेरा दावा है कि निम्नतर पशु-जगतमें व्याप्त नियम मनुष्य जातिके लिए नियम नहीं हो सकता। देखा गया है कि पशु-स्वभाव भी प्रेमके वशीभूत हो जाता है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीयुत रायकुमार सिंह
जमींदार
डाकखाना नाथनगर
जि० भागलपुर

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

२७. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

१८ अक्टूबर, १९३८

बा,

रामदास और देवदासके पत्रोंसे लगता है कि अब तेरी हालत खतरेसे बाहर मानी जायेगी। जब सुशीलाको तेरे बारेमें मेरी चिन्ताका ज्ञान हुआ तो उसने मुझे कहा, मुझे भेजो। मैंने उससे कहा कि “मैं तुझे भेजकर क्या करूँगा? बा की सेवा तो बहुत लोग कर रहे हैं। मैं तो अपनी मनकी शान्तिके विचारसे बा की खटियाके पास उपस्थित रहना चाहता हूँ और बा भी यही चाहती है। इसके बावजूद मुझे अपना हृदय कठोर बनाकर यहाँ रहनेके अपने कर्तव्यका पालन करना है।” किन्तु लगता है ईश्वरने कृपा की है। आशा है, लक्ष्मी और बच्चे आनन्दपूर्वक होंगे।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३०

२८. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

उटमंजई

१८ अक्टूबर, १९३८

चि० काका,

यह तुम्हारी जानकारीके लिए है। इसका क्या मतलब हो सकता है? इसका मुझपर असर नहीं पड़ा। प्रेमाको लिखे पत्रमें ऐसा क्या है?

आशा है तुम आनन्दपूर्वक होगे। तुम्हारी तबीयत बिल्कुल ठीक हो गई होगी। बाल तुम्हारे ही पास है न? उसका पोस्टकार्ड मिला था।

यहाँकी आबहवा बहुत अच्छी है। शान्तिकी कोई सीमा नहीं है। इतनी शान्ति कहीं नहीं मिल सकती।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७६८३) से।

२९. पत्र : मूलचन्द अग्रवालको

दौरेपर

१८ अक्टूबर, १९३८

भाई मूलचन्दजी,

तुमारे खतका उत्तर आज ही दे सकता हूँ। मैं तो पुस्तक न पढ़ सका लेकिन नाणावटीजीको कार्य सिपुर्द किया। उसे मैं पढ़ गया।^१ उसमें जो प्रमाण दिये हैं उसका मैं स्वीकार करता हूँ। नाणावटीजीकी टीकाकी भाषाका समर्थन करनेकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि प्रस्तुत केवल स्वामीजीकी लेखनी है। हिंदु धर्मको संकुचित कर दिया है और ग्रंथ निराशाजनक है यह दो वस्तु स्वामीजीके शब्दोंसे ही नाणावटीजीने सिद्ध कर दी है। अब मेरी सलाह है कि इस चर्चाको बढ़ाना नहीं। ग्रन्थ कैसा भी हो स्वामीजीके महत्वको हानि नहीं पहुँचती है क्योंकि उन्होंने जो कार्य किया उसे कौन भूल सकता है? स्वामीजीकी कीर्ति ग्रन्थसे परे है। उक्त दो कथनसे मैंने आर्यसमाजकी सेवा की है ऐसा मेरा विश्वास है। लेकिन इतना कहने पर भी

१. सम्भवतः नाणावटी द्वारा तैयार की गई टिप्पणी।

आप कुछ शंका निवारण चाहें तो अवश्य लिखें। अच्छा होगा नाणावटीजीको लिखें। जो-कुछ वह लिखेंगे मुझे बतायेंगे। उनपर मेरा विश्वास है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२८) से।

३०. हिन्दुस्तानी, हिन्दी और उर्दू

बड़े दुःखकी बात है कि हिन्दी-उर्दूके सवालको लेकर एक विवाद उठ खड़ा हुआ है और वह अब भी चल रहा है। जहाँ तक कांग्रेसका सम्बन्ध है, उसने हिन्दुस्तानीको ऐसी भाषाके रूपमें विधिवत् मान्य किया है जिसे अन्तर्प्रान्तीय सम्पर्कके लिए अखिल भारतीय भाषा बनना है। मंशा यह नहीं है कि वह प्रान्तीय भाषाओंके स्थानपर स्वयं आसीन हो जाये, बल्कि यह है कि उन्हें और भी समृद्ध करें। कार्य-समितिके हालके प्रस्तावसे इस सम्बन्धमें सारी शंकाएँ शान्त हो जानी चाहिए। जिन कांग्रेसियोंको अखिल भारतीय स्तरपर काम करना है वे यदि हिन्दुस्तानीको दोनों लिपियोंमें सीखने-भरकी तकलीफ उठायें तो उसका मतलब होगा कि हम अपने राष्ट्रभाषा-विषयक लक्ष्यकी दिशामें कई कदम आगे बढ़ चुके हैं। असली स्पर्धा हिन्दी और उर्दूके बीच नहीं, बल्कि हिन्दु-स्तानी और अंग्रेजीके बीच है। यह बड़ी कठिन लड़ाई है। इसकी ओर मैं बड़ी चिन्तातुर दृष्टिसे देख रहा हूँ।

हिन्दी-उर्दू विवादका कोई सच्चा आधार नहीं है। कांग्रेसकी कल्पनाकी हिन्दु-स्तानीको अपना स्पष्ट स्वरूप ग्रहण करना अभी शेष है। जब तक कांग्रेसकी सारी कार्यवाहियाँ निरपवाद रूपसे हिन्दुस्तानीमें ही नहीं होने लगतीं, तब तक वह अपना निश्चित स्वरूप ग्रहण करनेवाली भी नहीं है। कांग्रेसको कांग्रेसियोंके प्रयोगके लिए कुछ शब्दकोष निर्धारित करने पड़ेंगे और उसके एक विभागको इन कोषोंसे बाहरके जरूरी शब्द जुटानेका काम करना पड़ेगा। यह काम बड़ा है; लेकिन यदि हम एक सजीव और विकासशील अखिल भारतीय भाषा चाहते हैं तो यह काम किये बिना निस्तार नहीं है। उस विभागको यह तय करना होगा कि वर्तमान साहित्यमें से — उर्दू या देवनागरी लिपिकी पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं आदिमें से — क्या कुछ हिन्दुस्तानी माने जाने लायक है। यह कार्य बहुत गम्भीर ढंगका है और इसे सफल बनानेके लिए इसपर बहुत अधिक परिश्रम करनेकी जरूरत है।

हिन्दुस्तानी अपना सही स्वरूप निखार सके, इसके लिए हिन्दी और उर्दू दोनों स्रोतोंसे इसके भण्डारको समृद्ध किया जाये। इसलिए कांग्रेसियोंको तो दोनों भाषाओंके हितकी कामना करनी चाहिए और जहाँ तक सम्भव हो, दोनोंसे सम्पर्क रखना चाहिए।

इस हिन्दुस्तानीके एक-एक शब्दके अनेक पर्याय होने चाहिए, ताकि यह भिन्न प्रान्तीय भाषाओंसे समृद्ध एक विकासोन्मुख राष्ट्रकी विविध आवश्यकताओंकी पूर्ति कर सके। बंगालियों या दक्षिण भारतके लोगोंके सामने बोली जानेवाली हिन्दुस्तानीमें

स्वभावतः संस्कृतसे लिये गये शब्दोंका अधिक प्रयोग होगा। वही भाषण जब पंजाबमें दिया जायेगा तो उसमें अरबी और फारसीके शब्दोंकी बहुलता होगी। यही बात उस श्रोता वर्गके सन्दर्भमें भी लागू होगी जिसमें मुसलमानोंकी प्रमुखता हो, क्योंकि वे संस्कृतसे लिये हुए बहुत-से शब्द नहीं समझ सकते। इसलिए अखिल भारतीय स्तरके वक्ताओंको हिन्दुस्तानीकी शब्दावली पर ऐसा अधिकार प्राप्त करना होगा जिससे उन्हें भारत के सभी हिस्सोंके श्रोता समुदायके समक्ष बोलनेमें भी कोई अड़चन या अटपटापन महसूस न हो। इस सिलसिलेमें पण्डित मालवीयजीका नाम सबसे पहले याद आता है। उन्हें मैंने हिन्दीभाषी श्रोताओंके सामने भी और उर्दूभाषी श्रोताओंके समक्ष भी समान सरलतासे बोलते देखा है। उन्हें ठीक शब्दके लिए रुकते-अटकते तो मैंने कभी देखा ही नहीं है। यही बात बाबू भगवानदास पर भी लागू होती है। वे एक ही भाषणमें पर्यायवाची शब्दोंका प्रयोग करते जाते हैं और साथ ही भाषणके सौष्ठवमें भी कोई कमी नहीं आने देते। मुसलमानोंके बीच तो मुझे अभी मौलाना मुहम्मद अलीका ही नाम याद आ रहा है। उनके शब्दभण्डारमें इतनी विविधता है कि वे दोनों तरहके श्रोताओंके सामने मजेमें बोल लेते हैं। बड़ौदा राज्यकी नौकरीमें रहकर उन्होंने गुजरातीका जो ज्ञान प्राप्त किया वह उनके ठीक काम आया।

और कांग्रेसकी नीतिसे स्वतन्त्र रहकर हिन्दी और उर्दू दोनों फूलती-फलती रहेंगी। हिन्दी मुख्यतः हिन्दुओंके बीच सीमित रहेगी और उर्दू मुसलमानोंके बीच। सच तो यह है कि अगर तुलनात्मक दृष्टिसे देखें तो ऐसे मुसलमान बहुत कम हैं जिन्हें हिन्दीके विद्वान माने जानेकी हद तक इस भाषाका ज्ञान है, यद्यपि मैं मानता हूँ कि हिन्दी-भाषी क्षेत्रोंमें जन्मे मुसलमानोंकी मातृभाषा सम्भवतः हिन्दी ही होगी। हजारों हिन्दुओंकी मातृभाषा उर्दू है और सैकड़ों हिन्दुओंको बखूबी उर्दूका विद्वान कहा जा सकता है। ऐसे ही एक व्यक्ति थे पण्डित मोतीलाल नेहरू। दूसरे हैं डा० तेज बहादुर सप्रू। ऐसे बहुत-से उदाहरण आसानीसे दिये जा सकते हैं। इसलिए इन दोनों बहनोंमें झगड़े या हानिप्रद स्पर्धाका कोई कारण नहीं है। हाँ, लाभप्रद स्पर्धा तो होनी ही चाहिए।

मुझे जितना-कुछ जानने-सुननेको मिला उससे तो यही लगता है कि मौलवी साहब अब्दुल हकके सुयोग्य मार्ग-दर्शनमें उस्मानिया विश्वविद्यालय उर्दूकी बड़ी अच्छी सेवा कर रहा है। विश्वविद्यालयने उर्दूका एक बृहत् शब्दकोष तैयार किया है। विज्ञानकी पुस्तकें उर्दूमें तैयार कराई गई हैं और कराई जा रही हैं। और चूँकि यहाँ शिक्षाके माध्यमके रूपमें ईमानदारीके साथ उर्दूका प्रयोग किया जा रहा है, इसलिए इस भाषाका विकास होना अवश्यम्भावी है। और यदि निरर्थक पूर्वग्रहके वशीभूत होकर आज सभी हिन्दीभाषी हिन्दू वहाँ तैयार हो रहे साहित्यका लाभ नहीं उठा रहे हैं तो इसमें गलती उन्हींकी है। लेकिन पूर्वग्रहको मिटना है। कारण, आज दोनों समुदायोंमें जो विभेद है वह सभी रोगोंकी तरह अस्थायी ही है। अब चाहे यह सौभाग्य हो या दुर्भाग्य, लेकिन सचाई तो यही है कि भारतसे दोनों समुदायोंका अविच्छेद्य सम्बन्ध है, दोनों एक-दूसरेके पड़ोसी हैं, दोनों इस मिट्टीकी सन्तान हैं।

उनका जन्म यहाँ हुआ और उन्हें मरना भी यहीं है। अगर दोनों समुदाय स्वेच्छासे एक सूत्रमें नहीं बँधते तो प्रकृति उन्हें शान्तिपूर्वक साथ-साथ रहनेको मजबूर करेगी।

और जो बात हिन्दुओंपर लागू होती है वही मुसलमानोंपर भी। यदि वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन और नागरी प्रचारिणी सभाके परिश्रमके फलका लाभ नहीं उठाते तो इससे नुकसान उन्हींको है। सम्मेलनने उत्तर भारतमें हिन्दुओं और मुसलमानों, दोनों द्वारा बोली जानेवाली और उर्दू तथा देवनागरी लिपिमें लिखी जानेवाली भाषाके रूपमें हिन्दीकी परिभाषा करके एक बड़ा कदम (सम्मेलनकी दृष्टिसे देखें तो) उठाया है। यदि इस तथ्यको मुसलमानोंने गर्व और प्रसन्नताके साथ लक्षित नहीं किया है तो यह बड़े दुःखका विषय है। जहाँ तक उक्त परिभाषाका सम्बन्ध है यह हिन्दुस्तानीकी कांग्रेसवाली परिभाषासे मेल खाती है।

मैं जानता हूँ कि कुछ लोग यह सपना देख रहे हैं कि केवल उर्दू ही रहेगी, या यह कि केवल हिन्दी ही रहेगी। मेरा विचार है कि यह सपना सदा सपना ही बना रहेगा और यह एक अपवित्र सपना है। इस्लामकी अपनी एक विशिष्ट संस्कृति है, उसी तरह हिन्दुत्वकी भी। भावी भारत दोनोंका सम्यक् और सुखद मिश्रण होगा। जब वह शुभ दिन आयेगा, उनकी सामान्य भाषा हिन्दुस्तानी ही होगी। लेकिन अरबी और फारसी शब्दोंकी बहुलतासे युक्त उर्दू तब भी फूलती-फलती रहेगी और संस्कृत शब्दोंकी प्रचुरताके साथ हिन्दी भी विकास करती रहेगी। जिस प्रकार शिबलीकी रचनाओंकी भाषा कभी मर नहीं सकती उसी प्रकार तुलसीदास और सूरदास—जैसे सन्तोंकी भाषा भी अमर है। लेकिन दोनों भाषाओंके अच्छेसे-अच्छे जानकार हिन्दुस्तानी बहुत अच्छी तरह जानते होंगे।

उटमंजई, १९ अक्टूबर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २९-१०-१९३८

३१. प्रस्तावना : 'दादाभाई नौरोजी' की

उटमंजई

१९ अक्टूबर, १९३८

बात ४ सितम्बर, १८८८ की है; मैंने बम्बईसे जहाजमें बैठकर [इंग्लैंडके लिए] प्रस्थान किया था। साथमें तीन परिचय-पत्र थे, जिनमें सबसे मूल्यवान था भारतके पितामह दादाभाई नौरोजीके नाम लिखा पत्र। वह पत्र मुझे एक महाराष्ट्री डॉक्टरने दिया था, जो हमारे परिवारके मित्र थे। आदरणीय डॉक्टर साहबने मुझसे कहा, दादाभाई मुझे व्यक्तिगत रूपसे नहीं जानते, बल्कि मैंने तो कभी उनके दर्शन भी नहीं किये हैं; "लेकिन इससे क्या? उन्हें तो सब जानते हैं और भारतके एक महान सपूत और उसके हितोंके प्रबल पक्षधरके रूपमें सब उनमें श्रद्धा रखते हैं। हमारे लिए ही उन्होंने प्रवास स्वीकार किया है। मैं तो उन्हें, उन्होंने भारतकी जो सेवा की

है, उससे जाननेका दावा करता हूँ। तुम देखना कि यह पत्र तुम्हारे लिए उतने ही कामका साबित होगा जितना तब होता जबकि मैं उन्हें व्यक्तिगत रूपसे जानता होता। सच तो यह है कि उनके पास तुम्हें कोई परिचय-पत्र लेकर जानेकी जरूरत ही नहीं है। तुम्हारा भारतीय होना ही उनके लिए तुम्हारा पर्याप्त परिचय है। लेकिन तुम कच्ची उम्रके हो, तुमने देश-दुनिया देखी नहीं है और स्वभावसे संकोची हो। इस पत्रसे तुम्हें भारतके उस पितामहके पास जानेकी हिम्मत बँधेगी, और तुम उनके पास पहुँचे नहीं कि सारी दुविधा-कठिनाई दूर हुई।” और सचमुच हुआ भी ऐसा ही। लन्दन पहुँचकर मुझे यह देखते देर नहीं लगी कि भारतीय विद्यार्थियोंके लिए दादाभाईका दरवाजा हमेशा खुला रहता था। दरअसल वे हर भारतीय विद्यार्थीके लिए, चाहे वह किसी प्रान्त या किसी धर्मका हो, पिता-तुल्य थे; उनकी कठिनाइयोंमें उन्हें परामर्श देने, उनको राह दिखाने के लिए वे हमेशा तैयार रहते थे। मैं सदासे महापुरुषोंका पुजारी रहा हूँ। दादाभाई तो मेरे सचमुच दादा बन गये। जब मैं दक्षिण आफ्रिकामें था, हमारे सम्बन्धोंकी जड़ें अधिकसे-अधिक पुख्ता हो गईं। कारण, मेरे वहाँके काममें वे सदा मुझे सलाह और प्रेरणा देते रहे। ऐसा कोई सप्ताह नहीं गुजरता था जब मैं दक्षिण आफ्रिकामें रहनेवाले भारतीयोंकी अवस्थाका विवरण देते हुए उन्हें पत्र नहीं लिखता था। और मुझे अच्छी तरह याद है कि जब मुझे उनके उत्तरकी प्रतीक्षा रहती थी तब उनका उत्तर न आये, ऐसा कभी नहीं हुआ। वह उत्तर भी हमेशा उनकी अपनी लिखावटमें होता था और ऐसी सरल शैलीमें जिसके घनी वे अकेले थे। उनसे कोई टाइप किया हुआ पत्र मुझे कभी नहीं मिला। और दक्षिण आफ्रिकासे मैं जब भी इंग्लैंड गया, उनके कार्यालयके नामपर उनके पास मैंने बस ८' × ६' का एक दरवा-भर देखा। कोई दूसरी कुर्सी उसमें मुश्किलसे ही आ सकती होगी। उनकी मेज, कुर्सी और फाइलों, इतनेसे ही पूरा कमरा भरा होता था। मैंने देखा कि अपने पत्र वे 'कापींग इंक' स्याहीसे लिखते थे और उनकी प्रतियाँ भी एक विशेष मशीनपर वे खुद ही तैयार करते थे।

श्री मसानीका लिखा यह जीवन-चरित मैंने पढ़ा नहीं है। लेकिन यदि उन्होंने पुस्तकमें इतने महान तथा उदात्त और फिर भी ऐसे सरल व्यक्ति के साथ न्याय किया है तो उनकी कृतिको मेरे या किसीके भी लिखे परिचयकी आवश्यकता नहीं है। मेरी यह कामना है कि जिस प्रकार दादाभाई जी मेरे प्रेरणा-स्रोत रहे उसी प्रकार यह पुस्तक भी पाठकों के लिए प्रेरणा-स्रोत बने।

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८७५) से।

३२. पत्र : रुस्तम मसानीको

उटमंजई

१९ अक्टूबर, १९३८

प्रिय मित्र,

जो प्रस्तावना^१ लिखनेका वादा किया था, साथमें भेज रहा हूँ। आशा है, इसे भेजनेमें मुझसे देर नहीं हुई है।

हृदयसे आपका,

मो० क० गांधी

[पुनश्च :]

आपने अपनी 'द रिलीजन ऑफ द गुड लाइफ' की एक प्रति भेजी थी। अभी कुछ समय मिला है तो उसे पढ़ रहा हूँ।

आपने मेरी फोटो माँगी है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैं अपनी कोई फोटो अपने पास रखता ही नहीं।

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

इंसिडेंट्स ऑफ गांधीजीज़ लाइफ, पृ० १७०

३३. बातचीत : अब्दुल गफ्फार खाँके साथ

[१९/२० अक्टूबर, १९३८]^२

पेशावर और मरदान जिलोंके खुदाई खिदमतगारोंसे मिलनेके लिए वहाँका दौरा करनेके बाद गांधीजी उटमंजई पहुँचे जहाँ अपनी शान्त और एकान्त विश्राम-स्थलीपर उन्होंने बादशाह खानके साथ विचार-विमर्श करनेमें, और दोनोंने अपने-अपने निष्कर्षोंकी तुलना करनेमें दो दिन बिताये। उनकी सीमाप्रान्तकी महत्वपूर्ण यात्राका यह एक महत्वपूर्ण चरण था। गांधीजीने बादशाह खानसे पूछा :

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. हरिजन, १२-११-१९३८ में प्रकाशित प्यारेलालके “ इन द फ्रंटियर प्रॉविन्स-४ ” शीर्षक विवरणके आधारपर।

आपका क्या खयाल बना है ? अहिंसाके बारेमें खुदाई खिदमतगारोंका क्या रख है ?

[बादशाह खान :] महात्माजी, मेरा खयाल है कि जैसाकि उन लोगोंने उस दिन खुद ही हमारे सामने कबूल किया था, वे लोग इसमें बिलकुल नौसिखिये हैं और अभी वे अहिंसाके मानदण्डसे बहुत नीचे हैं। वे अपने दिलसे हिंसाको पूरी तरह निकाल नहीं पाये हैं और वह अब भी उनके दिलमें है। उनमें क्रोधी स्वभावके दोष हैं, किन्तु उनके दिलकी सच्चाई सन्देहसे परे है। यदि उन्हें मौका दिया जाये तो प्रशिक्षणसे उनका सही गठन हो सकता है और मेरे विचारमें यह प्रयास सार्थक होगा। . . . आपने हमें जिस तरह अहिंसाका सिद्धान्त समझाया है यदि उस समूचे सिद्धान्तको हम पचा लें और उसपर अमल कर सकें तो हम कितने ताकतवर हो जायेंगे और हमारा कितना भला होगा। . . .

गांधीजी ने बादशाह खानसे कहा कि अगर अहिंसाके साथ न्याय करते हुए उसे आजमाना है तो खुदाई खिदमतगारोंके वास्ते मैं रचनात्मक अहिंसाका जो एक कड़ा कार्यक्रम सोच रहा हूँ, उन्हें उसका पालन करनेके लिए तैयार रहना होगा।

[बा० खा० :] महात्माजी, मेरा विचार उटमंजईको एक आदर्श गाँव बना देनेका है। कताई-बुनाई केन्द्र स्वयं एक स्थायी प्रदर्शनी-जैसा होगा जिससे गाँववाले कुछ सीख सकें। खुदाई खिदमतगारोंके आश्रममें हम आत्मनिर्भरताका आदर्श लेकर चलेंगे। हम अपने हाथोंसे बने कपड़े ही पहनेंगे, सिर्फ वही फल-सब्जियाँ खायेंगे जिन्हें हमने स्वयं उगाया हो और दूधके लिए एक छोटी-सी गोशाला बनायेंगे। जो चीजें हम खुद तैयार नहीं कर सकते, हम उनका उपयोग नहीं करेंगे।

[गां० :] ठीक है। मैं एक और सुझाव दूँ ? खुदाई खिदमतगारोंके रहनेके लिए जो झोंपड़ियाँ बनानी हैं उनके निर्माणमें भी वे उचित योगदान दें।

[बा० खा० :] हाँ, हमारा यही विचार है।

गांधीजी ने सुझाव दिया कि कार्यकर्ताओंके पहले जत्थेके प्रशिक्षणके लिए बादशाह खान कुछ खुदाई खिदमतगारोंको चुनें और उन्हें वर्धा भेजा जाये जहाँ वे खादी-शास्त्रमें ही पारंगत नहीं बनेंगे, बल्कि उन्हें प्राथमिक चिकित्सा, स्वास्थ्य-सफाई, ग्राम-सुधार कार्य और हिन्दुस्तानीकी भी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त होगी। वहाँ उन्हें वर्धा शिक्षा योजनाकी भी दीक्षा मिलेगी ताकि वे लौटनेपर जनसामान्यकी शिक्षाका काम सँभाल लें। गांधीजी ने कहा :

किन्तु जब तक आप अगुआई करके इन सब विषयोंमें खुद पारंगत नहीं बन जाते तब तक आपका काम आगे नहीं बढ़ेगा।

और अन्तमें यह कहूँगा कि अपने आश्रममें समयकी पाबन्दीका नियम लागू किये बिना आपका सब काम व्यर्थ हो जायेगा। एक पक्का दैनिक कार्यक्रम तय होना चाहिए जिसमें जागने, सोने, भोजन करने, काम और आराम करनेका समय, सभी

मुनिश्चित हों और इस कार्यक्रमका कड़ाईसे पालन करवाया जाये। समयकी पाबन्दी-को मैं बहुत महत्व देता हूँ, क्योंकि यह अहिंसाका एक उपप्रमेय है।

तत्पश्चात् गांधीजी और बादशाह खानने इस बातपर विचार किया कि अपनी अहिंसापर पक्का भरोसा हो जानेके बाद खुदाई खिदमतगारोंको सरहदी हमलोंसे निपटनेके अपने उद्देश्यको पूरा करने के लिए कैसी कार्यप्रणाली अपनानी चाहिए। बादशाह खानका मत था कि पुलिस और सेनाकी मौजूदगीसे यह काम बहुत ही कठिन हो जाता है, क्योंकि पुलिस और सेना पूरी तरह जनताके अधीन नहीं है और उनकी उपस्थितिसे दोहरे शासनके सभी कुपरिणाम सामने आते हैं। “या तो सरकार पूरे दिलसे हमारे साथ सहयोग करे या फिर शुरुआतके तौरपर केवल एक जिलेसे पुलिस और सेनाको हटा ले, तो फिर हम अपने खुदाई खिदमतगारोंके जरिये उस जिलेमें शान्ति बनाये रखनेका जिम्मा लेंगे।” किन्तु गांधीजीका मत और ही था। वे बोले :

मुझे स्पष्ट स्वीकार करना पड़ेगा कि मुझे अधिकारियोंसे यह आशा नहीं है कि वे हमारे साथ खुले दिलसे पूरा-पूरा सहयोग करेंगे। वे हमारे इरादेपर बेशक अविश्वास न करें किन्तु हमारी सामर्थ्यपर विश्वास नहीं करेंगे। केवल हमारे भरोसे पुलिस हटा ली जाये, ऐसी आशा रखना उनसे बहुत बड़ी अपेक्षा रखना होगा। अहिंसा एक सार्वभौमिक सिद्धान्त है और विरोधी वातावरणसे उसकी कार्यशीलता घट नहीं जाती। सच तो यह है कि उसकी उपयोगिताकी परख तभी होती है जबकि वह विरोधके बीच और उसके बावजूद काम करती है। यदि अहिंसाकी सफलता अधिकारियोंके सौहार्दपर ही अवलम्बित हो तो हमारी अहिंसा खोखली होगी और उसकी कोई कीमत नहीं। अगर जनसामान्यपर हमारा पूरा वश कायम हो जाये तो पुलिस और सेनाकी उपस्थितिसे हमें कोई हर्ज नहीं।

और गांधीजी ने बादशाह खानसे ब्रिटिश युवराज [प्रिंस ऑफ वेल्स] के आगमनके मौकेपर हुए बम्बईके दंगोंका वर्णन किया जब पुलिस और सेनाके लिए कोई काम ही नहीं रहा था, क्योंकि कांग्रेसने फौरन स्थितिपर काबू पा लिया और शान्तिकी स्थापना हो गई।

[बा० खा० :] किन्तु दिक्कत यह है कि ये हमलावर अधिकतर ब्रिटिश भारतसे भागे हुए बदमाश ही हैं। हम उनसे सम्पर्क स्थापित नहीं कर सकते, क्योंकि सरकारी अफसर हमें या हमारे कार्यकर्ताओंको कबाइली इलाकोंमें जानेकी इजाजत नहीं देते।

[गा० :] उनको इजाजत देनी ही होगी और मैं कहता हूँ कि जब हम पूरी तरह तैयार हो जायेंगे तो वे अवश्य इजाजत देंगे। किन्तु उसके लिए हमें ऐसे खुदाई खिदमतगारोंका दल चाहिए जो वास्तवमें खुदाके सच्चे सेवक हैं और जिनके लिए अहिंसा एक जीवन्त आस्था बन चुकी है। अहिंसा एक उच्चतम कोटिका क्रियाशील सिद्धान्त है। यह आत्मिक बल या हमारे भीतर स्थित ईश्वरत्वकी शक्ति है। अपूर्ण मनुष्य उस समूचे सारतत्वको समझनेमें असमर्थ है — वह तो उसकी पूरी-पूरी ज्वालाको सह भी नहीं सकता — किन्तु जब उसका एक अत्यन्त सूक्ष्म अंश भी हमारे भीतर सक्रिय

हो उठता है तो अद्भुत परिणाम दिखाता है। आकाशवासी सूर्य समूचे विश्वको अपनी जीवनदायिनी ऊष्मासे भर देता है, किन्तु अगर कोई उसके बहुत निकट पहुँच जाये तो उसे जलाकर भस्म कर देगा। ठीक यही बात ईश्वरत्वकी है। हम जिस हृद तक अहिंसाको अपना लेंगे उस हृद तक हम ईश्वर-जैसे होंगे, किन्तु हम पूरी तरह भगवान तो बन ही नहीं सकते। अहिंसाका असर रेडियम-जैसा है। शरीरके किसी घातक रूपसे अभिवृद्ध अंगमें यदि रेडियमका अत्यन्त सूक्ष्म टुकड़ा डाल दिया जाये तो वह लगातार चुपचाप और अनवरत रूपसे तब तक अपना असर करता रहता है जब तक मांसके समूची रोगग्रस्त कोषोंकी परत स्वस्थ नहीं बन जाती। इसी प्रकार सच्ची अहिंसाका छोटा-सा अंश भी चुपचाप, सूक्ष्म और अदृश्य रूपसे अपना काम करके समूचे समाजको प्रभावित कर देता है।

अहिंसा अपने-आप काम करती है। मृत्युके बाद भी आत्मा रह जाती है और उसका अस्तित्व भौतिक देहपर आश्रित नहीं। इसी प्रकार अहिंसा या आत्मिक बलकी भी परिवृद्धि और उसके प्रभावके लिए भौतिक साधनोंकी आवश्यकता नहीं है।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि एक स्थानपर अहिंसा सफल रूपसे स्थापित हो जाये तो उसका प्रभाव सर्वत्र फैलेगा। उटमंजईमें यदि एक भी डाका पड़े तो मैं कहूँगा कि हमारी अहिंसा सच्ची अहिंसा नहीं है।

अहिंसा-पालनका मूलधार यही सिद्धान्त है कि जो बात हमपर लागू होती है वही समस्त विश्वके लिए भी उतनी ही लागू होती है। मूलभूत रूपमें सभी मनुष्य एक समान हैं। अतः जो मेरे लिए, वही सबके लिए सम्भव है। इसी तर्कधारके सहारे मैं इस निष्कर्षपर पहुँचा कि यदि मैं किसी एक गाँवमें उठनेवाली अनेक समस्याओंका अहिंसात्मक समाधान निकाल लूँ तो उससे पाठ सीखकर मैं पूरे भारतकी वैसी ही समस्याओंका अहिंसात्मक समाधान निकालनेमें समर्थ हो जाऊँगा।

अतः मैंने सेवाग्राममें बस जानेका निश्चय किया। सेवाग्राममें रहना मेरे लिए बड़ा शिक्षाप्रद सिद्ध हुआ है। हरिजनोंके साथके अपने अनुभवोंके फलस्वरूप मुझे अपने विचारमें हिन्दू-मुस्लिम समस्याका एक ऐसा आदर्श समाधान प्राप्त हो गया है जिससे समझौतोंकी कोई जरूरत ही नहीं रह जाती। अगर आप उटमंजईमें सब-कुछ ठीक-ठाक कर पायें तो आपकी पूरी समस्या सुलझ जायेगी। अंग्रेजोंने हमारी रक्षाके प्रकट ध्येयको लेकर पुलिस और सेना रखी है, किन्तु यदि हम उनके सामने सिद्ध कर दें कि उनके इस रक्षणकी सचमुच कोई जरूरत नहीं तो अंग्रेजोंके साथ हमारे सम्बन्ध भी परिवर्तित और शुद्ध हो जायेंगे।

किन्तु बादशाह खानको एक शंका थी। हर गाँवमें कुछ-एक निपट स्वार्थी और नाजायज फायदा उठानेवाले लोग होते हैं जो अपनी स्वार्थपूर्तिके लिए कुछ भी करनेको तैयार रहते हैं। बादशाह खानने पूछा कि क्या ऐसे लोगोंकी पूरी-पूरी उपेक्षा करना ही बेहतर नहीं होगा, या कि उनसे भी सम्बन्ध बनानेकी कोशिश की जाये।

[गा० :] अन्ततः तो हमें उनमें से कुछ लोगोंको त्यागना ही पड़ेगा, किन्तु हमें किसीको भी बिलकुल गया-बीता नहीं मानना चाहिए। हमें दुष्टकी मनःस्थिति समझने-

की कोशिश करनी चाहिए। अक्सर वह अपनी परिस्थितियोंका शिकार होता है। धैर्य और सहानुभूतिके सहारे हम उनमें से कम-से-कम कुछ लोगोंको तो न्यायके पक्षमें खींचनेमें समर्थ हो जायेंगे। इसके अलावा हमें यह भी याद रखना चाहिए कि बुराई भी तभी पनप पाती है जब उसे भले लोगोंका सहयोग मिलता रहे, चाहे वह खुशीसे या जबरन दिया गया हो। केवल सत्य ही आत्म-पोषित है। दुष्टोंकी शैतानी करनेकी ताकतपर रोक-थाम करनेका अन्तिम उपाय यह है कि उनको जरा भी सहयोग न दिया जाये और उन्हें पूरी तरह सबसे अलग कर दिया जाये।

सार रूपमें यही अहिंसात्मक असहयोगका सिद्धान्त है। अतः इसका निष्कर्ष यह निकला कि इसके मूलमें प्रेम होना चाहिए। विपक्षीको दंड देना या उसको हानि पहुँचाना अहिंसकका ध्येय नहीं होना चाहिए। विपक्षीके साथ असहयोग करते हुए भी हमें उसे यही भान कराना है कि हम उसके मित्र हैं और जब भी सम्भव हो उसका उपकार करके हम उसके दिल तक पहुँचनेकी कोशिश करें। वास्तवमें अहिंसाकी कसौटी तो यही है कि अहिंसामय संघर्षके बाद मनमें कोई कड़वाहट बाकी न रहे और अन्ततः शत्रु भी मित्र बन जायें। दक्षिण आफ्रिकामें जनरल स्मट्सके साथ मेरा ऐसा ही अनुभव रहा। शुरूमें वह मेरे कट्टर विरोधी और आलोचक थे और आज वह मेरे अत्यन्त हार्दिक मित्र हैं। आठ साल तक हम परस्पर विपक्षीके रूपमें डटे रहे। किन्तु दूसरे गोलमेज सम्मेलनमें वही थे जो मेरे पक्षमें डटे रहे और उन्होंने सार्वजनिक और निजी रूपसे भी मुझे अपना पूरा समर्थन दिया। कितने ही दृष्टान्त हैं जिनमें से इस एक मिसालका मैं हवाला दे रहा हूँ।

युग बदलता है और व्यवस्थाएँ जर्जर हो जाती हैं। किन्तु मेरा विश्वास है कि अन्ततः केवल अहिंसा और अहिंसापर आधारित वस्तुएँ ही चिरस्थायी होंगी। उन्नीस सौ वर्ष हुए जब ईसाई धर्मका जन्म हुआ था। ईसाका प्रभुत्व तो केवल तीन वर्षों तक रहा। उनके अपने ही समयमें भी उनकी शिक्षाओंको समझनेमें गलतफहमियाँ हुई और आजका ईसाई धर्म तो उनकी इस मूल शिक्षा, कि 'अपने शत्रुसे प्रेम करो', को ही नकारता है। किन्तु मानवकी शिक्षाके किसी केन्द्रीय सिद्धान्तके प्रसारमें उन्नीस सौ वर्ष भला होते ही क्या हैं?

छः शताब्दियाँ और बीत गई और इस्लामका उदय हुआ। बहुत-से मुसलमान मुझे इतना कहनेकी इजाजत तक नहीं देंगे कि इस्लामका शब्दार्थ ही है विशुद्ध शान्ति। 'कुरान' के अध्ययनसे मैं कायल हो चुका हूँ कि इस्लामका मूलाधार हिंसा नहीं है। किन्तु इस सम्बन्धमें भी तेरह सौ वर्ष कालसिन्धुमें एक बिन्दु मात्र है। मुझे पूरा विश्वास है कि ये दोनों महान धर्म उस हद तक ही जीवित रहेंगे जिस हद तक उनके मतावलम्बी अहिंसा-रूपी मूल शिक्षाको आत्मसात् कर लेंगे। यह कोई सिर्फं मस्तिष्कके ग्रहण करनेकी वस्तु नहीं है। इसे तो हमारे हृदयमें बस जाना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

ए पिल्ग्रिमेज फॉर पीस, पृ० ७१-८

३४. टिप्पणी

मिस्टर और एस्क्वायर बनाम श्री, मौलवी, मौलाना, जनाब वगैरह

बम्बई जाकर जिन्ना साहबसे मुलाकात करनेसे पहले मैंने एक वक्तव्य जारी किया था, जिसमें उनके नामसे पूर्व मैंने 'मिस्टर' के बदले 'श्री' शब्दका प्रयोग किया था। उसपर कुछ मित्रोंने कहा था कि यह चीज निश्चय ही जिन्ना साहबको बुरी लगी होगी। मैंने आपत्ति करते हुए कहा कि अगर उन्हें यह चीज बुरी लगी होती तो उन्होंने इसका हल्का-सा इशारा तो किया होता और अगर उन्होंने ऐसा किया होता तो मैं उनसे माफी माँग लेता और उसी विशेषणका प्रयोग करता जो उन्हें सबसे अच्छा लगता। पाठकोंको याद होगा कि जिन दिनों असहयोग आन्दोलन अपने पूरे जोरपर था, कांग्रेसियों और राष्ट्रवादी अखबारोंने 'मिस्टर' और 'एस्क्वायर' शब्दोंका प्रयोग छोड़ दिया था और इनके बदले सबके लिए — चाहे कोई किसी धर्मका हो — प्रायः 'श्री' का ही प्रयोग किया जाने लगा था। यद्यपि इसका प्रयोग अब बहुत हद तक बन्द हो गया है, लेकिन मैंने इसे कभी नहीं छोड़ा है। यदि हममें ऐसी बुरी आदत न होती — बल्कि मैं तो कहने जा रहा था कि अगर हममें गुलामीकी मनोवृत्ति नहीं होती — तो हम भारतीय नामोंके आगे या पीछे 'मिस्टर' और 'एस्क्वायर' शब्दका प्रयोग कभी न करते। एक अंग्रेज यूरोपमें किसी विदेशी व्यक्तिको 'मिस्टर' या 'एस्क्वायर' कहकर सम्बोधित नहीं करता है, बल्कि जो विशेषण जिस देशमें प्रचलित होता है, वहाँके निवासीके लिए उसी विशेषणका प्रयोग करता है। हिटलरके साथ कभी 'मिस्टर' शब्द नहीं जोड़ा जाता है, बल्कि उन्हें 'हर' हिटलर ही कहा जाता है। इसी प्रकार मुसोलिनीको 'मिस्टर' या 'हर' मुसोलिनी नहीं, बल्कि 'सिनोर' मुसोलिनी कहकर सम्बोधित करते हैं। फिर हमने क्यों अपने यहाँके नामोंके साथ जोड़े जानेवाले आदरसूचक शब्दोंका प्रयोग छोड़ दिया, यह बात मेरी समझमें नहीं आती। लेकिन अगर हम क्षण-भरको अपनी मौजूदा आदतके प्रति तटस्थ होकर सोचें, तो पायेंगे कि भारतीय नामोंके साथ 'मिस्टर' या 'एस्क्वायर' शब्द जोड़ना बड़ा हास्यास्पद लगता है।

लेकिन मुझे यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि इस पारस्परिक शंका-सन्देहके वातावरणमें मुसलमानोंके नामोंसे पहले 'श्री' शब्द जोड़ा जाना मुसलमान मित्रोंको शायद अच्छा न लगे। कुछ मुसलमान मित्रोंके साथ मैंने इस विषयकी चर्चा की है। उन्होंने बताया कि आम तौरपर उनके नामोंके साथ 'मौलवी' विशेषणका प्रयोग होता है। दक्षिण भारतमें मुझे 'जनाब' शब्द अकसर सुननेको मिला है। खैर, जो भी हो, मैं इतना कह सकता हूँ कि भारतीय मुसलमानोंके नामोंके साथ 'श्री' शब्दके प्रयोगमें मेरे मनमें परम मित्रताके अतिरिक्त और कोई भाव नहीं रहा है।

मुझे तो कोई 'मिस्टर' कहकर सम्बोधित करता है तो मेरे कानोंको बहुत बुरा लगता है। हिन्दुओंमें प्रचलित सबसे अच्छा रिवाज तो नामके अन्तमें 'जी' जोड़ देना है। 'साहब' 'जी' का ही पर्याय है। मुझे याद है, स्वर्गीय हकीम अजमलखाँ को मैं हमेशा हकीमजी कहकर सम्बोधित करता था। कुछ मुसलमान मित्रोंने मुझसे कहा कि आप 'हकीम साहब' कहें, तो मुसलमानोंको ज्यादा अच्छा लगेगा। यह बात मुझे पहले मालूम नहीं थी। लेकिन जबसे मेरी भूलकी ओर मेरा ध्यान दिलाया गया, मैं उस दिवंगत देशभक्तको हमेशा हकीम साहब कहकर ही सम्बोधित करता रहा। हाँ, अनजानेमें कभी ऐसा न कर पाया होऊँ, तो बात और है। कोई मेरी नंगी पीठपर नमकमें भीगे पाँच बेंत जड़ देता तब भी मैं उनको 'मिस्टर' अजमलखाँ कहकर नहीं पुकारता। लगता है, अंग्रेजी शिक्षा पानेके बाद हम 'मिस्टर' और 'एस्क्वायर' बन जाते हैं! लोकरूढ़ियोंकी विद्यामें निष्णात पाठक क्या इस सम्बन्धमें भारतमें प्रचलित शुद्ध स्वदेशी रूढ़ियोंकी जानकारी देकर मेरी और मुझ-जैसे अन्य लोगोंकी मदद करेंगे?

उटमंजई, २० अक्टूबर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २९-१०-१९३८

३५. पत्र : अमृत कौरको

२० अक्टूबर, १९३८

प्रिय पगली,

मेरी डाक भटक गई है। इसलिए पिछले चार दिनोंसे तुम्हारा कोई समाचार नहीं मिला है। मैं जानता हूँ कि महादेव ठीक ही होगा, फिर भी आदमी पत्र तो चाहता ही है। इस बार बा के स्वास्थ्यको लेकर मुझे चिन्ता जरूर हुई है, लेकिन अब वह खतरसे बाहर है। शायद महादेवको भी अलगसे समाचार मिल जाता है।

यहाँ तो सब ठीक ही है। खुदाई खिदमतगारोंसे मेरी बातचीत अच्छी चल रही है। बल्कि ज्यादा ठीक तो यह कहना होगा कि मैं उन्हें प्रवचन देता हूँ, जिसका अनुवाद खानसाहब करते जाते हैं। वे अनुवादमे अपनी पूरी आत्मा उड़ेल देते हैं। मौन तो मेरा स्वभाव-सा हो गया है।

सप्रेम,

जालिम

[पुनश्च:]

हम कल उटमंजईसे चल रहे हैं और अब इस दौरेमें फिर वापस यहाँ नहीं आयेंगे।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६४२) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६४५१ से भी।

३६. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

२० अक्टूबर, १९३८

चि० ब्रजकृष्ण,

बात करनेका समय रहता ही नहीं।^१ आजकी मेरी सूचना तुमारे लिये, मेरे लिये देशके लिये हितकर है। जो स्वतंत्रता तुम्हें चाहीये वह मिलती तुमारी पुंजी न चाँदी है, न सोना, न उग्र बुद्धि, तुमारी पुंजी है तुमारा अभाग प्रेम उसका सौदा यहाँ पेट-भरके हो सकता है। तुमारे लिये इससे बहतर कोई सेवा मैं ढूँढ़ नहीं सकुंगा। दिल लगे तो कबूल कर लो।

स०^१ के खतसे मैंने माना फ०^३ को भूल गई है। अगर फ० के साथ शादी करना चाहती है तो तुमारे उसको अच्छी तरह सावधान करना है। फ० को भी कहना चाहिये उसके लिये थोड़े ही अच्छा होगा कि एक विवाहित ओरतके साथ शादी करे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४६०) से।

३७. पत्र : हीरालाल शर्माको

पेशावर

२० अक्टूबर, १९३८

चि० शर्मा,

तुमारा खत मिला है। कलकत्ताके अनुभव लिखो। सतीशबाबु दुर्बल हो गये हैं। उनका कुछ हो सके तो करो। के नैसर्गिक बात सब खो बैठे? यह मजाक है। मेरा यहां रहना ९ नवेम्बर तक होगा। बाद सेगांव।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० २७२ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे।

१. ब्रजकृष्ण चाँदीवाला गांधीजी के साथ उठमंजई में थे।

२ और ३. नाम छोड़ दिये गये हैं।

३८. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

कोहाट

२१ अक्टूबर, १९३८

भाई वल्लभभाई,

मैंने तुम्हारे तारका उत्तर दे दिया है। यदि तुम महज एक नागरिककी हैसियत से भी त्रावणकोर जाओ तो भी जीतकर आओगे। जेलमें कैदियोंसे मिलना। बहुत झूठ फैला हुआ है। कांग्रेसकी^१ तरफसे मुझे ढेर सारे तार मिले हैं जिनमें कांग्रेसकी ओरसे हिंसासे साफ इन्कार किया गया है। अन्य तार भी मिले हैं, जिनमें निश्चित रूपसे यह कहा गया है कि हिंसा हुई है। इसका पता तो तभी चल सकता है जब कोई वहाँ जाये। मैंने जो रख अपनाया है वह तो तुम जानते ही हो। सी० पी० के विरुद्ध लगाये गये आरोप या तो वापस ले लिये जायें या उन्हींको मुख्य मुद्दा बनाया जाये। यदि इसीको मुख्य मुद्दा बनाया जाये तो उसके विरुद्ध सत्याग्रह नहीं किया जा सकता। इन दो में से क्या करना है, इसका चुनाव स्थानीय लोगोंको करना होगा। यदि सी० पी० बाहरसे जज बुलाकर मुकदमा चलायें तो लोगोंको चुनौती स्वीकार कर लेनी चाहिए। यदि वे ऐसा न करें तो लड़ाईके लिए ठीक आधार नहीं रहता। तुमने मेरी आखिरी सलाह देखी होगी। किसी भी कारणसे यदि हिंसा हो रही हो तो किसी भी तरह सुलह-समझौता किये बिना सविनय अवज्ञा स्थगित कर दी जाये। जो लोग जेलोंमें पड़े हुए हैं वे भले ही जेलोंमें रहें। कानून-भंगके सिवा शेष पूरा कार्यक्रम चलता रहे। किन्तु वहाँ जानेके बाद तुम्हें जो उचित जान पड़े सो करो। तुम पहले तो रामचन्द्रनसे और फिर कैदियोंसे मिलना।

इसके साथका कानपुरके बालकृष्णका^२ तार देखना। मैंने तारसे उत्तर दे दिया है कि इस मामलेमें मैं कुछ नहीं जानता। पार्लियामेंटरी बोर्डने तो मन्त्रीकी सलाहपर हस्तक्षेप करना स्वीकार किया होगा। यदि ऐसा न हो तो भी प्रान्तीय समिति जो-कुछ करना चाहे सो कर सकती है। मैं माने लेता हूँ कि यह सब तुम्हारे ध्यानसे बाहर नहीं होगा।

आशा है, तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा। मैं अच्छा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

१. त्रावणकोर राज्य कांग्रेस।

२. बालकृष्ण शर्मा, कानपुरके अग्रगण्य कांग्रेसी नेता।

[पुनश्च :]

तुम गांधी सेवा संघसे त्यागपत्र क्यों देते हो? फिलहाल जमनालालजी की हालत बीमारों-जैसी है। त्यागपत्र देनेके बावजूद वे काम तो करेंगे ही न? तुम्हारे त्यागपत्र देनेसे कोई सुधार नहीं होगा।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २२६-७

३९. पत्र : बलवन्तसिंहको

२१ अक्टूबर, १९३८

चि० बलवन्तसिंह,

रात्रीके १२-४५ बज रहे हैं। मेरे पास कलम नहीं है। अब मौका अच्छा है इसलिये सीसापेनसे मीलके कागद पर लिखता हूं। तुमको उत्तर देनेमें विलंब हुआ है। मैं लाचार हूं। दाक्टर थोड़े मुझको रात्रिको काम करनेकी इजाजत देते हैं। आज तो कुछ कारणवशात् नींद नहीं आती। इसलिये मैं तुमको लिख रहा हूं। आशा करता हूं कि मेरे अक्षर पढ़नेमें मुश्किली नहीं होगी। देखता हूं संभव है तो कनुसे शाहीसे लिखवा दूंगा।

मुझे इस दौरा खतम होने तक समय दो। यह मौसम जाय तो जाने दो। गरीब लोग क्या करते हैं? तुमारे लिखनेमें कुछ भी अनुचित नहीं है? मुझे इस पर क्रोध तो है ही नहीं लेकिन मैं हसता भी नहीं। तुमारी भाषाके लिये मेरे मनमें आदर है क्योंकि जैसा तुमारे दिलमें आता है ऐसा ही कहते-लिखते हो। बिल्कुल संभव है कि मैं अंधेरेमें हूं। बल्की ज्यादा संभव वही है क्योंकि इन चीजोंमें मुझे तो कुछ भी ज्ञान नहीं है। मैंने एक बात पकड़ ली है तुम दोनों गोसेवक हैं तुमारेमें महेनत अधिक, गोप्रेम अधिक पारनेरकरमें शास्त्रीयज्ञान अधिक। ऐसी हालतमें मैंने सोचा मैं वही चीज करूं जिसमें दोनों सम्भव हो। ऐसा करते-करते मुझे पता चल जायगा कौन सही कहते हैं दरम्यान नुकसान जायगा तो सहन कर लूंगा।

लेकिन तुमारी बात मुझे मान्य है। मैं इस झनझटमें न पड़ुं लेकिन एक पंच नियत किया जाय जो दोनोंकी बात सुनकर फैसला देवे उसे कबूल किया जाय। चिमनलाल, नाणावटी और मीराबहन ये कैसे? मुझे तो किशोरलालको भी तकलीफ देनेका दिल हो जाता है लेकिन उनको कष्ट क्यों दूं? राधाकिसनको कष्ट देनेमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है। अगर पारनेरकर इन नामोंको पसंद करे तो शीघ्र फैसला हो सकता है। मेरे आनेकी राह न देखी जाय। पारनेरकरको यह बता सकते हो। अब तो मुझे लगता है मैंने सब बातोंका उत्तर दिया है। धीरज रखना।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९११) से।

४०. जब्त की गई जमीनें

सविनय अवज्ञा आन्दोलनके दौरान जब्त की गई जमीनोंको उनके पहलेके मालिकोंको लौटा देनेकी व्यवस्था करते हुए बम्बई विधानमण्डलने जो विधेयक पास किया है और जिसे गलतीसे अधिग्रहण कानून कहा जाता है, उसके बारेमें अगर मैं लोगोंको यह कहने दूँ कि मेरा बस चलता तो यह विधेयक पास न हो पाता तो यह मेरे लिए अनुचित होगा। मुझे यह स्वीकार करना पड़ेगा कि मन्त्रियों द्वारा यह विधेयक पेश किये जानेमें मेरा भी कुछ हाथ था। वस्तुतः मुझे ऐसा लगा कि और कोई रास्ता उचित नहीं होगा। जिन लोगोंने जव्तीके बाद ये जमीनें खरीदी थीं उनके साथ कोई बातचीत चलानेका मतलब या तो यह होता कि सरकारकी ओरसे जबरदस्ती की जाती या फिर उन जमीनोंके तथाकथित मालिक मनमानी कीमतकी माँग करके परिस्थितिसे नाजायज फायदा उठानेकी कोशिश करते। अगर जमीनें असली मालिकोंको लौटाना उचित था तो वह काम कानूनी रूपसे ही होना था। और अगर भारत सरकार अधिनियमके अन्तर्गत यहाँकी सरकारको ऐसा निर्दोष और आवश्यक राहत कानून बनानेका भी अधिकार नहीं है तो यह अधिनियम, जितना इसके आलोचकोंने बताया है, उससे भी खराब है। मैं तो मानता हूँ कि बम्बई सरकारका यह विधेयक न्यायोचित होनेसे भी कुछ बढ़कर ही है। जिस धारामें इसके तथाकथित स्वामियोंको उनकी लागतोंके साथ-साथ ब्याजके रूपमें भी मुआवजा दिये जानेकी व्यवस्था की गई है, वह धारा इसे सचमुच न्यायोचित से भी अधिक मुष्टु और सुन्दर बना देती है। इन जमीनोंके सम्बन्धमें हकीकत यह है — और यह हकीकत साबित की जा सकती है — कि ये जमीनें अधिकारियोंकी मिलीभगतसे खरीदी गईं। सच तो यह है कि इनके खरीदार ढुँढ़ पाना अधिकारियोंके लिए मुश्किल पड़ रहा था। ये जमीनें लोगोंमें आतंक फैलानेके लिए बेची गईं। यह दमन नीतिका एक हिस्सा था और कई स्थानोंपर तो जमीनें कौड़ीके मोल बेच दी गईं। ऐसी आतंककी नीतिसे काम लेनेवाली सरकारका स्थान जब उन लोगोंने लिया जो उसके सताये हुए थे, तब उन्होंने अधिकारियोंकी मिलीभगतसे और जबरदस्त जन-विरोधके बावजूद खरीदी गई जमीनोंको सीधे उनके तथाकथित मालिकोंसे छीन लेनेके बजाय उन्हें मुआवजा देनेकी तत्परता बताई। इसे उदारता नहीं तो और क्या कहा जायेगा ?

यदि सरकार और जनताके बीचकी लड़ाई अहिंसात्मक होनेके बजाय हिंसात्मक होती, तो विजेतापक्ष सत्ता प्राप्त करनेपर निश्चय ही सारी जमीन-जायदाद, जो असली हकदारोंसे छीन ली गई थीं, फिरसे उन्हीं वैध स्वामियोंको वापस लौटा देता और जिन तथाकथित स्वामियोंसे जमीनें छीनता, उन्हें मुआवजेके तौरपर एक पैसा भी नहीं देता। लेकिन यह स्थिति बदली नहीं जा सकती थी। क्योंकि, पहली

चीज तो यह कि संवर्ष अहिंसात्मक ढंगसे किया गया था और दूसरे यह कि भू-स्वामित्वका हस्तान्तरण जाहिरा तौरपर तो कानूनके मुताबिक ही किया गया था। जनताको यह मालूम होना चाहिए कि ये जमीनें तत्कालीन सरकारने पहले जब्त कीं और जब उसे लगा कि जब्तीसे लोगोंका उत्साह तो ठंडा पड़ नहीं रहा है तब उसने उन जमीनोंको बेच देनेका अशोभन रास्ता अपनाया। लेकिन सरकार शायद अपने भीषण अन्यायसे आप ही डर गई और उसने आगे जमीन बेचना बन्द कर दिया। इस दुःखद अतीतकी अधिक चर्चा न करना ही अच्छा होगा। उसकी जो चर्चा मैंने यहाँ कर दी है, वह सिर्फ इसलिए कि पाठक जान जायें कि बम्बई सरकारने कोई अन्याय नहीं किया है।

कोहाट, २२ अक्टूबर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २९-१०-१९३८

४१. तार : घनश्यामदास बिड़लाको

कोहाट

२२ अक्टूबर, १९३८

बिड़ला

रायल एक्सचेंज

कलकत्ता

सोमवार तक कोहाटमें हैं। कार्यक्रम डाकसे भेज रहा हूँ। नौ नवम्बर तक [दौरा] सम्पन्न।

बापू

अंग्रेजीकी प्रति (सी० डब्ल्यू० ७७९९) से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला।

४२. पत्र : अमृत कौरको

कोहाट

२२ अक्टूबर, १९३८

प्रिय पगली,

पेशावरमें कल चार घंटे रुका। वहीं तुम्हारे पाँचों पत्र मिले।

जालिम अगर अन्यायके अलावा कुछ और करने लगे तो फिर वे जालिम काहेके? मगर ईश्वरका धन्यवाद है कि इस जालिमको तो तुम जागरूक न्यायवृत्ति का श्रेय देती हो। महादेवने लिखा है कि अभी पिछले दिनों तुम्हें मूर्च्छा-सी आती जान पड़ी। क्या कारण था? और मूर्च्छित हो जानेपर भी तुम काम करनेका दुराग्रह क्यों रखती हो? या फिर क्या तुम यह चाहती हो कि तुम्हारी मृत्यु (ईश्वर करे, वह वर्षों बाद आये) के बाद लोग कहें कि तुम तो इतनी कर्तव्यनिष्ठ थीं कि मूर्च्छित होने तक तुम काम करती रहती थीं। मेरी भाषामें इसे भूल कहा जायेगा। तुम्हें मूर्च्छित नहीं होना चाहिए। शम्मीके लिए तो प्रेम, अधिकाधिक प्रेम, अनन्त प्रेमके अलावा और कोई उपचार नहीं है। निर्धारित कार्यक्रमका समय हो रहा है, इसलिए अब ज्यादा तो नहीं लिख सकता। तुम्हारा कोहाटके पतेपर लिखा पत्र आ गया है।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६४३) से; सौजन्य: अमृत कौर। जी० एन० ६४५२ से भी।

४३. पत्र : महादेव देसाईको

२२ अक्टूबर, १९३८

चि० महादेव,

कल हम ८-३० पर पेशावर पहुँचे और वहाँसे चार बजे फिर निकल पड़े। वहाँ पाँच दिनसे इकट्ठी डाकका ढेर लगा हुआ था। तुम्हारे सभी पत्र मुझे कल ही मिले।

तुम्हारे मनमें यह शंका कैसे उठी कि तुम्हारे पत्र मुझे बोझ लगेंगे? ऐसी कोई बात नहीं है। बात यह है कि जब तुम्हारा पत्र नहीं मिलता तो मैं व्याकुल हो उठता हूँ। और यदि पत्र संक्षिप्त होता है तो क्रुद्ध हो जाता हूँ तथा सोचने लगता हूँ कि महादेवपर ऐसा क्या काम आ पड़ा जो उसे दो पंक्तियोंमें ही पत्र निबटा देना पड़ा।

बाबलाके बारेमें राजकुमारी लिखती है कि उसे अपनी बुद्धिके विकासका पूरा अवसर मिलना चाहिए। मैं भी यह मानता हूँ कि या तो प्रचलित पद्धतिके अनुसार अर्थात् हाईस्कूल आदिके द्वारा या फिर घरकी पढ़ाईके द्वारा उसे ऐसा अवसर मिलना चाहिए। घरमें पढ़ानेसे उसका विकास एक दिशामें होगा और कॉलेज आदिमें पढ़ानेसे दूसरी दिशामें। तुम इस बारेमें राजकुमारीके साथ विचार-विमर्श करके देखना। जैसाकि इस समय चल रहा है यदि उसके बदले तुम्हें और कुछ सूझे तो फिर हम वैसा करेंगे। इस बारेमें बाबला भी सुझाव दे सकता है।

मैंने लीलावतीको लिखा ही है। तुमसे लिखवानेका कारण यही है कि उसे सभी ओरसे एक ही सलाह मिले। उसने मुझे तो ऐसा नोटिस नहीं दिया है कि अब वह तुम्हारे पास नहीं रहेगी। मैंने ऐसा माना भी नहीं था। फिर भी हम उसे जबरदस्ती तो वहाँ नहीं रखेंगे। किन्तु फिलहाल तो तुम्हारा कुछ निश्चित नहीं है अतः हम इस मामलेमें सोच-विचार क्यों करें?

पोथन मुझे त्रावणकोरके बारेमें लिखता रहता है। सामान्यतः मृत्युके बाद ही किसी व्यक्तिके बारेमें भला-बुरा लिखा जाता है। तुम्हारे मामलेमें मृत्युके पहले ही लिखा गया है। अतः मृत्युके बाद क्या लिखा जायेगा, इस बारेमें क्या सोचना? बादमें तुम्हारी जीवनीका नया संशोधित संस्करण निकलेगा। यदि पोथन नहीं तो उसका कोई भाई नई संशोधित टिप्पणी लिखेगा।

आज और अधिक नहीं लिखता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६६५) से।

४४. पत्र : प्रभावतीको

कोहाट

२२ अक्टूबर, १९३८

वि० प्रभा,

मैंने तुझे दो पत्र तो लिखे हैं। एकमें श्यामजी भाईके नाम ३०० रुपयेका पुर्जा भेजा था।^१ आशा है वह तुझे मिल गया होगा। जयप्रकाश जैसा कहें तुझे वही करना चाहिए। यदि उसके साथ जाना पड़े तो चली जाना। लेकिन ऐसी स्थितिमें भी सरस्वतीको अपने साथ लाना। उसे किसी पासके स्टेशनपर उतार देना। वहाँसे

१. श्यामजी सुन्दरदासको लिखे पत्रमें वास्तवमें २०० रुपये का जिक्र है; देखिए खण्ड ६७, पृ० ४७७।

मैं किसीके साथ उसे यहाँ बुलवा लूँगा। तुझे त्रिवेन्द्रम तो जाना पड़ेगा। अधिक लिखनेका समय नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५२३) से।

४५. भाषण : कोहाटकी सार्वजनिक सभामें^१

२२ अक्टूबर, १९३८

आपके कष्टों और कठिनाइयोंकी जानकारी पानेमें मैंने आज घंटे-भरसे अधिक समय दिया है। लेकिन मैं आपके सामने स्वीकार करता हूँ कि इन बातोंके सम्बन्धमें कुछ करने लायक अब मैं नहीं रह गया हूँ। एक ओर तो बुढ़ापा मुझपर हावी होता जा रहा है और दूसरी ओर मेरी जिम्मेदारियोंमें भी विविधता आती जा रही है, और ऐसा खतरा है कि यदि मैं सभी कामोंमें हाथ डालूँ तो मेरी जो जिम्मेदारियाँ ज्यादा महत्वकी हैं, शायद उन्हें भी न निभा पाऊँ। इनमें से एक बड़े महत्वकी जिम्मेदारी है खुदाई खिदमतगारोंके बारेमें स्वीकार की गई जिम्मेदारी। यदि खान साहबके सहयोगसे मैं इसे अपने लिए सन्तोषजनक ढंगसे निभा पाऊँ तो मानूँगा कि मेरे जीवनके आखिरी वर्ष बेकार नहीं गये।

लोग मुझपर और मेरे इस विचारपर हँसते हैं कि खुदाई खिदमतगार स्वराज्यके पूर्ण अहिंसक सेनानी बन सकते हैं। लेकिन उनके उपहासका मुझपर कोई असर नहीं होता। अहिंसा शरीरका नहीं, आत्माका गुण है। एक बार जब इसका मर्म हृदय-तलमें उतर जाता है तो बाकी सब अपने-आप होता चला जाता है। मानव-स्वभावकी दृष्टिसे खुदाई खिदमतगार मुझसे भिन्न नहीं हैं। और मुझे पूरा विश्वास है कि यदि मैं किसी हद तक अहिंसाका आचरण कर सकता हूँ तो वे — और वही क्यों, दूसरे लोग — भी वैसा कर सकते हैं। इसलिए आप सब मेरे साथ मिलकर प्रभुसे प्रार्थना करें कि खुदाई खिदमतगारोंके बारेमें मेरा जो सपना है, उसे वह सच बनाये।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ५-११-१९३८

१. प्यारेलाल नैयरके “इन द फ्रंटियर प्रोविन्स-३” शीर्षक विवरणसे उद्धृत। सभामें कोहाटके नागरिकोंकी ओरसे जिन्हा कांग्रेस कमेटीने गांधीजी को कुछ मानपत्र भेंट किये थे। सभामें लगभग ५,००० लोग उपस्थित थे।

४६. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

कोहाट

[२२/२३ अक्टूबर, १९३८]'

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारा खत पढ़ने पर मुझे ऐसा लगता है कि इस वखतके लिये तो तुमारे दिल्लीमे ही रहना होगा। जितने काम बताये हैं वे सब कर्त्तव्य हैं।

मीरठवालोंको मैं लिखुंगा।

स० के बारेमें तो जो उचित लगे सो किया जाय। फ० को मैं लिखुं ?

मेरे साथ रहनेके बारेमें तो मैंने इजाजत दी ही है। लेकिन इस इच्छाको भी मोह समजो। रमण महर्षि और अरविंदो एकांगी हैं और मैं सर्वांगी इतना ही कहना पर्याप्त नहीं है। एकांगी जो अपना कार्य समजता है और अमल करता है वह सच्चा। जो सर्वांगी होनेका दावा करता है लेकिन सर्वमें प्रयोग ही कर रहा है वह फूटी बदामसे भी बदतर हो सकता है। मैं कहां हूं सो तो भगवान ही जानता है। मैं साधक हूं, वे सिद्ध माने जाते हैं। शायद है भी। उनके अनुयायी तो सिद्ध ही मानते हैं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४५९) से।

४७. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ

कोहाट

[२२/२३ अक्टूबर, १९३८]'

खुदाई खिदमतगार संगठनके अधिकारियोंसे कोहाटमें बातचीत करते हुए गांधीजी ने उन्हें बताया कि आपने जो कदम उठाया है, वह अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम है। मैं पहले कई बार कह चुका हूँ कि पठान लोग, जोकि शस्त्रास्त्रोंके प्रयोगमें अपनी दक्षता के लिए सारी दुनियामें प्रसिद्ध हैं, यदि शस्त्र-त्याग करके सचमुच अहिंसाका वरण कर लें तो वह दिन भारत और विश्वके इतिहासका एक चिरस्मरणीय दिवस होगा।

१. इन दिनों गांधीजी कोहाटमें थे।

२. गांधीजी इन दो दिनों कोहाट में थे, किन्तु साधन-सूत्र से पता चलता है कि यह बातचीत खुदाई खिदमतगारोंके साथ २३ तारीखको हुई बातचीत (देखिए पृ० ४८-५१) से पहले हुई थी।

अच्छा-बुरा तो मैं नहीं जानता, लेकिन यह बात सच है कि आज भारतके एक सामान्य आदमीके लिए पठान एक हौआ बन गया है। गुजरात और काठियावाड़में तो पठानका नाम सुनकर बच्चे डरसे पीले पड़ जाते हैं। सावरमती आश्रममें हम बच्चोंके अन्दर निडरताकी भावना पैदा करनेका प्रयत्न करते हैं। लेकिन मैं शर्मके साथ यह स्वीकार करता हूँ कि सारी कोशिशोंके बावजूद हम उनके दिलसे पठानका डर नहीं निकाल पाये हैं। मैं अपने आश्रमकी लड़कियोंके मनमें अभी यह बात नहीं बैठा पाया हूँ कि उन्हें पठानसे डरने की जरूरत नहीं है। वे बहादुर होनेका दिखावा करनेकी कोशिश करती हैं, लेकिन वह तो ऊपरी दिखावा-भर है। साम्प्रदायिक दंगेके अवसरपर अगर खबर मिले कि एक पठान कहीं आसपास है तो वे अपने घरोंसे निकलनेका साहस नहीं करतीं। वे डरती हैं कि उनका अपहरण कर लिया जायेगा।

मैं उन्हें समझाता हूँ कि उनका अपहरण हो जाये तो भी उन्हें डरना नहीं चाहिए। उन्हें अपहरणकर्तासे कहना चाहिए कि वह उनके साथ वैसा ही व्यवहार करे जैसेकि वे उसकी बहन हों। अगर उनके अनुनय-वितयके बावजूद वह अपनी नीयतसे बाज न आये, तो (चूँकि एक दिन सभीको मरना है) वे अपनी जीभ काटकर मर जायें, लेकिन समर्पण न करें। वे जवाब देती हैं, 'आप जो कहते हैं वह ठीक है। लेकिन हमारे लिए यह सब नया है। हमें भरोसा नहीं है कि समय आनेपर हम जैसा आप कहते हैं वैसा कर सकेंगी।' यदि आश्रमकी लड़कियोंका यह हाल है तो औरोंका क्या हाल होगा? इसीलिए जब मैं सुनता हूँ कि पठानोंके बीच खिदमत-गारोंका एक दल संगठित हुआ है जिसने हिंसाका पूर्ण त्याग कर दिया है तो मैं तय नहीं कर पाता कि इसपर विश्वास करूँ या न करूँ।

हिंसाका त्याग करनेके फलितार्थ क्या हैं और हिंसाका त्याग करनेवाले व्यक्तिकी पहचान क्या है?

इस प्रश्नको उठाते हुए गांधीजी ने कहा कि खुदाई खिदमतगार नाम ग्रहण करने से ही कोई खुदाई खिदमतगार नहीं हो जाता, और न खुदाई खिदमतगारकी वर्दी पहननेसे ही हो जाता है। इसके लिए अहिंसाके सतत प्रशिक्षणकी आवश्यकता होती है। यूरोपमें, जहाँ हत्याको एक सम्मानजनक पेशा बना दिया गया है, विनाशके विज्ञानको पूर्ण बनानेपर करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं। यूरोपके सर्वोत्तम वैज्ञानिक इस काममें लगाये गये हैं। यहाँ तक कि वहाँकी शिक्षा-प्रणाली भी इसीके गिर्द रची गई है। वे ऐयाशी और सुख-सुविधाके साधनोंपर विराट धनराशियाँ खर्च करते हैं। विलास और आराम उनके आदर्शका अंग बन गये हैं। इसके विपरीत, एक खुदाई खिदमतगारकी विशेषता होनी चाहिए पवित्रता, अध्यवसाय और ईश्वरकी सृष्टिकी सेवामें अनवरत कठोर परिश्रम।

अन्य प्राणियोंकी सेवा करते हुए आपको इस बातका कुछ अनुमान होगा कि आपने अहिंसाकी दिशामें कितनी प्रगति की है और अहिंसाकी शक्तिका भी आपको अनुभव होगा। इस शक्तिसे सम्पन्न एक व्यक्ति अकेला समस्त संसारके विरुद्ध खड़ा हो सकता है। लेकिन तलवारकी ताकतके बूते ऐसा नहीं किया जा सकता।

अभी तक सविनय अवज्ञा करना और सविनय अवज्ञाके लिए मिलनेवाले दण्डको अहिंसक भावसे स्वीकार करनेको ही अहिंसा माना जाता रहा है। लेकिन मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यद्यपि अहिंसाके कार्यक्रममें सविनय अवज्ञा शामिल है, लेकिन जैसाकि मैंने स्वाबीमें बताया था, इसका सार-तत्त्व वह नैतिक अधिकार अथवा योग्यता है जिसका होना एक सविनय प्रतिरोधीमें आवश्यक है, और यह अधिकार या योग्यता उसी व्यक्तिको प्राप्त होता है जिसने अहिंसाके आचरणका अभ्यास डाल लिया है। सत्याग्रहकी लड़ाईमें 'सविनय अवज्ञा आरम्भिक नहीं, अन्तिम चरण है।' लोगोंको सरकारसे बहुत डर लगा करता था। इसको दूर करनेके लिए मैंने सत्याग्रह या सविनय अवज्ञाका तरीका सुझाया। यह एक तीखी दवा है।

शक्तिशाली औषधि देनेवाले हकीमको अगर ठीक-ठीक यह न मालूम हो कि कब दवा रोक देनी चाहिए, तो उसका मरीज मर जायेगा। इसीलिए जब स्थितिकी वैसी माँग हुई, मैंने तुरन्त सविनय अवज्ञा [आन्दोलन] बन्द कर दिया, और केवल अपने तक ही उसे सीमित कर दिया।^१ यह बिल्कुल ठीक वक्तपर हुआ। इसलिए मैं चाहूँगा कि फिलहाल आप सविनय अवज्ञाकी बात भूल जायें।

इसके बाद गांधीजी ने समझाया कि ईश्वरकी सेवा ईश्वरके बन्दोंकी सेवाके जरिये ही हो सकती है। अन्ध-विश्वासी समझे जानेका खतरा उठाकर भी मैंने हर चीजमें भगवानका हाथ देखनेकी कोशिश करनेकी आदत डाल ली है। इसीलिए बादशाह खानने आप लोगोंके लिए जो नाम चुना है, उसमें भी मैं ईश्वरका ही हाथ देखता हूँ। बादशाह खानने आप लोगोंको सत्याग्रही न कहकर खुदाई खिदमतगार कहा है।

चूँकि ईश्वर अशरीरी है, और उसे किसी प्रकारकी निजी सेवाकी आवश्यकता नहीं है, तो फिर उसकी सेवा कैसे की जाये? उर्दूका एक शेर है जिसका अर्थ है, "इंसान खुदा नहीं है, लेकिन तत्त्वतः वह खुदासे फर्क नहीं है।" हम अपने गाँवको अपनी दुनिया बनाये। तब हम अपने गाँवकी सेवा करते हुए खुदाकी सेवा करेंगे। बेरोजगार लोगोंको रोजगार मुहैया करना, रोगियोंकी सेवा-शुश्रूषा करना, लोगोंकी गन्दगीकी आदतोंको छुड़वा कर सफाई-स्वच्छतासे रहनेकी शिक्षा देना खुदाई खिदमतगारका काम होना चाहिए। और चूँकि वह जो-कुछ भी करेगा, वह खुदाकी सेवाके रूपमें करेगा, इसलिए वह अपना काम किसी भी वेतनभोगी कार्यकर्ताकी अपेक्षा ज्यादा लपन और मेहनतसे करेगा।

अपने भाषणका अन्त गांधीजी ने यह बताते हुए किया कि अहिंसक शक्तिका विकास किस प्रकार करना चाहिए।

खुदाई खिदमतगार समयको खुदाकी अमानत मानते हुए उसके एक-एक मिनटका हिसाब रखेगा। अपने वक्तका एक मिनट भी आलस या फिजूलके कामोंमें नष्ट करना

१. देखिए "भाषण: स्वाबीमें", पृ० २२।

२. अप्रैल १९३४ में गांधीजी ने सारे कांग्रेसियोंको यह सलाह दी थी कि खास-खास शिकायतोंको छोड़कर सामान्य रूपसे स्वराज्य-प्राप्ति के निमित्त सविनय अवज्ञा स्थगित रखें; देखिए खण्ड ५७, पृ० ३७८-८१।

खुदाकी निगाहमें गुनाह है। यह चोरी करने-जैसा है। अगर उसके पास जमीनका कोई छोटा-सा टुकड़ा भी हो तो उसपर वह निराश्रित और जरूरतमन्द लोगोंके लिए कोई चीज उगायेगा। अगर उसके माता-पिताके पास इतना पैसा है कि वह बाजारसे खाने-पीनेकी वस्तुएँ और सब्जियाँ खरीद सकता है, और इसी कारण उसे हाथपर हाथ धरकर बैठने और कुछ न करनेकी इच्छा हो, तो वह अपने मनमें सोचेगा कि बाजारकी वस्तुओंको इस प्रकार इस्तेमाल करके वह गरीबोंको उन चीजोंसे वंचित करता है और इस प्रकार वह ईश्वरकी वस्तुकी चोरी करता है। कोई चीज खरीदने या इस्तेमाल करनेसे पहले खुदाई खिदमतगार अपने-आपसे पूछेगा कि क्या कोई दूसरा व्यक्ति तो नहीं है जिसकी जरूरतें उसकी जरूरतोंसे ज्यादा हों। मान लें कि कोई व्यक्ति उसके सामने भरी हुई थाली रखे और उसी समय एक भूखा आदमी वहाँ आ जाये, तो खुदाई खिदमतगार पहले उस भूखेकी जरूरतका विचार करेगा, उसे भोजन करायेगा, और इसके बाद ही उस थालीमें से खायेगा।

[अंग्रेजीसे]

ए पिल्ग्रिमेज फॉर पीस, पृ० ८३-६

४८. पत्र : महादेव देसाईको

२३ अक्टूबर, १९३८

चि० महादेव,

सुशीलाकी कलमकी स्याही खतम हो गई है, इसलिए समय बचानेके लिए पेंसिलसे काम चला रहा हूँ। यह मुझे ब्रजकृष्णने दी है। साथका पत्र मैं तुम्हारे देखनेके लिए ही भेज रहा हूँ। मैंने अगाथाको सीधे यहाँ आनेको लिखा है। मुझे लौटनेमें विलम्ब होगा और वह जहाँ-तहाँ घूमती रहे यह मुझे अच्छा नहीं लगता। यहाँ कुछ स्थानोंपर ऐसे रमणीक दृश्य देखनेको मिलते हैं कि तुम्हारी याद आ जाती है। आबहवा तो अच्छी है ही। राजकुमारीको मैं आज नहीं लिख रहा हूँ।

पत्रोंका ढेर लगा हुआ है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६६७) से।

४९. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ

हुंगू
[२३ अक्टूबर, १९३८]^१

गांधीजी ने मार्गमें नसरत खेलमें खुदाई खिदमतगारोंके कार्यालयके शिलान्यास समारोहके अवसरपर दिये गये मानपत्रका जिक्र किया और कहा कि उसमें “हमारे अन्तिम संघर्ष” की चर्चा थी। उन्होंने कहा :

मैं आपसे कहूंगा कि सविनय अवज्ञा तो आती-जाती रहेगी परन्तु स्वतन्त्रता-प्राप्तिके लिए हमारा अहिंसक संघर्ष जारी रहेगा और तब तक चलेगा जब तक स्वतन्त्रता हासिल नहीं हो जाती। केवल इसका स्वरूप ही बदला है।

मैं जानता हूँ कि ९० प्रतिशत भारतीयोंके लिए अहिंसाका अर्थ इसके अलावा और दूसरा कुछ नहीं है।^२ यहाँ तक तो ठीक है। इसमें बड़ाडूरी है। परन्तु आपको, और विशेषतया खुदाई खिदमतगार संगठनके पदाधिकारियोंको यह अच्छी तरहसे समझ लेना चाहिए कि अहिंसाकी यही इतिश्री नहीं है। यदि आपने वास्तवमें ही अहिंसाका अर्थ समझ लिया है तो यह बात आपको स्पष्ट हो जानी चाहिए कि अहिंसा ऐसा कोई सिद्धान्त अथवा सद्गुण नहीं है जिसका प्रयोग किसी विशिष्ट अवसरपर अथवा किसी दल या समुदाय विशेषसे निपटते वक्त ही किया जाये। इसे तो हमारे जीवनका एक अंग बन जाना चाहिए। हमारे दिलसे क्रोधका नामोनिशान मिट जाना चाहिए अन्यथा हममें और दमनकारियोंमें फर्क ही क्या है? कोई व्यक्ति क्रोधके वशीभूत होकर गोली चलानेका आदेश दे सकता है, दूसरा व्यक्ति अपशब्दोंका प्रयोग कर सकता है और तीसरा लाठी चला सकता है। तीनोंके क्रुद्धत्यका मूल तो एक ही है। जब आप क्रोधका अनुभव न करें अथवा अपने हृदयमें क्रोधको जगह न दें केवल तभी आप यह दावा कर सकते हैं कि आपने हिंसाको निकाल फेंका है, अथवा यह आशा कर सकते हैं कि आप आखिरी क्षण तक अहिंसक बने रह सकेंगे।

इसके बाद उन्होंने सविनय अवज्ञा और सत्याग्रहके बीच जो अन्तर है, उसे समझाया। उन्होंने कहा :

हमारी सविनय अवज्ञा अथवा असहयोग स्वभावतः कुछ ऐसी चीज कि है इसका प्रयोग हमेशा-हमेशाके लिए नहीं किया जा सकता। परन्तु अपनी रचनात्मक अहिंसाके

१. हरिजन, ५-११-१९३८ में प्रकाशित प्यारेलाल्की रिपोर्ट “इन द फ्रंटियर प्रॉविन्स-३” के अनुसार गांधीजी २३ अक्टूबर, १९३८ को हुंगू गये थे।

२. मानपत्रमें यह भी कहा गया था कि खुदाई खिदमतगार दमनचक्रके आगे न झुके हैं और न कभी झुकेंगे।

माध्यमसे जो संघर्ष आज हम कर रहे हैं उसका औचित्य हमेशा कायम रहेगा। यह एक वास्तविक चीज है। मान लिया जाये कि सरकार सविनय अवज्ञाकारियोंको गिर-फ्तार करना बन्द कर देती है तो इससे हमारा जेल जाना रुक जायेगा, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि हमारा संघर्ष समाप्त हो गया। कोई सविनय अवज्ञाकारी इसलिये जेल नहीं जाता कि वह जेलके नियमोंका उल्लंघन करके जेल-अधिकारियोंको परेशान करे। हाँ, जेलमें भी सविनय अवज्ञा की जा सकती है। परन्तु इसके लिए कुछ सुनिश्चित नियम हैं। असल बात तो यह है कि सविनय अवज्ञाकारीका संघर्ष उसके जेल चले जाने मात्रसे ही समाप्त नहीं हो जाता। हमारे जेलके अन्दर जाते ही जहाँ तक बाह्य संसारका सम्बन्ध है, हम सविनय अवज्ञाकारीके रूपमें मृतक बन जाते हैं, परन्तु इसके साथ ही जेलके भीतर सरकारके दासों अर्थात् जेलके अधिकारियोंके हृदय-परिवर्तनके लिए हमारा संघर्ष शुरू होता है। इससे हमें उन्हें यह दिखानेका अवसर मिलता है कि हम चोर या डकैतोंके समान नहीं हैं, हम उनका बुरा नहीं चाहते और न ही हम अपने विरोधियोंको बरबाद करना चाहते हैं। इसके विपरीत, हम तो उन्हें यह दिखाकर कि हममें कोई बुराई नहीं है, हम हृदयसे उनकी भलाई चाहते हैं और दिलमें भगवानसे उनके कल्याणको कामना करते हैं, उन्हें अपना मित्र बनाना चाहते हैं। उनके सही या गलत आदेशोंका गर्दन झुकाकर पालन करके उन्हें हम अपना मित्र बनानेकी इच्छा नहीं रखते, क्योंकि सच्ची मित्रता जीतनेका यह तरीका नहीं है। जब मैं जेलके सींखचोंमें बन्द था तब भी मेरा संघर्ष चलता रहा। अनेक बार मैं जेल गया हूँ और हर बार अपने पीछे वहाँ जेल-अधिकारियों तथा अन्य दूसरे लोगोंको, जिनके सम्पर्कमें मैं आया, अपने मित्रके रूपमें छोड़कर बाहर निकला।

अहिंसाकी यह एक विशेषता है कि इसका असर कभी समाप्त नहीं होता। यही बात तलवार या गोलीके बारेमें नहीं कही जा सकती। गोलीसे दुश्मन नष्ट हो सकता है; अहिंसा दुश्मनको मित्रके रूपमें बदल देती है और इस प्रकार सविनय अवज्ञाकारीको इस काबिल बना देती है कि वह अपने दुश्मनकी शक्ति भी अपनेमें समाहित कर ले।

उन्होंने आगे कहा कि अपने सविनय अवज्ञा आन्दोलनके जरिये हमने दुनियाको अपना यह दृढ़ संकल्प जता दिया है कि अब हम अंग्रेजोंकी गुलामी और स्वीकार नहीं कर सकते। लेकिन अब हमें एक इससे भी उच्च कोटिकी बहादुरीका प्रमाण देना है। खिलाफतके दिनोंमें कहावर और हट्टे-कट्टे पठान सैनिक अली-बन्धुओं तथा मुझसे गुप्त रूपसे मिलने आया करते थे। वे यह सोचकर काँपते रहते थे कि उनका इस तरह आना कहीं उनके अफसरोंको पता न चल जाये और उन्हें नौकरीसे निकाल न दिया जाये। अपने लम्बे कद और शारीरिक शक्तिके बावजूद भी जब उनका सामना अपनेसे अधिक ताकतवर व्यक्तिसे हो जाता था तो वे डर जाते थे और दासवत् व्यवहार करने लगते थे।

मैं अपने अन्दर ऐसी शक्ति चाहता हूँ जिससे मैं अपने एकमात्र स्वामी भगवानके सिवा किसी दूसरेके सामने न झुकूँ। जब मैं ऐसा कर सकूँ केवल तभी मैं अहिंसा हासिल कर लेनेका दावा कर सकता हूँ।

इसके बाद उन्होंने अहिंसाकी एक अन्य विशेषताको विस्तारपूर्वक समझाते हुए कहा कि अहिंसाको किस तरह प्रयोगमें लाया जाये, यह सीखनेके लिए किसीको किसी विद्यालयमें अथवा किसी पीर या गुरुके पास जानेकी आवश्यकता नहीं है। इसकी सरलता ही इसकी खूबी है। यदि लोग यह समझ जायें कि यह एक ऐसा अत्यन्त क्रियाशील सिद्धान्त है जो बिना रुके या धीमा पड़े चौबीसों घंटे कार्य करता रहता है तो वे ऐसे मौकोंकी तलाशमें रहेंगे जब वे इसका प्रयोग घरोंमें, गलियोंमें और मित्रों ही नहीं बल्कि दुश्मनोंके साथ भी कर सकें। आप अपने घरोंमें आजसे ही इसपर आचरण करना शुरू कर सकते हैं। मैंने अपने ऊपर इतना संयम प्राप्त कर लिया है कि अपने दुश्मनके ऊपर मैं कभी क्रोध नहीं करता, हालाँकि कभी-कभार मित्रोंके ऊपर क्रोध कर बैठता हूँ। अहिंसाका जितना कुछ अभ्यास मुझे है, उसे मैंने अपनी पत्नीसे सीखा है। इसके साथ ही गांधीजी ने अपने पारिवारिक जीवनके एक मर्मस्पर्शी पहलूके बारेमें विस्तारसे बताते हुए कहा कि पहले मैं घरमें बिल्कुल तानाशाह बना रहता था। मेरा अत्याचार प्रेमका अत्याचार था।

मैं उसपर [अपनी पत्नीपर] अपना सारा क्रोध उतार देता था। वह उसे बिना किसी शिकायतके चुपचाप सह लिया करती थी। मैं समझता था कि चूँकि मैं उसका स्वामी हूँ इसलिए मेरी आज्ञा मानना उसका कर्तव्य है। परन्तु उसकी विनम्रताने मेरी आँखें खोल दीं और मैं यह महसूस करने लगा कि उसके ऊपर मेरा कोई शाश्वत अधिकार नहीं है। यदि मैं चाहता हूँ कि वह मेरी आज्ञाका पालन करे तो पहले मुझे उसे शान्तिपूर्वक समझाना-बुझाना होगा। और इस प्रकार वह मुझे अहिंसा सिखानेवाली शिक्षिका बन गई। मैं यह मानता हूँ कि मेरी जिन्दगीमें उससे बढ़कर निष्ठावान और विश्वासी मित्र मुझे दूसरा कोई नहीं मिला है। मैं उसके लिए जिन्दगी नरक बनाता रहता था। मैं जब-तब अपना घर बदला करता था और उसे निर्देश देता था कि वह कौन-सा कपड़ा पहने। उसका पालन-पोषण एक कट्टरपंथी परिवारमें हुआ था जहाँ छुआछूतका विचार किया जाता था। हमारे घर मुसलमान और अछूत प्रायः आया करते थे। मैं उसकी स्वाभाविक, अनिच्छाकी परवाह किये बिना उससे उनकी आव-भगत कराया करता था। लेकिन उसने कभी 'ना' नहीं की। वह शिक्षाके प्रचलित अर्थमें शिक्षित नहीं थी और सीधी-सादी थी। उसकी निश्छल सरलताने मुझे पूरी तरहसे जीत लिया।

आप सबके घरोंमें माँ, बहनें और पत्नियाँ हैं। आप उनसे अहिंसाका सबक सीख सकते हैं। इसके साथ-साथ आप सत्यकी शपथ लें। आप अपनेसे ही पूछें कि आप सत्यको कितना मूल्यवान समझते हैं और इसे आप किस हद तक मनसा,

वाचा, कर्मणा अपनाते हैं। जो व्यक्ति सत्यवादी नहीं है वह अहिंसासे बहुत दूर है। असत्यता स्वयमेव हिंसा है।

रमजानका महीना जो अभी-अभी शुरू हुआ था, उसकी चर्चा करते हुए उन्होंने उन लोगोंको बताया कि किस प्रकार इसका उपयोग अहिंसाका अभ्यास प्रारम्भ करनेमें किया जा सकता है।

ऐसा लगता है कि हम यह मान बैठे हैं कि भूखे-प्यासे रहना ही रमजान मनाना है। रमजानके पवित्र महीनेमें छोटी-छोटी बातोंपर गुस्सा करने, अथवा दुराचार करनेके बारेमें हम तनिक भी नहीं सोचते। उपवास तोड़ते समय भोजन परोसनेमें थोड़ी-सी भी देर होनेपर बेचारी पत्नीकी बुरी तरह लानत-मलामत की जाती है। मैं इसे रमजान मनाना नहीं कहता, यह तो इसका मजाक उड़ाना है। यदि आप अहिंसा अपनाना चाहते हैं तो आपको प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि चाहे जो हो, आप गुस्सा नहीं करेंगे अथवा परिवारके सदस्योंपर हुकूमत नहीं जतायेंगे या उनपर हुकम नहीं चलायेंगे। इस प्रकार दैनिक जीवनमें जो भी छोटे-छोटे अवसर मिलें उनका उपयोग आप स्वयं अपने जीवनमें अहिंसाको अपनाने तथा इसे अपने बच्चोंको सिखानेमें कर सकते हैं।

एक दूसरा दृष्टान्त देते हुए गांधीजी ने कहा कि मान लीजिए किसीने आपके बच्चेको पत्थर मार दिया है। आम तौरपर एक पठान अपने बच्चेसे यह कहता है कि वह मार खाकर रोते हुए घर न आये बल्कि ईंटका जवाब पत्थरसे दे, किन्तु अहिंसाका पुजारी अपने बच्चेसे यह कहेगा कि पत्थरका जवाब पत्थरसे देनेके बजाय वह पत्थर मारनेवाले बच्चेको गले लगाये और उसे अपना दोस्त बना ले।

यही नुस्खा, अर्थात् दिलसे पूरी तरहसे क्रोध निकाल देना तथा प्रत्येक व्यक्तिको मित्र बनाना, वास्तवमें भारतको स्वतन्त्रता दिलानेके लिए काफी है। भारतके निर्धन जनसमुदायको स्वतन्त्रता दिलानेका यह सबसे विश्वसनीय और शीघ्र फलदायक रास्ता है, और मेरा दावा है कि यही एकमात्र रास्ता भी है।

[अंग्रेजीसे]

ए पिल्ग्रिमेज फॉर पीस, पृ० ८७-९१

५०. राष्ट्रीय झण्डा

एक भाई लिखते हैं :

आजकल धार्मिक उत्सवों और अनुष्ठानोंके अवसरोंपर राष्ट्रीय झण्डेको कुछ इस तरह फहरानेकी प्रवृत्ति देखी जाती है जिससे धर्म-सम्बन्धी ध्वज-पताकाओं तथा अन्य प्रतीकोंसे उसकी स्पर्धाका और उनके मुकाबले उसे श्रेष्ठ दिखाने की कोशिशका आभास मिलता है। यह प्रवृत्ति इतनी बढ़ गई है कि इस ओर आपका ध्यान देना आवश्यक है। यह तो हम सब चाहते हैं कि राष्ट्रीय झण्डा एकता और सभी दिशाओंमें निर्बाध रूपसे आगे बढ़नेके हमारे संकल्पका प्रतीक बने, लेकिन राष्ट्रीय झण्डे तथा जिन्हें धार्मिक अनुष्ठानोंके अवसरोंपर प्रमुखता मिलनी चाहिए, ऐसे धार्मिक ध्वज-पताकाओं और अन्य प्रतीकोंके बीच स्पर्धा खड़ी करके तो हम उस उद्देश्यको ही विफल कर देंगे जिसको ध्यानमें रखकर हमने राष्ट्रीय झण्डा अपनाया है। इस मामलेमें उत्साहके अतिरेकमें हमारे कुछ कार्यकर्ता गलती कर बैठते हैं, बल्कि सच तो यह है कि उनके व्यवहारके कारण कहीं-कहीं राष्ट्रीय झण्डेका विरोध भी उभरने लगा है, जो अब तक देखनेमें नहीं आता था।

इसके अलावा, जहाँ-तहाँ कुछ लोग या गुट राष्ट्रीय झण्डेके प्रति जनताकी भावनाको उभारकर अपनी स्वार्थ-सिद्धि करते हैं। झगड़ा भले ही किसी और बातको लेकर शुरू हुआ हो, लेकिन वे बीचमें झण्डेका सवाल खड़ा करके बातोंको इस तरह उलझा देते हैं कि कोई समझ ही नहीं पाता है कि असलमें झगड़ा किस सवालपर है।

आपने जो इतने सारे आन्दोलन शुरू किये उनके सम्बन्धमें अगर आप अपना मन्तव्य और दृष्टिकोण बार-बार स्पष्ट करनेको तैयार न हों तो मुझे तो लोगों द्वारा उनके गलत अर्थ लगाये जाने और अवांछनीय दिशामें मोड़ दिये जानेका खतरा बराबर मौजूद जान पड़ता है। जिन कार्रवाइयोंसे हिन्दुओं, मुसलमानों या अन्य धर्मावलम्बियोंके धार्मिक-प्रतीकोंके साथ राष्ट्रीय झण्डेकी स्पर्धा खड़ी हो सकती है, उनके परिणामोंके बारेमें सोचकर मुझे खास तौरसे डर लगता है। मन्दिरोंके रथों और शिखरोंपर राष्ट्रीय झण्डेको फहरानेकी प्रवृत्ति धर्मकी सर्वव्यापकता-विषयक मेरी भावनाको चोट पहुँचाती है और ईश्वरको राष्ट्रीय रूप दे देनेका यह प्रयास मुझे बहुत भौंड़ा लगता है।

राष्ट्रीय झण्डेकी मूल कल्पना और सारतः उसकी वर्तमान रचनाके जनकके नाते मुझे यह देखकर बहुत दुःख होता रहा है कि अकसर उसका कैसा दुरुपयोग किया जाता है और किस प्रकार लोग अपनी हिंसात्मक प्रवृत्तिपर परदा डालनेके लिए उसका उपयोग करते हैं। राष्ट्रीय झण्डेकी कल्पना सच्ची साम्प्रदायिक एकताके रूपमें अभिव्यक्ति पानेवाली अहिंसा और उस अहिंसामय श्रमके प्रतीकके रूपमें की गई है जिसे छोटे-बड़े सब आसानीसे कर सके और जिससे राष्ट्रीय सम्पत्तिकी अप्रकट रूपसे ही सही किन्तु ठोस वृद्धि करनेकी निश्चित सम्भावना है। लेकिन यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि उस दृष्टिसे आज यह तिरंगे कपड़ेका एक टुकड़ा-भर है — और जरूरी नहीं कि वह टुकड़ा भी बराबर खादी ही हो। आज ऐसा नहीं कहा जा सकता कि इस झण्डेको ज्वलन्त साम्प्रदायिक एकता और सबको समान धरातलपर ला खड़ा करनेवाले तथा जिसमें छोटे-बड़े सभी शरीक हो सकें उस श्रमका प्रतीक होनेका गौरव प्राप्त है।^१ चरखोंकी गुनगुनाहट गाँवोंकी हजारों झोंपड़ियोंमें जरूर सुनी जा सकती है। लेकिन जैसा परिणाम अपेक्षित है उसकी तुलनामें यह कुछ भी नहीं है।

इसके अलावा अगर राष्ट्रीय झण्डा अहिंसाका प्रतीक है तो उसके साथ विनम्रता भी जुड़ी होनी चाहिए। अगर मेरा बस चले तो एक भी व्यक्तिके आपत्ति करनेपर मैं ऐसी किसी सभामें राष्ट्रीय झण्डा न फहराने दूँ जो विशुद्ध रूपसे कांग्रेसकी सभा न हो। किसी गैर-कांग्रेसी सभामें किसी आपत्तिको — चाहे वह सिर्फ एक व्यक्तिकी ओरसे ही क्यों न की गई हो — स्वीकार करके राष्ट्रीय झण्डेको न फहरानेसे उसकी गरिमामें कोई कमी नहीं आ सकती। उसकी गरिमामें कमी तब आयेगी जब हम उस सत्ताके भयसे इसे झुका दें जिसको हम समाप्त करना चाहते हैं। किन्तु यदि साम्प्रदायिक एकता तथा समस्त निहित अर्थों सहित चरखेमें हमारा जीवन्त विश्वास न हो और फिर भी हम सभाओं या कांग्रेस-कार्यालयोंपर इसे फहराये तो उससे इसकी गरिमामें ज्यादा कमी आयेगी। राष्ट्रीय झण्डा कोई धार्मिक प्रतीक नहीं है। और यह सभी धर्मोंका प्रतिनिधित्व करता है तथा सभीके पारस्परिक मेलजोलकी प्रेरणा देता है, इसलिए धार्मिक शोभा-यात्राओं या मन्दिरों या धार्मिक सभाओंमें इसके लिए कोई स्थान नहीं है। अपनी जगहपर रहनेमें ही किसी चीजका महत्व है। अपने उचित स्थानसे अलग रहनेपर किसी चीजका कोई महत्व नहीं है। सहारा रेगिस्तानमें सोनेकी ईंट या नोटोंका भला क्या महत्व? सच तो यह है कि आजकी तनावपूर्ण स्थितिमें जब तक सिर्फ बहुत बड़े बहुमतकी ही नहीं, बल्कि एक-एक व्यक्तिकी सहमति न हो तब तक मैं इसे सरकारी इमारतों या नगरपालिकाओंके कार्यालयोंपर भी नहीं फहराना चाहूँगा। मुझे तो यहाँ तक कहनेमें भी कोई शिश्नक नहीं है कि अगर

१. मूल अंग्रेजीमें इस वाक्यमें छपाईकी कुछ भूल रह गई है। इसलिए इसका अर्थ देते हुए हरिजनबन्धु में उपलब्ध गुजराती अनुवादका सहारा लिया गया है, क्योंकि अनुवाद न्यूनाधिक प्रामाणिक है।

राष्ट्रीय झण्डा अहिंसा और विनम्रताका प्रतीक है तो इसके विपक्षमें पड़नेवाले एक मतको भी — चाहे वह शरारतसे ही क्यों न डाला गया हो — पूरा महत्व दिया जाना चाहिए।

जाहिर है कि अपनी कलमकी ताकतपर जितना भरोसा मुझे है पत्र-लेखक भाई को उसपर उससे अधिक है। मैं लिख रहा हूँ तो कोई ऐसा मानकर नहीं कि जिन हलकों तक मैं इसका असर पहुँचाना चाहता हूँ उन तक असर पहुँचेगा ही। लेकिन पत्र-लेखक भाईके अनुरोधको अस्वीकार करना मेरे लिए उचित नहीं होगा। उनकी दलील और उनके पेश किये तथ्योंको मैं स्वीकार करता हूँ। अब इसका असर अपेक्षित हलकोंपर न हो, इस भयसे मैं लिखूँ ही नहीं, यह ठीक नहीं होगा। खैर, राष्ट्रीय झण्डेके जिन निहित अर्थोंका मैंने यहाँ उल्लेख किया है, उन तमाम अर्थोंके साथ उसमें अपनी श्रद्धाका इजहार करनेका मुझे जो यह एक मौका मिला है उसे तो मैं अपने लिए एक लाभ ही मानता हूँ।

बन्नु, २४ अक्टूबर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ५-११-१९३८

५१. पत्र : अमृत कौरको

बन्नु

२४ अक्टूबर, १९३८

प्रिय पगली,

अभी तो तुम्हें मिलके बने कागजपर पेंसिलसे लिखे पत्रोंसे ही सन्तोष करना होगा। हाथके बने चमकीले कागजपर पेंसिल ठीकसे चलती ही नहीं।

हम बन्नु पहुँचे, तो पाया कि तुम्हारे दो पत्र यहाँ पहले ही आ चुके थे। 'ए वूमन्स लेटर' का उपयोग शायद मैं 'हरिजन' के लिए करूँ। तुम्हारा काठियावाड़के विषयमें लिखा लेख इस सप्ताह प्रकाशित होगा। हाँ, आखिरी अनुच्छेद या शायद दो अनुच्छेद निकाल दिये जायेंगे।

यूरोपकी स्थितिके सम्बन्धमें लिखे मेरे लेखोंका तत्काल कोई परिणाम निकलनेकी सम्भावना नहीं है। लेकिन अगर भारतने अहिंसाका ठीक विकास कर लिया तो उनका असर जरूर होगा। और भारतके ऐसा कर सकनेके बारेमें बहुत सन्देह है। शायद खुद मेरी अशुद्धि इसमें मुख्य बाधा है। जैसाकि मुझे लगता है, मेरे शब्द अपनी शक्ति खो बैठे हैं, और शुद्धिके सम्बन्धमें मेरे जो विचार हैं, उनके अनुसार होना

१. देखिए "स्त्रियोंका विशेष कार्यक्रम", पृ० ५७-९।

२. देखिए "काठियावाड़-यात्राकी छाप", ४-११-१९३८।

भी यही चाहिए। फिर भी मैं श्रद्धापूर्वक आगे बढ़नेकी कोशिश कर रहा हूँ। अपने विचार, शब्द और कर्मके परिणामोंके प्रति मुझे अनासक्ति प्राप्त करनी है। सतत प्रयत्नके बावजूद मैं अपनी अशुद्धिसे छुटकारा नहीं पा रहा हूँ, इसीके आधारपर, मैं कैसा हूँ, इसके बारेमें मैं अन्तिम रूपसे कोई निर्णय नहीं करने जा रहा हूँ और न अपनी प्रवृत्तियोंका त्याग ही करने जा रहा हूँ। अब शायद स्त्रियोंके हृदय तक पहुँच पानेकी अपनी शक्तिके प्रति मेरे विश्वासको तुम समझ जाओगी। लेकिन यह तो बड़ी लम्बी गाथा है। जितना कहा गया है सहज ही कहा गया है। तुम चिन्ता न करना, क्योंकि मैं खद भी कोई चिन्ता नहीं करता। अपनी अशुद्धिके बारेमें मैं बैठा-बैठा सोचता रहता होऊँ, ऐसी कोई बात नहीं है। देख रहा हूँ, वह साँप मेरे सामने है। उसके दाँत करैतसे भी ज्यादा विषाक्त हैं। इसलिए मैं सावधान हूँ। मैं चिन्ता नहीं करता, इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि मेरा रक्तचाप बराबर स्थिर है।

यह पत्र महादेवको भी दिखा दो तो अच्छा। लिखना शुरू किया था तो नहीं मालूम था कि यह इस तरह गम्भीर बन जायेगा। लेकिन एक तरहसे अच्छा ही हुआ। बस तुम्हारे प्रति अपने प्रेमके ही कारण ऐसी कुछ पंक्तियाँ लिख गया हूँ। सप्रेम,

जालिम

याकि सबसे ताजा विरुदावलीके
अनुसार योद्धा

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६४४) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६४५३ से भी।

५२. पत्र : महादेव देसाईको

बन्नु

२४ अक्टूबर, १९३८

चि० महादेव,

इस समय मेरे पास कलम नहीं है इसलिए पेंसिलसे काम चला रहा हूँ। कुछ न लिखनेकी अपेक्षा पेंसिलसे मिलके बने कागजपर लिखना भी अच्छा है न?

आज यहाँ पहुँचनेपर तुम्हारे दोनों पत्र मिले। कान्तिके पत्रके बारेमें तुम जो लिखते हो, वह ठीक है। यदि सम्भव हुआ तो मैं इसका उपयोग करूँगा। मैं देखूँगा। राजकुमारीको तो यही अंश दिखाना था, अर्थात् सार, जिससे वह यह जानकर प्रसन्न हो कि कान्तिके विचार अच्छी तरह परिष्कृत होते जा रहे हैं।

उसके — राजकुमारीके — गुणोंके बारेमें तुम जो कहते हो सो ठीक है। ऐसे सम्पर्क हमें विनम्र बनाते हैं और हमारी सेवावृत्तिको बढ़ाते हैं। इस दृष्टिसे अनायास ही ऐसे अवसर प्राप्त होनेपर हमें उनका स्वागत करना चाहिए। अपना दौरा पूरा

करनेके बाद हम इस बारेमें विचार कर लेंगे कि तुम्हें क्या करना चाहिए। यहाँसे हम लोग ज्यादासे-ज्यादा १० नवम्बरको रवाना होंगे। इससे पहले भी चल सकते हैं। लीलावती तो इसे भी लम्बा खिचना कहेगी। इसलिए मैं निश्चय ही यह सोचता हूँ कि यदि वह जगह तुम्हें अच्छी लगती हो और राजकुमारी वहाँ रहने तथा तुम्हें जतनसे रखनेको तैयार हो तो तुम वहीं रहो। सचमुच देखा जाये तो नवम्बर-दिसम्बरमें ही शिमला [का मौसम] सबसे अच्छा होता है। मैं यह सम्भव नहीं मानता कि तुम १० नवम्बर तक अपना काम सँभाल सकोगे। यह आराम बेकार नहीं जायेगा। तुम बहुत पुराना चढ़ा हुआ कर्ज चुका रहे हो। इसलिए यदि शिमला नहीं तो कहीं अन्यत्र तुम्हें आराम लेनेके लिए अवश्य जाना चाहिए। जालन्धरके बारेमें तुम राजकुमारीसे सलाह-मशविरा करके देखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६६८) से।

५३. पत्र : शारदा चि० शाहकी

बन्नु

२४ अक्टूबर, १९३८

चि० शारदा,

तेरा पत्र मिल गया है। किन्तु आज इतना समय नहीं है कि उसका विस्तृत उत्तर दे सकूँ। तू जो दिन गिनती रही है अब तो वे कम होते जा रहे हैं न?

मुझे वहाँ पहुँचकर तेरी खुराकमें कुछ रद्दोबदल करनी पड़ेगी। यहाँ बैठे हुए मैं ऐसा नहीं कर सकता। भणसालीभाईकी कुछ चाकरी बजाना क्या तेरे हिस्सेमें भी आता है? क्या घूमनेके लिए रोज अकेली ही जाती है? शकरीबहन^१ बाहर निकलती है या नहीं?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०००१) से; सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला।

५४. स्त्रियोंका विशेष कार्यक्रम

सम्पादक, 'हरिजन'

महोदय,

हालके यूरोपीय संकटके सम्बन्धमें आपके लेख मने रसपूर्वक पढ़े हैं। इस अवसरपर आप यूरोपवासियोंको लक्षित करके दो शब्द कहें, यह स्वाभाविक ही था। जब मानवता विनाशके कगारपर खड़ी हो तो आप भला चुप कैसे रह सकते थे?

दुनिया क्या आपकी बात सुनेगी? यही सवाल है।

इंग्लैंडमें रहनेवाले मित्रोंके पत्रोंसे देखें तो इस बातमें कोई सन्देह नहीं कि उस भयानक सप्ताहमें वहाँके लोगोंने घोर व्यथा भोगी। मुझे पूरा विश्वास है कि यही हाल सारी दुनियाका हुआ। शैतानियतकी सारी विचक्षणतासे युक्त आधुनिक युद्धशास्त्र और तज्जनित नरसंहार तथा पाशविकताकी सम्भावनाने निश्चय ही लोगोंको, जिस ढंगसे उन्होंने आज तक कभी नहीं सोचा, उस ढंगसे सोचनेको मजबूर कर दिया। एक अंग्रेज मित्रने लिखा है, "युद्ध टल जानेका समाचार मिलनेपर लोगोंने राहतकी जैसी साँस ली और प्रत्येक हृदयसे ईश्वरके प्रति जैसा कृतज्ञता-भाव छलक पड़ा उसे मैं यावज्जीवन नहीं भूल सकता।" लेकिन इस सबके बावजूद सवाल यह उठता है कि क्या केवल वर्णनातीत कष्टोंके भय, अपने सगे-सम्बन्धियोंको खो बैठनेके डर, अपने देशको अपमानित देखनेकी आशंकाके कारण ही लोग युद्धसे घृणा करते हैं? क्या किसी अन्य राष्ट्रके अपमानित होनेके भी मूल्यपर युद्ध टल जानेसे हम प्रसन्न हैं? यदि अपने सम्मानके ऐसे बलिदानकी माँग हमसे की गई होती तो क्या हमारी भावना अन्यथा होती? क्या हम युद्धसे घृणा इसलिए करते हैं कि यह विवादों को निबटानेका गलत तरीका है या केवल इसलिए कि हम इससे डरते हैं? यदि युद्धको सचमुच धरतीपर से सदाके लिए समाप्त हो जाना है तो ये कुछ सवाल हैं, जिनके उत्तर देना आवश्यक है।

संकटका समय गुजर जानेपर अब हम क्या देख रहे हैं? शस्त्रीकरणके लिए और भी जबरदस्त होड़, युद्धकी सम्भावनाको ध्यानमें रखकर नर-नारी, पैसे और प्रतिभा, युक्ति और कौशलके रूपमें उपलब्ध सारी युद्ध-सामग्रीका पहलेसे अधिक व्यापक और गहन संयोजन — यही न! "युद्ध कदापि नहीं होगा", निष्ठापूर्वक की गई ऐसी कोई घोषणा तो किसी क्षेत्रसे सुननेको

नहीं मिल रही ! क्या इस सबका मतलब यह नहीं है कि युद्ध आज भले ही टल गया हो, लेकिन वह हमारे सिरपर कच्चे धागेसे बँधी नंगी तलवारकी तरह लटक रहा है ?

एक नारीके नाते मुझे यह बात बराबर कचोटती है कि नारी-जातिने विश्व-शान्तिमें वैसा योगदान नहीं किया है, जैसाकि उसकी सहजवृत्ति और इस क्षेत्रमें उसके विशेषाधिकारकी दृष्टिसे अपेक्षित है। जब कभी मैं स्त्रियोंके सहायक सैन्य-दल खड़े किये जाने, लड़ाईके मैदानमें और पिछली पंक्तियोंमें स्त्रियाँ पूरा योगदान कर सकें, इस दृष्टिसे उनके सेनामें भरती किये जाने या उनके द्वारा स्वेच्छसे अपनी सेवाएँ अर्पित किये जानेका समाचार सुनती या पढ़ती हूँ तो मुझे बहुत दुःख होता है। लेकिन सचाई यह है कि जब युद्ध छिड़ जाता है तब स्त्रियोंके ही हृदय व्यथासे रुदन करते हैं, उन्हींकी आत्मा क्षत-विक्षत होती है। इस व्यथाका वर्णन शब्दोंमें नहीं किया जा सकता। क्या कारण है कि हम स्त्रियाँ इतने युग बीत जानेपर भी उस वस्तुको ग्रहण नहीं कर पाई हैं जो अधिक श्रेष्ठ है, अधिक उदात्त है ? क्यों हमने घृणित और नृशंस पबशुलके सामने चुपचाप अपने घुटने टेक दिये ? यह सब हमारे आध्यात्मिक विकासकी दयनीय स्थितिका द्योतक है। हम अपने उच्च कर्तव्यको समझ पानेमें असफल रहे हैं। मेरा निश्चित विश्वास है कि यदि स्त्रियोंको अहिंसाकी शक्ति और महिमाकी हार्दिक अनुभूति हो जाये तो इतनेसे ही संसार स्वर्ग बन जाये।

आप हम भारतीय स्त्रियोंको प्रेरित और संगठित क्यों नहीं करते हैं ? क्यों नहीं आप हमें अपनी 'शक्ति-भुजा' बनानेका प्रयत्न करते ? मेरी कैसी उत्कट लालसा रही है कि आप इसी उद्देश्यसे एक बार सम्पूर्ण भारतका दौरा करें। मुझे विश्वास है कि आपको हमारी ओरसे अद्भुत उत्साहका परिचय मिलेगा, क्योंकि भारतीय स्त्रियोंका हृदय शुद्ध और खरा है और विश्वके किसी भी हिस्सेके नारी-समाजके पास त्याग और आत्म-बलिदानकी हमसे श्रेष्ठ परम्परा नहीं है। यदि आप हमें किसी लायक बनानेका दायित्व अपने सिर ले लें तो इस त्रस्त और आतंकित विश्वको हम कदाचित् शान्तिका मार्ग दिखानेके लिए — चाहे जितना कम हो, किन्तु — कुछ कर सकें। कौन जाने ?

२२-१०-१९३८

एक स्त्री

यह पत्र मैं किंचित् संकोचके साथ ही प्रकाशित कर रहा हूँ। भारतकी नारी-जातिके अन्तःकरणको जाग्रत करनेकी मेरी क्षमताके प्रति पत्र-लेखिकाने जो श्रद्धा व्यक्त की है, वह मुझे अच्छी तो जरूर लगी, लेकिन मुझमें इतना विनय अवश्य है कि मैं अपनी मर्यादाओंको पहचान सकूँ। मुझे लगता है कि मेरे यात्रा करनेके दिन अब बीत चुके हैं। लिखकर जितना-कुछ मैं कर सकता हूँ, उतना जरूर करता रहूँगा। लेकिन

मूक प्रार्थनाकी प्रभावकारितामें मेरी श्रद्धा दिन-दिन बढ़ती जा रही है। यह अपने-आपमें एक कला है—कदाचित् सबसे ऊँची कला, जो अत्यन्त सूक्ष्म और अनवरत अभ्यासकी अपेक्षा रखती है। यह तो मैं मानता हूँ कि अपने आचरण द्वारा अहिंसा को उसके उच्चतम और श्रेष्ठतम रूपमें अभिव्यक्ति देना नारी-जातिका विशेष कर्तव्य है। लेकिन स्त्रियोंके अन्तःकरणको जाग्रत करनेके लिए किसी पुरुषकी जरूरत क्यों हो? यदि यह अनुरोध मुझसे पुरुषके नाते नहीं, बल्कि जिसका आचरण सामूहिक रूपसे किया जा सके, ऐसी अहिंसाके (जैसाकि खयाल है) सबसे अच्छे प्रतिपादकके रूपमें किया गया हो तो मैं कहूँगा कि अभी मैं भारतकी स्त्रियोंको इस सिद्धान्तकी शिक्षा देते फिरनेकी किसी अन्तर्प्रेरणाका अनुभव नहीं करता। पत्र-लेखिकाको मैं आश्चर्य करता हूँ कि उनके अनुरोधका उत्तर देनेकी मुझमें इच्छा न हो, ऐसी कोई बात नहीं है। मेरी धारणा कुछ ऐसी है कि अगर कांग्रेस-संगठनके पुरुष सदस्य अहिंसामें अपनी श्रद्धा अक्षुण्ण रखते हैं और अहिंसात्मक कार्यक्रमको ईमानदारीके साथ पूरा-पूरा लागू करते हैं तो स्त्रियाँ अपने-आप उस रास्तेको अपना लेंगी। और तब हो सकता है कि उनमें से कोई ऐसी निकल आये जो, जितनी दूर तक मैं खुद जा पानेकी आशा कर सकता हूँ, उससे बहुत आगे तक जा सके; तो इसलिए कि अहिंसाके क्षेत्रमें खोज करने और साहसपूर्ण कदम उठानेकी दृष्टिसे स्त्रियाँ पुरुषोंसे अधिक सक्षम हैं। कारण, जैसाकि मैं मानता हूँ, जिस तरह पशुबलका परिचय देने के लिए अपेक्षित साहस पुरुषोंमें स्त्रियोंकी अपेक्षा अधिक है, उसी तरह आत्म-बलिदानके लिए जरूरी हिम्मतकी दृष्टिसे स्त्रियाँ पुरुषोंसे कहीं श्रेष्ठ हैं।

बन्नु, २५ अक्टूबर, १९३८

[अंग्रेजी]

हरिजन, ५-११-१९३८

५५. पत्र : मोतीलाल रायको

बन्नु

२५ अक्टूबर, १९३८

प्रिय मोती बाबू,

आपका प्रेमपूर्ण तार मिला। किन्तु यह पत्र में आपको धन्यवाद देनेके लिए नहीं लिख रहा हूँ—वह तो मैं समाचारपत्रोंके माध्यमसे दे ही चुका हूँ—बल्कि आपको यह बतानेके लिए लिख रहा हूँ कि प्रवर्तक संघपर अखिल भारतीय चरखा संघका जो कर्ज निकलता है वह मेरे सिरपर कितना भारी बोझा है। उस सौदेके लिए मैं ही मुख्यतया जिम्मेदार हूँ। आप समझ सकते हैं कि मुझे आपकी खरी सौदेदारी और आपकी ईमानदारीपर कितना भरोसा था। हम दोनों सार्वजनिक संस्थाएँ—जैसे हैं और इसी कारण मैं आपसे कहूँगा कि हमारा आपसी व्यवहार

सामान्य व्यापारियोंके बीच होनेवाले व्यवहारसे कहीं अधिक सच्चा होना चाहिए। कृपया देखिएगा कि ऋणकी अदायगी हो जाये।

सप्रेम,

आपका,
मो० क० गांधी

[पुनश्च :]

पत्रोत्तर वर्धकि पतेपर दें।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११०५०) से।

५६. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

बन्नु

२५ अक्टूबर, १९३८

बा,

अब तू अच्छी हो गई है इसलिए मैं तुझे लिखनेमें आलस्य करता हूँ। इन दिनों हमारा दौरा चल रहा है इसलिए पोस्टकार्ड लिखनेका समय भी मुश्किलसे मिल पाता है। किन्तु तुझे तो पत्र लिखवाना चाहिए। यहाँ सब-कुछ ठीक चल रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २२१५) से।

५७. पत्र : विद्या आ० हिंगोरानीको

बन्नु

२५ अक्टूबर, १९३८

चि० विद्या,

काफी असेंके बाद तेरा खत मिला। मैं राजी हुआ। जमनालालजीकी इजाजत लेकर महिला आश्रम दिल चाहे तब आ सकती है। अब कुछ कानून बदले हैं। मैं नवंबरकी १२ तारीखको शायद वर्धा पहुंचुंगा। आनंदका खत महादेवपर मैंने देखा था। जहां तक हो सके मैं खत लिखनेसे बचता रहता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे; सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिंगोरानी।

५८. भाषण : बन्नुमें

२५ अक्टूबर, १९३८

शायद आपको मालूम होगा कि दो महीनेसे भी अधिक समयसे मैं पूरा मौन रखता आ रहा हूँ। उससे मुझे लाभ हुआ है और मेरा तो खयाल है कि देशको भी हुआ है। मूलतः तो मैंने यह मौन एक तीव्र मानसिक व्यथाके शमनके उद्देश्यसे लिया था, लेकिन बादमें जब इसका लाभ दिखाई पड़ा तो मैंने इसे अनिश्चित काल तक जारी रखनेका निश्चय किया। इस मौनने मेरे लिए रक्षा-प्राचीरका काम किया है और इसीका प्रताप है कि इधर मैं अपने काम भी पहलेकी अपेक्षा अधिक अच्छे ढंगसे निबटाता रहा हूँ। जब मैं इस प्रान्तमें आया था, तब मैंने यह तय कर रखा था कि मौन तोड़ूंगा तो सिर्फ़ खुदाई खिदमतगारोंसे बातचीत करनेके लिए ही, लेकिन खानसाहबके आग्रहके सामने मुझे झुकना पड़ा।

आपके मानपत्रोंमें मेरी बड़ी प्रशस्ति की गई है और यहाँ आनेपर मेरे प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई है। मैं नहीं समझता कि मैं प्रशंसा या आभारका पात्र हूँ। मैं जानता हूँ कि आपकी अपेक्षाएँ पूरी करनेके लिए मैं कुछ खास नहीं कर सकता। मैं सीमाप्रान्त केवल खुदाई खिदमतगारोंसे मिलने और व्यक्तिगत रूपसे उनकी अहिंसा वृत्तिको समझनेके लिए आया हूँ। आपके कस्बेमें मैं प्रसंगवश ही आ गया हूँ।

मैंने आपके शिष्टमण्डलोंसे मिलने और मुझे जो कागज दिये गये, उनको पढ़ने में आज कई घंटे लगाये। बन्नुपर हुए हालके हमलों और उन हमलोंके दौरान आप पर जो-कुछ बीता उसके बारेमें जानकर मैं बहुत व्यथित हुआ। इस प्रान्तकी हालत कुछ अजीब है। दूसरे प्रान्तोंसे इसकी स्थिति भिन्न है, क्योंकि यह एक ओरसे ऐसे सीमावर्ती कबीलोंसे घिरा हुआ है जिनका धन्धा ही लूट-मार करना है। जहाँ तक मुझे मालूम हो पाया है, वे किसी प्रकारकी साम्प्रदायिक भावनासे प्रेरित नहीं हैं। हमलोंके पीछे उनका मंशा अपनी बुनियादी जरूरतें पूरी करनेका ही जान पड़ता है। उनसे ज्यादातर हिन्दू ही तबाह होते हैं, इसका कारण शायद यह है कि उनके पास अधिक पैसा है। लोगोंके अपहरणके पीछे भी यही मंशा दीखता है।

ये हमले होते रहते हैं, यह बात मेरी दृष्टिमें भारतके इस हिस्सेमें ब्रिटिश शासनकी विफलताकी चोतक है। उसकी सीमा-नीतिके कारण देशके हजारों लोगोंको प्राण गँवाने पड़े हैं और भारतको करोड़ों रुपयेका नुकसान हुआ है। बहादुर कबायली

१. इस सभामें लोग काफी बड़ी तादादमें उपस्थित थे। गांधीजी को बन्नु जिला कांग्रेस कमेटी और सेवा समिति, चौदनी चौकनी ओर से मानपत्र भेंट किये गये थे। यहाँ उन्होंने जो भाषण दिया उसकी रिपोर्ट हिन्दुस्तान टाइम्स, और बॉम्बे क्रॉनिकल में भी प्राकशित हुई थी।

लोग अब भी अजेय बने हुए हैं। आज मैंने जो-कुछ सुना है वह सब अगर सारतः सच हो—और मैं मानता हूँ कि सच ही है—तो कहना होगा कि इस प्रान्तके अधिकांश हिस्सोंमें जान-माल सुरक्षित नहीं है।

आज मुझसे ऐसे बहुत-से लोग मिले जिनके सगे-सम्बन्धी और प्रियजन हमलावरों के द्वारा या तो मार दिये गये हैं या रकम ऐंठनेके लिए अपहृत कर लिये गये हैं। उनकी कष्ट कथाएँ सुनकर मेरा अन्तर रो उठा और मेरा मन उनके प्रति सहानुभूतिसे भर गया। लेकिन मुझे आपके सामने स्वीकार करना चाहिए कि उनका दुःख दूर करनेकी मुझमें चाहे जितनी तीव्र इच्छा हो, किन्तु मेरे पास ऐसी कोई जादुई ताकत नहीं है जिसके बलपर मैं अपहृत लोगोंको अपने-अपने परिवारोंमें वापस ला सकूँ। इसी तरह सरकार या कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलसे भी आपको कोई खास आशा नहीं रखनी चाहिए। जब-जब किसीका अपहरण किया जाये, तब-तब अपना लाब-लश्कर लेकर प्रतिकारके लिए सामने आ जाना किसी भी सरकारके लिए सम्भव नहीं है और ब्रिटिश सरकारकी तो ऐसा-कुछ करनेकी इच्छा भी नहीं दिखाई देती। हाँ, अगर अपहृत व्यक्ति शासक जातिका हो तो वह कुछ भी कर सकती है।

सब-कुछ देखने-जाननेके बाद मुझे ऐसा लगा है कि यहाँ कांग्रेसी शासनकी स्थापनाके बाद सीमा पारके हमलोंकी दृष्टिसे स्थिति और भी खराब हो गई है। कांग्रेसी मन्त्रियोंका पुलिसपर कोई प्रभावकारी नियन्त्रण नहीं है, सेनापर तो बिल्कुल ही नहीं। इस प्रान्तके कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलका अधिकार तो अन्य प्रान्तोंकी अपेक्षा भी कम ही है। इसलिए मुझे लगता है कि अगर डॉ० खानसाहब इन हमलोंकी समस्याका सफलतापूर्वक सामना नहीं कर सकते तो उनके लिए त्यागपत्र दे देना ही शायद बेहतर होगा। यदि हमले बढ़ते ही गये तो इस प्रान्तमें कांग्रेसके अपनी सारी प्रतिष्ठा खो बैठनेका खतरा है। लेकिन मेरी चाहे जो राय हो, इस बातका फैसला तो आपको खुद ही करना है कि मैंने जो कठिनाइयाँ बताई हैं उनके बावजूद आप कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल ही कायम रखना चाहेंगे या कोई और शासन चाहेंगे। अखिर मुख्यमन्त्री आपके सेवक ही तो हैं। वे मतदाताओं, प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी और कार्य-समिति इन तीनोंकी मर्जीसे ही तो पदारूढ़ हैं।

आज मुझसे मिलनेवाले कुछ लोगोंने पूछा कि अपनी सुरक्षाके लिए सीमाप्रान्त छोड़कर किसी अन्य हिस्सेमें बसना क्या उनके लिए उचित होगा। मैंने उनसे कहा है कि अगर सम्मान और सुरक्षाके साथ रहनेका कोई और रास्ता न हो तो कहीं और जा बसना बिल्कुल मुनासिब उपाय है। फिर, मुझसे यह शिकायत भी की गई है कि पहले तो जहाँ हमले होते थे वहाँके मुसलमान बाशिन्दे हमलावरोंकी मदद करते थे, लेकिन सीमाप्रान्त अपराध विनियमन अधिनियमके रद किये जानेके बादसे उन्होंने मदद करना छोड़ दिया है, जिससे हमलावरोंको बढ़ावा मिला है। यह बात सच हो सकती है, लेकिन मैं आपको आगाह कर दूँ कि अगर आप अपनी सुरक्षाके लिए दूसरोंकी सशस्त्र शक्तिपर निर्भर रहते हैं तो आपको देर-सबेर अपने उन संरक्षकोंकी सत्ताके अधीन हो जानेको तैयार रहना चाहिए। बेशक आपको हथियारबन्द

होकर अपनी रक्षा करनेकी कला सीखनेका पूरा अधिकार है। आपको अपने बीच सहयोगकी भावना पैदा करनी चाहिए। कायरताका आचरण तो आप किसी भी हालतमें न करें। आत्मरक्षा हर आदमीका जन्मसिद्ध अधिकार है। मैं भारतमें एक भी कायर आदमी नहीं देखना चाहता।

चौथा विकल्प है अहिंसाका मार्ग और मैं आपको यही राह सुझाना चाहता हूँ। यह आत्मरक्षाका सबसे अच्छा रास्ता है। इस रास्तेपर चलकर आप कभी विफल हो ही नहीं सकते। अगर मेरा बस चले तो मैं कबायलियोंके बीच जाकर रहूँ और उन्हें समझाऊँ-बुझाऊँ, और मुझे पूरा विश्वास है कि प्रेम और बुद्धिपूर्वक समझाई गई बातका उनपर असर न पड़े, ऐसा नहीं हो सकता। लेकिन मैं जानता हूँ कि आज मेरे लिए वहाँ जानेका द्वार बन्द है। सरकार मुझे कबायली क्षेत्रमें जानेकी इजाजत नहीं देगी।

कबायली लोगोंको जैसे खूँखार रूपमें पेश किया जाता है, वैसे खूँखार वे हो नहीं सकते। वे भी मेरी और आपकी तरह मनुष्य हैं और अगर उनके साथ मानवीय संवेदनापूर्वक पेश आया जाये तो उनपर उसका असर जरूर होगा, लेकिन आज तक तो उनके साथ हम इस तरह कभी पेश आये ही नहीं। आज दोपहर कई वजीरी मुझसे मिल गये हैं। मुझे तो ऐसा नहीं लगा कि उनका स्वभाव अन्यत्र रहनेवाले आदमीके स्वभावसे कोई खास अलग था।

मनुष्य स्वभावसे बुरा नहीं होता। पशु-स्वभावको भी प्रेमके प्रभावके वशीभूत होते देखा गया है। इसलिए हमें मानव-स्वभावके सम्बन्धमें कभी हताश नहीं होना चाहिए। आप सब व्यापारी-जातिके लोग हैं। अपने व्यापारमें से आप संसारकी उस सर्वोच्च और सर्वाधिक मूल्यवान वस्तुको—अर्थात् प्रेमको—अलग न रखें। आप कबायली लोगोंपर जितना प्रेम बरसा सकें, बरसायें। फिर आप देखिएगा कि बदलेमें आपको भी वैसा ही प्रेम मिल रहा है।

धमकीमें आकर या अपने अपहृत लोगोंको छुड़ानेके लिए हमलावरोंको धन देकर सुरक्षा खरीदनेकी कोशिश करनेका मतलब तो उन्हें और भी हमले करनेका सीधा निमन्त्रण देना होगा। इससे आपका भी नैतिक पतन होगा और कबायलियोंका भी। उनको इस तरह पैसा देनेसे अधिक समझदारीका रास्ता तो यह होगा कि आप उन्हें उद्योग-धन्धा सिखाकर उनकी दरिद्रता दूर करें, और इस तरह उनको लूट-मारकी राह ले जानेवाले मुख्य कारणको ही मिटा दें।

इस विषयमें खुदाई खिदमतगारोंसे मेरी बातचीत चल रही है और खानसाहबके सहयोगसे इसके लिए मैं एक योजना तैयार कर रहा हूँ। यदि यह योजना फलीभूत होती है और खुदाई खिदमतगार सच्चे खुदाई खिदमतगार बन जाते हैं तो उनके प्रेम और त्यागके उदाहरणका असर गुलाबकी खुशबूकी तरह कबीलों तक पहुँचेगा, और हो सकता है, शायद उसीमें से सरहदके सवालका कोई स्थायी हल निकल आये।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ५-११-१९३८

५९. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ

बन्गू

[२६ अक्टूबर, १९३८ या उसके पूर्व]^१

गांधीजी ने बलवानकी अहिंसा तथा निर्बलकी अहिंसाके बीचका अन्तर समझाया। उन्होंने परोपकारार्थ या राजनीतिक हित-साधनके लिए किये जानेवाले रचनात्मक-कार्य और अहिंसासे जुड़े हुए रचनात्मक-कार्यका अन्तर भी समझाया और कहा कि अहिंसा से जुड़ा हुआ रचनात्मक-कार्य असीम सम्भावनाओंसे युक्त एक उद्धारकारी शक्ति बन जाता है। उन्होंने बताया कि भारतमें अहिंसाका आन्दोलन किस प्रकार आरम्भ किया गया था। करोड़ों लोग उस समय ऐसा सोचते थे कि वे ब्रिटिश सरकारका मुकाबला तलवारके बलपर नहीं कर सकते, क्योंकि ब्रिटिश सरकारके पास ज्यादा बेहतर शस्त्रास्त्र थे। मैंने उन्हें बताया कि अगर आप तलवार हाथमें लेकर लड़ने जाते हैं तो भी आपको मौतका सामना करनेको तैयार रहना होगा। अगर हाथकी तलवार टूट गई तब तो मृत्यु निश्चित होगी। तब वे बिना दूसरेको मारे खुद मरनेकी कला क्यों न सीख लें और शत्रुके विरुद्ध अपनी आत्माकी शक्तिका प्रयोग क्यों न करें? सरकार उन्हें कैद कर सकती है या उनकी सम्पत्ति जब्त कर सकती है या उन्हें मार भी डाल सकती है। इससे क्या फर्क पड़ता है। मेरी यह बात उनको जँच गई है। लेकिन दिल-ही-दिलमें उनमें से बहुतोंको ऐसा लगता रहा कि अगर उनके पास पर्याप्त मात्रामें शस्त्रास्त्र होते तो वे युद्ध करते। उन्होंने अहिंसाको इसलिए स्वीकार किया, क्योंकि इसके सिवा और कुछ था नहीं। दूसरे शब्दों में कहें तो उनके दिलमें हिंसा थी। बस, उन्होंने कार्यरूपमें उसका त्याग किया था। यह अहिंसा कमजोरोंकी अहिंसा थी, वीरोंकी नहीं। लेकिन तिसपर भी इस अहिंसाने उन्हें ज्यादा शक्तिशाली बनाया। मैं आज आपसे यह कहने आया हूँ कि अहिंसाको कमजोरोंका हथियार समझना या उस रूपमें अंगीकार करना बहुत बड़ी गलती होगी। यदि खुदाई खिदमतगारोंने यह गलती की तो यह बड़े दुःखकी बात होगी।

अगर आप बादशाह खानके कहनेसे शस्त्र-त्याग कर दें लेकिन उसे अपने दिलसे न निकालें, तो आपकी अहिंसा क्षणजीवी सिद्ध होगी—यह चार दिनका चमत्कार भी नहीं होगी। कुछ वर्षों बाद आप फिर हथियार हाथमें उठाना चाहेंगे, लेकिन तब आप पायेंगे कि आपका अभ्यास छूट गया है, और उस हालतमें आप हिंसा और अहिंसा, इन दोनों ही आदर्शोंसे वंचित हो जायेंगे। वैसी स्थितिमें आपके पास पछ-तानेके सिवा कुछ न बचेगा। मैं आपसे एक अनोखी चीज माँगता हूँ, और वह यह है

१. गांधीजी बन्गूसे २६ अक्टूबरको रवाना हुए थे।

कि सामर्थ्य होते हुए भी आप तलवारका प्रयोग नहीं करेंगे, और तब विजय सुनिश्चित है। दुश्मनकी तलवार टूट भी क्यों न गई हो, आप उसकी टूटी तलवारके आगे अपनी गर्दन कर देंगे। ऐसा आप क्रोधमें और दिलमें बदलेकी भावना रखते हुए नहीं, बल्कि प्रेम रखते हुए करेंगे। यदि आपने अहिंसाको सचमुच इस अर्थमें समझ लिया है तो तलवारका इस्तेमाल आप कभी करना ही नहीं चाहेंगे, क्योंकि आपको उसके बदले एक कहीं ज्यादा बेहतर चीज मिल गई होगी।

आप पूछेंगे, 'इन सब चीजोंका ब्रिटिश सरकारपर किस तरह असर पड़ेगा?' मेरा जवाब है कि अपनी निःस्वार्थ सेवाके जरिये भारतके सभी लोगोंको प्रेमके समान सूत्रमें पिरो लेनेके बाद हम देशका वातावरण इस तरह बदल सकते हैं कि अंग्रेज लोग उसका विरोध कर ही नहीं सकेंगे। आप कहेंगे कि अंग्रेजपर प्रेमका असर होता ही नहीं। लेकिन मेरा लगातार तीस वर्षका अनुभव इससे भी भिन्न है। आज १७,००० अंग्रेज ३० करोड़ भारतीयोंपर इसलिए राज्य कर पाते हैं क्योंकि हमारे अन्दर भय व्याप्त है। अगर हम एक-दूसरेसे प्रेम करना सीख लें, यदि हिन्दू और मुसलमान, सबर्ण और अछूत, अमीर और गरीबके बीचकी खाई पट जाये तो मुट्ठी-भर अंग्रेज हमारे ऊपर अपना शासन कायम रखनेकी हिम्मत ही नहीं करेंगे।

जिस प्रकार सशस्त्र युद्धके कुछ नियम होते हैं उसी तरह अहिंसक युद्धके भी कुछ नियम हैं। इन नियमोंका पूरी तरह पता नहीं चलाया गया है। हिंसामें आप बुरे काम करनेवालेको दंडित करते हैं, अहिंसामें आप उसपर तरस खाते हैं, और उसे एक रोगी मानते हैं जिसका उपचार आप अपने प्रेमसे करते हैं।

अंग्रेजोंको अहिंसात्मक उपायसे निकाल बाहर करनेके लिए आपको करना क्या होगा? अगर आप हिंसात्मक उपायसे काम लेना चाहते हैं तो आपको कवायद सीखनी होगी और शस्त्रास्त्रोंके प्रयोगमें दक्षता प्राप्त करनी होगी। यूरोप और अमेरिकामें बच्चों और स्त्रियों तकको इसकी शिक्षा दी जाती है। इसी प्रकार जिन लोगोंने हिंसाके हथियारको अपनाया है, उन्हें अहिंसाके अनुशासनका कड़ा अभ्यास करना होगा।

इसके बाद गांधीजी ने रचनात्मक-कार्यक्रम, और अहिंसाकी योजनामें एक गतिशील शक्तके रूपमें उसके स्थानके बारेमें बताया। उन्होंने कहा कि मैंने अहिंसाका कार्यक्रम १९२० में देशके सामने रखा था। यह कार्यक्रम दो भागोंमें विभाजित था। एक था असहयोग, दूसरा था रचनात्मक-कार्यक्रम। रचनात्मक-कार्यक्रममें साम्प्रदायिक एकता, अप्सृश्यताका उन्मूलन, मद्य-निषेध, शराब और नशीली वस्तुओंके प्रयोगकी बुराईका समूल नाश, खादीका प्रचार, हाथ-कताई, हाथ-बुनाई और अन्य कुटीर-उद्योग शामिल थे। लेकिन इन सब चीजोंको राजनीतिक जरूरतके रूपमें नहीं, बल्कि अहिंसाके कार्यक्रमके एक अभिन्न अंगके रूपमें कार्यान्वित करना था। यह अन्तिम चीज ही सबसे ज्यादा महत्वकी थी। उदाहरणके लिए, जरूरतके तौरपर हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करना एक बात थी और अहिंसाके अभिन्न अंगके रूपमें उसे स्वीकार करना दूसरी बात थी।

जरूरतके दबावमें आकर स्थापित की गई एकता ज्यादा दिन नहीं चलती। जिस राजनीतिक आवश्यकताके अधीन एकता स्थापित की गई थी, उस आवश्यकताके समाप्त होते ही उसका त्याग कर दिया जायेगा। यह एक चाल या चकमा भी हो सकता है। किन्तु जब उसे अहिंसाके कार्यक्रमके अभिन्न अंगके रूपमें अपनाया जायेगा तब उसको जड़में प्रेमके सिवा कुछ भी नहीं होगा, और इस एकतापर दिलके खूनसे मुहर लगी होगी।

इसी प्रकार चरखेका सम्बन्ध भी अहिंसासे जोड़ना होगा।

आज भारतमें करोड़ों बरोजगार बेसहारा लोग हैं। उनसे निपटनेका एक तरीका तो यह है कि उन्हें अपनी मौत मर जाने दिया जाये ताकि दक्षिण आफ्रिकाकी ही तरह यहाँ भी बचनेवाले लोगोंके लिए प्रति व्यक्ति ज्यादा रकबा जमीन बचेगी। यह तरीका हिंसाका तरीका होगा। दूसरा तरीका, अहिंसाका तरीका आखिर तक बराबर-बराबर बाँटकर खानेका है। इसमें हमसे अपेक्षा की जाती है कि ईश्वरके रचे हुए तुच्छ-से-तुच्छ जीवका भी हम पूरा आदर करें। इस सिद्धान्तको माननेवाला व्यक्ति जो चीज तुच्छ-से-तुच्छ जीवके साथ बाँटकर नहीं खा सकता, उसे वह स्वयं भी नहीं लेगा। यह बात उन लोगोंपर भी लागू होती है जो अपने हाथोंसे मेहनत करते हैं—श्रमिक-वर्गके अपेक्षाकृत ज्यादा अच्छी स्थितिवाले लोगोंको उन लोगोंके साथ मिल-जुलकर रहना चाहिए जो उन-जैसे भाग्यशाली नहीं हैं।

इसी तरहसे सोचते हुए, गांधीजी बोले, मेरे मनमें आखिर चरखेकी बात आई।

लोगोंसे चरखेको अपनानेके लिए जब मैंने पहली बार कहा, उस समय तक मैंने चरखा देखा तक नहीं था। सच तो यह है कि 'हिन्द स्वराज्य' में मैंने उसे हथकरघा कहा है, क्योंकि मुझे चरखे और हथकरघेका फर्क ही नहीं पता था। मेरे मनकी आँखोंके सामने गरीब, भूमिहीन मजदूरकी तस्वीर थी जिसके पास कोई रोजगार या जीवनयापनका कोई साधन नहीं था और जो गरीबोंके भारके नीचे पिसा जा रहा था। मैं उसे कैसे बचा सकता हूँ, यह थी मेरी समस्या। आज भी जब मैं आप लोगोंके साथ आरामके वातावरणमें बैठा हूँ, मेरा मन अपनी टूटी-फूटी झोंपड़ियोंमें रहनेवाले गरीब और दलित लोगोंके साथ ही है। मैं उनके बीचमें ज्यादा अच्छा महसूस कहेगा। यदि मैं सुख-सुविधाके मोहमें फँस जाऊँ तो अहिंसाके एक उपासकके रूपमें मेरा पतन हो जायेगा। मेरे और गरीबोंके बीच एक जीवन्त कड़ी का काम दे सके, वह चीज क्या है? इसका उत्तर है चरखा। जीवनमें किसीका धन्धा या दर्जा कुछ भी क्यों न हो, यदि वह चरखेको उसके पूरे फलितार्थके साथ स्वीकार करता है तो चरखा उसे और गरीबोंको जोड़नेवाला स्वर्ण-सेतु सिद्ध होगा। उदाहरणके लिए, अगर मैं एक डॉक्टर हूँ तो यज्ञका सूत कातते समय मैं सोचूँगा कि किस प्रकार मैं बेसहारा लोगोंके दुखोंको कम कर सकता हूँ। उस समय मैं महलोंमें रहनेवालोंके बारेमें नहीं सोचूँगा जिनसे मुझे मोटी फीस मिल सकती है। चरखा कोई मेरी ईजाद नहीं है। यह पहले भी था। मेरी खोज तो इसमें है कि मैंने इसको अहिंसा और आजादीके कार्यक्रमके साथ जोड़ दिया।

ईश्वरने मेरे कानमें कहा : 'यदि तुम अहिंसाके जरिये काम करना चाहते हो तो तुम्हें छोटी-छोटी चीजोंको लेकर चलना चाहिए, बड़ी-बड़ी चीजोंको नहीं।' मैंने जैसी कल्पना की थी, यदि उसी रूपमें हमने चार-सूत्री रचनात्मक-कार्यक्रमको उसके समग्र रूपमें कार्यान्वित किया होता तो आज हम अपने मालिक आप होते। कोई विदेशी ताकत अपनी बुरी निगाह हमारी ओर डालनेकी हिम्मत नहीं कर सकती थी। अगर हमारे बीचमें ही दुश्मन न होते तो किसी बाहरी शत्रुकी हिम्मत नहीं थी कि आकर हमारा नुकसान करे। अगर कोई आता भी तो हमने उसे अपने अन्दर आत्मसात कर लिया होता और वह हमारा शोषण न कर पाता।

इस प्रकारकी अहिंसा है जो मैं चाहता हूँ कि आप अपने अन्दर पैदा करें। मैं चाहता हूँ कि आप खरा सोना हों, इसके सिवा कुछ नहीं। बेशक, आप मुझे धोखा दे सकते हैं। अगर वैसा करेंगे तो मैं खुद अपनेको ही दोष दूंगा। लेकिन यदि आप सच्चे हैं तो आपको अपने कार्योंसे यह सिद्ध करना है कि किसीको लाल-कुर्तीवालेसे डरनेकी जरूरत नहीं है और न ही एक भी लालकुर्तीवालेके जिन्दा रहते उसे भय करनेकी कोई जरूरत है।

[अंग्रेजीसे]

ए पिल्ग्रिमेज फॉर पीस, पृ० ९७-१०१

६०. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

२६ अक्टूबर, १९३८

महाराजा साहबके जन्म-दिवसके उपलक्ष्यमें त्रावणकोरके सत्याग्रही कैदियोंको आम माफी देनेपर मैं महाराजा साहब, महारानी साहिबा तथा दीवान साहबको बधाई देता हूँ। अब यह आशा करना स्वाभाविक ही होगा कि इस माफीको फलप्रद बनाने और शान्तिको स्थायित्व प्रदान करनेके लिए अब अलग-अलग दो समितियोंकी भी नियुक्ति कर दी जायेगी, जिनमें से एकका काम विगत घटनाओंकी जाँच करना होगा और दूसरीका महाराजा साहबके तत्वावधानमें स्थापित किये जाने-वाले उत्तरदायी शासनका स्वरूप निर्धारित करना होगा।

दीवान साहबके विरुद्ध लगाये गये आरोप अभी जहाँ-कै-तहाँ हैं। मैं एक बार फिर इन्हें वापस ले लेनेका अनुरोध करूँगा। उनके वापस ले लिये जानेका मतलब यह नहीं होगा कि अधिकारी उनकी सचाईके बारेमें अविश्वास करें। उन्हें ये आरोप उच्चतर हितोंको ध्यानमें रखकर वापस लेने चाहिए। उत्तरदायी शासनके प्रश्नको इन आरोपोंके साथ जोड़कर उलझन नहीं पैदा की जानी चाहिए। और जनताके हाथोंमें सत्ता सौंपनेके प्रश्नके सामने इन आरोपोंका महत्व भी क्या हो सकता है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २९-१०-१९३८

६१. भाषण : लक्कीमें^१

२६ अक्टूबर, १९३८

अहिंसाके अपने पचास वर्षोंके अनुभवके आधारपर मैं आपसे कहता हूँ कि पशुबलकी तुलनामें इसकी शक्ति अनन्त गुनी अधिक है। किसी सशस्त्र सिपाहीको अपने हथियारों—अपनी बन्दूक या तलवार—पर निर्भर करना होता है और आम तौर पर वह अन्तमें असहाय हो जाता है। लेकिन जिस व्यक्तिने अहिंसाके सिद्धान्तको हृदयंगम कर लिया है उसके पास ईश्वर-प्रदत्त शक्ति-रूपी शस्त्र होता है और उस शस्त्रके मुकाबलेका कोई दूसरा हथियार दुनिया आज तक नहीं ढूँढ़ पाई है। गफलतमें मनुष्य भले ही कुछ देरके लिए ईश्वरको भूल जाये, लेकिन ईश्वर उसपर बराबर ध्यान रखता है और हमेशा उसकी रक्षा करता है। यदि खुदाई खिदमतगारोंने इस रहस्यको समझ लिया है, अगर उन्होंने यह जान लिया है कि अहिंसा संसारकी सबसे बड़ी शक्ति है तब तो कोई बात ही नहीं। अगर बात ऐसी न हो तो बेहतर यही होगा कि खानसाहब उन्हें वे हथियार वापस कर दें जो उन्होंने उनके आदेशपर छोड़ दिये हैं। इससे वे पशुबलकी पूजा करनेवाली आजकी दुनियाकी तरह तो बहादुर बने रह सकेंगे। लेकिन अगर वे एक ओर अपने पुराने हथियार छोड़ देते हैं और दूसरी ओर अहिंसाकी शक्तिसे भी नाता नहीं जोड़ते तो यह एक ऐसी बुरी बात होगी जो कम-से-कम मुझे, और जहाँ तक मैं जानता हूँ, खानसाहबको भी किसी तरह मंजूर नहीं होगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १९-११-१९३८

६२. खण्डन

मेरी “सात सवाल”^१ शीर्षक टिप्पणीके सम्बन्धमें श्री बृजलाल बियाणी लिखते हैं :

‘हरिजन’ के १५ अक्टूबरवाले अंकमें प्रकाशित आपके “सात सवाल” शीर्षक लेखमें कुछ बातोंका सम्बन्ध मुझसे भी है। शिकायत यह है कि मेरे सम्मानमें जुलूस निकाला गया और वह जुमेकी नमाजके समय मसजिदके पाससे होकर गुजरा।

१. प्यारेलाल नैयरके “इन द फ्रंटियर प्रोविन्स-५” शीर्षक विवरण से उद्धृत।

२. देखिए खण्ड ६७, पृ० ४५६-८।

यह शिकायत सीधे मुझसे भी की गई, और उत्तरमें १२ अक्टूबरको मैंने एक वक्तव्य जारी किया, जिसकी एक नकल साथमें भेज रहा हूँ।

जुलस मसजिदके पाससे तब गुजरा जबकि नमाज समाप्त हो चुकी थी। काजी साहब सैयद मुहम्मद अली उस नमाजकी इमामत कर रहे थे और वे यह बात स्वीकार करते हैं कि जब जुलूस वहाँसे गुजरा, नमाज समाप्त हो चुकी थी और वे खुद उस समय किसी दुकानपर थे।

समाचारपत्रोंको दिये गये उनके वक्तव्यमें निम्नलिखित बात भी कही गई है, जो इस सन्दर्भमें बहुत महत्वपूर्ण है :

मैं तो सभी धर्मोंके प्रति सहिष्णुता और आदरका भाव रखनेकी आवश्यकतामें निष्ठापूर्वक विश्वास करनेवालोंमें से हूँ और स्वराज्य-प्राप्तिके लिए हिन्दू-मुस्लिम एकताके हामियोंमें से हूँ।

लक्की, मरवात, २७ अक्टूबर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ५-११-१९३८

६३. पत्र : अमृत कौरको

लक्की, मरवात

२७ अक्टूबर, १९३८

प्रिय पगली,

आज एक पत्र भेज चुका हूँ — इस हिसाबसे कि वह आजकी ही डाकसे चला जाये। यह कलके लिए है और जूनागढ़से भेजूंगा। यह पत्र पढ़कर इसे नारणदासको दे देना और दीवान साहब को गुजरातीमें एक प्यारा-सा पत्र भिजवा देना। तुम तो लिखना ही।

यह पत्र मैं खुदाई खिदमतगारोंके बीच बैठा लिख रहा हूँ। अभी तुरन्त उनसे चर्चा शुरू करूँगा। वे अन्दर आ रहे हैं।

सप्रेम,

जालिम

[पुनश्च :]

नारणदासको चेक भेज रहा हूँ।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८८६) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७०४२ से भी।

६४. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ^१

लक्की

[२७ अक्टूबर, १९३८]^१

जिन सिद्धान्तोंके आधारपर किसी अहिंसक संगठनकी रचना होती है वे हिंसा-त्मक संगठनकी रचनाके आधार-रूप सिद्धान्तोंसे भिन्न, बल्कि उसके विपरीत होते हैं। उदाहरणके लिए, पारम्परिक सेनामें सैनिक अधिकारी और सामान्य सिपाहीमें स्पष्ट भेद बरता जाता है। सिपाही अधिकारीके सामने छोटा और उसके अधीन माना जाता है। अहिंसक सेनामें सेनापति मात्र मुख्य सेवक होता है — समान लोगोंमें सिर्फ प्रथम। वह सामान्य सैनिकोंमें किसी उच्चताका दावा नहीं करता, वह ऐसा नहीं मानता कि उनके मुकाबले उसे कोई विशेष अधिकार और सुविधा है। आपने प्रेमसे खानसाहबको 'बादशाह खान' का खिताब दिया है। लेकिन अगर उनके हृदयके किसी कोनेमें भी ऐसा खयाल आ जाये कि वे सामान्य सेनापतिकी तरह आचरण कर सकते हैं तो तत्काल उनका पतन हो जायेगा और वे अपनी सारी शक्ति और प्रभाव खो बैठेंगे। वे बादशाह केवल इस अर्थमें हैं कि वे सबसे सच्चे और सबसे अग्रणी खुदाई खिदमतगार हैं और अपनी सेवाके गुण और परिमाण दोनों दृष्टिसे अन्य खुदाई खिदमतगारोंसे बढ़-चढ़कर हैं।

सैनिक संगठन और अहिंसक संगठनमें दूसरा भेद यह है कि सैनिक संगठनमें अपने सेनापति और अन्य अधिकारियोंके चुनावमें सामान्य सैनिकोंका कोई हाथ नहीं होता। ये तो उनपर थोप दिये जाते हैं और उनपर इनकी निरंकुश सत्ता होती है। अहिंसक सेनामें सेनापति तथा अन्य अधिकारी निर्वाचित या निर्वाचित-जैसे ही होते हैं। उनकी सत्ता नैतिक होती है और उसका आधार सामान्य सैनिकोंकी स्वेच्छा-प्रेरित आज्ञाकारिता ही होती है।

यह तो हुआ अहिंसक सेनाके सेनापति और सामान्य सैनिकोंके आपसी सम्बन्धके बारेमें। अब बाहरी दुनियासे उनके सम्बन्धोंकी बात लें। यहाँ भी दोनों प्रकारके संगठनोंके बीच वैसे ही अन्तर देखनेको मिलते हैं। अभी-अभी एक बड़ी भीड़से हमारा सावका पड़ा था, जो इस कमरेके बाहर जमा हो गई थी। आपने लोगोंको प्रेमसे समझा-बुझाकर हटानेकी कोशिश की, ताकतसे तो काम नहीं लिया न! अन्तमें जब हमें कामयाबी नहीं मिली तो हम वहाँसे हट गये और छुटकारेके लिए बन्द कमरेमें आ बैठे। सैनिक संसारमें ऐसे नैतिक दबावके लिए कोई स्थान नहीं है।

१. प्यारेलाल नैयरके "इन द फ्रंटियर प्रोविन्स-५" शीर्षक विवरणसे उद्धृत।

२. देखिए पिछला शीर्षक।

अब एक कदम और आगे बढ़कर विचार करें। यहाँ बाहर जो लोग एकत्र हैं वे खुदाई खिदमतगार तो नहीं हैं, लेकिन सबके-सब हमारे मित्र जरूर हैं। हमें उनसे क्या कहना है, यह सुननेको वे आकुल हैं। उनकी अनुशासनहीनता भी उनके प्रेमकी ही अभिव्यक्ति है। लेकिन इनके अलावा अन्यत्र ऐसे लोग भी हो सकते हैं जिनका हमारे प्रति इस तरहका कोई सौहार्द न हो, बल्कि इसके विपरीत शायद उनके मनमें विरोधका ही भाव हो। सशस्त्र संगठनमें ऐसे लोगोंसे निवटनेका एकमात्र जाना-माना तरीका यह है कि उन्हें मार भगाया जाये। लेकिन यहाँ हमारे लिए तो किसी विरोधीको — बल्कि कहिए, किसी भी व्यक्तिको — विचारसे भी अपना शत्रु मानना, अहिंसा या प्रेमकी शब्दावलीके अनुसार, पाप है। उनसे बदला लेनेकी बात सोचना तो दूर रहा, अहिंसाका पुजारी उल्टे प्रभुसे यह प्रार्थना करेगा कि वह उसके विरोधीका हृदय-परिवर्तन करे, और अगर उसका हृदय-परिवर्तन नहीं होता तो अपने विरोधी द्वारा पहुँचाये गये किसी भी नुकसानको सहनेको वह तैयार रहेगा — वह भी कोई डरकर या लाचार होकर नहीं, बल्कि बहादुरीके साथ मुस्कराते हुए। “सच्चा और सम्पूर्ण प्रेम पत्थरको भी पिघला देता है”, इस प्राचीन लोकोक्तिमें मेरा अखण्ड विश्वास है।

अपनी बात समझानेके लिए गांधीजी ने मीर आलम खाँका उदाहरण देते हुए बताया कि किस प्रकार उस पठानने दक्षिण आफ्रिकामें उनपर हमला किया और किस तरह अन्तमें पश्चात्ताप करते हुए वह उनका मित्र बन गया।^१

यदि मैंने बदलेकी कार्रवाई की होती तो ऐसा नहीं हो पाता। मेरे उस व्यवहारको विरोधीका हृदय-परिवर्तन करनेकी क्रियाकी संज्ञा बखूबी दी जा सकती है। यदि आपने अपने विरोधीके हृदयको इस तरह प्रेमके वलपर बदल देनेकी अन्तः-प्रेरणाका अनुभव न किया हो तो बेहतर यही होगा कि इस रास्तेपर से आप अब भी लौट जायें। उस हालतमें कहना होगा कि यह अहिंसाका व्यापार आपके बसकी बात नहीं है।

अब आप पूछ सकते हैं : लेकिन हम चोरों, डाकुओं और बलात्कारियोंके साथ कैसा व्यवहार करें? क्या उनके सम्बन्धमें भी खुदाई खिदमतगारको अहिंसापर दृढ़ रहना ही चाहिए? मेरा उत्तर निस्सन्देह यही होगा : “हाँ, बिल्कुल दृढ़ रहना चाहिए।” सजा देना ईश्वरके अधिकारकी बात है, क्योंकि जिससे कभी गलती नहीं हो, ऐसा निर्णायक तो केवल वही है। यह मनुष्यका काम नहीं है, क्योंकि उसकी “निर्णय-बुद्धि तो दोषयुक्त है”। हिंसाके त्यागका मतलब अन्यायके समक्ष लाचारी महसूस करना या उदासीनताका भाव अपनाना कदापि नहीं होना चाहिए। यदि हमारी अहिंसा सच्ची है और इसकी जड़ प्रेमकी मिट्टीमें जमी हुई है तो चाहिए तो यही कि वह अन्यायका पशुबलसे भी अधिक प्रभावकारी उपचार प्रस्तुत करे। बेशक आपसे मेरी यह अपेक्षा है कि आप डाकुओंका पता लगाकर उनसे मिलें,

उन्हें उनके आचरणका दोष प्रेमपूर्वक समझायें और ऐसा करते हुए यदि मृत्युका भी वरण करना पड़े तो खुशी-खुशी उसका वरण करें।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १९-११-१९३८

६५. पत्र : मीराबहनको

दौरेपर

२७ अक्टूबर, १९३८

चि० मीरा,

मेरा खयाल है, मुझे तुम्हारे सारे पत्र मिल गये हैं। सुशीलाने टाइफाइडसे बचनेके बारेमें तुम्हारे सुझावकी मुझसे चर्चा की है। उसका कहना है नायकम्के कुँए और हमारे कुँए दोनोंमें कोई अन्तर नहीं है। वह तो कहती है, बचावका एक ही तरीका है कि हम उबले पानीका उपयोग करें—केवल पीनेके लिए ही नहीं, बल्कि जिन बर्तनोंमें हम खाते-पीते हैं उनको और जिन फलोंको हम पकाकर नहीं खाते, उनको धोनेके लिए भी। वह मानती है कि हमें हर तरहसे शुद्ध और उबला पानी ठीक मात्रामें मुहैया कर सकना चाहिए। लेकिन हम मिलनेपर तुम्हारे दिये सभी सुझावोंपर चर्चा करेंगे। विलियम्सने तो सभी योजनाएँ भेजीं। लेकिन मैं इस नतीजेपर पहुँचा कि यह सब तो हमारे बूतेसे बाहर हैं। मेरे विचारसे तो हमें फिर मेरी मूल योजनापर ही आ जाना चाहिए। हमें बाल्टीका प्रयोग करना चाहिए और मलको कहीं दूर ले जाकर खादमें बदल देना चाहिए। लेकिन ऐसा करनेपर भी, जहाँ पानी सतह तक आ गया हो, वहाँ पूरी सुरक्षा तो नहीं ही है। यह पत्र मैं एक सप्ताहमें बैठा लिख रहा हूँ। इस कारण और नहीं लिखता।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४१०) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १०००५ से भी।

६६. पत्र : महादेव देसाईको

२७ अक्टूबर, १९३८

चि० महादेव,

कल बहूसे खाना होते समय तुम्हारा पत्र मिला। यह क्यों मानते हो कि तुम मुझसे दूर हो? और कहीं ज्यादा नजदीक आते जा रहे हो तो? होटलमें रहनेवाले दो व्यक्तियोंके बीच केवल दीवारका व्यवधान होता है। यह कौन कह सकता है कि तुम उस दीवारकी नौ या बारह इंच मोटाई जितनी ही दूर होगे या योजनों दूर? और क्या ऐसा नहीं होता कि कोई व्यक्ति योजनों दूर होते हुए भी समीप ही हो? इतना तो निश्चित ही है कि आराम लेकर तुम इस तरह तैयार हो जाओगे जिससे अधिक काम करनेकी शक्ति प्राप्त कर सकोगे। इससे एक विशेष लाभ तो यह होगा कि सभी मामलोंमें तुम्हारा जीवन नियमित होगा। खाने-पीने और उठने-बैठनेके समय का पालन तुम्हें वैसी ही धार्मिक निष्ठासे करना चाहिए जैसी निष्ठासे तुम प्रार्थना करते हो। भोजन भी यज्ञार्थ ही किया जाता है न? या ऐसा होना अवश्य चाहिए। यदि तुम एक यज्ञ भूल गये तो समझो कि सभी यज्ञ भूल गये। जब तक तुम्हें वहाँ रहना अच्छा लगे तब तक अवश्य रहो। मेरे वर्धा लौटनेसे फिलहाल तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है। जिस एकान्त, सत्संग और जिन सुविधाओंका तुम वहाँ उपभोग कर रहे हो वे और कहीं नहीं मिलेंगी। इसलिए या तो वहाँ रहना या फिर जालन्धरमें। यदि राजकुमारी तुमसे ऊब जाये या उसे कहीं जाना पड़े और तुम वहाँ न रहना चाहो तो यह अलग बात है। कल शामको मेरा रक्तचाप १३६/८४ था। तो तुम्हारा अच्छा है या मेरा?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

हम लोग आज जहाँ हैं उस जगहका नाम गठरी या ऐसा ही कुछ है। एक बजे हम डेरा इस्माइल खाँके लिए खाना हो रहे हैं।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६६९) से।

६७. पत्र : नारणदास गांधीको

दौरेपर

२७ अक्टूबर, १९३८

चि० नारणदास,

साथका ७५० रुपयेका चेक दरबार जूनागढ़से मिला है। यह जयन्तीके अवसर पर मिला था। अतः जैसाकि हमने निश्चय किया था तदनुसार तुम इसका उपयोग कर सकते हो। स्थानीय हरिजन कमेटीके लिए वे ७५० रुपये और देंगे। इस सम्बन्धमें मैंने राजकुमारीको एक पत्र भेजा है। वह तुम्हें चेक भेजेगी। तुम्हें इसकी प्राप्ति-स्वीकृति भेजनेकी जरूरत नहीं है। किन्तु मुझे तो लिखोगे ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५५३ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी।

६८. पत्र : छगनलाल जोशीको

डेरा इस्माइल ख़ाँ

२७ अक्टूबर, १९३८

चि० छगनलाल,

गुंदा गाँवमें हुए खून आदिके बारेमें तुम्हारी टिप्पणी मैं पढ़ गया। उसका मुझ-पर कोई असर नहीं हुआ। इतना कहना काफी नहीं है कि यह आपसी वैर नहीं था। क्या सबजीने राजनीतिमें भाग लिया था? क्या उसपर किसीकी नजर पड़ी थी? क्या इस तरह भीतरी मार लगवानेकी प्रथा राजकोटमें थी? तुम्हें इस तरहका कोई प्रमाण जुटाना चाहिए — और ऐसा प्रमाण होना चाहिए — कि इस खून आदिके मामलेसे रियासतके अधिकारियोंका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्बन्ध है। केवल सन्देहके आधारपर तुम्हें कोई निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए। लोग तो कुछ भी मान लेंगे, किन्तु हमें ऐसा प्रमाण खोजना चाहिए जिसे माननेको विरोधी भी बाध्य हों। केवल अनुमानके आधारपर काम नहीं चल सकता। यह कहना भी ठीक नहीं है कि जो लोग मारपीटके लिए गये थे उनमें से किसीका पता नहीं चलता। इसके बावजूद इस

१. देखिए पृ० ६९।

मामलेसे रियासतके अधिकारियोंका सम्बन्ध नहीं बैठाया जा सकता। यदि खून करने-वालेका पता ही न लग सके तो मामलेकी जाँच करके उसका परिणाम लोगोंके सामने रखना चाहिए। तुम्हारी शुरुआत ऐसी है जिससे पाठक लगभग रोमांचित हो जाता है। आगे बढ़नेपर उसे लगता है कि यह भी वैसा ही कोई किस्सा है जैसे कि दुनियामें होते रहते हैं। किन्तु यह तो तुम्हारे समझने-भरके लिए ही है। शेष तो सब चलता ही रहेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५४६) से।

६९. पत्र : एम० आर० मसानीको

डैरा इस्माइल खाँ
२७ अक्टूबर, १९३८

भाई मसानी,

अपने लेखका आपके द्वारा दिया गया उत्तर पढ़कर मुझे दुःख हुआ। लगता है आप यह कहना चाहते हैं कि समाजवादी खादी, मद्य-निषेध, अहिंसामें विश्वास रखते हैं और कमेटीके पास हिंसाको भड़कानेवाले भाषणोंका कोई प्रमाण नहीं है। मेरी एक नहीं बल्कि अनेक समाजवादियोंसे बातचीत हुई है। मैंने उनके लेख और भाषण पढ़े हैं। उन्हें अहिंसामें...^१ नहीं, उन्होंने खादीका मजाक उड़ाया है और यह कहा है कि मद्य-निषेधके द्वारा सिर्फ पैसे गँवाये हैं। जोर-जबरदस्तीके प्रमाण तो मेरे पास लगभग रोज ही आते हैं। ऐसी स्थितिमें मैं अपनी राय कैसे बदलूँ?

मैंने 'दादाभाई नौरोजी' की प्रस्तावना^१ पिताजीको भेज दी है।

मो० क० गांधीके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१३०) से। सी० डब्ल्यू० ४८८८ से भी; सौजन्य : एम० आर० मसानी।

१. साधन-स्त्रमें स्पष्ट नहीं है।

२. देखिए पृ० २७-८।

७०. सच हो तो भयावह

एक सज्जन लिखते हैं :

यहाँ नासिकमें एक पुलिस प्रशिक्षण स्कूल है। इसमें पुलिस-अधिकारियोंको प्रशिक्षण देकर तैयार किया जाता है। उन सबसे सामूहिक रसोईघरमें खाना खानेकी अपेक्षा की जाती है। और उनके लिए मांस-भक्षण तथा मदिरा-पान जरूरी है। मांस-भक्षणकी बात तो जाने दीजिए, पुलिस-अधिकारियोंको मद्य-पान सिखाना सरकारकी मद्य-निषेधकी नीतिसे कहाँ तक संगत है? इन अधिकारियोंको कभी मद्य-निषेधके काममें भी तो लगाया जा सकता है। फिर क्या स्थिति होगी? शायद आपको यह भालूम भी न हो कि इस स्कूलमें मद्य-पान और मांस-भक्षण अनिवार्य है।

मुझे स्वीकार करना चाहिए कि ऐसी किसी अनिवार्यता की कोई जानकारी मुझे नहीं है। पत्र-लेखकने जिस विश्वासके साथ यह पत्र लिखा है, उसीके कारण मैं इसे प्रकाशित कर रहा हूँ। अगर यह सच हो, अगर मांस-भक्षण और मद्य-पान पुलिस-अधिकारियोंके प्रशिक्षणका आवश्यक हिस्सा माना जाता हो तो यह बात सचमुच बहुत भयावह है। इस नियमके अनुसार तो मांस और मदिरासे परहेज रखनेवाले लोगोंके लिए पुलिस-अधिकारियोंका प्रशिक्षण पानेकी कोई गुंजाइश ही नहीं रहती। जिस देशके लाखों लोग धर्मतः निरामिषाहारी हों उस देशमें ऐसा नियम रखना घोर अन्याय है। मैं तो यही आशा करूँगा कि यह जानकारी गलत साबित हो और अगर यह सच्ची ही हो तो इस भारी बुराईका तुरन्त निराकरण किया जायेगा।

डेरा इस्माइल खाँ, २८ अक्टूबर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ५-११-१९३८

७१. पत्र : अमृत कौरको

डेरा

२८ अक्टूबर, १९३८

प्रिय पगली,

पत्र बस यह बतानेके लिए लिख रहा हूँ कि आजका दिन मेरे लिए एक तरहसे तो निठल्लेपनका है, लेकिन दूसरी तरहसे बहुत व्यस्तताका।

क्या तुम्हें मेरा वह पत्र मिला था जिसमें मैंने तुमसे कुछ खादी-कागज भेजनेको कहा था? चाहे मिला हो और तुम भोजना भूल गई हो या मिला ही न हो, लेकिन अब मत भोजना, क्योंकि चन्द्रशंकरने चार दस्ते भेज दिये हैं। जब तक बाहर हूँ तब तकके लिए इतना काफी है।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६४५) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६४५४ से भी।

७२. पत्र : मीराबहनको

२८ अक्टूबर, १९३८

चि० मीरा,

कलका पत्र एक गाँवसे लिखा था। यह डेरासे लिख रहा हूँ। यहाँ हम पूरे तीन दिन रुक रहे हैं। ई० 'को लिखे तुम्हारे पत्रका मसविदा मुझे यहाँ मिला। यह अच्छा है मगर आखिरी पैरेको छोड़कर। आखिरी पैरेमें मानसिक थकावट झलकती है। ध्यानसे देखनेपर पाओगी कि पत्रके शेष अंशसे उसका सम्बन्ध नहीं जुड़ता और वह बिलकुल अनावश्यक है। एक छोटे देशके शस्त्र त्याग देनेपर इंग्लैण्ड, जो खुद भली-भाँति शस्त्र-सज्जित है, उसका सम्मान करे, यह तो इंग्लैण्डके लिए अपमानजनक बात होगी। अगर चेक लोग यह काम कर पायें तो जर्मनी-सहित दुनियाके अन्य राष्ट्र भी उसे देखकर चकित रह जायेंगे।

१. तात्पर्य शापद एमिल हाशसे है जो कि ५ अक्टूबरको डॉ० बेनिसके चेकोस्लोवाकियाके राष्ट्रपति-पदसे द्वारा त्यागपत्र देकर अपने देशसे बाहर चले जानेके बाद ३० नवम्बरको उनके उत्तराधिकारी चुने गये थे।

तुम्हें अपनी आँखोंकी ओर तुरन्त ध्यान देना चाहिए। तुम्हें कृष्णचन्द्र-जैसा सहायक तो मिला हुआ ही है।

नलकूपके बारेमें मैंने इजाजत दी हो, ऐसा मुझे याद तो नहीं आ रहा।
सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४११) से; सौजन्य: मोराबहन। जी० एन० १०००६ से भी।

७३. पत्र : महादेव देसाईको

डेरा

२८ अक्टूबर, १९३८

चि० महादेव,

साथका पत्र तुम पढ़ना चाहोगे इसलिए भेज रहा हूँ। उसे पढ़कर चिन्ता मत करना। नासिक स्कूलके 'बारेमें संक्षिप्त टिप्पणी भेजी है। आज और कलका दिन मुझे 'हरिजन' के लिए दिया गया है। यहाँ खानसाहबका राज्य है इसलिए कोई मुझे परेशान करने आ ही नहीं सकता। और तिसपर मेरा मौन। इसलिए जिस प्रकार तुम वहाँ आदर्श स्थानपर हो उसी प्रकार मैं यहाँ आदर्श स्थितिमें हूँ। हम लोग लारीमें दौरा करते हैं। उसमें मेरे लिए एक बिस्तर होता है। उसमें खान साहब बहुत लोगोंको भरते ही नहीं। इसमें से जितना राजकुमारीको बताने लायक हो सो बता देना।

बाबला झूठमूठ बहानेको तो कभी मुझे लिखे। वह अपने बारेमें क्या सोचता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६७०) से।

७४. पत्र : मणिबहन पटेलको

डेरा इस्माइल खाँ
२८ अक्टूबर, १९३८

चि० मणि,

तुझे कई वर्ष बाद मुझे पत्र लिखना पड़ा है। पत्र काफी खबरोंसे भरा हुआ है। इसी तरह लिखती रहना। नासिकके पुलिस-स्कूलसे सम्बन्धित खबरको सच मानकर मैंने टिप्पणी लिखी है। यदि तू खेर^१ या मुन्शी^२ से मिले तो उनसे भी बात करना।

यदि वहाँका अधिकारी-वर्ग मद्य-निषेधका काम मनसे न करे तो मन्त्रियोंको गवर्नरसे सख्तीसे कहना चाहिए। किन्तु उन्हें इस बातका विश्वास होना चाहिए कि इस काममें अधिकारियोंका मन नहीं है।

जमीनोंके बारेमें तो वल्लभभाईका पत्र मिलनेके पहले ही मैं लिख चुका था। इस सम्बन्धमें विधानसभामें हुई चर्चाकी रिपोर्ट मुझे भेजना।

मैंने यह नहीं कहा कि अश्लिल साहित्यके बारेमें कोई कदम उठाया ही नहीं जा सकता। मैंने अपनी राय अवश्य दी है। मुझे इस बातका अन्देशा ज़रूर है कि लोगोंको गन्दा साहित्य अच्छा लगने लगा है, इसलिए उसे एकाएक रोका नहीं जा सकता। जब विद्वानोंको ही इससे नफरत हो जायेगी तभी इसे रोका जा सकता है। मैं यह मानता हूँ कि अश्लिल लेख आदिके प्रकाशनको यदि कानूनके द्वारा बन्द किया जा सकता हो तो करना चाहिए। परन्तु इतना याद रखें कि विद्यार्थियोंको ऐसी चीजें पढ़नेको मजबूर करने और अखबारोंमें गन्दे लेख छापनेमें बहुत अन्तर है।

राजकोटका मामला तो अद्भुत है। वहाँ जो-कुछ हो रहा है, यदि वह टिका रहा तो इसमें सन्देह नहीं कि लोग अपनी माँग पूरी करा सकेंगे। त्रावणकोरके मामलेमें पिताजीने ठीक किया है। रामचन्द्रनको बुलाकर अच्छा किया, हालाँकि पिताजीका पत्र मिलनेके पहले ही मैं अपना बयान^३ जारी कर चुका था। मुझे लगता है कि बयान जारी करना आवश्यक था। अब तुरन्त त्रावणकोर जानेकी आवश्यकता नहीं है।

यह बिल्कुल अच्छा नहीं कि नाकसे गलेमें पानी टपकता रहे। इसे अवश्य दूर करना चाहिए।

मैं वड़ौदाके बारेमें समझ गया। भादरणमें जो-कुछ हो सो मुझे सूचित करना।

१. बी० जी० खेर, बम्बईके मुख्य मन्त्री।

२. क० मा० मुन्शी, बम्बईके गृह मन्त्री।

३. देखिए पृ० ६७।

१५ तारीखके लगभग मैं वर्धा पहुँच जानेकी आशा करता हूँ। यहाँका काम ९ तारीखको पूरा होगा। सुभाष बाबूके बारेमें जो-कुछ हो रहा है वह मेरे ध्यानमें है। इसलिए मैंने कार्य-समितिमें उसकी कुछ चर्चा की थी। किन्तु पिताजीकी यह राय थी कि जवाहरलालके आने तक हम प्रतीक्षा करें। इसलिए मैं चुप रहा। इस बार राष्ट्रपतिके चुनावमें कठिनाई अवश्य होगी। मैंने 'हरिजन' में जो सुझाव दिया है उसपर पिताजी विचार करें। मेरी राय है कि जो हो रहा है उसे चलते रहने देनेसे हानि होगी।

अब तेरे दोनों पत्रोंका उत्तर इसमें आ गया। पिताजीको फुरसतके वक्त इसे पढ़वा देना।

मेरा स्वास्थ्य सचमुच बहुत अच्छा रहता है। मौलानाको साथ लेकर पिताजीको इस प्रान्तकी यात्रा करनी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल

पुरुषोत्तम बिल्डिंग

ऑपेरा हाउसके सामने

बम्बई

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-४: मणिबहेन पटेलने, पृ० ११९-२१

७५. पत्र : विजया एन० पटेलको

२८ अक्टूबर, १९३८

चि० विजया,

तेरे तीन पत्र एक साथ मिले—एक दिल्लीके पतेपर लिखा, दूसरा सेगाँवके पतेपर लिखा और तीसरा सीधे।

तू वहाँ पहुँच गई^१ यह तो बहुत अच्छा हुआ। तेरा स्वास्थ्य सुधर गया इसके लिए बधाई। मैं समझता हूँ कि अब तू सामान्य स्थितिमें आ गई है। अतः मैं चिन्ता क्यों करूँ?

मेरा तो ठीक ही चल रहा है। यहाँकी आबहवा मेरे अनुकूल है। ठण्ड उतनी पड़ रही है जितनी मैं सहन कर सकता हूँ। महादेव शिमलामें मौज कर रहे हैं।

१. देखिए खण्ड ६७, "वह दुर्भाग्यपूर्ण सभा-त्याग", पृ० ४४६-७।

२. विजया पटेल उन दिनों ग्रामीण शिक्षा केन्द्र दक्षिणामूर्ति में थी, जो सौराष्ट्रके भावनगर जिलेमें स्थित आम्बला नामक गाँवके समीप था।

सेगाँवकी बीमारियोंकी खबरें तो तुझे मिलती ही होंगी। नानाभाई कैसे है? वहाँ तेरा कैसा चल रहा है, क्या-क्या कर रही है?

हम लोग १५ के लगभग सेगाँव पहुँचेंगे।

तुम दोनोंको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१०१) से। सी० डब्ल्यू० ४५९३ से भी; सौजन्य : विजयावहन एम० पंचोली ।

७६. पत्र : कृष्णचन्द्रकी

२८ अक्टूबर, १९३८

वि० कृष्णचन्द्र,

तुमने मीराबहनको मदद देना शुरू किया है सो बहुत अच्छा किया। उसमें दूषण तो हैं लेकिन वह बड़ी साध्वी है। उसकी जो सेवा करोगे वह सब तुमको फलेगी। उसके पाससे ब्रह्मचर्यका शुद्ध अनुभव ज्ञान पाओगे।

बाकी तो तुमको मैंने लिखा ही है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३०७) से।

७७. भाषण : डेरा इस्माइल खाँ की सार्वजनिक सभामें^१

२८ अक्टूबर, १९३८

आपने जो थैली मुझे भेंट की है, उसके लिए आपको धन्यवाद देता हूँ। लेकिन आपको मालूम होना चाहिए कि मैं दरिद्रनारायणका प्रतिनिधित्व करनेका दावा करता हूँ और दरिद्रनारायण इतनी आसानीसे सन्तुष्ट नहीं होते। मेरा यह व्यापार तो उन करोड़ों अधमूखे और अभावग्रस्त लोगोंके लिए है जिन्हें सहायताकी अत्याधिक आवश्यकता है। कपाससे बनी चीजोंके आयातके कारण हर वर्ष बहुत बड़ी मात्रामें भारतके धनके विदेश चले जानेकी समस्याको हमें खादीके बलपर हल करना है। खादीके माध्यमसे

१. प्यारेलाल नैयरके “इन द फ्रंटियर प्रोविन्स-५” शीर्षक विवरणसे उद्धृत। इस अवसरपर गांधीजीको ५,७५३ रुपयेकी एक थैली भेंट की गई थी। इसपर गांधीजी ने उपस्थित लोगोंको काफी फटकारा, क्योंकि इस राशिमेंसे ५,००० रुपये एक ही आदमीके दिये हुए थे।

अ० भा० च० सं० जरूरतमन्दों और गरीबोंको— हिन्दुओं और मुसलमानों, कतयों और बुनकरों, सबको— अब तक मजदूरीके रूपमें चार करोड़से अधिक रुपये दे चुका है। फिर है हरिजनोद्धारकी समस्या। यह भी उतनी ही कठिन है। आपका दान, जिस कार्यके निमित्त वह दिया जाये, उसके अनुपातमें होना चाहिए। आपका शहर कोई गरीब नहीं है। दाताओंमें से अधिकांश अच्छे व्यापारी हैं। निश्चय ही आप चाहते तो इससे अधिक दे सकते थे।

इसके बाद खुदाई खिदमतगारोंका और उनके तथा स्थानीय स्वयंसेवकोंके बीच गांधीजी को जो तनाव देखनेको मिलता था उसका, उल्लेख करते हुए गांधीजी ने कहा :

ये मतभेद बहुत दुःखद हैं। लेकिन अगर खुदाई खिदमतगार, उन्होंने अब अपने धर्मको जिस रूपमें समझ लिया है उस रूपमें, उसपर दृढ़ रहते हों तो ये मतभेद और झगड़े शीघ्र ही मिट जायेंगे। वे कसौटीपर चढ़े हुए हैं। यदि वे इसपरसे खरे साबित होकर उतरते हैं तो वे साम्प्रदायिक एकताकी स्थापना और स्वराज्य प्राप्तिके निमित्त बनेंगे। मैं जानता हूँ कि हृदयसे क्रोधको बिल्कुल निकाल फेंकना कठिन कार्य है। यह काम खुदाकी रहमतसे ही हो सकता है। आप सब मेरे साथ मिलकर प्रभुसे यह प्रार्थना करें कि वह खुदाई खिदमतगारोंको, उनके अन्दर अगर अब भी क्रोध और हिंसाकी कोई भावना छिपी रह गई हो तो, उसे निकाल बाहर करनेकी शक्ति दे।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १९-११-१९३८

७८. जन-शिक्षा आन्दोलन

पिछले दिनों डॉ० हेंगची ताओ मुझसे मिलने आये थे। मैंने उनसे चीनमें चल रहे सराहनीय जनशिक्षा आन्दोलनके विषयमें कुछ लिखनेका अनुरोध किया है। अब उन्होंने निम्नलिखित ज्ञानप्रद लेख^१ लिख भेजा है। यह लेख हम भारतीयोंके लिए बहुत ही उपयोगी हो सकता है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २९-१०-१९३८

७९. पत्र : अमृत कौरको

डेरा

२९ अक्टूबर, १९३८

प्रिय पगली,

कहते तो तुम दोनों यही हो कि तुम लोग मुझसे रोज पत्र लिखनेकी अपेक्षा नहीं रखते, लेकिन मेरा समाचार रोज जरूर जानना चाहते हो।

मैं अपने बारेमें कुछ इसलिए नहीं लिखता कि इन दिनों जैसा हूँ, उससे अच्छा तो कभी रहा ही नहीं। मौसम, आहार और वातावरणकी शान्ति, तीनोंका यह मिला-जुला सुपरिणाम है। यहाँ सिवाय अमृतस्सलामके कोई झगड़नेको भी नहीं है। लेकिन मेरा मौन उसपर भी एक कारगर रोक है।

ऊपरकी पंक्तियाँ लिखनेके बाद बीचमें कुछ बाधा पड़ गई थी। और जब मैं बायें हाथसे लिखता हूँ, तो सबकुछ आहिस्ता ही चलता है — दिमाग भी। वैसे यह बात तो अच्छी है।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६४६) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६४५५ से भी।

८०. पत्र : महादेव देसाईको

डेरा

२९ अक्टूबर, १९३८

चि० महादेव,

दाहिने हाथको जरा आरामकी जरूरत है। इसके साथका तुम्हारे देखनेके लिए है। यदि तुम डॉरोथीको दो पंक्तियाँ लिखना चाहो तो लिख देना।

क्या तुमने सुना है कि सेगाँवमें भणसाली और राजेन्द्रको टाइफाइड हो गया था? क्या तुम्हें सेगाँवसे कोई सीधे लिखता है? भणसाली अब बिल्कुल अच्छा है। राजेन्द्रको अभी भी बुखार है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६७२) से।

८१. पत्र : पुरुषोत्तम गांधीको

२९ अक्टूबर, १९३८

चि० पुरुषोत्तम,

तेरा पत्र मिला। नव-वर्ष और पूरे वर्षके मेरे आशीर्वाद तो तुझे हैं ही।

जब मैंने तेरे सेवाका मार्ग छोड़नेकी बात सुनी तो मुझे दुःख तो हुआ था। किन्तु मैंने यह सोचकर अपने मनको समझा लिया कि तू बिना सोचे-विचारे कुछ नहीं करेगा। मैं तेरा क्या पथ-प्रदर्शन करूँ? किसी तरहकी झूठी शर्म या किसीके दबावमें आकर कुछ मत करना। तुझमें जितना हृदय-बल हो उतना ही करना। सेवा-मार्गको छोड़कर अथ-मार्ग अपना नेमें कोई पाप तो है ही नहीं। सभी लोग सेवा-मार्गको पचा नहीं सकते। यदि हम इतना खा लें जिससे अपच हो जाये तो उससे रोग ही होगा। इसकी अपेक्षा उतना ही खाना चाहिए जितना पच सके।

फिलहाल तू जिस तरह रह रहा है वह अच्छा है। धीरे-धीरे हो सकता है तुझे अपनी आर्थिक स्थितिसे परेशानी न हो। यह समझ लेना कि तंगीमें रहना अच्छा है। तंगीमें आदमीका चरित्र निखरता है। इसके अतिरिक्त दुनिया तो तंगीमें ही रहती है। सम्पन्नताका उपभोग करनेवाले तो थोड़े ही नजर आते हैं। ऐसे लोगोंके प्रति मुझे कभी द्वेष नहीं हुआ। कभी-कभी उनपर दया आती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

८२. पत्र : अमृत कौरको

डेरा

३० अक्टूबर, १९३८

प्रिय पगली,

रातके आठ बजनेवाले हैं—मेरे बाहर घूमने जानेका वक्त हो रहा है।

तीन शिष्टमण्डलोंमें से यह आखिरी तो अभी-अभी मिलकर गया है।

दुर्गाके लिए एस० के नुसखेके बारेमें मैंने क्या कहा था?

तुम्हारा कहना ठीक है। अगर मैं सेगाँव बिलकुल ही छोड़ देता हूँ तो यह आर्यनायकमके साथ अन्याय होगा। लेकिन मैं सेगाँव छोड़ नहीं रहा हूँ। अगर सबकुछ ठीक-ठीक चला तो वर्षका एक हिस्सा सेगाँवमें जरूर बिताऊँगा। देखें, क्या होता है। प्रभुसे मार्ग-दर्शनकी प्रार्थना है।

मैं स्वस्थ-प्रसन्न हूँ।
सप्रेम,

जालिम

[पुनश्च:]

तुम्हें कुछ याद है कि मैंने तुम्हें कु० की जो पुस्तक सुधारनेके लिए दी थी वह तुम कहाँ छोड़ गई?

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८८७) से; सौजन्यः अमृत कौर। जी० एन० ७०४३ से भी।

८३. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

डेरा

३० अक्टूबर, १९३८

प्रिय कु०,

तुम्हारी शिकायत वाजिब है। मैंने अपने सिर बहुत ज्यादा बोझ ले लिया है, बल्कि यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि मैं इस बोझसे दब गया हूँ। इसलिए स्वाभाविक क्रममें जो कार्य समय मिलनेपर बादमें हाथमें लिये जा सकते थे उनकी पूरी उपेक्षा ही हो गई है। अब तुम्हें अपना मसविदा^१ भेज रहा हूँ। आशा है, इसे पढ़नेमें तुम्हें कठिनाई नहीं होगी। इसको अन्तिम रूप देनेसे पहले शंकरलाल और जाजूजीको दिख लेना। तुम्हारी पुस्तक तो जब मुझसे कुछ करते न बना, मैंने रा० कु० को दे दी।^२ उसे पत्र लिखा है।

तुम सबका कैसा चल रहा है?

पेशावरसे १० तारीखको चलनेकी उम्मीद करता हूँ।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१३६) से।

१. देखिए अगला शीर्षक।

२. देखिए पिछला शीर्षक।

८४. सदस्योंकी प्रतिज्ञाकी व्याख्या

[३० अक्टूबर, १९३८]

यह प्रतिज्ञा सामान्य ढंगकी है और इसे जान-बूझकर ऐसा तैयार किया गया। यह एक सज्जनकी प्रतिज्ञा है और इसमें “भारतके गाँवोंके चतुर्दिक कल्याणके उद्देश्यकी प्राप्तिके निमित्त अपनी शक्ति और प्रतिभाके अधिकतम अंशका”, इन शब्दोंकी व्याख्या प्रत्येक सदस्यके ईमानपर छोड़ दी गई है।

सदस्यगण न केवल इस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिए काम करनेको प्रतिज्ञाबद्ध है, बल्कि “इन आदर्शोंको अपने जीवनमें उतारनेका प्रयत्न करने” और “अन्य वस्तुओंके मुकाबले ग्रामोद्योगोंसे बनाई वस्तुओंके उपयोगको प्राथमिकता देने” के लिए भी प्रतिश्रुत हैं।

इसलिए बोर्डके जिन सदस्योंपर सदस्यताके लिए नामोंकी सिफारिश करनेकी जिम्मेदारी होगी उन्हें इस बातका ध्यान रखना होगा कि वे ऐसे लोगोंकी ही उम्मीदवारी पेश करें जिनके प्रत्येक कार्य-व्यापारके पीछे ग्रामवासियोंके कल्याणकी हार्दिक कामना हो। स्वभावतः ऐसा व्यक्ति प्रतिदिन थोड़ा-सा भी समय ग्राम-कार्यके लिए देगा। जरूरी नहीं कि वह कार्य गाँवमें ही करे; अलबत्ता वह कार्य गाँवके लिए अवश्य हो। उदाहरणके लिए, किसी नगरमें रहनेवाला सदस्य यदि किसी दिन ग्रामोद्योगोंसे तैयार की गई चीज किसीके हाथ बेचता है या किसीको ऐसी चीज खरीदने पर राजी करता है तो माना जायेगा कि उस दिन उसने कुछ ग्राम-कार्य किया।

सिफारिश करनेवाले सदस्यको इस बातका भी ध्यान रखना होगा कि उम्मीदवार जहाँ भी सम्भव हो वहाँ ग्रामोद्योगों द्वारा तैयार की गई वस्तुओंका ही उपयोग करनेवाला हो। अर्थात् वह मिलके बने कपड़ेकी जगह खादीका, चीनी मिट्टीके बने बर्तनोंकी जगह गाँवोंके कुम्हारों द्वारा बनाये मिट्टीके बर्तनका, लोहेके निबवाली कलमकी जगह सरकण्डेकी कलमका, साधारण कागजके बदले हाथके बने कागजका, सफाईकी दृष्टिसे त्याज्य और दाँतोंको नुकसान पहुँचानेवाले ब्रशके स्थानपर आरोग्यमय बबूल अथवा नीमकी या अन्य किसी पेड़-पौधेकी टहनीकी दातौनका, कारखानोंमें कमाये गये चमड़ेके बदले गाँवोंमें मरे हुए पशुओंसे उतारी गई खालसे बने चमड़ेके सामानका, कारखानोंमें बनी चीनीकी जगह गाँवोंमें बने गुड़का और मिलोंके पालिशदार चावलके स्थान पर हाथ-कुटे चावलका उपयोग करता हो।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

कु० के लिए

बोर्ड एजेंटों, कार्यकर्ताओं और आम लोगोंको व्यापार और ग्रामोद्योगके लिए उपयोगी वस्तुके रूपमें मरे हुए पशुओंके चमड़ेका महत्व समझायेगा। कार्यकर्ता इस बातकी जानकारी प्राप्त करें कि उनके अपने-अपने इलाकेमें मरे हुए पशुओंको हटाने, उनकी खाल उतारने आदिका क्या तरीका है और खाल उतारनेसे लेकर चमड़ा कमाने तककी विधि किस प्रकार सम्पन्न की जाती है। ऐसी सब जानकारी प्राप्त करके वे पूरा विवरण बोर्डके सामने पेश करें। आम लोगोंसे अनुरोध है कि वे चमड़े की ऐसी ही चीजें इस्तेमाल करें जो गाँवोंमें बनाई गई हों।

स्मरणीय बातें

दिल्ली-निवासी हरध्यानसिंहकी एजेंटके रूपमें नियुक्ति। बोर्डके सदस्यों और एजेंटोंके कार्य-क्षेत्रोंका यथातथ्य वर्णन।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१३७ और १०१३८) से।

८५. पत्र : महादेव देसाईको

डेरा

३० अक्टूबर, १९३८

चि० महादेव,

मैं समझता हूँ तुम साथका पत्र देखना चाहोगे।

आज १२ बजे दौरा शुरू हुआ और हम ४ बजे लौटे। हम कुलाची नामक गाँव गये थे। कल हमें टाँक जाना है।

हवामे अभी ठण्डका तो नाम भी नहीं है। हम बाहर सोते हैं।

हम १० तारीखको सेगाँव खाना होंगे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

क्या तुम्हें ब्रजकृष्णके पत्र नियमित रूपसे मिलते हैं?

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६७३) से।

८६. पत्र : अमृत कौरको

३१ अक्टूबर, १९३८

प्रिय पगली,

अभी हम लोग यहाँसे चलनेको बिलकुल तयार बैठे हैं।

रेडियोकी खबरों और अखबारी खबरों, दोनोंमें फर्क क्या है? दोनों समान रूपसे अविश्वसनीय होती हैं। मेरे स्वास्थ्यमें कोई खराबी नहीं आई है। अभी मैं जैसा हूँ उसको देखते हुए तो सोचता हूँ कि शायद सर्दीके मौसमके मध्यमें भी मैं इसी तरह स्वस्थ रह सकता हूँ। लेकिन हो सकता है, मैं उत्साहके अतिरेकमें ऐसा सोच रहा होऊँ। शेष महादेवको लिखे पत्रसे जान लेना।

सप्रेम,

योद्धा

उर्फ जालिम

उर्फ डाकू

और क्या?

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६४७) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६४५६ से भी।

८७. पत्र : महादेव देसाईको

३१ अक्टूबर, १९३८

प्रि० महादेव,

मैंने ब्रजकृष्णसे तुम्हें रोज लिखनेको कहा है। वह जो लिखता है उसमें कितना प्रेम और रस उँडेलता है यह तो केवल वही जाने।

यहाँसे हमारे खाना होनेकी बिलकुल सही तारीख मैं नहीं दे सकता। कोशिश हम यह कर रहे हैं कि ९ तारीखको कैम्बलपुर या रावलपिंडी या तक्षशिलासे खाना हो जायें। तुम तो ज्यादासे-ज्यादा १० तारीख तक दिल्ली पहुँच जाना। यदि ९ को पहुँचो तो ज्यादा अच्छा हो।

मैं तुम्हें अभी हालमें वर्धामें नहीं रहने दूंगा। समुद्र-यात्राकी बात मुझे पसन्द है। दुर्गा और बाबला भी साथ रहें। यदि दुर्गा पसन्द करे और वह बलसाड़में रहना चाहे तो बात अलग है। मैं चाहूँगा कि तुम सिंगापुर तक हो आओ। तुम

थोड़े दिन सिंगापुरमें रहो तो भी अच्छा है। तुम जल्दीसे-जल्दी २० जनवरीसे अपना काम सँभालना। इस बीच यदि तुम कुछ लिखना चाहो तो लिख भेजना। मुझे इस बातका डर नहीं है कि कहीं भी तुम्हारा समय बेकार नष्ट होगा। और तुम अधिक कुशलता प्राप्त करके अपना काम सँभाल सकोगे।

तुम्हारी टिप्पणियाँ मैं ज्यों-की-त्यों जाने दे रहा हूँ। मैं सिसंधमसे सम्बन्धित लेख वापस माँग लेना। उक्त लेख बहुत अच्छा है, कवित्वपूर्ण है किन्तु 'हरिजन' के लायक नहीं है। हालाँकि उसमें कविता है किन्तु हमारे दृष्टिकोणसे उसमें सीखने लायक कुछ नहीं है। वहाँके और हमारे यहाँके गाँवोंमें समानता कहाँ है? जब वहाँके गाँव आबाद हुए उस समय भी ये लोग सशस्त्र समुद्री डाकू और लुटेरे थे। गाँव इस बातके सूचक थे। हमारे गाँव घूरे हैं। उन गाँवोंसे राजाओंका पैसे लूटने-भरका सम्बन्ध था। वैश्योंने धन बटोरा। शूद्रों और अतिशूद्रोंने गुलामी की। अतः तुम्हारा लेख हमें कोई प्रेरणा नहीं दे सकता। सतही तौरपर सोच-विचार करनेवाला कोई व्यक्ति यदि कविताकी खोजमें हमारे गाँवोंमें जा बैठे तो यह अज्ञान ही माना जायेगा न? और वेदोंसे उद्धरण निकालकर यदि तुम उन्हें आधुनिक अंग्रेजीके उद्धरणोंके साथ रखो तो यह हमारे लिए शर्मकी बात होगी। मेरी इस आलोचनाको और विस्तृत करके तुम मेरा मुद्दा समझ लेना। यदि मेरे समझनेमें कोई दोष हो तो मुझे सूचित करना। उक्त लेख मैंने आज सुबह तीन बजे पढ़ा। किन्तु यदि तुम इसे 'मॉर्डन रिब्यू' या 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में भेजना चाहो तो भेज देना।

हमें फौरन कूच करना है। मैं खाते-खाते यह लिख रहा हूँ। फल मैं कांटे (फोर्क) से खाता जा रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६७४) से।

८८. भाषण : टाँककी सार्वजनिक सभामें*

३१ अक्टूबर, १९३८

उनका खयाल है कि मुसलमानोंकी प्रधानतावाले इस क्षेत्रमें मुट्ठी-भर हिन्दुओंका अस्तित्व तभी सम्भव हो सकता है जब मुसलमान उनके सच्चे हमसाथे हों। उन्होंने मुझसे खुदाई खिदमतगारोंसे यह अनुरोध करनेको कहा है कि उनके सम्बन्धमें वे अपनी स्वाभाविक भूमिका निभायें। उनकी इस भावना और अनुरोधसे मैं पूरी तरह सहमत हूँ और मेरा निश्चित विश्वास है कि मेरे अन्दर आपने जो आशाएँ जगा दी हैं, यदि आप केवल उन्हींको पूरा कर दिखायें तो इन हिन्दुओंको बिल्कुल

१. प्यारेलाल नेयरके "इन द फ्रंटियर प्रॉविन्स-५" शीर्षक विवरणसे उद्धृत।

२. तात्पर्य उन हिन्दुओंसे है जिन्होंने गांधीजी से मिलकर शिकायत की थी कि वे कैसी असुरक्षित स्थितिमें जी रहे हैं।

निश्चित कर देना आपके लिए कोई मुश्किल बात नहीं है। जैसाकि मैंने एक अन्य अवसरपर कहा था, इस प्रान्तमें रहनेवाले हिन्दू, मुसलमान और अंग्रेज तीनों तुला पर चढ़े हुए हैं। अंग्रेजोंके कृत्योंके बारेमें तो इतिहास अपना निर्णय सुनायेगा; लेकिन अपने पारस्परिक व्यवहारमें ठीक रवैया अपनाकर हिन्दू और मुसलमान अपना एक अलग इतिहास गढ़ सकते हैं। जहाँ तक खुदाई खिदमतगारोंकी बात है, उनका कर्तव्य-पथ तो निश्चित हो चुका है। उन्हें अपने पड़ोसियोंकी रक्षाके लिए एक जीती-जागती दीवार बनकर खड़ा होना है।

संकल्प-शक्तिके धनी और अपने उद्देश्यकी सचाईमें अपरिमित श्रद्धा रखनेवाले उत्साही लोगोंका एक छोटा-सा दल भी इतिहासकी धाराको बदल सकता है। ऐसा पहले भी हो चुका है और यदि खुदाई खिदमतगारोंकी अहिंसा केवल बाहरी चमक-दमकवाली चीज नहीं, बल्कि कुन्दनके समान शुद्ध और सच्ची है तो ऐसा फिर हो सकता है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १९-११-१९३८

८९. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ'

टांक

३१ अक्टूबर, १९३८

अगर इन भाईका कहना सच हो और आप अपने हृदयके किसी कोनेमें ऐसा कोई विचार पाल रहे हों कि अहिंसा आपके लिए सिर्फ़ मुखौटा अथवा और अधिक हिंसा करनेका एक आधार है तो — मैं तो कहूँगा कि यदि आप अहिंसाको इसकी तर्कसंगत परिणति तक ले जाकर प्रभुसे किसी शिशु-हत्या और बाल-हत्याके अपराधीको भी क्षमा कर देनेकी प्रार्थना करनेको तैयार न हों तो भी — आपको खुदाई खिदमतगारोंकी अहिंसाकी प्रतिज्ञापर हस्ताक्षर करनेका कोई अधिकार नहीं है। मनमें कोई और विचार रखकर इस प्रतिज्ञापर हस्ताक्षर करनेसे आपकी और आपकी संस्थाकी भारी बदनामी होगी और जिसे आप सर्वके साथ फ़क्र-ए-अफगान कहते हैं, उसके हृदयको भीषण आघात पहुँचेगा।

अब आप पूछ सकते हैं: “लेकिन अगर हमारी कोई माँ या बहन किसी नर-पशुके पंजेमें फँस गई हो और उसके शील-भंगका खतरा उपस्थित हो गया हो तो हम क्या करें? क्या उस नरपशुको अपने मनकी करने दें? क्या ऐसी स्थितिमें भी हिंसाका सहारा लेना उचित नहीं होगा?” मेरा उत्तर होगा “नहीं”। उस हालतमें आपको

१. प्यारेलाळ नैयरके “इन द फ्रंटियर प्रोविन्स-५” शीर्षक विवरणसे उद्धृत।

२. तात्पर्य एक पठान द्वारा पूछे गये उस प्रश्नसे है जिसे गांधीजी ने “खुदाई खिदमतगार और बादशाह खान” शीर्षक अपने लेखमें उद्धृत किया है; देखिए पृ० १२७-३२।

उस नरपशुसे अनुनय-विनय करना होगा। सम्भावना यही है कि अपनी उस विकार-ग्रस्त अवस्थामें वह आपकी बात नहीं सुनेगा। लेकिन तब आपको उसके और उस माँ या बहनके बीच दीवार बनकर खड़ा हो जाना पड़ेगा। बहुत सम्भव है कि इस प्रयत्नमें आपको अपने प्राण गँवाने पड़ें, लेकिन उसका यह अर्थ तो होगा ही कि आपने अपने कर्तव्यका पालन किया। थोड़ी-सी सम्भावना इस बातकी भी है कि आपके निहत्थे होनेसे और कोई प्रतिरोध किये बिना बलिदान हो जानेसे आपको मारने-वालेके मनका विकार एकाएक मिट जाये और वह उस माँ या बहनका शील-भंग किये बिना उसे छोड़ दे। लेकिन लोगोंका कहना है कि आततायी, हम जैसा चाहते हैं और जैसी आशा करते हैं, वैसा व्यवहार तो करता नहीं। आपके प्रतिरोध न करनेपर, सम्भव है, वह आपको किसी खम्भेसे लगाकर रस्सीसे बाँध दे और अपने दुष्कृत्यका मूक दर्शक बनाकर छोड़ दे। लेकिन यदि आपमें संकल्प-बल होगा तो आप इतना प्रबल प्रयत्न करेंगे कि उसके फलस्वरूप या तो आपका बन्धन टूट जायेगा या आप स्वयं अपनेको ही समाप्त कर देंगे। दोनों हालतोंमें आप उस आततायीकी आँखें खोल देंगे। आपके सशस्त्र प्रतिरोधसे भी इससे कुछ अधिक नहीं हो पायेगा, लेकिन उस प्रयत्नमें अगर आप पराजित हो गये तो स्थितिके उससे भी बदतर हो जानेकी सम्भावना है जैसीकि वह तब होगी जब आप अपने शरीर-बलसे प्रतिरोध किये बिना मर मिटें। इसके अलावा आपके आत्मबलसे प्रतिरोध करनेमें यह सम्भावना भी है कि विपत्तिमें पड़ी वह माँ या बहन आपके अङ्गि साहसका अनुकरण करते हुए अपना शील-भंग होने देनेके बजाय अपनी जीवन-लीला ही समाप्त कर ले।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १९-११-१९३८

१०. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ'

३१ अक्टूबर, १९३८

रमजानका महीना होनेके कारण आप लोग तो रोजा रख रहे हैं और गाँवके एक भी मुसलमानके घर अंगीठी नहीं सुलगती, लेकिन यहीं आपको हमारे लिए खाना बनाना पड़ा, ऐसी बातसे मेरा हृदय अभिभूत हो गया है और मुझमें नम्रता आई है। दक्षिण आफ्रिकामें अपनी देखरेखमें रहनेवाले मुसलमान लड़कोंको रमजानके दौरान रोजा रखनेकी शिक्षा देनेके लिए उस महीनेमें मैं खुद भी उपवास रखता था। आज मेरी वह अवस्था नहीं रह गई है। इसके अलावा मुझे खानसाहबकी भावनाका भी खयाल रखना था। उन्हें दिन-रात मेरे स्वास्थ्यको ठीक रखनेकी चिन्ता लगी रहती

१. प्यारेलाल नैयरके "इन द फ्रंटियर प्रॉविन्स-६" शीर्षक विवरणसे उद्धृत। गांधीजी ने ये बातें डेरा इस्माइल खॉंके पास एक छोटे-से गाँवमें कही थीं।

है। सो अगर मैं भी उपवास रखता तो खानसाहबको परेशानी होती इसलिए मैं तो आपसे माफी ही माँग सकता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २६-११-१९३८

९१. पत्र : अगाथा हैरिसनको

१ नवम्बर, १९३८

प्रिय अगाथा,

आशा है, तुम्हारी समुद्र-यात्रा आरामसे बीती होगी।

बादमें सोचने पर तय किया कि तुम्हें यहाँ आनेसे मना कर दूँ। दौरेके अन्तिम दिनोंमें मैं तो तुम्हें एक क्षण भी नहीं दे सकता, और खानसाहबको भी उस दौरान तुम्हारे लिए समय नहीं मिलेगा। और उधर इन चन्द दिनोंमें तुम बम्बईमें जो-कुछ भी देखना चाह सकती हो, देख लोगी।

शेष मिलनेपर।

सप्रेम,

बापू

मेरा पता पेशावर, जहाँ हम आज शाम पहुँच रहे हैं।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १५०५) से।

९२. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ^१

पनियाला

[१ नवम्बर, १९३८]^२

आपके बारेमें जो आश्वासन मुझे खानसाहबने दिया था, वह अब स्वयं आपके मुँहसे मिल गया है। आपने अहिंसाको किसी अस्थायी कार्य-साधक साधनकी तरह नहीं, बल्कि अपने स्थायी धर्मकी तरह स्वीकार किया है। इसलिए अगर आपके हृदयमें अब भी तलवारके लिए स्थान है तो उसे केवल बाहरी तौरपर त्यागनेसे कुछ होनेवाला नहीं है। तलवारके त्यागसे यदि आपके हृदयमें वह शक्ति — तलवारकी शक्तिसे उलटी और उससे श्रेष्ठतर शक्ति — नहीं पैदा होती तो आपके तलवार-त्यागको सच्चा नहीं माना जायेगा। अबतक आपके बीच बदलेको एक पवित्र कर्तव्य

१. प्यारेलाल नैयरके “इन द फ्रंटियर प्रॉविन्स-६” शीर्षक विवरणसे उद्धृत।

२. गांधी — १९१५-१९३८ : ए डिटेल्ड क्राॅनॉलॉजी के अनुसार गांधीजी इस तारीखको पनियालामें थे।

माना जाता रहा है। अगर आपका किसीके साथ झगड़ा होता है तो उसे आप हमेशाके लिए अपना दुश्मन मान लेते हैं और आपके बाद बेटेको यह झगड़ा विरासतमें मिलता है। लेकिन जब आप अहिंसा-धर्मको स्वीकार कर लेते हैं तब यदि आपको कोई दुश्मन माने भी तो आपके लिए उसे दुश्मन माननेकी छूट नहीं है — बदलेका तो कोई सवाल ही नहीं उठता। स्वर्गीय जनरल डायरसे ज्यादा क्रूर और रक्त-पिपासु कौन हो सकता है? फिर भी जलियाँवाला बाग कांग्रेस जाँच-समितिने मेरी सलाहपर उनके खिलाफ कोई मुकदमा चलानेकी माँग करनेसे इनकार कर दिया था। उनके प्रति मेरे हृदयमें कोई दुर्भावना नहीं थी। मुझे उनसे व्यक्तिगत रूपसे मिलकर उनके हृदयको बदलनेका अवसर प्राप्त होता तो बड़ी खुशी होती, लेकिन मेरी इस आकांक्षाको मात्र आकांक्षा बनकर ही रह जाना था, सो वही हुआ।

जब गांधीजी अपनी बात कह चुके तो एक खुदाई खिदमतगारने, जो उनकी बातें बड़े ध्यानसे सुन रहा था, उनके सामने एक शंका रखी: “एक ओर तो आप हमसे हिन्दुओंकी [सरहद-पारके] हमलावरोंसे रक्षा करनेकी उम्मीद करते हैं और दूसरी ओर कहते हैं कि चोर-डाकुओंके खिलाफ भी हमें हथियार नहीं उठाना चाहिए। ये दोनों बातें साथ-साथ कैसे चल सकती हैं?” उत्तरमें गांधीजी ने कहा:

दोनों बातोंमें परस्पर जो असंगति दिखाई देती है वह सतही है। अगर आपने अहिंसाकी भावनाको सचमुच हृदयंगम कर लिया है तो आप हमलावरोंके यहाँ आकर तबाही मचानेका रास्ता नहीं देखते रहेंगे, बल्कि उनके अपने ही क्षेत्रमें जाकर उनकी तलाश करेंगे और उनसे मिलकर उन्हें हमला करनेसे रोकेंगे। लेकिन अगर इतने पर भी हमला हो ही जाये तो आप हमलावरोंके सामने खड़े होकर उनसे कहेंगे कि तुम भले ही हमारी सारी सम्पत्ति ले लो, लेकिन हमारे हिन्दू भाइयोंकी सम्पत्तिको तो हमारी लाशोंपर से ही हाथ लगा सकते हो। और अगर अपने हिन्दू हमसायोंकी रक्षा करनेके लिए सैकड़ों खुदाई खिदमतगार अपनी जान कुर्बान कर देनेको तैयार रहेंगे तो हमलावर अहिंसक रीतिसे अपना विरोध कर रहे ऐसे निर्दोष-निरीह खुदाई खिदमतगारोंकी नृशंस हत्या करनेके बजाय विचारमें पड़ जायेंगे। आप सन्त अब्दुल कादिर जिलानीकी कहानी तो जानते ही होंगे। उनकी माँ ने सोनेकी चालीस मोहरें देकर उन्हें एक कारवाँके साथ बगदाद भेजा। रास्तेमें डाकुओंने कारवाँको घेर लिया और अब्दुल कादिरके साथियोंका माल-असबाब छीनने वे आगे बढ़े। इसपर अब्दुल कादिरने, जिन्हें डाकुओंने अब तक हाथ भी नहीं लगाया था चीखकर उन्हें अपने पास बुलाया और उनकी माँ ने उनके अँगरेजोंमें जो चालीस मुहरें सी दी थीं, वह सब दिखाकर उनसे ले लेनेको कहा। कहते हैं, बालकके इस सरल और निष्कपट व्यवहारका डाकुओंपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने न केवल अब्दुल कादिरका कुछ नहीं बिगाड़ा, बल्कि उनके साथियोंका भी सारा माल-असबाब लौटा दिया।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २६-११-१९३८

९३. पत्र : मीराबहनको

२ नवम्बर, १९३८

चि० मीरा,

सबकुछ ठीक रहा तो हम ११ तारीखको वहाँ पहुँच रहे हैं। साथमें महादेव होगा। इन बीमारियोंके कारण मैं तुम्हारे पास पहुँचनेको अधीर हो गया हूँ।

डॉ० बे०^१को लिखा हुआ तुम्हारा दूसरा पत्र बहुत अच्छा था।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६१२) से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० १०००७ से भी।

९४. पत्र : महादेव देसाईको

अहमदबाँध

२ नवम्बर, १९३८

चि० महादेव,

तुम्हारा पत्र मिला। दूसरी डाक तो पेशावरमें पड़ी ही होगी। हम वहाँ ५ बजे पहुँचेंगे। वहाँसे हम ६ को नहीं बल्कि ५ को खाना होंगे और यहाँ वापस लौटने के बजाय रास्तेमें ही ९ तारीखको गाड़ी पकड़ेंगे। अतः १० तारीखको हमारा दिल्ली पहुँचना निश्चित है। हम दिल्लीमें रुकेंगे नहीं इसलिए ११ तारीखको वहाँ पहुँच जायेंगे। सेगाँवमें होनेवाली बीमारियोंने मुझे सोचनेको मजबूर कर दिया है। मैं समझता हूँ कि जब तक वहाँका पानी न सुधर जाये, तब तकके लिए हमें उस स्थानको खाली कर देना चाहिए और जितने लोगोंका वहाँ रहना आवश्यक हो, उन्हें छोड़कर बाकी लोगोंको मुक्ति दे देनी चाहिए। किन्तु इस समय मैं तुम्हें इस चिन्तामें क्यों डालूँ?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

बाँधका मतलब छोटा-सा गाँव।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६७५) से।

१. सेगाँव।

२. डॉ० बेनिस।

९५. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

२ नवम्बर, १९३८

बा,

अब तो ९ ही दिन बाकी हैं और यदि ईश्वरकी इच्छा होगी तो हम मिलेंगे। हम लोग उसी दिन सेगाँव खाना हो जायेंगे। तेरे पत्रमें एक वाक्य था जिसका उत्तर देना रह गया था। तूने लिखा था कि चलते-चलते मैंने तेरे सिरपर हाथ भी नहीं रखा। जब मोटर चल पड़ी तो मुझे भी ऐसा लगा था, किन्तु तू दूर थी। क्या तुझे बाहरी निशानी चाहिए? तू यह क्यों मान बैठी है कि मैं अपने प्रेमका प्रदर्शन नहीं करता इसलिए मेरा प्रेम सूख गया है? मैं तो तुझसे कहता हूँ कि मेरा प्रेम बढ़ा है और बढ़ता जाता है। ऐसी बात नहीं कि मेरा प्रेम पहले कम था बल्कि जितना था वह दिन-प्रतिदिन निर्मल होता जा रहा है। मैं तुझे निरी मिट्टीकी पुतली नहीं मानता। इससे अधिक मैं और क्या लिखूँ? जिस तरह . . . ? आदि बाहरी चिह्न माँगते हैं, उस तरह यदि तू भी माँगे तो मैं दे दूँगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३०

९६. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको

२ नवम्बर, १९३८

चि० अमृतलाल,

तुम बीमारोंकी देखभाल करनेमें कुशल हो इसलिए वैसा अवसर तुम्हें अनायास ही मिल गया है। अभी तो तुम्हारे हाथमें यश है। ऐसा ही सदा बना रहे।

यदि राजभूषण घर चला जाये तो अच्छा हो। अपना स्वास्थ्य बिगाड़कर सेगाँवमें रहना उचित नहीं। किन्तु अब तो मैं जल्दी ही वहाँ पहुँच जाऊँगा। मैं दिन गिन रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०७७७) से।

१०. मूलमें यह अंश छूटा हुआ है।

९७. पत्र : चिमनलाल एन० शाहको

२ नवम्बर, १९३८

चि० चिमनलाल,

बीमारियोंने मुझे परेशानीमें डाल दिया है। मुझे लगता है कि तुम्हें, शकरी-बहन, पारनेरकर आदिको फिलहाल तो सेगाँव छोड़ देना चाहिए। स्वास्थ्यको खतरेमें डालना उचित नहीं है। किन्तु मैं वहाँ ११ तारीखको पहुँचनेकी आशा करता हूँ। इस बीच सोच-विचार कर लेना। यदि मैं सेगाँवको स्वास्थ्यप्रद बना सका तो तुम सबको वापस बुला लूँगा। मेरे सामने यह एक नया प्रश्न उठ खड़ा हुआ है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

बबुड़ीको मैं आज नहीं लिख रहा हूँ। समय ही नहीं है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०५९४) से।

९८. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

२ नवम्बर, १९३८

बापा,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने तुम्हें यहाँसे जो पैसे भेजे हैं यदि उनका उपयोग इसी प्रदेशमें हो तो अच्छा है। मुझसे तो बारीकीसे जाँच-पड़ताल हो नहीं सकती। तुम्हें इस प्रदेशका दौरा कर लेना चाहिए। यदि तुम ठंड बरदाश्त कर सको तो इसी महीनेमें आना, अन्यथा आगामी वर्ष मार्चमें। दिसम्बर, जनवरी और फरवरीमें तो बेहद ठंड पड़ती है। कहा जाता है कि इस प्रान्तमें आठ लाख हरिजन हैं। अम्बेडकरको दिया गया तुम्हारा चुटीला जवाब मैंने देखा, किन्तु जागते हुए सोनेका बहाना करनेवालेको कौन जगा सकता है?

तुम्हें बूढ़ा किसने कहा? जब तुम गुजराती तो भरी जवानीमें ही गुजराती। बूढ़ा तो वह है जिसका मन बूढ़ा है। जैसे रामदास भरी जवानीमें जरा-जर्जरित हो गया है। उसमें उत्साह तो नामको भी नहीं है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११७९) से।

१९. सन्देश : पेशावर खादी-प्रदर्शनीके उद्घाटन- समारोहके निमित्त^१

[३ नवम्बर, १९३८ या उसके पूर्व]

नामोंसे गुमराह न हों। कोई जापानी कपड़ा महज इसीलिए स्वदेशी नहीं बन जा सकता कि उसपर 'स्वदेशी' का छाप लगा हुआ है। स्वदेशी तो उसी चीजको कहा जा सकता है जो भारतके करोड़ों ग्रामवासियोंके हाथोंसे और भारतमें ही पैदा किये गये कच्चे मालसे बनी हुई हो।

आप देख सकते हैं कि यह शर्त केवल खादी ही पूरी करती है; बाकी सब कपड़े तो स्वदेशीकी नकल-भर हैं। जिस प्रकार सूर्योदयके बिना सुबह नहीं हो सकती उसी प्रकार खादीके बिना शुद्ध स्वदेशी असम्भव है।

इस दृष्टिसे देखें तो मानना पड़ेगा कि स्वदेशीकी दौड़में पेशावर बहुत पीछे है। यहाँ केवल एक खादी-भण्डार है और वह भी घाटेमें चल रहा है। मुझे उम्मीद है कि इस प्रदर्शनीका एक परिणाम यह तो होगा ही कि इस खादी-भण्डारकी अवस्था अच्छी हो जायेगी और इसके बन्द कर दिये जानेकी सम्भावना मिट जायेगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १०-१२-१९३८

१००. भाषण : पेशावर खादी-प्रदर्शनीके उद्घाटन- समारोहमें^२

३ नवम्बर, १९३८

मन्त्रीगण खादी-कार्यमें जो सहायता दे रहे हैं, उसके लिए डॉ० गोपीचन्द्रने उन्हें धन्यवाद दिया है। लेकिन मैं तो देखता हूँ कि न तो यहाँके सभी मन्त्री और न विधान-सभाके सभी सदस्य ही निरपवाद रूपसे खादीका प्रयोग करते हैं। कुछ लोग केवल विधान-सभामें खादीकी पोशाक पहनते हैं। कुछ तो इतना भी नहीं करते।

१. प्यारेलालके “पेशावर खादी-प्रदर्शनी” शीर्षक लेखसे उद्धृत।

२. खादी-प्रदर्शनीका उद्घाटन ३ नवम्बरको हुआ था, लेकिन सन्देश पहले ही छपवाकर आगन्तुकोंके बीच बाँट दिया गया था।

३. प्यारेलाल नैयरके “पेशावर खादी-प्रदर्शनी” शीर्षक लेखसे उद्धृत। उस अवसरपर उपस्थित प्रमुख लोगोंमें अब्दुल गफ्फार खॉं, डॉ० खान साहब और विधान-सभाके कई कांग्रेसी सदस्य भी शामिल थे।

यह कांग्रेसके संविधानके शब्दों और उसकी भावना दोनोंके विरुद्ध आचरण है। यहाँ तक कि लाल कुर्तीवाले भी अब तक खादीको नहीं अपना पाये हैं। . . . यदि ये सबके-सब खादी अपना लें तो निस्सन्देह ये एक लाख लोग आनन-फानन पूरे प्रान्तको खादीधारी बना दे सकते हैं। खादी तैयार करनेके लिए जरूरी उपादानों की दृष्टिसे यह प्रान्त बड़ा समृद्ध है, लेकिन जितना खादी-कार्य वास्तवमें हो चुका है उसकी दृष्टिसे यह सभी प्रान्तोंसे पीछे है।

मैं चाहूँगा कि आप सब जिज्ञासु और अध्येताकी भावनासे इस प्रदर्शनीको देखें। खादी-उत्पादनके कार्यका संयोजन करनेके लिए मिल-कपड़ा उद्योगकी तरह लाखोंकी पूँजी और विशेष तकनीकी कुशलताकी जरूरत नहीं है। कोई साधारण आदमी भी यह काम कर सकता है। मैं उम्मीद करता हूँ कि सीमाप्रान्तकी इस प्रथम खादी-प्रदर्शनीके बाद निकट भविष्यमें यहाँ और भी बहुत-सी प्रदर्शनियाँ आयोजित की जायेंगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १०-१२-१९३८

१०१. काठियावाड़-यात्राकी छाप

हरिजन-सेवा और खादी-कार्यके सिलसिलेमें श्री राजकुमारी अमृत कौरने हालमें ही काठियावाड़का दौरा किया। दौरेकी समाप्ति पर उन्होंने, उनके मनपर जो छाप पड़ी, उसे मेरे लिए लिपिबद्ध कर दिया। उनका वह लेख नीचे दे रहा हूँ।^१ यह लेख केवल काठियावाड़के कार्यकर्ताओंके लिए ही उपयोगी नहीं है। बल्कि इसमें जो विचार व्यक्त किये गये हैं वे अखिल भारतीय महत्वके हैं। मुझे आशा है कि अपने जो अनुभव राजकुमारीने यहाँ लिपिबद्ध किये हैं उनसे कार्यकर्ता लोग लाभ उठायेंगे। उन्होंने देशी राजाओंके बारेमें जो-कुछ कहा है वह अगर सच हो—और मैं तो मानता हूँ कि सच है—तो उनके एक सुझावपर तो तुरन्त अमल किया जा सकता है। उन्होंने राजाओंको इस बातका श्रेय दिया है कि वे अस्पृश्यतामें विश्वास नहीं करते और अगर उनकी प्रजा चाहे तो वे सारे मन्दिरोंके द्वार हरिजनोंके लिए खोल देंगे। इसलिए उनका सुझाव है कि इन राज्योंकी प्रजा इस प्रश्नपर अपनी राय जाहिर करे, तब तक राजाओंको रुके रहनेकी जरूरत नहीं है; इसके बजाय उन्हें ऐसे मन्दिर बनवाने चाहिए जिनके द्वार सबके लिए खुले हों और पुराने मन्दिरों के द्वार भी सबके लिए खुलवाने चाहिए। राजा लोग ऐसा आग्रह रख सकते हैं कि

१. यहाँ नहीं दिया गया है। लेखिकाने राजकोट, वांकाणेर, मोरवी, जामनगर, पोरबन्दर, द्वारका, जूनागढ़, बोलखा, धानी, अमरेली, लाठी, भावनगर, पालीताणा, बडवाण आदि कई देशी राज्योंका दौरा करके अपने लेखमें बताया था कि वहाँके हरिजन कौसी बाधाओं और कठिनाइयोंके बीच जी रहे हैं। लेखमें यह भी बताया गया था कि दौरेमें १,००० रुपयेकी खादी बेची गई।

वे जायेंगे तो केवल ऐसे ही मन्दिरोंमें, और जिनके द्वार हरिजनोंके लिए बन्द हैं उनमें कभी नहीं जायेंगे। और अगर ऐसे मन्दिर ठीक जगहोंपर आकर्षक ढंगसे बनवाये जायें और उनकी व्यवस्था अच्छी हो तो वे अस्पृश्यताके दुर्गको ढाहनेमें बड़े सहायक हो सकते हैं। यही नियम उन अन्य संस्थाओंपर भी लागू किया जा सकता है जो कट्टरपंथियोंके डरसे अपने द्वार हरिजनोंके लिए खोलनेको तैयार नहीं हैं। यह ऐसा उपाय है जिससे काम लेनेपर कमसे-कम विरोधकी सम्भावना है। यदि राजा लोग राजकुमारी द्वारा सुझाया यह बहुत ही सतर्कतापूर्ण कदम नहीं उठा सकते या नहीं उठाना चाहते तो फिर उनका अस्पृश्यतामें विश्वास न करनेका कोरा इजहार बेमानी ही है।

पेशावर, ४ नवम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १२-११-१९३८

१०२. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको

४ नवम्बर, १९३८

चि० अमृतलाल,

लगता है तुम बालकृष्णकी परिचर्यामें अच्छी तरह जुट गये हो। महोदयने कुछ उपेक्षा दिखाई लगती है।

ग्राम-सफाईका काम भी ठीक चल रहा जान पड़ता है। विजयाको लिख देना कि मैं बहुत व्यस्त हूँ, इसलिए मेरा पत्र न मिलनेकी शिकायत न करे। आशा है तुम्हारा काम ठीक चल रहा होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०७७८) से।

१०३. टिप्पणियाँ

औंध-राज्यमें सुधार

औंध-राज्यमें उत्तरदायी शासनकी स्थापनापर मैं राजासाहब और उनकी प्रजा, दोनोंको बधाई देता हूँ। यह छोटा-सा राज्य सदासे प्रगतिशील रहा है। उत्तर-दायी शासन स्थापित करके औंध-नरेशने मात्र वही किया है जिसकी इच्छा उनकी प्रजाके मनमें थी; लेकिन सामाजिक क्षेत्रमें तो वे अपनी प्रजासे भी आगे रहे हैं। पूर्ण उत्तरदायी शासनकी घोषणा उनके आज तक के कार्योंका स्वाभाविक परिणाम थी। मुझे उम्मीद है कि इस घोषणापत्रमें जो अधिकार मंजूर किये गये हैं, उन्हें संविधान बनाते समय किसी तरह कम नहीं किया जायेगा। मेरा सुझाव तो यह है कि निजी खर्चके लिए किसी भी हालतमें छत्तीस हजार रुपयेसे अधिककी राशि नहीं रखी जानी चाहिए। कानूनकी नजरमें सबकी समानता, अस्पृश्यता-उन्मूलन और वाणीकी स्वतन्त्रता, ये मौलिक अधिकार स्पष्ट कर दिये जाने चाहिए। घोषणापत्रका अन्तिम अनुच्छेद हृदयस्पर्शी है। इसमें कही गई यह बात बिल्कुल सही है कि “स्वशासनका मतलब है आत्म-संयम और त्याग।” आगे कहा गया है: “जो नया युग औंधमें — और हम तो आशा करते हैं कि पूरे देशमें — आ रहा है, उसमें सबल निर्बलकी सेवा करेगा, धनी निर्धनकी, और शिक्षित अशिक्षितकी।”

हमें आशा करनी चाहिए कि औंधके इस सुन्दर उदाहरणका अनुकरण अन्य देशी राज्य भी करेंगे और यहाँकी प्रजा अपने आचरण द्वारा यह सिद्ध कर दिखायेगी कि उसपर जो उत्तरदायित्व आनेवाला है, वह हर तरहसे उसके योग्य है। मुझे जितना कुछ सुननेको मिला है उससे जान पड़ता है कि औंधकी गद्दीके उत्तराधिकारीके रूपमें प्रजाको एक सच्चा जन-सेवक प्राप्त है। यह बात उत्तरदायी शासनके शुभारम्भमें बड़ी सहायक होनी चाहिए। युवराजने पश्चिमी शिक्षा प्राप्त की है, लेकिन वह शिक्षा उनको बिगाड़ नहीं पाई है। कहते हैं, वे सत्य और अहिंसाके पुजारी हैं। वे ग्रामोद्धार-कार्यमें व्यक्तिगत रूपसे हाथ बँटाते हैं, अन्य स्वयंसेवकोंके साथ मिलकर खुद भी सड़क साफ करते हैं और उनकी-जैसी ही सहजतासे फावड़ा और टोकरी सँभालते हैं। वे कलमके भी धनी हैं। वे भंगीका काम — मैला उठाने तकका काम — बड़े गर्वके साथ करते हैं।

आर्य समाज और गन्दा साहित्य

“साहित्यमें गन्दगी” शीर्षक अपने लेखमें मैंने कन्या गुरुकुल, देहरादूनमें शिक्षा प्राप्त कर रही अपनी पुत्र-वधूका उल्लेख किया था और कहा था कि उसकी परीक्षाके

लिए निर्धारित कुछ पाठ्य-पुस्तकोंमें उसे जो गन्दगी दिखाई दी है, उसके बारेमें उसने मुझे पत्र लिखा है। कन्या गुरुकुलसे श्री धर्मदेव शास्त्री और फिर गुरुकुल काँगड़ीसे आचार्य देवशर्मा अभयने मुझे इस आशयके पत्र लिखे हैं कि मेरे उस उल्लेखका अर्थ कुछ क्षेत्रोंमें यह लगाया गया है कि आर्य समाजके पदाधिकारी ऐसे गन्दे साहित्यको प्रश्रय देते हैं। इन दोनों मित्रोंने इस बातका जोरदार खण्डन किया है। आचार्य देवशर्मा अभयका कहना है कि गुरुकुलके कर्ता-धर्ता तो इस विषयमें इतने सावधान हैं कि वे कालिदास-जैसे काल-प्रतिष्ठित कवियोंकी कृतियोंके सम्बन्धमें भी कोई छूट देनेको तैयार नहीं थे और 'शाकुन्तल'-जैसी प्रसिद्ध रचनाके बारेमें भी उनका आग्रह रहा है कि जब तक उसके आपत्तिजनक अंशोंको छाँटकर उसका नया संस्करण नहीं छापा जाता, तब तक वे विद्यार्थियोंको यह कृति नहीं पढ़ने देंगे। खैर, हुआ यह है कि हालमें उन्होंने विद्यार्थियोंको साहित्य सम्मेलनकी परीक्षाओंकी तैयारी करनेकी इजाजत दे दी है और साहित्य सम्मेलन ऐसी पुस्तकोंपर आपत्ति नहीं करता जिनमें अश्लील रचनाएँ होती हैं। मुझे मालूम हुआ है कि गुरुकुलके पदाधिकारियोंने साहित्य सम्मेलनके व्यवस्थापकोंका ध्यान इस बातकी ओर आकर्षित किया है और उनसे ऐसी पाठ्य-पुस्तकें हटा लेनेको कहा है जिनमें ऐसी गन्दी बातें हैं। मुझे उम्मीद है कि जब तक विद्यार्थियोंकी पाठ्य-पुस्तकोंमें अश्लील साहित्यके समावेशके खिलाफ छेड़ी गई इस मुहिममें आर्य समाजके पदाधिकारी सफलता प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक वे चैनसे नहीं बैठेंगे।

पत्र-लेखकोंसे

मेरे लाख चेतावनी देनेपर भी मेरा पत्र-व्यवहार दिन-दिन बढ़ता ही जा रहा है। अगर मैं काम करते-करते किसी दिन लाचार होकर खाट पकड़ लेनेका खतरा उठानेको भी तैयार हो जाऊँ तो भी इन सारे पत्रोंके उत्तर देना मेरे लिए अशक्य ही है। और न यह प्यारेलालके ही किये हो सकता है, यद्यपि वे अकसर आधी-आधी रात जागकर काम किया करते हैं। महादेव देसाईके स्वास्थ्यमें यद्यपि निश्चित रूपसे सुधार हो रहा है और उन्हें जितना-कुछ लिखना अनिवार्य लगे और जितना वे आसानीसे लिख सकें उतना लिखनेकी इजाजत भी मिल गई है, फिर भी उन्हें मेरे पत्रोंके उत्तर देनेका काम नहीं सौंपा जा सकता। अब फिर मैं उनके स्वास्थ्य को खतरेमें डालूँ, यह मुझसे नहीं हो सकता। उनका जीवन अत्यन्त नियमित है, लेकिन ऐसे नियमित जीवनकी भी कुछ मर्यादाएँ होती हैं, जिनकी ओरसे आँख बन्द नहीं की जानी चाहिए। इसलिए सवाल यह है कि भविष्यमें क्या कभी ऐसे पत्र-व्यवहारका भार उनपर डालना मुनासिब होगा जिसका सम्बन्ध खास तौरसे 'हरिजन' से न हो। पाठकगण मेरी कठिनाई समझनेकी कोशिश करें। मेरे सामने ऐसे-ऐसे कागज-पत्रोंका अम्बार लगा हुआ है जिन्हें मैं पढ़ नहीं पाया हूँ। कुछको पढ़ पाया हूँ तो उनके बारेमें जरूरी कार्रवाई नहीं कर सका हूँ। उदाहरणके लिए बिहारके मन्त्रियोंके खिलाफ लम्बे-लम्बे शिकायतनामे आये हैं। इनसे भी लम्बे शिकायतनामे राजगोपालाचारीके विरुद्ध मलाबारसे आये हैं। मैं इनपर सरसरी निगाह डाल गया हूँ। इनके

सम्बन्धमें आवश्यक कार्रवाई करनेमें मैं सर्वथा असमर्थ हूँ। और जब तक मैं इनपर, जितना जरूरी है, उतना समय देनेको तैयार नहीं हूँ, तब तक इन्हें उन मन्त्रियोंके पास भेजना भी मुनासिब नहीं होगा, जिनके खिलाफ ये शिकायतें की गई हैं। तो मेरे पास न समय है और न ऐसा-कुछ करनेकी मेरी इच्छा है। ऐसे मामलोंके निबटारेके लिए तो सही अदालत कार्य-समिति ही है। अगर मैं ऐसी शिकायतोंको हाथ लगाने लगूँ तो उसका मतलब सम्बन्धित मन्त्रियोंके काममें और कार्य-समितिके कार्य-व्यापारमें भी हस्तक्षेप करना होगा।

लेकिन हस्तक्षेप न करनेके इस ठोस कारणका इस निवेदनसे कोई सम्बन्ध नहीं है। निर्णायक कारण तो मेरी पूर्ण असमर्थता है। इसलिए इन और ऐसे ही अन्य पत्र-लेखकोंको मैं व्यक्तिगत रूपसे उनके पत्रोंकी प्राप्ति भी सूचित नहीं कर रहा हूँ, जिसके लिए मैं उनसे माफी चाहता हूँ। फिर कुछ पत्रोंमें विभिन्न प्रान्तोंकी कांग्रेस कमेटियोंके काल्पनिक या वास्तविक दुष्कृत्योंकी शिकायत की गई है। इन पत्र-लेखकोंने मुझे ऐसी शक्ति और प्रभावका श्रेय दिया है जो मुझमें बिलकुल नहीं है। लेकिन इनके सम्बन्धमें भी मेरी चुप्पीका सबसे प्रबल कारण मेरी शारीरिक अक्षमता ही है। और इनके अतिरिक्त हैं वे पत्र जिन्हें मैं पढ़ ही नहीं पाया हूँ। ईश्वर जाने, इनमें क्या है। फिर कुछ व्यक्तिगत पत्र भी हैं, जिनके उत्तर मैं दे सकूँ तो सहर्ष दूँ। मैं जानता हूँ कि यदि मैं इन पत्रोंके सम्बन्धमें अपेक्षित कार्रवाई कर सकूँ तो उससे उन्हें कुछ सहायता और सन्तोष मिल सकता है। मैं वैसी कार्रवाई करना भी चाहूँगा, लेकिन अभी जो परिस्थिति है उसमें तो मैं उनके सामने अपनी लाचारीका ही इजहार कर सकता हूँ। मुझमें जो-कुछ शक्ति शेष है, उसे उन कार्योंमें लगानेके लिए सुरक्षित रखना है जो सबके हितके लिए हैं और जिनको सफल बनानेमें, मैं समझता हूँ, अब भी मैं ठीक योगदान कर सकता हूँ। इसलिए जो पत्र-लेखक अपने-अपने पत्रोंके उत्तरकी राह देख रहे हैं उन्हें अगर कभी कोई उत्तर मिले ही नहीं तो उनसे अनुरोध है कि वे मुझे क्षमा करेंगे। जो लोग मुझे पत्र लिखनेके अभ्यस्त हैं वे अगर केवल ऐसे ही प्रश्नोंके सम्बन्धमें लिखें जिनकी चर्चा 'हरिजन' में की जा सकती है या जिनके बारेमें इस पत्रके माध्यमसे सलाह दी जा सकती है तो इस तरह वे मेरी बहुत बड़ी सहायता करेंगे। दूसरे शब्दोंमें, जो लोग अपनी रुचिके और साथ ही आम जनताके लिए भी महत्व रखनेवाले विषयोंपर मेरा दृष्टिकोण जानना चाहें उनके लिए यथासम्भव 'हरिजन' ही मेरा एकमात्र पत्र या सन्देश होना चाहिए।

पेशावर, ५ नवम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १२-११-१९३८

१०४. बड़ी शक्तियाँ क्यों नहीं ?

चेकोस्लोवाकिया की दुरावस्था पर लिखे मेरे हालके लेखों की जो आलोचनाएँ हुई हैं उनमें मुझे एक चीज ऐसी देखने को मिली है जिसका जवाब देना जरूरी है।

कुछ आलोचकों का कहना है कि यदि मेरा सुझाया अहिंसक उपाय इंग्लैंड, फ्रांस या अमेरिका—जैसे शक्तिशाली राष्ट्रों के लिए नहीं, बल्कि केवल चेकोस्लोवाकिया—जैसे छोटे और इसलिए अपेक्षाकृत कमजोर राष्ट्रों के लिए ही है तो इसका कोई खास महत्व नहीं है।

यदि ये आलोचक मेरे लेखों को दोबारा ध्यान से पढ़ें तो पायेंगे कि मैंने जो इन शक्तिशाली राष्ट्रों को यह उपाय नहीं सुझाया, उसका कारण उनका शक्तिशाली होना, या दूसरे शब्दों में, उनके सामने खुद मेरे मन की झिझक थी। लेकिन उनको लक्षित करके अपनी बात न कहने का इससे एक बड़ा कारण भी था। वे किसी संकट में नहीं थे और इसलिए उन्हें इससे उबरने के उपाय की भी कोई जरूरत नहीं थी। यदि चिकित्साशास्त्र की शब्दावली में कहूँ तो वे चेकोस्लोवाकिया की तरह रुग्ण नहीं थे। चेकोस्लोवाकिया की तरह उनके अस्तित्व को कोई खतरा नहीं था। इसलिए इन शक्तिशाली राष्ट्रों से मेरा कोई अनुरोध करना थोथे और अनचाहे उपदेश के समान होता।

अनुभव से मैंने यह भी जाना है कि केवल नेकी की खातिर मनुष्य नेक कदाचित् ही बनता है। उसे नेक बनाती है उसकी अपनी जरूरत। और परिस्थिति वश ही अगर मनुष्य नेक बन जाये तो इसमें बुरा क्या है? हाँ, यदि वह सिर्फ नेकी की खातिर नेक बन जाये तो यह स्थिति बेहतर तो होगी ही।

चेक लोगों के सामने दो ही रास्ते थे—या तो जर्मनी की शक्त के आगे शान्ति-पूर्वक घुटने टेक दें या अकेले लड़कर लगभग निश्चित विनाश का खतरा उठायें। यही वह अवसर था जब मुझ—जैसे आदमी के लिए उन्हें एक ऐसा उपाय सुझाना आवश्यक हो गया जिसकी प्रभावकारिता बहुत-कुछ ऐसी ही परिस्थितियों में अन्यत्र सिद्ध हो चुकी थी। मेरी राय में तो चेक लोगों से वैसा अनुरोध करना उतना ही संगत था जितना कि बड़ी शक्तियों से करना असंगत होता।

इसपर मेरे आलोचक बखूबी पूछ सकते हैं कि जब आप भारत में ही अहिंसा को शत-प्रतिशत सफल बनाकर नहीं दिखा सके और खासकर अब, जबकि कांग्रेसी अपने अहिंसा-धर्म या अहिंसा-नीतिका सचमुच आचरण कर रहे हैं या नहीं, इस सम्बन्ध में खुद आपके ही मन में गम्भीर शंका पैदा हो गई है तब आप अपने ऊपर खुद ही लगाई मर्यादा को तोड़कर एक पाश्चात्य राष्ट्र को उपदेश क्यों देने लगे। सच तो यह

१. देखिए खण्ड ६७, “यदि मैं चेक होता”, पृ० ४४९-५२ और “तकसम्मत निष्कर्ष”, पृ० ४५९-६२।

है कि मेरे मनमें इस मर्यादाका खयाल था और कांग्रेसकी स्थितिके सम्बन्धमें आज जो अनिश्चितता चल रही है उसका भी मुझे ध्यान था। लेकिन वह लेख लिखते समय अहिंसात्मक उपायमें मेरी श्रद्धा सदाकी भाँति दीप्त और दृढ़ थी। और मुझे लगा कि चेक लोगोंकी परीक्षाकी इस सबसे कठिन घड़ीमें यदि मैं अहिंसात्मक उपाय स्वीकारार्थ उनके सामने प्रस्तुत न करूँ तो यह मेरी कायरता होगी। जो लोग अनुशासनहीन हों और जिन्हें सामूहिक रूपसे कष्ट-सहन करनेका अभ्यास पड़ने भी लगा हो तो अभी कुछ ही दिनोंसे, ऐसे लोगोंके राष्ट्रके लिए जो चीज स्वीकार करना अन्ततः असम्भव साबित हो सकता है, उसी चीजको स्वीकार करना किसी छोटे, ऐक्यबद्ध, अनुशासित और सामूहिक कष्ट-सहनके अभ्यस्त राष्ट्रके लिए सम्भव भी हो सकता है। भारतके अतिरिक्त कोई अन्य राष्ट्र तो अहिंसामय संघर्ष करनेके योग्य है ही नहीं, अपने मनमें ऐसा कोई दम्भमय विश्वास पालनेका अधिकार मुझे नहीं था। वैसे मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मैं मानता था और आज भी मानता हूँ कि अहिंसात्मक संघर्षके बलपर अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करनेकी दृष्टिसे भारत सबसे उपयुक्त राष्ट्र था। यद्यपि आज कुछ प्रतिकूल लक्षण दिखाई दे रहे हैं, फिर भी मैं मानता हूँ कि यदि भारतकी सम्पूर्ण जनता, जो निश्चय ही कांग्रेससे बहुत बड़ी है, किसी प्रवृत्तिके प्रति ठीक उत्साह दिखा सकती है तो वह अहिंसात्मक प्रवृत्ति ही है। ऐसी प्रवृत्तिके लिए जितनी तैयार वह है उतनी अन्य किसी राष्ट्रकी जनता नहीं। लेकिन जब सामने एक ऐसा प्रसंग आ गया जिसमें इस उपायका प्रयोग तत्काल होना था तो मैं इसे चेक लोगोंके स्वीकारार्थ पेश करनेका लोभ संवरण नहीं कर पाया।

लेकिन अगर बड़ी शक्तियाँ इसे अपनाना चाहें तो किसी भी दिन इसे अपनाकर परम यशकी भागी और भावी पीढ़ियोंकी स्थायी कृतज्ञताका पात्र बन सकती हैं। यदि वे या उनमें से कोई भी अपने विनाशका भय छोड़ दे और सारे शस्त्रास्त्र उठाकर फेंक दे तो उससे स्वभावतः अन्य राष्ट्र भी विवेकसे काम लेनेको प्रेरित होंगे। लेकिन तब इन महाशक्तियोंको अपनी साम्राज्यवादी आकांक्षाओं और दुनियाके तथाकथित असभ्य या अर्ध-सभ्य राष्ट्रोंके शोषणका त्याग करना होगा और अपनी जीवन-पद्धति बदलनी होगी। इसका मतलब है पूर्ण क्रान्ति, आमूठ परिवर्तन। महाशक्तियोंसे सामान्य परिस्थितियोंमें तो ऐसी कोई आशा करना मुश्किल ही है कि वे आज तक जिस दिशामें चलती रही हैं और जिस दिशामें चलकर उन्होंने — उनकी दृष्टिसे देखें तो — विजय-पर-विजय प्राप्त की है, उस दिशाको छोड़कर वे उससे उलटी दिशामें चलने लग जायें। लेकिन चमत्कार पहले भी हुए हैं और आजकी इस नीरस दुनियामें भी होते हैं। ईश्वरकी अन्यायके निराकरणकी शक्तिकी सीमा कौन जानता है? एक बात निश्चित है। अगर शस्त्रीकरणकी यह पागलपन-भरी होड़ कायम रहती है तो एक-न-एक दिन ऐसा भीषण नरसंहार अवश्य होगा, जैसा आज तक नहीं हुआ। यदि उसमें से कोई विजयी होकर निकल भी पायेगा तो वह विजय उस विजेता राष्ट्रके लिए जीते-जी

मृत्युके समान होगी। अहिंसाके समस्त गूढ़ार्थोंके साथ उसे बहादुरीसे बिना किसी शर्तके अपना लेनेके सिवा उस महाविनाशसे बचनेका और कोई उपाय नहीं है। लोकतन्त्र और हिंसा, दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते। जो राज्य आज कहनेको लोकतान्त्रिक हैं उन्हें या तो खुल्लमखुल्ला सर्वसत्तात्मक राज्य बन जाना होगा या यदि उन्हें सचमुच लोकतान्त्रिक राज्य बनना है तो साहसके साथ अहिंसाको अपनाना होगा। अहिंसाका आचरण केवल व्यक्ति ही कर सकता है और राष्ट्र, जो आखिर व्यक्तियोंसे ही बना हुआ है, उसका आचरण कभी नहीं कर सकता, ऐसा कहना तो सत्यका अपलाप है।

पेशावर, ५ नवम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १२-११-१९३८

१०५. पत्र : मीराबहनको

पेशावर

५ नवम्बर, १९३८

चि० मीरा,

जाहिर है कि तुम्हारे अन्तरसे तुम्हें यह आदेश, जब मैंने सोचा था, शायद लगभग उसी समय मिला। जहाँ तक मुझे याद है, मैंने तुम्हें यह भी लिखा था कि अगर तुम्हें जरूरत महसूस हो तो मैं तुम्हें जाने दूंगा। हाँ, यह खयाल मेरे मनमें नहीं, राजकुमारीके मनमें उपजा था। इसपर मैंने उसे लिखा कि वह सीधे तुम्हींको लिखे। लेकिन तुम्हारे इस पत्रको देखते हुए तो ये सब बीती बातें बन चुकी हैं। वहाँ आनेपर—और उम्मीद करता हूँ शायद ११ तारीख तक आऊँगा—हम, इसका तरीका क्या हो, इस विषयपर विचार करेंगे। आशा है कि आऊँगा तो अगाथा वहीं होगी। अगर जानेका निर्णय अन्तिम रूपसे कर लिया हो तो मुझे लगता है कि जितनी जल्दी चली जाओ उतना ही अच्छा, बशर्ते कि यूरोपकी सर्दी बर्दाश्त कर सको। मैं नहीं चाहता कि तुम अपने स्वास्थ्यको खतरेमें डालो। अगर तुम अपने मनको निर्जीव अण्डे लेनेपर तैयार कर सको तो हो सकता है, तुम वहाँकी सर्दी बर्दाश्त कर लो। लेकिन आखिर फैसला तो तुम्हींको करना है।

इस प्रश्नके आर्थिक पहलूके सम्बन्धमें मैंने कार्रवाई शुरू कर दी है। मौनके नियममें कुछ दिनोंके लिए ढील दे दी है। इसलिए दाख चबाते हुए यह पत्र बोलकर लिखा पाया हूँ।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४१३) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १०००८ से भी।

१०६. पत्र : महादेव देसाईको

पेशावर

५ नवम्बर, १९३८

चि० महादेव,

तुमने टिकनेका निर्णय करके अच्छा किया। मुझे भी यह ठीक लगता है। और समुद्र-यात्राकी बात तो मुझे पसन्द थी ही। कैलेनबैकका सुझाव तो खूब पसन्द आया है। मेरी रणभूमि तुम देख आओ। यह तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा कि तुम फीनिक्स, टॉल्स्टॉय फार्म, डरबनमें जहाँ मैं रहता था वह मकान, जोहानिसबर्गका कार्यालय आदि देखो। मणिलाल तो खुशी से नाच उठेगा किन्तु दुर्गा और बाबलाको वहाँ तक ले जाना मुश्किल होगा। मैं चाहूँगा कि बाबला तो मेरे साथ रहे। इसके अतिरिक्त दक्षिण आफ्रिका जानेका मतलब है कमसे-कम चार महीने लगना। दक्षिण आफ्रिका हिन्दुस्तानसे कोई छोटा देश नहीं है। वहाँ जाकर चारों उपनिवेश देखो। विक्टोरिया प्रपात तो अवश्य देखना चाहिए। जब तुम इतनी दूर जाओगे तो झटपट वापस नहीं लौट सकोगे। केवल कुमारी स्लेसिनसे मिलनेके लिए भी वहाँ जाना उचित होगा। तुम्हारे जानेसे शायद कैलेनबैकके जीवनकी एक बड़ी इच्छा पूरी हो जायेगी। और वहाँकी आबहवाका तो कहना ही क्या? इसपर विचार कर देखना। यदि तुम्हारी जानेकी इच्छा हो तो मैं तुम्हें भेजनेको बिलकुल तैयार हूँ।

यदि मीराबहन जाना चाहे तो मैं उसे भी भेजनेको तैयार हूँ। उसके जानेसे कोई नुकसान तो होगा नहीं। मेरे साथ रहते हुए उसे अपने-आपको दबाकर रखना पड़ता है जबकि वह पश्चिममें स्वतन्त्रतापूर्वक काम कर सकती है। उसके साहसकी तो कोई सीमा ही नहीं है।

म्योरहेडके सम्बन्धमें लिखनेकी बात तो मैं बिलकुल भूल गया था। किन्तु यदि कुछ बात हुई होती तो मैं तुम्हें लिखे बिना न रहता। लेकिन मुझे लगता है कि मुझसे बातें करनेकी उसकी हिम्मत ही नहीं हुई। या फिर उसका उद्देश्य सिर्फ मुझसे मिलना ही रहा हो। मैंने तो उसे तनिक भी प्रोत्साहन नहीं दिया। मेरी इच्छा भी नहीं थी। बात करनेकी थी भी क्या? यदि कांग्रेस भ्रष्टाचारसे मुक्त हो जाये तो किसीसे बातें किये बिना आज ही स्वराज्य लिया जा सकता है। यदि उक्त भ्रष्टाचार नहीं मिटता तो स्वराज्य आकाश-कुसुम है। अब मैं अपनी कलमको रोकता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६७६) से।

१०७. भाषण : पेशावरके वकील मण्डलके समक्ष^१

[५ नवम्बर, १९३८]^१

अपने छोटे किन्तु विनोदपूर्ण भाषणमें गांधीजी ने कहा कि आप लोगोंने मुझे जो मान दिया है उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ, लेकिन मैं इस सम्मानके योग्य नहीं हूँ, क्योंकि एक तो, जैसाकि आप सब जानते हैं, जिस संस्थाने मुझे बैरिस्टरकी उपाधि दी थी उसीने मेरी वकालतकी सनद छीन ली और दूसरे, मैं कानून वगैरह भूल चुका हूँ। और इधर कुछ वर्षोंसे तो मैं देशकी अदालतोंमें कानूनोंकी व्याख्या-विवेचन करनेके बजाय उन्हें भंग करनेमें ही लगा रहा हूँ। इसका एक और भी कारण — और मेरी दृष्टिमें शायद सबसे प्रबल कारण है — वकीलों और डॉक्टरोंके सम्बन्धमें मेरे वे विचित्र विचार, जिन्हें मैंने 'हिन्द स्वराज्य'^२ नामकी अपनी पुस्तिकामें प्रस्तुत किया है। सच्चा वकील तो वह है जो पहले सत्य और सेवाकी फिक्र करता है और अपने धन्धेसे होनेवाली आयको गौण महत्व ही देता है। मुझे नहीं मालूम कि आप सबने इस आदर्शको अपनाया है या नहीं, लेकिन अगर आप अपनी कानूनी प्रतिभाका उपयोग परमार्थकी भावनासे जन-सेवाके निमित्त करनेकी प्रतिज्ञा ले लें तो मैं ही सबसे आगे बढ़कर आपकी बंदना करूँगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २६-११-१९३८

१०८. पत्र : महादेव देसाईको

६ नवम्बर, १९३८

चि० महादेव,

लगभग पूरे दिन मोटर-लारीमें यात्रा करते हुए हम साँझको हरिपुर पहुँचे।

मैसिघमके बारेमें तुम जो लिखते हो सो तो ठीक है किन्तु जिस ढंगसे तुम उसे भारतकी स्थितिपर लागू करते हो वह मुझे ठीक नहीं लगा। यह लेख ही ऐसा है कि वह 'हरिजन' में नहीं फवेगा। यदि छोटी-सी कोठरीमें आँखोंको चौंधिया देनेवाली रोशनी रखी जाये तो वह रोशनी अच्छी नहीं लगती। वही बात तुम अपने

१. प्यारेलालके "इन द फ्रंटियर प्रॉविन्स-६" शीर्षक विवरणसे उद्धृत।

२. गांधी — १९१५-१९४८ के अनुसार।

३. देखिए खण्ड १०।

लेखके बारेमें समझो। मैं सिधमने तो काल्पनिक काव्य लिखा किन्तु हम तो ठोस काम कर रहे हैं। ऐसी जगह तो जिस चीजपर अमल हो रहा है उसीकी चर्चा शोभा देती है। किन्तु इस सम्बन्धमें अधिक तर्क-वितर्क क्यों किया जाये? जब कभी हम मिलेंगे उस समय यदि फुरसत हुई और जरूरत जान पड़ी तो इस बारेमें चर्चा कर लेंगे। कभी-कभी ही ऐसा होता है कि तुम जो कहते हो वह मेरे गले नहीं उतरता या मैं जो कहता हूँ वह तुम्हारे गले नहीं उतरता। इसलिए मैं इस मतभेदको अवश्य टालना चाहूँगा। मैंने सोचा था कि उक्त लेख तुम्हें दिल्लीमें दे दूँगा। अब मैं वह तुम्हें डाक से भेज दूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६७७) से।

१०९. बातचीत : विभूतिमें*

६ नवम्बर, १९३८

खुदाई खिदमतगार संगठनका सदर मुकाम उटमंजईमें है। उस संगठनके प्रतिज्ञा-पत्रपर हस्ताक्षर करनेवाला और पस्तो बोलनेवाला हर आदमी खुदाई खिदमतगार बन सकता है। शर्त केवल यह है कि वह खुदाई खिदमतगार होनेके साथ-साथ किसी और संस्थाका सदस्य नहीं हो सकता। इसलिए अगर आपकी इच्छा हो तो आपको खुदाई खिदमतगार बननेकी पूरी छूट है और इसके लिए किसीकी अनुमतिकी जरूरत नहीं है।

खुदाई खिदमतगारोंने अपनी संगठन-क्षमता असंदिग्ध रूपसे सिद्ध कर दिखाई है। जिस सभामें भी चुनिन्दा खुदाई खिदमतगारोंका एक दल उपस्थित रहता है उसमें व्यवस्था-ही-व्यवस्था रहती है। अहिंसा-धर्मकी अपेक्षा यह है कि इसके पुजारी अपनी प्रेम-शक्तिके बलपर लोगोंसे वह सब करवा लें जो पुलिस अपनी लाठियों और गोलियोंके जोरसे करवाती है। जब हमारे हृदयोंमें प्रेमका बीज अंकुरित होगा तो हमारे सारे छोटे-मोटे झगड़े और आपसी वैमनस्य अपने-आप मिट जायेंगे। अब आजकी ही घटनाका उदाहरण लें। एक बछड़ा कुसंयोगसे हमारी बससे कुचल गया।^१ उस चालकके हृदयमें प्रेम होता तो वह तत्काल गाड़ीको रोक देता, ताकि

१. प्यारेलाल नैयरके “इन द फ्रंटियर प्रॉविन्स-६” शीर्षक विवरणसे उद्धृत। विभूतिके पश्ती-भाषी लोगोंने गांधीजी से अनुरोध किया था कि उन्हें खुदाई खिदमतगार आन्दोलनमें शामिल होनेकी इजाजत दी जाये, यद्यपि राजनीतिक तथा भौगोलिक दृष्टिसे वे पंजाब प्रान्तके थे।

२. जब गांधीजी मोटरमें बैठकर विभूति जा रहे थे तभी रास्तेमें उनकी गाड़ीसे एक बछड़ेको धक्का लग गया था और उसके शरीरका एक हिस्सा कुचल भी गया था। स्थानीय कांग्रेसियोंने इसके लिए विरोधियों या सरकारको दोषी बताया था।

घायल बछड़ेकी देखभाल और इलाजकी ठीक व्यवस्था की जा सकती। हमारे साथियोंमें से एक भाई तो बिना सोचे-विचारे कुछ तथाकथित विरोधियोंका नाम लेकर कहने लगे कि यह दुर्घटना जान-बूझकर उन्होंने ही करवाई। मुझे यह बात अशोभन जल्दबाजी जान पड़ी। यदि हमने अहिंसाको अपना लिया है तो हमें अपने विरोधीपर जल्दीमें किसी बदनीयतीका आरोप नहीं लगा बैठना चाहिए और न उसपर शंका ही करनी चाहिए। कुछ भी कहने या करनेसे पहले हमें निश्चित प्रमाण प्राप्त करना चाहिए। जब खुदाई खिदमतगारोंके हृदयोंमें प्रेमको धारा हिलोरें मारने लगेगी तो हमें स्वराज्य भी मिल जायेगा। लेकिन जब तक हमारे छोटेसे-छोटे कामसे भी प्रेमकी आभा नहीं छिटकने लगेगी, तब तक हमें स्वराज्य नहीं मिल सकता।

हमें किसीको दुर्घटनास्थल पर भेजना चाहिए कि वह पशुके मालिकसे मुआवजे की बात करे और बछड़ेको इलाजके लिए पशु-चिकित्सकके पास ले जाये।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २६-११-१९३८

११०. भाषण : हरिपुरकी सार्वजनिक सभामें^१

६ नवम्बर, १९३८

वैज्ञानिकोंका कहना है कि हम बन्दरोंकी सन्तान हैं। भले ही उनकी बात सच हो, लेकिन मनुष्यका भवितव्य पशु बनकर जीना और पशुकी ही तरह मर जाना नहीं है। जिस अनुपातमें वह अहिंसाको अपने आचरणमें उतारता है और स्वेच्छासे अनुशासनके अधीन होता है उसी अनुपातमें वह पशुवृत्तिसे दूर हटता चला जाता है और अपने भवितव्यकी ओर बढ़ता जाता है। अहिंसा हमपर जो कर्तव्य आरोपित करती है उनमें से एक यह भी है कि हम निर्बलसे-निर्बल आदमीके — यहाँ तक कि एक बच्चेके भी — अधिकारोंका सम्मान करें।^१

... गालियोंका जवाब हमें सहिष्णुतासे देना चाहिए।^२ मानव-स्वभाव ऐसा है कि यदि हम किसीके क्रोध या गालियोंकी ओर ध्यान न दें तो वह आदमी जल्दी ही हार-थककर अपनी ऐसी हरकत छोड़ देता है। जिन लोगोंने यहाँ उपद्रव खड़ा करनेकी कोशिश की उनके प्रति हमारे मनमें कोई क्षोभ नहीं होना चाहिए। उन्होंने

१. प्यारेलाल नैयरके “इन द फ्रंटियर प्रॉविन्स-६” शीर्षक विवरणसे उद्धृत।

२. तात्पर्य स्थानीय स्कूलके प्रधानाध्यापककी इस सौम्य शिकायतसे था कि वहाँके कांग्रेसियोंने स्कूलमें सभा करनेसे पूर्व उसकी इजाजत नहीं ली थी।

३. तात्पर्य “सोशलिस्ट” प्रतिनिधिमण्डल द्वारा अशोभन नारे लगाते हुए सभा छोड़कर चले जानेसे था। वे गांधीजीको मानपत्र भेंट करना चाहते थे, लेकिन सभाकी कार्यवाही पहले ही शुरू हो चुकी थी, इसलिए उन्हें यह सुविधा नहीं दी गई।

तो अनजाने ही हमें सहिष्णुता और क्षमाशीलताका एक महत्वपूर्ण पाठ सीखनेका अवसर दिया। सत्याग्रही अपने 'शत्रु' को सदा ऐसा आदमी मानता है जिसमें उसका मित्र बननेकी सम्भावना भरी हुई है। अहिंसाके अपने आधी सदीके अनुभवके दौरान मेरे सामने इस बातका एक भी उदाहरण नहीं आया है कि सम्पूर्ण अहिंसाके समक्ष किसीकी शत्रुता अन्त तक कायम रही हो।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २६-११-१९३८

१११. पत्र : अमृत कौरको

हरिपुर

७ नवम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

बर्मा जो फिरसे दंगे भड़क उठे थे^१ उसकी ओर तुम्हारा ध्यान गया था क्या? यह बड़े दुःख का विषय है। दंगोंमें भिक्षु लोग आगे बढ़कर हिस्सा लें, इसका रहस्य तो हम शायद कभी नहीं समझ पायेंगे।

हम लोगोंने हसन अब्दालका प्रसिद्ध गुरुद्वारा देखा। तुमने न देखा हो तो मौका मिलनेपर देख लेना चाहिए। इमारत तो बड़ी शानदार है, लेकिन नानककी आत्माके दर्शन वहाँ नहीं होते।

कल तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला। आशा कर रहा हूँ कि मुझे ऐबटाबादमें तुम्हारा पत्र मिलेगा।

९ तारीखको हम तक्षशिलासे ट्रेन पकड़कर प्रस्थान करेंगे।

सप्रेम,

योद्धा

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६४८) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६४५७ से भी।

११२. पत्र : देव प्रकाश भाटियाको

७ नवम्बर, १९३८

प्रिय मित्र,

आप तो अपने वादेके बड़े पक्के निकले।

प्रार्थना स्रष्टाके साथ सम्पर्क स्थापित करनेकी तीव्र आकांक्षा है। यह प्रयत्न बुद्धिके धरातलपर नहीं, हृदयके धरातलपर किया जाता है। यह सम्पर्क जल्दी भी स्थापित हो सकता है और इसमें कई वर्ष या युग भी लग सकते हैं। प्रयत्न सच्चे मनसे और हृदयसे किया जाये, इतना ही काफी है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री देव प्रकाश भाटिया, बी० ए०, एल० एल० बी०
पेशावर छावनी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १५३८) से।

११३. पत्र : मीराबहनको

ऐबटाबाद

७ नवम्बर, १९३८

चि० मीरा,

इस प्रान्तसे तुम्हें यही आखिरी पत्र लिख सकता हूँ। जगह बड़ी सुन्दर है; सिर्फ इसके साथ जुड़ी स्मृतियाँ खटकती हैं। मुन्नालालसे कहना कि उससे मिलनेपर उसके पत्रके बारेमें चर्चा करूँगा। आज इतना ही।

सप्रेम,

बापू

श्री मीराबहन

सेगाँव आश्रम

सेगाँव, वर्धा, म० प्रा०

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४१४) से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० १०००९ से भी।

११४. पत्र : महादेव देसाईको

७ नवम्बर, १९३८

चि० महादेव,

यह पत्र बहुत . . .^१ है। यदि तुम दिल्ली पहुँच गये होंगे तो यह तुम्हारे पीछे-पीछे आयेगा। इसके साथ मणिका पत्र है। प्यारेलालका पत्र विचित्र लगता है। किन्तु जो हो सो ठीक है।

एकाएक वर्धामें पड़े रहनेका निर्णय मत कर बैठना। यदि और कहीं नहीं तो बम्बई या बलसाड़में अवश्य रहना चाहिए। यदि तुममें दक्षिण आफ्रिका जानेकी हिम्मत हो तो यह सबसे अच्छा होगा। किन्तु मैं किसी बातका आग्रह नहीं करूँगा। जो तुम्हारा मन कहे सो करो। यदि वर्धामें सिवा तुम्हें और कहीं चैन न मिले तो मैं उसका भी विरोध नहीं करूँगा। हमें खतरा नहीं उठाना चाहिए। तुम्हें भी वही हुआ है जैसाकि मुझे निपाणी^२में हुआ था और छः महीने खटिया-पर पड़े रहना पड़ा था। तुम्हारी उम्रको देखते हुए यह हो सकता है कि तुम्हें उतने दिन आराम न लेना पड़े।

इसके साथ राधाकृष्णका पत्र भी तुम्हारे पढ़ने और पढ़कर फाड़ देनेके लिए भेज रहा हूँ। तुम्हारा लेख सुरक्षित रखा हुआ है। तुम्हारे इच्छा जाननेके बाद उसे तुम्हें भेज दूँगा या मैं स्वयं तुम्हें सौंप दूँगा। क्या वह लेख खो देने लायक है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६७८) से।

११५. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

ऐबटाबाद

८ नवम्बर, १९३८

चि० कान्ति,

तेरा तार मिला। पैसोंके बारेमें तो मैंने निर्णय कर ही लिया है कि इसका बोझ रामचन्द्रन पर कदापि नहीं डाला जा सकता। मुझे कुछ ऐसा ध्यान है कि जाते समय भी उसे मैंने ही पैसे दिये थे। किन्तु यदि ऐसा नहीं होगा तो उसके आनेपर हम देख लेंगे। लेकिन जैसाकि मैंने सुझाव दिया था तदनुसार रामचन्द्रनसे बात

१. साधन-सूत्रमें यह अंश अस्पष्ट है।

२. देखिए खण्ड ३३, पृ० २०९-१०।

करना तेरा कर्तव्य है। उनसे न कहना उनके प्रति विश्वासघात करना है और इसमें पापरम्माका अहित है।

तू इन दिनों तर्क-वितर्कके मोहमें नहीं पड़ता, यह तेरी बुद्धिमत्ता ही है। यदि तेरे मनमें सन्तोषजनक तर्क उठते हैं और अनुभव उनका समर्थन करें तो जब तेरा समय आयेगा तब तेरे तर्कोंमें अत्यधिक बल होगा। फिलहाल तो इतना ही काफी है कि तुझे मेरा मार्ग सही जान पड़ता है और तू अपने जीवनमें उसका अनुसरण भी करना चाहता है। यदि तू इसपर दृढ़ रह सके तो यह बहुत काफी होगा।

तू अपने स्वास्थ्यको बिल्कुल मत बिगड़ने देना। इस भ्रममें मत रहना कि तू उसे बादमें सुधार लेगा। मामूली या सख्त कैसी भी बीमारी हो, उसके उभरते ही उससे मुक्ति पा लेनी चाहिए।

मनुष्यके स्वभावको समझनेके लिहाजसे सीमाप्रान्त देखने लायक है। वहाँ प्राकृतिक सौन्दर्यके कुछ स्थल तो सुन्दर हैं ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३५१) से; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी।

११६. बातचीत : खुदाई खिदमतगारोंके साथ^१

मानसेहरा

[८ नवम्बर, १९३८]^२

इन दिनों ऐसा कहनेका एक फैशन-सा हो गया है कि समाजको अहिंसाके आधारपर संगठित या संचालित नहीं किया जा सकता। मैं इस बातसे सहमत नहीं हूँ। किसी परिवारमें जब पिता अपने बिगड़े लड़केको तमाचा लगाता है तो लड़केके मनमें बदला लेनेका खयाल तो नहीं आता। वह पिताकी आज्ञाका पालन प्रताड़नाके भयसे नहीं, बल्कि प्रताड़नाके पीछे उस प्रेमके कारण करता है जिसको उसने अपने आचरणसे चोट पहुँचाई है। मेरी रायमें, यह उस तरीकेका एक दृष्टान्त है जिससे समाजका संचालन होता है या होना चाहिए। जो बात परिवारपर लागू होती है, वही समाजपर भी लागू होगी, क्योंकि समाज भी तो आखिर एक बड़ा परिवार ही है। यह तो मनुष्यकी कल्पना है जिसने संसारको परस्पर झगड़ रहे मित्र-शत्रुके खेमोंमें बाँट दिया है। अन्ततः देखें तो इन झगड़ा-फसादोंके बीच भी अगर कोई शक्ति सक्रिय रह पाती है तो वह प्रेमकी ही शक्ति है और उसीपर दुनिया टिकी हुई है।

१. प्यारेलाल नेयरके “इन द फ्रंटियर प्रोविन्स-७” शीर्षक विवरणसे उद्धृत।

२. गांधी — १९१५-१९४८ के अनुसार।

मुझे कहा गया है कि यहाँके लाल कुर्तीवाले नाम मात्रको ही लाल कुर्तीवाले हैं। मैं तो यही उम्मीद करता हूँ कि यह आरोप निराधार होगा। मुझे मालूम है कि खुदाई खिदमतगार आन्दोलनमें अवांछनीय और स्वार्थी तत्वोंके घुस आनेसे खानसाहब बहुत चिन्तित हैं। मैं उनके इस विचारसे सहमत हूँ कि खुदाई खिदमतगारोंकी संख्या बढ़ानेवाले लोग जिस धर्मको माननेका दावा करते हैं, यदि वे उसके सच्चे प्रतिनिधि नहीं हैं तो सिर्फ संख्या-वृद्धिसे इस आन्दोलनकी जड़ें मजबूत होनेके बजाय कमजोर ही होंगी।

लालकुर्ती-आन्दोलनकी ओर आज पूरे भारतका, बल्कि बाहरी देशोंका भी, ध्यान आकृष्ट है। लेकिन अब तक इसने जितना-कुछ कर दिखाया है वह, इसे जितना कुछ करना है, उसकी तुलनामें बहुत ही कम है। मैं खुदाई खिदमतगारोंके इस आश्वासनको पूरे भरोसेसे स्वीकार करता हूँ कि वे अहिंसाको समझने और उसका पूरा-पूरा पालन करनेके लिए बड़े उत्सुक हैं। अभी तो उन्हें न जाने कितनी कठिन ऊँचाईपर चढ़ना है। उनके सामने मैंने रचनात्मक अहिंसाका जो कार्यक्रम रखा है, वह जब एक बार शुरू कर दिया जाता है तो फिर अपने-आप अपना मार्ग बनाता और अपना प्रभाव दिखाता चला जाता है। इस कार्यक्रमपर अमल किया जाना खुदाई खिदमतगारोंकी उत्कटता और ईमानदारीकी भी एक अचूक कसौटी होगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३-१२-१९३८

११७. भाषण : मानसेहराकी सार्वजनिक सभामें*

८ नवम्बर, १९३८

गांधीजी ने उत्तर देते हुए कहा कि आपने अहिंसाके क्षेत्रमें अब तक जितना-कुछ प्राप्त किया है उसको देखते हुए मुझे आपसे बड़ी-बड़ी आशाएँ बँधती हैं। लेकिन मैं तो इस पुरानी कहावतमें विश्वास रखनेवाला आदमी हूँ कि जो जितना देता है उससे उतनी ही ज्यादा आशा की जाती है। सो मैं आपको बता देता हूँ कि मैं आप लोगों से तब तक सन्तुष्ट होनेवाला नहीं हूँ जब तक कि आप अहिंसाके द्वारा न केवल अपनी, बल्कि भारतकी भी मुक्ति प्राप्त नहीं कर दिखाते। आपके प्रान्तमें मैं यह दूसरी बार आपको और निकटसे जानने तथा यह समझने आया हूँ कि अहिंसा आपके बीच कैसे काम कर रही है; और ऐसा इरादा रखता हूँ कि आपके पास तीसरी बार भी

१. प्यारेलाल नैयरके “इन द फ्रंटियर प्रोविन्स-७” शीर्षक विवरणसे उद्धृत। मानसेहराके नागरिकोंने अपने मानपत्रमें गांधीजी को आश्वस्त किया था कि पठान लोग कुछ ही दिनोंमें “भारतके अहिंसक स्वातन्त्र्य-संग्राममें अपना अग्रिम स्थान” बना लेंगे।

आऊँ और तब विभिन्न समस्याओंको आज जिस बिन्दुपर छोड़कर जा रहा हूँ, उस बिन्दुसे उनके हल करनेके प्रयत्नमें फिरसे लग जाऊँ।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३-१२-१९३८

११८. बातचीत : अल्पसंख्यकोंके शिष्टमण्डलके साथ'

ऐबटाबाद

[८ नवम्बर, १९३८]^१

उत्तरमें गांधीजी ने कहा कि अर्जी देनेपर बन्दूक वगैरह रखनेके परवानके बेरोकटोक जारी किये जानेकी आपकी माँगका समर्थन मैं तो कर सकता हूँ, लेकिन सरकारसे ऐसी आशा करना उचित नहीं होगा कि वह पूरी सीमावर्ती आबादीके बीच बन्दूकें आदि मुफ्त बाँटे। अगर आप चाहें तो ऐसे हथियार मुफ्त बाँटे जानेके निमित्त कोष एकत्र कर सकते हैं, लेकिन बन्दूक आदि मुफ्त बाँटे जाने और लोगोंके उनको चलानेके लिए प्रशिक्षित कर दिये जानेसे सरहद-पारसे होनेवाले हमले बन्द हो जायेंगे, इस बातमें तो मुझे सन्देह है। यदि बन्नूम हुए हालके हमलेके अनुभवसे देखें तो मानना होगा कि ऐसी कोई कार्रवाई बहुत ही खर्चीली और बेकार होगी। मुझे मालूम हुआ है कि बन्नूम बन्दूकों वगैरहकी कोई कमी नहीं थी, लेकिन इस हमलेके दौरान केवल एक बन्दूकका प्रयोग हुआ और उसके प्रयोगसे भी हमलावरोंकी अपेक्षा आम लोग ही ज्यादा हताहत हुए। लेकिन आपने बहुसंख्यक समुदायके कर्तव्योंके बारेमें जो-कुछ कहा है, उससे मैं सहमत हूँ। खानसाहब खुदाई खिदमतगारोंको हमलावरोंसे नागरिकोंकी रक्षा करनेका अपना कर्तव्य निभानेके लिए तैयार कर रहे हैं।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३-१२-१९३८

१. प्यारेलाल नैयरके “इन द फ्रंटियर प्रोविन्स-७” शीर्षक विवरणसे उद्धृत। शिष्टमण्डलने अन्य बातोंके अलावा गांधीजीके सामने यह सुझाव भी रखा था कि बढ़ते खतरेको देखते हुए सीमावर्ती क्षेत्रोंके अल्पसंख्यकोंको बन्दूकें वगैरह मुफ्त दी जायें और उन्हें बन्दूकें आदि चलानेका प्रशिक्षण भी दिया जाये, ताकि वे अपनी रक्षा कर सकें।

२. गांधी — १९१५-१९४८ के अनुसार।

११९. भाषण : ऐबटाबादकी सार्वजनिक सभामें

[८ नवम्बर, १९३८]

आपने मुझे जो मानपत्र भेंट किया है, उसके लिए मैं आप सबका आभारी हूँ। अपने मानपत्रमें आपने अपने यहाँ “विश्वके महानतम व्यक्ति” के पदार्पणपर अपनी प्रसन्नता प्रकट की है। आपका मानपत्र सुनते समय मेरे मनमें यह सवाल घूमता रहा कि आखिर वे सज्जन हैं कौन। निस्सन्देह, मैं तो नहीं हो सकता। मुझे अपने दोष भली-भाँति मालूम हैं। एथेंसके महान दार्शनिक सोलनके विषयमें एक कथा प्रचलित है। विश्वके सबसे धनाढ्य व्यक्तिके रूपमें विख्यात क्रीससने उनसे पूछा, संसारका सबसे सुखी व्यक्ति कौन है। क्रीससने सोच रखा था कि सोलन कहेंगे, आप ही वह सुखी व्यक्ति हैं। मगर सोलनने कहा कि मैं कुछ नहीं कह सकता, क्योंकि किसीके अन्तकालसे पहले यह कैसे कहा जा सकता है कि वह सुखी है। अगर सोलनको किसी व्यक्तिके जीते-जी उसके सुखी होने या न होनेके सम्बन्धमें निर्णय देना कठिन लगा तो जरा सोचिए कि किसी व्यक्तिकी महानताके बारेमें कोई फतवा देना कितना कठिन है। सच्ची महानता ऊँचाईपर स्थापित कोई ऐसी प्रतिमा नहीं है जिसे लोग आसानीसे देख लें। मेरा सत्तर वर्षोंका अनुभव तो मुझे यह बताता है कि अकसर वास्तवमें महान लोग तो वे होते हैं जिनके बारेमें और जिनकी महानताके सम्बन्धमें संसार उनके जीवन-कालमें कुछ नहीं जानता। सच्ची महानताका पारखी तो केवल ईश्वर है, क्योंकि वह मनुष्यके हृदयको पहचानता है। . . .

ऐबटाबादके निवासी ही नहीं, यहाँका सूर्य, चन्द्र और यहाँके तारे भी मेरी एक झलक पानेको लालायित थे। भाइयो, तो क्या मैं यह मानूँ कि आपके नगरके लिए कोई खास सूर्य और चन्द्रमा तथा तारे हैं, जो वर्षा या सेगाँवमें नहीं चमकते? हमारे यहाँ काठियावाड़में भाट नामकी एक जाति है। इस जातिके लोग पेशेवर चारण हैं, जिनका धन्धा पैसा पानेके लिए अपने-अपने सरदारोंकी प्रशस्ति करना है। खैर, मैं आपको भाट तो नहीं कहूँगा। अगर किसीका उपहास करना चाहें तब तो बात अलग है, लेकिन वैसे मैं चाहूँगा कि आप अपने नेताओंकी अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा करनेकी गलतीको जरा समझें। इससे न उन्हें कोई लाभ होता है और न उनके काममें ही कोई सहायता मिलती है। इसलिए इस तरह बढ़ा-चढ़ाकर यशोगान करने-

१. प्यारेलाल नैयरके “इन द फ्रंटियर प्रोविन्स-८” शीर्षक विवरणसे उद्धृत। सभामें कई मानपत्र भेंट किये गये और पूरे जिलेकी ओरसे ११२५ रुपयेकी एक धैली भी भेंट की गई।

२. ९-११-१९३८ के हिन्दुस्तान टाइम्स और इसी तारीखके हिन्दू के अनुसार।

वाले मानपत्र भेंट करनेकी आदत आप हमेशाके लिए छोड़ दें, यही मैं चाहूँगा। अब इस सत्तर सालकी उम्रमें कमसे-कम मैं तो नहीं चाहूँगा कि ईश्वरने मुझे जो थोड़ा-बहुत समय और दिया हो उसे इस तरहके निरर्थक आडम्बरोंमें बर्बाद कर दिया जाये। अगर मानपत्र दिया ही जाना हो तो मैं चाहूँगा कि उसमें सम्मानित व्यक्तिके दोषों और त्रुटियोंका वर्णन किया जाये, ताकि वह अपने अन्तरमें झाँककर देखने और उन दोषों और त्रुटियोंको निकाल बाहर करनेको प्रेरित हो सके।

जबसे इस प्रान्तमें आया हूँ तभीने मैं खुदाई खिदमतगारोंको अहिंसाका सिद्धान्त — सम्पूर्ण और शुद्ध अहिंसा-सिद्धान्त — समझानेकी कोशिश करता रहा हूँ। मैं अहिंसाके मर्मको पूर्ण रूपसे समझनेका दावा नहीं करता। जितना-कुछ मैं समझ पाया हूँ वह तो उस सम्पूर्णका, उस महान वस्तुका एक अंशमात्र है। अहिंसाके सम्पूर्ण मर्मको समझना या उसका पूरा-पूरा आचरण करना मनुष्यके बसकी बात नहीं है, क्योंकि वह तो स्वयं ही अपूर्ण है। यह तो केवल ईश्वरका ही गुण है, उस परम शास्ताका जिससे बड़ा सृष्टिमें कोई नहीं है। लेकिन मैं आधी सदीसे अधिक समयमे इसे समझने और इसे अपने जीवनमें उतारनेका सतत प्रयास करता रहा हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि खुदाई खिदमतगारोंने अहिंसाको जिस हद तक समझा है, उस हद तक उसका आचरण करनेका ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसने उन्हें सबकी प्रशंसाका पात्र बनाया है। लेकिन अब उन्हें एक कदम और आगे जाना है। अपनी अहिंसाकी अवधारणाको उन्हें अधिक व्यापक बनाना है और अगर उन्हें अन्तिम अग्नि-परीक्षामें से सफल होकर निकलना है तो अहिंसाके आचरणमें — विशेषकर उसके विध्यात्मक पहलुओंके आचरणमें — और अधिक पूर्णता और गहराई लानी है। अहिंसाका मतलब केवल शस्त्र-त्याग नहीं है। यह कोई कमजोरों और पंस्त्वहीन लोगोंका भी हथियार नहीं है। लाठी उठानेमें असमर्थ कोई वच्चा तो अहिंसाका आचरण नहीं करता। सारे शस्त्रास्त्रोंसे अधिक सशक्त और सक्षम अहिंसा संसारमें एक अद्भुत शक्तिके रूपमें अवतरित हुई है। जिसने यह अनुभव करना नहीं सीखा है कि यह पशुबलकी अपेक्षा लाख गुनी अधिक सक्षम शक्ति है, उसने इसके सच्चे स्वरूपको नहीं पहचाना है। इस अहिंसाकी शक्तको शब्दोंमें व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसकी ज्योति तो हमारे हृदयमें ही जल सकती है और वह ज्योति जलेगी तब जब हमारी उत्कट प्रार्थनाके परिणामस्वरूप हमें भगवत्कृपा प्राप्त होगी। कहते हैं, आज एक लाख खुदाई खिदमतगार ऐसे हैं जिन्होंने अहिंसाको अपने धर्म-रूपमें स्वीकार किया है। लेकिन इनसे बहुत पहले, १९२० में ही खानसाहबने अहिंसाको संसारके सबसे अधिक कारगर हथियारके रूपमें जान लिया था और तभी उन्होंने इसे अपना भी लिया था। अहिंसा के अठारह वर्षोंके आचरणसे इसमें उनकी श्रद्धा और भी सुदृढ़ ही हुई है। उन्होंने खुद देखा है कि इसने उनके लोगोंको किस प्रकार निर्भीक और सबल बना दिया है। अपनी छोटी-मोटी नौकरियाँ खो बैठनेकी आशंकासे ही पहले वे घबरा जाते थे। लेकिन आज वे कुछ और ही महसूस करते हैं। सत्तर सालकी इस अवस्थामें अहिंसामें स्वयं मेरी श्रद्धा आज इतनी प्रबल है जितनी पहले कभी नहीं थी। लोग मुझसे कहते

हैं: “आपका अहिंसाका कार्यक्रम तो देशके सामने लगभग दो दशकोंसे पड़ा हुआ है, लेकिन आपने जो स्वराज्य दिलानेका वादा किया था, वह कहाँ है?” मेरा उत्तर यह है कि यद्यपि कहनेको तो अहिंसाको करोड़ों लोगोंने अपना लिया, लेकिन उसका आचरण बहुत कम लोगोंने किया और जिन्होंने किया उन्होंने भी उसे एक नीति मानकर ही किया। लेकिन इस सबके बावजूद जो परिणाम सामने आया है, वह मुझे खुदाई खिदमतगारोंके बीच अपना प्रयोग जारी रखनेके लिए प्रोत्साहित करनेकी दृष्टिसे काफी अच्छा है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १०-१२-१९३८

१२०. पत्र : सरस्वती गांधीको

[९ नवम्बर, १९३८ के पूर्व]^१

चि० सरस्वती,

तुझे मेरे खत मिले होंगे। दादाको मेरा खत दिया होगा। तेरे खतको प्रतीक्षा करता हूँ। तेरी तवीयत अच्छी होगी और तू शांत होगी। मेरे अक्षर पढ़ लेती है ना? यहाँ ९ नवंबर तक रहना होगा।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

बा बीमार पड़ गई थी, दिल्लीमें है। अब कुछ ठीक है। उनको खत लिखो। ठिकाना हरिजन कोलोनी, किंगसवे।

बापु

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ३४२७) से। सौजन्य: कान्तिलाल गांधी।
जी० एन० ६१५४ से भी।

१२१. पत्र : सुशीला गांधीको

९ नवम्बर, १९३८

चि० सुशीला,

मैं यह जानता हूँ कि तुझे अकोलामें रहना अच्छा लगता है। नानाभाई की सेवा करना तेरा अनिवार्य कर्तव्य है। इस बातका निर्णय तो तू ही कर सकती है कि उस सेवाके लिए तुझे वहाँ कब तक ठहरना चाहिए। यदि उसके लिए वहाँ तेरी तत्काल जरूरत न हो तो नेटाल जाना तेरा कर्तव्य है। तू वहाँ जितनी जल्दी पहुँच सके उतना अच्छा हो।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

आशा है, नानाभाई अच्छे होंगे। मुझे सेगाँवके पतेपर लिखना। मैं यह चलती गाड़ीमें लिख रहा हूँ।

श्री सुशीलाबहन गांधी

मार्फत श्री नानाभाई मशरूवाला

अकोला, बरार

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८८८) से।

१२२. पत्र : मणिलाल गांधीको

९ नवम्बर, १९३८

चि० मणिलाल,

मैं तेरा गुनहगार हूँ। यात्राके दौरान तू छूट ही जाता है। काम अधिक है और अनुपातमें मेरी शक्ति कम है, इसलिए मैं कमसे-कम पत्रोंसे काम चलाता हूँ। फिर भी, मैं यह भली-भाँति समझता हूँ कि तुझे अवश्य लिखना चाहिए। जो हो, मैं तुझे नियमित रूपसे पत्र लिखने या लिखवानेका प्रयत्न करूँगा। मुझे ऐसा लगा करता है कि मैं तेरे प्रति अपने कर्तव्यका पालन पूरी तरहसे नहीं करता। भले ही मैं पालनीय किसी कर्तव्यका निर्वाह न कर सकूँ फिर भी तुझे पत्र लिखनेकी भी अपनी कोमत है ही।

१. नानाभाई मशरूवाला, सुशीला गांधीके पिता।

सुशीलाको तो मैंने कबका लिख दिया है कि उसका कर्तव्य तेरे पास रहना है। उसने यहाँ एक-आध सहीना बितानेका निर्णय किया है। मैंने तो आज फिर लिखा है कि यदि नानाभाईकी सेवाके लिए वहाँ रहनेकी जरूरत न हो तो वह तुरन्त लौट जाये।^१ उसे वापस भेजनेमें मुझसे जितनी बन पड़ेगी उतनी तेरी सहायता मैं अवश्य करूँगा।

यदि फीनिक्सका कोई हिस्सा बेचना आवश्यक हो और न्यासी इसके लिए सहमत हो जायें तो बेच देना। श्लेसिन जो कहती है, वह विचार करने लायक तो है ही।

मैं तेरा पत्र छगनलालको भेज तो रहा हूँ किन्तु मुझे नहीं लगता कि वह आनेकी बात सोचेगा। वहाँ जाकर रहनेवालोंमें तो रामदास था, किन्तु उसका मन नहीं मानता। अच्छा तो यही है कि तुझमें और सुशीलासे जो हो सके सो करके सन्तोष मानो। यदि श्लेसिन पूरी सहायता दे तो यह अच्छा ही है। यदि प्रागजी यह भार लें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। किन्तु इसमें तो तेरा अनुभव ही काम आयेगा। अपने अनुभवके विपरीत तू कुछ मत करना।

बा अब बिलकुल अच्छी है। महादेव भी अच्छे हैं। आज मैं वर्धा जानेवाली गाड़ीमें हूँ। बा दिल्लीमें मिलेगी और वहाँसे मेरे साथ हो लेगी।

डॉ० सुशीला, प्यारेलाल और अमृतुस्सलाम मेरे साथ हैं। कन्हैया तो है ही। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८८७) से।

१२३. पत्र : एम० आर० मसानीको

९ नवम्बर, १९३८

भाई मसानी,

आपने देखा होगा कि डॉ० खानसाहबने बहुत-से लोगोंको तो छोड़ दिया है। बाकी लोगोंको भी वे छोड़ देना चाहते हैं किन्तु उसमें कुछ कठिनाई है। इस सम्बन्धमें मैंने स्थानीय सचिवको पत्र लिखा है। उसकी नकल मैंने आपको भेजनेके लिए लिखा है। आशा है कि वह आपको मिल गई होगी।

मो० क० गांधीके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१२९) से।

१२४. पत्र : विजया एन० पटेलको

९ नवम्बर, १९३८

चि० विजया,

तेरा पत्र मिला। मुझे यह अच्छा लगेगा कि जब तक तुझसे रहा जाये तब तक तू वहाँ रहे। मैं यह गाड़ीमे लिख रहा हूँ। मैं ११ को सेगाँव पहुँचूँगा। दिल्ली से बा मेरे साथ हो लेगी।

तूने अच्छा समाचार दिया है।

यह तो अच्छा ही हुआ कि मनुभाई वही रहेगे।

तुम दोनों को,

बापूके आशीर्वाद

श्री विजयाबहन

ग्रामदक्षिणामूर्ति

आम्बला, बरास्ता सोनगढ़

काठियावाड़

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१०२) से। सी० डब्ल्यू० ४५९४ से भी;
सौजन्य : विजयाबहन एम० पंचोली।

१२५. सन्देश : कमाल अतातुर्कके देहावसानपर^१

१० नवम्बर, १९३८

अतातुर्कका देहावसान तुर्कीकी एक भारी क्षति है। प्रभुसे यही प्रार्थना है कि तुर्कीवासी इस विपत्तिसे सुरक्षित उबर आयें।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ११-११-१९३८

१. तुर्की गणनम्बके राज्याध्यक्ष कमाल अतातुर्कका देहावसान १० नवम्बर, १९३८ को हुआ था।

१२६. पत्र : अमृत कौरको

दिल्ली

१० नवम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

यह सतीश बाबूकी तैयार कराई सबसे ताजा चीज है।^१ इस दिशामें वे दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रहे हैं।

तुम्हारे दो पत्र कल आये। पहलेके साथ म०^२ की ओरसे कुछ नहीं था।

तुम्हारे करुणा-भरे अनुरोधके सम्बन्धमें मैं अपने हृदयकी सच्ची भावनाको ही तो अभिव्यक्ति दे सकता था। अगर मेरे अन्दर कोई ऐसा आह्वान हुआ तो संसारकी कोई भी शक्ति मुझे रोक नहीं सकती। मैं शायद तुम्हें बता चुका हूँ कि मुझमें स्त्रीके हृदयमें प्रवेश करनेके लिए अपेक्षित शुद्धि नहीं है। जब तक मेरे अन्दर वह विकार-व्याल बैठा हुआ है तब तक मेरे और उसके बीच एक दूरी बनी ही रहेगी। तुम बांछित फलके लिए प्रभुसे प्रार्थना करनेके सिवा और कर ही क्या सकती हो। लेकिन प्रयत्न तो मुझे ही करना है। इसलिए यदि मैं तुम्हारी अपेक्षाएँ पूरी करनेमें असमर्थ होऊँ तो नाराज या दुःखी मत होना।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६४९) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६४५८ से भी।

१२७. पत्र : महादेव देसाईको

१० नवम्बर, १९३८

चि० महादेव,

तुम्हारा पत्र तक्षशिलामें मिला था। यहाँ भी एक पत्र मिला। राजकुमारीका पहलेका एक पत्र आज मिला, जिसमें तुम्हारी लिखावट नजर नहीं आई। मैं दक्षिण आफ्रिकाके बारेमें समझ गया। अब जब तुम आओगे तब हम दूसरे विकल्पके बारेमें विचार कर लेंगे। तुम्हारी नींद कम हो गई इसकी कोई चिन्ता नहीं। इससे यह शिक्षा तो मिल ही गई कि अभी भी काफी सावधानीकी जरूरत है। गिल्डर जो

१. तात्पर्य शायद उस कागजसे है जिसपर गांधीजी यह पत्र लिख रहे थे।

२. महादेव देसाई।

कहते हैं वह सर्वथा सत्य है। यदि १९ के बाद भी रुकना आवश्यक हो तो रुके रहना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

और अधिक लिखनेका समय नहीं है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६७९) में।

१२८. बातचीत : साम्यवादियोंके साथ^१

[११ नवम्बर, १९३८ के पूर्व]^२

साम्यवादी : हम यह स्वीकार करते हैं कि आपकी भूमिका ठीक-ठीक क्या है, यह बात हमारी समझमें नहीं आती। हम जो आपका विरोध करते हैं, वह हमेशा इसीलिए नहीं कि हम आपसे सहमत नहीं होते, बल्कि अकसर इसलिए कि आपके मनमें क्या है, यह हम समझ नहीं पाते, जिससे आपके कार्योंको हम एक अस्पष्ट-से भय और अविश्वासकी दृष्टिसे देखते हैं। अगर आपको हम समझ जायें तो आपके प्रति आस्था रखना शायद हमारे लिए आसान हो जाये। इसलिए हम आपके पास आये हैं। हो सकता है, विचार-विनिमयके बाद शायद आपको भी यह लगे कि यदि आप हमें समझे होते तो हमारे सम्बन्धमें आपके जो विचार थे, उनमें से कुछको बदलने की जरूरत थी।

उदाहरणके तौरपर उन्होंने नागरिक स्वतन्त्रता-सम्बन्धी उस प्रस्ताव^३ का उल्लेख किया जिसे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीने अपनी दिल्लीकी बैठकमें स्वीकार किया था और जिसके परिणामस्वरूप कुछ सदस्योंने सभा-त्यागकी वह बहुर्चाचित कार्रवाई की थी।^४ उनका कहना था, हमारी समझमें नहीं आता कि वैसे तीव्र विरोधके बावजूद कांग्रेस “हार्ड कमान” उस प्रस्तावको जैसे भी हो, पास करवानेको उतनी आतुर क्यों थी।

१. प्यारेलाळ नैयरके “ए स्पॉटिंग ऑफर” (“एक उदारज्ञापुर्ण निमन्त्रण ”) शीर्षक विवरणसे उद्धृत। प्यारेलाळके अनुसार गांधीजीने अपना आशय स्पष्ट करनेके लिए विवरणमें कई जगह परिवर्धन किये थे।

२. इस बातचीतको पढ़नेसे प्रकट होता है कि इस समय गांधीजी सेगौवमें नहीं थे। वह दिल्लीसे सेगौवके लिए ११ नवम्बरको रवाना हुए थे।

३. देखिए खण्ड ६७, “अ० भा० कां०के प्रस्तावका मतविदा”, पृ० ४१०।

४. देखिए खण्ड ६७, “वह दुर्भाग्यपूर्ण सभा-त्याग”, पृ० ४४६-७।

गांधीजी : मुझे स्वीकार करना चाहिए कि समा-त्यागकी वह कार्रवाई मुझे अच्छी नहीं लगी। क्या उसका मतलब यह था कि आप चाहते थे, कांग्रेस हिंसा भड़कानेवाली कार्रवाइयोंको बर्दाश्त कर ले ?

सा० : नहीं, ऐसी बात नहीं है। हमने तो बार-बार स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि हिंसा या हिंसा भड़कानेवाली कार्रवाईको बर्दाश्त किया जाये, यह हम बिलकुल नहीं चाहते। जब कांग्रेसने सत्ता सँभाली उस समय तो नागरिक-स्वतन्त्रताका विस्तार किया गया, लेकिन हरिपुर कांग्रेसके बादसे कांग्रेस-शासित प्रान्तोंमें वास्तवमें स्वतन्त्रतामें कमी ही की जाती रही है। हमें तो न चाहते हुए भी यही महसूस होता है कि नागरिक-स्वतन्त्रताके दुरुपयोगकी यह आवाज सिर्फ मन्त्रियोंके बचावके निमित्त एक सुविधाजनक बहाना ढूँढ़नेके लिए उठाई जा रही है, जबकि इन मन्त्रियोंमें से कुछ एक तो बिलकुल पुराने नौकरशाहोंकी तरह व्यवहार कर रहे हैं।

गा० : आपके यहाँ आनेकी मुझे सचमुच बड़ी खुशी है, क्योंकि आप असली गुनहगारके पास आये हैं। मुझे स्वीकार करना चाहिए कि उस प्रस्तावका एक मात्र जनक मैं ही हूँ। वह मेरे पास मौजूद ऐसे प्रमाणोंपर आधारित है जिनकी सचाईसे इनकार किया ही नहीं जा सकता। लेकिन, मेरे लेखोंसे आपको यह तो समझ जाना चाहिए था कि उन लोगोंका उद्देश्य ऐसी स्थिति उत्पन्न करना था जिसमें मन्त्रियोंके लिए यह लाजिम नहीं रहे कि वे हिंसा भड़कानेवालों या सचमुच हिंसा करनेवालोंके खिलाफ कार्रवाई करें ही। मन्त्री उनके खिलाफ कार्रवाई करें, इसके बजाय मैं हिंसोत्तेजक भाषणों, लेखों या कार्योंके विरुद्ध लोकमत तैयार करना चाहता था। वह प्रस्ताव कानूनी कार्रवाईका एक विकल्प था। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि नागरिक-स्वतन्त्रतापर हाथ डालनेवाले या कांग्रेसके प्रस्तावोंके विरुद्ध आचरण करनेवाले किसी भी मन्त्रीको मैं आड़ नहीं दूँगा। अगर आपका मतलब राजाजीसे हो तो मैं उनके सम्बन्धमें आपके सारे सन्देहोंका निवारण करनेको, और वैसा न कर पाऊँ तो उनसे त्यागपत्र देनेको कहनेको तैयार हूँ।

सा० : हम तो कुछ समझ ही नहीं पा रहे हैं। आपने कहा है कि हिंसा भड़कानेवाली कार्रवाइयोंको रोकनेके लिए सख्त कदम उठाये जाने चाहिए। क्या कांग्रेसियोंकी हिंसा भड़कानेवाली कथित कार्रवाईको रोकनेके लिए सरकार द्वारा हिंसाका सहारा लिया जाना उचित है ?

गा० : सवाल आपने गलत ढंगसे पूछा है। मगर इसका जवाब तो मैं दे ही चुका हूँ। सरकारकी ओरसे कोई हिंसा नहीं होनी चाहिए। लेकिन अगर कोई आदमी किसी बच्चेको मारकर उसके आभूषण छीन लेता है और अगर मैं इस आदमीको ऐसे कुकृत्यकी पुनरावृत्तिकी सुविधासे वंचित कर देता हूँ तो मैं अपनी इस कार्रवाईको हिंसा तो नहीं कहूँगा। अगर मेरी कार्रवाईके पीछे उसे सजा देनेका मंशा हो तो उसे हिंसा जरूर कहा जायेगा।

अपनी बात मैं जरा और स्पष्ट करके कहूँ। थैली भी न खोलिए और दुबले भी न होइए, ऐसा तो नहीं हो सकता। मान लीजिए कि वाणीकी हिंसा हुई है तो उस स्थितिमें या तो कांग्रेसको उसके सम्बन्धमें कार्रवाई करनी है या कांग्रेसी मन्त्रियोंको। मैंने कांग्रेसको कार्रवाई करनेका सुझाव दिया है। वह प्रस्ताव उसी सुझावके अनुसार लाया गया था। बेशक, आप चाहें तो कार्य-समितिको प्राप्त प्रमाणोंकी सत्यता या पर्याप्ततापर शंका कर सकते हैं। अगर आपने यही रास्ता अपनाया होता तो आप वे प्रमाण देखनेकी माँग कर सकते थे और इस शर्तके साथ प्रस्तावको स्वीकार कर सकते थे कि कार्य-समिति वे प्रमाण आपके सामने प्रस्तुत करेगी। अगर आप यह स्वीकार करते हैं कि हिंसामय भाषणों या लेखोंको नागरिक-स्वतन्त्रताके नामपर बर्दाश्त नहीं किया जा सकता तो आपको समाका त्याग नहीं करना चाहिए था। यह बात तो दिनके उजालेके समान स्पष्ट है कि कांग्रेस-शासित प्रान्तोंमें बोलने और लिखनेकी इतनी अधिक स्वतन्त्रता दी जा रही है, जितनी स्वतन्त्रताका उपभोग वहाँके लोगोंने कभी नहीं किया था।

सा० : लेकिन जो भी हो, कांग्रेस हाईकमान हमारे खिलाफ हमेशा जैसा रख जाहिर करता रहा है, उसे हम बर्दाश्त नहीं कर सकते। हमने कांग्रेसका अनुशासन स्वीकार किया है। हम कांग्रेसमें इसलिए शामिल हुए हैं कि यही एक संस्था है जो कोई जन-आन्दोलन खड़ा कर सकती है। अगर हम गलत व्यवहार करते हैं तो हमें कांग्रेसमें से निकाला जा सकता है और कांग्रेसमें से निकाले जानेका मतलब होगा जनता के बीच अपनी साख गँवा बैठना। हमारा दल जनताका दल है और इसलिए हमें या तो जनताके साथ होकर चलना है या फिर इसमें से निकल जाना है। इसके विपरीत, ये मन्त्री तो इस प्रयत्नमें लगे हुए हैं कि ये जनताके ऊपर अपना आसन जमा लें और इनपर लोकतान्त्रिक प्रवृत्तियोंका कोई असर ही नहीं हो पाये। हम किसी कट्टर विचारधारासे बंधे हुए नहीं हैं। आप ही बतायें कि आज हम सामूहिक रूपसे क्या कर सकते हैं। हमारे हेतु भले ही अलग-अलग हों, लेकिन महत्व तो हम व्यवहारतः जो-कुछ करेंगे, उसीका होगा।

गा० : आपको यह भी स्वीकार करना चाहिए कि न तो उस प्रस्ताव^१ में और, मैं समझता हूँ, न मेरे लेखों^२ में ही समाजवादियों या साम्यवादियोंका कोई उल्लेख है। हिसापर किसी दल-विशेषकी इजारेदारी नहीं है। मैं ऐसे कांग्रेसियोंको भी जानता हूँ जो न तो समाजवादी हैं और न साम्यवादी, और फिर भी खुले आम स्वीकार करते हैं कि वे हिंसा-भक्त हैं। इसके विपरीत, मैं ऐसे समाजवादियों और साम्यवादियोंको भी जानता हूँ जो उत्पादन के साधनोंके सामूहिक स्वामित्व में तो विश्वास रखते हैं, लेकिन जो किसी को तनिक-सी भी चोट पहुँचाने को

१. देखिए खण्ड ६७, पृ० ४१०।

२. देखिए खण्ड ६७, पृ० ४४६-७।

तैयार नहीं हैं। मैं अपनेको उन्हीं लोगोंमें गिनता हूँ। लेकिन यहाँ मेरा तात्पर्य खुद मुझसे नहीं बल्कि ऐसे दूसरे लोगोंसे है जिन्हें जाननेका सौभाग्य मुझे प्राप्त है।

लेकिन आप लोगोंने मुझसे जो-कुछ कहा है, उससे मेरे सामने यह बात स्पष्ट हो गई है कि साधनको आप वैसा महत्व नहीं देते जैसा मैं देता हूँ। लेकिन आपको दलील मैं समझता हूँ। मेरा और आप लोगोंका मन परस्पर विरुद्ध दिशाओंमें काम कर रहे हैं। मैं तो अगर सम्भव हो तो आपके हृदयमें एक छोटा-सा स्थान पाना चाहता हूँ। लेकिन आपमें से कुछ लोगोंने कहा है कि यह तो असम्भव है, क्योंकि उनका दृष्टिकोण तो मुझसे बिल्कुल भिन्न है। वे ज्यादासे-ज्यादा इतना ही कर सकते हैं कि मेरे साथ निभाते जायें, क्योंकि उनके विचारसे मुझमें त्यागका कुछ माहा है और जनतापर प्रभाव भी है। अब मैं आपको खुले दिलसे एक निमन्त्रण देता हूँ। जब मैं सेगाँव लौट जाऊँ तो आपमें से कोई या चाहें तो सब वहाँ आयें और वहाँ रहकर मुझे निकटसे परखें, मेरा सारा कागज-पत्र देखें, मेरा पत्र-व्यवहार देखें, शंका हो तो मुझसे सवाल पूछें और अपने इस निकट अवलोकनके बाद तय करें कि आप मेरे साथ किस प्रकारका व्यवहार रखेंगे। मेरे साथ कोई छिपाव-दुराव की बात नहीं है। मेरा तो जीवन-कार्य यही है कि मुक्तिके साधनके प्रति अपने विचार मैं एक-एक भारतवासीके सामने रखूँ और उन विचारोंके प्रति उसके मनमें आस्था जगाऊँ। अगर इतना हो जाये तब तो समझ लीजिए कि पूर्णस्वराज्य हमारे माँगने-भरसे मिल जायेगा।

इसके बाद उन्होंने गांधीजी से साम्यवादी दलके वैध घोषित किये जानेकी सम्भावनाके बारेमें पूछा। उन्होंने कहा : “हम हिंसा नहीं चाहते। यह सच है कि हमने अहिंसाको अपना धर्म नहीं बनाया है। हम चाहे जितनी बड़ी कुर्बानी देकर भविष्यमें भी सदा अहिंसाका पालन करते रहनेको प्रतिज्ञाबद्ध नहीं हैं। लेकिन फिलहाल और निकट भविष्यमें हमें हिंसाकी कोई आवश्यकता दिखाई नहीं देती। इसलिए अभी तो हमारा तरीका वही है जो कांग्रेसका है। हमें फिलहाल छिपकर इसलिए काम करना पड़ता है कि हमारी संस्थापर कानूनी रोक लगा रखी है। अगर यह रोक हटा ली जायेगी तो छिपकर काम करनेकी जरूरत नहीं रह जायेगी और बाकी तो हम इतना आश्वासन ही दे सकते हैं कि भविष्यमें जब भी हमें अहिंसाका त्याग करनेकी जरूरत महसूस होगी, हम वैसी खुली और स्पष्ट घोषणा कर देंगे।

गां० : अगर आपका मतलब यह है कि आप एक दलकी तरह हिंसामें विश्वास नहीं करते तो आपको साफ-साफ वैसा कहना चाहिए। मैंने आपका जितना भी साहित्य पढ़ा है, उसमें स्पष्ट कहा गया है कि शरीर-बलका सहारा लिए बिना स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती। मैं जानता हूँ कि साम्यवादियोंका एक ऐसा गुट है जो धीरे-धीरे अहिंसाके निकट आता जा रहा है। मैं चाहता हूँ कि आप अपनी स्थिति बिल्कुल स्पष्ट कर दें और उसमें शंका-सन्देह को कोई गुंजाइश न रहने दें। वैसे साम्यवादी साहित्यके नामसे मुझे कुछ ऐसी चीजें भी पढ़नेको मिली हैं जिनसे पता चलता है कि साम्यवादी उद्देश्यकी प्राप्तिके लिए गोपनीयता, छलावरण आदिसे काम लिया जाना जरूरी ठहराया गया है—विशेषकर इसलिए कि साम्य-

वादको समस्त हिंसात्मक शक्तियोंको हथियाये बैठे अपेक्षाकृत प्रबलतर पूंजीवादी दुश्मनोंसे लोहा लेना है। इसलिए मैं चाहूँगा कि अगर आपसे बने तो आप यह स्पष्ट कर दें कि आप इन बातोंमें विश्वास नहीं करते।

साम्यवादी मित्रोंने गांधीजी से वादा किया कि वे अपने दलकी स्थिति स्पष्ट करते हुए उन्हें एक अधिकृत वक्तव्य भेजेंगे।

गां० : आप मेरी बातोंपर विचार कीजिएगा। मुझसे सम्पर्क बनाये रखिएगा। और जहाँ लगे कि मैं बहक रहा हूँ वहाँ मेरी गलती सुधार दीजिएगा और मुझे समझने की कोशिश कीजिएगा। मुझमें अविश्वास न कीजिए। जब भी आपके मनमें कोई शंका उठे, मुझे निस्संकोच बतायें और आजकी चर्चा तो हम यहीं छोड़ें। लेकिन अगर मुझे ऐसा माननेकी इजाजत दें कि हम अलग हो रहे हैं तो मनमें यह संकल्प लेकर कि हम एक-दूसरेको समझनेकी कोशिश करेंगे और इसी तरह हम फिर मिलेंगे तो मुझे बड़ी खुशी होगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १०-१२-१९३८

१२९. खुदाई खिदमतगार और बादशाह खान

खुदाई खिदमतगार चाहे जैसे हों और अन्ततः जैसे साबित हों, लेकिन उनके नेताके बारेमें, जिन्हें वे उल्लाससे बादशाह खान कहते हैं, किसी प्रकारके सन्देहकी गुंजाइश नहीं है। वे निस्सन्देह खुदाके बन्दे हैं। वे सर्वत्र उसकी जीवन्त उपस्थितिमें विश्वास रखते हैं और जानते हैं कि उनका आन्दोलन उसकी कृपासे ही प्रगति करेगा। अपने काममें उन्होंने अपनी सम्पूर्ण आत्मा उँडेल दी है। परिणाम क्या होगा, इसकी इन्हें कोई चिन्ता नहीं है। इतना उन्होंने समझ लिया है कि अहिंसाको पूर्ण रूपसे स्वीकार किये बिना पठानोंकी मुक्ति नहीं है और इतना समझ लेना ही उनके लिए काफी है। पठान बड़े अच्छे योद्धा हैं, इस बातका उन्हें कोई गर्व नहीं है। वे उनकी बहादुरीको कद्र करते हैं, लेकिन मानते हैं कि उनकी अत्यधिक प्रशंसा करके लोगों ने उन्हें बिगाड़ दिया है। उनके पठान भाई समाजके गुण्डे माने जायें, यह वे नहीं चाहते। उनके विचारसे पठानोंको गलत राहपर लगाकर लोगोंने उनसे अपनी स्वार्थसिद्धि की है और उन्हें अज्ञानके अन्धकारमें रखा है। वे चाहते हैं कि पठान जितने बहादुर हैं उससे अधिक बहादुर बनें और अपनी बहादुरीमें ज्ञानका समावेश करें। उनका विचार है कि यह काम केवल अहिंसाके सहारे ही किया जा सकता है।

और चूँकि खानसाहब मेरी कल्पनाकी अहिंसाको स्वीकार करते हैं, इसलिए वे चाहते थे कि मैं यथासम्भव अधिकसे-अधिक समय तक खुदाई खिदमतगारोंके बीच रहूँ। और जहाँ तक मेरी बात है, उनके बीच जानेके लिए मुझे किसी विशेष प्रलोभन

की जरूरत नहीं थी। मैं खुद ही उनका परिचय पानेको उत्सुक था। मैं उनके हृदयमें प्रवेश करना चाहता था। पता नहीं, इसमें सफल हो पाया हूँ या नहीं। खैर, मैंने प्रयत्न तो किया ही।

लेकिन मैंने अपना काम किस प्रकार शुरू किया और क्या-कुछ किया, यह बतानेसे पहले मुझे अपने मेजबान खानसाहबके विषयमें दो शब्द जरूर कहने चाहिए। मेरी पूरी यात्राके दौरान उन्हें बराबर इस बातकी चिन्ता लगी रही कि अपने मेहमान को वे किस तरह, वहाँकी परिस्थितियोंमें जहाँतक सम्भव था वहाँ तक, अधिकसे-अधिक सुख-सुविधामें रखें। मुझे किसी चीजका अभाव नहीं हो, कोई असुविधा नहीं हो, इसके लिए उन्होंने कुछ भी उठा नहीं रखा। मेरी जरूरतोंका अनुमान पहले ही लगाकर वे उन्हें पूरा कर देते थे। और उन्होंने जो-कुछ किया, उसमें हलचल-जैसी कोई चीज कभी नजर नहीं आई। वह सब उनके लिए स्वाभाविक था। उन्होंने सब-कुछ हृदयसे किया। उनमें पाखण्ड नामको तो कोई चीज ही नहीं है—दिखावटीपनसे कोसों दूर। इसलिए वे किसीकी जितनी भी खातिरदारी करते हैं, उससे उसे कोई अटपटापन महसूस नहीं होता और न कभी ऐसा लगता है कि उसकी अमुक खातिरदारी खामखाह की जा रही है। अतः जब तक्षशिलामें हमने उनसे विदा ली तो हमारी आँखें नम थीं। विदाई बड़ी कठिन गुजरी। खैर, हमने इस आशा के साथ उनसे विदा ली कि अब आगामी मार्च महीनेमें हम फिर मिलेंगे। सीमाप्रान्त तो मेरे लिए एक ऐसा तीर्थ स्थान रहेगा ही जहाँकी यात्रा मैं बार-बार करूँगा। कारण, शेष भारत भले ही सच्ची अहिंसाका परिचय देनेमें विफल हो जाये, लेकिन ऐसा माननेका पूरा कारण दिखाई देता है कि सीमाप्रान्त उस अग्नि-परीक्षामें से सफल होकर निकलेगा। कारण सीधा-सादा है। बादशाह खानके अनुयायी, जिनकी संख्या लगभग एक लाख बताई जाती है, उनकी आज्ञाका पालन खुशी-खुशी करनेको तैयार रहते हैं। खानसाहब का अपना होंठ हिला देना उनके लिए काफी है। कोई आदेश उनके मुँहसे निकला नहीं कि उन्होंने उसका पालन किया। गरज यह कि खानसाहबके प्रति खुदाई खिदमतगारोंके मनमें श्रद्धा तो अगाध है, लेकिन रचनात्मक अहिंसाकी कसौटीपर वे खरे उतरते हैं या नहीं, यह देखना अभी शेष है।

वैसे तो प्यारेलाल सीमाप्रान्त के दौरेका अत्यन्त यथातथ्य विवरण देते रहे हैं, किन्तु जो-कुछ किया गया है उसका एक संक्षिप्त विवरण मुझे भी अपने ढंगसे देना ही है, भले ही इसमें कहीं-कहीं पुनरावृत्ति-दोष ही क्यों न आ जाये।

आरम्भमें ही खानसाहब और मैं, दोनों इस निष्कर्षपर पहुँच गये थे कि विभिन्न केन्द्रोंमें जाकर सभी खुदाई खिदमतगारोंसे अपनी बात कहने के बजाय मुझे उनके अगुओं से ही बात करनी चाहिए। इससे मेरी शक्तिकी बचत होगी और उसका अच्छेसे-अच्छा उपयोग होगा। अनुभवसे सिद्ध भी यही हुआ। पाँच हफ्तोंके दौरान हम सभी केन्द्रोंमें गये और प्रत्येकमें हमारी चर्चा घंटे-भर या इससे कुछ अधिक समय तक चली। खानसाहब तो मुझे बहुत ही समर्थ दुभाषिया लगे। और

चूँकि मैं जो-कुछ कहता था, उस सबमें उनका भी विश्वास है, इसलिए अनुवादमें वे अपनी सामर्थ्य-भर पूरा ओज भर देते थे। वे तो जन्मजात वक्ता हैं और वे बहुत ही गरिमाके साथ और प्रभावकारी ढंगसे बोलते हैं।

हर सभामें मैंने अपनी यह चेतावनी दोहराई कि यदि उन्हें ऐसा नहीं लगता हो कि अहिंसाका वरण करके उन्होंने, उनके पास अब तक जो शक्ति थी और जिसके प्रयोगमें वे परम निपुण थे, उससे लाख गुनी अधिक श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त कर ली है तो उन्हें अहिंसासे कोई सरोकार नहीं रखना चाहिए और जिन हथियारों को उन्होंने त्याग दिया है उन्हें फिरसे अपना लेना चाहिए। यह स्थिति कभी नहीं आने देनी चाहिए कि खुदाई खिदमतगारोंके बारेमें कोई कहे कि खानसाहबके प्रभावमें वे कायर बन गये या बना दिये गये। उनको बहादुरी उनकी अचूक निशानेबाजीमें नहीं, बल्कि मृत्युको चुनौती देने और गोलियों के सामने सीना तानकर खड़े होनेमें है। यह बहादुरी उन्हें कायम रखनी है और जब कभी अवसर आये, इसका परिचय देने को तैयार रहना है। और सच्चे बहादुरोंके लिए ऐसे अवसर अकसर अनायास ही आते रहते हैं।

मैंने उन्हें समझाया कि यह अहिंसा कोई निष्क्रिय गुण नहीं है। ईश्वरने मनुष्यको जितनी तरहकी शक्तियाँ दी हैं, उनमें यह सबसे प्रबल है। सच तो यह है कि मनुष्यकी अहिंसा ही मनुष्यको पशुसे भिन्न दिखाती है। यह गुण हर मनुष्यमें होता है, लेकिन अधिकांशमें सुप्तावस्थामें पड़ा रहता है। [अंग्रेजी का] 'नॉन-वॉयलेंस' शब्द शायद 'अहिंसा' शब्दके सम्पूर्ण अर्थका बोध नहीं कराता, और वैसे तो 'अहिंसा' में जितने अर्थ समाये हुए हैं उन सबका बोध करानेकी दृष्टिसे यह शब्द भी अपर्याप्त ही है। इसके बजाय प्रेम या सद्भाव शब्दका प्रयोग शायद बेहतर रहेगा। तो उन्हें हिंसाका उत्तर सद्भावसे देना है। और सद्भावको काम करनेका अवसर तभी मिलता है जब उसका सामना दुर्भावसे होता है। भलेके साथ भला व्यवहार करना तो बराबरका सौदा है। रुपयेके मुकाबले रुपयेका क्या महत्व है। अगर आनेके मुकाबले रुपया हो तब उसका महत्व जरूर होता है। इसी तरह सद्भाववाले आदमीकी असली पहचान तो तब होती है जब उसका मुकाबला दुर्भाववाले आदमी से होता है।

मैंने उनसे कहा कि हमें ऐसी अहिंसा या सद्भावका बरताव केवल अंग्रेजोंके साथ ही नहीं करना है, बल्कि आपसी व्यवहारमें भी हमें इसी वृत्ति से काम लेना है। अंग्रेजोंके साथ बरती जानेवाली अहिंसा तो मजबूरीमें अपनाया गया गुण भी हो सकती है और यह कायरता या कमजोरी को छिपानेवाले आवरणका रूप भी सहज ही ले सकती है। वह एक कार्य-साधक नीति भी हो सकती है और अकसर इस रूपमें इसका प्रयोग होते देखा भी गया है। लेकिन जहाँ हिंसा और अहिंसामें से किसी एकको चुननेकी हमारे सामने समान सुविधा है, वहाँ यदि हम अहिंसाको चुनते हैं तो उसे कार्य-साधक नीति नहीं माना जा सकता। ऐसे प्रसंग हमारे कौटुम्बिक सम्बन्धोंमें सामने आते हैं, आपसके सामाजिक और राजनीतिक व्यवहारमें

प्रकट होते हैं और न केवल एक ही धर्मके दो सम्प्रदायोंके आपसी सम्बन्धमें, बल्कि दो अलग-अलग धर्मोंके आपसी व्यवहारमें भी देखने को मिलते हैं। यदि हम अपने पड़ोसियों और समकक्षी लोगोंके प्रति सहिष्णु नहीं हैं तो अंग्रेजोंके प्रति भी सच्चे अर्थमें सहिष्णु नहीं हो सकते। इसलिए यदि हममें सद्भाव है तो उसकी परखके प्रसंग तो लगभग रोज-रोज आते रहेंगे। और यदि हम आपसी व्यवहारमें उसका सक्रिय प्रयोग करेंगे तो हम व्यापकतर क्षेत्रोंमें भी उसके प्रयोगके अभ्यस्त हो जायेंगे और अन्तमें वह हमारे स्वभावका अभिन्न अंग बन जायेगा।

मैंने उन्हें बताया कि खान साहब द्वारा उनके लिए चुना गया नाम ही इस बातका द्योतक है कि उन्हें मानवताका कोई अहित नहीं, बल्कि केवल कल्याण ही करना है। कारण, ईश्वरको तो व्यक्तिगत सेवाकी न कोई जरूरत है और न वह किसीसे ऐसी सेवा लेता है। वह अपनी सृष्टिके प्राणियोंकी सेवा तो करता है, लेकिन बदलेमें उनसे अपने लिए कोई सेवा नहीं लेता। वह अन्य बातोंकी ही तरह इस बातमें भी सबसे अलग है। इसलिए जो खुदाका खिदमतगार है वह तो उसकी सृष्टिके प्राणियोंकी सेवा करके ही अपनेको उसका खिदमतगार साबित कर सकता है।

इसलिए खुदाई खिदमतगारोंकी अहिंसा तो उनके रोज-रोजके कार्य-व्यवहारसे प्रकट होनी चाहिए। और अपनी अहिंसाको वे इस तरह तभी प्रकट कर सकते हैं जब वे मन, वचन और कर्म, तीनों तरहसे अहिंसक हों।

और जिस प्रकार अपने रोजके व्यवहारमें पशुबल पर निर्भर रहनेवाले आदमीके लिए सैनिक प्रशिक्षण लेना जरूरी है, उसी प्रकार खुदा के खिदमतगार को भी एक निश्चित प्रशिक्षण लेना होगा। इसकी व्यवस्था १९२० की विशेष कांग्रेसके आधारभूत प्रस्तावमें ही कर दी गई है। आगे चलकर समय-समयपर उसका विस्तार भी किया जाता रहा है। जहाँ तक मैं जानता हूँ, उसमें नरमी तो कभी नहीं लाई गई है। साम्प्रदायिक एकता, हिन्दुओं द्वारा अस्पृश्यताका त्याग, अपने घरमें हाथसे खादी तैयार करना और उसका इस्तेमाल करना — जो करोड़ों आम लोगोंके साथ तादात्म्य की अनुभूतिका निश्चित प्रतीक है — और शराब तथा अन्य मादक पदार्थोंका निषेध, ये चार चीजें इस बातकी कसौटी होंगी कि कोई सक्रिय सद्भावका आचरण कहाँ तक करता है। इस चतुर्विध कार्यक्रमको आत्मशुद्धि की प्रक्रिया कहते हैं और यह देशको सजीव स्वराज्य दिलाने का अचूक साधन है। कांग्रेसी तथा देशके अन्य लोग इस कार्यक्रम पर आधे मनसे ही अमल करते रहे हैं, जिससे प्रकट होता है कि अहिंसामें या उसके दैनिक आचरणके लिए निश्चित किये गये तरीके में अथवा दोनों में उनकी जीवन्त श्रद्धा नहीं है। लेकिन खुदाई खिदमतगारोंसे अहिंसामें जीवन्त श्रद्धा रखने की अपेक्षा की जाती है और माना जाता है कि उनमें ऐसी श्रद्धा है भी। इसलिए उनसे कांग्रेसके आत्मशुद्धिके सम्पूर्ण रचनात्मक कार्यक्रम पर अमल करनेकी अपेक्षा की जायेगी। इस कार्यक्रममें मैंने अपनी ओर से गाँवोंकी सफाई, आरोग्यके नियमोंका पालन और गाँववालोंको चिकित्सा-सम्बन्धी छोटी-मोटी सहायता देना जोड़ दिया है।

खुदाई खिदमतगारकी पहचान उसके कामोंसे होगी। वह किसी गाँवमें रहे और उसको पहलेसे अधिक साफ-सुथरा न बनाये तथा ग्रामवासियोंकी छोटी-मोटी बीमारियों में उनका उपचार न करे, यह नहीं हो सकता। अस्पताल आदि तो अमीरी के खिलौने हैं और वे केवल शहरी लोगों के लाभ के लिए हैं। इसमें सन्देह नहीं कि देश-भरमें औषधालय आदि खोलनेके प्रयत्न किये जा रहे हैं, लेकिन उनपर खर्च इतना बैठता है कि प्रगति बहुत कठिन है। इसके विपरीत, यदि खुदाई खिदमतगार थोड़ा-सा किन्तु अच्छा प्रशिक्षण प्राप्त कर लें तो गाँवोंमें लोगोंकी जैसी बीमारियाँ होती हैं, उनमें से अधिकांश का इलाज वे आसानीसे कर सकते हैं।

मैंने खुदाई खिदमतगारोंके अगुओंको समझाया कि सविनय अवज्ञा अहिंसाका आरम्भ नहीं, बल्कि उसकी चरम-परिणति है। फिर भी इस देशमें मैंने अहिंसाका प्रयोग १९१८ में उसी उलटे छोरसे आरम्भ किया। आवश्यकताओं ने मुझे मजबूर कर दिया था। देशका कोई नुकसान नहीं हुआ तो सिर्फ इसलिए कि संघर्षकी अहिंसक पद्धतिका विशेषज्ञ होनेका दावा करनेवाला मैं यह जानता था कि अपने कदम कब वापस ले लेने चाहिए। पटनामें सविनय अवज्ञाका स्थगन उसी रण-पद्धतिका एक अंग था। १९२० के रचनात्मक कार्यक्रममें आज भी मेरा विश्वास उतना ही प्रबल है जितना उस समय था। इस कार्यक्रमको ठीकसे पूरा किये बिना मैं पूर्ण स्वराज्यके निमित्त सविनय अवज्ञा नहीं चला सकता। सविनय अवज्ञा करनेके अधिकारी तो केवल वही हैं जो चाहे दूसरों के बनाये या खुद अपने बनाये कानूनोंका खुशी-खुशी पालन करनेका अपना कर्तव्य पहचानते हैं और उसे पूरा भी करते हैं। कानूनका पालन करनेकी यह वृत्ति उसका भंग करनेके परिणामके भयसे नहीं आनी चाहिए, बल्कि इस विचारसे आनी चाहिए कि केवल ऊपरी मनसे नहीं, बल्कि पूरे हृदयसे उसका पालन करना हमारा कर्तव्य है। यह प्रारम्भिक शर्त पूरी किये बिना यदि हम सविनय अवज्ञा करते हैं तो वह नाम-मात्रकी ही सविनय होगी, और वैसी अवज्ञा सबल लोगों द्वारा नहीं, बल्कि निर्बल लोगों द्वारा की गई अवज्ञा होगी। उस अवज्ञामें सद्भाव, अर्थात्, अहिंसा नहीं होगी। सविनय अवज्ञाके दिनोंमें अन्य प्रान्तोंके हजारों लोगोंकी तरह खुदाई खिदमतगारोंने भी कष्ट-सहन की क्षमताकी दृष्टिसे अपनी बहादुरीका स्पष्ट परिचय दिया था। लेकिन वह हृदयके सद्भावका निश्चित प्रमाण नहीं है। और कोई पठान केवल दिखावटी तौरपर अहिंसक बने, यह तो उसके पतनका ही सूचक माना जायेगा। कारण, उसे किसी भी हालतमें कमजोर होना ही नहीं चाहिए।

खुदाई खिदमतगारोंने मेरी बातें बड़ी तल्लीनतासे सुनीं। अहिंसामें उनकी श्रद्धा अभी तक खान साहबके आधारपर खड़ी है। उनकी श्रद्धाके स्रोत वही हैं। इसके बावजूद उनके हृदयपर राज्य करनेवाले अपने नेतापर जब तक उनकी अविचल श्रद्धा कायम है, तब तक अहिंसा में उनकी आस्था भी जाज्वल्यमान ही है। और अहिंसामें खान साहबकी श्रद्धा कोई सतही चीज नहीं है। उनका सम्पूर्ण हृदय उससे ओतप्रोत है। कोई शंकालु व्यक्ति चाहे तो जिस तरह मैं पाँच सप्ताह तक

उनके साथ रहा उसी तरह वह भी उनके साथ रहकर देख ले। फिर कोई कारण नहीं कि जिस तरह सूर्यकी किरणोंके फैलनेके साथ कुहासा छंट जाता है उसी तरह उसके मनकी शंका भी न छंट जाये।

एक जाने-माने पठान सज्जन हैं, जो मेरे दौरेके आखिरी दिनोंमें मुझसे मिले थे। इस दौरेकी उनके मनपर क्या छाप पड़ी, वह उन्हींके शब्दोंमें देखिए :

आप जो-कुछ कर रहे हैं, मुझे अच्छा लगता है। आप बड़े चतुर हैं (पता नहीं, चतुरके बदले चालाक कहना ठीक रहेगा या नहीं)। हमारे लोग जितने बहादुर हैं, आप उन्हें उससे अधिक बहादुर बना रहे हैं। उन्हें आप शक्तिका संचय करना सिखा रहे हैं। एक हदतक अहिंसक होना तो बेशक अच्छा है। आपकी शिक्षासे वे वैसे बनेंगे भी। हिटलरने वास्तवमें हिंसाका प्रयोग किये बिना अपने हिंसामय हेतु सिद्ध करनेकी युक्तिको पूरी तरहसे साधा है। लेकिन आप तो हिटलरसे भी आगे निकल गये हैं। आप हमारे लोगोंको अहिंसाका, मारे बिना मरनेका प्रशिक्षण दे रहे हैं; सो अब अगर [पाशविक] शक्तिके प्रयोगका प्रसंग आयेगा तो वे उसका ऐसा जबरदस्त प्रयोग करेंगे जैसा पहले कभी नहीं किया था। मैं आपको बधाई देता हूँ।

मेरा मौन चल रहा था और उन सज्जनके मनके भ्रमको तोड़नेवाला कोई उत्तर लिखकर देनेकी मुझमें हिम्मत नहीं थी। मैं मुस्कराकर विचारमें डूब गया। पठान मेरी शिक्षाके प्रभावसे और बहादुर बनेंगे, यह प्रशस्ति मुझे अच्छी लगती है। मुझे तो ऐसा एक भी दृष्टान्त याद नहीं है कि कोई मेरे प्रभावमें कभी कायर भी बना है। लेकिन उपर्युक्त सज्जनने जो निष्कर्ष निकाला, वह तो भयंकर था। यदि अन्तिम अग्नि-परीक्षाके समय खुदाई खिदमतगार अपने-आपको उस धर्मके योग्य साबित नहीं करते जिसका अनुयायी होनेका वे दावा करते हैं तो माना जायेगा कि निश्चय ही उनके हृदयमें अहिंसा नहीं थी। उनकी परख जल्दी ही होगी। यदि वे रचनात्मक कार्यक्रमको पूरे उत्साह और निष्ठाके साथ क्रियान्वित करेंगे तो ऐसी कोई आशंका नहीं कि उक्त आलोचनाका पूर्वानुमान सही साबित होगा। इसके बजाय तब तो दुनिया देखेगी कि वे वास्तवमें संसारके सबसे बहादुर लोग हैं।

दिल्लीसे वर्धा जाते हुए रेलगाड़ीमें

११ नवम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १९-११-१९३८

१३०. पत्र : अमृत कौरको

रेलगाड़ीमें (भोपाल)

११ नवम्बर, १९३८

पगली,

हाँ, जो पंक्तियाँ तुमने मुझे अब भेजी हैं, उन्हें तुम पहले भी मेरे लिए नकल कर चुकी हो। बाबला आयेगा तो मैं उससे उनका पाठ कराऊँगा। उससे कह देना कि मुझे याद दिला दे।

आशा है, मेरा तक्षशिलासे लिखा पत्र^१ और फिर दिल्लीसे लिखा पत्र^२ भी तुम्हें मिल गया होगा। दिल्लीमें तो मैं बड़ा व्यस्त रहा। अन्तिम क्षणतक लोगोंसे मिलता रहा। लेकिन रक्तचाप बहुत ठीक रहा — १६६/१००।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८८८) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७०४४ से भी।

१३१. पत्र : महादेव देसाईको

रेलगाड़ीमें

११ नवम्बर, १९३८

चि० महादेव,

भोपाल निकल जानेके बाद मैं यह लिख रहा हूँ। शुएब आये थे। उन्होंने पूछा, महादेव कैसे हैं, और फिर बताया कि तुमने उनसे वादा किया है कि लौटतेमें दो-तीन दिन भोपाल रहोगे। मेरी राय है कि यदि तुम उन्हें दो-तीन दिन दोगे तो यह हर तरहसे अच्छा ही रहेगा। दुर्गा और बाबलाको वहाँ बहुत-कुछ देखनेको मिलेगा ही।

भुशीलाका “बैग” रह गया था इसलिए प्यारेलाल उतर गया। वह कल पहुँच जायेगा।

१. यह पत्र उपलब्ध नहीं है।

२. देखिए “पत्र : अमृत कौरको”, पृ० १२२।

इसके साथ मीराबहन द्वारा भेजी गई तुम्हारी डाक है, जिसे मैंने खोला था, साथ ही अपने नाम लिखा पत्र भी भेज रहा हूँ।

बा मेरे साथ है। तुम्हारे लौटने तक बा की इच्छा वहीं रहने की थी। किन्तु मैंने मना लिया। नीमू आकर मिल गई। अब वह कुछ दिनोंके लिए लखतर जायेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६८०) से।

१३२. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

रेलगाड़ीमें

११ नवम्बर, १९३८

प्रिय भगिनी,

डीसेम्बरके अंतमें देहरादूनमें कन्या गुरुकुल का वार्षिकोत्सव होता है। उस वखत किसीको भेजनेकी मंगनी आचार्य रामदेव किया करते हैं। मेरी इच्छा तो राजकुमारीको भेजनेकी थी। वह तो विमेन्स कानफरन्समें होगी। आपको भी तो जाना है लेकिन एक दिन देहराको दे सकेगी तो अच्छा होगा। शायद कन्या गुरुकुल जानती होगी। संस्था अच्छी है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ३०८१) से; सौजन्य : रामेश्वरी नेहरू। जी० एन० ७९८५ से भी।

१३३. तार : रा० स० रुइकरको

११ नवम्बर, १९३८

मेरा उत्कट अनुरोध है कि आप उपवास तोड़ दें। वर्धा आनेपर मुझसे जो भी बन पड़ेगा सब कल्ला। तारसे उत्तर दें।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १२-११-१९३८

१. राजनन्दगाँवमें मिल-भजदूने हड़ताल कर रखी थी और २९ अक्टूबरसे ही श्री रा० स० रुइकर अनशन कर रहे थे। जब टेड यूनिथन कांग्रेसके महामन्त्री श्री आर० डब्ल्यू० फुले इस सम्बन्धमें नागपुर स्टेशन पर गांधीजी से मिले तो गांधीजी ने उनसे यह सन्देश तार द्वारा भेज देनेको कहा।

१३४. पत्र : लॉर्ड लिनलिथगोको

सेगाँव, वर्षा

[११ नवम्बर, १९३८ या उसके पश्चात्]

प्रिय लॉर्ड लिनलिथगो,

आपका ३१ अक्टूबरका विस्तृत कृपापत्र मुझे मीराबाईने भेज दिया था। उस समय मैं सीमाप्रान्तका दौरा कर रहा था। मुझे पता था कि उसकी प्राप्ति-सूचना उसने दे दी थी। लेकिन हिसारमें संकटकी स्थितिके बारेमें आपने जिस सहृदयताका परिचय देते हुए लिखा था, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता था।^१ हाँ, मुझे मालूम है कि पंजाब सरकार जो-कुछ कर सकती है, कर रही है। रेलवे-प्रणालीकी कार्य-पद्धतिके बारेमें अनजान होनेके कारण मैंने सीधे सर्वोच्च अधिकारीको पत्र लिखा था।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

वाइसराय महोदय
दिल्ली

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल।

१३५. बिहारमें जन-शिक्षा अभियान

डॉ० सैयद महमूद^१ने मुझे बिहारमें जन-शिक्षा अभियानकी प्रगतिके बारेमें एक लेख भेजा है। नीचे जानकारीसे भरे उस लेखके सभी आवश्यक अनुच्छेद दिये जा रहे हैं।^२ मन्त्री महोदयसे मैं चीनमें चलाये जा रहे ऐसे ही अभियानके सम्बन्धमें लिखा डॉ० ताओका लेख^३ पढ़नेका अनुरोध करूँगा। शायद उन्हें उसमें बहुत-कुछ अनुकरणीय मिल जाये।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १२-११-१९३८

१. गांधीजी सीमाप्रान्तकी अपनी यात्रा समाप्त करके ११ नवम्बर, १९३८ को सेगाँव पहुँचे थे।

२. पंजाबमें उस समय अकालकी स्थिति मौजूद थी।

३. बिहारके विकास और नियोजन मन्त्री।

४. यहाँ नहीं दिये गये हैं।

५. यह हरिजन के २९-१०-१९३८, ५-११-१९३८ और १९-११-१९३८ के अंकोंमें प्रकाशित हुआ था।

१३६. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव

१२ नवम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

अगाथा अभी मेरे सामने बैठी है।

शेष महादेवको लिखे पत्र^१ से जान लेना। इस डाकसे दो पंक्तियाँ तुम्हारे नाम भी चली जायें, इसलिए इतना लिख दिया है।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८३९) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७०४५ से भी।

१३७. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

१२ नवम्बर, १९३८

प्रिय कु०,

किसी दिन १७ तारीखसे पहले ही, जब मेरा मौन नहीं रहेगा, आकर ३० मिनटके लिए मुझसे मिल लो। न्यासियोंकी नियुक्ति तो संयुक्त कार्रवाईका नतीजा है ही। है न?

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१३९) से।

१. देखिय “पत्र : महादेव देसाईको”, पृ० १३७।

१३८. पत्र : महादेव देसाईको

१२ नवम्बर, १९३८

चि० महादेव,

बेचारी लीलाने तुम्हारे लिए तैयारी कर रखी थी।

मीराबहनने अपना विचार बदल दिया है। उसने सीमाप्रान्त जानेका निश्चय किया है। मैंने भी इसे पसन्द किया है। खान साहब भी तो यही चाहते थे। अब मैंने उनकी इजाजत माँगी है। यहाँका मौसम अच्छा है। अगाथा मेरे सामने बैठी है। अभी मैंने अपना मौन नहीं तोड़ा है। दो बजे टूटेगा। इटारसीसे लिखा मेरा पत्र^१ मिला होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६८१) से।

१३९. पत्र : महादेव देसाईको

१३ नवम्बर, १९३८

चि० महादेव,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा दूसरा लेख मेरे पास पड़ा है। यह निश्चय ही मुख्य लेखके रूपमें जायेगा। तुम्हारा पहला लेख तो पड़ा ही हुआ है। मैं आज उसे नहीं निकालूँगा। अब उसे तो मैं तुम्हें यहीं लौटाऊँगा। मैं उसे रजिस्ट्री से नहीं भेजना चाहता और सामान्य डाकसे भेजते हुए मुझे डर लगता है। कोई जल्दी तो है नहीं। यह “सदाबहार” (एवरग्रीन) है।

वह राजेन्द्र संयुक्त प्रान्तका है। वह यहाँ चार-पाँच महीने पहले आया है। भला आदमी है। अधिक लिखनेका समय नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६८२) से।

१४०. पुर्जा : कंचन मु० शाहको

रविवार, १३ नवम्बर, १९३८

तेरे पत्रका उत्तर तो मैं नहीं दे सका, किन्तु यदि मुन्नालाल^१ चला जाये और तुझे महिला आश्रममे न रहना हो तो तू यहाँ आ सकती है।

गुजरातीकी फोटोन-नकल (जी० एन० ८५६४) से।

१४१. कांग्रेस और खादी

बम्बई, संयुक्त प्रान्त, बंगाल और सिन्धसे पत्र लिखकर कुछ लोगोंने मुझसे कड़ी शिकायत की है कि कांग्रेस-संविधानकी खादी-विषयक धाराका जितना पालन नहीं किया जाता है, उससे अधिक भंग ही किया जाता है। इन चार प्रान्तोंके नामों के उल्लेखसे कोई यह अनुमान न लगाये कि अन्य प्रान्तोंमें स्थिति कुछ बेहतर है। इनका उल्लेख सिर्फ इसलिए किया है कि इन प्रान्तोंसे शिकायतें आई हैं। दूसरे प्रान्तोंके लोगोंने अपने यहाँ व्यापक रूपसे फैली इस बुराईकी ओर ध्यान खींचना शायद जरूरी नहीं समझा है। यह भी हो सकता है कि अन्य प्रान्तोंसे इस सम्बन्धमें लिखे पत्र अभी मेरे सामने नहीं रखे गये हैं।

पत्र-लेखकोंकी मुख्य शिकायत यह है कि नगरपालिकाओं तथा स्थानिक निकायोंके लिए उम्मीदवार नामजद करते समय कांग्रेसके पदाधिकारी इनपर खादी-विषयक धाराकी पाबन्दी लागू नहीं करते। एक पत्र-लेखकका कहना है कि खादी पहननेके कर्तव्यको इसलिए नजरअन्दाज कर दिया जाता है कि कांग्रेसके पदाधिकारियोंको खादीधारियोंमें योग्य उम्मीदवार नहीं मिलते। अगर उपयुक्त ढंगके खादीधारी लोगोंकी कमी साबित की जा सकती हो तो इन पत्र-लेखक भाईने जो बात कही है; वह इस धाराको बदलनेका कारण तो बन सकती है, लेकिन इसके आधारपर कांग्रेसके नियमोंको जान-बूझकर तोड़ा जाये, यह तो निश्चय ही नहीं हो सकता। एक पत्र-लेखकने इस धाराको नजरअन्दाज करनेवालेको यह दलील देकर सही साबित किया है कि स्वराज्य और खादीमें कोई सम्बन्ध नहीं है। यह बात भी संविधानमें परिवर्तन करनेका कारण तो हो सकती है, लेकिन उसकी धाराओंकी उपेक्षा करनेका आधार नहीं बन सकती। हर कांग्रेसी एक सम्भावित सत्याग्रही है। सविनय अवज्ञाके अधिकारी केवल वही लोग हैं जो अपने राज्यके कानूनोंका पालन

१. मुन्नालाल जी० शाह, कंचन शाहके पति।

खुशी-खुशी करनेका कर्तव्य निभाते हैं; और खासकर जब वे कानून उनके अपने ही बनाये हुए हों तब तो इस कर्तव्यका निर्वाह और भी जरूरी हो जाता है। इसलिए संविधान की धाराओंको जान-बूझकर तोड़कर कांग्रेसी लोग भारी खतरा मोल ले रहे हैं।

फिर, क्या खादी और स्वराज्यमें परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है? कांग्रेस-संविधानमें खादी-विषयक धारा दाखिल करनेवाले कांग्रेसी क्या इतने मूढ़मति थे कि जिस भ्रांतिको कुछ आलोचक सहज ही समझ गये हैं, उसकी ओर उनका ध्यान ही नहीं गया? मैंने निस्संकोच कहा है और यहाँ फिर वैज्ञानिक कहता हूँ कि खादीके बिना करोड़ों भूखे, नंगे और अशिक्षित स्त्री-पुरुषोंको कभी भी स्वराज्य नहीं मिल सकता। यदि कोई बराबर खादीका ही उपयोग करता है तो यह इस बातका द्योतक है कि वह देशके गरीबसे-गरीब लोगोंके साथ तादात्म्यका अनुभव करता है और उसमें इतनी देशभक्ति और त्यागकी वृत्ति है कि वह खादी पहने, भले ही खादी देखनेमें उतनी चिकनी और चमकदार न हो और न उतनी सस्ती ही हो जितना कि विदेशी कपड़ा होता है।

लेकिन आज जबकि कांग्रेसियोंके बीच अराजकता और मनमाने आचरणका बोलचाल है, मेरी दलीलका शायद उसमें से बहुत-से लोगोंपर कोई असर न हो। मेरी फाइलोंमें कुछ ऐसे पत्र भी पड़े हुए हैं जिनमें तथाकथित कांग्रेसियोंके भ्रष्टाचारके और भी प्रमाण दिये गये हैं। एक पत्र-लेखकका कहना है कि जाली सदस्योंकी संख्या तो बहुत बड़े पैमाने पर बढ़ रही है। उड़ीसासे यह आवाज उठाई गई है कि सदस्य बनानेके उद्देश्यसे कांग्रेसी झूठके प्रचारमें भी नहीं झिझकते। कलकत्तासे एक भाईने लिखा है कि ऐसे मूल सदस्य भी हैं जिन्होंने अपने चन्दे नहीं दिये हैं। पूछनेपर उनसे जवाब मिलता है कि हर साल चार आने देनेमें वे असमर्थ हैं। पत्र-लेखकने क्षुब्ध होकर लिखा है कि यही लोग न जाने कितने चार आने हर वर्ष सिनेमा देखनेमें बर्बाद कर देते हैं। मगर मैं जो बात कहना चाहता हूँ वह यह नहीं है कि ये लोग दे तो सकते हैं लेकिन देते नहीं। मैं तो यह कहना चाहता हूँ कि अगर उन्होंने अपने चन्दे नहीं दिये हैं तो वे कांग्रेसी नहीं हैं और सदस्योंकी सूचीसे उनके नाम काट दिये जाने चाहिए। संयुक्त प्रान्तके एक भाईका कहना है कि घूसखोरी और भ्रष्टाचार तो कांग्रेसका नाम डुबा रहे हैं। उनका कहना है कि अपने या अपने सगे-सम्बन्धियोंके स्वार्थोंकी सिद्धिके लिए कांग्रेसी लोग कलकट्टरों तथा अन्य अधिकारियों पर अपने प्रभावका उपयोग करके सब तरहके अन्याय कराते हैं। उन्होंने यह भी कहा है कि सरकारी कर्मचारी उनके दबावमें न आये, इतनी शक्ति उनमें नहीं है। जब अंग्रेज अधिकारियोंके निर्देशपर सरकारी नौकर गलत काम किया करते थे और तब जैसी बुराई मौजूद थी, आजकी यह बढ़ती हुई बुराई शायद उससे भी बदतर साबित हो। अगर सच हो तो यह आरोप सबसे बुरा है। संयुक्त प्रान्तकी सरकार और कांग्रेसकी प्रान्तीय उच्च सत्ताको इस सम्बन्धमें बारीकीसे जाँच-पड़ताल करनी चाहिए। बल्कि सच तो यह है कि यहाँ मैंने जितनी

भी अनियमितताओं और दोषोंका जिक्र किया है, उनके सम्बन्धमें कार्य-समिति तथा प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियोंको पूरी सावधानीके साथ तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए। कांग्रेसमें जो अनियमितता और दोष घुस आये हैं, उन्हें यदि दूर नहीं किया जाता तो इस संस्थाके पास आज जो शक्ति है, उससे यह वंचित हो जायेगी और जब देशके सामने असली संघर्षकी घड़ी आयेगी, उस समय यह उन अपेक्षाओंको पूरा नहीं कर पायेगी जो इससे की जाती हैं।

सेगाँव, १४ नवम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १९-११-१९३८

१४२. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव

१४ नवम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं तो यही मानना चाहूँगा कि तुम्हारे कलके पत्रको मैंने गलत समझा। मैंने तो यही समझा कि तुमने एक गहरा घाव कर दिया है, लेकिन इससे तुम्हारे प्रति मेरे प्रेममें और गहराई ही आई। मेरा प्रेम ऐसे तूफानों और गलतफहमियोंको झेलनेकी सामर्थ्य रखता है। मुझे दुःख था और है तो इसी बातका कि मेरी प्रतिक्रियासे तुम्हारे मनको चोट पहुँची। प्रेम-भाजन द्वारा किये गये घाव कभी स्थायी नहीं होते। ऐसे घाव तो लगते ही तुरन्त भर भी जाते हैं। यदि वे नहीं भरे तो इसका मतलब यह होगा कि मेरे प्रेममें पहले-जैसी क्षमता नहीं रही। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि अब तुम तो अपनी भूल और आस्थाकी कमीपर या तुम्हारे पत्रमें से, जो तुम्हारा कभी आशय नहीं था, ऐसा अर्थ निकालनेकी मेरी मूर्खतापर हँस कर बात खत्म करोगी। तो इस आई-गई हो जानेवाली बातपर तुम्हें अपने मनको दुःखी नहीं रखना है।

यह तो समझ गया कि आर्यनायकम् द्वारा बुलाई गई बैठकमें तुम नहीं आ सकती थीं। लेकिन आशा करनी चाहिए कि अगले साल तुम्हारा कार्यक्रम ज्यादा व्यवस्थित रहेगा।

त्रावणकोर-शिष्टमण्डलके कार्योंके बारेमें तो तुम्हें लिखूँगा ही।

सप्रेम,

योद्धा

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६५०) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६४५९ से भी।

१४३. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

१४ नवम्बर, १९३८

प्रिय कु०,

क्या तुम कल आ सकते हो? अपनी रचना लेते आना और खाना यहीं खाना, हालाँकि मेरे साथ नहीं। तुम मुझसे पहले या बादमें खाना, ताकि जो खाना मैं साढ़े दस बजे या उसके आसपास खाता हूँ, वह खाना जब मेरा चल रहा होगा तब पूरे समय तक तुम मुझसे अपनी बात कहते रह सको। अपने कामके लिए तुम कोई एक शान्त-एकान्त कोना चुन सकते हो।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च:]

त्रावणकोर-शिष्टमण्डलकी फिक्र मत करना।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१४०) से।

१४४. पत्र : महादेव देसाईको

१४ नवम्बर, १९३८

चि० महादेव,

वल्लभभाई आज आ गये। राजकोटका मामला काफी उलझ गया है।^१ किन्तु जब तक उनके ग्रह सीधे हैं तब तक बिगड़ते जान पड़नेवाले काम भी बन जायेंगे। मणि अपना जौहर दिखा रही है।^२ मैंने ऐसी दूसरी लड़की नहीं देखी।

तुम्हारा दूसरा लेख आज आ रहा है। 'हरिजन' के लिए जिस लेखको रद कर दिया था वह मैं तुम्हींको दूँगा। तुम्हारा जो लेख आज मिला है उसे मैं देख जाऊँगा। चन्द्रशंकर काफी बीमार है। मेरे मनमें डर बैठ गया है।

१. राजकोटके लोगोंने ठाकुर धर्मेन्द्रसिंह और उनके दीवान वीरावालाकी तानाशाहीके विरुद्ध एक आन्दोलन चलाया था। रियासतके नेतागण वल्लभभाई पटेलसे सलाह-मशविरा लेते रहते थे और दूसरी ओर पटेलका पथ-प्रदर्शन गांधीजी कर रहे थे।

२. मणिबहन पटेलने रियासतके गाँवोंका दौरा किया था और "किसानों द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलनमें उन्हें प्रोत्साहन दिया था"।

यह मानकर कि खान साहबकी अनुमति मिल जायेगी, मीराबहन सीमाप्रान्त जानेकी तैयारी कर रही है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

मीराबहनने मुझे दो चीजें दिखाईं जो मैं तुम्हें भेज रहा हूँ। तुम दोनोंको समझ जाओगे।

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६८३) से।

१४५. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

सेगाँव

१४ नवम्बर, १९३८

वि० कान्ति,

तेरे दोनों पत्र मिल गये हैं। यदि मैं तुझे अपने द्वारा की गई मेहनत [के प्रमाणमें] उसकी सभी नकलें भेज दूँ तो तू मुझे प्रथम स्थान देगा। किन्तु तू इतना ही काफी मान कि जो-कुछ मुझसे हो सकता था, वह सब मैंने किया। आखिरकार मुझे इसके साथ भेजा जा रहा उत्तर मिला। रामचन्द्रन कल आ रहे हैं और मैं फिर प्रयत्न करूँगा। मैं इसे छोड़ूँगा नहीं। किन्तु सबसे बड़ी बाधा तो यह है कि उनसे खुलकर बात नहीं हो सकती। इसे छिपाया ही नहीं जाना चाहिए। इस मामलेमें सरस्वती स्वतन्त्र है। सभी बालक स्वतन्त्र हैं। तूने जो पत्र माँगा था वह भी इसके साथ लौटा रहा हूँ। तू बेचैन मत हो। धीरज रख। मैं अपनी तरफसे हर तरह प्रयत्न करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३५२) से; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी।

१४६. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव, वर्धा

१५ नवम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

अतातुर्कके बारेमें तुम्हारी बातें बिलकुल सही हैं। उनके परदा-प्रथाको समाप्त करनेके प्रयत्नोंके बारेमें तुम एक खुला पत्र क्यों नहीं लिखतीं ?

अगाथा शायद ज०^१के लौटने तक यहीं रहेगी। उसका बड़ा अच्छा चल रहा है। सभी बातोंपर हम सुविधासे चर्चा कर रहे हैं।

तो म०^१ १९ तारीखको तुमसे विदा ले रहा है। तुमने जितने स्नेहसे उसकी देख-भाल की, उसपर तो वह आह्लादित है। त्रावणकोरका शिष्टमण्डल अब आने ही वाला है। इसलिए इसे समाप्त करता हूँ।

सप्रेम,

योद्धा

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६५१) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६४६० से भी।

१४७. पत्र : महादेव देसाईको

१५ नवम्बर, १९३८

चि० महादेव,

न० से सम्बन्धित तुम्हारी टिप्पणी मैं पढ़ गया। यह तो कहीं भी भेजने लायक नहीं है। इसलिए नहीं कि उसमें दिया तर्क ठीक नहीं है बल्कि न० को उतना महत्व क्यों दिया जाये ? हम उनके विचारोंसे परिचित हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें उत्तर देनेका मतलब है फूसमें लुकाठी लगाना। न० का नाम प्रकाशित करनेमें क्या लाभ है ? उनके तर्कोंकी विवेचना करके परोक्ष रूपसे उत्तर दिया जा सकता है जैसा कि मैं करता हूँ। यह काम मैं कर सकता हूँ किन्तु उनके तर्कोंमें उतना दम नहीं है। तुमने जो प्रमाण उद्धृत किये हैं उनका उपयोग किया जा सकता है। मैं देखूँगा क्या किया जा सकता है। इसलिए मैं उक्त लेख वापस नहीं भेज रहा हूँ। तुम्हें इसीको आखिरी पत्र मान लेना चाहिए। हालाँकि मैं कल भी लिखूँगा अवश्य, किन्तु यदि

१. जवाहरलाल नेहरू।

२. महादेव देसाई; देखिय “पत्र : अमृत कौरको”, पृ० १४९।

तुम खाना हो चुके होंगे तो राजकुमारी इसे आगे भेज देगी। इसलिए मैं फिलहाल अन्य चीजें नहीं भेज रहा हूँ। मैं यह मान लेता हूँ कि यदि तुम वहाँसे १९ को खाना होंगे तो २१ की साँझको यहाँ पहुँच जाओगे।

मङगाँवकर कल आ रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६८४) से।

१४८. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

सेगाँव, वर्धा

१५ नवम्बर, १९३८

चि० कान्ति,

रा० से मेरी बात हुई। वे तो सब जानते हैं। पहले-पहल यह बात उन्होंने अपने पितासे सुनी थी। रामने पूरी तरहसे जाँच-पड़ताल तो नहीं की किन्तु जितनी की है उसके आधारपर उन्हें लगता है कि इस बातमें कोई सचाई नहीं है। पा० ने इस बातसे साफ इन्कार किया है और उसका कहना है कि स्वयं उसे अपराधी माननेपर ही पा० को अपराधी माना जा सकता है। उसका कहना है कि स० ने जो-कुछ देखा वह सब वहमसे भरा हुआ है। लेकिन उनका कहना है कि वे इसके बावजूद और भी जाँच-पड़ताल करेंगे और मुझे लिखेंगे। स० के बारेमें मुझे तनिक भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। ऐसी स्थितिमें मैं तो बिल्कुल लाचार हो गया हूँ। यदि स० ने ऐसी भूल न की हो तो उसे साहसपूर्वक जो-कुछ हुआ हो उसका पूरा विवरण देना चाहिए, जैसाकि देवदासने मणिलालके बारेमें किया था। अब मैं तुझे यह सलाह दूँगा कि इस मामलेमें तुझे और नहीं पड़ना चाहिए। तू चिन्ता मत कर। रा० ने मुझे आश्वासन दिया है कि वे स० का बाल बाँका नहीं होने देंगे। अब वह अपने नाना-नानोके साथ रहेगी। मुझे लिखती रहेगी। और अन्तमें मैं जो निर्णय दूँगा, उसे स्वीकार करेगी।

तुझे मेरी यह भी सलाह है कि तू रा० को लिख। तू यदि मेरी माफ़त लिखे तो भी अच्छा है। यदि तू तटस्थ रहते हुए शान्तिपूर्वक काम लेगा तो सचाई सामने आ जायेगी और तू स० को भी बचा सकेगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

फिलहाल तो बहुत-से शिष्टमण्डल हैं इसलिए मुझपर कामका काफी बोझ है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३५३) से; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी।

१४९. पत्र : प्रेमावहन कंटकको

सेगाँव

१५ नवम्बर, १९३८

चि० प्रेमा,

बहुत दिनों बाद तेरा पत्र देखनेको मिला। तू जहाँ जाती है वहीं तुझे यश मिलता है तो इसमें आश्चर्य क्या है?

पटवर्धन जब चाहें तब आ सकते हैं। कुटुम्बका जंजाल कठिन समस्या है। बीमारियाँ और दुर्घटनाएँ होती ही रहती हैं। तुझे तो बीमार पड़ना ही नहीं चाहिए। इसका सुनहला उपाय सभी मामलोंमें मर्यादाका पालन करना है।

तू खुशीसे अपनी नई सहेलीको साथ ला सकती है।

किशोरलालने मुझसे भी बात की थी। मैं स्वयं तो पुस्तक^१ नहीं पढ़ सका किन्तु जिस पत्रका^१ विरोध किया गया है वह मैंने पढ़ लिया है। विरोधमें मुझे कोई सार नजर नहीं आया। इसके छपनेसे मुझे कोई हानि पहुँचना सम्भव नहीं है। हानि तो मुझे तब पहुँचेगी जब मैं करने योग्य काम न करूँ और न करने योग्य करूँ। इसलिए [पुस्तक या उसका कोई अंश] वापस लेनेकी कोई बात नहीं उठती। उनमें एक ही पत्र ऐसा है जिसे प्रकाशित करनेकी शायद मैं अनुमति न देता और सो भी आजके समाजके रंग-ढंगको देखते हुए।

हालाँकि मैं यह मानता हूँ कि तूने छपवानेमें पूरी सावधानी बरती थी।

किशोरलालने जो-कुछ लिखा है वह शुद्ध भावनासे लिखा है।^१ तू उसका बुरा मत मानना। उन्हें विनम्रतापूर्वक अपना स्पष्टीकरण दे देना।

मैं अच्छा हूँ।

खानसाहबने एक स्वयंसेविका की माँग की है। मेरी जवानपर तेरा नाम आ गया था, किन्तु मैं तुझे अपने वर्तमान कामसे हटाना नहीं चाहता। इसलिए फिलहाल तो तुझे भेजनेका विचार छोड़ दिया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ६८३६) से; सौजन्य : प्रेमावहन कंटक।
जी० एन १०३९७ से भी।

१. गांधीजी द्वारा प्रेमावहनको लिखे गये ९० पत्रोंके संकलनका मराठी अनुवाद वात्सल्याची प्रसाददीक्षा के नामसे प्रकाशित हुआ था।

२. २१-५-१९३६ का पत्र; देखिए खण्ड ६२, पृ० ४६१-३।

३. पुस्तकको लेकर जो हंगामा उठ खड़ा हुआ था उससे किशोरलालको बहुत दुःख हुआ था और उससे परेशान होकर उन्होंने प्रेमावहनको एक कड़ा पत्र लिखा था।

१४५

१५०. बातचीत : त्रावणकोर राज्य कांग्रेस शिष्टमण्डलके साथ^१

१५ नवम्बर, १९३८

मुझे तो ऐसी खबरें मिली हैं कि त्रावणकोरमें बहुत बड़े पैमानेपर हिंसात्मक घटनाएँ हुई हैं। दूसरी ओर राज्य-कांग्रेसके अधिनायकोंने मुझे तार देकर बताया है कि ऐसी कोई हिंसात्मक घटना नहीं हुई है जिसकी जिम्मेदारी उनपर हो और जो भी हिंसा हुई है वह सत्ताधारियोंकी प्रेरणापर हुई है। ऐसी शिकायत भी की गई है कि राज्य-कांग्रेसके सदस्योंने छिपे तौरपर हिंसाकी ताईद की है, यद्यपि उनपर हिंसाकी कोई सीधी जिम्मेदारी नहीं है। मेरा कहना तो यह है कि यदि भीड़ने हिंसासे काम लिया है तो उसे भड़कानेमें चाहे जिसका हाथ हो, उससे इतना तो प्रकट होता ही है कि जनतापर राज्य-कांग्रेसका पर्याप्त नियन्त्रण नहीं है। ऐसी हालतमें सविनय अवज्ञा स्थगित कर देनी चाहिए, और मैंने स्वयं भी ऐसा कई बार किया है। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि कथित हिंसात्मक घटनाओंमें से अधिकांश उस समय घटित हुई जब आप जेलके सीखचोंमें बन्द थे। मैं यह भी मानता हूँ कि आपको जनताको अनुशासनकी शिक्षा देनेका अवसर नहीं मिला। आपके इस विचारसे भी मैं पूर्णतः सहमत हूँ कि लड़ाई सिर्फ सत्ताधारियोंसे कुछ रियायतें प्राप्त करनेके लिए नहीं, बल्कि सच्ची जिम्मेदार सरकारकी स्थापनाके लिए होनी चाहिए। लेकिन, मेरी दृष्टिमें तो इस सबका मतलब यही है कि आपको जनसाधारणके बीच बहुत-सा प्रारम्भिक कार्य करनेकी जरूरत है। आपको अपना निर्माण-कार्य नींवसे ही तो शुरू करना है।

आपका कहना है कि आपके विचारसे दीवानके हट जानेसे आपके आन्दोलनको बड़ा लाभ होगा, क्योंकि वही आपके रास्तेमें मुख्य बाधा है। अगर इन आरोपोंपर आपका आग्रह बना रहता है तो आपको इन्हें सिद्ध करनेके लिए भी तैयार रहना चाहिए। लेकिन मेरी रायसे तो इससे होगा यह कि एक बिल्कुल ही व्यक्तिगत मामला प्रमुखता प्राप्त कर लेगा और फलतः जिम्मेदार सरकारका प्रश्न पृष्ठभूमिमें चला जायेगा। इसे तो मैं दुश्मनके हाथमें खेलना मानता हूँ। और ऐसा करके आप जनताको नेतृत्व भी गलत ही देंगे। यदि इन आरोपोंकी सचाईमें आपका विश्वास है तो मैं आपसे इन्हें कोई इसलिए वापस लेनेको नहीं कह रहा हूँ कि ये सच्चे नहीं हैं। उन्हें वापस लेनेको मैं इसलिए कहता हूँ कि आपके सामने

१. प्यारेलाह नैयरके “व्हाय द विदडॉअल” शीर्षक लेखसे उद्धृत। शिष्टमण्डल गांधीजी से सेगोंवमें मिला था और जो-कुछ यहाँ दिया गया है, वह लेखके अनुसार बातचीतका सार है।

इससे बहुत बड़ा सवाल पड़ा हुआ है। बड़ी बातमें छोटी बात तो अपने-आप आ ही जाती है। दीवानके हटा दिये जानेसे तो आपको उत्तरदायी शासन मिलनेवाला है नहीं। ऐसी हालतमें तो कोई चतुर दीवान यह भी कर सकता है कि कुछ समयके लिए अपनी इच्छासे हट जाये और तूफानके गुजर जाने तक खुद पृष्ठभूमिमें ही रहकर अपने एवजमें रखे गये किसी दीवानके माध्यमसे आन्दोलनको कुचल देनेका प्रयत्न करे। ऐसी बातें पहले भी हुई हैं और आगे भी होंगी। इसके विपरीत उत्तरदायी सरकारमें जनेच्छाके अनुसार दीवान वगैरहको हटानेकी सत्ता भी शामिल है। इसलिए आप अपने आरोपमें रंच-मात्र भी कमी किये बिना यह कह सकते हैं कि आप इनकी सत्यता सिद्ध करने आदिमें अपनी शक्ति नष्ट नहीं करना चाहते। आपके सामने दो रास्ते हैं और दोनों सर्वथा उचित हैं। अब इनमें से किसी एकको आपको चुनना है। अपने यहाँके लोगोंके मनकी वृत्तिको आप ही ज्यादा अच्छी तरह जानते होंगे। हो सकता है कि वह ऐसी हो कि दीवानके हटाये जानेका आन्दोलन चलाकर ही इस संघर्षको सबसे अच्छी तरह आगे बढ़ाया जा सकता। लेकिन, जहाँ तक खुद मेरी बात है, स्थितिपर सब तरहसे विचार करनेपर मेरा मन तो यही कहनेको होता है कि यह कड़वा घूँट पीकर आपको अपनी पूरी शक्ति इस प्रयत्नमें लगानी चाहिए कि सत्ताकी बागडोर आपके हाथोंमें आ जाये।

लेकिन इन आरोपोंके बारेमें आप चाहे जो तय करें, मैं यह सलाह जरूर दूँगा कि अभी तो आप सविनय अवज्ञा फिरसे आरम्भ न कीजिए। पहले आपको अपना घर-द्वार ठीक-ठाक कर लेना चाहिए। अगर आपके मनमें विशुद्ध अहिंसाका विचार होगा तो आप ऐसा नहीं कहेंगे कि “हमें अवसरका लाभ उठाना चाहिए और आज जबकि जनशक्तिमें ऐसा उफान आया हुआ है, हमें अपनी उपलब्धियोंको स्थायी बना लेना चाहिए।” जो शक्ति पैदा हुई है उसे यदि आप विवेकशून्य होकर ऐसी ही बातोंमें नष्ट कर देंगे तो आप सत्ता प्राप्त नहीं कर पायेंगे। यह रास्ता खतरनाक है। यदि आप इस रास्तेपर चलेंगे तो वास्तवमें उन राजनीतिक षड्यंत्र-कारियोंका ही मार्ग प्रशस्त करेंगे, जो हो सकता है स्थितिसे लाभ उठाकर अपना उल्लू सीधा करने लगें। इसलिए मेरी तो सलाह है कि आप धीरे-धीरे आगे बढ़ें और इस क्रममें सभी उलझे-बिखरे सूत्रोंको अपने हाथोंमें समेटते जायें। रचनात्मक कार्य और अहिंसाका प्रशिक्षण लेकर आप अपने-आपको एक सुसंगठित और अनुशासित समुदाय बनायें। अब त्रावणकोरके अन्दर और बाहर लोकमतको सही ढंगसे तैयार किये बिना एक भी कदम आगे बढ़नेकी कोशिश करना आपके लिए मुनासिब नहीं होगा।

हो सकता है, ऊपरसे देखनेमें रचनात्मक कार्य और अहिंसाके बीच कोई सम्बन्ध नजर न आये; लेकिन यदि रचनात्मक कार्य अहिंसात्मक कार्यक्रमके अंगके रूपमें हाथमें लिया जाता है तो ऐसा कोई आन्तरिक सूत्र जरूर है जो इन दोनोंको जोड़ता है। उदाहरणके लिए, राष्ट्रीय झण्डेकी परिकल्पना एकता, शुद्धता और अहिंसाके प्रतीकके रूपमें की गई। इसे जो एक विशेष महत्व और अर्थ प्राप्त है वह, हमने अपने अहिंसात्मक कार्यक्रममें इसे जो स्थान दिया है, उसकी बदौलत ही प्राप्त है। अपने-

आपमें तो इसमें कोई खूबी नहीं है। इसलिए अपने रचनात्मक कार्यक्रमको क्रियान्वित करते समय आपको अपने मनमें अहिंसाका खयाल बराबर बनाये रखना चाहिए।

फिर, मैं यह भी कहूँगा कि विद्यार्थी तो इस संघर्षके सविनय अवज्ञा वाले हिस्सेसे अलग ही रहें और उनके बीच कोई प्रचार नहीं किया जाना चाहिए। स्कूलके विद्यार्थियोंसे ऐसा काम करनेको कहना उचित नहीं है। यह दुर्बलताकी निशानी है। यह तो अपने माता-पिताके लिए बच्चोंसे कष्ट सहन करनेको कहने-जैसा है।

लेकिन विद्यार्थी चरखा चलाने और रचनात्मक कार्यक्रमके अन्तर्गत आनेवाले दूसरे कार्योंमें निपुणता प्राप्त करके इस संघर्षमें भाग ले सकते हैं और उन्हें लेना भी चाहिए। ठीक यही काम आज चीनी विद्यार्थी कर रहे हैं, जबकि उनका देश जापानसे लोहा ले रहा है। चीनी विद्यार्थी अपने नव-शिक्षण कार्यक्रमके द्वारा चीनी संस्कृतिके मूल तत्वोंकी रक्षा करनेमें सन्नद्ध हैं। वे एक ऐसी राष्ट्रीय भावना तैयार करनेमें मदद दे रहे हैं जो सदा अपराजेय रहेगी, चाहे लड़ाईके मैदानमें चीनियोंको जय-पराजय जो भी मिले।

ब्रिटिश भारतके सत्याग्रह-संघर्षके दो पहलू थे — सरकारके साथ अहिंसात्मक असहयोग और लोगोंमें पारस्परिक सहयोग। इन दोनों पहलुओंको सदा ध्यानमें रखना चाहिए। जो रचनात्मक कार्यक्रम मैंने आपके सामने रखा है, उसके लिए यह जरूरी है कि सभी वर्गोंके लोगोंमें आपसमें पूर्ण सहयोग हो। इसलिए आप पुलियों और परियोंके बीच जाकर उनसे भाईचारा कायम करें और उन्हें देश-भाई और बराबरके लोग मानते हुए उनसे अनुरोध करें कि वे ब्राह्मण, इजवा, ईसाई तथा अन्य लोगोंके कंधेसे-कंधा भिड़ाकर इस पवित्र संघर्षमें अपना यथेष्ट योग देनेके लिए आगे आयें। आप सबको एक होकर काम करना है। यदि आप एक भी वर्ग या समुदायको इस संघर्षसे बाहर छोड़ेंगे या उसको नाराज करेंगे, तो निश्चय ही उससे आपका तेज नष्ट होगा और आपके संघर्षको हानि पहुँचेगी।

फिर आता है मद्य-निषेधका काम। अभी आप धरना तो नहीं दें, लेकिन शराबी लोगोंके घरोंमें जाकर उन्हें समझायें-बुझायें अवश्य। यदि इसका कोई स्पष्ट परिणाम तत्काल सामने न आये तो भी इससे आपके संघर्षको एक नैतिक आधार प्राप्त होगा और उससे अधिक शक्ति तथा गति आयेगी।

त्रावणकोरके स्त्री-पुरुष दोनोंकी आदतें कितनी सादी हैं। वे सफेद कपड़े पहनते हैं और वहाँ सर्दी-नमी इतनी नहीं पड़ती कि उससे बचावके लिए उन्हें ज्यादा कपड़े की जरूरत हो। अपनी जरूरतकी पूरी खादी वे आसानीसे तैयार कर सकते हैं। त्रावणकोरको बाहरसे गज-भर भी कपड़ा मँगानेकी जरूरत नहीं है, बल्कि उसे तो खादी मँगानेकी भी जरूरत नहीं है। इसका मतलब यह हुआ कि एक-एक चरखा तो सभी घरोंमें होना चाहिए।

और खादीका सम्बन्ध मुक्तिसे जोड़ना चाहिए। जब तक आप कातते रहें आप अपनी जरूरतोंकी नहीं, बल्कि राष्ट्रीयकी जरूरतोंकी ही सोचें। आप मनमें यह कहते रहें, 'मैं तो अपने पूरे राष्ट्रको कपड़ा देना चाहता हूँ, क्योंकि वह नंगा

है और यह काम मुझे अहिंसक ढंगसे करना है।' हर तार निकालनेके साथ आप अपने मनमें यह खयाल करें कि हम तो स्वराज्यके तार निकाल रहे हैं। जरा अपने मनकी आँखोंके सामने इसी भावसे इस कार्यमें एकसाथ लीन लाखों लोगोंकी तसवीर लाकर तो देखिए। क्या आपकी कल्पनाकी आँखें नहीं देख रही हैं कि स्वराज्य आपके दरवाजेपर दस्तक दे रहा है?

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २८-१-१९३९

१५१. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव, वर्धा

१६ नवम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

तुम ऐसा क्यों कहती हो कि महादेवके तुम्हारे यहाँसे चले आनेके बाद तुम्हें मुझे पत्र नहीं लिखना होगा (मैं समझता हूँ तुम्हारा मतलब इतने नियमित रूपसे लिखनेसे है)? अगर तुम्हारे पास समय हो तो मैं तो बेशक यह चाहता हूँ कि तुम मुझे नियमित रूपसे लिखा करो। हो सकता है, मैं तुम्हें इस प्रकार न लिख सकूँ। किन्तु यह छूट तो तुम मुझे बराबर देती रही हो।

मुझे उम्मीद है कि उसके चले आनेके बाद तुम्हें एक तरहसे थोड़ा आराम तो मिलेगा ही। उसका वहाँ रहना तुम्हारे लिए प्रसन्नताका विषय तो जरूर था, लेकिन इसमें भी कोई शक नहीं कि तुम्हें बराबर उसकी फिक्र करनी पड़ती थी और उसकी देख-भालमें काफी शक्ति भी खर्च करनी पड़ती थी।

ब्राह्मणकोरके शिष्टमण्डलको तो आज निबटा दिया। वे मुझे अच्छे लोग जान पड़े। दीवानके खिलाफ अपने आरोप वापस लेनेमें उन्हें वास्तवमें कठिनाई है। लेकिन उन्होंने मुझे अन्तिम रूपसे कोई उत्तर नहीं दिया है। वे सारा पक्षापक्ष अपनी कार्य-समितिके समक्ष रखेंगे और तब कोई अन्तिम निर्णय करेंगे। कितना अच्छा होता, अगर बातचीतके दौरान तुम भी उपस्थित रहती। मैंने उनको चार घंटे दिये। रामचन्द्रन अभी यहीं है।

सप्रेम,

जालिम

[पुनश्च:]

यह पत्र पहुँचने तक अगर महादेव वहीं हो तो उससे कहना कि हो सके तो वह एक-दो दिन भोपालमें लगाये।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८९०) से; सौजन्य: अमृत कौर। जी० एन० ७०४६ से भी।

१५२. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

सेगाँव

१६ नवम्बर, १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

आशा है, इस समुद्र-यात्रासे तुम्हें और इन्दुको भी लाभ हुआ होगा। मैं २० तारीखके आसपास तुम्हारे वर्धा आनेकी आशा कर रहा हूँ। लेकिन कहनेकी जरूरत नहीं कि उससे पहले भी तुम जितनी जल्दी चाहो, आ जाओ। यहाँ तुम्हें बड़ी कठिन समस्याओंके समाधानमें लगना होगा।

तुम दोनोंको प्यार।

बापू

[अंग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३८; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

१५३. राजकोटके ठाकुर साहबके लिए वक्तव्यका मसविदा'

[१९ नवम्बर, १९३८ के पूर्व]'

१. यह देखते हुए कि पिछले कुछ महीनोंमें हमारे लोगोंने, जिन्हें वे अपनी शिकायतें मानते हैं, उनके निवारणके लिए शोचनीय कष्ट सहे हैं और उनके बारेमें लोक-भावना बढ़ी है, तथा पूरी परिस्थितिपर परिषद् और श्री वल्लभभाई पटेलके साथ विचार-विमर्श करनेके बाद, हम यह समझ गये हैं कि वर्तमान संघर्ष और कष्ट तुरन्त खत्म होने चाहिए।

२. हमने दस सज्जनोंकी, जो हमारी रियासतके नागरिक या सेवक होने चाहिए, एक समिति नियुक्त करनेका फैसला किया है। उनमें से तीन रियासतके अधिकारी और सात हमारी रियासतके नागरिक होंगे, जिनके नाम बादमें घोषित किये जायेंगे। इस समितिका अध्यक्ष ठाकुर साहब द्वारा नियुक्त व्यक्ति होगा।

१. वल्लभभाई पटेलके साथ बातचीत करनेके बाद राजकोटके ठाकुर साहब धर्मेन्द्रसिंहने २६ दिसम्बरको इस मसविदेपर हस्ताक्षर किये थे।

२. देखिए “ पत्र : वल्लभभाई पटेलको”, पृ० १५२, जिसमें गांधीजी ने बताया है कि वक्तव्यका मसविदा उन्होंने तैयार किया था।

३. यह समिति, समुचित अन्वेषणके बाद, जनवरीके अन्त तक एक रिपोर्ट तैयार करेगी, जिसमें हमसे सुधारोंकी एक ऐसी योजनाकी सिफारिश की जायेगी जो, अधिराजके प्रति हमारे दायित्व और राजाके रूपमें हमारे परमाधिकारोंसे संगति रखते हुए, हमारी प्रजाको यथासम्भव अधिकसे-अधिक व्यापक अधिकार देगी।

४. हमारी यह इच्छा है कि हमारी निजी राशि अबसे नरेन्द्र मंडलके परिपत्रमें निर्धारित ढंगसे नियमित हो।

५. हम अपनी प्रजाको यह भी विश्वास दिलाना चाहते हैं कि पूर्वोक्त समिति हमारे आगे जो योजना रखेगी, हम उसपर विचार करने और उसे कार्यान्वित करनेका इरादा रखते हैं।

६. यह मान लिया गया है कि शान्ति और सद्भावनाकी पुनः स्थापनाके लिए, एक आवश्यक उपक्रमके रूपमें, सारा अवैधानिक आन्दोलन तुरन्त रुक जायेगा। इसलिए इसके द्वारा हम सभी राजनैतिक बन्धियोंको पूरी माफी देते हैं और उन्हें फौरन रिहा करने, तमाम जुमने खत्म करने और सभी दमनकारी कार्रवाइयाँ वापस लेनेका आदेश देते हैं।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-२-१९३९

१५४. सेलम जिलेमें मद्य-निषेध

अन्नामलाई विश्वविद्यालयके सिंडीकेटने श्री सी० जगन्नाथचारीको प्रोफेसर बी० बी० नारायणस्वामी नायडूके मार्ग-दर्शन और निर्देशनमें सेलम जिलेमें मद्य-निषेधकी समस्याका अध्ययन करनेका काम सौंपा था। इस अध्ययनके आधारपर तैयार की गई रिपोर्टका सार मुझे भी भेजा गया है। नीचे उसके कुछ अंश दे रहा हूँ।^१

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १९-११-१९३८

१५५. तार : अमृत कौरको

वर्धा

१९ नवम्बर, १९३८

राजकुमारी अमृत कौर

मैनरविला

शिमला वेस्ट

आशा है, उदासी दूर हो गई होगी और प्रसन्नता लौट आई होगी।
सप्रेम।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८९१) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन०
७०४७ से भी।

१५६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेगाँव, वर्धा

१९ नवम्बर, १९३८

भाई वल्लभभाई,

भाई अनन्तराय^१ और नानाभाईसे सलाह-मशविरा करके मैंने जो मसविदा^२ तैयार किया है उसे तुम देख लो। यदि यह तुम्हें उचित जान पड़े तो ठाकुर साहब इसके अनुसार चलें और सत्याग्रह बन्द कर दिया जाये। कमेटीके लिए सदस्योंके नाम भाई अनन्तरायके साथ बैठकर तय कर लो। उसमें जनताके प्रतिनिधियोंका बहुमत होना चाहिए। यदि इतना हो जाये तो मुझे लगता है कि हमें सन्तुष्ट हो जाना चाहिए। हालाँकि इसमें उत्तरदायी सरकारका नाम नहीं है किन्तु यह तो स्पष्टतः मेरे मसविदेमें आ ही जाती है।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल

पुरुषोत्तम बिल्डिंग

अपिरा हाउसके सामने, बम्बई-४

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २२७-८

१. अनन्तराय पट्टणी, भावनगरके दीवान।

२. देखिए “ राजकोटके ठाकुर साहबके लिए वक्तव्यका मसविदा”, पृ० १५०-१।

१५७. यहूदी लोग

मुझे ऐसे बहुत-से पत्र प्राप्त हुए हैं जिनमें मुझसे फिलस्तीनकी अरब-यहूदी समस्या और जर्मनीमें यहूदियोंपर किये जा रहे अत्याचारके सम्बन्धमें अपने विचार प्रकाशित करनेको कहा गया है। सो अत्यन्त कठिन प्रश्नपर मैं अपने विचार तो व्यक्त कर रहा हूँ, लेकिन झिझकते हुए ही।

यहूदियोंसे मुझे पूरी सहानुभूति है। अपने दक्षिण आफ्रिका प्रवासकालमें मैंने उन्हें निकटसे जाना है। उनमें से कुछ तो मेरे जीवन-भरके साथी बन गये हैं। इन मित्रोंसे मुझे उनपर युगोंसे होते आ रहे अत्याचारोंके बारेमें काफी-कुछ मालूम हुआ है। वे ईसाई-समाजके अस्पृश्य माने जाते रहे हैं। उनके प्रति ईसाइयोंके व्यवहार और अस्पृश्योंके प्रति हिन्दुओंके व्यवहारमें बहुत समानता है। दोनों ही समुदायोंके साथ किये जानेवाले अमानवीय व्यवहारका औचित्य सिद्ध करनेके लिए धर्मकी दुहाई दी गई है। इसलिए यहूदियोंके साथ अपनी मैत्रीकी बातको अलग रखूँ तो भी उनके प्रति मेरे मनमें सहानुभूति होनेके व्यापकतर कारण मौजूद हैं।

लेकिन मेरी सहानुभूति इस बातकी ओरसे मेरी आँखें बन्द नहीं कर सकती कि न्यायके तकाजे क्या हैं। यहूदियोंके लिए एक अलग देशकी माँग मुझे कोई खास नहीं जँचती। इस माँगका समर्थन 'बाइबिल' के हवालेसे और यहूदियोंकी फिलस्तीन लौटने की सतत और तीव्र लालसाकी चर्चा करके किया जाता है। लेकिन संसारकी अन्य अनेक जातियोंकी तरह वे भी उसी देशको अपना देश और अपना घर क्यों नहीं बना लेते जहाँ उनका जन्म हुआ और जहाँ वे जीविकोपार्जन करते हैं?

फिलस्तीन अरबोंका है — ठीक उसी तरह जिस तरह इंग्लैंड अंग्रेजोंका और फ्रान्स फ्रान्सीसियोंका है। यहूदियोंको अरबोंके सिर थोप देना गलत और अमानवीय कार्य है। आज फिलस्तीनमें जो-कुछ हो रहा है वह नैतिक आचरणके किसी भी नियमके अनुसार उचित नहीं साबित किया जा सकता। [राष्ट्र संघ द्वारा दिये गये] शासनाधिकारका पिछले युद्धके परिणामके अतिरिक्त और कोई आधार, कोई औचित्य नहीं है। यहूदियोंके वतनके रूपमें फिलस्तीन उन्हें पूर्णतः या अंशतः वापस मिल जाये, इसके लिए स्वाभिमानो अरबोंको तबाह करना निश्चय ही मानवताके विरुद्ध अपराध होगा।

ज्यादा अच्छा रास्ता तो यह होगा कि यहूदी लोग जहाँ भी जन्म लें और पलें-बढ़ें वहाँ उनके साथ न्यायोचित व्यवहारपर आग्रह रखा जाये। जिस अर्थमें फ्रान्समें जन्मे ईसाई फ्रान्सीसी हैं, बिल्कुल उसी अर्थमें वहाँ जन्मे यहूदी भी फ्रान्सीसी हैं। यदि यहूदियोंका फिलस्तीनके अलावा अपना कोई वतन नहीं है तो क्या वे यह पसन्द करेंगे कि वे दुनियाके जिस अन्य हिस्सोंमें बसे हों वहाँसे उन्हें उखाड़कर फिलस्तीनमें

ही जा बसनेको मजबूर किया जाये? या कि वे दोहरा वतन चाहते हैं, ताकि अपनी इच्छानुसार वे चाहे जहाँ जाकर बस सकें? अलग वतनको इसी माँगने जर्मनोंको जर्मनीसे यहूदियोंको निकाल बाहर करनेका एक बहाना दे दिया है।

लेकिन जर्मनीमें यहूदियोंपर जो अत्याचार किया जा रहा है वह तो इतिहासमें बेमिसाल जान पड़ता है। आज हिटलर जैसे पागल बन गये जान पड़ते हैं, वैसा पागलपन तो प्राचीन कालके आततायियोंने भी नहीं दिखाया था। और वे यह सब धार्मिक जनूनसे कर रहे हैं। कारण, वे एक नये धर्मका प्रतिपादन कर रहे हैं—वर्जनशील और उग्र राष्ट्रीयताके धर्मका, जिसके नामपर किया जानेवाला हर दानवी कृत्य ऐसा परम मानवीय कृत्य हो जाता है जिससे कर्ताके इहलोक और परलोक दोनोंके सुघरनेका विश्वास दिलाया जाता है। एक सिरफिरे किन्तु दुस्साहसी नौजवानके अपराधके लिए अविश्वसनीय खूँखारपनके साथ उसकी पूरी जातिको दण्डित किया जा रहा है। यदि मानवताके नामपर और मानवताके निमित्त सचमुच कोई युद्ध औचित्यपूर्ण हो सकता है तो जर्मनीको एक सम्पूर्ण जातिको मनमाने ढंगसे तबाह करनेसे रोकनेके लिए उमके खिलाफ युद्ध छेड़ना सर्वथा उचित होगा। लेकिन, मैं युद्धमें विश्वास नहीं करता। इसलिए ऐसे किसी युद्धके पक्षापक्षपर विचार करना मेरे विचार-क्षितिजसे या मेरे क्षेत्रसे बाहरकी चीज है।

लेकिन यदि यहूदियोंके खिलाफ किये जा रहे ऐसे घोर अपराधके कारण भी जर्मनीके विरुद्ध युद्ध छेड़ना उचित नहीं होगा तो उसके साथ कोई सन्धि-सम्बन्ध करना भी निश्चय ही किसी भी प्रकार उचित नहीं हो सकता। न्याय और लोकतन्त्रका रक्षक होनेका दावा करनेवाले राष्ट्र और न्याय तथा लोकतन्त्रके जगविदित शत्रुके बीच कोई सन्धि कैसे हो सकती है? या कि हम यह मानें कि इंग्लैंड भी शस्त्र-सज्जित तानाशाही और तज्जनित समस्त बुराइयोंको गले लगाने जा रहा है?

जर्मनी दुनियाको यह दिखा रहा है कि शुद्ध हिंसा—ऐसी हिंसा जो पाखण्ड या अपनी दुर्बलताको छिपानेके लिए मानवताको झूठी दुहाई देनेकी प्रवृत्तिसे मुक्त हो—कैसे-कैसे कमाल कर सकती है। साथ ही वह हमें यह भी दिखा रहा है कि अपने नग्न रूपमें हिंसा कैसी घृणित, कितनी भयंकर और कैसी विकराल है।

क्या यहूदी लोग इस संगठित और निर्लज्जतापूर्ण अत्याचारका मुकाबला कर सकते हैं? क्या कोई ऐसा रास्ता है जिसे अपनाकर वे अपने आत्मसम्मानकी रक्षा कर सकें और असहाय, उपेक्षित और अकेला महसूस न करें। मेरा निवेदन है, हाँ, ऐसा रास्ता है। जिसकी ईश्वरमें आस्था है वह असहाय या अकेला क्यों महसूस करे? तत्त्वतः देखा जाये तब तो ईश्वर एक ही है, वह अद्वितीय और वर्णनातीत है, किन्तु विभिन्न धर्मोंमें उसकी जो कल्पना की गई है उस दृष्टिसे यहूदियोंका ईश्वर जेहोवा ईसाइयों, मुसलमानों या हिन्दुओंके ईश्वरसे अधिक वैयक्तिक है। चूँकि यहूदी ईश्वरमें वैयक्तिकता का आरोप करते हैं और मानते हैं कि वह उनके प्रत्येक कर्मका नियामक है, इसलिए उन्हें असहाय तो नहीं महसूस करना चाहिए। यदि मैं यहूदी होता और मेरा जन्म जर्मनीमें हुआ होता तथा वहीं जीविकोपार्जन कर रहा होता

तो जर्मनीको अपना बतन कहनेका जितना दावा जर्मन जातिका कोई बड़े-से-बड़ा आदमी कर सकता है उतना ही दावा मैं भी करता और अत्याचारियोंसे कहता कि ठीक है, तुम मुझे गोलीसे उड़ाना चाहो तो उड़ा दो, काल-कोठरीमें डालना चाहो तो डाल दो; मैं सब-कुछ बर्दाश्त कर लेता लेकिन जर्मनी छोड़नेको या भेदभावपूर्ण व्यवहारको सिर झुकाकर स्वीकार करनेको तैयार न होता। और यह कदम उठानेके लिए मैं उस दिनकी प्रतीक्षा नहीं करता रहता जब शेष यहूदी भी मेरे साथ सत्याग्रह करनेको तैयार होंगे, बल्कि इस विश्वासके साथ अपने मार्गपर आगे बढ़ चलता कि अन्तमें सभी मेरा अनुकरण करेंगे ही। यदि एक या बहुत-से यहूदी इस उपायको अपना लें तो इससे उस एक या उन बहुत-से यहूदियोंकी स्थिति कमसे-कम आजकी अपेक्षा अधिक बुरी तो नहीं हो जायेगी। और खुशी-खुशी कष्ट सहन करनेमें उन्हें एक ऐसी आन्तरिक शक्ति और आनन्द प्राप्त होगा जो उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए जर्मनीसे बाहरके देशों द्वारा पास किये गये सैकड़ों प्रस्ताव भी उन्हें नहीं दे सकते। सच तो यह है कि यदि ब्रिटेन, फ्रान्स और अमेरिका जर्मनीके खिलाफ युद्धका आह्वान करें तो उससे भी यहूदियोंको उस आन्तरिक शक्ति और आन्तरिक आनन्दकी प्राप्ति नहीं हो सकती। दूसरी ओर युद्धके इस आह्वानकी पहली प्रतिक्रियाके रूपमें हिटलर अपनी योजनाबद्ध हिंसाको यहूदियोंके कत्लेआमका रूप दे सकते हैं। लेकिन अगर यहूदियोंके मानसको खुशी-खुशी कष्ट सहनेके लिए तैयार किया जा सके तो जिस कत्लेआमकी मैंने कल्पना की है उसे भी जेहोवा द्वारा यहूदी जातिके लिए, अत्याचारीको ही निमित्त बनाकर, खोला गया मक्ति का द्वार मानकर भक्तवत्सल प्रभुकी महान कृपाके रूपमें उल्लासपूर्वक स्वीकार किया जा सकता है। ईश्वरसे डरनेवालेको मृत्युका भय नहीं होता। उसके लिए तो मृत्यु जागरणके बाद आनेवाली वह सुदीर्घ निद्रा है जो उसे और भी ताजगी और स्फूर्ति देगी।

यहाँ यह बतानेकी तो जरूरत ही नहीं है कि मेरे इस सुझावपर चलना चेकोंको अपेक्षा यहूदियोंके लिए बहुत आसान है। और दक्षिण आफ्रिकामें भारतीयों द्वारा चलाये गये सत्याग्रह-आन्दोलनके रूपमें उनके सामने एक बिल्कुल ठीक दृष्टान्त भी है। वहाँ भारतीयोंकी स्थिति ठीक वही थी जो जर्मनीमें यहूदियोंकी है। वहाँ उनपर जो अत्याचार किया जा रहा था उसपर भी धर्मका एक मुलम्मा चढ़ाया गया था। राष्ट्रपति क्रूगर कहा करते थे कि गोरे ईसाई ईश्वरके वरद पुत्र हैं और भारतीय उनके सामने तुच्छ लोग हैं, त्रिनका सर्जन गोरोंकी सेवा करनेके लिए ही किया गया है। ट्रान्सवालके संविधानकी एक बुनियादी धारा यह थी कि गोरों और एशियाइयों सहित अश्वेत लोगोंके बीच समानता नहीं बरती जानी चाहिए। भारतीयोंको भी यहूदी बस्तियों (घेटों) के ढंगकी अलग बस्तियोंमें सीमित कर रखा गया था जिन्हें “लोकेशन” कहते थे। उनपर थोपी गई दूसरी नियोग्यताएँ भी लगभग वैसे ही थीं जैसीकि जर्मनीमें यहूदियोंपर लगाई गई हैं। इन परिस्थितियोंमें उन मुट्ठी-भर भारतीयोंने सत्याग्रहका सहारा लिया और अपने इस

संघर्षमें उन्हें बाहरी दुनिया या भारत सरकारका भी कोई समर्थन प्राप्त नहीं था। उल्टे ब्रिटिश अधिकारियोंने सत्याग्रहियोंको वह कदम उठानेसे विमुख करनेकी कोशिश की।

लेकिन सच तो यह है कि जर्मनीके यहूदी दक्षिण आफ्रिकावासी भारतीयोंकी अपेक्षा बहुत अधिक शुभ संयोगोंमें सत्याग्रह कर सकते हैं। जर्मनीके यहूदी एक सुसंगठित और ऐक्यबद्ध समाजके रूपमें रह रहे हैं। वे दक्षिण आफ्रिकावासी भारतीयोंकी अपेक्षा बहुत अधिक प्रतिभाशाली हैं। इसके अलावा, विश्वका संगठित लोकमत उनके पीछे है। मेरा निश्चित विश्वास है कि यदि उन्हें अहिंसक संघर्षमें नेतृत्व प्रदान करनेके लिए उनमें से कोई साहसी और सही दृष्टिवाला आदमी आगे आये तो उनकी निराशाके शिशिरको क्षण-भरमें आशा के वसन्तमें परिवर्तित किया जा सकता है। और आज जिस चीजने कुत्सित मानव-आखेटका रूप धारण कर रखा है, उसीको जेहादो-प्रदत्त — ईश्वरकी दी हुई — कष्ट-सहनकी शक्तिसे युक्त निःशस्त्र स्त्री-पुरुषों द्वारा किये जानेवाले शान्त और संकल्पमय प्रतिरोधका रूप दिया जा सकता है। वह सच्चे अर्थोंमें धार्मिक प्रतिरोध होगा — मानवीय गुणोंसे वंचित नास्तिक लोगोंके उन्मादका सच्चा धार्मिक प्रतिरोध। इस तरह जर्मन यहूदी जर्मन गैर-यहूदियोंपर सच्ची विजय प्राप्त करेंगे, और वह इस रूपमें कि वे उन्हें मनुष्यकी गरिमाको पहचानना सिखायेंगे। इस प्रकार वे अपने जर्मन भाइयोंकी भी सच्ची सेवा कर पायेंगे और यह सिद्ध कर सकेंगे कि आज जो लोग — चाहे अनजाने में ही — जर्मन जातिके नामपर कलंक लगा रहे हैं उनकी तुलनामें वे कहीं अधिक सच्चे जर्मन हैं।

और अब दो शब्द फिलस्तीनके यहूदियोंके बारेमें। मुझे इस बातमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि जो रास्ता उन्होंने अपनाया है वह गलत है। 'बाइबिल' में वर्णित फिलस्तीन कोई भौगोलिक क्षेत्र नहीं है। वह तो उनके हृदयमें है। लेकिन अगर उन्हें भौगोलिक फिलस्तीनको अपना देश मानना ही है, उसे स्वदेशके रूपमें देखना ही है तो ब्रिटेनको संगीनोंकी छायामें उसमें प्रवेश करना तो उनका बिल्कुल गलत तरीका है। कोई धर्म-कार्य संगीनों और बमोंके बलपर कैसे किया जा सकता है। वे फिलस्तीनमें अरबोंको सद्भावनाके सहारे ही बस सकते हैं। उन्हें अरबोंका हृदय-परिवर्तन करनेकी कोशिश करनी चाहिए। जो ईश्वर यहूदियोंके हृदयका नियामक है वही अरबोंके हृदयका भी है। वे अरबोंके सामने सत्याग्रह करते हुए उन्हें इस बातके लिए आमन्त्रित कर सकते हैं कि हम तो तुम्हारे खिलाफ अपनी उँगली भी नहीं उठायेंगे, तुम चाहे जो करो — चाहो तो हमें गोलियोंसे उड़ा दो या उठाकर यहीं मुर्दा सागरमें फेंक दो। फिर वे देखेंगे कि उनकी इस धार्मिक आकांक्षाको विश्व-जनमतका कैसा समर्थन मिल रहा है। अरबोंको समझानेके हजार रास्ते हैं, बशर्ते कि यहूदी ब्रिटेनकी संगीनोंका सहारा लेना छोड़ दें। लेकिन अभी तो वे उन लोगोंको तबाह करनेमें ब्रिटेनके साक्षीदार बने हुए हैं जिन्होंने उनका कुछ नहीं बिगाड़ा है।

कोई यह नहीं समझे कि मैं अरबोंके जोर-जुल्मको सही ठहरानेकी कोशिश कर रहा हूँ। कितना अच्छा होता, अगर उन्होंने उस कार्रवाईका प्रतिरोध करनेके लिए, जिसे वे ठीक ही अपने देशपर बिना किसी कारण या औचित्यके किया गया हमला मानते हैं, अहिंसात्मक मार्ग अपनाया होता। लेकिन न्याय-अन्यायके सर्वमान्य नियमोंके अनुसार अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियोंसे जूझ रहे अरबोंके इस प्रतिरोधके खिलाफ कुछ नहीं कहा जा सकता।

तो यहूदी लोग, जो अपनेको ईश्वरकी विशेष प्रिय जातिके लोग बताते हैं घरतीपर अपने स्वत्वकी प्रतिष्ठाके लिए अहिंसाका मार्ग अपनाकर अपना यह दावा सिद्ध करें। हर देश — फिलस्तीन भी — उनका घर है, लेकिन आक्रमण और जोर-जबरदस्तीके बलपर नहीं बल्कि प्रेमपूर्ण सेवाके आधारपर। एक यहूदी मित्रने मुझे सेसिल राँथकी लिखी 'ज्यूइश कंट्रीब्यूशन टु सिविलिजेशन' नामकी एक पुस्तक भेजी है। इसमें साहित्य, कला, संगीत, नाटक, विज्ञान, चिकित्साशास्त्र, कृषि आदिके क्षेत्रोंमें यहूदियोंके योगदानका विवरण दिया गया है। यदि यहूदी लोग यह संकल्प कर लें कि उन्हें पश्चिमी दुनियाके ऐसे समाज-बहिष्कृत अछूत बनकर नहीं रहना है जिनसे या तो घृणा की जा सकती है या जिनपर तरस ही खाया जा सकता है, तो कोई भी उनके साथ वैसा व्यवहार नहीं कर सकता। जो तेजीसे पशु बनते जा रहे हैं और जिनको ईश्वरने त्याग दिया है, ऐसे मनुष्य बननेके बजाय, यदि वे सच्चे अर्थोंमें मनुष्य, ईश्वरके विशेष कृपापात्र मनुष्य बन जायें तो वे सबके स्नेह और सम्मानके भाजन हो सकते हैं। यदि वे चाहें तो विश्वको अपनी देनकी लम्बी सूचीमें अहिंसात्मक संघर्ष-रूपी यह सर्वोपरि देन भी जोड़ सकते हैं।

सेगाँव, २० नवम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २६-११-१९३८

१५८. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

२० नवम्बर, १९३८

चि० कान्ति,

तेरा पत्र मिल गया था। तुझे मेरा पत्र मिला होगा। तुझे लिखनेके बाद रामचन्द्रनसे मेरी बात हुई थी। मैं उन्हें मना नहीं सका। उनका कहना है कि स० ने जो-कुछ देखा उसमें कोई गलती अवश्य हुई लगती है और यह कि पा० से तेरे सम्बन्धोंके बारेमें भी ऐसा ही आरोप लगाया गया था। अन्तमें यह सिद्ध हुआ कि इसमें कुछ नहीं था। इसके बावजूद रा० का कहना है कि 'मैं पूरी तरह जाँच करूँगा।' किन्तु उन्होंने आगे कहा: "मान लो कि मेरी बहन का पतन हो तो क्या स० का कर्तव्य अपनी माँ को ठीक रास्तेपर लाना नहीं था? या उसे आपके पास दौड़े चले

आना चाहिए था ? जिसने उसे पाला-पोसा है, जिसने उसे लाड़-प्यार दिया है, जिससे बिछुडते ही जो रो पड़ती थी वह क्या अब हमारे लिए निकम्मी हो गई ? किन्तु यदि आप आदेश देंगे तो मैं स० को इतना कहनेके लिए आपके सामने अवश्य हाजिर करूँगा ।” ऐसी स्थितिमें मैं अधिक आग्रह कैसे कर सकता था ? अब तो स० को ही हिम्मत करनी होगी । उसे साहसपूर्वक पा० का दोष सिद्ध करना चाहिए । और फिर, वह स्वयं पा० को सुधारनेमें असमर्थ है यह बताकर उसे मेरे पास आनेका प्रयत्न करना चाहिए । पा० गलत रास्तेपर पड़ सकती है किन्तु बाकी सब लोग तो बुरे नहीं हो सकते । पा० को छोड़ देना तेरे लिए उचित नहीं है । तेरे प्रति उसका प्रेम कम नहीं हुआ है । और यदि कम हो गया हो तो सगाईकी बात सबको मालूम हो जानेके बाद क्या तू इस सम्बन्धको तोड़ नहीं सकता ? किन्तु यह बात तो वह सपने में भी नहीं सोचती । तुझे यह मानना चाहिए कि तू इस कुटुम्बका एक अंग बन गया है और इस मामलेमें और अधिक जाँच-पड़तालको गुंजाइश है । चाहे जो हो, किन्तु मैं चाहता हूँ कि यह मामला तेरा समय न ले और इससे तुझे परेशानी न हो । पा० चाहे जैसी क्यों न हो, किन्तु स० तो बिगड़नेवाली नहीं है । इतना ही काफी होगा कि वह अपने कर्तव्यका पालन करनेमें जुटी रहे । तू उसे लिख दे कि जितनी स्वच्छन्दतासे वह तुझे लिखती है उतनी ही स्वच्छन्दतासे मुझे लिखे । यदि उसे यह भय हो कि उसका पत्र कहीं कोई पढ़ न ले तो मैं उन्हें पढ़ते ही फाड़ दिया करूँगा, जैसाकि मैं रा० कु० के पत्रोंके बारेमें करता हूँ । उसके पत्र मुझे बिना खुले मिलते हैं और इसी प्रकार वे पत्र भी जिनपर ‘निजी’, ‘व्यक्तिगत’ या ऐसा ही कुछ लिखा रहता है । मैं यही चाहता हूँ कि स० की चिन्ता तुझे नहीं बल्कि मुझे करनी चाहिए । तेरी सगाईकी बात प्रगट हो गई इसे तू बुरा मानता है, किन्तु यह उचित नहीं ।

आशा है, तेरा स्वास्थ्य अच्छा होगा ।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

जवाहरलाल कल आ रहे हैं ।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३५४) से; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी ।

१५९. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

२१ नवम्बर, १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे पूरी उम्मीद है कि बम्बईमें तुम्हें मेरा पत्र^१ मिल गया होगा। मैं २ बजेसे पहले मौन नहीं ले सका। आशा है, तबतक तुम्हें थोड़ा चैन भी मिलेगा। बम्बईमें मेहनत भी तो खूब पड़ी होगी। आशा है, इन्दु स्वस्थ होगी।

सप्रेम,

बापू

[अंग्रेजीसे]

गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३८; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

१६०. पत्र : अमृत कौरको

२१ नवम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

कुछ ही मिनटमें जवाहरलाल यहाँ आनेवाले हैं। इस बीच ये चन्द पंक्तियाँ लिख डालता हूँ। तुम्हारे पत्रोंका स्वर अब भी उदासी-भरा होता है। तुम्हारे पत्र बड़े हों या छोटे, उन्हें पाकर हमेशा खुशी होती है और कामका ज्यादा बोझ होनेके बावजूद मैं उन्हें पढ़ ही लेता हूँ।

कमाल पर लिखे तुम्हारे लेखके^२ कुछ अंशोंमें मुझे संशोधन करना पड़ा। संशोधन तो देखोगी ही और आशा करता हूँ, तुम उनका बुरा नहीं मानोगी।

मीरा बुधवारको अपनी आँखोंका इलाज करवाने बम्बई जायेगी और वहाँसे सीमाप्रान्त। मैं समझता हूँ, उसका पहले वहीं जाना बेहतर रहेगा।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६५२) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६४६१ से भी।

१. देखिए “पत्र : जवाहरलाल नेहरूको”, पृ० १५०।

२. यह २६-११-१९३८ के हरिजन में “नोट्स” (“टिप्पणियाँ”) शीर्षकके अन्तर्गत “द लेट कमाल अतातुर्क” (“स्वर्गीय कमाल अतातुर्क”) उप-शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था।

१६१. पत्र : गिरधारीलालको

सेगाँव, वर्धा

२१ नवम्बर, १९३८

प्रिय लाला गिरधारीलाल,

अविश्वासका तो प्रश्न ही नहीं है।^१ हम सबोंका विचार है कि चूँकि आप अमृतसरसे लगातार बाहर रहते हैं इसलिए आप अपने पदके साथ न्याय नहीं कर सकते। कामका हर्ज होता है। लेकिन इससे पहले कि आपका त्यागपत्र बोर्डके सामने रखा जाये, आप आकर कैफियत दे सकते हैं। लेकिन वैसी हालतमें आपको आनेमें देर नहीं करनी चाहिए। जनवरीमें मैं सेगाँवमें नहीं होऊँगा। आप १५ दिसम्बरसे पहले आ सकें तो ज्यादा अच्छा होगा।

हृदयसे आपका,

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल।

१६२. प्रस्तावना : 'ब्रदरहुड ऑफ रिलिजन्स' की

सोफिया वाडियाके इन निबन्धोंपर सरसरी नजर डालनेसे ही पता चल जाता है कि जीवनके आधारभूत तत्त्वोंकी दृष्टिसे विश्वके सभी प्रमुख धर्मोंके बीच कितना साम्य है। हमारे सारे आपसी झगड़े तो निस्सार बातोंको लेकर ही हैं। यदि इस पुस्तकके विभिन्न धर्मावलम्बी पाठक दूसरोंके धर्मोंका अध्ययन उसी श्रद्धासे करें जिस श्रद्धाका परिचय इन निबन्धोंमें सोफिया वाडियाने दिया है तो माना जायेगा कि उनका परिश्रम कृतार्थ हुआ। विश्वके महान धर्मोंको समझने लायक उनका सामान्य ज्ञान प्राप्त करना और उनके प्रति मनमें आदर-भाव जगाना ईश्वर-ज्ञानकी आधार-शिला है।

मो० क० गांधी

सेगाँव, वर्धा, २३ नवम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

ब्रदरहुड ऑफ रिलिजन्स

१. देखिए खण्ड ६७, "पत्र : गिरधारीलालको", पृ० ४४८।

१६३. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

सेगाँव

२४ नवम्बर, १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पुर्जा मिला। मैं जानता था कि एक बार जब तुम काम शुरू कर दोगे तो अपने समयपर तुम्हारा बस नहीं रह जायेगा। इसलिए मुझे जितना मिलेगा, उतनेमें ही मैं सन्तोष मानूँगा।

साथमें गुरुदेवका एक पत्र भेज रहा हूँ, जो उन्होंने एक सन्देशवाहककी मार्फत भिजवाया है। मैंने जवाबमें लिखा है कि मेरी अपनी राय तो यह है कि अगर आपको बंगालको भ्रष्टाचारसे मुक्त करना है तो आपको अध्यक्षकी जिम्मेदारीसे छुटकारा पा लेना चाहिए। मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं है कि गुरुदेव या तो तुम्हें पत्र लिखेंगे या खुद तुमसे बातचीत करेंगे। तुम अपनी राय देना।

आशा है, यात्राका इन्दुपर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा होगा।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीसे : गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३८; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय। ए बंच ऑफ ओल्ड लेटर्स, पृ० २९८ से भी।

१६४. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव

२५ नवम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

दिनमें तुम्हें लिखनेकी सोची थी, लेकिन लिख नहीं सका। तुम्हें अपनी निद्रापर पूरा नियन्त्रण पाना है। तुम्हें रातमें अपने दिमागको सभी चिन्ताओंसे मुक्त कर लेनेकी कला सीखनी है। शम्मीके बारेमें कहीं तुम्हारी बातें मैं समझता हूँ। प्रभुसे यही प्रार्थना है कि सबकुछ जैसा चाहिए वैसा ही हो।

मैंने तुम्हें बताया था नहीं कि जनवरी महीना बारडोलीमें बितानेका कार्यक्रम है? तुम्हें तो बारडोली आना ही है। पूरा दिसम्बर यहीं बिताना है।

१६१

जवाहरलालसे सभी तरहके मसलोंपर अच्छी बातचीत हुई। लेकिन यहाँ उनका वर्णन नहीं कर सकता। मेरा अधिकांश समय मुलाकातियोंसे मिलनेमें ही बीतता है।

महादेव कोई खास ठीक नहीं है। फिलहाल तो यहीं रहेगा।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८९२) से; सौजन्य: अमृत कौर। जी० एन० ७०४८ से भी।

१६५. टिप्पणी : डॉ० एन० बी० खरेके नाम पत्रपर ^१

२५ नवम्बर, १९३८

इसकी पीठपर जो पत्र है उसके लेखकने स्पष्ट ही भूलसे इसे मेरे नाम भेज दिया और आपको मेरे लिए भेजा गया पत्र मिला होगा। बहरहाल इस गलतीके कारण ही मुझे पता चल सका कि आप बीमार थे। आशा है, यह पत्र मिलने तक आप पूरी तरह स्वस्थ हो गये होंगे।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, १-१२-१९३८

१६६. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

२५ नवम्बर, १९३८

चि० काका,

प्रेमाकी पुस्तककी^१ ११०० प्रतियोंको वापस लेकर उसका नया संस्करण निकालनेकी मुझे कोई आवश्यकता नजर नहीं आती। जब नया संस्करण निकालनेका समय आयेगा तब हम उसमें से कुछ अंश कम कर देनेके बारेमें सोच लेंगे। प्रेमाका तर्क मुझे उचित जान पड़ता है। मैं समझता हूँ कि इन ११०० प्रतियोंका क्या असर होता है, हम यह देखें।

चन्दन^३ अब जब चाहे तब दिल्ली जा सकती है। वह जितनी जल्दी जाये उतना ही अच्छा है। बालका पत्र रसपूर्ण है। बाल न्यासीके रूपमें भले ही कब्जा

१. कानपुरसे एक छात्रने डॉ० एन० बी० खरेको एक पत्र लिखा था, लेकिन गलतीसे उसे गांधीजी के पास भेज दिया था।

२. वात्सल्याची प्रसाददीक्षा; देखिए “पत्र : प्रेमाबहन कंठको”, पृ० १४५।

३. चन्दन पारेख, जो बादमें काकासाहबके पुत्र सतीशकी पत्नी बनी।

किये रहे। न्यासीके रूपमें उसे कुछ विशेष अधिकार भी दिये जा सकते हैं। यह बांछनीय है कि वह उत्तराधिकारीके रूपमें कुछ न रखे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

इसके साथका^१ पत्र बालको भेज देना वशतें कि वह तुम्हें उचित जान पड़े।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९७७) से।

१६७. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव, वर्धा

२६ नवम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

जब तक मैं तुमसे यह नहीं सुनता कि तुम्हें बिना किसी कठिनाईके अच्छी नींद आती है तब तक सन्तुष्ट होनेवाला नहीं हूँ।

तुम्हारे कहे मुताबिक इसे जालंधरके पतेपर भेज रहा हूँ।

बानाबासको लिखा तुम्हारा पत्र अच्छा है, लेकिन जल्दीमें लिखा हुआ है। वे चाहें तो हजारोंकी तादादमें कांग्रेसमें शामिल हो सकते हैं, लेकिन जिन अनेक प्रश्नोंका सम्बन्ध विशेष रूपसे उन्हींसे है उनपर विचार करने और उनका हल सोचनेके लिए वे अपना एक अलग संगठन ही क्यों नहीं बना लें। सामाजिक और धार्मिक उत्थानके लिए तो उन्हें एक संगठनकी जरूरत है ही। अगर वे ऐसा संगठन नहीं बनाते तो बहुत सम्भव है कि वे कांग्रेससे ऊब जायें, क्योंकि कांग्रेस उनके चतुर्दिक उत्थानमें कोई विशेष योग नहीं दे पायेगी। इसलिए मैं इस विषयपर 'हरिजन' में नहीं लिख रहा हूँ। मुझसे मिलनेपर इसपर चर्चा करना।

सप्रेम,

जालिम

[पुनश्च :]

काश, मुझे मालूम होता कि वह चोगा तुम्हारे लिए रखना है! खैर, उसे इन्दु पहन रही है, यह तो तुम्हें बुरा नहीं ही लगेगा।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८९३) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७०४९ से भी।

१६८. पत्र : मीराबहनको

सेगाँव

२६ नवम्बर, १९३८

चि० मीरा,

आशा है, तुम्हें मेरा कलवाला पत्र मिल गया होगा। यह तुम्हें केवल यह बतानेको लिख रहा हूँ कि अब जब तुम चली गई हो, तुम्हारी याद सबको आती रहती है। तुम्हारा कमरा तो बिलकुल भर ही गया है। महादेव कमसे-कम फिलहाल तो कहीं नहीं जा रहा है।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

रक्तचाप १६०/९८

श्री मीराबहन

मार्फत सेठ मथुरादास त्रिकमजी

७४, बालकेश्वर रोड

बम्बई

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४१५) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००१० से भी।

१६९. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

सेगाँव, वर्धा

२६ नवम्बर, १९३८

चि० कान्ति,

मैं अपने ढंगसे स० को बुलानेका प्रयास कर रहा हूँ।

जब तेरा डॉक्टरी पढ़नेका समय आयेगा तब तेरे अधिक खर्चके बारेमें मैं कुछ कर लूँगा।

मैं धर्मदेवजी का पत्र खोज रहा हूँ। यदि मिल गया तो मैं उत्तर दे दूँगा अन्यथा उसकी नकल मँगवा लूँगा।

१६४

अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखना। स्वास्थ्यको बनाये रखनेकी कला सीख लेना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

महादेव यहाँ पहुँच गये हैं। काम हाथमें लेनेमें कुछ समय लगेगा। फिलहाल वे सेगाँवमें ही हैं।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३५५) से; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी।

१७०. पत्र : आनन्द तो० हिगोरानीको

२६ नवम्बर, १९३८

चि० आनन्द,

मैंने पिताजीको तुमारा खत भेजा है और अच्छा खत लिखा है। वह पिघलेंगे। विद्या ठीक होगी।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे; सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार और आनन्द तो० हिगोरानी।

१७१. असहयोगी

कई उन कांग्रेसियोंके पत्र मेरे पास फाइलमें पड़े हैं जिन्होंने असहयोगके जमानेमें असहयोग किया था। उनमें से कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने अपनी सरकारी नौकरियोंको त्याग दिया था। उनमें से कुछ व्यक्ति अब नौकरियोंपर फिरसे बहाल किये जानेके लिए आन्दोलन कर रहे हैं। अपने समर्थनमें वे हवाला देते हैं कि मैंने असहयोगके लिए सरकारी नौकरों-सहित सारी जनताका आह्वान किया था। जहाँ तक मैं जानता हूँ, जिन सत्याग्रहियोंपर जुर्माने हुए थे, जिन रिश्तेदारोंने परिवारका पालनकर्ता खोया, जिन वकीलोंने वकालत त्यागी और दरिद्र बन गये, जिन छात्रोंने अपनी पढ़ाई त्यागी और उसके फलस्वरूप अपना भविष्य बर्बाद किया, ऐसे सब पीड़ितोंने अपनी पुनर्स्थापनाके लिए कोई आन्दोलन नहीं किया है। उनके विचारमें स्वेच्छापूर्वक भोगा हुआ कष्ट अपना पुरस्कार स्वयं है और उससे अधिक क्षतिपूर्तिकी कोई आवश्यकता नहीं।

यदि ये सब लोग कांग्रेसी मन्त्रियोंसे क्षतिपूर्तिकी माँग करें तो मन्त्रियोंकी तो वास्तवमें दयनीय स्थिति हो जायेगी और इन दावोंका हिसाब-किताब करनेके अलावा वे कोई काम ही नहीं कर सकेंगे। और इन दावोंकी अदायगीके लिए उन्हें धनकी

व्यवस्था भी करनी होगी, और यह रकम अवश्य ही कई करोड़ तक जा पहुँचेगी। इसके अतिरिक्त बर्खास्त किये गये सरकारी नौकरीके लिए, चाहे उन्होंने बाध्य होकर या स्वेच्छापूर्वक नौकरी छोड़ी हो, यह सिद्ध करना कठिन होगा कि दूसरे पीड़ित लोगोंकी स्थिति उनकी अपेक्षा कम कष्टकर है।

मेरे मतमें ये भूतपूर्व सरकारी नौकर वर्गके रूपमें सबसे कम भुक्तभोगी हैं। और यदि वे इतने सालों तक बेकार रहे हैं तो वे अब कुशल सरकारी नौकर नहीं बन सकते। कांग्रेसियोंके लिए सरकारी नौकरी आर्थिक स्थिति सुधारनेका साधन नहीं है; वह तो सेवा करनेका ही साधन होना चाहिए। अतएव केवल वे ही कांग्रेसी सरकारी नौकरियोंमें भर्ती हों जिन्हें बाहर अपेक्षाकृत अधिक पारिश्रमिक मिल सकता हो। जब उनकी सेवाओंकी आवश्यकता हो तभी उन्हें नौकरी दी जाये। उनके प्रति कांग्रेस सरकारके पक्षपात जैसी बात कभी न हो।

हिंसात्मक या अहिंसात्मक, किसी भी प्रकारके युद्धमें यदि पहलेसे ही सैनिकोंकी हर प्रकारसे सुरक्षा निश्चित कर ली गई हो तो युद्धका उत्तेजनापूर्ण आनन्द और उसकी भव्यता दोनों ही नहीं रहते। सच्चे सत्याग्रहीको भविष्यमें कुछ भी क्षति-पूर्तिकी आशा रखे बिना सब-कुछ गँवानेको तैयार रहना है। ज्यादासे-ज्यादा त्याग करनेमें ही उसकी खूबी है। सचमुच बात तो यह है कि यदि लोग जीवनमें अपना भविष्य सँवारनेके इरादेसे कांग्रेसमें आयेंगे तो समूचा कांग्रेसतन्त्र ही छिन्नभिन्न हो जायेगा। और यदि कांग्रेसी मन्त्रियोंसे लोगोंकी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ पूरी करनेकी अपेक्षा की जाये तो वे खुद बदनाम हो जायेंगे और अन्ततः कांग्रेसकी प्रतिष्ठाको भी हानि पहुँचायेंगे।

मैं पाठकोंसे आशा करता हूँ कि वे इस मामलेके और उन जमीनोंकी वापसीके मामलेके अन्तरको स्पष्ट समझ जायेंगे जिन्हें पिछली सरकारने प्रतिशोधकी भावनासे कौड़ीके मोल बेच दिया था। वहाँ जमीनें वापस करना सहज रूपसे सम्भव था और एक कर्तव्य था। वह तो विजेता द्वारा देशके एक छोटे-से विजित टुकड़ेके वापस किये जानेके समान था।

यदि फिरसे एक और सविनय अवज्ञा अभियानकी आवश्यकता उठ खड़ी हो तो सरकार लोगोंकी भूमिको बेचनेसे पहले पचास बार सोच-विचार करेगी और देशभक्ति-विहीन लोग देशभक्तोंकी मुसीबतका फायदा उठानेकी हिम्मत भी नहीं करेंगे।

सेगाँव, २७ नवम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३-१२-१९३८

१७२. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव

२७ नवम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

यह तो तुम्हें सिर्फ यह बतानेके लिए है कि तुम्हारा पत्र मिला और यहाँ सब कुशल-मंगल है। महादेवकी तबीयतमें सुधार होता दीखता है। काश, तुम अपने बारेमें भी यही कह पातीं !

लो, यह औषधका दल आ रहा है। जयरामदास भी आ पहुँचे हैं। वह बहुत बेहतर दिखते हैं।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८९४) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७०५० से भी।

१७३. पत्र : मीराबहनको

सेगाँव

२७^१ नवम्बर, १९३८

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे सब निर्देशोंके बारेमें देख लूँगा। आशा करता हूँ कि बिलकुल सही चदमा लग जायेगा और अगले कुछ सालों तक तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी।

गोविन्द^१ भटक जायेगा। काकाने उसे एक काम दिया था, किन्तु उसने अपनी शकल भी नहीं दिखाई है। यहाँ एक मिशनने अपना काम शुरू किया है और गोविन्दने उसको अपनी सेवाएँ अर्पित की हैं। सुनता हूँ कि अब वह अपने भावी मालिकोंको सन्तुष्ट करनेके लिए नागपुर गया है। वह अपने देशवासियोंका और सेगाँवका शत्रु सिद्ध हो सकता है। मैं नहीं चाहता कि तुम उसे लेकर चिन्ता करो। मैं उसे

१. साधन-सूत्रमें लगता है कि '२८' को '२७' बनाया गया है।

२. एक आश्रमवासी जो मीराबहनके साथ काम करता था।

समझाकर उधरसे खींचनेकी कोशिश करूँगा, किन्तु गरीबोंके लिए पैसेका मोह बहुत बड़ा प्रलोभन है। और यहाँ सब-कुछ ठीक-ठाक चल रहा है। महादेव ठीक है। बेरियर और उसकी बहन आज यहाँ आये हैं। दोपहरका समय वे यहीं बितायेंगे।

आजकल मैं शाम ७ बजेसे लेकर दूसरे दिन दोपहर २ बजे तक मौन रखता हूँ। अतः बातचीतका समय सिर्फ पाँच घंटे रहता है, किन्तु इन घंटोंमें बातचीत अनवरत चलती रहती है। किन्तु यदि मुझे पूरा लाभ उठाना है तो उसे भी छोड़ना पड़ेगा।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४१६) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००११ से भी।

१७४. देशी राज्य और प्रजा

कई देशी राज्योंमें लगभग एक ही समय होनेवाली जनजागृति राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्रामकी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना है। यह सोचना बिल्कुल गलत होगा कि ऐसी जागृति एक ही व्यक्ति या कुछ व्यक्तियोंके दल या किसी संस्थाके भड़काने पर हो सकती है। यह तो सम्भव है कि कांग्रेसके हरिपुरा-प्रस्तावने देशी राज्योंकी जनताका उत्साह जगाया और उन्हें पहली बार यह भान हुआ कि उनका उद्धार उनके अपने उद्यमपर ही अवलम्बित है। किन्तु इस जागृतिको लानेमें सबसे बड़ा हाथ समयकी माँगका है। आशा की जाती है कि राजा लोग और उनके सलाहकार इसे पहचान लेंगे और जनताकी उचित आकांक्षाओंको पूरा करेंगे। दो ही रास्ते हैं। या तो रियासतोंके अस्तित्वका ही अन्त हो जाये, और या फिर राजा लोग जनताको ही शासन-व्यवस्थाकी जिम्मेदारी सौंप दें और स्वयं जनताकी ओरसे न्यासी बनकर शासन चलायें और इसके लिए मुनासिब मेहनताना कमायें। इन दो स्थितियोंके बीच कोई मध्यम मार्ग नहीं है।

अतः मैं आशा करता हूँ कि इस अफवाहमें कोई सचाई नहीं है कि हाल ही में अर्ल विटरटनने राजाओंकी अपनी जनताको उत्तरदायी सरकार सौंपनेकी क्षमताके सम्बन्धमें जिस नीतिका निरूपण किया था उसमें ब्रिटिश सरकार, कुछ राजाओं या उनके दीवानोंके कहनेपर, शायद कुछ परिवर्तनकी घोषणा करनेवाली है। यदि उनमें से कुछ लोगोंने ब्रिटिश सरकारसे नीति पलटनेको कहा है तो निस्सन्देह उन्होंने स्वयंको हानि पहुँचाई है। और यदि ब्रिटिश सरकार उत्तकी इस गलत इच्छाको स्वीकार कर लेगी तो वह शीघ्र ही एक ऐसी घोर संकटकी स्थिति पैदा कर देगी जिसकी भीषणताका पहलेसे अन्दाज लगाना कठिन है। मुझे इस बातपर विश्वास करनेसे इन्कार है कि ब्रिटिश सरकार ऐसी भयंकर भूल कर सकती है। अर्ल विटरटनकी

घोषणाने तो पुरानी पद्धतिका केवल अनुमोदन ही किया था। देशी राज्यों द्वारा अपनी जनताको अधिक अधिकार दिये जानेपर, चाहे वे अधिकार कितने ही व्यापक क्यों न हों, ब्रिटिश सरकारने आज तक कभी हस्तक्षेप नहीं किया।

मैं एक कदम और आगे बढ़कर कहूँगा कि सर्वोपरि सत्ता होनेके नाते ब्रिटिश सरकार राजाओंकी बाहरी या अन्दरूनी क्षतिसे रक्षा करनेको बाध्य तो अवश्य है, किन्तु वह उतनी ही या उससे भी स्पष्टतर रूपसे यह देखनेके लिए बाध्य है कि राजा लोग प्रजापर न्यायोचित शासन कर रहे हैं। इसी कारण जब भी वह किसी राज्यको पुलिस या सेनाकी मदद पहुँचाती है तब यह निश्चित कर लेना उसका परम कर्तव्य है कि वास्तवमें ही वहाँ ऐसी आपत्कालीन स्थिति है जिससे सहायताकी माँग उचित ठहरती है और यह देखना भी उसका कर्तव्य है कि सेना या पुलिसका उपयोग उचित मर्यादाके साथ ही होगा। डेक्कनालसे मेरे पास कई विवरण आये हैं जिनमें कहा गया है कि सर्वोपरि सरकार द्वारा भेजी गई पुलिसकी छत्रच्छायामें रहकर राज्यके लठैतोंने अमानवीय क्रूरताका वर्ताव किया है। कुछ अकथनीय क्रूरताओंके विषयमें मैंने पुष्टिके लिए प्रमाण माँगे थे और उन विवरणोंका विश्वास करने योग्य काफी प्रमाण मेरे पास आ गये हैं।

वास्तवमें तो सवाल यह उठता है कि क्या प्रान्तोंके उत्तरदायी मन्त्रियोंका अपने प्रान्तके अन्तर्गत आनेवाले देशी राज्योंकी प्रजाके प्रति कोई नैतिक कर्तव्य नहीं है? संविधानके अनुसार मन्त्रियोंका उनपर कोई अधिकार नहीं है। गवर्नर वाइसराय-का एजेंट है जोकि स्वयं परम सत्ताका प्रतिनिधित्व करता है। किन्तु देशी राज्योंमें क्या हो रहा है उसके प्रति अवश्य ही स्वायत्तशासी प्रान्तोंके मन्त्रियोंका कुछ नैतिक उत्तरदायित्व तो है ही। जब तक राज्य और वहाँकी प्रजा, दोनों सन्तुष्ट हैं तब तक मन्त्रियोंको कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए। किन्तु मान लीजिए कि किसी देशी राज्यमें कोई भयंकर महामारी फैली हो और लापरवाही करने पर अमुक प्रान्तके बीच स्थित उस देशी राज्यकी महामारी प्रान्तमें भी आसानीसे फैल जानेकी सम्भावना हो, क्या तब भी उन्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिए? और डेक्कनालमें जो नैतिक महामारी फैली दिखती है, क्या उसके प्रति भी उन्हें कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए?

मुझे पता चला है कि अत्याचार पीड़ित लोग उड़ीसाके ब्रिटिश क्षेत्रमें आश्रय ले रहे हैं। क्या मन्त्रिगण उन्हें आश्रय देनेसे इन्कार कर सकते हैं? और वे लोग कितनोंका जिम्मा उठा सकते हैं? इन राज्योंमें जो-कुछ भी होता है उसका समूचे प्रान्तपर अच्छा या बुरा, कुछ-न-कुछ असर जरूर होता है। अतः मेरा विश्वास है कि मन्त्रियोंके कन्धोंपर भारी जिम्मेदारी होनेके कारण उनका नैतिक कर्तव्य हो जाता है कि प्रान्तकी आन्तरिक शान्ति और मर्यादाकी खातिर वे एक स्पष्ट सीमामें रहते हुए अपनी आवाज उठायें। जिस समय देशी राज्योंकी, वे राज्य जो परम सत्ताकी अपनी मनमानी सृष्टि हैं, जनताको कुचलकर धूलमें मिलाया जा रहा हो, जैसीकि डेक्कनालकी जनताकी दशा बताई जाती है, उस समय मन्त्रिगण उदासीन भावसे तमाशा तो नहीं देख सकते।

अखबारोंमें पढ़ते हैं कि ढेंकनालकी प्रजाको कुछ रियायतें दी गई हैं। इस रिपोर्टकी सचाईके विषयमें मैं नहीं जानता, और यह भी नहीं जानता कि ढेंकनालकी प्रजा जिस उद्देश्यके लिए लड़ रही है और कष्ट भोग रही है, इन रियायतोंसे उस उद्देश्यकी पूर्ति होती है या नहीं। खैर, जिस मुद्देको मैंने उठाया है उसके सम्बन्धमें यह बात अप्रासंगिक है। मेरा विचार है कि प्रान्तोंके मन्त्रियोंका नैतिक कर्तव्य है कि वे अपने प्रान्तकी सीमामें स्थित देशी राज्योंमें होनेवाले घोर कुशासनकी ओर ध्यान दें और परम सत्ताको परामर्श दें कि उनकी सम्मतिमें क्या किया जाना चाहिए। और परम सत्ता यदि प्रान्तीय मन्त्रियोंके साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखना चाहती है तो उसे उनकी सलाहको सहानुभूतिपूर्वक सुनना ही होगा।

एक और बात है जिसपर देशी राजाओं और उनके सलाहकारोंको फौरन ध्यान देना पड़ेगा। वे कांग्रेसके नामसे ही कतराते हैं। वे लोग कांग्रेसियोंको बाहरी आदमी, विदेशी और न जाने क्या-क्या समझते हैं। कानूनके अनुसार वे यह सब हो भी सकते हैं। किन्तु जब मनुष्यके बनाये कानून प्राकृतिक नियमके विपरीत हों, और जब प्राकृतिक नियमका बोलबाला चल रहा हो, उस समय मनुष्य-कृत कानून बिल्कुल निष्प्राण और बेकार बन जाते हैं। राज्योंकी जनता अपने हितके सभी मामलोंमें कांग्रेसका मुँह देखती है। उसमें से बहुत-से लोग कांग्रेसके सदस्य भी हैं। श्री जमनालालजी जैसे कुछ लोग कांग्रेस संस्थामें ऊँचे पदाधिकारी भी हैं। कांग्रेसकी नजरोंमें उसके देशी राज्योंमें रहनेवाले सदस्यों और ब्रिटिश भारत कहे जानेवाले क्षेत्रके सदस्योंमें कोई भेद नहीं। निश्चय ही कांग्रेस या कांग्रेसजनोंकी उपेक्षा करना देशी राज्योंके हितोंके लिए घातक है, खास तौरपर जब कांग्रेस या कांग्रेसजन मैत्रीपूर्ण सहायता देनेको इच्छुक हों। उन्हें इस तथ्यको पहचान लेना चाहिए कि अनेक बार राज्योंकी प्रजाको कांग्रेसका मार्गदर्शन मिलता है। वे जानते हैं कि अब तक कांग्रेसने अगर हस्तक्षेप न करनेकी नीतिका पालन किया है तो उसका जिम्मेदार मैं हूँ। किन्तु कांग्रेसके बढ़ते हुए प्रभावको देखते हुए राज्योंमें होनेवाले अन्यायके सम्मुख उसी नीतिका समर्थन करते जाना मेरे लिए अब असम्भव है। यदि कांग्रेसको लगता है कि उसमें प्रभावकारी ढंगसे हस्तक्षेप करनेकी शक्ति है तो वह पुकार उठनेपर वैसा अवश्य ही करेगी। और यदि राजा लोग यह विश्वास रखें कि उनकी जनताके कल्याणमें उनका अपना कल्याण भी है तो वे कृतज्ञभावसे कांग्रेसकी सहायता माँगेंगे और स्वीकारेंगे। कांग्रेस एक ऐसी संस्था है जिसके निकट भविष्यमें ही परम सत्ताका स्थान ले लेनेकी सम्भावना है, और मैं आशा करता हूँ कि यह सब सौहार्दपूर्ण समझौतेसे ही होगा। निश्चय ही राजाओंका ऐसी संस्थाके साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनाना उनके अपने हितमें ही है। क्या वे भविष्यके इस महत्वपूर्ण इंगितको नहीं समझेंगे?

सेगाँव, २८ नवम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३-१२-१९३८

१७५. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव, वर्धा

२८ नवम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

तुम्हारे रोक हटाते ही मैं एस०^१ को पत्र लिखूँगा। अगर जरा भी मुमकिन हो तो दुविधा खत्म होनी ही चाहिए। आज 'हरिजन' का दिन है। तुम्हारी अनु-पस्थिति सबसे अधिक सोमवारको खलती है। हाँ, यदि तुम यहाँ रहो और स्वस्थ रह सको तो अवश्य ही बहुत-कुछ कर सकती हो।

मैं नारणदासके बारेमें समझ गया। मैं तुम्हारा मधुर पत्र उसे भेज रहा हूँ। महादेव अच्छा है।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८९५) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७०५१ से भी।

१७६. पत्र : मोतीलाल रायको

सेगाँव, वर्धा

२८ नवम्बर, १९३८

प्रिय मोतीबाबू,

मुझे आपसे सहानुभूति है किन्तु समभाव और न्यायकी भावना मुझे अखिल भारतीय चरखा संघका पक्ष लेनेको प्रेरित करते हैं। मैंने आपकी ईमानदारी और व्यापार-कुशलतापर भरोसा किया था। यदि आप कुछ छूट मनवाना चाहते हैं तो आप कृपया अदायगी शुरू कर दें और जितना अदा करनेका आपका विचार है उसकी अदायगीके उपरान्त उस रियायतको पानेका भरोसा करें। क्या यह सही और न्याययुक्त नहीं है? किन्तु मैं आपसे अब भी यही अनुरोध करूँगा कि आप अपने सहकर्मियोंसे कहें कि अपनी संस्थासे सम्बद्ध और केवल दरिद्रनारायणके हितार्थ चलनेवाली दूसरी संस्थाका ऋण चुकानेके लिए वे दुगना प्रयत्न करें।

१. शमशेर सिंह।

सप्रेम,

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११०५२) से।

१७७. पत्र : नारणदास गांधीको

२८ नवम्बर, १९३८

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। उसके आधारपर मैंने दो पंक्तियाँ शिकायतके तौरपर नहीं बल्कि सूचना देनेके लिए लिखी थीं। उसका उत्तर मैं इसके साथ भेज रहा हूँ। पत्र पढ़कर फाड़ देना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

यदि आन्दोलनसे सम्बन्धित तुम्हें कोई ऐसी बात नजर आये जिसकी आलोचना की जा सकती हो तो मुझे उसकी सूचना देना अपना कर्तव्य समझना।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५५४ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी।

१७८. पत्र : मणिबहन पटेलको

सेगाँव, वर्धा

२८ नवम्बर, १९३८

चि० मणि,

मुझे तेरा पत्र मिल गया है। मुझे यह आशा नहीं थी कि इतना काम होनेके बावजूद तू पत्र लिख सकेगी। मैं दूर बैठा तेरा जौहर देख रहा हूँ। तू पुण्यशालिनी है। तेरे साहसके बारेमें तो मेरे मनमें कभी कोई सन्देह नहीं था। तू यथासम्भव जेल मत जाना। यह काम राजकोटवालोंका है।

आशा है, तू अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखती होगी।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल

तारघरके पास, राजकोट

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १२२

१७९. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेगाँव

२८ नवम्बर, १९३८

भाई वल्लभभाई,

इसके साथ भावनगरवाला पत्र भेज रहा हूँ। मैंने उन्हें तार दिया है कि और जल्द भेजनेसे पहले पत्रकी प्रतीक्षा करें। इस प्रकार विद्यार्थियोंका भाग लेना मुझे तो सर्वथा अनुचित लगता है।

इसके अतिरिक्त मुझे यह भी ठीक नहीं लगता कि राजकोटसे बाहरके लोग विभिन्न स्थानोंसे जल्द भेजते हैं। यह हमारी नीतिके सर्वथा विरुद्ध है। इन जत्थोंको स्वराज्य नहीं चाहिए, और न वह उन्हें मिलेगा। इन जत्थोंके जानेसे कड़वाहट बढ़ेगी और यदि राजकोटके लोगोंमें कोई कमजोरी होगी तो वह छिप जायेगी। कमजोरीको छिपाकर हम क्या करेंगे? राजकोटकी जनतामें जितना जौहर होगा उतनी ही वह चमकेगी। हमें उसके तेजको बढ़ाना चाहिए, किन्तु वह तो भीतरकी प्रगतिसे ही बढ़ सकता है। देखना, यदि तुम इसे उचित मानते हो तो बाहरसे जल्द भेजना बन्द कर देना और सभी विद्यार्थियोंको रोक देना। और तो बहुत-कुछ लिखा जा सकता है किन्तु समय कहाँ है? खैर, कोई बात नहीं।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २२९

१८०. पत्र : प्रभावतीको

सेगाँव, वर्धा

२९ नवम्बर, १९३८

चि० प्रभा,

इसके साथ जयप्रकाशको लिखा पत्र है। आशा है, यह समयपर पहुँच जायेगा। मैं यह पत्र सुबह ३-४५ बजे लिख रहा हूँ। जयप्रकाशके स्वास्थ्यका ध्यान रखना। तेरा स्वास्थ्य तो जैसा भी हो, ठीक है। मैं देखता हूँ कि तुम दोनों कान्तिसे मिल सके हो। यह अच्छा हुआ। क्या मैं तुझे यह बता चुका हूँ न कि हम पहली जनवरीको बारडोली चले जायेंगे? वहाँ एक महीना लगेगा। तू वहाँ आ सकती है। जयप्रकाश भी आ सकता है। किन्तु वह ठहरा फकीर, ध्यानी, अपने सपनोंमें

डूबा रहनेवाला। वह कुछ समय मेरे पास कैसे बिता सकता है? मुझे तो वह कुछ ले ही नहीं सकता और कुछ हद तक मेरा जीवन उसे पसन्द भी नहीं आयेगा। इसलिए क्या किया जा सकता है? मुझे इस बातसे सन्तोष मिलता है कि तू उसकी सेवामें जुटी रहती है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५२४) से।

१८१. पत्र : विजया एन० पटेलको

सेगांव

२९ नवम्बर, १९३८

चि० विजया,

प्रातःकालकी प्रार्थनाके पहले मैं यह पत्र लिख रहा हूँ। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। बा भी ठीक ही है। तू अच्छी हो गई, यह एक बड़ी बात हुई। अब तुझे तत्काल यहाँ आनेकी जरूरत नहीं है, क्योंकि मैं २ जनवरीको बारडोली पहुँचनेकी आशा करता हूँ। और वहाँ तो तू पहलेसे ही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१०३) से। सी० डब्ल्यू० ४५९५ से भी; सौजन्य : विजयाबहन एम० पंचोली।

१८२. पत्र : शुएब कुरेशीको

२९ नवम्बर, १९३८

प्रिय शुएब,

जाकिरने बड़े भाईकी मृत्यु^१का तार भेजा था। उन्हें क्या हुआ था? अभी कुछ ही समय पहले उनकी बेटीकी मृत्युपर मैंने उन्हें पत्र भेजा था। मैंने उनके निकट पहुँचनेकी कोशिश की किन्तु असफल रहा। अपने सबसे अच्छे क्षणोंमें उन्होंने जिस लक्ष्यके लिए यथाशक्य प्रयत्न किया था, क्या उनकी मृत्युका उसी दिशामें सदुपयोग नहीं किया जा सकता? यह मौत बड़ी दुःखद घटना है और यदि दोनों जातियोंमें एकता लानेके लिए कोई कदम न उठाया गया तो यह दुःखकी

१. शौकत अलीकी २७ नवम्बर, १९३८ को दिल्लीमें मृत्यु हो गई थी।

बात होगी। यह काम कैसे किया जाये, यह कहना मेरे बसकी बात नहीं। मैं इस दिशामें अपने तरीकेसे काम कर रहा हूँ। पर उतना ही पर्याप्त नहीं है।

सप्रेम,

बापू

मध्यप्रदेश और गांधीजी, पृ० १२७ पर प्रकाशित अंग्रेजीकी प्रतिकृतितसे।

१८३. पत्र : महादेव देसाईको

२९ नवम्बर, १९३८

चि० महादेव,

कलवाली साँस घुटनेकी शिकायतका कारण पानीका ज्यादा गरम होना था। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ था। यदि धीरे-धीरे गरमी बढ़ाई जाये तो कोई असुविधा नहीं होती। लगभग शरीरके तापमानसे शुरू करना अच्छा है। पासमें ही गरम पानीकी वाल्टी रखनी चाहिए। इसके बाद ठंडा पानी तो लेना ही है। यदि दोपहरको कटिस्नान लिया जाये तो सबसे अच्छा हो। इसमें समय तो लगेगा किन्तु उसकी तुम्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६८५) से।

१८४. पत्र : सुशीला गांधीको

सेगाँव, वर्धा

२९ नवम्बर, १९३८

चि० सुशीला,

साथका पत्र पढ़कर मणिलालको भेज देना। तू जनवरीकी तारीख बदलना मत। तू जब तक चाहे तब तक वहाँ रहना। जब तेरी यहाँ दौड़े चले आनेकी इच्छा हो तब तो तुझे आनेका अधिकार है ही। मैं तो केवल नानाभाई और विजयलक्ष्मी का विचार करके लिख रहा हूँ। क्योंकि सहज ही तेरी इच्छा भी माता-पिताके साथ रहनेकी होगी।

अपनी वर्तमान स्थितिमें मैं तो कुछ भी नहीं दे सकूँगा। बातचीतके लिए एक मिनट भी नहीं दे सकूँगा। मैं तुझे रोज देख सकूँ और हँस सकूँ सिर्फ इतनी बातके लिए मैं यह नहीं चाहूँगा कि तू यहाँ आये। बा तुझसे सेवा नहीं करायेगी। अब तो वह बीमार नहीं है। इस सबको सोचते हुए यहाँ आनेकी बात मैं तुझपर

ही छोड़ता हूँ। जनवरीकी पहली तारीखको मैं यहाँसे बारडोली चला जाऊँगा। यदि तू वहाँ आना चाहे तो दो-चार दिनके लिए आ सकती है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

किशोरलाल और गोमती आकर मिल गये। सीता मुझे क्यों नहीं लिखती? वह कैसी है? अरुण कैसा है?

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८८९) से।

१८५. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव, वर्धा

३० नवम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

सुबह साढ़े तीन बजे मैं सबसे पहले तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ।

मेरे पास तुम्हारा कार्यक्रम है। अतः यह पत्र दिल्ली भेजा जायेगा।

शिमलाकी तुलनामें यहाँ महादेवकी रातें अच्छी बीतती हैं जिससे प्रकट है कि उसकी दशामें सुधार जारी है। शायद शिमलाकी कड़ी सर्दी उसे अनुकूल नहीं पड़ी। पहले तो नहीं सोता था, किन्तु आजकल वह खुले आकाश तले सोता है। मौसम काफी सुहावना है। तीन-चार दिनसे मैं बरामदेमें सो रहा हूँ। एस० ने मुझे बाहर आनेकी अनुमति दे रखी है। किन्तु पता नहीं यह अनुमति कब तक चलेगी।

मीराके जानेके बादसे मैं शाम ७ बजेसे लेकर दूसरे दिन दोपहर २ बजे तक मौन रखता हूँ। अतः बातचीतके केवल पाँच घंटे हैं।

यदि शम्मी आखिरकार यूरोप जाना तय कर लें तो अच्छा होगा। इस स्थान-परिवर्तनसे उन्हें लाभ होना सम्भव है और तुम भी निश्चित होकर मेरे पास रह सकती हो। किन्तु महादेव कहेगा कि कुत्तेका क्या होगा? वह बताता रहता है कि परिवारके उस लाड़ले सदस्यकी कितने ध्यानसे देखभाल की जाती है।

अभी तो मैं औंधके संविधानको माँजनेमें जुटा हुआ हूँ। वहाँके राजा साहबका पुत्र बड़ा ही अच्छा लड़का है।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६५३) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६४६२ से भी।

१८६. पत्र : देवदास गांधीको

३० नवम्बर, १९३८

चि० देवदास,

भारतनकी वाइसरायसे हुई बातचीतकी नकल भेजकर तूने अच्छा किया। यह नहीं कहा जा सकता कि आखिरकार इस उल्कापातका क्या परिणाम निकलेगा। फिर भी मैंने रियासतोंके बारेमें लिखा है,^१ उसे तू देखना और उसपर विचार करना। अनन्तराय बीचमें पड़े हैं इसलिए राजकोटका मामला शायद निवट जायेगा। किन्तु उससे क्या हुआ? सभी रियासतें इसमें फँस जायेंगी। और होना भी यही चाहिए।

आशा है, लक्ष्मी और बच्चे अच्छे होंगे। यह पत्र मैं प्रातःकालकी प्रार्थनाके पहले लिख रहा हूँ। आजकल मेरा स्वास्थ्य तो बहुत अच्छा है। मैं इसका ठीक ध्यान रखता हूँ। बा अच्छी है, महादेव भी अच्छे हैं। इसलिए आजकल तो सेगाँवकी आबहुवा अच्छी ही मानी जायेगी। घंटी बज रही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २००७) से।

१८७. पत्र : मीराबहनको

सेगाँव, वर्षा

३० नवम्बर, १९३८

चि० मीरा,

तुमने पैसे खर्च कर दिये, इसकी मुझे परवाह नहीं है। मैं नहीं चाहता कि शरीर स्वस्थ बनाये रखनेके लिए गरम कपड़े या जो-कुछ भी चीजें आवश्यक हों उनके अभावमें तुम बीमार पड़ जाओ। सीमा-प्रान्तकी सदीसे तुम्हें कष्ट पहुँचेगा, ऐसी कोई आशंका मुझे नहीं है। तुम वहाँ जो-कुछ भी करोगी उसे मैं उत्सुकतासे देखता रहूँगा।

दोपहर दो बजे तक का मेरा मौन जारी है। इस कारण दिनमें मुझे बातचीतके लिए केवल पाँच घंटे मिलते हैं और वह लगभग सारा समय मुलाकातियोंसे बातचीत करनेमें लग जाता है।

१. देखिए “देशी राज्य और प्रजा”, पृ० १६८-७०।

१७७

महादेवने कल तुम्हें लिखा था। उसकी दशामें बराबर सुधार हो रहा है।
सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४१७) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन०
१००१२ से भी।

१८८. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

सेगांव, वर्धा

३० नवम्बर, १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

चीनी मित्र आये थे और उन्होंने पाँच मिनटके बजाय मेरे पैंतीस मिनट लिये। आखिरकार जितनी मुलायमितसे कह सकता था, उतनी मुलायमितसे मुझे कहना ही पड़ा कि आप लोग अपने निर्धारित समयसे सात गुना समय ले चुके हैं।

वाइसरायके साथ हुई अपनी भेंटवातकि सम्बन्धमें अगाथाकी रिपोर्टकी एक प्रति तुम्हारे लिए भेज रहा हूँ। मेरा सन्देश तो मात्र यही था कि वे मुझे अंग्रेजोंका मित्र समझें, इत्यादि। उसमें राजनीतिसे सम्बन्धित कोई बात नहीं थी।

आशा करता हूँ कि तुम्हें मेरा पत्र^१ यथासमय मिला होगा जिसके साथ ही सुभाषके विषयमें गुरुदेवसे प्राप्त पत्र भी संलग्न था।

आशा है कि तुम अपनी सामर्थ्यसे ज्यादा काम नहीं कर रहे हो, और इन्दु अच्छी तरह है।

सरूप^१ पर जो कामका भारी बोझ है उससे उसे छुटकारा मिलना चाहिए। उसे पहले अपना बिगड़ा स्वास्थ्य सुधारना चाहिए।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीसे : गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३८; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय। ए बंच ऑफ ओल्ड लेटर्स, पृ० ३०३ से भी।

१. देखिए “पत्र : जवाहरलाल नेहरूको”, पृ० १६१।

२. विजयलक्ष्मी पंडित।

१८९. पत्र : शान्तिकुमार न० मोरारजीको

सेगाँव, वर्धा

३० नवम्बर, १९३८

चि० शान्तिकुमार,

महादेवने अभी-अभी तुम्हारा पत्र मेरे हाथमें दिया। यदि यों कहा जाये कि मैं तुम्हारे पिताजीको पहचानता था तो यह अधूरी बात कहना होगा। उनसे मेरा सम्बन्ध घरेलू था। इसलिए यदि मैं उनकी प्रतिमाका अनावरण करूँ तो इसमें आश्चर्यकी क्या बात है? किन्तु यदि मैं ऐसा न करूँ तो क्या उस सम्बन्धमें कोई खामी आ जायेगी? भाई भाईकी प्रतिमाका अनावरण थोड़े ही करता है? इन सब कामोंसे मेरा मन ही उचट गया है। इसलिए तनिक भी बुरा न मानते हुए और मेरी बातको गहराईसे समझते हुए मुझे इससे मुक्त रखना। जिस दिन भवनका उद्घाटन हो उसी दिन सरदारके ही हाथों प्रतिमाका भी अनावरण करवा लेना। मुझे क्षमा कर दोगे न?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ४७२८) से; सौजन्य : शान्तिकुमार न० मोरारजी।

१९०. एक पत्र '

सेगाँव, वर्धा

३० नवम्बर, १९३८

चि० लम्बूस,

लम्बोदरका मतलब है 'लम्बे उदरवाला'। यह गणेशका नाम है। मुझे तुझको 'लम्बूस' नाम देना चाहिए था। तूने बहुत दिनों बाद पत्र लिखा यह तो तेरी मेहरबानी ही मानी जायेगी न?

अमृतुस्सलाम, लीलावती और शारदा यहीं हैं। सभी आनन्दपूर्वक हैं।

लगता है तुम सब बहनें ठीक काम कर रही हो।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७५२) से।

१. यह शब्द नहीं हो सका कि पत्र किसको लिखा गया था।

१९१. पत्र : प्रेमी जयरामदासको

सेगाँव

३० नवम्बर, १९३८

चि० प्रेमी,

तेरी हिंदी अच्छी तो नहीं है लेकिन मुझे तेरी इंग्रेजीसे ज्यादा प्रिय है। प्रयत्नसे अच्छी लिखेगी। पिताजी यहाँ आ गये हैं। वे तुझसे ज्यादा अच्छी हिंदी लिखते हैं।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ९२५० से; सौजन्य : जयरामदास दौलतराम।

१९२. तार : जलियाँवाला बाग स्मारक कोषके स्थानीय मंत्रीको^१

[१ दिसम्बर, १९३८ के पश्चात्]

तेरह तारीखको तीसरे पहर तीन बजे बैठक रखिए।

गांधी

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल।

१९३. पत्र : रणछोड़लाल पटवारीको^२

[२ दिसम्बर, १९३८ के पूर्व]^३

आज कई सालों बाद मुझे आपकी लिखावट देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आपने मुझे 'दण्डवत्' लिख भेजा है इस कारण मेरे लिए कठिन हो गया है कि आपको किस प्रकार सम्बोधित करूँ।

१. स्थानीय मंत्रीने १ दिसम्बरके अपने पत्रमें गांधीजीसे पूछा था कि वर्षामें कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठकके दौरान क्या वहाँ स्मारक कोष समितिकी बैठक की जाये।

२. मोरबी, पालनपुर और गोंडल रियासतोंके भूतपूर्व दीवान। मूल पत्र गुजरानामें रहा होगा।

३. यह पत्र दिनांक २ दिसम्बरके अन्तर्गत छपी रिपोर्टमें है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप मेरी आशाओंको पूरा करनेके लिए सतत प्रयत्नशील हैं। मैंने कभी नहीं सोचा था कि राजकोटकी जनता अकेले ही संगठित मोर्चा लिये हुए है और अनुपम एकताका प्रदर्शन कर रही है। हमारी धारणाएँ भी कैसी थोथी होती हैं! ईश्वरने चाहा तो सफलता अवश्य मिलेगी। यदि ये प्रतिकूल परिस्थितियाँ अनुकूल बना दी जायें तो ईश्वर आपकी सेवाओंको अप्रतिम सफलता प्रदान करेगा।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, ३-१२-१९३८

१९४. चेतावनी

जो लोग राजकोट और हैदराबादके निवासी नहीं हैं उन्हें सरदार वल्लभभाई पटेल और श्री दामोदरदासने वहाँके सत्याग्रह-आन्दोलनोंमें भाग न लेनेकी जो चेतावनी दी है, वह सामयिक है और उसपर पूरी तरहसे अमल होना चाहिए। सत्याग्रहका तो मर्म यह है कि जो पीड़ित हों केवल वे ही उसमें भाग लें। ऐसी परिस्थितियोंकी कल्पना की जा सकती है कि जिसे सहानुभूतिपूर्ण सत्याग्रह कहा जा सकता है, उसका अमल अनुचित न हो। लेकिन जहाँ तक मैं समझता हूँ, राजकोट या हैदराबाद के सत्याग्रहमें अभी बाहरवालोंके शामिल होनेकी कोई जरूरत नहीं है। हाँ, यह जरूर है कि उससे अधिकारी और चिढ़ सकते हैं। लेकिन जिस विचारपर सत्याग्रहकी बुनियाद है वह तो यह है कि अन्याय करनेवालेके अन्दर न्यायभावना जाग्रत की जाये और उसे यह भी महसूस कराया जाये कि जिनके साथ अन्याय होता है उनके प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोगके बिना अन्याय करनेवाला उनपर अपना मनचाहा अन्याय नहीं कर सकता। अगर इन दो सूरतोंमें से किसीमें भी लोग अपने कष्ट-निवारणके लिए कष्ट-सहनको तैयार न हों, तो सत्याग्रहके रूपमें कोई भी बाहरी मदद उन्हें सच्ची राहत नहीं दे सकती।

सेगाँव, ३ दिसम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १०-१२-१९३८

१९५. तार : पट्टम ताणु पिल्लैको

वर्धागंज

३ दिसम्बर, १९३८

ताणु पिल्लै
राज्य कांग्रेस
त्रिवेन्द्रम

भेंटवातकि विषयमें सिबैस्टियन और साथियों द्वारा दिये गये वक्तव्यको गलत मानता हूँ। क्या मैं सही विवरण जारी करूँ ?

गांधी

मूल अंग्रेजीसे : पट्टम ताणु पिल्लै पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

१९६. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

३ दिसम्बर, १९३८

चि० काका,

मुझे भी बजटकी बात करनी थी, लेकिन भूल गया। थोड़ी चर्चा करनी पड़ेगी। नकल इस पत्रके साथ है। मंगलवारको आ जाना। दो बजे थोड़ा तो समय निकालूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९७९) से।

१. गांधीजी द्वारा दिये गये विवरणके लिए देखिए “वक्तव्य : समाचारपत्रोंको”, १०-१२-१९३८। और भेंटवातकि लिए देखिए “बातचीत : त्रावणकोर राज्य कांग्रेस शिष्टमण्डलके साथ”, पृ० १४६-९।

१९७. पत्र : प्रभुदयाल विद्यार्थीको

३ दिसम्बर, १९३८

चि० प्रभुदयाल,

यह विवरण बहुत लम्बा है। उसमें पुरावा तो है हि नहीं।^१ जो बात तुमने लिखी है वह एक ही सफेपर आरामसे लिखी जा सकती है। विवरणको शृंगारकी अपेक्षा नहीं रहती है। इसे दुबारा लिखो। मैं उसे यू० पी० भेजुंगा। जो लिखो उस बारेमें क्या क्या सबूत दे सकते हैं वह बताओ। जिन लोगोंने कहा उनका नाम दे दो। मेरे तरफसे आशा की जाती है व० बातें निकाल दो। संक्षेपमें कहने लिखनेकी कला हांसिल करनी चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ११५१९) से।

१९८. बातचीत : जॉन आर० मॉटके साथ^२

[४ दिसम्बर, १९३८ या उसके पूर्व]^३

डॉ० मॉट. . . सोचते थे कि क्या दुनिया, जिसमें मिशनरियोंकी दुनिया भी शामिल है, उनकी पिछली भेंटके बाद आगे नहीं बढ़ी है।^४ वे उसी महीने मद्रासमें हो रहे अन्तर्राष्ट्रीय मिशनरी परिषद् सम्मेलनकी अध्यक्षता करनेवाले थे। उस सम्मेलन की योजनाएँ वे गांधीजी को बताना चाहते थे तथा इस विषयमें गांधीजी की अन्तःप्रेरणा और राय जानना चाहते थे, ताकि सम्मेलनमें उसपर विचार-विमर्श हो सके।

उन्होंने कहा : “ . . . यह एक अनोखा सम्मेलन है जिसमें ४०० से अधिक प्रतिनिधि एशिया, आफ्रिका और लैटिन अमेरिकाके नये गिरजोंकी १४ परिषदों और यूरोप, अमेरिका व आस्ट्रेलियाके पुराने गिरजोंकी १४ परिषदोंका प्रतिनिधित्व

१. प्रभुदयाल विद्यार्थीने कांग्रेसके विरुद्ध शिकायत की थी।

२. महादेव देसाईके लेख “ डॉ० मॉट्स सेकंड विजिट ” (डॉ० मॉटकी दूसरी मुलाकात) से उद्धृत। बातचीतके जॉन मॉट वाले अंश थोड़े संक्षिप्त कर दिये गये हैं।

३. महादेव देसाईने कोई तारीख नहीं दी है, परन्तु देखिए “ पत्र : अमृत कौरको ”, ५-१२-१९३८, जिसमें गांधीजी लिखते हैं, “ महादेव कल पाँच बजे मॉटकी मुलाकातपर लिखवा रहा। ”

४. देखिए खण्ड ६४, पृ० ३९-४८।

करेंगे। हम चाहते हैं कि यह सम्मेलन भारतके लिए बाधा नहीं बल्कि सहायक सिद्ध हो। . . . में यह जानना चाहता हूँ कि क्या मेरा यह सोचना ठीक है कि आपने मुझे जो-कुछ बड़ी बातें समझाई थीं, उनके बारेमें हवा थोड़ी बदल गई है? . . . इन बुराइयोंके बारेमें क्या अब समझ पहलेसे साफ नहीं हो गई है? . . .

गांधीजी : मैंने जो चीज देखी है वह तो यह है कि जहाँ तक विचारका सम्बन्ध है, प्रवृत्तिकी दिशा सही है, लेकिन मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि कार्यमें कोई प्रगति नहीं हुई है। मैं पहले यह कहने जा रहा था कि “कोई अधिक प्रगति नहीं हुई है”, पर सोच-विचार कर ही मैं यह कह रहा हूँ कि “कोई प्रगति नहीं हुई है।” आप छिटपुट कुछ लोगोंके उदाहरण दे सकते हैं, पर उनका कोई महत्त्व नहीं है। सही विश्वासको उपयोगी बनानेके लिए उसे कार्यमें परिणत करना जरूरी है।

जॉन मॉट : पहले सवाल, यानी साम्प्रदायिक निर्णयको ही लीजिए। क्या वहाँ कोई प्रगति नहीं हुई है?

गांधीजी : कतई कोई प्रगति नहीं हुई है।

जॉ० मॉ० : मैं इधर के० टी० पॉलकी जीवनीकी पाण्डुलिपि पढ़ता रहा हूँ, क्योंकि मुझे उसका प्राक्कथन लिखनेको कहा गया है। आपके खयालसे क्या उनके समयसे कोई प्रगति नहीं हुई है? रोमन कैथोलिकोंका रुख द्वेषपूर्ण है, पर प्रोटेस्टेंट ईसाइयोंके बारेमें आप क्या कहते हैं?

गां० : यदि प्रोटेस्टेंट ईसाई इस प्रश्नपर एकमत हैं, तो, जहाँ तक उनका सम्बन्ध है, वे समझौतेमें परिवर्तन करवा सकते हैं। परन्तु इस मामलेमें कोई ठोस कार्यवाही नहीं हो रही है।

जॉ० मॉ० : मुझे यह मालूम नहीं था कि उनके लिए कोई अपवाद हो सकता है।

गां० : उनके लिए हो सकता है।

जॉ० मॉ० : अब अगला सवाल लीजिए। लोगोंकी असमर्थताका लाभ उठाना क्या अब रुक नहीं गया है? मैं आपको बताऊँ कि मैकगैवरन^१-काण्डको पढ़कर मुझे बहुत दुःख हुआ था, और यह जानकर कि वह गलतफहमी दूर हो गई है मुझे बड़ी राहत मिली।

गां० : इस प्रश्नपर भी मैं यह तो मानता हूँ कि कुछ मित्रोंमें उत्साह है, पर जहाँ तक कार्यका सवाल है कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

जॉ० मॉ० : आपका आशय यह है कि काफी कार्य नहीं हो रहा है?

गां० : नहीं, कतई कोई कार्य नहीं हो रहा है। मैं जो-कुछ कह रहा हूँ उसे सिद्ध करनेके लिए मेरे पास पर्याप्त प्रमाण हैं। मैं सभी पत्रोंको, जो मुझे

१. मैकगैवरनने गांधीजी की बिशप पिकेट तथा बिशप अजारियाके साथ हुई बातचीतका एक काल्पनिक विवरण लिखकर वर्ल्ड डेमिनियनमें छपवाया था।

मिलते हैं, प्रकाशित नहीं करता हूँ। श्री ए० ए० पॉलने, जिन्हें आप जानते होंगे, कुछ समय पहले एक सम्मेलन आयोजित किया था। उसमें जो विचार-विमर्श हुआ वह बहुत-कुछ जाहिर करता है। उनके प्रस्तावोंमें कोई उत्साह नहीं था। जहाँ तक मुझे मालूम है, किसी भी सुनिश्चित कार्यवाहीके बारेमें वहाँ सर्वसम्मति नहीं थी।

जॉ० मॉ० : मुझे तो राष्ट्रीय ईसाई परिषद्के एक प्रस्तावसे, जिसमें शुद्ध उद्देश्यों और शुद्ध व्यवहारपर जोर दिया गया है, प्रोत्साहन मिला था।

गां० : प्रस्तावका आप उल्लेख कर सकते हैं, पर उसके अनुरूप आप कार्य नहीं दिखा सकेंगे।

जॉ० मॉ० : मैं समझता हूँ। कार्यके बिना निश्चयका कोई मूल्य नहीं है। यह सीख मेरे मनमें छात्रावस्थामें तभी बैठ गई थी जब मैंने चरित्र-निर्माणपर फॉस्टरका उत्कृष्ट निबन्ध पढ़ा था। जितनी सहायता मेरी उसने की उतनी किसी और रचनाने नहीं की।

गां० : मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि जो-कुछ मैं कह रहा हूँ उसका प्रमाण आपको मिल जायेगा। मैं तो यह कहना चाहूँगा कि लोगोंकी असमर्थताका अनुचित लाभ उठानेमें जो खतरा है, उसे अभी साफ तौरपर समझा तक नहीं गया है। वे जिसे सामूहिक धर्म-परिवर्तनका अधिकार कहते हैं, उसे कभी नहीं छोड़ेंगे।

जॉ० मॉ० : वे अब गुटों और परिवारोंके धर्म-परिवर्तनकी बात करते हैं। पर गुट शब्दका कुछ मामलोंमें क्या अर्थ है, यह चीज मेरे सामने बिल्कुल साफ नहीं है।

गां० : मेरे सामने बिल्कुल साफ है। यह सामूहिक धर्म-परिवर्तनका ही दूसरा नाम है।

जॉ० मॉ० : यह अजीब बात है। गुटों या परिवारोंका सामूहिक रूपसे धर्म-परिवर्तन कैसे हो सकता है? उदाहरणके लिए, मेरे परिवारमें धर्म-परिवर्तन पहले मेरे पिताने किया, फिर मेरी सबसे बड़ी बहनने, फिर सबसे छोटी बहनने, उसके बाद मैंने। यह एक व्यक्तिगत मामला है — पूर्णतया व्यक्ति और उसके ईश्वरके बीचका मामला है।

गां० : यही बात है। अस्पृश्यताके सवालके बारेमें मैं आपको बताऊँ कि सालों तक मैं अपनी बात अपनी पत्नीके मनमें बैठा नहीं सका था। वह अनिच्छा-पूर्वक ही मेरा अनुकरण करती थी। लम्बे अनुभव और अमलके बाद ही बात कहीं उसके मनमें बैठी।

जॉ० मॉ० : जो चीजें अत्यन्त पवित्र हैं उनके लिए हमारे तरीके भी अत्यन्त पवित्र होने चाहिए। परन्तु क्षमा कीजिए मैं यह बात फिर कहता हूँ कि मुझे आशा है कि हवाका रुख बदल गया है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, विवेकशील ईसाई नेता न केवल इन बातोंपर तीव्रतासे सोच रहे हैं, बल्कि सच्चाईके साथ सही आचरणको प्रोत्साहन देनेमें लगे हैं। धनके समझदारीसे उपयोगके तीसरे प्रश्नपर मुझे उत्साहवर्द्धक लक्षण दिखते हैं।

गां० : पर वह तो मजबूरीसे पैदा हुआ गुण है। भारतीय ईसाई आत्म-निर्भरताकी बात प्रकट रूपसे सोच रहे हैं। वे अपनी जिम्मेदारियोंकी बात कर रहे हैं और यह कह रहे हैं, “ईश्वरको धन्यवाद देना चाहिए कि अमेरिकी धन अब आ नहीं सकता।”

इसके बाद देर तक धनके समझदारी और नासमझीसे उपयोगके अवान्तर विषयपर चर्चा होती रही। इस विषयने पिछली भेंटमें भी उनका ध्यान आकर्षित किया था और गांधीजी ने विषयको इन शब्दोंके साथ बहुत ही प्रभावशाली ढंगसे रखा था :

“ईश्वर और धनासुर [मैमेन] को एकसाथ नहीं साधा जा सकता और मुझे तो ऐसी आशंका है कि भारतकी सेवा करनेके लिए धनासुरको ही भेजा गया है, और ईश्वर पीछे रह गया। परिणामतः वह एक-न-एक दिन इसका बदला अवश्य लेगा।

[उन्होंने यह बात भी स्पष्ट कर दी थी कि दिये गये धनमें और अर्जित धनमें जमीन और आसमानका अन्तर है।]

जां० मां० : परन्तु आपके अपने उदाहरणसे ही यह सिद्ध हो जाता है कि धनका समझदारीसे भी उपयोग होता है। आज सुबह जो संस्थाएँ मँने देखी हैं, वे सब इसके सिवा और क्या प्रमाणित करती हैं?

गां० : आपको मेरे सिद्धान्त और व्यवहारमें अन्तर्विरोध दिखाई देता है? पर आपको पृष्ठभूमि समझनी चाहिए। धन एकत्रित करनेके अपने समस्त अनुभव और सामर्थ्यके बाद भी मैं इस मामलेमें बिल्कुल उदासीन हूँ। मैंने हमेशा यह महसूस किया है कि किसी धार्मिक संगठनके पास जब अपनी आवश्यकतासे अधिक धन हो जाता है, तो उसके लिए ईश्वरमें आस्था मिटने और धनमें आस्था जमनेका खतरा पैदा हो जाता है। धनका ‘समझदारीसे’ या ‘नासमझीसे’ उपयोग-जैसी चीज कोई नहीं है। आपको केवल उसपर निर्भर रहना बंद करना है। आप रोजीतक पर निर्भर मत रहिए और यह कहकर ईश्वरके साथ सौदेबाजी मत कीजिए कि जब तक ईश्वर आपको रोटी नहीं देगा, आप प्रार्थना नहीं करेंगे।

जां० मां० : मैं इसपर कुछ विस्तारसे बहस कर रहा हूँ, क्योंकि मैं आपकी बात समझना चाहता हूँ और यह चाहता हूँ कि आपके शब्दोंको गलत ढंगसे उद्धृत न करूँ।

गां० : तब, मैं जो-कुछ कह रहा हूँ, उसे दो प्रभावकारी उदाहरणोंसे स्पष्ट करूँगा। दक्षिण आफ्रिकामें जब मैंने सत्याग्रह-अभियान शुरू किया, मेरी जेबमें एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी, पर मैं निश्चित था। मुझे ३,००० लोगोंके एक पूरे काफिलेकी व्यवस्था करनी थी। मैंने कहा, “घबराइए मत। यदि ईश्वर चाहेगा तो वह इसे आगे

ले जायेगा।” तब भारतसे धनकी वर्षा होने लगी। मुझे उसे रोकना पड़ा, क्योंकि जब धन आया तो उसके साथ मुसीबतें भी आईं। पहले वे लोग रोटी और थोड़ी शक्कर से ही संतुष्ट थे, पर अब सभी तरहकी चीजोंकी माँग करने लगे।

अब नई तालीमके प्रयोगकी मिसाल लीजिए। मैंने कहा, यह प्रयोग किसीसे भी आर्थिक सहायताकी माँग किये बिना चलते रहना चाहिए। नहीं तो मेरी मृत्युके बाद सारा संगठन खण्ड-खण्ड हो जायेगा। सच्चाई यह है कि जैसे ही आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित होती है, आत्मिक दिवालियापन भी सुनिश्चित हो जाता है।

जॉ० मॉ० : परन्तु धनका आपने समझदारीसे उपयोग किया।

गां० : सोना-चाँदी नहीं, केवल रोटी चाहिए। ईश्वरकी इस व्यवस्थामें कुत्ता तक भूखा नहीं रहता है।

इसके बाद अस्पृश्यताका अंतिम प्रश्न आया। डॉ० मॉट सोचते थे कि क्या आज विवेक दुनिया-भरमें तेजीसे जाग नहीं रहा है। उन्होंने कहा, अमेरिकामें [इस सवाल-पर] विभिन्न गुटोंके बीच बड़ी लड़ाइयाँ हुई हैं। जिन होटलोंमें नीग्रो लोगोंका प्रवेश निषिद्ध है, उनका बहिष्कार करनेके निश्चय किये गये हैं। जर्मनीमें यहूदियोंके साथ होनेवाले अमानुषिक व्यवहारके विरोधमें ईसाई जेल गये हैं। कचरेमेंसे कंचन बाहर आ रहा है। भारतमें स्थिति क्या है?

गां० : मैं फिर कहता हूँ कि कार्यमें कोई प्रगति नहीं हुई है। इसका एक अच्छा प्रमाण ब्रिटिश लोग हैं। उनमें जातीय भावना घटनेकी बजाय बढ़ रही है। दक्षिण आफ्रिकामें पक्षपातकी आँधी जोरोंपर है। भूतपूर्व मंत्रियोंकी घोषणाओंकी अवज्ञा की जा रही है। इसी तरहकी कहानियाँ पूर्वी आफ्रिकासे भी सुनाई पड़ती हैं। पर मैं बराबर आशावादी हूँ। इसलिए नहीं कि सच्चाई फूलने-फलनेवाली है, इसका मैं कोई प्रमाण दे सकता हूँ, बल्कि इसलिए कि मेरा यह अटल विश्वास है कि अंतमें सच्चाई ही फूले-फलेगी।

जॉ० मॉ० : दक्षिण आफ्रिकामें भी क्या हॉफमेअर और एडगर ब्रक्स-जैसे लोग नहीं हैं? कुछ व्यक्तियोंका रख निश्चय ही बदल गया है।

गां० : मुट्ठी-भर वैयक्तिक उदाहरणोंसे निष्कर्ष निकालना गलत होगा। हमें प्रेरणा केवल अपनी इस आस्थासे ही मिल सकती है कि सच्चाईकी अंतमें अवश्य विजय होगी। लेकिन इस मामलेमें, जैसाकि मैं कह चुका हूँ, विचारकी दिशामें कुछ प्रगति हुई है, पर कार्यकी दिशामें नहीं हुई है।

अगले दिन डॉ० मॉटने बातचीतकी भूमिका अपनी इस टिप्पणीसे बाँधी : मैंने जो प्रश्न पूछे, उनपर अपने विचार आपने बड़े ही मौलिक ढंगसे रखे हैं। मेरे लिए उनका क्या मूल्य है मैं बता नहीं सकता। आपकी इस बातने मुझे प्रभावित किया है कि विचारकी दिशामें तो कुछ प्रगति हुई है, पर कार्यकी दिशामें कोई प्रगति नहीं हुई है। . . . मैं भी आपको यह दिखा सकता था कि वस्तुतः कुछ चीजें ठोस रूप ले रही हैं। पर आज मैं आपका ध्यान एक और विषयपर आकर्षित करना चाहता

हूँ। 'डाकू' राष्ट्रोंके बारेमें, यदि आप मुझे इस प्रचलित शब्दका प्रयोग करनेकी अनुमति दें तो, क्या किया जाये? अमरीकामें वैयक्तिक गुण्डागर्दी थी। उसे स्थानीय और राष्ट्रीय पैमानेपर पुलिसकी कड़ी कार्रवाइयोंसे दबा दिया गया है। इसी तरहकी कोई चीज क्या हम राष्ट्रोंके बीच चल रही गुण्डागर्दीके बारेमें नहीं कर सकते? मिसाल के तौरपर मंचूरियामें, जहाँ अफीमके जहरका दुष्टतापूर्वक प्रयोग हो रहा है, अबीसीनियामें, स्पेनमें, आस्ट्रियापर अचानक कब्जा कर लेनेके और चेकोस्लोवाकियाके मामलेमें क्या हम कुछ नहीं कर सकते? इस सिलसिलेमें मैं आपको बताऊँ कि आपने चेकोस्लोवाकियाके संकटपर^१ और यहूदी प्रश्नपर^२ जो-कुछ लिखा, उसका मुझपर गहरा असर हुआ था। क्या हम अंतर्राष्ट्रीय पुलिस-जैसी किसी चीजकी स्थापना नहीं कर सकते?

गां० : यह प्रश्न मेरे लिए कोई नया नहीं है।

जां० मां० : मैं भी ऐसा नहीं सोचता हूँ।

गां० : मुझे भारतीय परिस्थितियोंमें इसी तरहके सवालसे जूझना पड़ता है। हमें साम्प्रदायिक और मजदूर दंगोंको दबाना पड़ा। मंत्रिमण्डलोंने कुछ मामलोंमें सैन्य शक्तिका और ज्यादातरमें पुलिसका प्रयोग किया। जहाँ मैं यह मानता हूँ कि मंत्रियोंके आगे और कोई चारा न था, वहाँ मैंने यह भी कहा था कि कांग्रेसी मंत्रिमण्डल अपनी पूँजीमें, यानी अहिंसाके अपने जगजाहिर अस्त्रमें, दिवालिये सिद्ध हुए हैं। तो भी, जो सवाल आपने पूछा है उसके जवाबमें मैं कहूँगा कि यदि विश्वके सर्वोच्च मनीषियोंने अहिंसाकी भावनाको आत्मसात् नहीं किया तो उन्हें गुण्डागर्दीका पुराने ढंगसे ही सामना करना होगा। परन्तु उससे केवल यही सिद्ध होगा कि हम अभी जंगलके कानूनसे आगे नहीं बढ़े हैं; हमें ईश्वरने जो विभूति दी है उसके मूल्य को हमने अभी नहीं पहचाना है; १९०० वर्ष पुराने ईसाई धर्म, उससे भी पुराने हिन्दू-धर्म और बौद्ध धर्म और (यदि मैंने उसे ठीकसे समझा है तो) इस्लाम धर्मकी शिक्षाओंके बावजूद, हमने अभी मानव प्राणियोंकी हैसियतसे कोई खास प्रगति नहीं की है। जिनमें अहिंसाकी भावना नहीं है वे यदि बल-प्रयोग करते हैं तो वह बात मेरी समझमें आ सकती है। पर जो अहिंसासे परिचित हैं उनसे मैं यही चाहूँगा कि वे अपनी पूरी शक्ति यह दिखानेमें लगा दें कि गुण्डागर्दीका भी अहिंसासे ही मकाबला करना है। क्योंकि बल-प्रयोग चाहे कितने ही न्यायोचित रूपमें किया जाये, वह अंतमें हमें उसी दलदलमें ले जायेगा जहाँकि हिटलर और मुसोलिनीकी शक्ति ले जाती है। उनमें केवल मात्राका ही अन्तर रहेगा। आपको और मुझे, जिनका अहिंसामें विश्वास है, इसे इस नाजुक घड़ीमें प्रयुक्त करना चाहिए। फिलहाल चाहे हमें ऐसा लगे कि हम किसी दीवारसे सिर फोड़ रहे हैं, फिर भी गुण्डों तकके दिलोंको छूनेमें हमें निराश नहीं होना चाहिए।

१. देखिए खण्ड ६७, पृ० ४४९-५२।

२. देखिए "यहूदी लोग", पृ० १५३-७।

जॉ० मॉ० : मिशनरी और आम ईसाई ग्रामोद्योग आन्दोलन, नई तालीम आन्दोलन आदि रचनात्मक गतिविधियोंमें किस प्रकार सहायक हो सकते हैं?

गां० : उन्हें इन आन्दोलनोंका अध्ययन करना चाहिए और इन संगठनोंके अधीन या इनके साथ मिलकर काम करना चाहिए। मुझे यह बताते हुए खुशी होती है कि मेरे कुछ अनमोल ईसाई सहयोगी हैं। परन्तु वे उंगलियोंपर गिने जा सकते हैं। मुझे डर यह है कि ईसाइयोंमें से ज्यादातरका इसमें विश्वास नहीं है। कुछने तो साफ-साफ कह दिया है कि आपने जिन संस्थाओंका नाम लिया है उनके द्वारा संचालित ग्राम-आन्दोलन या शिक्षा-आन्दोलनमें हमारा विश्वास नहीं है। जाहिर है कि वे औद्योगिकरण और पाश्चात्य ढंगकी शिक्षामें विश्वास करते हैं। फिर मिशनरी सामूहिक रूपसे ऐसे आन्दोलनोंमें भाग लेनेसे, जो पूर्णतया या मुख्यतया ईसाइयों द्वारा संचालित नहीं है, शायद झिझकते भी हैं।

यदि मुझे अपनी गतिविधियोंमें भारतके ५००० प्रोटेस्टेण्ट मिशनरियोंका हार्दिक और सक्रिय सहयोग मिल जाये, और यदि वे अहिंसाकी जीवन्त शक्तिमें सचमुच विश्वास करने लगे और उसे ही एकमात्र कारगर शक्ति मानने लगे, तो वे न केवल यहाँ सहायक हो सकते हैं, बल्कि शायद पश्चिमपर भी प्रभाव डाल सकते हैं।

जॉ० मॉ० : खुशीकी बात यह है कि उनमें काफी ऐसे हैं जो आपसे बिल्कुल सहमत हैं।

गां० : मुझे मालूम है।

जॉ० मॉ० : आपके जीवनका सर्वाधिक रचनात्मक अनुभव क्या रहा है? अपने अतीतपर दृष्टि डालते हुए आपको कौन-सा अनुभव ऐसा लगता है जब, सारी परिस्थितियाँ प्रतिकूल होते हुए भी, ईश्वरमें आपकी आस्था जाग उठी हो, जब, कहना चाहिए कि, सब-कुछ असम्भव लगते हुए भी जीवन धरतीमेंसे फूट पड़ा हो?

गां० : इस तरहके अनुभव बहुत-से हैं। पर आपने जब यह प्रश्न मेरे सामने रखा तो मुझे खास तौरसे एक ऐसा अनुभव याद आया जिसने मेरे जीवनकी दिशा ही बदल दी। वह घटना मेरे साथ दक्षिण आफ्रिका पहुँचनेके सात दिन बाद ही घटी थी। मैं वहाँ बिल्कुल सांसारिक और स्वार्थपूर्ण ध्येयसे गया था। मैं तब महज एक छोकरा था, इंग्लैंडसे लौटा था और कुछ पैसा पैदा करना चाहता था। जो आसामी मुझे वहाँ ले गया था उसने अचानक मुझे डर्बनसे प्रिटोरिया जानेको कहा। वह एक ऐसी यात्रा थी जो आसान नहीं थी। चार्ल्सटाउन तक रेलसे सफर करना था और फिर घोड़ागाड़ीसे जोहानिसबर्ग पहुँचना था। रेलमें मेरे पास पहले दर्जेका टिकट था, पर बिस्तरका टिकट नहीं था। मैरित्सबर्गमें, जहाँ बिस्तर दिये जाते थे, गार्ड आया और उसने मुझे बाहर निकाल दिया तथा वैन डिब्बेमें जानेको कहा। मैं वहाँ जानेको राजी नहीं हुआ और रेल मुझे ठंडमें काँपता छोड़ वहाँसे चल दी। अब वह रचनात्मक अनुभव होता है। मुझे अपने प्राणोंका भय था। मैं अंधेरे वेटिंग

रूममें घुसा। एक गोरा उस कमरेमें मौजूद था। मुझे उससे डर लगा। तब मैंने अपने-आपसे पूछा, मेरा फर्ज अब क्या है? क्या मैं भारत वापस चला जाऊँ, या ईश्वरको अपना सहायक मानकर आगे बढ़ और जो-कुछ भाग्यमें है, उसका सामना करूँ? मैंने वहीं रहने और कष्ट भोगनेका फैसला किया। मेरी सक्रिय अहिंसा उसी दिनसे शुरू हुई। और ईश्वरने उसी यात्रामें मेरी परीक्षा भी ली। गाड़ीवानने जो सीट मुझे दी थी, उसपर न बैठनेपर उसने मेरी बुरी तरह पिटाई की।

जाँ० माँ० : आपको जो कष्ट, आघात-पर-आघात मिले, वे आपकी आत्मामें अंकित होते गये।

गाँ० : हाँ, वह मेरे जीवनका सबसे अमूल्य अनुभव था।

जाँ० माँ० : अपना यह अनुभव आपने मुझे बताया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। कठिनाइयों, दुविधाओं और शंकाओंमें आपकी आत्माको सबसे अधिक संतोष किस चीजसे मिला?

गाँ० : ईश्वरमें जीवन्त आस्थासे।

जाँ० माँ० : अपने जीवन और अनुभवोंमें ईश्वरकी असंदिग्ध अभिव्यक्ति आपको कब अनुभव हुई?

गाँ० : मैंने यह अनुभव किया है और मैं विश्वास करता हूँ कि ईश्वर आपके आगे सशरीर कभी प्रकट नहीं होता। वह तो उस कार्यमें प्रकट होता है जो गहनतम अंधकारमें भी आपकी मुक्तिका कारण हो सकता है।

जाँ० माँ० : आपका आशय क्या यह है कि ऐसी चीजें होती हैं जो ईश्वरके बिना हो ही नहीं सकतीं?

गाँ० : हाँ, वे अचानक और अनजाने ही होती हैं। एक अनुभव ऐसा है जो मेरी स्मृतिमें बहुत ही स्पष्ट है। वह अस्पृश्यता-निवारणके लिए किये गये २१ दिनके मेरे उपवाससे^१ जुड़ा है। मैं जब रातको सोनेके लिए लेटा था तो अगले दिन सुबह उपवासकी घोषणा करनेका रत्ती-भर भी विचार मेरे मनमें नहीं था। रातको कोई १२ बजे कोई चीज अचानक मुझे जगा देती है और कोई आवाज — वह भीतरसे आई या बाहरसे, मैं कह नहीं सकता — धीरेसे मुझसे कहती है, 'तुम्हें उपवास करना चाहिए।' 'कितने दिन', मैं पूछता हूँ। वह आवाज फिर कहती है, 'इक्कीस दिन'। 'वह कब शुरू हो', मैं पूछता हूँ। वह कहती है, 'तुम कल शुरू कर दो।' यह निर्णय कर चुकनेके बाद मैं शांतिसे सो गया। प्रातःकालकी प्रार्थना तक अपने साथियोंको मैंने कोई बात नहीं बताई। प्रार्थनाके बाद मैंने उनके हाथमें कागजका एक पुर्जा थमा दिया, जिसमें मेरे निश्चयकी घोषणा थी और उनसे यह कहा गया था कि वे मुझसे (इस विषयमें) बहस न करें, क्योंकि यह निश्चय बदला नहीं जा सकता।

डाक्टरोंकी यह राय थी कि उस उपवाससे मैं जीवित नहीं रहूँगा। परन्तु मेरे भीतर कोई चीज कह रही थी कि मैं जीवित रहूँगा और मुझे अवश्य आगे बढ़ना चाहिए। उस तरहका अनुभव मेरे जीवनमें उससे पहले या उसके बाद फिर कभी नहीं हुआ।

जॉ० मॉ० : इस तरहकी चीजकी उत्पत्ति, निश्चय ही, आप किसी दुष्ट स्रोतसे तो मान नहीं सकते ?

गां० : कदापि नहीं। मैंने इसे कभी भी गलती नहीं समझा। मेरे जीवनमें यदि कभी कोई आध्यात्मिक उपवास रहा है तो वह यही था। शारीरिक वासनाओंके दमनमें कुछ गुण अवश्य हैं। शरीरका बलिदान किये बिना ईश्वरसे साक्षात्कार असम्भव है। शरीरको भगवानका मन्दिर मानते हुए उसकी आवश्यकताएँ पूरी करना एक बात है, और उसे हाड़-मांसकी काया मानते हुए उसकी वासनाओंका दमन करना दूसरी बात है।

डॉ० मॉटने १९३६ में अपनी भेंटके अंतमें मौनपर एक प्रश्न किया था। १९२८ में जब वे थोड़ी देरके लिए अहमदाबाद आये थे, तब भी उन्होंने यही किया था। इस भेंटमें भी उन्होंने गांधीजी से पूछा कि क्या यह आपको अपनी आध्यात्मिक खोजमें अभी भी आवश्यक लगता है।

गां० : मैं यह कह सकता हूँ कि मैं अब सदा मौन रहनेवाला व्यक्ति हूँ। कुछ समय पहले ही मैंने कोई दो महीने तक पूर्ण मौन रखा था और उस मौनका जादू अभी तक टूटा नहीं है। आज आपके आनेपर मैंने मौन तोड़ा था। आजकल शामको प्रतिदिन प्रार्थनाके समय मैं मौन धारण कर लेता हूँ और दो बजे मिलने आनेवालोंके लिए उसे तोड़ता हूँ। आज जब आप आये तभी मैंने मौन तोड़ा था। यह अब मेरे लिए शारीरिक और आत्मिक दोनों कारणोंसे आवश्यक हो गया है। आरम्भमें यह मानसिक दबावको कम करनेके लिए किया जाता था। फिर मुझे लिखनेके लिए भी समय चाहिए था। परन्तु कुछ समय तक अभ्यास करनेके बाद मुझे इसका आध्यात्मिक महत्व पता चला। मेरे दिमागमें अचानक यह चीज काँधी कि ईश्वरके साथ सर्वाधिक सम्पर्क मैं इसी समयमें रख सकता हूँ। और अब तो मुझे ऐसा लगता है मानो मेरी प्रकृति मौनके लिए ही बनी हो। वैसे मैं आपको बताऊँ कि मैं बचपनसे ही चुप रहनेवाला माना जाता रहा हूँ। स्कूलमें मैं चुप रहता था और लंदनके अपने दिनोंमें मुझे मेरे मित्र मूक भँवरा कहा करते थे।

जॉ० मॉ० : इस सिलसिलेमें मुझे 'बाइबिल' के दो उद्धरण याद आ रहे हैं :

“ओ री मेरी आत्मा, तू ईश्वरके समक्ष मूक हो जा।”

“बोलो प्रभु, तुम्हारा सेवक सुन रहा है।”

मैंने प्रायः अत्यन्त कोलाहलपूर्ण समयमें भी ईश्वरके साथ सम्पर्कके लिए मौन साधा है।

मुझे खेद है कि मैंने आपका निर्धारितसे कहीं अधिक समय ले लिया है। आपके पास होने पर मुझे समयका कुछ होश ही नहीं रहता। मैं आपका कितना आभारी हूँ, बता नहीं सकता।

सेगाँव, ५ दिसम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १०-१२-१९३८

१९९. खादीको लोकप्रिय कैसे बनायें?

एक आदरणीय खादी-कार्यकर्ताने मुझे हिन्दीमें एक पत्र लिखा है, जिसका सारांश यह है :

मिलोंके कपड़ेके मुकाबलेमें, कीमतके लिहाजसे, खादी महँगी पड़ती है। मिलके कपड़ेसे तो इसका मुकाबला तभी हो सकता है जबकि हाथसे ओटने, धुनने और कातनेकी मजदूरीको उसमें से निकाल दिया जाये। इसलिए जो लोग खुद सूत कातते हैं, उनके लिए भी यह कोई मुनाफेकी बात नहीं है। इसमें शक नहीं कि आपने खादीका नया अर्थशास्त्र निकाला है। लेकिन जब तक बहुसंख्यक लोग उसकी कद्र न करें, खादी सब लोगोंमें प्रसार पा नहीं सकती। और तो और, हमारे कांग्रेसी मन्त्री भी आपके नये अर्थशास्त्रको समझते या उसकी कद्र करते हों, ऐसा मालूम नहीं पड़ता। ऐसी हालतमें क्या आप खादी-कार्यकर्ताओं, बल्कि मन्त्रियों और कांग्रेसजनोंका भी मार्ग-प्रदर्शन नहीं करेंगे? आपका विश्वास तो इतना जबरदस्त मालूम पड़ता है कि अगर हम, यानी आपके साथी कार्यकर्ता, आपको ऐसा करने दें तो आप ईमानदारी और कुशलताके साथ किये जानेवाले आठ घंटेके कामके लिए कातनेवालोंको आठ आना रोज भी फौरन दे देंगे। लेकिन, सच बात यह है कि हमारे अन्दर आपकी-जैसी श्रद्धा नहीं है।

निस्सन्देह, खादी मिलके कपड़ेसे मुकाबला नहीं कर सकती, न ऐसा कभी सोचा ही गया था। जिस नियमसे खादीका नियन्त्रण होता है, उसे अगर लोग न समझें और उसकी कद्र न करें तो खादी सर्वसाधारणमें कभी भी स्थान नहीं पा सकती। उस हालतमें यह लाजिमी तौरपर मालदारों और उन्हीं लोगोंके शौककी चीज रहेगी, जिन्हें कि इसकी धुन है। और अगर इसे खाली यही बनना हो, तो अखिल भारतीय चरखा संघ-जैसी महान संस्थाके सारे प्रयत्नोंको बुरा न भी कहें, मगर बिलकुल व्यर्थ तो कहना ही पड़ेगा।

लेकिन खादीका एक बड़ा मिशन है। खादी उन लाखों आदमियोंको सम्मान-पूर्ण धन्धा देती है जो सालके लगभग चार महीने बेकार रहते हैं। इस कामसे जहाँ

उन्हें पारिश्रमिक मिलता है, वहाँ यों भी यह अपना पुरस्कार आप है। क्योंकि लाखों आदमी अगर मजबूरन बेकार रहे तो आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक दृष्टिसे वे जरूर मुर्दा बन जायेंगे। फिर चरखेसे लाखों गरीब औरतोंकी स्थिति अपने-आप सुधरती है। इसलिए मिलका कपड़ा चाहे लोगोंको मुफ्त ही क्यों न दिया जाये, तो भी उनकी सच्ची भलाई इसीमें है कि वे खादीके मुकाबलेमें, जोकि उन्हींके परिश्रमका फल है, उसे लेनेसे इनकार कर दें।

जिन्दगी रुपयेसे ज्यादा कीमती है। यों तो यह बड़ा सस्ता नुस्खा है कि हमारे बूढ़े माँ-बाप जो काम करनेमें असमर्थ हो जायें और हमारी ही कमाईपर निर्भर हों, उन्हें हम मार डालें। इसी तरह, जिन बच्चोंकी हमें अपनी भौतिक सुख-सुविधाके लिए जरूरत नहीं है और जिनकी हमें बदलेमें कुछ भी पाये बिना परवरिश करनी होती है, उन्हें मार डालना भी सस्ता ही तरीका है। लेकिन न तो हम अपने बूढ़े माँ-बापकी हत्या करते हैं, न अपने बच्चोंकी, बल्कि चाहे जितना खर्च पड़नेपर भी उनकी परवरिश करना अपना सौभाग्य समझते हैं। इसी तरह खादीको भी हमें और सब कपड़ेकी छोड़कर कायम रखना चाहिए। यह महज आदतकी बात है कि हम खादीके बारेमें कीमतकी बात सोचते हैं। इसके लिए यह जरूरी है कि हम खादीके अर्थशास्त्रके बारेमें अपनी धारणा बदल दें। राष्ट्रके हितकी दृष्टिसे जब हम इस बात का अध्ययन करेंगे, तो हमें पता लगेगा कि खादी हरगिज महँगी नहीं है। संक्रमण-कालमें घरेलू अर्थशास्त्रमें रद्दोबदलका खतरा तो उठाना ही होगा। इस समय हमारे सामने एक बड़ी रुकावट है। लंकाशायरको, और आप चाहें तो यह भी कह सकते हैं कि हिन्दुस्तानी मिलोंको भी, लाभ पहुँचानेके लिए रुईकी उत्पत्तिका केन्द्रीकरण कर दिया गया है। रुईकी कीमतें विदेशोंकी कीमतोंसे तय होती हैं। जब रुईकी उत्पत्तिका विभाजन खादीके अर्थशास्त्रकी आवश्यकताओंके मुताबिक होगा, तब रुईकी कीमतमें घटा-बढ़ी नहीं होगी और अबसे कम तो वह हर हालतमें रहेगी। राज्यके संरक्षण या स्वेच्छा-प्रेरित प्रयत्नोंसे जब लोग केवल खादीके ही व्यवहारकी आदत डाल लेंगे, तब वे उसके सस्ते-महँगेपनपर उसी तरह ध्यान नहीं देंगे जिस तरह कि लाखों शाकाहारी मांसाहार और शाकाहारकी कीमतोंकी कोई तुलना नहीं करते। वे तो मांसाहारकी बजाय भूखों मर जाना पसन्द करेंगे, फिर वह चाहे मुफ्त ही क्यों न बाँटा जाये।

लेकिन मैं यह मानता हूँ कि खादीमें ऐसी जीवन्त आस्था बहुत ही कम कांग्रेस-जनोंकी है। मन्त्री कांग्रेसी हैं। वे अपने आसपासके वातावरणसे प्रेरणा पाते हैं। अगर खादीमें उनकी जीवन्त आस्था हो, तो उसे लोकप्रिय बनानेके लिए वे बहुत-कुछ कर सकते हैं।

१९२० में स्वराज्यका जो मूल कार्यक्रम बनाया गया था, खादी उसका आवश्यक अंग थी। १९२१-२२ में हजारों कांग्रेसजनोंने सैकड़ों सभाओंमें यह बात दुहराई थी कि हरेक गाँवमें चरखा चलने लगे, तभी लाखों आदमियोंको स्वराज्य मिल सकता है। मरहूम अलीबन्धु बेशुमार सभाओंमें तकरीर करते हुए अकसर यह कहा करते थे

कि जब तक हरेक घरमें चरखा और हरेक गाँवमें करघा नहीं होगा, तब तक आजादी हासिल नहीं हो सकती। मौ० मुहम्मद अली अपनी सजीव भाषामें कहा करते थे कि “हमारे चरखे हमारी आजादीके जंगके हथियार हैं और उनसे निकलनेवाली सूतकी आँटियाँ हमारे गोला-बारूद हैं।” वे ऐसे दृढ़ विश्वासके साथ यह बात कहते थे कि वह श्रोताओंके दिलमें बैठ जाती थी। लेकिन शुरूके उन दिनोंका वह विश्वास कायम नहीं रहा। कांग्रेसजनोंकी दृष्टिमें, आम तौरपर, खादी स्वराज्यके लिए जरूरी नहीं रही। श्री जवाहरलाल नेहरूने खादीको हमारी आजादीकी वर्दी कहा है। लेकिन कितने उसे इस मानीमें अपनाते हैं? कांग्रेसजन अगर ऐसा विश्वास रख सकें तो खादी अपने-आप चल निकलेगी। क्योंकि स्वतन्त्रता किसी कीमतपर भी मँहगी नहीं है। वह तो जीवनका प्राण है। अपनी जिन्दगीके लिए कोई कौन-सा खर्च करनेको तैयार न होगा? सविनय अवज्ञा तो एक अस्थायी चीज है। कांग्रेसी झण्डा उसका द्योतक नहीं है। उसका डिजाइन ऐसा रखा गया है कि वह स्वतन्त्रताके मूल तत्त्वोंको व्यक्त करे। खादी उसकी पृष्ठभूमि है। उसके ऊपर चरखा अंकित है और वही उसको कायम रखे हुए है। उसके रंगोंसे जाहिर होता है कि स्वतन्त्रता हासिल करनेके लिए साम्प्रदायिक एकता कितनी जरूरी है। ये शर्तें पूरी हो जायें तो शायद सविनय अवज्ञाकी और उसके कारण उठाये जानेवाले कष्टोंकी कोई जरूरत ही न रहे। मेरे लिए तो खादी पहनना आजादीका बाना धारण करना है।

खादीके इस अर्थको तहेदिलसे मान लिया जाये, तो मैं बतला सकता हूँ कि कांग्रेसी मन्त्री ही नहीं, बल्कि सभी मन्त्री और खादी कार्यकर्ता तथा कांग्रेसजन क्या कर सकते हैं और उन्हें क्या करना चाहिए।

यह हो सकता है कि एक मन्त्री केवल इसीलिए रहे कि वह खादी और ग्रामोद्योगकी देखभाल करे। इसलिए इस कामका एक महकमा होना चाहिए, जिसे दूसरे महकमोंका सहयोग मिलना चाहिए। इस प्रकार कृषि-विभाग रुई-उत्पादनके विकेन्द्रीकरणकी योजना बनायेगा, गाँवोंके उपयोगके लिए रुईकी पैदावार लायक जगहकी पैमाइश करेगा, और इस बातका पता लायेगा कि उसके प्रान्तके लिए कितनी रुईकी जरूरत होगी। यही नहीं, बल्कि उपयुक्त केन्द्रोंमें वितरणके लिए वह रुईका स्टॉक भी रखेगा। स्टोरका महकमा प्रान्तमें उपलब्ध खादीको खरीदेगा और अपनी जरूरतका कपड़ा बनवायेगा। तकनीकी महकमे चरखों तथा दस्तकारीके दूसरे साधनोंकी तरक्की के लिए कोशिश करेंगे। ये सब महकमे अ० भा० चरखा संघ और अ० भा० ग्रामोद्योग संघको अपने विशेषज्ञ मानकर उनके साथ बराबर सम्पर्क रखेंगे।

राजस्व-मन्त्री खादीको मिलकी प्रतियोगितासे बचानेके उपाय सोचेंगे।

खादी कार्यकर्ता अथक उत्साहके साथ खादी विज्ञानके नियमोंकी छानबीन करेंगे और खादीको अधिक टिकाऊ तथा अधिक आकर्षक बनानेकी कोशिश करेंगे और खादीके प्रसारके उपाय सोचनेके लिए अपनेको जिम्मेदार समझेंगे। यह याद रखना चाहिए कि ईश्वर उन्हींकी मदद करता है जो सदा जागरूक रहते हैं और अपने सारे गुणोंका उपयोग अपने मिशनकी साधनाके लिए करते हैं।

आशा है कि सभी कांग्रेसजन न सिर्फ समारोहोंमें बल्कि आदतन खादी पहनकर, खुद कताई करके और जब कभी उनसे कहा जाये तबी खादी कार्यकर्ताओंकी मदद करके अपने पड़ोसियोंमें खादीके सन्देशका प्रसार करेंगे।

सेगाँव, ४ दिसम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १०-१२-१९३८

२००. टाटानगरमें हरिजन कल्याण-कार्य'

बिहारके मंत्री श्री जगलाल चौधरी द्वारा धतकीडीह हरिजन पाठशालाकी नई शाखाके उद्घाटन-समारोहका पूर्ण और विस्तृत विवरण मेरे सामने है। यह समारोह टाटानगरमें सम्पन्न हुआ। प्रबन्धक श्री जे० जे० गांधीने, जो निजी तौरपर हरिजन कल्याण-कार्यमें दिलचस्पी लेते हैं, अपने भाषणके दौरान मंत्री महोदयसे शाखाका उद्घाटन करनेकी प्रार्थना करते हुए और बातोंके साथ यह कहा :'

सेगाँव, ४ दिसम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १०-१२-१९३८

२०१. पत्र : मीराबहनको

५ दिसम्बर, १९३८

चि० मीरा,

जहाँ तक पत्र लिखनेका सम्बन्ध है, पिछले तीन दिनसे मैंने तुम्हारी उपेक्षा की है। काम इतना रहा कि तुम्हारे लिए समय ही नहीं निकाल सका। इसलिए यह पत्र प्रातःकालकी प्रार्थनाके पहले लिख रहा हूँ। परन्तु तुम्हें पत्र लिख न सकूँ, तो भी यहाँ काफी चीजें हैं जो रोज तुम्हारी याद दिलाती हैं।

पता नहीं तुम्हारे शरीर, मन और आत्माका क्या हाल है? तुम्हारे पत्रकी बड़ी उत्सुकतासे प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

१. यह "टिप्पणियाँ" शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित किया गया था।

२. भाषण यहाँ नहीं दिया गया है। इसमें वक्ताने हरिजन बच्चोंकी शिक्षाको बढ़ावा देनेके लिए स्टील कम्पनी द्वारा किये जा रहे प्रयत्नोंका ब्योरा दिया था।

मुझे शारदासे कहना पड़ेगा कि वह यहाँके समाचार तुम्हें लिख दिया करे।
सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

आखिर तुम्हारा पत्र पेशावरसे आ गया। मैं बिलकुल अच्छा हूँ। रक्तचाप ठीक है। यहाँ सर्दी शुरू हो गई है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४१८) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००१३ से भी।

२०२. पत्र : अमृत कौरको

५ दिसम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

मैंने दो पत्र तुम्हें दिल्लीके पतेपर भेजे थे। उनमें से एक पत्र मेरी मूर्खतावश ४, भगवानदास रोडके बजाय १२, भगवानदास रोड भेज दिया गया था। तो भी मुझे आशा है वह तुम्हें मिल ही गया होगा।

ऐसा लगता है कि यहाँ सब ठीक चल रहा है। मुलाकातोंका सिलसिला जारी है। आनन्द एक सप्ताहके उपवास पर है। बीचमें चौथे दिन नीबू और केला ले लगा।

महादेवने माँटकी मुलाकातपर पाँच घण्टे लिखा।^१

बाकी शारदा लिखेगी।

सप्रेम,

जालिम

[पुनश्च :]

यह लखनऊ जा रहा है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८९६) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७०५२ से भी।

२०३. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

सेगाँव

५ दिसम्बर, १९३८

प्रिय कु०,

मैंने 'ग्रामउद्योग पत्रिका' के दोनों संस्करण पढ़े हैं।

क्या हम इस स्थितिमें हैं कि ग्रामीणोंको यह तरीका बता सकें कि बिना पालिश किया चावल पालिश किये हुए चावलसे सस्ता कैसे मिल सकता है?

क्या यह प्रमाणित हो चुका है कि बिना पालिश किया हुआ चावल कमजोर मेदेवाले लोगोंको भी हजम हो जाता है? छोटेलाल और बाबा साहबके अनुभव मेरे मनमें हैं। क्या हमारे पास ऐसा कोई उपकरण है जिसे हम ग्रामीणोंको धानकी भूसी अलग करनेके लिये दे सकते हैं? यदि मध्य प्रान्तकी सरकार हर गाँवमें बिना पालिश किये हुए चावलका प्रयोग करनेकी व्यवस्था करनेके लिए हमें कोई पद दे तो क्या हम इस उत्तरदायित्वको निभा सकते हैं? यदि नहीं, तो फिर वे इसका प्रबन्ध कैसे करेंगे?

हिन्दी पत्रिका किसने लिखी है? लेखक कोई भी हो, यह अच्छी हिन्दी नहीं है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१४१) से।

२०४. पत्र : ना० र० मलकानीको

सेगाँव, वर्धा

५ दिसम्बर, १९३८

प्रिय मलकानी,

अपने स्वीकृत दायरेसे बाहरकी कोई चीज मैं कदाचित् ही पढ़ता हूँ। परन्तु पिछले सप्ताह और इस सप्ताह 'क्रॉनिकल' साप्ताहिकमें प्रकाशित तुम्हारे लेखोंने मेरा ध्यान आकृष्ट किया और मैं उन्हें अधूरा नहीं छोड़ सका। [अस्पष्टता आदिकी] ऐसी कुछ और कठिनाइयोंको भी हम साफ कर लें।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३३) से।

२०५. पत्र : मीराबहनको

सेगाँव, वर्धा

५ दिसम्बर, १९३८

चि० मीरा,

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तुम्हारे मनपर जो पहली छाप पड़ी, वह अनुकूल है। मेरा खयाल है कि यह कायम रहेगी। क्या तुम इस्लामिया कॉलेज और एडवर्ड कॉलेज देख आई हो? क्या रामदास या चन्द्रभाईने तुम्हारा पता लगा लिया था? बेशक, परतो भाषा तुम्हें सीखनी होगी। उसमें तुम्हें कोई कठिनाई नहीं होगी। संलग्न पत्र मेहरताज के पत्र-सहित खान साहबको दे देना।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च:]

क्या तुमने ऐसा नहीं कहा था कि अंगद की लिखी पुस्तक मिल गई है? मुझे तो वह खोजनेपर भी नहीं मिली। पुस्तकका नाम क्या था?

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४१९) से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० १००१४ से भी।

२०६. पत्र : शामलालको

सेगाँव, वर्धा

५ दिसम्बर, १९३८

प्रिय लाला शामलाल,

सीमाप्रान्तसे मैंने इन्दरपालके बारेमें लिखा था। अब मैंने फिर लिखा है।

आपने जिन दूसरे कैदियोंका जिक्र किया है उनका विवरण भी मुझे दीजिए। वे प्रांतीय सरकारके अधिकार-क्षेत्रमें हैं या केन्द्रीय सरकारके?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२८६) से।

१. अब्दुल गफ्फार खॉ की पुत्री।

२. रेजिनाल्ड रेनॉल्ड।

१९८

२०७. पत्र : देवदास गांधीको

५ दिसम्बर, १९३८

चि० देवदास,

जरूरत मालूम हो, तो पत्र लिखनेमें संकोच नहीं करना चाहिए।

तूने कतरन भेजी, ये अच्छा किया। इस दलीलका जवाब समय बचा तो दूंगा। वे लोग जितना तू समझता है, उतनी आसानीसे एजेन्सी नहीं देंगे।

जमनादास तो गया। मुझे भी मैसूरकी नौकरी पसन्द नहीं होगी। लेकिन मेरी निन्दा हो, इस बातकी मुझे कोई चिन्ता नहीं है। रामदासको शान्ति मिलती हो, तो वह भले ही नौकरी स्वीकार कर ले। इस सम्बन्धमें मेरी स्थिति यह है। वह बेकार भी नहीं बैठ सकता, और बिना पैसेका या कम पैसेका काम भी नहीं ले सकता। तू उसे लिखते रहना। तेरी बात तो वह मानेगा ही।

रामदास नीमूके लिए तरसता है। उसे पूना बुला रहा है। उसका भी इलाज वह वहां कराना चाहता है। इसलिए मैंने सलाह दी है कि ठीक है, अभी वह पूना चली जाये। इलाज करा ले, उसके बाद मजेमें उसका प्रबन्ध बनारसमें कर देना। मुझे तेरा विचार भी पसन्द आता है, यद्यपि मुझे देहरादूनकी योजना भी अच्छी लगती है। रत्नकी परीक्षा पास करनेके बाद उसे वेतन तो ज्यादा मिलेगा ही। १५० रु० भी मिलनेमें मुझे कोई अड़चन नहीं दिखाई देती। यों, इसमें भाग्य तो होता ही है, लेकिन मैं समझता हूँ, साठ रुपये तो किसी भी हालतमें मिलेंगे ही। फिर भी, वह सितार सीख ले, यह तो मुझे पसन्द ही है।

बा मजेमें है।

वल्लभभाईकी मांग है कि पूरी जनवरी वारडोलीमें ही बिताई जाये। मैंने इसे स्वीकार कर लिया है। महादेव भी ठीक हैं। मेरी तो भगवान ही निवाहते हैं।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

बा को तू या लक्ष्मी दो पंक्तियाँ लिख दिया करो। वह तुम सबके प्रेमको बहुत तरसती है जोकि स्वाभाविक ही है।

तुझे किस पतेपर पत्र भेजूँ, ताकि वह जल्दी मिले? आफिसके या हरिजन निवासके पतेपर?

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २००८) से।

२०८. पत्र : वैकुण्ठभाई ल० मेहताको

५ दिसम्बर, १९३८

भाई वैकुण्ठ,

तुम्हारा लेख चन्द्रशंकर^१ ने यहाँ भेजा था। मैंने उसे प्रकाशनके लिए भेज दिया है। चन्द्रशंकर अपनी जिम्मेदारीपर लेख नहीं छाप सकता। अतः समय बचानेके लिए लेख आदि यहीं भेजा करना। महादेव अच्छा है, यों आराम तो अभी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

श्री वैकुण्ठभाई लल्लूभाई मेहता

सर लल्लूभाई सामलदासका बंगला

अंधेरी, बी० बी० ऐण्ड सी० आई० रेलवे

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १३६५) से।

२०९. पत्र : शान्तिकुमार न० मोरारजीको

सेगाँव, वर्धा

५ दिसम्बर, १९३८

चि० शान्तिकुमार,

जब कभी मैं उस तरफ आऊँ, तब तुम मुझे अपने आफिसमें ले जाना। अगर तुम्हें सन्देश भेजूँ, तो औरोंको भी भेजने पड़ेंगे। स्नेहीजन छूट दे दें, तो दूसरोंसे भी मिले। व्रतके रूपमें तो ऐसे नियम पाले नहीं जा सकते। अलबत्ता सन्देशके लिए तुम्हारा आग्रह ही हो, तो मैं तुम्हें निराश नहीं करना चाहूँगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री शान्तिकुमार नरोत्तम मोरारजी

जुहू

पो० ऑ० सान्ताक्रूज

बी० बी० ऐण्ड सी० आई० रेलवे

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७२९) से; सौजन्य : शान्तिकुमार न० मोरारजी

१. हरिजनबन्धु के सम्पादक चन्द्रशंकर शुक्ल।

२१०. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको

५ दिसम्बर, १९३८

चि० अमृतलाल,

मुशीलाबहन कहती थीं कि पाखाने गन्दे रहते हैं और बाँकेलाल^१ कोई काम करता नहीं लगता। कहती थीं कि उसे दिये जानेवाले २० रुपये किसी और काम आ सकते हैं। इसपर विचार करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०७८०) से।

२११. पत्र : मणिबहन पटेलको

सेगाँव, वर्धा

५ दिसम्बर, १९३८

चि० मणि,

तूने सुन्दर वर्णन किया है। तेरे कामका क्या कहना? तू मेरी बात मान और शरीरमें तेलकी मालिश या तो किसीसे करा या खुद कर। जो सिपाही अपने शरीरको स्वस्थ नहीं रखता, वह दण्डका भागी होता है, और होना भी यही चाहिए।

यदि लोग अहिंसाका पाठ सीख गये हों और मारपीट वगैरह सहन कर लें, तो फिर उनकी हार हो ही नहीं सकती। महादेव यहीं है। मजेमें है। वह जान-बूझकर ही कम लिखता है। इस बार मैंने उसे 'हरिजन' में बहुत लिखने दिया। ऐसा बार-बार नहीं होने दूँगा। उसपर बिलकुल कोई जिम्मेदारी न हो, यह अच्छा है। मैं तो अभी अच्छा ही हूँ।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल

तारघरके पास

राजकोट

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १२२-३

१. सेगाँवका एक भंगी।

२१२. पत्र : चिमनलाल एन० शाहको

५ दिसम्बर, १९३८

चि० चिमनलाल,

मुझे लगता है, हमें दो गोशालाएँ नहीं करनी चाहिए। इसीका विस्तार हो, तो तुम्हारी तबीयत उसका बोझ सह लेगी। 'गोशाला हमें खा जायेगी' का अर्थ यह है कि यदि उसपर हमारा खर्च अधिकाधिक बढ़ता जाये, और सारी जमीन ढोरोँके लिए ही लग जाये, तो फिर हमारे लिए यही एक काम रह जायेगा। अतः मेरी सलाह है कि तुम, अमृतलाल, मुन्नालाल, पारनेरकर और बलवन्तसिंह इस विषयकी चर्चा करके अपना निर्णय मेरे सामने रखो। अन्ततः कितना खर्च हमें उठाना पड़ेगा? कोई अन्तिम सीमा निर्धारित कर लेना तो आवश्यक है ही। जिन ढोरोँकी ज़रूरत न हो, उनका प्रबन्ध मैं कर सकता हूँ।

क्या अब हम दूध बिलकुल नहीं बढ़ा सकते? आसपाससे हम जो दूध लेते थे, वह क्या बन्द हो गया?

घी तो अब हम शायद किसीको नहीं दे सकेंगे?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०५९५) से।

२१३. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

५ दिसम्बर, १९३८

चि० अमला,

मेरे लिए तू मार्गरेट स्पीगल कभी नहीं होगी, सदा अमला ही रहेगी। तेरी तबीयत कैसी रहती है? किसी दिन तो आकर अपना चेहरा दिखा जा।

मैंने यहूदियोंके बारेमें जो-कुछ लिखा था,^१ वह तूने पढ़ा? क्या तुझे वह अच्छा लगा?

महादेवकी तबीयत ठीक होती जा रही है। फिलहाल वह सेगाँवमें ही रहता है। इस पत्रके साथ मेरे हस्ताक्षर हैं।

१. देखिए "यहूदी लोग", पृ० १५३-७।

यहाँ सब मजेमें हैं। कुत्ता चंगा होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीसे : स्पीगल पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

२१४. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

सेगांव, वर्धा

५ दिसम्बर, १९३८

प्रिय भगिनी,

तुमारे अगले खतका उत्तर प्यारेलालने भेजा है। राजगढ़का खत मेरे सामने है। खूब काम कर रही हो। खतों परसे मैं प्रवास वर्णन बना सकता हूँ इतना समय मेरे पास नहीं है। इसलिये प्रवास खतम होनेपर हरिजनके लिये एक विवरण भेज दो। हिंदीमें होगा तो इंग्रेजीके लिये यहां बना लेंगे। इंग्रेजीमें भेजेगी तो ह० से० [हरिजन सेवक] के लिये बना लेंगे। प्रत्येक शहर और वहां जो दूआ संक्षेपमें दे दो।^१ भोपाल जो मांगे भेजी है ठीक है। कुछ तो वहां होगा ही।

एक दिनके लिये देहरा [दून] होगा। काकासाहेब और बा भी वहां पहुँचनेकी आशा रखते है।

बापाकी तबीयत अच्छी रहती होगी। और तुमारी भी।

कहीं कुछ पैसे इकट्ठे किये?

महादेव यहाँ है। ठीक चल रहा है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९८६) से। सी० डब्ल्यू० ३०८२ से भी; सौजन्य : रामेश्वरी नेहरू।

१. मध्य भारतमें रामेश्वरी नेहरूके दौरेका वृत्तान्त हरिजन में सात किस्तोंमें प्रकाशित हुआ था। यह वृत्तान्त हरिजन के १८-३-१९३९ के अंकसे प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ था।

२१५. पत्र : होरालाल शर्माको

सेगाँव, वर्धा
५ दिसम्बर, १९३८

चि० शर्मा,

तुमारा स्पष्ट खत मिला।

३० रु० का टेब्लोइड मशीन लिया जाय। पैसे मैं दूँगा।

आजीविकाके बारेमें मुझे विश्वास नहीं है कि इस कामको अंजाम पहुँचा सकोगे। इसमें मेरा भय यह है कि किसी न किसी तरह तुमारा खर्च बढ़ जायगा। असली मुराद थी कि अत्यंत सादगीसे रहोगे वह छुट जाती है। व्यापार और परोपकार साथ-साथ नहीं चल सकते हैं। द्रोपदीके साथ बैठकर तुमारे अपने खर्चकी मर्यादा बना लेनी चाहिये और उससे आगे बढ़ना ही नहीं ऐसा निश्चय कर लेना चाहिये। ऐसा किया जाय तो तुमारा मासिक खर्च किसी संस्थामें से निकाला जाय।

८५० रु० के कर्जाके बारेमें मैं क्या कहूँ? यह कर्जा करनेमें ही प्रारंभिक भूल हुई है। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि कर्जा अदा होने[तक] सब परमारथको भूल जाना और किसी जगह ऐसी नोकरी लेना जिससे खर्च निकले और कर्जा अदा हो सके। अगर घरमें कुछ जेवर या दूसरी मिल्कत है तो उसे बेचकर कर्जा अदा किया जाय। यह सख्त इलाज है लेकिन मेरा विश्वास है कि सच्चा इलाज भी यही है। दुबारा कभी कर्जा नहीं करना है। ये भी तय किया जाय।

तब प्रश्न हो जायगा जो काम उठाया है उसका क्या किया जाय। इस बारेमें मेरी बुद्धि नहीं चलती है। मेरे पास बैठ जानेकी बात तो मौजूद है ही लेकिन तुम समाजमें रहनेकी बरदास्त कर सकते है या नहीं सोचनेकी बात है।

छोटी बच्ची अच्छी होगी।

बापुके आशीर्वाद

बापुकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० २७४-७५ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे।

१. यहाँ ३०० रु० के बजाय ३० रु० गलतीसे लिखे गये हैं।

२१६. पत्र : हरसरन वर्माको

सेगाँव, वर्धा
५ दिसम्बर, १९३८

भाई हरसरन वर्मा,

क्या आप चाहते हैं कि मैं आपका खत श्री रणजित पंडितको भेजूं ?

मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१) से।

२१७. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव, वर्धा
६ दिसम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

आज तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया है। इसके लिए तुमने मुझे तैयार कर ही रखा था।

आशा है लखनऊमें तुम्हारा वक्त उपयोगी काममें बीत रहा है। सरूप और जवाहरलालके बारेमें तुमसे पूरा समाचार मिलनेकी आशा रखूंगा। जवाहरलालसे तो तुम मुश्किलसे मिल पाओगी। अपनेको बहुत ज्यादा मत थका लेना।

मैं १० तारीखसे पहले श०'को कोई पत्र नहीं लिखूंगा।

मैं अभी ठीक हूँ। महादेव भी ठीक है। बालकोबा कल अपनी एक्स-रे परीक्षा करवानेके लिए नागपुर जा रहे हैं।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८९७) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७०५३ से भी।

२१८. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

६ दिसम्बर, १९३८

प्रिय कु०,

संशोधित मसविदा भेज रहा हूँ।

आशा है; सतीशबाबूके प्रमाणपत्रसे तुम और मोटे नहीं हो जाओगे। किताब अभी तक छुई नहीं है। जो प्रतीक्षा करते हैं और सतर्क रहते हैं मृत्युसे पहले उन्हें उनके इस धैर्यका पुरस्कार मिल जाता है।

चावलके बारेमें तुम्हारा जवाब बहुत-कुछ मुझे पालिश किया चावल देनेका-सा है, जबकि मैंने बिना पालिशका चाहा था।^१ हमें यह दिखाना चाहिए कि बिना पालिशका चावल कैसे खाया जा सकता है और पूरा गाँव किस तरह कूटकर उसका छिलका उतार सकता है। अब बताओ, सेगाँवमें मैं क्या करूँ? इस सम्बन्धमें तुम्हें और गहरी खोज करनी होगी। तुमने जो बताया, वह नई चीज नहीं है। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे कोई ऐसी चीज बताओ जो नई और प्रभावकारी हो।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१४२) से।

२१९. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको

६ दिसम्बर, १९३८

चि० अमृतलाल,

आज तो 'गीता' अनेक सुरोंमें गाई गई। लीलावतीने जिस तरह गाया उसमें सुर नहीं था और तुम उसमें मिल नहीं सकते थे, तो तुम्हें उसे अकेले ही गाने देना चाहिए था। सुशीला भी कभी तुम्हारे सुरमें मिल जाती थी, तो कभी अलग पड़ जाती थी। नतीजा यह हुआ कि इतना बेसुरा गाना सुनकर मुझे पसीना आ गया। यह तो अच्छा हुआ, मुझमें थोड़ी गर्मी आई; लेकिन यों 'गीतामाता' का क्या हुआ? उन्हें कैसा लगा होगा?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०७८१) से।

१. देखिए "पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको", पृ० १९७ भी।

२२० पत्र : विजया एन० पटेलको

सेगाँव

६ दिसम्बर, १९३८

चि० विजया,

यह पत्र तो मैं कुछ लिखना चाहिए इसीलिए लिख रहा हूँ। तेरी तबीयत ठीक रहती है, यह भगवानकी दया है।

'नारणभाई' की तबीयत ठीक होगी। आशा है, तू घबराती नहीं होगी। उनके खाने-पीनेका ध्यान रखती है न? वे अगर कुछ दिन केवल फलोंके रसपर रहें, तो जरूर फायदा हो। उनकी उम्रमें और कुछ खानेकी जरूरत कम ही रहती है। चायकी आदत हो, तो चाय केवल सूखे भूसेके रंगकी होनी चाहिए, यानी छन्नीमें चायकी पत्तियाँ डालकर उसपर खौलता पानी धीरे-धीरे छोड़ा जाये और ऐसा करनेसे जितना रंग आये, उससे सन्तोष कर लिया जाये। चायकी पत्तियोंको पानीमें कभी नहीं डुबोना चाहिए।

यहाँ सब ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१०४) से। सी० डब्ल्यू० ४५९६ से भी; सौजन्य : विजयाबहन एम० पंचोली।

२२१. बातचीत : डी० ताकाओकाके साथ^२

[७ दिसम्बर, १९३८]^१

यदि जापान भारतपर अपनी लालच-भरी निगाहें डालना बन्द कर दे तो यह हो सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप अपनी सेना तो भारतमें नहीं लाते हैं, परन्तु आप अपना माल भारतके बाजारोंमें भरनेके लिए अपनी अद्वितीय कुशलता, सत्यको छिपानेकी अपनी योग्यता और भारतीयोंकी कमजोरीकी जानकारीका इस्तेमाल करते हैं। और आपके मालमें प्रायः बहुत हलके किस्मकी दिखावटी वस्तुएँ ही होती

१. विजया एन० पटेलके पिता।

२. महादेव देसाईके लेख "एक जापानी यात्री" से उद्धृत। ताकाओका जापानी संसदके सदस्य थे और यह जानना चाहते थे कि भारत और जापानके बीच मित्रता कैसे स्थापित हो सकती है।

३. बॉम्बे क्रॉनिकल, ८-१२-१९३८ के अनुसार।

हैं। शोषणमें आपने भारतके शासकोंके तरीकोंका ही अनुकरण नहीं किया है बल्कि आप एक कदम और आगे बढ़ गये हैं। अब जहाँ तक जापानी दृष्टिकोणका सम्बन्ध है, भारतसे मिलनेवाले लाखों रूपयोंकी हानि आप सहन नहीं कर सकते। यदि आपको रुपया अपने-आप नहीं मिल जाता तो वह रुपया शस्त्रोंकी सहायतासे भी लेनेकी सामर्थ्य आपमें है। परन्तु जापान और भारतको पास लानेका वह कोई तरीका नहीं होगा। उन्हें तो वह नैतिक बन्धन समीप ला सकता है जिसका आधार आपसी मित्रता हो।

परन्तु आज उस मित्रताके लिए कोई आधार नहीं है। आप अपनी कला ही को लीजिए। मैं इसे पसन्द करता हूँ। बहुत साल पहले मैंने जापान और जापानी जीवनका एडविन आर्नोल्ड द्वारा लिखित एक बहुत मनमोहक विवरण पढ़ा था। वह चित्र सदा मेरे सामने रहा है। मैं आपके सभी अच्छे गुणोंको आत्मसात् करना चाहता हूँ। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि जापानकी अच्छी चीजें देनेके लिए यहाँ कोई नहीं आता। आप हमपर केवल अपना माल लादनेमें विश्वास करते हैं। मैं एक गज भी जापानी कपड़ा, चाहे वह कितना ही बढ़िया और सुसज्जित क्यों न हो, कैसे ले सकता हूँ? क्योंकि उसका अर्थ होगा भारतके गरीब लोगोंका भूखों मरना। आप राजनयकी निपुणता, कौशल, सस्ती चीजोंके उत्पादन, सशस्त्र युद्ध और शोषणमें पश्चिमको बहुत पीछे छोड़ आये हैं। जब तक आपको शोषण करनेमें कोई बुराई नजर नहीं आती आपकी हमारे साथ मित्रता कैसे हो सकती है?

श्री ताकाओकाने जानना चाहा कि क्या गांधीजी जापानके नये दलको, जो “एशिया एशियावासियोंके लिए” के सिद्धान्तका समर्थक है, कोई सन्देश देंगे। गांधीजी ने कहा :

“एशिया एशियावासियोंके लिए” इस सिद्धान्तका मतलब यदि यूरोप-विरोधी संगठन बनाना है तो मैं इस सिद्धान्तसे सहमत नहीं हूँ। जब तक कि हम एशियाको कूप-मण्डूक ही न बने रहने देना चाहते हों तब तक ‘एशिया एशियावासियोंके लिए’ यह नारा हमें मान्य नहीं हो सकता? लेकिन एशिया कूप-मण्डूक नहीं बना रह सकता। उसे संसार-भरको सन्देश देना है। परन्तु ऐसा तभी हो सकता है जब एशिया स्वयं उस सन्देशका पालन करे। एशिया-भरमें, जिसमें भारत, चीन, जापान, बर्मा, श्रीलंका और मलय राज्य हैं, बौद्ध प्रभावकी छाप है। मैंने बर्मावासियों और श्रीलंका-वासियोंसे कहा कि आप नाममात्रके ही बौद्ध हैं और भारत वास्तवमें बौद्ध है। वही बात मैं चीन और जापानसे कहूँगा। परन्तु यदि एशियाको अपना ही नहीं, सारे विश्वका उत्थान वांछित है तो उसे बुद्धका सन्देश फिरसे सीखना होगा और फिर वह सन्देश संसारको देना होगा। आज सब जगह आचरणमें इस सन्देशको अस्वीकार किया जा रहा है। बर्मामें हर बौद्ध भिक्षुसे मुसलमान डरते हैं। परन्तु जो सच्चा बौद्ध है उससे किसीको डर क्यों लगना चाहिए?

इसलिए आप समझ जायेंगे कि आपको देनेके लिए मेरे पास इसके सिवा और कोई सन्देश नहीं है कि आप अपनी-अपनी पुरानी परम्पराके प्रति सच्ची निष्ठा रखें।

सन्देश २,५०० वर्ष पुराना है परन्तु अभी तक इसको जीवनमें सच्चे तौरपर नहीं उतारा गया है। २५०० वर्ष क्या होते हैं? अहिंसाके पूर्ण पुष्पको, जो मुरझाता हुआ प्रतीत हो रहा है, अभी पूर्णतः विकसित होना है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २४-१२-१९३८

२२२. जर्मन आलोचकोंको जवाब

यहूदियोंके प्रति जर्मनोंके बरतावसे सम्बन्धित मेरे लेख^१ पर जर्मनीने जो रोष जाहिर किया है उसके लिए यह बात नहीं कि मैं तैयार नहीं था। यूरोपकी राजनीतिके बारेमें अपनी अज्ञानता तो मैं खुद ही स्वीकार कर चुका हूँ। पर यहूदियोंको उनकी बहुत-सी मुसीबतोंको दूर करनेके उपाय सुझानेके लिए मुझे यूरोपीय राजनीतिके सही ज्ञानकी जरूरत भी नहीं थी। उनपर जो जुल्म हुए हैं, उनके बारेमें मुख्य तथ्य बिल्कुल निर्विवाद हैं। मेरे लेखपर पैदा हुआ रोष जब दब जायेगा और थोड़ी शान्ति हो जायेगी, तब अत्यन्त क्रुद्ध जर्मनको भी यह मालूम हो जायेगा कि मेरे लेखकी तहमें जर्मनीके प्रति मित्रताकी ही भावना थी, द्वेषकी भावना हरगिज नहीं।

क्या मैंने बार-बार यह नहीं कहा है कि विशुद्ध प्रेम-बन्धुत्वकी भावना ही सक्रिय अहिंसा है? यदि यहूदी लाचारी और आवश्यकतावश अहिंसाको ग्रहण करनेके बजाय सोच-समझकर सक्रिय अहिंसा, यानी गैर-यहूदी जर्मनोंके प्रति बन्धुत्वकी भावनाको अपना लें, तो वे जर्मनोंको कोई हानि नहीं पहुँचा सकते और मुझे पूरा विश्वास है कि जर्मनोंका पत्थर दिल भी पसीज जायेगा। संसारकी प्रगतिमें यहूदियोंकी बहुत बड़ी देन रही है, परन्तु उनका यह महान कार्य उनकी सबसे बड़ी देन होगी और युद्ध एक अतीतकी चीज बन जायेगा।

यह बात मेरी समझमें ही नहीं आती कि मेरे उस बिल्कुल निर्दोष लेखपर कोई जर्मन क्यों नाराज हो? निस्सन्देह, जर्मन आलोचक भी, दूसरोंकी तरह, यह कहकर मेरा मजाक उड़ा सकते थे कि यह तो केवल एक स्वप्नदर्शिका प्रयत्न है, जिसका असफल होना निश्चित है। इसलिए मैं उनके इस रोषका स्वागत ही करता हूँ, हालाँकि मेरे लेखपर उनका यह रोष बिल्कुल नामुनासिब है। क्या मेरे लेखका कोई असर हुआ है? क्या लेखकको यह लगा है कि मैंने जो उपाय सुझाया है, वह ऊपरसे जैसा हास्यास्पद लगता है असलमें वैसा हास्यास्पद नहीं है बल्कि बिल्कुल व्यावहारिक है, बशर्ते कि बदलेकी भावना जिसमें नहीं है, ऐसे कष्टसहनके सौन्दर्यको हम समझ लें?

मैंने ये लिख लिखकर अपनी, अपने आन्दोलनकी और जर्मन-भारतीय सम्बन्धोंकी कोई भलाई नहीं की है, इस कथनमें धमकी भरी हुई है, और इसलिए यह कथन अनुचित न भी हो तो अप्रासंगिक तो जरूर है। जिसे मैं अपने अन्तरतममें सौ फीसदी

सही सलाह समझता हूँ, उसे देनेमें यदि मैं इस डरसे पशोपेश करूँ कि इससे मेरे देशपर या मुझपर या जर्मन-भारतीय सम्बन्धोंपर कोई आँच आ सकती है तो मुझे अपनेको कायर ही समझना चाहिए।

बर्लिनके लेखकने निश्चय ही यह एक अजीब सिद्धान्त निकाला है कि जर्मनीसे बाहरके लोगोंको जर्मन-कारंबाईपर टीका-टिप्पणी नहीं करनी चाहिए; उनका उद्देश्य अत्यन्त मैत्रीपूर्ण हो तब भी उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। जर्मन या दूसरे बाहरी लोग यदि हिन्दुस्तानियोंके बारेमें हमें दिलचस्प बातें बतलायें, तो अपनी तरफसे मैं निश्चय ही उनका स्वागत करूँगा। अंग्रेजोंकी ओरसे मुझे कुछ कहनेकी कोई जरूरत नहीं है। लेकिन ब्रिटिश लोगोंको अगर मैं थोड़ा भी जानता हूँ तो वे भी ऐसी बाहरी आलोचनाका, जो अच्छी जानकारीके साथ की जाये और द्वेषसे मुक्त हो, स्वागत ही करते हैं। इस युगमें, जबकि दूरियाँ मिट रही हैं, कोई भी राष्ट्र 'कूपमण्डूक' बनकर नहीं रह सकता। कभी-कभी तो दूसरोंके दृष्टिकोणसे अपनेको देखना बड़ा लाभकारक होता है। इसलिए अगर जर्मन आलोचकोंकी नजर मेरे इस जवाबपर पड़े, तो मैं उम्मीद करता हूँ कि वे न केवल मेरे लेखके बारेमें अपनी राय ही बदल देंगे, बल्कि बाहरी आलोचनाके महत्वको भी महसूस करेंगे।

सेगाँव, ८ दिसम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-१२-१९३८

२२३. पत्र : कन्हैयालाल मा० मुन्शीको

८ दिसम्बर, १९३८

भाई मुन्शी,

चक्कीके बारेमें प्यारेलालको तुम्हें जवाब लिखे कई दिन हो गये। शायद वह पत्र कहीं भटक गया। मशीनी चक्कियोंका उपयोग तुम जेलोंमें कर सकते हो।

बुद्ध मन्दिरका काम शिथिल किये बिना धर्मानन्द कोसाम्बी^१ भारतीय विद्या भवनका काम कर सकते हों, तो अवश्य करें।

मिनिस्ट्री अगर लम्बे समय तक चली,^१ तो तुम्हें घर छोड़नेके साथ और भी अनेक मोह छोड़ने पड़ेंगे। तुम्हारे खिलाफ शिकायत है कि तुम अपनी शक्तिसे अधिक काम करके अपना स्वास्थ्य बर्बाद कर रहे हो। तुम्हें यह मोह भी छोड़ना पड़ेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६४२) से; सौजन्य : क० मा० मुन्शी।

१. पाछी भावाके एक प्रसिद्ध विद्वान।

२. क० मा० मुन्शी बम्बई प्रान्तके कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलमें गृहमन्त्री थे।

२२४. पत्र : दामोदरदास मूँदड़ाको^१

८ दिसम्बर, १९३८

भाई दामोदर^२,

दोनों उत्तर बहुत लम्बे हैं। लेकिन लम्बे या छोटे भजनेकी आवश्यकता नहीं। मेरी जानकारीके लिए ठीक है।

वापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० १०१५४ से; सौजन्य : सचिव, आन्ध्र प्रदेश राज्य ममिति, सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, हैदराबाद।

२२५. आलोचनाओंका जवाब

कुछ मित्रोंने मेरे पास अखबारोंकी दो कतरनें भेजी हैं, जिनमें यहूदियोंके नाम मेरी अपीलकी आलोचना की गई है। दोनों आलोचकोंका कहना है कि यहूदियोंके साथ जो अन्याय हो रहा है उसके प्रतिकारके लिए अहिंसाका उपाय सुझाकर मैंने कोई नई बात उनके सामने नहीं रखी है, क्योंकि पिछले दो हजार वर्षोंसे वे अहिंसाका ही तो पालन कर रहे हैं। जाहिर है कि इन आलोचकोंको मैं अपना आशय स्पष्ट नहीं कर पाया हूँ। जहाँ तक मैं जानता हूँ, यहूदियोंने अहिंसाको अपना धर्म-सिद्धान्त, या सुविचारित नीति भी बनाकर उसका पालन कभी नहीं किया। वस्तुतः उनके ऊपर यह कलंक लगा हुआ है कि उनके पूर्व-पुरुषोंने ईसामसीहको सूली दी थी। क्या यह नहीं माना जाता है कि वे “जैसेके साथ तैसे” को नीतिमें विश्वास करते हैं? अपने ऊपर अत्याचार करनेवालोंके प्रति क्या उनके दिलोंमें हिंसाका भाव नहीं है? क्या वे यह नहीं चाहते कि उनपर हो रहे अत्याचारके लिए तथाकथित लोकतन्त्रात्मक राष्ट्र जर्मनीको दण्ड दें और उन्हें उसके अत्याचारसे मुक्त करें? अगर वे ऐसा चाहते हैं, तो उनके दिलोंमें अहिंसा नहीं है। उनके अन्दर तथाकथित अहिंसा हो भी, तो वह कमजोर और असहायोंकी अहिंसा है।

मैंने जिस बातपर जोर दिया है वह तो यह है कि दिलसे भी हिंसा निकाल दी जाये और इस महान त्यागसे उद्भूत शक्ति काममें लाई जाये। एक आलोचक

१. दामोदरदास मूँदड़ा द्वारा भेजे हुए पत्रके पीछे गांधीजी ने यह पत्र लिख दिया था। उसी पत्रके साथ पञ्जजा नाथइसे प्राप्त एक पत्र और उसका जवाब तथा जमनालाल बजाजसे प्राप्त एक पत्र भी था।

२. जमनालाल बजाजके सचिव।

का कहना यह है कि अहिंसाको कार्यान्वित करनेके लिए उसके पक्षमें लोकमतका होना जरूरी है। स्पष्टतया ऐसा लिखते हुए उसके खयालमें अनाक्रामक प्रतिरोध ही है, जिसे कमजोरोंका शस्त्र समझा जाता है। लेकिन मैंने कमजोरोंके निष्क्रिय प्रतिरोध और बलवानोंके सक्रिय अहिंसात्मक प्रतिरोधमें फर्क रखा है। इसमें से दूसरा भयंकर-से-भयंकर विरोधके वावजूद काम कर सकता है और करता है। लेकिन वह अधिक-से-अधिक सार्वजनिक सहानुभूति जगाता है। हम यह जानते हैं कि अहिंसात्मक रूपमें कष्ट-सहन करनेसे संगठित भी पसीज जाते हैं। मैं यह कहनेका साहस करता हूँ कि यहूदी अगर उस आत्म-शक्तिकी मदद पा सकें जो केवल अहिंसासे प्राप्त होती है, तो हिटलर उनके ऐसे साहसके सामने, जैसा उसने मनुष्योंमें बड़े पैमानेपर अभी तक कभी नहीं देखा है, सिर झुका देगा और वह तब यह स्वीकार कर लेगा कि वह उसके सर्वोत्तम तूफानी दस्तोंकी वीरतासे भी बढ़कर है। ऐसा साहस केवल वही दिखा सकते हैं जिनका कि सत्य और अहिंसा अर्थात् प्रेमके ईश्वरमें जीता-जागता विश्वास हो।

निस्सन्देह आलोचक यह दलील दे सकते हैं कि मैंने जिस अहिंसाका चित्रण किया है वह सर्वसाधारण मनुष्योंके लिए सम्भव नहीं है, बल्कि सिर्फ बहुत थोड़ेसे, बहुत विकसित मनुष्योंके लिए ही सम्भव है। लेकिन मैंने इस विचारके खिलाफ हमेशा यह कहा है कि उपयुक्त प्रशिक्षण और नेतृत्व मिलनेपर सर्वसाधारण भी अहिंसाका पालन कर सकते हैं।

फिर भी मैं यह देखता हूँ कि मेरे कहनेका यह गलत अर्थ लगाया जा रहा है, क्योंकि मैंने पीड़ित यहूदियोंको अहिंसात्मक प्रतिरोधकी सलाह दी है, इसलिए लोक-तन्त्रात्मक राष्ट्रोंसे मैं इस बातकी आशा करता हूँ अथवा उनको मैं सलाह दूंगा कि वे यहूदियोंकी ओरसे हस्तक्षेप न करें। मुझे इस आशंकाका जवाब देनेकी जरूरत नहीं है। मेरे कुछ कहनेसे ही बड़े-बड़े राष्ट्र कोई कार्रवाई करनेसे रुक जायेंगे, ऐसा निश्चय ही कोई खतरा नहीं है। यहूदियोंको अमानुषिक अत्याचारोंसे मुक्त करनेके लिए जो-कुछ वे कर सकते हैं वह तो वे करेंगे ही, क्योंकि ऐसा करनेके लिए वे बाध्य हैं। मेरी अपीलका जोर तो इस बातमें है कि बड़े राष्ट्र अपनेको प्रभावकारी ढंगसे यहूदियोंकी मदद करनेमें असहाय महसूस कर रहे हैं। इसलिए मैंने यह उपाय पेश किया है, जो अगर ठीक ढंगसे अपनाया जाये तो मेरी समझमें अच्छा रहेगा।

मगर इस सम्बन्धमें जो सबसे संगत आलोचना मुझे मिली वह यह है : जब मैं यह जानता हूँ कि हिन्दुस्तानमें ही, जहाँ कि मैं खुद काम कर रहा हूँ और जहाँ मैं अपनेको स्वयंनियुक्त सेनापति कहता हूँ, इस नुस्खेको पूर्णतया स्वीकार नहीं किया गया है, तो फिर यहूदियों द्वारा इसे स्वीकार करनेकी आशा कैसे की जा सकती है ? मेरा जवाब यह है कि वे लोग सौभाग्यशाली हैं जो किसी बातकी आशा नहीं करते। कम-से-कम इस मामलेमें मैं उन्हींकी श्रेणीमें हूँ। यह नुस्खा पा जाने और इसके असरके बारेमें निस्संशय हो जानेपर मुझे ऐसा लगा कि जिन मामलोंमें इसे प्रभावकारी ढंगसे प्रयुक्त किया जा सकता है, उनमें यदि मैं लोगोंका ध्यान इसकी तरफ न खींचूँ, तो वह मेरी गलती होगी।

अभी तक यूरोपकी राजनीतिकी चर्चासे मैं वचता ही रहा हूँ। मेरी सामान्य स्थिति अब भी वही है। अबीसीनियाके मामलेमें मैंने यह उपाय लगभग दबी हुई आवाजमें पेश किया था। चेकों और यहूदियोंका मामला मेरे लिए अबीसीनियोंके मामलेसे अधिक स्पष्ट था। इसलिए मैं इस बारेमें लिखे बगैर न रह सका। डॉ॰ माँटने उस दिन मुझसे शायद यह ठीक ही कहा था कि चेकों और यहूदियोंके बारेमें मैंने जैसे लेख लिखे हैं वैसे मुझे ज्यादा-से-ज्यादा लिखने चाहिए, क्योंकि और कुछ नहीं तो उनसे मुझे हिन्दुस्तानकी लड़ाईमें तो मदद मिलेगी ही। उन्होंने कहा था, अहिंसाका सन्देश सुननेके लिए पाश्चात्य राष्ट्र जितने इस समय तैयार हैं, उतने पहले कभी नहीं थे।

सेगाँव, ९ दिसम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-१२-१९३८

२२६. लाल फीता

एक प्रमुख भारतीय मित्रने, श्री खेर और श्री मुन्शीको सरकारी काममें जी-तोड़ मेहनत करते देखकर, मुझसे एक दिन कहा कि इस मेहनतका उनके स्वास्थ्यपर इतना बुरा प्रभाव पड़ा है कि उनकी उम्र वास्तविक उम्रसे अधिक मालूम पड़ती है। उन्होंने मुझे यह चेतावनी भी दे दी कि यदि मैंने उन दोनोंको इतना ज्यादा काम करनेसे मना न किया, तो देश उनके जीवनसे हाथ धो बैठेगा। काश! मेरा उन दोनों मन्त्रियोंपर वही प्रभाव होता जिसका कि इन मित्रने मुझे गौरव दिया है। अगर मुझे उनपर इस तरहका अधिकार होता तो निश्चय ही मैं उन्हें इस तरह तिल-तिलकर आत्मघात करनेसे रोक देता। जो-कुछ इन दो मन्त्रियोंपर लागू होता है, वही बाकी मन्त्रियोंपर भी लागू होता है। इस बातचीतके कुछ ही दिन बाद मेरे पास एक आई० सी० एस० अफसर आया जिसे श्री खेरने एक खास जिम्मेदारी दे रखी है। उसने मुझसे कहा, “मैं श्री (वैसे उसने ‘मिस्टर’ शब्द इस्तेमाल किया था) खेरकी आशाएँ पूरी करना चाहता हूँ। लेकिन मैं नहीं जानता कि उन्हें कैसे सन्तुष्ट करूँ। मेरा विश्वास है कि मैं सदा जागरूक और मसरूफ रहा हूँ। लेकिन जबसे कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल बना है, हमारा काम बढ़ गया है। मन्त्री न स्वयं आराम करते हैं और न हमें करने देते हैं। परिणाम यह हुआ है कि फाइलोंका पहाड़ लगता जा रहा है। दिनके दिन काम निपटा देना प्रायः असम्भव हो गया है। और अब मुझे ऐसा काम सौंपा गया है जिसमें बहुत-कुछ सोचने और विचार करनेकी जरूरत है। मेरे लिए समस्याओंका अध्ययन जरूरी है। लेकिन मुझे यह समझमें नहीं आता कि मैं इन फाइलोंका क्या करूँ।” मैंने तुरन्त ही उत्तर दिया, “जला डालो।” मेरा अभिप्राय भी यही था।

इस दूसरे मुलाकातीके बाद ही एक समाजवादी मित्र पहुँचे। उन्होंने कहा “हमारे सम्बन्धमें बहुत गलतफहमी है। हमारे ‘वाक आउट’ पर आपने जो लेख प्रकाशित किया है^१ उसने उस गलतफहमीको और बढ़ा दिया है। मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूँ कि हम रचनात्मक आलोचनाके अपने अधिकारको सुरक्षित रखते हुए, कांग्रेस और मन्त्रियोंके काममें रोड़ा अटकाना नहीं चाहते — बल्कि सहायता ही करना चाहते हैं। आप हमारी कठिनाइयोंकी तरफ भी देखिए। कराची-कांग्रेसका प्रस्ताव^२ और कांग्रेसका घोषणापत्र^३ मौजूद ही है। हम ईमानदारीसे यह महसूस करते हैं कि आर्थिक सहायताके बारेमें उनमें जो बायदे किये गये थे, उनका पूरी तरह पालन नहीं हो रहा है। कांग्रेसी मन्त्रियोंकी कठिनाइयोंकी गम्भीरताकी मैं घटाना नहीं चाहता हूँ। लेकिन खाली सोचते रहनेसे ही तो समस्याका निपटारा नहीं हो सकेगा। ऐसी शक्तियाँ काम कर रही हैं जिन्हें कोई रोक नहीं सकता। परिस्थितिसे लाभ उठाकर सर्वसाधारणको कांग्रेसके विरुद्ध भड़काया जा रहा है। सर्वसाधारणके पास मतकी शक्ति है। उन्हें अपनी इस शक्तिका ज्ञान होता जा रहा है। अगर हमने परवाह न की, तो एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब कांग्रेस सर्वसाधारण पर अपना प्रभाव, चाहे अस्थायी रूपसे ही सही, गँवा बैठेगी।”

आमतौरपर मैं इन मित्रकी बातोंसे सहमत हूँ। मैंने उनसे कहा : “मैं इस असन्तोष का कारण स्पष्ट रूपसे समझता हूँ। आपका एक अपना दर्शन है। आजके कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल समाजवादी नहीं हैं। उन्हें ‘गांधीवादी’ समझा जाता है, चाहे इसका कुछ भी अर्थ हो। आपका कार्यक्रम तो बिल्कुल स्पष्ट है। आपके पास ऐसा साहित्य मौजूद है जो आपका पथ-प्रदर्शन कर सकता है। लेकिन गांधीवादीसे क्या तात्पर्य है, यह मैं स्वयं नहीं जानता। मेरी नाव अज्ञात समुद्रमें बह रही है। मुझे बीच-बीचमें गहराई नापनी होती है। जब मेरी ही यह शोचनीय स्थिति है, तो मन्त्रियोंकी हालत तो और भी खराब होनी चाहिए। वे ‘लाल फीते’ से इस तरह जकड़े हुए हैं कि उन्हें सोचने-विचारनेका समय ही नहीं मिलता। उन्हें तो इतनी भी फुसंत नहीं कि वे मुझसे मुलाकात करें और विचार-विनिमय करें। और इससे भी बुरी बात यह है कि उनकी हालत जानते हुए मुझे भी यह हिम्मत नहीं होती कि उन्हें पत्र ही लिख दूँ। ‘हरिजन’ के स्तम्भों द्वारा तो मुझे उनसे बात करनी ही नहीं चाहिए।”

मैंने पिछले अनुच्छेदमें बहुत-सी बातोंकी चर्चा की है; पर मेरा खास उद्देश्य तो ‘लाल फीते’ पर विचार करना है। अगर मन्त्री अपनी नई जिम्मेदारियोंसे निपटना चाहते हैं, तो उन्हें ‘लाल फीते’ को जला डालनेका ढंग खोजना चाहिए। पुरानी व्यवस्था ‘लाल फीते’ से ही और उसीके आधारपर बनी रह सकती है। यह नई व्यवस्थाका दम घोट देगी। मन्त्रियोंको उन लोगोंसे जरूर मिलना चाहिए जिनकी

१. देखिए खण्ड ६७, पृ० ४११-४।

२. देखिए खण्ड ४५, पृ० ३९२-३।

३. देखिए खण्ड ६५, परिशिष्ट ३।

सद्भावनासे वे इन पदोंपर आसीन रह सकते हैं। उन्हें छोटी-से-छोटी और बड़ी-से-बड़ी शिकायत सुननी चाहिए। लेकिन उन्हें उन सबकी और अपने पास आनेवाले पत्रों और अपने फ़ैसलोंकी फाइलें रखनेकी जरूरत नहीं है। उन्हें अपने पास केवल इतने कागजात ही रखने चाहिए जिनसे उनकी याददाश्त ताज़ी रहे और कामका सिल-सिला बना रहे। विभागीय पत्र-व्यवहार बहुत कम हो जाना चाहिए। मन्त्री इंडिया ऑफिसके प्रति जवाबदेह नहीं हैं, जो यहाँसे कई हजार मीलकी दूरीपर है। वे तो अपने उन लाखों मालिकोंके आगे जवाबदेह हैं, जो न तो यह जानते हैं कि 'लाल फीता' क्या है और न उन्हें उसके जाननेकी फिक्र ही है। उनमेंसे कितने ही तो लिख और पढ़ भी नहीं सकते। पर उनकी मुख्य आवश्यकताएँ पूरी होनी चाहिए। कांग्रेसियोंने उन्हें यह सोचना सिखा दिया है कि शासन-सूत्र कांग्रेसके हाथमें आते ही हिन्दुस्तान-भरमें न कोई भूखा रहेगा, न कोई नंगा। मन्त्री यदि उस दायित्वके साथ जो उन्होंने अपने ऊपर लिया है न्याय करना चाहते हैं तो उन्हें अपना समय और दिमाग इसी किस्मकी समस्याओंको सुलझानेमें लगाना चाहिए। अगर वे तथाकथित 'गांधीवादी' हैं तो उन्हें गांधीवादको समझनेके लिए अपनी अन्तरात्माको टटोलना चाहिए, उसके लिए मेरे पास आनेकी जरूरत नहीं है। मैं भी हमेशा यह नहीं जान पाता कि वह क्या है। लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूँ कि अगर उसकी ठीक तरहसे तलाश की जाये और उसका अनुसरण किया जाये, तो वह इतना मौलिक और क्रान्तिकारी है कि भारतकी सभी वास्तविक आवश्यकताओंको पूरा कर सकता है। कांग्रेस एक क्रान्तिकारी संस्था है। पर उसकी क्रान्ति संसारकी उन सभी राजनीतिक क्रान्तियोंसे भिन्न होती है जिनका विवरण इतिहासमें लेखबद्ध है। पिछली क्रान्तियोंका आधार जहाँ हिंसा था, वहाँ कांग्रेसकी क्रान्तिका आधार जान-बूझकर अहिंसात्मक रखा गया है। अगर यह भी हिंसात्मक होती, तो शायद पुराने ढंग और तरीके बहुत-कुछ उसी तरह कायम रह जाते। लेकिन कांग्रेसके लिए बहुत-से पुराने ढंग और तरीके वर्जित हैं। सबसे महत्वपूर्ण पुलिस और फौज है। मैंने यह तो मान लिया है कि जब तक कांग्रेसी पदासीन हैं और व्यवस्था कायम रखनेके लिए वे शान्तिपूर्ण उपाय नहीं खोज पाते, तब तक वे इन दोनोंका इस्तेमाल करनेके लिए बाध्य हैं। लेकिन मन्त्रियोंके सामने सदा यह सवाल रहना चाहिए कि क्या पुलिस और फौजका इस्तेमाल अनिवार्य है? अगर हाँ, तो क्यों? अगर जाँच करनेपर भी — पुराने ढंगसे नहीं, वह तो बहुत महँगा और प्रायः व्यर्थ सिद्ध हुआ है, बल्कि बिना खर्च किये लेकिन पूरी तरह और कारगर ढंगसे जाँच करनेपर भी — उन्हें यह लगे कि हम पुलिस और फौजकी सहायताके बगैर राजकाज नहीं चला सकते, तो अहिंसाका यह तकाजा है कि कांग्रेसको मन्त्रि-पद त्याग देना चाहिए और दुर्लभ 'अमृतकलश' की तलाशमें फिर निकल पड़ना चाहिए।

सेगाँव, ९ दिसम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-१२-१९३८

२२७. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव, वधा
९ दिसम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

यह पत्र जालन्धरके पते पर जा रहा है। तुम्हारे पत्र मुझे मिल गये। पंतजीसे तुम्हारी बातचीत हो गई इसकी मुझे खुशी है। भ्रष्टाचारका मामला इतना गम्भीर होता जा रहा है कि नजरन्दाज नहीं किया जा सकता। अगली बैठकमें मैं इस पूरे मामलेपर विचार-विमर्श करनेवाला हूँ।

महादेव ठीक है।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८९८) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७०५४ से भी।

२२८. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

९ दिसम्बर, १९३८

प्रिय कुं,

२० दिसम्बरके बाद जो भी दिन^१ चाहो निश्चित कर लो और मुझे उसकी सूचना दे दो।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१४४) से।

१. अ० भा० चरखा संघ परिषद्की बैठकके लिए।

२२९. पत्र : मीराबहनको

सेगाँव, वर्धा
९ दिसम्बर, १९३८

चि० मीरा,

यही बतानेके लिए एक पंक्ति लिख रहा हूँ कि यहाँ सब ठीक है। म्यूरियल और डॉरोथी आज सुबह आई थीं। मेरी भी यहाँ है। कुछ ही दिनोंमें शान्ताका विवाह एक भारतीयसे लन्दनमें हो जायेगा। वह प्रसन्न है और उसे आशा है कि वह पतिके साथ वापस लौट आयेगी।

सरदार और जयरामदास भी यहाँ हैं।

आशा है कि वहाँकी सर्दी तुम्हारे लिए बहुत कड़ी साबित नहीं होगी।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४२०) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००१५ से भी।

२३०. पत्र : लीलावती आसरको

९ दिसम्बर, १९३८

चि० लीला,

आजके किस्सेसे मुझे बहुत दुःख हुआ है। लेकिन अपने स्वभावके विरुद्ध तुम करती भी क्या ?

वैसे यह पत्र लिखनेका प्रयोजन कुछ और है। मैं समझ गया हूँ कि सु० जो मेरे साथ सोती है, यह तू और अमृतुस्सलाम बर्दाश्त नहीं कर सकती, कारण चाहे जो हो। तुम दोनोंको अप्रसन्न करके मैं अपना प्रयोग नहीं करना चाहता, इसलिए तुम दोनों जान लो कि फिलहाल मेरा प्रयोग बन्द रहेगा। इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। दोष मैं केवल अपना ही मानता हूँ। लेकिन इस सम्बन्धमें मुझे तुम्हारे साथ चर्चा नहीं करनी, न तुमसे कोई कैफियत लेनी है। मैंने तो तुम्हें केवल सूचना दी है।

यह पत्र अमृतुस्सलामको दिखा देना।

बापूके आशीर्वाद

१. नाम नहीं दिया गया है।

[पुनश्च :]

यह पत्र यबरे ही लिखकर देना था, लेकिन समय ही नहीं मिला ।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९७९४) से; सौजन्य : लीलावती आसर

२३१. पत्र : कृष्णचन्द्रको

९ दिसम्बर, १९३८

चि० कृ० चं०,

ध्यानावस्थित पूर्णतया हो सके तो सबसे अच्छा ही है। उसका अर्थ यह हुआ कि जिसपर हमारी श्रद्धा है वह देहातीत हो गया है। उसकी चेष्टा क्या देखें जिसने देह छोड़ दिया है? लेकिन मैं ऐसा कहाँ हो पाया हूँ। इसलिए कान तब वन्द हो जानेका मौका नहीं आ सकता है। यह कृत्रीम क्रिया नहीं है। तुमारे तो पूर्णतया ध्यानावस्थित होनेका प्रयत्न करना है। मेरी चेष्टा तो देख ही लेते हो। उसमें कुछ नहीं भरा है। मैं बहुत अपूर्ण मनुष्य हूँ। असहिष्णुता मेरेमें काफी पाता हूँ। क्रोध भी ऐसा ही है। इन सब चीजोंको दबा सकता हूँ। लेकिन यह तो कुछ भारी बात न हुई ।

कातते समय ध्यान तकलीके सूत्रमें ऐसा समजो कि वह ईश्वर कराता है और प्रत्येक तंतुमें वह छिप कर बैठा है। उसका दर्शन अंतरचक्षुसे करो ।

कातना जिसको गौण मानते हो वही प्रधान वस्तु बन जायगी। सत्याग्रहीकी भाषामें साधन साध्यका अभेद बन जाता है।

हलन चलन देखना विषयासक्ति तो हैं ही यह बात अब तो समजमें आनी चाहिये ।

वापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५६६) से। एस० जी० ७१ से भी ।

२३२. अ० भा० ग्रामोद्योग संघ प्रशिक्षण विद्यालय

इस प्रशिक्षण विद्यालयके दीक्षान्त-समारोहकी रिपोर्टसे मैं अभिलिखित चूना हूँ^१ :

अ० भा० ग्रा० सं० के ग्राम कार्यकर्ता प्रशिक्षण विद्यालयका सत्रीय अधिवेशन बृहस्पतिवार, १७ नवम्बरको मगनवाड़ी, वर्धामें हुआ जिसकी अध्यक्षता सरदार बल्लभभाई पटेलने की। . . . सुपरिटेण्डेंट श्रीयुत जे० पी० पटेल . . . ने अध्यक्ष और अतिथियोंका स्वागत करते हुए अन्य बातोंके अलावा यह कहा :

“ . . . इस समय जो उद्योग सिखाये जाते हैं वे हैं—कागज बनाना, तेल निकालना, मधु-मक्खी पालन, गुड़ बनाना, धानकी कुटाई और आटा पीसना। विद्यालयका पाठ्यक्रम पाँच मासका है। . . . ”

“ग्रामीण अर्थशास्त्र, बही-खाता और स्वास्थ्य व सफाईकी भी शिक्षा दी जाती है। . . . ”

“विद्यार्थियोंको प्रविष्ट करनेमें हमारा मुख्य उद्देश्य यह रहता है कि वे यहाँका पाठ्यक्रम पूरा करनेके बाद अपनेको पूर्णतया किसी-न-किसी प्रकारकी ग्राम-सेवामें लगा दें। . . . ”

“शिक्षा राष्ट्रभाषाके माध्यमसे दी जाती है। . . . ”

यहाँके प्रबन्धकोंको मैं यह सलाह देना चाहूँगा कि वे यहाँसे निकलनेवाले सभी विद्यार्थियोंका एक रजिस्टर रखें, ताकि उनके साथ जीवन्त सम्पर्क रखा जा सके और उनकी एक प्रकारकी स्नातकोत्तर पत्राचार कक्षा चलाई जा सके। किसी भी विद्यार्थीको यथासम्भव फिरसे पुराने ढर्रेपर नहीं पड़ना चाहिए और न ही प्रगति न कर सकनेपर हताश ही होना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १०-१२-१९३८

२३३. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव, वर्धा
१० दिसम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

आशा है कि मेरे सभी पत्र तुम्हें मिल गये होंगे। ज० ला० और मौलाना कल रात आये। अध्यक्षताके प्रश्नपर ही हमारी ढाई घंटे बातचीत हुई। सुभाष शामको जरूर आ गये होंगे।

आशा है, तुम्हें अपनी मटरगश्तीसे कोई नुकसान नहीं पहुँचा होगा। शम्मीको मेरा पत्र आज जायेगा।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३८९९) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७०५५ से भी।

२३४. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको

१० दिसम्बर, १९३८

चि० अमृतलाल,

आज अचानक काननके नख देखे। देखना, कितने गन्दे हैं! उसके नख, कान, दाँत वगैरहकी सफाईके लिए शिक्षक जिम्मेदार है न? वह अभी तक रामधुनमें भी भाग नहीं लेता। ऐसा क्यों? उसकी योग्यता तो अब भजन गानेकी भी होनी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०७८२) से।

२३५. पत्र : प्रभावतीको

सेगांव, वर्धा
१० दिसम्बर, १९३८

चि० प्रभा,

तेरा और जयप्रकाशका, दोनों पत्र मिले।

बारडोली पहली जनवरीको जाना है। आ सको तो दोनों वहाँ आना।

तेरे हाथका इलाज भाप, कटिस्तान तथा दूध और फलकी खुराक है। बारडोली आई तो अच्छा कर दूंगा।

बा शायद राजकोट जायेगी। महादेव अच्छा है। जयप्रकाशसे कहना, मेरी इच्छा है कि वह कुछ दिन मेरे साथ बिताये। हम दोनों एक-दूसरेको ठीक समझ लें, ऐसी मेरी तीव्र इच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३५२५) से।

२३६. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

१० दिसम्बर, १९३८

त्रावणकोर राज्य-कांग्रेसके अध्यक्षकी अनुमति प्राप्त कर लेनेके बाद अब मैं लोगोंको यह बता सकता हूँ कि १३ और १४ नवम्बरको मुझसे जिस शिष्टमण्डलने भेंट की थी^१ उसे मैंने क्या सलाह दी थी। मैंने उनसे यह कहा था कि यदि वे दीवानके खिलाफ अपने आरोपों पर अड़े रहते हैं तो इससे उनके वास्तविक उद्देश्यको हानि पहुँचेगी और असली सवाल यह नहीं है कि उक्त-आरोप^१ सही हैं या नहीं। सवाल सही राजनीतिक दृष्टिका है। त्रावणकोरकी जनता जो संघर्ष चला रही है उसके विषयमें राज्य-सरकारका कहना यह था कि संघर्ष वैयक्तिक है। उत्तरदायी सरकारकी माँगसे संघर्ष वैयक्तिक नहीं रहा, उसका स्तर ऊँचा हो गया। मैं ऐसे किसी संघर्षमें सहयोग नहीं कर सकता था जो स्वराज्यकी महत्वपूर्ण बातको तो छोड़ दे और अपना समय और शक्ति एक वैयक्तिक मामलेका निपटारा करानेमें खपाता

१. शिष्टमण्डल वस्तुतः गांधीजी से १५ तारीखको मिला था; देखिए पृ० १४३-९।

२. देखिए खण्ड ६७, पृ० ४३०-२ भी।

रहे। अगर लड़नेवालोंका सारा ध्यान आरोपों पर ही केन्द्रित रहा तो उत्तरदायी सरकारके सवालकी उपेक्षा होना अनिवार्य है।

अपनी रायके सही होनेमें मेरा विश्वास अडिग था, किन्तु मैंने उनसे कह दिया था कि अगर उनकी राय मेरी इस रायसे भिन्न हो तो उन्हें अपने ही विश्वासके अनुसार चलना चाहिए, क्योंकि संघर्ष चलानेका भार तो उन्हींको उठाना है। मैंने उनसे यह भी कहा था कि अगर हिंसाकी घटनाएँ होती रहें तो वे कैसे हुई, इसका विचार किये बिना उन्हें सविनय अवज्ञा आन्दोलनको स्थगित कर देना होगा क्योंकि जनता द्वारा की गई हिंसा, वह किसीके इशारेपर की गई हो तो भी, यह बताती है कि जनतापर राज्य-कांग्रेसका पर्याप्त प्रभाव नहीं है। सविनय अवज्ञाके स्थगित होनेका मतलब संघर्षका स्थगित होना नहीं है। उसका इतना ही अर्थ है कि हम अपने विभिन्न साधनोंमें से अब किसी एकपर पहले-जैसा जोर नहीं दे रहे हैं। रचना-त्मक कार्यक्रम हमारा एक स्थायी मूल्यवाला साधन है। सविनय अवज्ञाकी अपनी स्पष्ट मर्यादाएँ हैं और अवसरकी माँगपर उसे स्थगित करनेकी जरूरत पड़ जाती है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-१२-१९३८

२३७. बातचीत : ईसाई मिशनरियोंके साथ'

[१२ दिसम्बर, १९३८ के पूर्व]'

उनमें से एकने गांधीजी से पूछा कि जीवनमें उनका उद्देश्य क्या है। “हम जो-कुछ करते हैं उसे करनेकी प्रेरणा जिससे मिलती है”, वह चीज धार्मिक है, या सामाजिक, या राजनैतिक।

गांधीजी : विशुद्ध धार्मिक। यही प्रश्न स्वर्गीय माटेग्युने, जब मैं एक विशुद्ध राजनैतिक प्रतिनिधि-मण्डलमें वहाँ गया था तो मुझसे पूछा था। उन्होंने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा था, “आप एक समाज-सुधारक होते हुए भी इस भीड़में कैसे शामिल हो गये ?” मेरा उत्तर था कि यह मेरे सामाजिक कार्यका ही विस्तार है। सारी मानवजातिके साथ तादात्म्य स्थापित किये बिना मैं धार्मिक जीवन जी नहीं सकता था, और राजनीतिमें भाग लिये बिना वैसा हो नहीं सकता था। मनुष्यकी गतिविधियोंका पूरा क्षेत्र आज एक अविभाज्य इकाई है। आप उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और विशुद्ध धार्मिक — इस तरहके पृथक् खण्डोंमें विभाजित

१ और २. इसे प्यारेलाहके “नॉन-वायलेन्स ऐण्ड वर्ल्ड क्राइसिस” (अहिंसा और विश्व-संकट) से लिया गया है। मिशनरियोंमें अन्तर्राष्ट्रीय मिशनरी परिषद्के मन्त्री विलियम पैटन, उत्तरी अमेरिकाके मिशनरी सोसाइटी सम्मेलनके मन्त्री लेस्ली बी० मॉस, ब्रिटिश और विदेशी बाइबिल सोसाइटीके डॉ० स्मिथ और डॉ० जॉन मॉट शामिल थे। वे सब अन्तर्राष्ट्रीय मिशनरी सम्मेलनमें भाग लेनेके लिए भारत आये थे। सम्मेलन १२ दिसम्बर, १९३८ को ताम्बरम्में आरम्भ हुआ था।

नहीं कर सकते। मानवीय कार्यसे अलग किसी धर्मको मैं नहीं जानता। वह अन्य सब गतिविधियोंको एक नैतिक आधार प्रदान करता है, जो अन्यथा उन्हें नहीं मिलेगा, और जीवन अर्थहीन कोलाहल और आवेशकी एक भूलभुलैया-मात्र रह जायेगा।

प्रश्न : जन-साधारणपर आपके प्रभावको देखते हुए क्या हम यह पूछ सकते हैं कि आप जिससे प्रेरित होते हैं, वह आपका अपने ध्येयके प्रति प्रेम है या जन-साधारणसे प्रेम ?

उत्तर : जन-साधारणसे प्रेम। जन-साधारण बिना कोई भी ध्येय एक बेजान चीज है। जन-साधारणसे प्रेमके कारण अस्पृश्यताकी समस्या जल्दी ही मेरे जीवनमें आ गई। मेरी माँ ने कहा, “इस लड़केको तुम्हें छूना नहीं चाहिए, यह अच्छूत है।” “क्यों नहीं छूना चाहिए?” मैंने पलटकर सवाल किया, और उसी दिनसे मेरा विद्रोह शुरू हो गया।

प्र० : आप हम ईसाइयोंसे यह अपेक्षा रखते होंगे कि हम आपके उदाहरणका अनुकरण करें। अपने धार्मिक उद्देश्यके लिए क्या हम राजनीतिमें कूद पड़ें?

उ० : जो लोग विश्वके विभिन्न भागोंसे इस देशमें आते हैं, वे यह नहीं कह सकते कि हम देशकी राजनीतिसे कोई सरोकार नहीं रखेंगे। जन-साधारणके साथ बन्धुत्व की अपनी भावनाको दबानेके लिए यदि वे सरकारके साथ सौदेबाजी करते हैं, तो वे अपनी आस्थाके प्रति सच्चे नहीं रहेंगे। मान लीजिए सरकार इस देशके लोगोंके साथ कोई दारुण अन्याय करती है और मिशनरियोंसे यह कहा जाता है कि उन्हें उसके खिलाफ उँगली भी नहीं उठानी है तो निश्चय ही कम-से-कम वे इतना तो कर ही सकते हैं कि उस अन्यायके प्रति अपनी नाराजगी जाहिर करनेके लिए इस देशसे चले जायें। यदि कोई मिशनरी अपनेको सेवाके लिए पेश करे तो उसे उसके अवसर अवश्य मिलेंगे। आज आर्थिक क्षेत्र है तो कल सामाजिक क्षेत्र हो सकता है और फिर राजनैतिक क्षेत्र हो सकता है। आप तब यह नहीं कह सकते कि “मैं तो अपने को इस या उस कार्य तक ही सीमित रखूंगा, और कोई अन्य कार्य नहीं करूंगा।” मैं जब दक्षिण आफ्रिका गया तो उस देशके बारेमें कुछ भी नहीं जानता था। मैं तब सिर्फ अपने मुक्किलसे ही बँधा था, फिर भी वहाँ पहुँचनेके बाद सात दिनके अन्दर ही मुझे यह पता चल गया कि मुझे जिस परिस्थितिसे निपटना है वह इतनी भयानक है कि बताई नहीं जा सकती।

गांधीजी से फिर यह पूछा गया कि उनकी अहिंसाका उस पैसिफिस्ट (शान्तिवादी) मनोभावनासे, “जिसे हम, पाश्चात्य लोग, अपनानेकी कोशिश कर रहे हैं, पर जिसमें बहुत सफलता नहीं मिल रही है,” क्या सम्बन्ध है?

गांधीजी : मेरे विचारमें अहिंसा किसी भी रूपमें निष्क्रियता नहीं है। अहिंसा, जैसाकि मैं उसे समझता हूँ, विश्वकी सबसे सक्रिय शक्ति है, इसलिए, चाहे भौतिक-वादकी समस्या हो या कुछ और, यदि अहिंसा उसका कोई प्रभावी प्रतिकार प्रदान

नहीं करती, तो वह मेरी धारणावाली सक्रिय शक्ति नहीं है। या, इसे उल्टे ढंगसे इस तरह भी कह सकते हैं कि यदि तुम मेरे सामने कुछ ऐसी पहलियाँ रखो जिनका मैं जवाब न दे सकूँ, तो मैं कहूँगा कि मेरी अहिंसा अभी अधूरी है। अहिंसा सर्वोच्च धर्म है। आधी शताब्दीके अपने अनुभवमें मेरे सामने अभी तक एक भी परिस्थिति ऐसी नहीं आई है जिसमें मुझे अपनेको लाचार मानना पड़ा हो, जिसका मेरे पास कोई अहिंसात्मक इलाज न रहा हो।

यहूदियोंके प्रश्न को ही लीजिए, जिसपर मैंने अभी-अभी कुछ लिखा है।^१ अहिंसाका रास्ता अपनातेसे किसी भी यहूदीको अपनेको लाचार महसूस करनेकी जरूरत नहीं रहेगी। एक मित्रने मुझे पत्र लिखकर यह आपत्ति की है कि उस लेखमें मैंने यह माना है कि यहूदी हिंसक रहे हैं। यह सच है कि यहूदी अपने-आपमें सक्रिय रूपसे हिंसक नहीं रहे हैं। परन्तु, उन्होंने यह कामना की है कि जर्मनोंपर मानव-जातिका अभिशाप पड़े और वे यह चाहते हैं कि अमेरिका और इंग्लैंड, उनकी ओरसे, जर्मनीसे लड़ें। यदि मैं अपने शत्रुपर वार करता हूँ, तो वह निस्सन्देह हिंसा है। किन्तु सच्चा अहिंसक होनेके लिए मुझे उससे प्रेम करना चाहिए और वह जब वार कर रहा हो तब भी मुझे उसके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करनी चाहिए। यहूदी सक्रिय रूपसे अहिंसक नहीं रहे हैं; अन्यथा वे, तानाशाहोंके कुकर्मोंके बावजूद, यही कहते, “हम उनके हाथों कष्ट भोगेंगे, क्योंकि कोई बेहतर रास्ता उन्हें मालूम नहीं है। पर हम जिस तरह वे चाहते हैं, उस तरह कष्ट नहीं भोगेंगे।” एक भी यहूदी यदि इस तरह करे तो वह अपने आत्मसम्मानको बचा सकेगा और ऐसा उदाहरण रखेगा जो, संक्रामक होनेपर, पूरे यहूदी समाजको बचा सकेगा। साथ ही, वह मानवजातिके लिए एक अमूल्य विरासत भी होगा।

आप पूछेंगे, चीनके बारेमें आप क्या कहते हैं। चीनियोंकी दूसरे लोगोंपर हमलेकी कोई योजना नहीं है। उन्हें नये इलाके हथियानेकी इच्छा नहीं है। शायद यह सच है कि चीन इस तरहके आक्रमणके लिए तैयार नहीं है; शायद जो उसका शान्तिवाद लगता है वह मात्र अकर्मण्यता है। हर हालतमें, चीनकी अहिंसा सक्रिय नहीं है। जापानके विरुद्ध उसकी साहसिक प्रतिरक्षा इस बातका पर्याप्त प्रमाण है कि चीन अपने संकल्पोंमें कभी अहिंसक नहीं रहा है। यह कहना कि वह अपनी प्रतिरक्षा कर रहा है, अहिंसाकी दृष्टिसे कोई उत्तर नहीं है। इसीलिए उसकी सक्रिय अहिंसाके लिए जब परीक्षाकी घड़ी आई, तो वह उसमें पूरा नहीं उतरा। यह कोई चीनकी आलोचना नहीं है। मैं चीनियोंकी सफलताकी कामना करता हूँ। स्वीकृत मानदण्डोंके अनुसार उनका व्यवहार बिलकुल सही है। परन्तु स्थितिकी यदि अहिंसाकी दृष्टिसे जाँच की जाये, तो मुझे कहना होगा कि चीन-जैसे ४० करोड़ जनसंख्यावाले और सुसंस्कृत राष्ट्रके लिए यह शोभनीय नहीं है कि वह जापानके आक्रमणका प्रतिरोध करनेके लिए जापानके ही तरीकोंका सहारा ले। चीनियोंमें यदि मेरी धारणावाली अहिंसा होती तो जापानके पास जिस तरहके नवीनतम विनाशकारी यन्त्र हैं, उनका कोई उपयोग

नहीं रह जाता। चीनी तब जापानसे कहते 'अपने सारे यन्त्र ले आओ, हम अपनी आधी आबादी तुम्हें अर्पित करते हैं। परन्तु बाकीके २० करोड़ तुम्हारे आगे घुटने नहीं टेकेंगे।' यदि चीनी ऐसा करते, तो जापान चीनका दास हो जाता।

और अपन तर्कके समर्थनमें उन्होंने शैलीकी कविता, 'द मास्क ऑफ अनार्की' की ये सुप्रसिद्ध पंक्तियाँ उद्धृत कीं : "तुम हो बहुत, वे हैं सिर्फ थोड़े-से" :

खड़े रहो शान्त और अडिग
घने खामोश जंगल की तरह,
बाँहें कसे, ऐसी भंगिमासे
जो अजेयताके संकल्पको वाणी दे रही हो।
आततायी तुमपर यदि टूटें,
उन्हें टूट पड़ने दो,
मार-काट, जोर-जुल्म
जो भी करें करने दो।
किया करें वे नर-संहार,
होओ मत भयभीत, होओ मत चकित,
चुक न जाये जोश उनका जब तक
बाँहें कसे, देखो बस अपलक।
शर्मसे गड़े वे तब लौटेंगे
वहीं, आये थे जहाँसे
खून जो बहाया है, बोलेगा
लज्जा बन उनके गालोंपर।
नींदसे जगे शेरों-से उठो
उठो अजेय संख्यामें,
सोते हुए गले पड़ी जंजीरें
ओसकी हैं बूँदें, इन्हें छितराओ
तुम हो बहुत, वे हैं सिर्फ थोड़े-से।

परन्तु इसपर यह आपत्ति की गई है कि अहिंसा यहूदियोंके मामलेमें तो ठीक है, क्योंकि वहाँ व्यक्ति और उसके उत्पीड़कोंके बीच व्यक्तिगत सम्पर्क रहता है, लेकिन चीनमें जापान ऐसी तोपों और ऐसे विमानोंके साथ आ रहा है जो बड़ी दूरसे मार करती हैं। जो व्यक्ति ऊपरसे मृत्यु-वर्षा करता है उसे यह जाननेका कभी अवसर नहीं रहता कि उसने किन्हें और कितनोंको मारा है। हवाई लड़ाईमें जब कोई व्यक्तिगत सम्पर्क रहता ही नहीं, तो अहिंसा उसका मुकाबला कैसे कर सकती है? इसका जवाब यह है कि मृत्युवाहक बमके पीछे मनुष्यका हाथ होता है जो बमको गिराता है, और उसके भी पीछे मानव-हृदय होता है जो उस हाथको चलाता

है। फिर आतंककी नीतिके पीछे यह धारणा रहती है कि आतंक यदि काफी मात्रामें प्रयुक्त किया जाये तो वांछित परिणाम पैदा करता है, अर्थात् प्रतिपक्षी अत्याचारीकी इच्छाके आगे घुटने टेक देता है। परन्तु मान लीजिए कि लोग यह संकल्प कर लेते हैं कि वे अत्याचारीकी इच्छा कभी पूरी नहीं करेंगे, और न ही उसका प्रतिकार अत्याचारीके तरीकोंसे करेंगे, तो अत्याचारी देखेगा कि आतंकको जारी रखनेसे कोई लाभ नहीं है। अत्याचारीको यदि पर्याप्त आहार दे दिया जाये तो एक समय आयेगा जब वह उससे बुरी तरह अघा जायेगा। दुनियाके सारे चूहे यदि आपसमें सलाह करके यह निश्चय कर लें कि वे बिल्लीसे डरेंगे नहीं, बल्कि सबके-सब सीधे उसके मुंहमें दौड़ेंगे, तो चूहे जीवित रहेंगे। मैंने एक बिल्लीको सचमुच चूहेके साथ खेलते देखा है। उसने उसे फौरन ही नहीं मार डाला, बल्कि अपने जबड़ोंमें दबाये रखा। वह उसे छोड़ देती थी, और जैसे ही वह भागनेकी कोशिश करता वह उसपर फिर झपट पड़ती थी। अन्त में वह चूहा सिर्फ भयसे ही मर गया। यदि चूहेने भागनेकी कोशिश न की होती, तो बिल्लीको खेलका मजा न आता। मैंने अहिंसाका पाठ अपनी पत्नीसे, उसे अपनी इच्छाके आगे झुकानेकी कोशिश करते हुए सीखा था। वह एक ओर तो मेरी इच्छाका दृढ़तासे प्रतिरोध करती थी और दूसरी ओर मेरी मूर्खतासे उसे जो यातना होती थी उसे चुपचाप शान्तिसे भोगती रहती थी। इससे आखिर मुझे अपने ऊपर शर्म आने लगी और अपनी इस मूर्खता-भरी धारणासे मुक्ति मिल गई कि मैं उसपर शासन करनेके लिए पैदा हुआ हूँ। अन्तमें, वह अहिंसामें मेरी गुरु बन गई। दक्षिण आफ्रिकामें मैंने जो-कुछ किया वह केवल सत्याग्रहके उसी नियमका प्रसार था जिसे वह अनिच्छासे अपने ऊपर लागू किया करती थी।

परन्तु अभ्यागतोंमेंसे एकने आपत्ति करते हुए कहा: आप हिटलर और मुसोलिनीको जानते नहीं हैं। उनमें किसी तरहकी नैतिक प्रतिक्रिया नहीं हो सकती। विवेक उनमें है ही नहीं और दुनियाकी रायका उनपर कोई असर नहीं होता। उदाहरणार्थ, यदि चेकोस्लोवाकियाके लोग आपकी सलाह मानकर इन तानाशाहोंका अहिंसासे मुकाबला करें, तो क्या वे इनके हाथोंमें नहीं खेलेंगे। इस बातको देखते हुए कि तानाशाहीकी परिभाषा ही अनैतिकता है, क्या नैतिक परिवर्तनका नियम उसके लिए ठीक रहेगा?

गांधीजी: आपके तर्कमें पहले ही यह मान लिया गया है कि मुसोलिनी और हिटलर-जैसे तानाशाहोंका सुधार असम्भव है। परन्तु अहिंसामें विश्वासका आधार यह धारणा है कि मानव-स्वभाव मूलतः एक-जैसा है और इसलिए वह प्रेमके प्रति अवश्य अपनी अनुकूल प्रतिक्रिया दिखाता है। यह याद रखना चाहिए कि अभी तक उन्हें अपनी हिंसाका सदा तुरन्त उत्तर मिला है। अपने जीवनमें उन्हें संगठित अहिंसात्मक प्रतिरोधका खास बड़े पैमानेपर कभी सामना नहीं करना पड़ा है। इसलिए, मेरे विचारमें यह केवल अत्यन्त सम्भव ही नहीं बल्कि अनिवार्य है कि हिंसाके प्रदर्शनकी उनमें चाहे जितनी क्षमता हो, पर अहिंसात्मक प्रतिरोधको उन्हें उससे श्रेष्ठ मानना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त, अहिंसाकी जो तकनीक मैंने चेक लोगोंके आगे रखी है,

उसकी सफलता तानाशाहों की सद्भावनापर निर्भर नहीं है। अहिंसात्मक प्रतिरोधी तो ईश्वरकी अमोघ सहायतापर भरोसा रखता है, जो अलंघनीय लगनेवाली कठिनाइयोंमें भी बराबर उसकी हिम्मत बाँधे रखती है। उसकी आस्था ही उसे अजेय बना देती है।

इसके प्रत्युत्तरमें उस अभ्यागतने कहा कि ये तानाशाह यह होशियारी बरतते हैं कि बल-प्रयोग नहीं करते, बल्कि जो-कुछ उन्हें चाहिए उसपर बस कब्जा कर लेते हैं। इन परिस्थितियोंमें अहिंसात्मक प्रतिरोधी क्या कर सकते हैं?

गांधीजी : मान लीजिए, वे आते हैं और खानों, फैक्ट्रियों और चेक लोगोंके प्राकृतिक सम्पदाके सभी स्रोतोंपर कब्जा कर लेते हैं। तब उसके तीन परिणाम हो सकते हैं : (१) आदेशोंकी अवज्ञा करनेपर चेक लोगोंका संहार किया जाये। वह चेक लोगोंकी शानदार विजय होगी और उससे जर्मनीका पतन शुरू हो जायेगा। (२) जबर्दस्त सैन्य शक्तिके आगे चेक लोगोंका हौसला टूट सकता है। सभी संघर्षोंमें यह परिणाम आम तौरपर सामने आता है। परन्तु हौसला यदि टूटता है तो वह अहिंसाके कारण नहीं टूटेगा, वह अहिंसाके न होने या काफी मात्रामें न होनेके कारण ही टूटेगा। (३) तीसरी चीज यह हो सकती है कि जर्मनी कब्जेमें आये नये स्रोतोंका उपयोग अपनी फालतू आबादीको धन्वेमें लगानेके लिए करे। इसे भी हिंसात्मक प्रतिरोधसे रोका नहीं जा सकेगा, क्योंकि हम यह मान चुके हैं कि हिंसात्मक प्रतिरोधका सवाल पैदा नहीं होता। इस तरह सभी कल्पनीय परिस्थितियोंमें अहिंसात्मक प्रतिरोध ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

मैं यह नहीं मानता कि हिटलर और मुसोलिनी दुनियाकी रायसे आखिर बिलकुल अछूते रह सकते हैं। लेकिन आज इन तानाशाहोंको दुनियाकी रायकी अवज्ञा करनेमें इसलिए सन्तोष मिलता है कि तथाकथित बड़ी शक्तियाँ इनके सामने निर्दोष रूपमें आ नहीं सकतीं, और इनके मनमें यह कसक है कि बड़ी शक्तियोंने इनके लोगोंके साथ पहले अन्याय किया है। अभी उस दिन एक आदरणीय अंग्रेज मित्रने मेरे आगे यह स्वीकार किया कि नाजी जर्मनी इंग्लैंडके पापका फल है, और वासई-सन्धिने ही हिटलरको जन्म दिया है।

प्रश्न : एक ईसाईके नाते मैं अन्तर्राष्ट्रीय शान्तिमें किस तरह योग दे सकता हूँ? अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता कैसे खत्म की जाये और अहिंसाको शान्तिकी स्थापनाके लिए कैसे कारगर बनाया जाये? पराधीन राष्ट्रोंकी बात छोड़ दें, पर चोटोके राष्ट्रोंको निरस्त्रीकरणके लिए कैसे तैयार किया जाये?

उ० : एक ईसाईके नाते आप अहिंसात्मक कार्रवाई द्वारा प्रभावशाली योगदान कर सकते हैं, यद्यपि उसमें आपको सर्वस्व गँवाना पड़ सकता है। बड़ी शक्तियाँ जब तक साहसके साथ अपनेको निरस्त्र करनेका फैसला नहीं करेंगी, कभी शान्ति स्थापित नहीं हो सकेगी। मुझे ऐसा लगता है कि हालकी घटनाएँ बड़ी शक्तियोंमें यह विश्वास जगा कर रहेंगी। मेरी यह निश्चित आस्था है—और आधी सदी तक अहिंसापर बराबर अमल करते रहनेके बाद यह आस्था आज पहलेसे कहीं मुद्द हो गई है

— कि मानव-जाति की रक्षा केवल अहिंसा से ही हो सकती है, और जहाँ तक मैं 'बाइबिल' को समझ पाया हूँ, उसकी मुख्य शिक्षा भी यही है।

प्र० : आपने कहा है कि जहाँ तक भारत का सवाल है, आपको आशा है कि वह अहिंसा पर जमा रहेगा। यह आशा किन लक्षणों पर आधारित है ?

उ० : यदि आप बाहरी प्रमाण चाहें तो वैसे तो मैं कोई दे नहीं सकता। पर अपने अन्तःकरण में मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि यह देश कोई और मार्ग नहीं अपनायेगा। आपको यह याद रखना चाहिए कि जो-कुछ मैंने उत्तर-पश्चिम सीमा-प्रान्त में देखा है अभी मैं उससे अभिभूत हूँ। जो-कुछ वहाँ मैंने देखा मैं उसके लिए तैयार नहीं था। वे इसके [अहिंसा के] लिए बहुत ही उत्सुक हैं और उनके दिलों में गहरी सच्चाई है। उन्हें खुद अहिंसा में प्रकाश और आशा दिखाई दे रही है। खान साहब ने मुझे बताया कि इससे पहले सब ओर अंधेरा था, एक भी परिवार ऐसा नहीं था जिसकी कुछ दूसरे परिवारों से जानी दुश्मनी न हो। वे इस तरह रहते थे जैसे एक माँद में कई शेर रह रहे हों। यद्यपि पठान सदा चाकू, खंजर और राइफल से लैस रहते थे, फिर भी वे इस भय से कि कहीं उनकी नौकरी न चली जाये, अपने बड़े अफसरों से बहुत आतंकित रहते थे। हजारों लोगों में वह स्थिति अब बदल गई है। जो पठान खान साहब के अहिंसात्मक आन्दोलन के प्रभाव में आये हैं, उनमें जानी दुश्मनी बीते जमाने की बात होती जा रही है। जीविका के लिए छोटी-मोटी नौकरियों पर निर्भर रहने की बजाय, उन्होंने खेती की ओर मुँह मोड़ा है, और यदि वे अपना वायदा पूरा कर पाये तो शीघ्र ही उद्योगों की ओर मुड़ेंगे।

प्र० : आपका उपासना का ढंग क्या है ?

उ० : हम प्रातः ४.२० पर और सायं ७ बजे सम्मिलित प्रार्थना करते हैं। यह क्रम वर्षों से चला आ रहा है। हम 'गीता' के श्लोकों और अन्य मान्य धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करते हैं, तथा संतों के भजन भी गाते या पढ़ते हैं। व्यक्तिगत उपासना का तो वर्णन नहीं किया जा सकता। वह निरन्तर और अचेतन रूप से भी चलती रहती है। कोई क्षण ऐसा नहीं जाता जब मुझे एक ऐसे द्रष्टा की उपस्थिति की अनुभूति न होती हो जिसकी दृष्टि से कुछ भी छिपा नहीं है, और मैं उससे तालमेल रखने के लिए प्रयत्नशील रहता हूँ। मैं ईसाई मित्रों की तरह प्रार्थना नहीं करता हूँ। इसलिए नहीं कि मुझे उसमें कोई दोष लगता है, बल्कि इसलिए कि शब्द मेरे मुँह से नहीं निकलते। मैं समझता हूँ कि यह सब आदत की बात है।

प्र० : आपकी प्रार्थना में क्या याचना भी की जाती है ?

उ० : होती भी है और नहीं भी। ईश्वर हमारी जरूरतों को जानता है और उन्हें पहले से ही पूरा कर देता है। उसे मेरी याचना की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मुझे, एक बहुत ही अपूर्ण मानव प्राणी होने के कारण, उसकी रक्षा की आवश्यकता है, जैसे कि बच्चे को पिता के संरक्षण की आवश्यकता होती है। पर मैं यह भी जानता हूँ कि मेरे कुछ भी करने से उसकी योजनाओं में कोई परिवर्तन नहीं आना है। आप चाहें तो मुझे भाग्यवादी कह सकते हैं।

प्र० : क्या आपको अपनी प्रार्थनाका कोई उत्तर मिलता है ?

उ० : इस मामलेमें मैं अपनेको बड़ा सौभाग्यशाली मानता हूँ। उसके उत्तरका मुझे कभी अभाव नहीं रहा। क्षितिजपर जब गहनतम अन्धकार छाया था — जेलोंमें अपनी अग्नि-परीक्षाओंके दौरान जब मेरे सामने कठिनाइयाँ-ही-कठिनाइयाँ थीं — मैंने उसे अपने सबसे निकट पाया। जीवनमें एक भी क्षण मुझे ऐसा याद नहीं आता जब मैंने यह महसूस किया हो कि ईश्वरने मुझे त्याग दिया है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २४-१२-१९३८

२३८. सन्देश : सी० के० गिबबनको^१

[१२ दिसम्बर, १९३८ या उसके पूर्व]^१

आप ऐंग्लो-इंडियन समाजको स्वतन्त्र भारतके नागरिकोंके नाते अपने कर्तव्यके प्रति सजग करनेका जो प्रयास कर रहे हैं, मैं उसकी सफलताकी कामना करता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, १३-१२-१९३८

२३९. हिन्दू-मुस्लिम एकता

स्व० मौलाना शौकत अलीके स्मारकके बारेमें मैंने कई तजवीजें पढ़ी हैं।^१ ज्योंही मुझे मौलाना साहबकी मृत्युके बारेमें मालूम हुआ, जिसकी कि अभी बिलकुल ही आशा नहीं थी, मैंने कुछ मुसलमान मित्रोंको अपने अन्तस्तलकी समवेदना प्रकट करते हुए लिखा। उनमें से एक मित्रने लिखा है :

सच्ची और स्थायी हिन्दू-मुस्लिम एकताकी कितनी तात्कालिक और सख्त जरूरत है, इस विषयमें दो रायें नहीं हो सकतीं। जितनी जल्दी यह एकता होगी, उतना ही सबके लिए यह हितकर होगा। इस मामलेमें देर करनेके इतने गम्भीर चिन्ताजनक परिणाम हो सकते हैं, जिनकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। आज जो हालत है उससे अत्यन्त भयानक स्थिति आ सकती है, जिसे, जहाँ तक सम्भव हो, रोकना ही चाहिए। मैं यह जानता हूँ कि शौकत अपने ढंगसे सच्चा हिन्दू-मुस्लिम समझौता करानेके लिए सचमुच चिन्तित थे।

१. ऐंग्लो-इंडियन सिविल लिबर्टीज एसोसिएशनके महासचिव।

२. जिस समाचारके अन्तर्गत यह सन्देश छपा था, उसपर १२ दिसम्बर, १९३८ तारीख पड़ी थी।

३. शौकत अलीकी मृत्यु २७ नवम्बरको हुई थी।

स्वर्गमें उनकी आत्माको, यह जानकर कि उनका एक जीवन-उद्देश्य आखिर पूरा हो गया, जितनी शान्ति मिलेगी उतनी किसी दूसरे कामसे नहीं मिल सकती। ऐसे भी लोग हो सकते हैं जिन्हें इसमें सन्देह हो। लेकिन चूँकि मैं मौलानाको और उनका दिमाग किस तरह काम करता था इस बातको खूब अच्छी तरह जानता हूँ, इसलिए यह बात पूरे विश्वासके साथ कह सकता हूँ।

मैं इस रायसे पूर्णतया सहमत हूँ कि बावजूद इसके कि मौलाना साहब कभी-कभी जोशमें आकर उट्टी बात बोल जाते थे, पर उनके दिलमें एकता और शान्ति के लिए वही तमन्ना थी जिसके लिए कि वह खिलाफतके दिनोंमें बड़े मोहक ढंगसे बोलते और काम करते थे। मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों कौमोंका एकताके लिए किया हुआ संयुक्त निश्चय ही उनका सबसे सच्चा स्मारक होगा — खाली कागजी एकताका निश्चय नहीं, बल्कि दिली एकताका निश्चय, जिसका आधार सन्देह और अविश्वास नहीं, बल्कि आपसी विश्वास होना चाहिए। कोई दूसरी एकता हमें नहीं चाहिए, और बगैर उस एकताके हिन्दुस्तानको सच्ची आजादी भी हासिल नहीं होगी।

सेगाँव, १२ दिसम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-१२-१९३८

२४०. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

१२ दिसम्बर, १९३८

प्रिय कु०,

मेरा खयाल है सायंकाल ५ का समय बहुत ठीक रहेगा।^१ यदि कोई दूसरा समय अधिक उपयुक्त हो, तो मैं अपना कार्यक्रम उसीके अनुसार कर लूँगा।

वापूके आशीर्वाद

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१४६) से।

२४१. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

१२ दिसम्बर, १९३८

चि० अमला,

पाँच रुपये मिले। तू चाहे मार्गरेट स्पीगल नामसे हस्ताक्षर कर, मेरे लिए तो अमला ही रहेगी। लिफाफेपर मैं जैसा तू चाहे वैसा पता लिखूंगा।

तेरी तबीयत ठीक रहती होगी।

गुजरातीका थोड़ा भी अभ्यास कर ले, तो अच्छा हो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीसे : स्पीगल पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

२४२. पत्र : बलवन्तसिंहको

१२ दिसम्बर, १९३८

चि० बलवन्तसिंह,

तुमारा क्रोध तुमको और गायको खा जायगा। मैं सब चीज नहीं देख सकता हूँ इसलिए मैंने सबको यह काम सिपुर्द किया। तुमारे पास प्लान नहीं है। मेरे पास अखूट भंडार रहता तो मैं आंख बंद करके तुमका खर्च करने देता। मर्यादा कहां है मुझे जानना न चाहीये। तुमको मैं विशारद नहीं मानता। मेरा अखूट विश्वास तुम पर है और धीरज है। इसलिये तो आगे बड़ता जाता हूँ। हां मैं १०० से भी अधिक गाय रखना चाहता हूँ लेकिन मेरे पास प्लान कहां है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

धीरजसे तुमारे साथियोंको नहीं समझा सकोगे तो सेवा किस तरह करोगे।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९१२) से।

२४३. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

सेगाँव, वर्धा

१२ दिसम्बर, १९३८

चि० ब्रजकृष्ण,

मैंने जो किया था वह भाईके लिये नहि चल सकता है। सिवाय सोडाके कुछ दवाई तो ली ही नहीं सिर्फ फलोके रस पर रहा था। मालीग, कटीस्नान वगैरा चलता था। बीचमे कुछ खानेका प्रयत्न करता था तो ज्यादा बीमार पडता था। अंतमें बकरीके दूधने मुझे जान बक्षी।

वही जो इलाज हो सके करो। सरस्वती कुछ करे तो देखो। पुना ले जाना है तो वहां ले जाओ।

सत्यवतीका प्रश्न कठिन है। वह पूरे इलाज भी नहीं करेगी।

मीरठवाले उत्तर नहीं देते है सो आश्चर्य है। मैं लिखता हूँ। मेरी और महादेवकी तबीयत अच्छी है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मीलोके बारेमें मेरी मति नहीं चलती है सिवाय कि मजदूरोंको संगठित करें।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४५८) से।

२४४. पत्र : हरसरन वर्माको

सेगाँव, वर्धा

१२ दिसम्बर, १९३८

भाई हरसरन वर्मा,

तुमारा खत मिला है। अच्छा किया मुझको लिखा। जो मुझको लिखा है वह कांग्रेस कमेटीके पास भी रखना चाहिये।

मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ९०) से।

२४५. भेंट : सेलिस्टीन स्मिथको'

[१३ दिसम्बर, १९३८ के पूर्व]'

मैंने किसी लड़कीके आनेकी बात कभी सोची न थी। अपने घरसे इतनी दूर आनेवाली किसी लड़कीकी जिम्मेदारी लेना सम्भव है हमारी शक्तिसे कुछ ज्यादा सिद्ध हो। परन्तु आप देख सकती है कि मेरे इर्द-गिर्द यहाँ काफी लड़कियाँ हैं और यदि एक लड़की इस तरह अमेरिकासे यहाँ आ भी जाती है तो उसके यहाँ आनेकी मुझे ज्यादा चिन्ता नहीं होगी बशर्ते कि वह यहाँका यह अविश्वसनीय रूपसे सादा जीवन —उसे तो यह ऐसा ही लगेगा — बिता सके। यहाँ वह जो-कुछ सीख सकती है या यहाँ से जो-कुछ वह अपने साथ ले जा सकती है, वह है सादे जीवनका रहस्य। अमेरिकामें जीवन चाहे कितना भी सादा क्यों न हो वह यहाँके जीवनकी सादगीकी तुलनामें कदापि नहीं ठहर सकता। मैं नहीं जानता कि अमेरिका ऐसी सादगी अपना सकता है या ऐसी सादगी पसन्द भी करता है या नहीं। दूसरी जो चीज वह अपने साथ ले जा सकती है, वह है अहिंसाकी भावना। यह इस बात पर निर्भर है कि यदि यहाँ वातावरणमें अहिंसा व्याप्त है तो शब्दों या भाषणोंकी सहायताके बिना वह इसे कितना आत्मसात कर सकती है। यदि यहाँ वातावरणमें अहिंसा न हो तो लेखों और भाषणों के द्वारा वह इसे नहीं समझ पायेगी और न आत्मसात ही कर पायेगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २१-१२-१९३८

२४६. देशी राज्योंके सम्बन्धमें कांग्रेस कार्य-समितिके प्रस्तावका मसविदा'

१३ दिसम्बर, १९३८

देशके बहुत-से हिस्सोंमें देशी राज्योंकी जनतामे जो जागृति पैदा हुई है, कार्य-समिति उसका स्वागत करती है और समझती है कि तमाम हिन्दुस्तानकी जिस बड़ी

१. प्यारेलाल के “वीकली लेटर” से उद्धृत। सेलिस्टीन स्मिथ न्यूयार्क के ‘यंग विमेन्स क्रिश्चियन एसोसिएशन’ के नीग्रो-विभागकी सचिव थीं। वह वर्षों शिक्षा-योजनासे प्रभावित हुई थीं और जानना चाहती थीं कि वह अपनी संस्थाकी एक लड़की वहाँ भेज सकती हैं या नहीं; और यदि वह उसे वहाँ भेजे तो वह क्या सीखेगी और अमेरिका के लिए उसकी देन क्या होगी।

२. सेलिस्टीन स्मिथका गांधीजी के साथ एक फोटोग्राफ १३ दिसम्बरके **बॉम्बे क्रॉनिकल** में प्रकाशित हुआ था। उससे यह संकेत मिलता है कि वे इस तारीखसे पहले मिले थे।

३. **इंडियन ऐनुअल रजिस्टर** के अनुसार प्रस्तावका मसविदा गांधीजी ने तैयार किया था।

आजादीके लिए कांग्रेस इतने दिनोंसे कोशिश कर रही है, उसके लिए यह बहुत ही आशाजनक चिह्न है। देशी राज्योंमें राजाओंकी छत्रच्छायामें नागरिक स्वाधीनता और उत्तरदायी शासनकी प्रजाकी जो माँग है, उसका यह समिति समर्थन करती है और वह कह देना चाहती है कि देशी रजवाड़ोंमें आजादी और आत्माभिव्यक्तिके जो आन्दोलन चल रहे हैं उनके साथ कांग्रेस पूरी तरह आत्मीयता प्रकट करती है। समितिको यह जानकर खुशी है कि कुछ राजा प्रजाकी इस जागृतिको विकासका चिह्न समझते हैं और अपनेको समयकी गतिके साथ बदलकर प्रजाके साथ सहयोग कर रहे हैं। समिति उनके इस कामकी कद्र करती है, लेकिन उसे इस बातपर दुःख है कि अन्य कई राजा इन आन्दोलनोंका दमन कर रहे हैं। वे शान्तिप्रिय और वैध संस्थाओं तक को अवैध करार दे रहे हैं। किसी भी प्रकारका राजनीतिक कार्य नहीं होने देते। कहीं-कहीं तो निर्दय और अमानुषिक दमनसे काम लिया जा रहा है। खास तौरपर समिति इस बातको बहुत ही निन्दनीय समझती है कि कुछ राजा अपनी प्रजाको कुचलनेके लिए ब्रिटिश सरकारकी मदद लेनेकी कोशिश कर रहे हैं। समिति इस बातका ऐलान कर देना चाहती है कि देशी राज्योंके अन्दर उत्तरदायी शासनकी माँगके लिए वहाँ जो समुचित आन्दोलन होंगे उनके दमनके लिए अगर ब्रिटिश अधिकारी राजाओंको फौज या पुलिसकी बेजा मदद दें, तो कांग्रेसको भी यह अधिकार है कि वह प्रजाकी रक्षा करे।

समिति नये सिरसे सब लोगोंका ध्यान हरिपुरा-कांग्रेसके उस प्रस्तावकी तरफ दिलाना चाहती है जिसमें राज्योंके बारेमें कांग्रेसकी नीति बिलकुल साफ कर दी गई है। कांग्रेसको इस बातका अधिकार ही नहीं है, बल्कि वह इस बातको अपना विशेषाधिकार भी समझती है कि वह देशी राज्योंमें प्रजाके नागरिक अधिकारों और उत्तरदायी शासनकी माँगके लिए कोशिश करे; मगर मौजूदा हालतको ध्यानमें रखते हुए उसे इस कामकी कुछ सीमाएँ माननी पड़ी हैं और सावधानीका खयाल उसे सीधे तौरपर संस्थाकी हैसियतसे रियासतोंकी भीतरी लड़ाइयोंमें हिस्सा लेनेसे रोकता है। कांग्रेसने अपनी यह नीति लोगोंकी सर्वोत्तम भलाईका खयाल करके, उन्हें अपनी शक्ति और अपने स्वावलम्बनके भावका विकास करनेका मौका देनेके उद्देश्यसे तय की थी। इस नीतिका एक हेतु यह भी था कि कांग्रेस अपनी तरफसे देशी राज्योंके प्रति सद्भाव ही प्रकट करे और यह उम्मीद जाहिर करे कि देशी रियासतोंके राजे-महाराजे खुद ही अपने-आप हवाके रुख को पहचान लेंगे और उसे पहचानकर लोगोंकी न्याययुक्त आकांक्षाओंको पूरा करेंगे। अनुभवने यह साबित कर दिया है कि हरिपुरा-कांग्रेसमें तय की गई यह नीति बुद्धिमानीकी नीति थी, लेकिन इस नीतिके ये माने कभी नहीं थे कि कांग्रेस उससे वैधी हुई है। कांग्रेसने अपना यह अधिकार हमेशा सुरक्षित रखा है, जैसा कि उसका फर्ज है, कि वह देशी राज्योंकी प्रजाको ठीक रास्ता दिखाये और उन्हें अपने असरकी पूरी-पूरी मदद दे। इन दिनों देशी राज्योंकी प्रजामें जो अपूर्व जागृति दिखाई देती है, उससे यह स्पष्ट है कि कांग्रेसको देशी राज्योंकी प्रजाका उत्तरोत्तर ज्यादा साथ देना है।

हरिपुरा-कांग्रेसने जो नीति निर्धारित की थी और जो अनुभवसे बिल्कुल ठीक साबित हुई है, उसपर कांग्रेस चलती रहेगी। इसलिए देशी राज्योंमें उत्तरदायी शासनके लिए जो आन्दोलन हो रहे हैं उनका जहाँ कांग्रेस हार्दिक स्वागत करती है, वहाँ वह जनताको यह सलाह भी देती है कि जो लोग सम्बन्धित राज्योंके रहनेवाले नहीं हैं, वे उन राज्योंमें होनेवाले सत्याग्रह वगैरहमें भाग न लें। ऐसे आन्दोलनोंमें बाहरके लोगोंके शामिल होनेसे राज्यके आन्दोलनोंको सच्ची शक्ति नहीं मिलेगी। इतना ही नहीं, उससे राज्यकी प्रजाको हानि भी पहुँच सकती है और वे उन्हें अपना निजी जन-आन्दोलन विकसित करनेसे भी रोक सकते हैं, क्योंकि प्रजाकी असली शक्ति और सफलता निजी जन-आन्दोलनपर ही निर्भर करती है।

समिति इस बातका विश्वास करती है कि देशी राज्योंमें होनेवाला हरएक आन्दोलन कांग्रेसकी अहिंसाकी मौलिक नीतिपर कड़ाईके साथ आरुढ़ रहेगा।

[अंग्रेजीसे]

इंडियन नेशनल कांग्रेस, फरवरी १९३८ से जनवरी १९३९, पृ० ६९-७०

२४७. पत्र : बलवन्तसिंहको

१३ दिसम्बर, १९३८

चि० बलवन्तसिंह,

अब तो समझे कि मैंने तो तुमारी वकालत चिमनलालके पास की कि गायोंको दो जगह रखनेकी आवश्यकता नहीं है। मैं जो चाहता हूँ वह यह कि सब मित्र के गाय और उसका परिवार मिलकर सो तक चला जाय तो उसके लिये क्या खर्च होगा और उसमें से हमको कितनी आमद होगी। मजदूर तो हो लेकिन जब प्लान नहीं है तो जिसको पैसे इकट्ठे करना है उसको तो प्लान चाहीये। इसलिये मैंने कहा यहां जितने है वे मिल कर कुछ बना लेवे तो उस पर मैं विचार कर सकुं। अगर तुमारी और पारनेरकरकी बन जाती तो मेरा रास्ता कुछ खुल सकता था। मैं तो जल्दीसे इस कामको कर लेना चाहता हूँ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९१५) से।

२४८. तार : पट्टम् ताणु पिल्लैको

वर्धा

१४ दिसम्बर, १९३८

ताणु पिल्लै
राज्य-कांग्रेस
त्रिवेन्द्रम्

मेरा स्पष्ट विचार है कि मुकदमा चलाये जानेके बावजूद आपको सुनवाई आरम्भ होनेसे पहले ही अपने आरोप वापस ले लेने चाहिए। यदि अदालत कार्रवाई जारी रखे तो भी आपको यह कहते हुए अपना बचाव पेश करनेसे इनकार कर देना चाहिए कि आपको जो परामर्श मिला है और जिसे आप सही मानते हैं उसके अनुसार आपने निश्चय किया है कि आरोपोंको आगे न बढ़ाया जाये क्योंकि वे उत्तरदायी सरकार स्थापित करनेकी व्यापकतर नीतिसे मेल नहीं खाते।

गांधी

मूल अंग्रेजीसे : पट्टम् ताणु पिल्लै पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

२४९. पत्र : भूलाभाई जे० देसाईको

सेगाँव

१४ दिसम्बर, १९३८

भाई भूलाभाई,

नरीमनका पत्र पढ़ा। मुझे तो लगता है, उसके साथ भारी अन्याय हुआ है। यदि इस पत्रसे अलग और कुछ न हो, और मेरी मान्यता ठीक हो, तो कल जब हम बैठें, तब तुम्हीं बातको सुधार लो तो अच्छा हो। तुम अपनी ओरसे पहले ही सुझाव रखो, इसलिए यह लिखा है। मैंने वल्लभभाईको मोटरमें से ही लिखा था। लेकिन अब देखता हूँ मुझे तुम्हें लिखना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीसे : भूलाभाई देसाई पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

२५०. पत्र : सुशीला गांधीको

सेगाँव, वर्धा
१६ दिसम्बर, १९३८

चि० सुशीला,

बा को लिखा तेरा पत्र पढ़ा। तुझे यहाँ घसीटना मुझे तो अच्छा लगता है, लेकिन अभी नहीं बुलाऊँगा। बारडोलीमें जितने दिन रह सके, रहना। यहाँ मैं तो कामके सारे सिर उठा नहीं सकता, फिर तुझे क्या बुलाऊँ?

तूने जो टीके लगवाये थे, उसकी सूजन अब कम हो गई होगी।

नानाभाईकी तबीयत ठीक होगी। तुम्हारा पहली तारीखको ही मेरे पास आ जाना क्या बहुत जल्दी माना जायेगा?

यहाँ इस बीच लोगोंका आना-जाना काफी रहता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८९०) से।

२५१. तार : जैनव २० पटेलको^१

[१६ दिसम्बर, १९३८]^२

जमनालालजीके तारसे यह शोक समाचार मिला। तुम सबके लिए मेरे हृदयमें संवेदना और प्रार्थना है। मैं जानता हूँ कि तुम बहादुर हो। आशा है कि डॉक्टरकी परम्पराको परिवार पूरी तरह कायम रखेगा। सप्रेम।

बापू

[अंग्रेजीसे]

बाँम्बे क्रॉनिकल, १७-१२-१९३८

१. सुप्रसिद्ध फ्रीमेसन डॉ० राजव अली विश्राम पटेलकी पत्नी। १९२१ के असहयोग-आन्दोलनमें डॉक्टरने ५०,००० रुपया दान दिया था और वह राशि महात्मा गांधीको अपनी इच्छानुसार खर्च करनेके लिए सौंप दी थी।

२. डॉ० राजव अलीका देहान्त १६ दिसम्बर, १९३८ को हुआ था।

२५२. तार : पट्टम् ताणु पिल्लैको

वर्धा

[१७ दिसम्बर, १९३८]^१

ताणु पिल्लै

अध्यक्ष राज्य-कांग्रेस

त्रिवेन्द्रम्

आपको मेरी जोरदार सलाह है कि त्रिवेन्द्रम्के समीप किये जानेवाले सम्मेलन और वाइसरायके आगामी दौरेके समय किये जानेवाले प्रदर्शनोंपर लगाये गये मौजूदा प्रतिबन्धका प्रतिरोध न किया जाये। मेरी यह भी सलाह है कि उत्तेजक प्रतिबन्धोके बावजूद सविनय अवज्ञाको अस्थायी रूपसे स्थगित कर दिया जाये। स्वतन्त्रतापर लगाये गये कष्टप्रद प्रतिबन्धोंका सहर्ष पालन करना सविनय अवज्ञाकी कला सीखनेका एक पाठ होगा।

गांधी

मूल अंग्रेजीसे : पट्टम् ताणु पिल्लै पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय ।

२५३. तार : पट्टम् ताणु पिल्लैको

वर्धा

१७ दिसम्बर, १९३८

ताणु पिल्लै

अध्यक्ष राज्य-कांग्रेस

त्रिवेन्द्रम्

[आरोप-पत्र] निम्न प्रकार वापस ले लिया जाये। गम्भीरतासे और प्रार्थनापूर्वक सोच-विचार करके हम इस निष्कर्षपर पहुँचे हैं कि दीवानके खिलाफ जो आरोप-पत्र महाराजा साहबकी सेवामें पेश किया गया है उसे उत्तरदायी सरकार स्थापनाके महत्तर संघर्षके हितमें बिना शर्त वापस ले लिया जाये। अपने आरोप पूर्णतया और स्पष्ट शब्दोंमें वापस लेनेके साथ ही यदि

१. मूल तारमें मात्र '१७' तारीख है। किन्तु ९ जनवरी, १९३९ को वाइसराय वावणकोर पहुँचे थे, इस तथ्यको देखते हुए तारकी यह तिथि निर्धारित की गई है।

हम यह नहीं कहते कि हमने पूरी जिम्मेदारीके साथ और एकपक्षीय प्रमाणपर आधारित कथनकी सचाईमें पूरा विश्वास रखकर ही आरोप लगाये थे तो हम अपने प्रति, अपने महान् उद्देश्यके प्रति और जनताके प्रति ईमानदार नहीं रहेगे। लगाये गये आरोपोंकी सत्यतामें हमारा विश्वास कायम है किन्तु अब हम इस मतपर पहुँचनेपर बाध्य हो गये है कि हमारा उन आरोपोपर डटे रहना त्रावणकोरमे उत्तरदायी सरकार कायम करानेके महान् संघर्षके लिए अहितकर होगा। अतः हम उन आरोपोंको वापस लेते है और जनतासे हमारा अनुरोध है कि वह आरोपोसे या उनमे हमारे विश्वाससे प्रभावित न हो। यदि उक्त प्रत्याहारके बावजूद प्राभियोजन चलाया जाये तो बादमे अदालतमें निम्न बात भी कहिए। हमें खेद है कि सरकारी वकील आरोपोके हमारे प्रत्याहारसे सन्तुष्ट नहीं है। हमें जो-कुछ भी दण्ड दिया जाये उसे हम सहर्ष स्वीकार करेंगे क्योंकि हमारे बिला शर्त प्रत्याहारका अर्थ ही है कि हमने कानूनी दण्डसे बचनेके लिए नहीं प्रत्युत उत्तरदायी सरकारके महत्तर उद्देश्यके हित-साधनकी खातिर आरोपोंको वापस ले लिया है। अतः बचाव पेश करनेका हमारा कोई इरादा नहीं है और चूँकि हमने आरोपोंका प्रत्याहार किया है, हमारे लिए अपनेको दोषी स्वीकार कर लेना सम्भव नहीं है।

गांधी

मूल अंग्रेजीसे : पट्टम् ताणु पिल्लै पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

२५४. सन्देश : इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्र-संघको^१

[१८ दिसम्बर, १९३८ के पूर्व]^२

मेरा यह विश्वास है कि अहिंसाके सिवा कोई और चीज हमारी कठिनाइयोंको दूर नहीं कर सकती।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, २१-१२-१९३८

१. यह सन्देश विश्वविद्यालय सेनेट हॉलमें गांधीजी के चित्रके अनावरणके समय भेजा गया था।

२. यह सन्देश दिनांक १८ दिसम्बर, १९३८ के अन्तर्गत दी गई रिपोर्टमें छपा था।

२५५. पत्र : सुभाषचन्द्र बोसको

सेगाँव, वर्ध
१८ दिसम्बर, १९३८

अत्यन्त गोपनीय

प्रिय सुभाष,

मैं यह पत्र बोलकर ही लिखवाऊँगा क्योंकि मैं अभी अपनी आँखोंसे काम नहीं लेना चाहता। मौलाना साहब, नलिनी बाबू^१ और घनश्यामदासजी मुझे यह पत्र लिखवाते सुन रहे हैं। बंगाल-मन्त्रिमण्डलके बारेमें हमारी विस्तृत बातचीत हुई। मेरा यह विश्वास आज पहलेकी अपेक्षा और दृढ़ हो गया है कि हमें मन्त्रिमण्डलको गिरानेकी कोशिश नहीं करनी चाहिए। उसमें हेर-फेर करवानेसे भी कोई लाभ नहीं होगा। और सम्भवतः मन्त्रिमण्डलमें कांग्रेसियोंके शामिल किये जानेसे हमें हानि बहुत होगी। इसलिए मैं यह महसूस करता हूँ कि प्रशासनको अपेक्षाकृत शुद्ध बनाने और निश्चित कार्यक्रम तथा नीतिको चालू रखनेका सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि हम जो भी सुधार चाहते हों, उन्हें हम वर्तमान मन्त्रिमण्डलसे ही सम्पन्न करवानेकी कोशिश करें। जब कोई असली महत्वका प्रश्न उठे और मन्त्रिमण्डल देशके हितोंके विरुद्ध निर्णय ले, तब उसी बिनापर नलिनी बाबूको मन्त्रिमण्डलसे बाहर आ जाना चाहिए, और वे कह रहे हैं कि वे ऐसा ही करेंगे भी। उस हालतमें उनका मन्त्रिमण्डलसे अलग होना शोभाजनक और पूरी तरह न्यायसंगत होगा। मुझे मालूम हुआ है, जहाँ तक म्युनिसिपल-कानूनमें संशोधनका सम्बन्ध है, अनुसूचित वर्गके पृथक् निर्वाचक-मण्डल बनानेकी बात छोड़ दी गई है। मुसलमानोंके पृथक् निर्वाचक-मण्डलका आग्रह अब भी किया जा रहा है। कह नहीं सकता कि विरोधको इस हद तक ले जाना ठीक होगा या नहीं कि समझौतेका कोई रास्ता ही न रह जाये। यदि मुसलमानोंका मत स्पष्ट रूपसे पृथकताके पक्ष में हो तो मेरा विचार है कि बुद्धिमत्ता इसीमें है कि उन्हें सन्तुष्ट कर दिया जाये। मैं नहीं चाहूँगा कि वे इस बातको कांग्रेसके विरोधके बावजूद मनवा लें। उस हालतमें तो यह बात कांग्रेसके खिलाफ जायेगी।

यदि आप मेरी राय मानते हों तो कैदियोंकी रिहाईका मामला आजकी अपेक्षा बहुत ज्यादा आसान बन जायेगा। और यदि यह राय आपको अच्छी लगती हो तो नई नीतिके बारेमें खुली घोषणा कर देनी चाहिए। उम्मीद है कि इससे बंगालमें व्याप्त तनावमें कमी आ जायेगी और बंगालमें उत्साहहीनताकी स्थिति स्वतः समाप्त हो

१. नलिनी रंजन सरकार, बंगालके वित्त मन्त्री।

जायेगी। मौलाना साहब इस बातसे पूरी तरह सहमत हैं और नलिनी बाबू तथा घनश्यामदास भी।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी प्रति (सी० डब्ल्यू० ७७८४) से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला।

२५६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेगाँव, वर्धा

[१८ दिसम्बर, १९३८ के पश्चात्]^१

भाई वल्लभभाई,

सारे कागजात^१ पढ़ लिये। मामला भयंकर है। ठाकुर साहब बूढ़ रहें तो अभी सब कुछ निपट जाये। पर उनके दूढ़ रहनेके विषयमें मुझे शक है। कागजोंसे जो कुछ पता चलता है, उसका उपयोग कहाँ तक किया जा सकता है? तुम्हें न्योता मिले तो जरूर जाना। मेरा खयाल है कि यदि तुम जाओ तो तुम्हें रेजिडेंट^२ से भी मिलना चाहिए और साफ बात कर लेनी चाहिए। राजाका निमन्त्रण पूरी तरह गुप्त नहीं रखा जा सकता। इसलिए अगर इतनी हिम्मत राजाकी न हो, तो राजकोट जानेमें शायद कोई लाभ नहीं।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल

पुरुषोत्तम बिल्डिंग

ऑपेरा हाउसके सामने

बम्बई-४

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-२ : सरदार-वल्लभभाईने, पृ० २३०

१. राजकोटके ठाकुर साहब धर्मेन्द्रसिंहजीने समझौता करानेके लिए वल्लभभाई पटेलके साथ पत्र-व्यवहार किया था। वल्लभभाईने ठाकुर साहबके नाम अपने १८ दिसम्बरके पत्रमें लिखा था कि “आपका पत्र मिलनेपर मैं तुरन्त चला आऊँगा और लोगोंको संघर्ष समाप्त कर देनेके लिए समझाऊँगा।” अतः यह पत्र १८ दिसम्बरके बादका होना चाहिए।

२. वल्लभभाई पटेल और राजकोटके ठाकुर साहबके बीच हुए पत्र-व्यवहारके कागजात।

३. ई० सी० गिब्सन।

२५७. टिप्पणियाँ

कांग्रेसजनोंके खिलाफ शिकायत

मेरे सामने दो पत्र हैं—एक तो रंगूनके खादी-भण्डारका है, और दूसरा कर्नाटकका। इन पत्रोंमें यह शिकायत की गई है कि जिस खादीको अखिल भारतीय चरखा संघने अप्रमाणित कर दिया था उसे हमारे यहाँकी कांग्रेस कमेटियोंने प्रमाणित कर दिया है। शिकायतकी सचाईके बारेमें कोई शक नहीं। दोनों कांग्रेस कमेटियों द्वारा दिये गये प्रमाणपत्रोंकी नकलें मेरे सामने हैं। कांग्रेस कमेटियों को यह मालूम होना चाहिए कि ये प्रमाणपत्र नियमके खिलाफ हैं। खादीके बारेमें तो प्रमाणपत्र केवल एक ही संस्था दे सकती है, और वह है अखिल भारतीय चरखा संघ। जब तक कांग्रेसका वह प्रस्ताव बदल नहीं जाता जिसके अनुसार चरखा संघका निर्माण हुआ है, तब तक किसी भी कांग्रेस कमेटीको न तो ऐसा करनेका अधिकार है और न यह अधिकार दिया जा सकता है।

‘प्रमाणित खादी’-जैसी कोई चीज ही नहीं है। खादीके हरएक थान और हरएक चीजको प्रमाणित करना नामुमकिन है। चरखा संघ द्वारा स्वीकृत खादी बेचनेके लिए केवल दुकानों और व्यक्तियोंको ही प्रमाणपत्र दिये जा सकते हैं। खादी बनाने-वाले कारीगरोंको निश्चित रूपसे पर्याप्त मजदूरी दी जायेगी, इस दृष्टिसे खादीकी व्याख्याको विस्तृत कर दिया गया है। जो लोग कोई दूसरी खादी बेचते हैं, वे खादी बनानेवाले मजदूरोंको उस मजदूरीसे वंचित कर देते हैं, जो कि चरखा संघने, अपनी खुशीसे, उनके लिए निश्चित कर दी है। किसी कांग्रेसजन या कांग्रेस-कमेटीके बारेमें यह शिकायत नहीं आनी चाहिए कि चरखा संघ द्वारा संचालित राष्ट्रनिर्माणके उस महान प्रयोगमें उनकी तरफसे दस्तंदाजी की जा रही है, जो भूखसे मरती हुई उन लाखों कत्तिनोंके शरीरमें प्राण डाल रहा है और उनके सूखे चेहरोंको जीवनकी चमक दे रहा है, जिन्हें दो पैसा रोज भी दिलानेका जिम्मा कोई दूसरा नहीं ले सकता। इसलिए मैं आशा करता हूँ, कांग्रेस कमेटियाँ और कांग्रेसजन न केवल चरखा संघके इस काममें कोई दस्तंदाजी नहीं करेंगे बल्कि उसकी बहुसंख्यक संस्थाओंको, खासकर खादीकी बिक्रीमें, पूरे दिलसे सहयोग देंगे। अगर खादीकी माँग बराबर बढ़ती गई, तो हरएक अकाल-पीड़ित क्षेत्रमें खादी-उत्पादनके इस फायदेमन्द कामका इन्तजाम किया जा सकता है।

सिर्फ ‘हिन्दुस्तानी’

एक मुसलमान मित्र ने, जो अपनेको कांग्रेसका पुराना कार्यकर्ता कहते हैं, लिखा है :

‘टाइम्स ऑफ इंडिया’ ने अपने १२ सितम्बरके अंकमें आपके ‘हरिजन’ में प्रकाशित ‘कांग्रेसियों, सवाधान!’ शीर्षक लेख का सारांश छापा है। मद्रासमें हिन्दी-विरोधी आन्दोलन तथा दण्ड-विधान संशोधन अधिनियम (क्रिमिनल लां अमेंडमेंट ऐक्ट)के उपयोगने जो स्थिति पैदा कर दी है उसके बारेमें आपका स्पष्टीकरण काफी जोरदार है। इसमें शक नहीं कि आपने आन्दोलन करनेवालोंको जो नेक सलाह दी है उससे उन्हें बहुत-कुछ सन्तोष मिलेगा, और वे इस प्रश्नपर विचार करनेका सही तरीका अपनायेंगे। मगर इस बारेमें मैं आपका ध्यान एक ऐसे गलत प्रयोगकी तरफ खींचना चाहता हूँ जो मालूम होता है हिन्दुस्तानकी ‘राष्ट्रभाषा’के सम्बन्धमें लापरवाहीके कारण किया जा रहा है। मैं जहाँ तक जानता हूँ, इस विषयके कांग्रेसके प्रस्तावमें ‘हिन्दुस्तानी’ शब्द रखा गया है, न कि ‘हिन्दी’। आपने, खुद अपने तनाम भाषणों और लेखोंमें हमेशा ‘हिन्दुस्तानी’ शब्दका इस्तेमाल किया है। इसलिए यह अफसोसकी बात है कि अधिकांश कांग्रेसजन, कांग्रेसके प्रस्तावके बरखिलाफ ‘हिन्दी’ शब्दका इस्तेमाल करते आ रहे हैं।

इस गलत शब्दके इस्तेमालसे कांग्रेसके सुख्तलिफ सदस्योंमें बहुत गलतफहमी और तनाजा पैदा हो गया है। मेरे विचारसे न तो वह ‘हिन्दी’ है, न ‘उर्दू’। इसलिए जब कांग्रेसवाले राष्ट्रभाषाका जिक्र करें, तब उन्हें ‘हिन्दुस्तानी’ शब्दका ही इस्तेमाल करना चाहिए।

मैं इस तजवीजका तहेदिलसे समर्थन करता हूँ। राष्ट्रभाषाका केवल एक हो नाम है, और वह है ‘हिन्दुस्तानी’।

सेगांव, १९ दिसम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २४-१२-१९३८

२५८. मद्य-निषेध

कांग्रेसी प्रान्तोंमें मद्य-निषेधका काम जिस तरह हो रहा है, उसमें उस भावनाके दर्शन नहीं होते जो उसके मूलमें थी। इसमें मन्त्रियोंका शायद कोई कसूर नहीं है, क्योंकि इसके लिए लोकमत उतना जोरदार नहीं है, न कांग्रेसी मत ही प्रबल है। कांग्रेसजन इस बातको महसूस करते हुए नहीं मालूम पड़ते कि मद्य-निषेधसे लाखों आदमियोंको नई जिन्दगी हासिल होगी। इससे उन्हें ठोस रूपमें नया नैतिक और आर्थिक बल प्राप्त होगा। वे इस बातको महसूस नहीं करते कि मद्य-निषेधसे कांग्रेसको ऐसी प्रतिष्ठा और इज्जत मिलेगी जैसी और किसी कामसे शायद ही मिले। वे यह नहीं देखते कि मद्य-निषेधके कार्यक्रमको चलाना जनताके जीवनके साथ हमारे तादात्म्य का और इस दृढ़ निश्चयका द्योतक है कि शराबकी आमदनीसे कोई वास्ता नहीं

रखा जायेगा। और तो और, राजाजी-जैसे मद्य-निषेध के पक्के हिमायतीने भी इतना साहस नहीं किया कि शराबसे होनेवाली आमदनी शराबखोरीकी बुराई दूर करनेमें ही लगाते। मेरे खयालमें इस विषयमें वह जरूरतसे ज्यादा सावधान साबित हुए हैं। कांग्रेसजनोंने यह सीखा है कि आजादी हासिल करनेके लिए कोई भी कीमत चुकाना ज्यादा नहीं है। लेकिन अगर हम शराब और नशेबाजीके शिकार बने रहे, तो हमारी आजादी गुलामोंकी आजादी होगी। तमाम प्रान्तोंमें पूर्ण मद्य-निषेध करनेके लिए कोई भी कीमत क्या बहुत ज्यादा है?

इतनेपर भी हम देखते हैं कि मन्त्री लोग मद्य-निषेधके कार्यक्रमोंको विशुद्ध बनियेपनकी भावनासे बना रहे हैं। उन्हें उससे होनेवाली आर्थिक क्षतिका ध्यान रहता है। मुझे ताज्जुब होता है कि अगर सभी शराबी और अफीमची यकायक शराब और अफीमका परित्याग कर दें तो वे क्या करेंगे! शायद यह जवाब दिया जाये कि उस हालतमें आयमें आई कमीकी पूर्तिके लिए कुछ-न-कुछ प्रबन्ध तो वे करेंगे ही। लेकिन वे स्वेच्छापूर्वक क्यों नहीं कर डालते? अच्छाई तो निस्सन्देह किसी कामको स्वेच्छापूर्वक करनेमें ही है, मजबूरन करनेमें नहीं। याद रखना चाहिए कि भूकम्पसे सालाना आमदनीसे ज्यादा नुकसान हो जानेपर भी बिहार सरकारका काम रुक नहीं गया था। और जब अकाल तथा बाढ़ोंसे लोग तबाह होते हैं और सरकारी आमदनीमें कमी पड़ती है, तब प्रान्तीय सरकारें क्या करती हैं? मैं तो मानता हूँ कि कांग्रेसी सरकारें आमदनीकी खातिर मद्य-निषेधके काममें देरी करके अपनी प्रतिज्ञा का, शब्दोंमें न सही पर भावनाकी दृष्टिसे, जरूर भंग कर रही हैं।

नये कर लगाकर वे आमदनी कर सकती हैं और इसके लिए उन्हें ईमानदारीके साथ कोशिश भी करनी चाहिए। शराबखोरी शहरोंमें बहुत ज्यादा है, अतः इन इलाकोंमें वे नया कर लगा सकती हैं। मद्यनिषेधसे जहाँ अनेक मजदूर काम करते हैं उन कारखानोंके मालिकोंको प्रत्यक्ष मदद मिलती है। इन कारखानोंके मालिक निश्चय ही आमदनीकी उस कमीको पूरा कर सकते हैं। अहमदाबादमें कुछ ही महीने मद्य-निषेधका जो काम हुआ है उससे मालिक-मजदूर दोनोंको आर्थिक लाभ हुआ है। इसलिए कोई वजह नहीं कि इस बहुमूल्य सेवाके लिए मालिकोंसे क्यों न कुछ वसूल किया जाये? इसी तरह आमदनीके और भी अनेक साधन आसानीसे ढूँढे जा सकते हैं।

मैंने तो निस्संकोच यह सुझाव भी दिया है कि जहाँ अतिरिक्त आयकी कोई अमली सूरत न हो, वहाँ भारत सरकारसे सहायता या कम-से-कम बिना व्याज कर्ज ही लेनेकी माँग की जाये।

मद्य-निषेध तत्काल न करनेकी वाजिब वजह सिर्फ यह हो सकती है कि इस बारेमें पहलेका कोई अनुभव नहीं है, और इसलिए इसमें सावधानीकी जरूरत है। सेलमके प्रयोगको मैंने इसी रूपमें लिया था। मद्रास सरकार पहला कदम बहुत सोच-समझकर, पर दृढ़ निश्चयके साथ उठाना चाहती थी और उसकी असफलताका खतरा उठानेके लिए तैयार नहीं थी। सेलमके प्रयोगमें जो सफलता प्राप्त हुई उससे इस सम्बन्धकी सारी योजनाकी पूरी करनेका काफी प्रोत्साहन मिलना चाहिए। लेकिन

हर एक सरकार की इस इच्छा को समझना असम्भव नहीं है कि स्थानीय अनुभव हासिल करने के लिए वे मद्य-निषेध का काम क्रमशः करें। कांग्रेस की कार्य-समिति ने पूर्ण मद्य-निषेध के लिए तीन साल का जो समय रखा उसकी यही वजह थी। यह वक्त तेजी के साथ बीता जा रहा है। और यदि भारत को निश्चित समय के अन्दर इस बुराई से मुक्त होना है, तो रुपये की कमी या आमदनी में घाटा होने के भय से इसमें कोई देरी नहीं होनी चाहिए। और अगर इस कार्यक्रम को पूरे उत्साह के साथ चलाया जाये, तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि दूसरे प्रान्त और रजवाड़े भी इसका अनुसरण करेंगे।

सेगाँव, १९ दिसम्बर, १९३८

[अंग्रेजी से]

हरिजन, २४-१२-१९३८

२५९. जिला बोर्ड

मुझे अवसर ऐसा लगा है कि जिला बोर्ड और म्युनिसिपल कौंसिलें कुछ ऐसी अनावश्यक चीजें हैं कि जिनके लिए लोगों को व्यर्थ ही कर देना पड़ता है। असहयोग के दिनों में मेहमदाबाद में यह बात मुझे अच्छी तरह जँच गई। तब मैंने लोगों को सलाह दी थी कि अगर वे अपनी कौंसिल का या उसे जो-कुछ भी कहा जाता हो उसका, बहिष्कार कर दें, तो वे अपने यहाँ की सफाई तथा रोशनी का काम खुद ही कर सकते हैं और बिना किसी ढकोसले या ज्यादा खर्च के अपने स्कूलों को भी चला सकते हैं। इतना ही नहीं, इन सवालियों को लेकर सम्बन्धित पक्षों में जो बहुत सारा लड़ाई-झगड़ा चलता है उससे भी बच सकते हैं।

कुछ दिन पहले जब सूरत जिला बोर्ड के एक सदस्य ने आकर मुझे बोर्ड द्वारा जारी किया हुआ एक गश्तीपत्र दिखलाया और अपनी योजना पर मेरा आशीर्वाद माँगा, तो अपनी बात की सचाई मुझे और भी स्पष्ट हो गई। यह योजना बोर्ड के सदस्यों के रूप में उसमें जो-कुछ करने की उम्मीद की जाती है उसकी सीमा से आगे जाती थी। बोर्ड में चालीस सदस्य हैं। मैं याददाश्त से यह लिख रहा हूँ। दरअसल, उन्हें इसके सिवा और कोई काम नहीं है कि कुछ समय के अन्तर से बोर्ड की बैठक करके खर्च की मदों पर बहस कर लिया करें। बोर्ड में कांग्रेस का भारी बहुमत है और कुछ सदस्यों को इस बात का बड़ा खयाल है कि हम कुछ काम करें। लेकिन वे यह नहीं जानते कि जन-सेवा के लिए अपने समय का वे किस तरह उपयोग करें। बोर्ड की आमदनी इतनी नहीं है कि उसके सब महकमों और खासकर सड़कों को सुव्यवस्थित और ठीक हालत में रखा जा सके। इसलिए गश्तीपत्र में इस बात का बड़ा बखान किया गया है कि अप्रैल में राष्ट्रीय सप्ताह की अवधि में बोर्ड के सदस्य और कर्मचारी सड़कों की मरम्मत वगैरह का काम करेंगे। इस कहावत के अनुसार कि कुछ भी न करने से जो-कुछ भी किया जाये वही ठीक है, राष्ट्रीय सप्ताह में काम करने का विचार निश्चय ही सराहनीय था। लेकिन इतना अच्छा नहीं था कि मैं भी उसकी प्रशंसा कर देता। इसलिए

मैंने कहा : “अगर आप मेरा आशीर्वाद चाहते हैं, तो आपको अभी काम शुरू कर देना चाहिए, और न केवल एक सप्ताहमें छुट्टीके तौरपर बल्कि अपने पूरे कार्यकालमें इस तरह नियमित रूपसे काम करते रहना चाहिए, जैसेकि वैतनिक कर्मचारियोंसे आशा की जाती है—हाँ, अपनी घरेलू तथा दूसरी जिम्मेदारियोंका आप जरूर ध्यान रखें। दूसरे शब्दोंमें, आपको राष्ट्रीय सेवक बन जाना चाहिए। सरकारी तौरपर आप केवल आवश्यक मदोंको स्वीकार-अस्वीकार करनेके लिए ही एकत्र हों, लेकिन छोटी-छोटी नियुक्तियों आदिपर लम्बी बहसों या तू-तू मैं-मैं में कभी न पड़ें। आपका सच्चा और ठोस काम तो पदके दायरेके बाहरका होना चाहिए। आप खुदकी बनाई हुई अव्वल दर्जेकी सड़कोपर गर्व करें और अपने स्कूलोंका संचालन योग्यतापूर्वक करें। इसका ध्यान रखें कि आपके जिलेको पानी पर्याप्त मिलता है या नहीं, खेतोंमें खाद ठीक तरहसे दी जाती है या नहीं और उन्हीं चीजोंकी खेती होती है या नहीं जोकि राष्ट्रीय दृष्टिसे उपयोगी हैं। लोगोंको आप सफाईका सही तरीका सिखायें और उन्हें शराबखोरीसे रोककर स्वेच्छापूर्वक मद्य-निषेध करें। बड़ी उम्रवालोंके लिए आप रात्रि-शालाएँ चलायें। अगर आप ईमानदारीके साथ अपना फर्ज अदा करना चाहते हैं, तो आपके लिए इतना काम है कि जिसे करना आपके लिए सहज नहीं है। ऐसा करके आप दूसरे बोर्डोंके सामने भी एक उदाहरण रखेंगे और इस बातको साबित कर देंगे कि आपके निर्वाचकोंने आपका चुनाव ठीक ही किया था। इसका नतीजा यह होगा कि खुद निर्वाचक और दूसरे लोग भी कार्यकर्ताओंका एक ऐसा स्वयंसेवक दल बन जायेंगे जो अपने आसपासके लोगोंके जीवनमें क्रान्तिकारी तबदीली कर देंगे। जो-कुछ मैं आपसे कह रहा हूँ उसपर अगर आप दिलसे गौर करें तो आपको फौरन इस बातका पता लग जायेगा कि हाथकी कताई, धुनाई और बुनाईके बगैर आप यह सब नहीं कर सकते। इससे ऐसे हरएक लड़के-लड़की, पुरुष और स्त्रीको फुरसतके बाद पूरा काम दिया जा सकेगा, जो यह हलका काम करनेके अयोग्य नहीं हैं, और अपने जिलेकी आमदनीमें आप जल्दी ही कई लाख रुपयेकी वृद्धि कर लेंगे। जब आप इस कार्यक्रमको पूरा कर लेंगे, तब मैं आपको आशीर्वाद दूंगा। बल्कि मैं आपका विज्ञापन करनेवाला एजेंट ही बन जाऊँगा। अगर आप ऐसा नहीं कर सकते, तो फुरसतके वक्तकी अपनी देशभक्तिका दिखावटी प्रदर्शन करके अपने कामके साथ आप खिलवाड़ न करें।”

मगर मुझे भय है कि हिन्दुस्तानके जिला बोर्ड स्वेच्छापूर्वक सेवाके इस कार्यक्रम को, जिसे कि मैंने ऊपर बतलाया है, पूरी तरह पसन्द नहीं करेंगे। इसलिए मेरा प्रस्ताव है कि कम-से-कम कांग्रेसी प्रान्त ही इस सम्बन्धमें एक आदर्श कानून बनायें जिसका लक्ष्य म्युनिसिपल, स्थानीय और जिला बोर्डोंको उनकी कार्यक्षमताके आधारपर गठित करना हो। मैं यह तो चाहता हूँ कि ये निर्वाचित हों, लेकिन प्रबन्ध सम्बन्धी कोरा दपतरी काम करने लायक स्त्री-पुरुष बहुत कम निकलेंगे। हरेक सदस्यका काम अच्छी तरह निर्धारित कर दिया जायेगा। मैं तो चाहूँगा कि वैतनिक कर्मचारी चुने हुए सदस्योंके साथ-साथ काम करें। इस तरह, चुने हुए सदस्य मालिकके साथ-साथ

उनके साथी कार्यकर्ता भी होंगे। बोर्डोंके कामकी मैंने जो कल्पना कर रखी है, यह उसकी बहुत मोटी रूपरेखा है। कांग्रेस, क्रान्तिकारी शब्दके व्यापक और बुद्धिमत्तापूर्ण अर्थमें एक क्रान्तिकारी संस्था है। उसका सब काम मौलिक ही होना चाहिए। उसकी सारी हलचलोंका उद्गम, उसका ध्येय अहिंसा होना चाहिए। उसका रूप एक ऐसी सुगन्धित शृंखलाका होना चाहिए, जिसमें छोटे-से-छोटा घटक बड़े-से-बड़े घटकके साथ एक निश्चित ढंगसे जुड़ा हो, जिससे जो कोई चाहे वह यह देख सके कि यह मुख्य उद्देश्यकी पूर्तिके लिए बनी हुई एक कलापूर्ण कृति है। इसके लिए कांग्रेसमें एक मन और एक इच्छाका होना जरूरी है— किसी एक आदमीका मन और इच्छा नहीं, बल्कि अनेक स्त्री-पुरुषोंके मनों और इच्छाओंका एकीकरण।

सेगाँव, १९ दिसम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २४-१२-१९३८

२६०. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव, वर्धा

१९ दिसम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

मैं तुम्हें एक पंक्ति भी लिखकर नहीं भेज पाया हूँ।

ठीक है, मेरे लिए जो कम्बल बनाया गया है उसे मैं नहीं छोड़ूँगा। मुझे नहीं मालूम कि मैं जो कम्बल ओढ़ रहा हूँ वह पुराना ही है या नया। मैं पूछताछ करूँगा और नया ले लूँगा। पुरानेका मैं क्या करूँ?

औंधका संविधान तैयार हो जायेगा तो तुम्हें भी एक प्रति जरूर भेज दी जायेगी।

यदि क०^१ में उत्तरदायी सरकार बने तो क्यों न तुम इसकी पहली मन्त्री बनो और अपनी मर्जीके मुताबिक उसके भाग्यका निर्माण करो। जब तुम आओगी तब हम इस विषयपर चर्चा करेंगे।

मुझे लगता है कि मुझे पहली जनवरीको बारडोलीके लिए रवाना हो जाना पड़ेगा। वहाँ कार्य-समितिकी बैठक ७ को हो रही है, इसलिए तुम्हें अहमदाबाद होते हुए आना चाहिए। यदि तुम ३ को चल पड़ो तो बारडोली ६ को पहुँच जाओगी। और लिखनेके लिए वक्त नहीं है।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३६५४) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ६४६३ से भी।

२६१. पत्र : अगाथा हैरिसनको

सेगाँव, वर्धा
२० दिसम्बर, १९३८

प्रिय अगाथा,

तुम्हारे सुन्दर पत्रका उत्तर दिये बिना मैं कैसे रह सकता हूँ? क्रिसमसका अंग्रेजोंके लिए क्या अर्थ है, मैं जानता हूँ। मेरी समस्त शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं।

मैं जानता था कि मीराके पत्रको तुम ठीक समझ लोगी। हाँ, उससे बराबर सम्पर्क रखो। वह ईश्वरके हाथोंमें सकुशल है।

जब भी मन करे यहाँ आ जाया करना और जब तक तबीयत हो, बैठना।

आज किसीने तुमसे गपशप नहीं की होगी। [इसलिए] कुछ इसीके द्वारा सही। सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १५०६) से।

२६२. पत्र : महादेव देसाईको

२० दिसम्बर, १९३८

चि० महादेव,

यह पत्र तो केवल वह याद दिलानेके लिए लिख रहा हूँ कि मैं तुम्हें भूला नहीं हूँ। मेरी व्यस्तताका पार नहीं है। लेकिन, लगता है, भगवानको यही मंजूर है। मैं निर्धारित समयसे अधिक काम नहीं करता। तुम्हारा वहाँ रहना तो उपयोगी सिद्ध हो ही रहा होगा।

अमृतुस्सलाम बहुत बीमार है—मलेरियासे। भीड़ बहुत है। पन्नालाल, गंगाबहन, नानीबहन, ये सब आये हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ११६८६) से।

२६३. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

२० दिसम्बर, १९३८

वि० ब्रजकृष्ण,

यह है विचित्र' का उत्तर। अब क्या किया जाय ?
भाई अच्छे होंगे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४५७) से।

२६४. पत्र : एन० एम० जोशीको

सेगाँव, वर्धा

२१ दिसम्बर, १९३८

प्रिय जोशी,

तुम्हारे उन दो पत्रोंके लिए मैं बहुत आभारी हूँ जिनमें तुमने मेरे पत्रका विस्तृत उत्तर दिया है। मुझे इस बात की भी खुशी है कि परलेकरने थोड़ी तकलीफ उठाकर अपने भाषणको लिख डाला था। हालाँकि चिह्नित अंश भाषणमें नहीं हैं, लेकिन उसमें काफी आपत्तिजनक चीजें हैं और मेरे द्वारा भेजी गई रिपोर्टमें परलेकरके मुँहसे जिस किस्मकी बातें कहलाई गई हैं, उनसे काफी-कुछ मिलती-जुलती बातें हैं। निम्नलिखित अंशोंपर ध्यान दो :

वे अकसर ब्रिटिश अफसरशाहीको शैतानशाही कहते थे। मुझे शैतानशाहीसे भी ज्यादा सख्त कोई शब्द खोजना होगा, क्योंकि यह कार्य कहीं ज्यादा शैतानियतपूर्ण है। . . . वे जानते हैं कि विधेयक आपके हितमें नहीं है और इसीलिए वे आपसे भयभीत हैं। उन्हें घबराहट होती है। वे सोचते हैं कि आप उनकी गांधी टोपियाँ उतार फेंकेंगे। इस 'गांधी-टोपी' सरकारने अपने कार्योंसे दिखला दिया है कि वे गरीबोंके मित्र नहीं हैं। वे अमीरोंके हित-साधनके लिए सरकारमें

१. विचित्र नारायण शर्मा, एक खादी-कार्यकर्ता, जिसने मेरठके गांधी आश्रम चरखा संघसे लिखा था कि अकाल-पीडित क्षेत्रमें खादी-कार्य करनेमें हानि अवश्यम्भावी है। विचित्र नारायण शर्माका पत्र १४ दिसम्बर, १९३८ का था।

बैठे हैं। . . . यदि वे बहसको टालते हैं तो उन्हें विधेयकके बारेमें बम्बईमें चर्चा करनी पड़ेगी जहाँके लोग राजनीतिक दृष्टिसे ज्यादा जागरूक हैं। बम्बईमें मजदूर लोग विराट प्रदर्शन करेंगे और इतना ज्यादा बावेला खड़ा करेंगे कि इस विधेयकके लिए जो लोग जिम्मेदार हैं उन्हें चैनकी नींद हराम हो जायेगी। मजदूरोंकी तुलना सोते हुए शेरसे की जा सकती है। मैं सरकारको आगाह करता हूँ कि वह इसे न जगाये। वे उसके साथ छेड़खानी न करें। वे उस पर हमला न करें। उन्हें समझ लेना चाहिए कि यदि वे उसे उत्तेजित करेंगे, तो श्रमिक वर्गमें इतनी ताकत है कि वह शक्तिशाली-से-शक्तिशाली सरकारको मुँहतोड़ जवाब दे सके। . . . यह विधेयक प्राणलेवा जहरीली गोली है जिसपर चीनी लिपटी हुई है। हमें चीनीकी परत खुरचकर अलग कर देनी चाहिए और जहरको इस विधेयकके बनानेवालोंके निगलनेके लिए छोड़ देना चाहिए।

सोसायटीके एक सदस्यके मुँहसे ऐसी बातें निकलें, यह मैं नहीं चाहूँगा।

नागरिक स्वतन्त्रताको खतरेकी आपकी बातका जहाँ तक सवाल है, मैं चाहूँगा कि आप मुझे ठोस सुझाव दें ताकि प्रान्तीय सरकारें कम-से-कम जान तो सकें कि लोकनेता क्या सोच रहे हैं और कर रहे हैं। अथवा, क्या आपका मतलब यह है कि प्रान्तीय सरकारोंको इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि लोकनेता क्या कहते और करते हैं? मैं इस समय यह नहीं सोच रहा हूँ कि जो लोग हिंसा भड़काने-वाले या कानूनके खिलाफ जानेवाले भाषण करते हैं, उनको क्या सजा दी जा सकती है। मैं तो शान्तिपूर्ण कार्रवाईकी बात सोच रहा हूँ, जैसेकि बेसमझे अनाप-शनाप बोलनेवाले वक्ताओंको चेतावनी देना, और जिन संस्थाओंके वे सदस्य हैं उनके साथ सम्पर्क स्थापित करना। जहाँ तक परलेकरका सम्बन्ध है, मैं और जाँच-पड़ताल कर रहा हूँ। किसी भी सूरतमें, यह बात मेरे दिमागमें स्पष्ट है कि उनके खिलाफ कोई अदालती कार्रवाई नहीं होनी चाहिए और यही बात मैं खेरको लिखने जा रहा हूँ।

हृदयसे तुम्हारा,

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल ।

२६५. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

सेगाँव, वर्धा
२१ दिसम्बर, १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

मौलाना साहब काँटोंका यह ताज पहनना नहीं चाहते। यदि तुम फिर कोशिश करना चाहते हो तो कृपया जरूर करो। लेकिन यदि तुम कोशिश नहीं करते या मौलाना तुम्हारी सुनते नहीं, तो फिर पट्टाभि ही एकमात्र विकल्प लगते हैं।

सप्रेम,

वापू

अंग्रेजीसे : गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३८; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

२६६. पत्र : पृथ्वीसिंहको

सेगाँव
२१ दिसम्बर, १९३८

प्रिय पृथ्वीसिंह,

मुझे तुम्हारे दो पत्र मिले हैं। मैं इतना व्यस्त रहा कि तुम्हें इससे पहले पत्र नहीं लिख सका। परन्तु प्यारेलाल तुम्हारी सारी जरूरतोंका ध्यान रखते रहे हैं। उन लिया जा रहा है और मैं उसे बुनवा लूँगा तथा वेशक इसका इस्तेमाल खुद करूँगा। हाँ, यदि प्रदर्शनीके लिए इसका ज्यादा अच्छा उपयोग करना तय हुआ तब दूसरी बात है। अभी मैंने कोई निश्चय नहीं किया है।

जब तक तुम्हारी स्थिति कैदीकी है तब तक हो सकता है कि अधिकारियोंको तुम्हारे पत्रका प्रकाशन अच्छा न लगे। अतः यद्यपि मैं फिलहाल इसका प्रकाशन नहीं करना चाहता फिर भी मैं उन लोगोंके बीच जो हिंसापर अहिंसाको अद्वितीय श्रेष्ठताके बारेमें आश्वस्त नहीं हैं, इसका बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग करने जा रहा हूँ। जहाँ तक तुम्हारा अपने मामलेका सम्बन्ध है, तुम आश्वस्त रहो कि जो भी मेरे अधिकारमें है वह मैं अवश्य करूँगा। इस विषयमें तुम्हें तब तक कुछ करनेकी जरूरत नहीं है जब तक कि मैं तुम्हें ऐसी सलाह नहीं देता।

कनु द्वारा लिया गया तुम्हारा बड़ा सुन्दर चित्र मेरे पास है जिसे प्यारेलाल तुम्हारे भाईके पास भेज रहे हैं। वह अलगसे तुम्हें पत्र लिखेंगे।

महादेव अब बिल्कुल ठीक है। अलबत्ता, मैं नहीं चाहता कि वह अपने रोजमर्राके काममें फिरसे लग जाये।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६३२) से। सी० डब्ल्यू० २९४३ से भी;
सौजन्य : पृथ्वीसिंह ।

२६७. पत्र : शामलालको

सेगाँव, वर्धा
२१ दिसम्बर, १९३८

प्रिय लाला शामलाल,

आपके पत्रसे मुझे आश्चर्य हुआ है, क्योंकि आपने अपने पिछले पत्रमें यह कहा था कि कैदी सरकारको तो कोई आश्वासन देनेके लिए तैयार नहीं हैं किन्तु वे मुझे आश्वासन देनेके लिए तैयार हैं। अब आप कहते हैं कि वे मुझे भी कोई आश्वासन नहीं देंगे। यह परिवर्तन क्यों? कृपया यह बात आप कैदियोंके ध्यानमें लायें कि यदि वे मुझे भी आश्वासन नहीं दे सकते, तो जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है इसमें मेरा कोई बस नहीं चलेगा।

आपका,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२८७) से।

२६८. पत्र : जमनालाल बजाजको

सेगाँव, वर्धा

२१ दिसम्बर, १९३८

चि० जमनालाल,

तुम्हारे दोनों पत्र मिले थे। पहलेपर अमल किया गया। दूसरेके लिए आग्रह क्यों हो? जलियाँवाला बाग मीटिंगमें तुम न आ सको तो कोई हर्ज नहीं। भले ही केशवदेवजी हाजिरी दें। वोटकी तो जरूरत नहीं होगी। तुम्हारी तबीयत खराब है, ऐसा तुम निश्चय न कर बैठना। तबीयतको आरामकी जरूरत है। वह मिलनेसे ठीक हो जायेगी। तुम हिन्दुस्तानमें या लंकामें थोड़ी यात्रा कर लो तो काफी हो जायेगा। काम मात्रकी चिन्ता छोड़ दो।

रजब अलीका कारोबार ठीक है क्या? जानकीबहन कैसी है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९९६) से।

२६९. पत्र : मनुबहन सु० मशरूवालाको

सेगाँव, वर्धा

२१ दिसम्बर, १९३८

चि० मनुड़ी^१,

बारडोली आ सके, तो जरूर आ।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १५७३) से; सौजन्य : मनुबहन सु० मशरूवाला।

२७०. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेगांव, वर्धा
२१ दिसम्बर, १९३८

भाई वल्लभभाई,

मौलाना तो साफ मना कर रहे हैं। ऐसी स्थितिमें उनपर ज्यादा दबाव डालना ठीक नहीं लगता। मुझे लगता है, पट्टाभिके बारेमें विचार करना ही ठीक होगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो^१—२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २३०

२७१. सन्देश : अखिल भारतीय महिला सम्मेलनको^१

[२२ दिसम्बर, १९३८ के पूर्व]^२

महिलाएँ अपना उद्धार केवल आप ही कर सकती हैं, पुरुष नहीं कर सकते। महिलाएँ यदि चाहें तो अहिंसाकी सिद्धिमें सहायक हो सकती हैं। चरखेके द्वारा वे अपनी गरीब बहनोंकी सेवा कर सकती हैं। खदर पहनकर वे गरीब घरोंकी सहायता कर सकती हैं। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित कर सकती हैं। वे पर्देको खत्म कर सकती हैं और अस्पृश्यताके भूतको भगा सकती हैं।

दिल्लीमें हो रहा महिला सम्मेलन क्या इनमें से किसी कार्यको पूरा करनेकी जिम्मेदारी लेगा ?

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, २८-१२-१९३८। अंग्रेजीकी प्रति (सी० डब्ल्यू० १०३६२) से भी; सौजन्य : अखिल भारतीय महिला सम्मेलन।

१. सम्मेलन दिल्लीमें २८ दिसम्बरको शुरू हुआ था। अमृत कौरने उसकी अध्यक्षता की थी।
बाँम्बे क्रॉनिकल, २९-१२-१९३८ के अनुसार गांधीजी का यह सन्देश गुजरातीमें था।

२. देखिए अगला शीर्षक।

२७२. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव, वर्धा
२२ दिसम्बर, १९३८

प्रिय पगली,

मैं अभी तो अपना बहुत-सारा काम अपने सहायकोंके जरिये ही कर रहा हूँ। अन्यथा मैं उसे निपटा ही नहीं सकता। मैं मानता हूँ कि बारडोलीमें तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

इसके साथ ताईके लिए एक पत्र है और सम्मेलनके लिए एक सन्देश^१ है। तुम्हें जब एक मिला है तो स्वभावतः वह भी एक चाहती है।

आशा है, तुम जब चली थीं तब शम्मीकी तबीयत अच्छी ही रही होगी। मेरा पत्र तुम्हें पसन्द आया, जानकर खुशी हुई।

महादेवको २४ तारीख को वापस आ जाना चाहिए।

सप्रेम,

जालिम

[पुनश्च :]

यहूदियोंकी अपीलके जवाबका मतविदा इसके साथ है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३९००) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७०५६ से भी।

२७३. पत्र : मणिब्रहन पटेलको

सेगाँव, वर्धा
२२ दिसम्बर, १९३८

चि० मणि,

तू और मृदुला ठीक मिली हो। तेरे दोनों पत्र मिल गये। आराम अच्छी तरह लेना। तू कातती है, यह बहुत अच्छा है। खुराक वगैरहका हाल लिखा जा सकता हो तो लिखना। मृदुला समय किस तरह बिताती है?

महादेव ४ दिनके लिए कलकत्तेके पासकी गोशाला देखने गये हैं। २४ तारीख को वापस आनेकी सम्भावना है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है। बा को वहाँ जानेकी

इजाजत तो अभी नहीं मिली। वह कन्या गुरुकुलके लिए देहरादून जा रही है। मैं पहली जनवरीको बारडोली जा रहा हूँ।

तुझे और मृदुलाको,

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिबहन पटेल

स्टेट जेल

राजकोट — काठियावाड़

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो — ४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १२३

२७४. पत्र : बलवन्तसिंहको

२२ दिसम्बर, १९३८

चि० बलवन्तसिंह,

मैंने तुमारे पत्र पर काफी विचार किया। तुमसे गलती तो हो गई है। लेकिन गलती कौन नहीं करता है ? तुमारी सरलता इसमें है कि गलती शीघ्र कबूल भी कर देते हो। जो निर्णय हुआ है उसे कायम रखनेमें गोमाताकी सेवा है तुमारा हम सब का भला है। अगर सचमुच तुमारा क्रोध उतर जायगा तो अंतमें सब कुछ अच्छा ही होगा। तुमारी और पारनेरकरकी परीक्षा हो जायगी। पारनेरकर मांगे सो मदद उसको देते रहो। बाकी कार्य क्या हो सकता है देख कर मुझे बताओ। चित्तकी प्रसन्नता रहनी चाहिये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९१३) से।

२७५. भाषण : स्काउटोंकी रैलीमें'

सेगाँव

[२२ दिसम्बर, १९३८]'

आपने कवायदका जो प्रदर्शन किया है, उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। आपके प्रशिक्षणका यह अनिवार्य अंग है। यद्यपि आपकी शुरुआत बहुत अच्छी है, तो भी आपको अभी बहुत लम्बा रास्ता तय करना है।

सामूहिक कवायदका उद्देश्य यह होता है कि लोगोंके बड़े-बड़े समूहोंको कोई भी शारीरिक क्रिया लयके साथ, शीघ्रतासे तथा बिलकुल ठीक विधिसे करनेकी सामर्थ्य प्राप्त हो सके। यदि अपनी सार्वजनिक सभाओं और सार्वजनिक समारोहोंमें भी हम वैसा ही कर सकें तो राष्ट्रीय समय और शक्तिकी कितनी बचत हो! पुरुषों तथा महिलाओंके समूहों द्वारा अनुशासित ढंगसे शारीरिक क्रिया करनेमें एक मौन संगीत रहता है। अभी मैंने आप लोगोसे कहा कि आप थोड़ा पास आ जायें, जिससे मेरी धीमी आवाज आप तक पहुँच सके। यदि अपनी कवायदमें आपने काफी ज्यादा तरक्की कर ली होती तो आप सहज भावसे और बिना किसी शोर या अव्यवस्थाके मेरे नजदीक सरक कर आ सकते थे। कवायदमें ऐसी लय और ऐसा संगीत होता है कि क्रिया सहज रूपसे सम्पन्न हो जाती है और इससे थकावट पास नहीं फटकती। यदि ३० करोड़ लोगोंके पूरे राष्ट्रको इस तरह अभ्यास कराया जा सके कि वे एक साथ चलें और एक साथ काम करें और जरूरत पड़नेपर एक होकर एक साथ मर मिटें तो हम बिना एक भी प्रहार किये स्वतन्त्रता प्राप्त कर लें और ऐसा दृष्टान्त प्रस्तुत करें जो सारे संसारके लिए अनुकरणीय हो।

मुझे यह देखकर विशेष प्रसन्नता हुई कि वर्धाके खोजा बोर्डिंग हाउसने आपकी स्काउट रैलीमें भाग लेनेके लिए अपने यहाँके स्काउट भेजे। होना भी यही चाहिए था। वर्धा शिक्षा योजनामें बाल स्काउटोंके प्रशिक्षणकी भी व्यवस्था की गई है। यदि यह प्रशिक्षण पारस्परिक अविश्वास और सन्देह दूर करनेमें सहायक नहीं होता और विभिन्न वर्गों और जातियोंमें सौहार्दकी वह परिपूर्ण भावना नहीं पनपाती जिसका यद्यपि जाकिर हुसैन समितिकी रिपोर्टमें कोई स्पष्ट उल्लेख तो नहीं है लेकिन जो इसके बावजूद उस योजनाका अभिन्न अंग है, तो इसका कोई मूल्य नहीं। वर्धा

१. प्यारेलालके “वीकली लेटर” से उद्धृत। इस रैलीका आयोजन वर्धा शिक्षा-योजनाके अन्तर्गत छात्र-अध्यापकों के लिए वर्धामें किए गये स्काउट-कलाके २१ दिनके प्रशिक्षण-क्रमके बाद किया गया था।

२. तारीख हिन्दू, २३-१२-१९३८ से ली गई है।

शिक्षा योजनाका उद्देश्य विद्यार्थियोंको मात्र पढ़ने-लिखनेकी शिक्षा देना नहीं है। इसका उद्देश्य इस प्रकारके जीवनकी शिक्षा देना है, जिससे हमारे करोड़ों लोगोंकी आवश्यकताओंकी पूर्ति होगी। इसके पीछे विचार यह रखा गया है कि यह एक जीवन्त और जीवनदायी प्रयोग बने। इसलिए अध्यापकोंको, जिन्हें इस शिक्षाका प्रचारक बनना है, अधिक विस्तृत और व्यापक प्रशिक्षणकी आवश्यकता है। स्काउट-कला उस प्रशिक्षणका महत्वपूर्ण और उपयोगी अंग है।

श्रद्धेय मालवीयजी द्वारा संस्थापित पुरानी सेवा-समितिके कार्यके बारेमें मैं कुछ जानता हूँ। इसमें पण्डित हृदयनाथ कुँजरूने जो काम किया, मैं उसके विषयमें भी जानता हूँ; और मैं समितिके व्यवस्थापक श्री वाजपेयीके सम्पर्कमें भी आया हूँ। इसलिए यदि मैं सुझावोंके रूपमें कुछ बातें कहूँ तो यह एक मित्र द्वारा की गई बातें मानी जानी चाहिए। मैंने ध्वज-वन्दना समारोह देखा तो उसके बारेमें कुछ अयथार्थताका-सा आभास मिला। आपका गीत आडम्बरपूर्ण भाषामें लिखा गया है। उस गीतमें आपने अपने प्राण उस ध्वजके लिए न्योछावर करनेकी तत्परता प्रकट की है जिसके बारेमें आपने कल्पना की है कि वह एक दिन सारे संसारमें लहरायेगा। जब आप वह गीत गा रहे थे, मैंने अपने-आपसे पूछा कि क्या आप गम्भीरतापूर्वक वैसा ही मानते हैं? मैं यह कहनेकी धृष्टता करूँगा कि इस गीतमें जैसी भावनाएँ व्यक्त की गई हैं, वैसी भावनाओंका सम्बन्ध राष्ट्रीय ध्वजके अतिरिक्त अन्य किसी भी झण्डेसे नहीं होना चाहिए। अन्यथा वे मात्र एक खयाली चीज ही बनकर रह जायेंगी, और उनका आदि और अन्त उस गीत तक सीमित रह जायेगा। लोग बहुत-से झण्डोंके लिए अपने प्राण न्योछावर नहीं कर सकते। यदि आपको अपना अलग झण्डा रखना ही है और ध्वजारोहण समारोह भी करना ही है तो गीतका स्वर धीमा रहना चाहिए। एक बात यह भी है कि मैं देख रहा हूँ कि आपका आदर्श-वाक्य झण्डेपर अंग्रेजीमें लिखा है। मुझे तो यह बड़ा असंगत लग रहा है। आपका आदर्श वाक्य हिन्दुस्तानीमें होना चाहिए। स्काउट-आन्दोलनका उद्देश्य मात्र शारीरिक प्रशिक्षण नहीं, अपितु दिल और दिमागको प्रशिक्षण देना भी होना चाहिए। यदि यह मात्र बाह्याचार तक ही सीमित रहे और आभ्यन्तरिक गुणोंकी उपेक्षा करे तो इस प्रशिक्षणका कोई मूल्य नहीं।

अब दो शब्द यहाँ एकत्रित छात्र-अध्यापकोंसे। इस शिक्षा-योजनाके अन्तर्गत तैयार होनेवाला यह शिक्षकोंका पहला दल है, इसलिए उनपर बड़ा भारी उत्तरदायित्व है। यह उनकी नहीं, अपितु इस शिक्षा योजनाकी कसौटी है जिसे वे अंजाम देने जा रहे हैं। इसलिए उनकी शोभा इसीमें है कि वे छोटी-बड़ी जो भी बात कहें या छोटा-बड़ा जो भी काम करें, वह ठीक विचार करके बिल्कुल सही ढंगसे कहें और करें। जो भी शब्द वे कहें उसे पहले तौल लें और इस बातका ध्यान रखें कि कोई भी शब्द व्यर्थमें न बोला जाये। वे शिल्पके माध्यमसे सारी शिक्षा देने जा रहे हैं और यह एक नया प्रयोग है—ऐसा प्रयोग जो पहले कभी नहीं किया गया। अपने सारे कामोंमें बराबर अपनी बुद्धिके ठीक प्रयोग करनेपर ही यह प्रयोग सफल

होगा। यदि मन, वचन अथवा कर्मसे अप्रामाणिकता बरती गई तो वह इसकी सफलताके मार्गमें सबसे बड़ी बाधा होगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३१-१२-१९३८

२७६. पत्र : लॉर्ड लिनलिथगोको

सेगाँव, वर्धा

२३ दिसम्बर, १९३८

प्रिय लॉर्ड लिनलिथगो,

मैं देखता हूँ कि कुछ रियासतोंमें वहाँके रेजिडेंट लोग रियासतके शासकको सरदार पटेल आदि जैसे कांग्रेसी नेताओंके साथ किसी भी प्रकारका सम्बन्ध रखने से मना करते हैं। ऐसे दो मामलोंके अकाट्य प्रमाण मेरे पास हैं। इनमें से एकका उल्लेख मैं यहाँ करनेको स्वतन्त्र हूँ। यह राजकोटके सम्बन्धमें है। मैं उसकी सारी तफसील बताकर आपको परेशान नहीं करना चाहता। मैं आशा करता हूँ कि केन्द्रीय उच्चाधिकारियोंका यह मंशा नहीं है कि देशी नरेशोंको कांग्रेसजनोंके साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रखने से मना किया जाये। रियासतोंकी जनताने मार्ग-दर्शन और सलाहके लिए हमेशा कांग्रेसपर भरोसा किया है। रियासतोंकी जनतामें बढ़ती हुई चेतनाको देखते हुए इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं है कि नरेश लोग अपनी प्रजाके साथ होनेवाले विवादोंको निपटाने के लिए कांग्रेसकी सलाह और सहायता लेते हैं। नरेशोंके लिए रेजिडेंटों द्वारा नापसन्दगी जाहिर करनेका मतलब वैसा न करनेके आदेशके समान है। लन्दनमें अभी हालमें जो-कुछ घोषणाएँ की गई हैं, उनसे प्रकट होता है कि ऐसे मामलोंमें उच्च सत्ताका कोई इरादा नरेशोंके कार्योंमें दखल देनेका नहीं है। यदि मेरी यह धारणा ठीक है, और यदि जाँचसे आपको पता चले कि मेरी शिकायत सही है, तो वैसी सूरतमें क्या मैं आशा करूँ कि आप सभी रेजिडेंटोंको आदेश देंगे कि देशी नरेश लोग यदि अपनी कठिनाइयोंको हल करनेमें कांग्रेसजनोंकी सहायता लेना चाहें तो उनके मामलेमें वे दखल न दें?

हृदयसे आपका,

मौ० क० गांधी

अंग्रेजीसे: लॉर्ड लिनलिथगो पेपर्स: माइक्रोफिल्म नं० १०७; सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार।

२७७. पत्र : जे० सी० कुमारणाको

२३ दिसम्बर, १९३८

प्रिय कु०,

तुम बम्बई गये इसकी मुझे खुशी है। यदि कोई नहीं जाता तो वह गलती ही होती। निस्सन्देह हमारे उद्देश्यके लिए सर्वोत्तम व्यक्ति तुम्हीं थे। मैं चाहूँगा कि यदि सम्भव हो तो तुम जो-कुछ करते रहे हो, उसके बारेमें ३० तारीखको मुझे कुछ और बताओ। लेकिन अगर तुम जरूरी समझो तो उक्त तारीखके और पहले भी मिल सकते हो।

मैं चाहूँगा कि सर पी० ३ जनवरीके बाद जल्दीसे-जल्दी बारडोली आ जायें।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१४७) से।

२७८. पत्र : सर्वेपल्ली राधाकृष्णनको

सेगाँव, वर्धा

२३ दिसम्बर, १९३८

प्रिय सर राधाकृष्णन,

जैसाकि आप जानते हैं, मेरा उद्देश्य सदा यह रहा है कि प्रान्तोंका भाषाओंके आधारपर पुनर्विभाजन किया जाये। इसके लिए संकेत आन्ध्र-आन्दोलनसे मिला था। इसलिए यदि आन्ध्रको इस समय भी प्रान्तका दर्जा मिल जाये तो मुझे बहुत ही खुशी होगी।^१

हृदयसे आपका,

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

महात्मा, खण्ड ६, पृ० ३५२-५३ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे।

१. इस वक्त डॉ० सर्वेपल्ली राधाकृष्णन सेगाँवमें गांधीजी से यह अनुरोध करने आये हुए थे कि वह राजाजीको मनावें कि मद्रासके स्कूलोंमें हिन्दी अनिवार्य न की जाये; देखिए “पत्र : च० राजगोपाला-चारीको”, पृ० २६४-५।

२७९. पत्र : इन्दु एन० पारेखको

सेगाँव, वर्धा
२३ दिसम्बर, १९३८

चि० इन्दु,

तेरा पत्र मिला। पिछला भी मिला था। दोनोंमें भावावेश है। तू धीरजके साथ वहाँ नौकरी खोज, या फिर मेरे पास बारडोली आ जा। वहाँ विचार करेंगे। ढीला क्यों पड़ता है? मैं पहली जनवरीको रवाना होकर बारडोली पहुँचूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२५६) से।

२८०. पत्र : बलवन्तसिंहको

सेगाँव
२३ दिसम्बर, १९३८

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा पत्र मैं ध्यानसे पढ़ गया हूँ। अच्छा है। लेकिन मैं देखता हूँ कि गाइओके वियोगकी बर्दाश्त हो नहीं सकती है। इतना समझो कि यह वियोग अधिक सेवाके कारण ही होता है। मुझे अनुभव हो जावेगा; तुमको भी हो जावेगा। अभी भी जो हो रहा है उसकी योग्यताका तुमारे दिलमें शक रहा है। यह ठीक बात नहीं है। क्योंकि शक है तो तुम्हारे त्यागमें ज्ञान नहीं है। कलकी तुम्हारी बातसे मैं यह समजा कि तुम्हारा दिल साफ हो गया है और तुमने समझ लीया है कि जो हो रहा है वह सब तरहसे उचित ही है। तुम्हारी क्षुद्रवृत्तिका तो मुझे ख्याल तक नहीं है। अहंकार की मैंने अवश्य बात की थी और वह भी मैंने तो स्तुतिके रूपमें कहा था। मैंने तो यहां तक कहा कि तुम्हारी गोभक्तिका तो मुकाबला न परनेकर न और कोई कर सकता है। न तुम्हारे जितनी मजदूरी पारनेकर या और कोई कर सकता है। तुम्हारा अनुभव भी काफी है क्योंकि बचपनसे ही खेती और गोरूका अनुभव मिला है। मैंने यह भी कहा ऐसा होते दुवे तुम्हारा ज्ञान व्यवस्थित नहीं है, शास्त्रीय नहीं है इसलिये पशु विज्ञानमें आगे बढ़ नहीं सकते हैं और तुम्हारा क्रोध तुमको और गार्डको भी खा जाता है। इसके साथ मैंने परनेकरको अपना दिल देखनेका कहा, और अपनेमें आत्मविश्वास लगे कि वह कब्जा ले सकता है तब ही कब्जा

ले ले। उस शर्तसे और इस हालतमें कब्जा उसको दीया है। नायकमजी से मैंने बाते कर ली है। वह तुमसे बात कर लेगा। इस वक्त कोई निश्चित रूपसे काम न लीया जाय। थोड़ा आराम लो, शान्तिसे जो हुवा है और हो रहा है उसपर ख्याल करो, थोड़ा वाचन, मनन करो, और सहज रूपमें जो-जो आश्रमका कार्य मिल जावे वह करो। चिमनलालसे मिल कर जिस कामके लीये उसको ज्यादा भीड़ होगी उसे करो। तुम्हारे जैसे-जैसे सेवकके लीये हमारी संस्थामें कामकी कोई कमी हो ही नहीं सकती है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९१४) से।

२८१. पत्र : सरस्वतीको

सेगाँव, वर्धा

२३ दिसम्बर, १९३८

चि० सुरू,

तेरा खत मिला है। मुझे अगले खतोंका कुछ स्मरण नहीं है तेरे सब खतका उत्तर मैंने भेजा है। मामाके^१ साथ मैंने काफी बातें की है, तुझे मेरे पास भेजने का खूब आग्रह किया है। अब तू विनय करती रहेगी तो शायद तुझे भेज देंगे। मुझे लिखा करना। मामा सब चीज जानते हैं। तुझे निर्भय होकर बात करना चाहिये।

बा आज देहरादून गई है कन्या-गुरुकुल उत्सवमें गई है। हम सब १ ली जाने-वारीको बारडोली जाते हैं। वहाँ एक मास रहना होगा। मैं तो आशा करूँगा कि तू वहाँ पहुँच जायगी।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। कांतीके खत आते रहते हैं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१७४) से। सी० डब्ल्यू० ३४४८ से भी;
सौजन्य : कान्तिनलाल गांधी।

२८२. अहिंसा ही एकमात्र मार्ग

श्री ग्रेगका यह पत्र^१ पाठकोंके लाभार्थ में यहाँ प्रस्तुत करता हूँ। श्री ग्रेगने खादी और अहिंसापर कई पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने संसारकी घटनाओंका परिश्रम-पूर्वक और सही अध्ययन किया है। पाठकोंको ज्ञात होना चाहिए कि श्री ग्रेग भारतमें काफी दिनों तक रह चुके हैं और यहाँसे अच्छी तरह परिचित हैं।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २४-१२-१९३८

२८३. निर्देश-पुस्तिकाकी जरूरत

श्री मृदुलावहनने मुझे एक पत्र भेजा है जिसका अर्थ स्वतन्त्र अनुवाद करने पर इस प्रकार है :

कन्या स्वयंसेविका दल बनानेकी दिशामें काम आरम्भ हो चुका है। स्वाभाविक है कि उन्हें कवायद, झण्डा-अभिवादन, राष्ट्र-गीत आदिमें अभ्यास करवानेकी आवश्यकता है। यदि कोई ऐसी निर्देश-पुस्तिका हो जिसमें ये महत्त्वपूर्ण विषय आ जायें तो इनके सम्बन्धमें सारे भारतमें व्यवहारकी एकरूपता हो सकती है। आजकल तो अराजकता है। हर व्यायामशाला अपनी मनचाही बातें सिखाती है, अपने ही पारिभाषिक शब्दोंका उपयोग करती है या अपने ही शब्द गढ़ लेती है, और बहुत जगह तो आदेश अंग्रेजीमें दिये जाते हैं। जरा सोचिए कि यह कैसी बात है कि गाँवकी लड़कियोंको, जो अंग्रेजी समझती ही नहीं, अंग्रेजीमें आदेश दिये जायें। यह काम अनिवार्य रूपसे केन्द्रीय कार्यालयको सँभालना चाहिए और जल्दीसे-जल्दी निपटा देना चाहिए। मेरे द्वारा सुझाई गई पुस्तक यदि एकदम प्रकाशित कर दी जाये तो यह उस स्वयंसेवक दलके प्रशिक्षणके लिए उपयोगी होगी जो महाकोशलमें होनेवाले आगामी कांग्रेस-अधिवेशनको ध्यानमें रखकर संगठित किया जा रहा है।

१. पत्र यहाँ नहीं दिया गया है। रिचर्ड बी० ग्रेगेने “युद्धके आधुनिक तरीकों और शस्त्रों” के फलस्वरूप होनेवाली विभीषिकाओंका वर्णन करनेके बाद यह मत व्यक्त किया था कि ऐसी कार्रवाइयोंका लड़कर सामना करनेका नाटक करना बड़ादुरी नहीं सरासर बेवकूफी है। उन्होंने अपने तर्कोंकी पुष्टिके लिए रसेल द्वारा लिखित पुस्तक *ह्विच वे टु पीस?* की एक प्रति भी भेजी थी जिसमें कहा गया है कि युद्ध द्वारा युद्धका स्थायी अन्त करना असम्भव है और पूर्ण शान्तिवाद ही उसका एकमात्र व्यावहारिक उपाय है।

मैं केन्द्रीय कार्यालयका ध्यान इस पत्रकी ओर दिलाता हूँ। इस किताबको एक हफ्तेके अन्दर प्रकाशित करना कठिन नहीं होना चाहिए। सामग्री तो उपलब्ध है ही, लेकिन बिखरी पड़ी है। मेरा खयाल है कि इस विषयपर डॉ० हार्डीकरने कुछ साहित्य प्रकाशित किया है। पण्डित मालवीयजीकी संस्थाने भी कोई निर्देश-पुस्तिका निकाली होगी। मुझे मालूम है कि बड़ौदाके प्रो० माणिकरावने हिन्दुस्तानीमें सरल पारिभाषिक शब्द तैयार करनेकी दिशामें बड़ा प्रयत्न किया है। वे शब्द काफी हद तक हमारी जरूरतें पूरी करते हैं। इस सामग्रीका उपयोग करके प्रामाणिक पुस्तक निकालना आसान काम होना चाहिए।

इस बारेमें मैं महाकोशल स्वागत-समितिको अपने उस सुझावका स्मरण दिलाना चाहूँगा जो मैंने हरिपुरामें दिया था। वह यह था कि कांग्रेसियों और आगन्तुकोंके लिए सफाई आदिके बारेमें सरल हिन्दुस्तानीमें एक निर्देश-पुस्तिका होनी चाहिए। यह पुस्तिका देवनागरी और उर्दू दोनों लिपियोंमें हो। आम तौरपर आगन्तुकोंकी अपनी ही सूझ-समझसे काम लेनेको छोड़ दिया जाता है। उन्हें यह भी मालूम नहीं होता कि जहाँ वे जाना चाहते हैं, वे स्थान कहाँ हैं या उनकी जरूरतकी चीजें उन्हें कहाँ मिलेंगी। कांग्रेस-अधिवेशनमें हर साल शामिल होनेवाले हजारों लोगोंकी सहायताके लिए एक ऐसी निर्देश-पुस्तिका का होना जरूरी है जिसमें कांग्रेस नगरका मानचित्र भी हो।

सेगाँव, २४ दिसम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३१-१२-१९३८

२८४. पत्र : च० राजगोपालाचारीको

सेगाँव, वर्धा

२४ दिसम्बर, १९३८

प्रिय सी० आर०,

सर राधाकृष्णन कल यहीं थे। उनका कहना था कि हिन्दी-विरोधी आन्दोलन बढ़ रहा है। उन्होंने तुम्हें यह सुझाव दिया था कि तुम्हें एक नैतिक आपत्तिकी धारा स्वीकार कर लेनी चाहिए, जिसके अनुसार ऐसे बच्चोंको हिन्दी सीखनेसे मुक्त कर दिया जाये जिनके माता-पिता लिखकर यह कहें कि उन्हें अपने बच्चोंके हिन्दी सीखनेपर नैतिक आपत्ति है। मेरा खयाल है तुम्हें याद होगा कि इस तरहका एक सुझाव आन्दोलनके आरम्भमें ही 'हरिजन' में दिया गया था। मैं समझता हूँ कि इसे कार्यान्वित करनेका अभी भी समय है। इस रियायतका अर्थ यदि एक विवेकहीन आन्दोलनको दी गई छूट भी लगाया जाये, तो भी तुम्हें इसकी कोई परवाह नहीं होनी चाहिए। तुम वही करोगे जो तुम्हें सर्वोत्तम लगेगा।

आन्ध्रको एक प्रान्तके रूपमें अलग करनेके बारेमें क्या राय है? तुमने इस आशयका कोई वक्तव्य दिया था कि तुम इस सिलसिलेमें कुछ कर रहे हो। क्या तुम कुछ कर रहे हो? वैसे तुम्हारा क्या हाल है?

सप्रेम,

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २०७२) से।

२८५. भेंट : एच० वी० हॉडसनको'

[२५ दिसम्बर, १९३८ के पूर्व]

श्री हॉडसनने यह राय जाहिर की कि हिन्दू-मुस्लिम प्रश्नका समाधान इसलिए कठिन हो गया है कि कांग्रेस, अपने स्वरूपके कारण ही, किसी दूसरे दलको न सहनेवाले एक "सर्वाधिकारवादी दल" का रूप ग्रहण करनेकी प्रवृत्ति रखती है और अपनेको मुख्य दलोंमें से केवल एक माननेकी बजाय, इस तरह व्यवहार करती है मानो देशमें वही एकमात्र ऐसा दल हो जो महत्वपूर्ण हो।

गांधीजी : कांग्रेसके बारेमें इस तरहका दृष्टिकोण अपनाना बहुत ही गलत है। कांग्रेस एकमात्र ऐसा दल होनेका ज़रूर दावा करती है जो इस देशकी जनताकी माँगको पूरा कर सकता है। उसका ऐसा दावा करना पूर्णतया उचित है। किसी दलको एक-न-एक दिन उस सीमा तक अपना अधिकार जताना ही होगा। उससे वह दल 'सर्वाधिकारवादी' नहीं हो जाता। कांग्रेसकी यह महत्वाकांक्षा है कि वह केवल किसी खास वर्गकी प्रतिनिधि न होकर पूरे राष्ट्रकी पूर्ण प्रतिनिधि बने, और यह एक ऐसी सराहनीय महत्वाकांक्षा है जो उसकी सर्वोत्कृष्ट परम्पराके अनुरूप है। कांग्रेसके इतिहासका यदि आपने अध्ययन किया हो तो आप देखेंगे कि कांग्रेस आरम्भसे ही देशके सभी वर्गोंकी, बिना किसी पक्षपात या भेदभावके, समान रूपसे सेवा और प्रतिनिधित्व करनेकी कोशिश करती आई है। इसकी स्वागत समितिमें राजा और महाराजा भी रहे हैं और कश्मीर तथा मैसूर-जैसे मामलोंमें इसने सर्वोपरि सत्ता के विरुद्ध रियासतोंके दावेकी वकालत की है। यदि मुस्लिम लीग इसे अपनेमें विलीन करना चाहे तो यह खुशीसे मुस्लिम लीगमें विलीन हो जायेगी या फिर जहाँ तक राजनैतिक कार्यका सवाल है, मुस्लिम लीग को अपनेमें विलीन करना चाहेगी। धार्मिक और सामाजिक कार्योंके लिए अलवत्ता हर सम्प्रदायका अपना अलग संगठन हो सकता है।

१ और २. प्यारेलाके २५-१२-१९३८के "वीकली लेटर" से उद्धृत। एच० वी० हॉडसन **राउंड टेबिल** पत्रिकाके सम्पादक थे।

हॉडसन : किन्तु कांग्रेस यदि अन्य राजनैतिक संगठनोंको अपनेमें विलीन करनेकी महत्वाकांक्षा रखती है, तो वह एक सर्वाधिकारवादी दल हुए बिना नहीं रह सकती।

गांधीजी : आप उसे सर्वाधिकारवादी कहकर उसे निन्द्य ठहरानेकी कोशिश कर सकते हैं, पर जब देश विदेशी हाथोंसे सत्ता छीननेके संघर्षमें जुटा हो तो विलयन अनिवार्य है। अलग-अलग और प्रतिद्वन्द्वी राजनैतिक संगठन वह नहीं रख सकता। देशकी समूची शक्ति तीसरे अपहर्ता दलको निकाल बाहर करनेमें लगनी चाहिए। भारतमें आज यही हो रहा है। जहाँ कोई ऐसा समान खतरा नहीं है, जिसका सबको विरोध करना हो, वहाँ विभिन्न विचारधाराओंका प्रतिनिधित्व करनेवाले अलग-अलग दल होने चाहिए। आपको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिए कि कांग्रेस अपनी इच्छा दूसरोंपर थोपती नहीं है। उसके हाथमें जो भी सत्ता है, अहिंसात्मक है।

हॉडसन : यदि मुसलमानोंको साथ लेकर चला जाये, तो क्या पूर्ण उत्तरदायी सरकार प्राप्त करनेकी दिशामें आप और तेजीसे अग्रसर नहीं होंगे?

गांधीजी : बेशक होंगे। व्यक्तिगत रूपसे मैं ऐसी कोई चीज नहीं चाहता जिसका मुसलमान विरोध करते हों। परन्तु मुझे विश्वास है कि हिन्दू-मुस्लिम समस्या का समाधान ज्यादातर लोग जितना सोचते हैं उससे बहुत जल्दी ही निकल आयेगा। मेरा यह दावा है कि मैं पूरी स्थितिको तटस्थ बुद्धिसे देख सकता हूँ। हमारे झगड़ोंमें कोई सार नहीं है। विभेदके जो मुद्दे हैं वे सतही हैं; जोड़नेवाले मुद्दे गहरे और स्थायी हैं। राजनैतिक और आर्थिक अधीनता सबके लिए समान है। जो जलवायु, जो नदियाँ, जो खेत हम [हिन्दुओं और मुसलमानों] दोनोंको वायु, जल और अन्न प्रदान करते हैं वे एक ही हैं। इसलिए, नेता, महात्मा और मौलाना चाहे कुछ कहें या करें, सामान्य जनता जब पूरी तरह जाग जायेगी तो अपने अधिकारका दावा करेगी और समान बुराईयोंसे लड़नेके लिए एक हो जायेगी।

समाजवादी और साम्यवादी प्रचारका प्रभाव भी दोनों सम्प्रदायोंके जन-साधारण को एक जगह लाता है, क्योंकि वह समान हितोंपर जोर देता है। उन लोगोंके साथ मेरे मतभेद हैं, पर जो अंधविश्वास विभिन्न सम्प्रदायोंको अलग किये रखता है उसे मिटानेके उनके प्रयासकी मैं सराहना किये बिना नहीं रह सकता।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३१-१२-१९३८

२८६. सन्देश : त्रावणकोर राज्य-कांग्रेसके अध्यक्षको

[२५ दिसम्बर, १९३८ या उसके पूर्व]^१

त्रावणकोर राज्य-कांग्रेसके अध्यक्षका तार मिलनेपर गांधीजी ने कहा, मुझे यह जानकर खुशी हुई कि दीवानके विरुद्ध लगाये गये व्यक्तिगत आरोप वापस ले लिये गये हैं। उन्होंने यह भी कहा कि पूरी स्थितिकी नये सिरसे जाँच करनेके लिए सविनय अवज्ञा आन्दोलन भी स्थगित कर देना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि आरोप वापस ले लेनेकी बातको ध्यानमें रखते हुए राज्य-सरकार मुकदमे वापस ले लेगी और कैदियोंको रिहा कर दिया जायेगा।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, २६-१२-१९३८

२८७. मणिबहन और चरखा

मणिबहन तो अपने नामके अनुसार 'मणि' ही है। अपने पिताके लिए जिसने सहर्ष कुमारिकाका जीवन अपनाया हो और उनकी सेवामें जिसने सर्वस्व अर्पित कर दिया हो, ऐसी भारतमें तो मुझे एक मणि ही दिखती है। पिताके एक ही शब्दपर वह राजकोट चली गई। अपनी इस अनन्य भक्तिसे मणिबहनको आश्चर्यजनक शक्ति प्राप्त हुई है। इस समय तो वह जेलमें है।^१ मुझे पत्र लिखती रहती है। कुछ पत्र प्रकाशित करने योग्य हैं, किन्तु 'हरिजनबन्धु' के लिए इन दिनों मैं लिख ही नहीं पाता। अवकाश ही नहीं मिलता। किन्तु जेलसे लिखे हुए उसके अन्तिम पत्रका अन्तिम वाक्य मैं पाठकोंके समक्ष रखे बिना नहीं रह सकता। इस वाक्यमें चरखेकी स्तुति है। यह रहा वह वाक्य :

चरखा चलानेका ऐसा निर्बिघ्न अवकाश मुझे बहुत समयके बाद मिला। और इस प्रकार शान्तिपूर्वक कातनेका अवसर मिले, तो फिर मुझे किसी और वस्तुकी आवश्यकता ही नहीं होती। मुझे तो इसमें अद्भुत आनन्द मिलता है। मन होता है कि जिन दिनों मैं कात नहीं पाई, उन दिनोंकी कमीकी पूर्ति इसी अवकाशमें कर डालूँ।

१. सन्देशकी रिपोर्ट दिनांक २५ दिसम्बर, १९३८ के अन्तर्गत छपी थी।

२. राजकोट-सत्याग्रहमें भाग लेनेके कारण मणिबहन पेटेलको ५ दिसम्बर, १९३८ को गिरफ्तार किया गया था।

चरखेका प्यार, त्याग, पितृ-भक्ति और प्रथम श्रेणीका साहस — इन सब गुणोंका सुन्दर मेल जिनमें हो, ऐसे व्यक्ति बहुत कम दिखते हैं और जब दिखते हैं तो मेरा मन खुशीसे नाच उठता है।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, २५-१२-१९३८

२८८. हैदराबाद राज्य-कांग्रेसके लिए वक्तव्यका मसविदा^१

[२६ दिसम्बर, १९३८ के पूर्व]^२

हैदराबाद प्रान्त-कांग्रेसकी कार्यकारिणीने बड़े सोच-विचारके बाद यह निश्चय किया है कि सत्याग्रहको अस्थायी तौरपर स्थगित कर दिया जाये। यह सत्याग्रह अभी हाल ही में चलाया गया था और इसके कारण अब तक ४०० से ज्यादा सत्याग्रही कैदी हो चुके हैं। सजाओंकी अवधि एक महीनेसे साढ़े तीन साल तककी है।

जनता यह जानना चाहेगी कि यह निर्णय किन कारणोंसे लिया गया है।

राज्य-कांग्रेसके बारेमें बहुत ज्यादा भ्रामक बातें कही गई हैं। इसे साम्प्रदायिक संस्था बताया गया है। इसकी गतिविधियों और आर्य सुरक्षा लीग तथा हिन्दू सिविल लिबर्टीज यूनियनकी गतिविधियोंको भ्रमवश एक मान लिया गया है। दुर्भाग्यसे आर्य-समाज और हिन्दू महासभाके आन्दोलन राज्य-कांग्रेसके सविनय अवज्ञा आन्दोलनके साथ-साथ ही चले। निर्णायक कारण यहाँ यह रहा है कि गांधीजी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू और दूसरे कांग्रेसी नेताओंने यही सलाह दी कि अपनी स्थितिको पूरी तरह स्पष्ट करनेके लिए यह जरूरी है कि हम सविनय अवज्ञाको स्थगित कर दें। उनका कहना है कि आन्दोलनको स्थगित कर देनेसे महामहिम निजामकी सरकारको अवसर मिलेगा कि वह स्थितिका फिरसे जायजा ले। रियासतके अन्दर स्वराज्यका संघर्ष चलानेमें जिन नेताओंकी सहानुभूति और समर्थन सदा हमारा एक बड़ा आधार रहा है, उनकी इस सलाहकी अवहेलना हम नहीं कर सकते थे।

हम इस आशासे सविनय अवज्ञा स्थगित करते हैं कि इसे फिरसे चलानेकी जरूरत नहीं पड़ेगी। परन्तु इसे फिरसे चलानेकी जरूरत होगी या नहीं और यदि हुई तो कब होगी, इन प्रश्नोंका उत्तर पूरी तरह रियासतके अधिकारियोंके रुखपर निर्भर करता है। इस वक्त हमारे ४०० से अधिक साथी साढ़े चार सालसे लेकर दो महीने तककी कैद भोग रहे हैं। ऐसी स्थितिमें संघर्ष स्थगित कर देना हमारे लिए कोई कम पीड़ाजनक नहीं रहा है। सविनय अवज्ञाके लिए हमारी सूचीमें २,००० से अधिक स्वयंसेवक हैं। यह सूची प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। हर बार स्वयंसेवकोंके कैद होनेपर सूचीमें बढ़ोतरी हो जाती है। रियासतके बाहरके स्वयंसेवकोंने भी संघर्षमें

१. पहले दो अनुच्छेदोंको छोड़कर मसविदा गांधीजी की लिखावटमें है।

२. देखिए “पत्र : अकबर हैदरीको”, पृ० २७४।

भाग लेनेकी इच्छा प्रगट करते हुए हमें अपने नाम भेजे हैं जिससे हम उलझनमें पड़ गये हैं। उनके प्रस्तावको अस्वीकार करनेके लिए हमें इसलिए बाध्य होना पड़ा है कि हम समझते हैं कि इस आन्दोलनको अहिंसात्मक बनाये रखनेके लिए यह जरूरी है कि हम आन्तरिक शक्ति और सहायतापर ही निर्भर रहें।

परन्तु यदि हम बातचीत और अनुनय द्वारा अपने उद्देश्यकी पूर्ति कर सकें तो हमें अपनी शक्तिका उपयोग करने और कष्ट उठानेकी कोई इच्छा नहीं है। इसलिए हम आशा करते हैं कि सरकार आन्दोलन स्थगित करनेके पीछे शान्ति बनाये रखने और रियासतके प्रति निष्ठा व्यक्त करनेके हमारे उद्देश्यको समझेगी। हमें आशा है कि वह सविनय अवज्ञाके कैदियोंको रिहा कर देगी और राज्य-कांग्रेस और इसकी गतिविधियोंपर से प्रतिबन्ध उठा लेगी तथा एक ऐसी उत्तरदायी सरकार बनानेकी योजना शुरू करनेकी दिशामें पथ प्रशस्त करेगी जिसमें अल्पमतवालोंके अधिकारोंके लिए उपयुक्त संरक्षणोंकी व्यवस्था भी होगी।

यहाँ हम प्रान्तीय कांग्रेसके सदस्योंका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहेंगे कि अहिंसात्मक स्वराज्य आन्दोलनके दो पहलू हैं। एक प्रतिकारात्मक और दूसरा रचनात्मक। सविनय अवज्ञा प्रतिकारात्मक है और इसलिए अस्थायी है। दूसरा रचनात्मक और स्थायी है। हमें आशा है कि लोग स्थायी पहलूको कभी नहीं भूलेंगे। सच तो यह है कि रचनात्मक कार्यक्रममें जितनी तेजी आती है सविनय अवज्ञाके लिए हमारी योग्यता भी उसी परिमाणमें बढ़ती रहती है। रचनात्मक कार्यमें हाथ-कटाई, हाथ-बुनाई और इसी तरहकी अन्य उत्पादक प्रवृत्तियाँ, महामहिम निजामकी प्रजाके विविध सम्प्रदायोंके बीच दिली एकता बढ़ाना, छूआछूत हटाना, नशीले पदार्थोंसे पूरी तरह दूर रहना और इसी तरहके दूसरे सुधार शामिल हैं। कारण, स्वतन्त्रता-प्राप्तिके लिए चलाया जानेवाला अहिंसात्मक आन्दोलन शुद्धीकरण और सामाजिक तथा आर्थिक सुधारकी ही प्रक्रिया है। इसके सिवा वह कुछ और हो भी नहीं सकता। सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित किये जानेसे कोई यह न सोचे कि उत्तरदायी सरकारके लिए किया जानेवाला आन्दोलन स्थगित किया जा रहा है। सच तो यह है कि इससे हमारे रचनात्मक कार्यमें दुगुना जोर आना चाहिए, क्योंकि सविनय अवज्ञाके स्थगित कर दिये जानेसे रचनात्मक कार्यके लिए मन स्वतन्त्र हो जायेगा।

अन्तमें हम उन सब मित्रोंका धन्यवाद करना चाहते हैं जिन्होंने हमें अपनी सलाह और ठोस मदद देकर हमारी सहायता की है।

अंग्रेजीकी प्रति (सी० डब्ल्यू० १०१५२९) से।

२८९. विद्यार्थियोंके लिए लज्जाजनक

पंजाबके एक कॉलेजकी लड़कीका एक अत्यन्त हृदयस्पर्शी पत्र करीब दो महीनेसे मेरी फाइलमें पड़ा हुआ है। इस लड़कीके प्रश्नका जवाब अभी तक जो नहीं दिया, इसमें समयके अभावका तो केवल एक बहाना ही था। किसी-न-किसी तरह इस कामसे अपनेको मैं बचा रहा था; हालाँकि मैं यह जानता था कि इस प्रश्नका क्या जवाब देना चाहिए। इसी बीच मुझे एक और पत्र मिला। यह पत्र एक ऐसी बहनका लिखा हुआ है, जिन्हें जीवनका बहुत अनुभव है। तब मुझे ऐसा महसूस हुआ कि कॉलेजकी इस लड़कीकी जो यह अत्यन्त वास्तविक कठिनाई है, इसका उपाय बताना मेरा कर्तव्य है तथा इसकी अब मैं और अधिक दिनों तक उपेक्षा नहीं कर सकता। पत्र उसने शुद्ध हिन्दुस्तानीमें लिखा है। मुझे इस पत्रके साथ, जो उस लड़की की गहरी भावनाका पूर्ण चित्र मेरे सामने प्रस्तुत करता है, यथाशक्ति न्याय करनेका प्रयत्न करना चाहिए। पत्रका एक भाग मैं अपने शब्दोंमें नीचे दे रहा हूँ :

लड़कियों और वयस्क स्त्रियोंके सामने, उनकी इच्छाके विरुद्ध, ऐसे अवसर आते ही हैं जब उन्हें अकेले जानेकी हिम्मत करनी पड़ती है—या तो उन्हें एक ही शहरमें एक जगहसे दूसरी जगह या एक शहरसे दूसरे शहरको जाना होता है। और जब वे इस तरह अकेली होती हैं, तब गन्दी मनोवृत्तिवाले लोग उन्हें तंग किया करते हैं। उनके पाससे गुजरते हुए वे वाहियात और गन्दी आवाजें कसते हैं। और अगर भय न हो, तो इससे भी आगे बढ़नेमें उन्हें कोई हिचकिचाहट नहीं होती। मैं यह जानना चाहती हूँ कि ऐसे मौकों पर अहिंसा क्या काम दे सकती है? हिंसाका उपयोग तो है ही। अगर उस लड़की या स्त्रीमें काफी हिम्मत हो, तो उसके पास जो भी साधन होंगे उन्हें वह काममें लायेगी और बदमाशोंको सबक सिखा देगी। वे कम-से-कम हल्ला-गुल्ला तो कर ही सकती हैं, जिससे कि लोगोंका ध्यान आकर्षित हो जाये और गुण्डे वहाँसे भाग जायें। मैं यह जानती हूँ कि इसके परिणाम-स्वरूप विपत्ति तो टल जायेगी, परन्तु यह कोई स्थायी इलाज नहीं है। अशिष्ट व्यवहार करनेवाले लोगोंको अगर हम जानते हों, तो मुझे विश्वास है कि उन्हें समझाया जा सकता है, प्रेम और नम्रताका उन पर असर होगा। परन्तु उस आदमीके लिए आप क्या कहेंगे, जो साइकिलपर चढ़ा हुआ किसी ऐसी लड़की या स्त्रीको देखकर, जिसके साथ कोई पुरुष न हो, गन्दी भाषाका प्रयोग करता है? उसे दलील देकर समझानेका आपको मौका नहीं है। आपके उससे फिर मिलनेकी कोई सम्भावना नहीं है। हो सकता है कि आप उसे पहचानें भी नहीं। आपको उसका पता भी मालूम नहीं है। ऐसी परिस्थितिमें

वह बेचारी लड़की या स्त्री क्या करे? मैं अपना ही उदाहरण देकर आपको अपना अनुभव बताती हूँ। कल (२६ अक्टूबरकी) रातकी बात है। मैं अपनी एक सहेलीके साथ शामके ७-३० बजेके करीब एक खास कामसे जा रही थी। उस समय किसी पुरुषको साथ ले जाना असम्भव था और कार्य इतना आवश्यक था कि टाला नहीं जा सकता था। रास्तेमें एक सिख युवक साइकिल पर कुछ गुनगुनाता हुआ जा रहा था। हम सुन सकें इतनी दूरी तक उसने गुनगुनाना जारी रखा। हमें यह मालूम था कि वह हमें लक्ष्य करके ही गुनगुना रहा है। हमें उसकी यह हरकत बहुत नागवार मालूम हुई। सड़कपर कोई चहल-पहल नहीं थी। हमारे चन्द कदम जानेसे पहले ही वह लौट पड़ा। हम उसे फौरन पहचान गई, हालाँकि वह अब भी हमसे काफी फासलेपर था। उसने हमारी तरफ साइकिल घुमाई। ईश्वर जाने, उसका इरादा उतरनेका था, या यों ही हमारे पाससे सिर्फ गुजरनेका। हमें ऐसा लगा कि हम खतरेमें हैं। हमें अपनी शारीरिक क्षमतामें विश्वास नहीं था। मैं एक औसत लड़कीके मुकाबले शरीरसे कमजोर हूँ। लेकिन मेरे हाथमें एक बड़ी-सी किताब थी। एकाएक किसी तरह मेरे अन्दर हिम्मत आ गई। साइकिलकी तरफ मैंने किताबको जोरसे दे मारा और चिल्लाकर कहा, “छेड़छाड़ करनेकी तू फिर हिम्मत करेगा?” वह मुश्किलसे अपनेको सँभाल सका और साइकिलकी रफ्तार बढ़ाकर वहाँसे रफूचक्कर हो गया। अब अगर मैंने उसकी साइकिलकी तरफ किताब जोरसे न फेंकी होती, तो वह अन्त तक इसी तरह अपनी गन्दी भाषासे हमें तंग करता जाता। यह एक मामूली बल्कि नगण्य-सी घटना है। लेकिन, काश आप लाहौर आते और हम अभागी लड़कियोंकी मुसीबतोंकी दास्तान खुद अपने कानों सुनते। आप निश्चय ही इस समस्याका ठीक-ठीक हल ढूँढ़ सकते हैं। सबसे पहले आप मुझे यह बतायें कि ऊपर जिन परिस्थितियों का मैंने वर्णन किया है उनमें लड़कियाँ अहिंसाके सिद्धान्तका प्रयोग किस तरह कर सकती हैं और कैसे अपने-आपको बचा सकती हैं? दूसरे, स्त्रियोंको अपमानित करनेकी जिन युवकोंको बहुत बुरी आदत पड़ गई है, उनको सुधारनेका उपाय क्या है? आप यह उपाय तो सुझायेंगे नहीं कि हमें उस नई पीढ़ीके आनेका इन्तजार करना चाहिए जिसने बचपनसे ही स्त्रियोंके साथ भद्रोचित व्यवहार करनेकी शिक्षा पाई होगी, और तब तक हमें इस अपमानको चुपचाप बर्दाश्त करते रहना चाहिए। सरकारकी या तो इस सामाजिक बुराईका मुकाबला करनेकी इच्छा नहीं है या वह ऐसा करनेमें असमर्थ है। और हमारे बड़े-बड़े नेताओंके पास ऐसे प्रश्नोंके लिए समय ही नहीं है। कुछ लोग जब यह सुनते हैं कि किसी लड़कीने अशिष्टतासे पेश आनेवाले नवयुवककी अच्छी तरहसे मरम्मत कर दी है, तो कहते हैं, ‘शाबास, ऐसा ही सब लड़कियोंको करना चाहिए।’ कभी-कभी किसी नेताको हम विद्यार्थियोंके ऐसे दुर्व्यवहारके खिलाफ लच्छेदार भाषण करते हुए पाते हैं। लेकिन ऐसा कोई नजर नहीं आता,

जो इस गम्भीर समस्याका हल निकालनेमें निरन्तर प्रयत्नशील हो। आपको यह जानकर कष्ट और आश्चर्य होगा कि दीवाली और ऐसे ही दूसरे त्योहारोंपर अखबारोंमें इस किस्मकी चेतावनियाँ निकला करती हैं कि रोशनी देखने तकके लिए औरतोंको घरोंसे बाहर नहीं निकलना चाहिए। इस एक ही बातसे आप जान सकते हैं कि दुनियाके इस हिस्सेमें हम किस कदर मुसीबतोंमें फँसी हुई हैं। न तो इस तरहकी चेतावनियोंके लिखनेवालोंको और न पढ़नेवालोंको ही इस बातपर शर्म महसूस होती है कि ऐसी चेतावनियाँ देनी पड़ती हैं।

एक दूसरी पंजाबी लड़कीको मैंने यह पत्र पढ़नेके लिए दिया था। उसने भी अपने कॉलेज-जीवनके निजी अनुभवोंके आधारपर इस घटनाकी पुष्टि की। उसने मुझे बताया कि पत्र-लेखिकाने जो-कुछ लिखा है, वैसा ही अनुभव अधिकांश लड़कियोंका है।

एक और अनुभवी महिलाने लखनऊकी अपनी सहेलियोंके अनुभव लिखे हैं। सिनेमा-थियेटरोंमें उनके पीछेकी लाइनमें बैठे लड़के उन्हें परेशान करते हैं, उनके लिए वे ऐसी भाषाका प्रयोग करते हैं जिसे अश्लीलके सिवा और कोई नाम नहीं दिया जा सकता। लड़कियोंके साथ किये जानेवाले भद्दे मजाक भी पत्र-लेखिकाने मुझे लिखे हैं, लेकिन मैं उन्हें यहाँ उद्धृत नहीं कर सकता।

अगर सिर्फ तात्कालिक निजी रक्षाका सवाल हो तो इसमें सन्देह नहीं कि अपनेको शारीरिक दृष्टिसे कमजोर बतानेवाली उस लड़कीने जो इलाज — साइकिलके सवारपर जोरसे किताब मारकर — किया वह बिल्कुल ठीक है। यह बहुत पुराना इलाज है। मैं 'हरिजन' में पहले भी लिख चुका हूँ कि यदि कोई व्यक्ति हिंसक व्यवहार करनेपर उतारू होना चाहता है, तो उसके रास्तेमें शारीरिक कमजोरी भी रुकावट नहीं डालती, भले ही उसके मुकाबलेमें शारीरिक दृष्टिसे कोई बलवान विरोधी हो। और हम यह भली-भाँति जानते हैं कि आजकल तो शारीरिक बलका प्रयोग करनेके इतने ज्यादा तरीके निकल चुके हैं कि एक छोटी लेकिन चालाक लड़की किसी की हत्या और विनाश तक कर सकती है। जिस परिस्थितिका उल्लेख पत्र-लेखिकाने किया है वैसी परिस्थितिमें लड़कियोंको आत्मरक्षाके तरीके सिखानेका रिवाज आजकल बढ़ रहा है। लेकिन वह लड़की यह भी खूब समझती है कि भले ही वह उस क्षण अपने हाथकी किताबका उपयोग आत्मरक्षाके हथियारके रूपमें कारगर ढंगसे कर सकी हो, लेकिन इस बढ़ती हुई बुराईका वह कोई सच्चा इलाज नहीं है। अश्लील मजाकके कारण बहुत घबरानेकी जरूरत नहीं है। लेकिन उसकी ओरसे आँख मूंद लेना भी ठीक नहीं। ऐसे सब मामले अखबारोंमें छपवा देने चाहिए। ठीक-ठीक मालूम होनेपर शरारतियोंके नाम भी अखबारोंमें छपवा देने चाहिए। इस बुराईका भण्डाफोड़ करनेमें किसीका झूठा लिहाज नहीं करना चाहिए। इस सार्वजनिक बुराईके विरुद्ध प्रबल लोकमतके समान कोई और इलाज नहीं है। जैसाकि पत्र-लेखिकाने कहा है, इसमें कोई शक नहीं कि इन मामलोंको जनता बहुत उदासीनतासे देखती है। लेकिन सिर्फ जनताको ही क्यों दो दिया जाये? उसके सामने अभद्रताके ऐसे

मामले आने भी तो चाहिए। चोरीके मामले पता लगाकर छापे जाते हैं, उनके पीछे पड़ा जाता है तब कहीं जाकर चोरी कम होती है। इसी तरह जब तक ऐसे अभद्रता के मामले दबाये जाते रहेंगे, तब तक इस बुराईका इलाज नहीं हो सकता। बुराई और पाप भी अपने शिकारको खोजनेके लिए अन्धकार चाहते हैं। जब उनपर रोशनी पड़ती है तो वे खुद ही खत्म हो जाते हैं।

लेकिन मुझे डर यह है कि आधुनिक लड़कीको भी अनेक लोगोंकी दृष्टिमें आकर्षक बनना प्रिय है। वह दुस्साहसको पसन्द करती है। ऐसा लगता है कि पत्र-लेखिका आम लड़कियों-जैसी नहीं है। आधुनिक लड़की हवा, वर्षा या धूपसे बचनेके उद्देश्यसे नहीं, बल्कि लोगोंका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करनेके लिए तरह-तरहके भड़कीले कपड़े पहनती है। वह पाउडर बगैरहसे अपनेको रँगकर कुदरतको भी मात करना चाहती है और असाधारण सुन्दर दिखना चाहती है। अहिंसात्मक मार्ग ऐसी लड़कियोंके लिए नहीं है। मैं इन पृष्ठोंमें बहुत बार लिख चुका हूँ कि हमारे हृदयमें अहिंसाकी भावनाका विकास हो इसके लिए भी कुछ निश्चित नियम होते हैं। यह एक कष्टसाध्य प्रयत्न है। विचार और जीवनके तरीकोंमें यह क्रान्ति उत्पन्न कर देता है। यदि पत्र-लेखिका और उसी की तरहके विचार रखनेवाली दूसरी सब लड़कियाँ ऊपर बताये गये तरीकेसे अपने जीवनको बिलकुल ही बदल डालें, तो उन्हें जल्दी ही यह अनुभव होने लगेगा कि उनके सम्पर्कमें आनेवाले नौजवान उनका आदर करना तथा उनकी उपस्थितिमें भद्रोचित व्यवहार करना सीखने लगे हैं। लेकिन यदि उन्हें किसी समय ऐसा लगे, जैसाकि सम्भव है, कि उनके शीलपर हमला होनेका खतरा है, तो उनमें मनुष्यकी पाशविकताके आगे आत्मसमर्पण करनेके बजाय मर जानेका साहस होना चाहिए। कहा गया है कि जिस लड़कीको बाँधकर या मुँहमें कपड़ा ठुँसकर इस तरह विवश कर दिया जाता है कि वह मुकाबला भी न कर सके, ऐसी लड़की उतनी आसानीसे, जितना कि मैं सोचता हूँ, मर नहीं सकती। फिर भी मैं जोरोंके साथ यह कहता हूँ कि जिस लड़कीमें मुकाबला करनेका दृढ़ संकल्प है, वह उसे विवश करनेके लिए काममें लाये गये सारे बन्धनोंको तोड़ सकती है। दृढ़ संकल्प उसे मरनेकी शक्ति दे सकता है।

लेकिन यह साहस उन्हींके लिए सम्भव है, जिन्होंने इसका अभ्यास कर लिया है। जिनका अहिंसामें दृढ़ विश्वास नहीं है, उन्हें आत्मरक्षाके साधारण तरीके सीखकर कायर युवकोंके अश्लील व्यवहारसे अपना बचाव करना चाहिए।

परन्तु बड़ा सवाल तो यह है कि नवयुवक साधारण शिष्टाचार भी किसलिए छोड़ दें, जिससे कि भली लड़कियोंको उनसे सताये जानेका हमेशा डर लगा रहे? मुझे यह जानकर दुःख होगा कि ज्यादातर नवयुवकोंमें स्त्री-सम्मान की भावनाका ही लोप हो गया है। इसके विपरीत, उन्हें तो अपने युवक-वर्गको बदनाम न होने देनेकी सावधानी रखनी चाहिए और अपने साथियोंमें पाये जानेवाले असभ्यताके ऐसे प्रत्येक मामलेका इलाज करना चाहिए। उन्हें हरएक स्त्रीका अपनी माँ और बहनकी तरह आदर करना सीखना चाहिए। यदि वे शिष्टाचार नहीं सीखेंगे, तो उनकी सारी शिक्षा बेकार है।

और क्या प्रोफेसरों तथा स्कूल-शिक्षकोंका यह कर्तव्य नहीं है कि जिस प्रकार वे अपने विद्यार्थियोंको कक्षामें बैठाकर पाठ्यक्रमके विषय सिखाते हैं, उसी प्रकार वे उन्हें शिष्टताका पाठ भी सिखायें ?

सेगाँव, २६ दिसम्बर, १९३८

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ३१-१२-१९३८

२९०. पत्र : अकबर हैदरीको^१

सेगाँव

२६ दिसम्बर, १९३८

प्रिय सर अकबर,

हैदराबादके मामलोंपर मैंने जान-बूझकर आपको कष्ट नहीं दिया। परन्तु हैदराबाद राज्य कांग्रेस ने जो निर्णय किया है, उसमें चूँकि मैंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, इसलिए मुझे लगा कि मुझे आपको अवश्य लिखना चाहिए। आशा है, [सविनय-अवज्ञा] स्थगित करने^२ की इस बुद्धिमत्ताकी आप सराहना करेंगे और उनकी कार्रवाईका उत्तर उदार ढंगसे देंगे।

आशा है, अब आप पूर्ण स्वस्थ हो गये होंगे।

हृदयसे आपका,

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६८४१) से।

२९१. पुर्जा : जमनालाल बजाजको

२६ दिसम्बर, १९३८

कल हम लोग कुछ समय बात करेंगे, या फिर तुम दो-एक दिन रुक सको तो रुक जाओ। मुझे लगता है, तुम्हारे मर्जका इलाज सरल है। घबराने-जैसी कोई बात नहीं है। अन्ततः तुम्हारा विनाश तो नहीं ही है। किन्तु तुम्हारा दोष मैं अवश्य स्वीकार करता हूँ, क्योंकि मुझे तो ऐसे सारे अनुभव हो चुके हैं। अभी तो इतना ही कहता हूँ कि यह उलझन यहीं सुलझा लेनेके बाद ही यहाँसे जाना।

१. हैदराबादके दीवान।

२. देखिए “ हैदराबाद राज्य-कांग्रेसके लिए वक्तव्यका मसविदा”, पृ० २६८-९।

आज रातको ही लिख डालूंगा।^१

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९९७) से।

२९२. पत्र : जमनालाल बजाजको

दोबारा नहीं पढ़ा

सेगाँव

२६ दिसम्बर, १९३८

चि० जमनालाल,

अभी अंग्रेजीकी एक सुन्दर उक्ति देखी थी। उसका अर्थ यह है कि मनुष्यको अपने दोषोंका नहीं, गुणोंका चिन्तन करना चाहिए, क्योंकि मनुष्य जैसा चिन्तन करता है वैसा बनता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि दोष देखें ही नहीं। देखें तो जरूर, लेकिन उनका विचार करके पागल न बनें। ऐसा हमारे शास्त्रोंमें भी लिखा है। इस कारण तुम्हें आत्मविश्वास रखकर यह निश्चय करना चाहिए कि तुम्हारे हाथों कल्याण ही होनेवाला है। हुआ तो है ही।

तुम्हें अतिलोभ छोड़ना चाहिए। व्यक्तिगत व्यापार, फिर चाहे उसका उद्देश्य परोपकार करना ही क्यों न हो, खत्म कर देना चाहिए। खत्म न कर सको तो कड़ी मर्यादा निश्चित करनी चाहिए। राजनीतिक क्षेत्रसे भी निकलनेका प्रयत्न करना चाहिए। अगर उसमें रहना ही पड़े और तुम अपनी ही शर्तोंपर रह सकते हो तो केवल मध्य प्रान्तके संगठनका कार्य करो। पर तुम्हारा क्षेत्र तो पारमार्थिक व्यापार है। इसलिए तुम फिरसे चरखा-संघमें अपनी सारी शक्तिका उपयोग करो। इस काममें तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारी नीति और तुम्हारी व्यापार-शक्तिका पूरा उपयोग हो सकता है। राजनीतिमें बहुत गन्दगी रहती है। उसके अन्दर तुम्हें सन्तोष मिले, इसकी कम ही सम्भावना है। चरखा-संघ पूर्ण सफल हो जाये तो सहज ही पूर्ण स्वराज मिल सकता है। इसमें तुम कूद पड़ो, तो ग्रामोद्योग, अस्पृश्यता-निवारण आदिमें भी थोड़ा-बहुत ध्यान दे सकते हो। लेकिन वह तो तुम्हारी इच्छापर निर्भर है। यह तो अतिलोभको रोकनेके लिए और तुम्हें मनके मुताबिक पूरा काम मिल सके, इसके लिए सूचित कर दिया है।

दूसरी वस्तु विकार है। यह जरा कठिन है। मैं अगर तुम्हें ठीक-ठीक जान पाया हूँ तो मैं यह समझता हूँ कि तुम्हें स्त्रियोंके द्वारा अपनी परिचर्या करवाना रोक देना चाहिए। सब इसे पचा नहीं सकते। यह कह सकते हैं कि हमारे मण्डलमें स्त्री-परिचर्या लेनेवाला प्रायः एकमात्र मैं ही हूँ। मेरी सफलता या असफलताका निर्णय मेरी मृत्युके बाद ही निकल सकेगा। मेरे लिए तो यह प्रयोग ही है। मैं स्वयं भी

दावेके साथ नहीं कह सकता कि मैं सफल ही हुआ हूँ। मेरी कामना शुक्रदेवजीकी स्थितिको पहुँचनेकी है। उस स्थितिसे मैं कई योजन दूर हूँ। अगर तुममें आत्म-विश्वास हो तो मुझे कुछ कहना ही नहीं है। लेकिन अगर न हो और मेरा समझना ठीक हो तो तुम्हें गहरा आत्मावलोकन करके उचित परिवर्तन करना चाहिए। इसमें स्त्री-सेवा छोड़नेकी बात नहीं है।

इनमें से एक भी चीजकी प्रतिध्वनि यदि तुम्हारे हृदयमें न उठे तो तुम्हें कुछ नहीं करना है। मेरे साथ विचारोंका आदान-प्रदान करते रहना। निराशाकी कोई गुंजाइश नहीं है। तुम पतित नहीं हो, सत्यनिष्ठ हो। सत्यनिष्ठका पतन सम्भव ही नहीं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९९८) से।

२९३. पत्र : मीराबहनको

सेगाँव, वर्धा

[२७ दिसम्बर, १९३८]^१

चि० मीरा,

तुम्हारी रोजकी डाक एक ऐसी घटना है जिसकी मैं उत्कंठासे प्रतीक्षा करता रहता हूँ। मेरा हृदय और मेरी आत्मा तुम्हारे साथ है। आत्मा तो तुम्हारे आसपास ही घूमती रहती है। तुम्हें हार नहीं माननी चाहिए। तुम्हें खान साहब से जो भी तुम उनसे कहना चाहो सो नम्रतापूर्वक कह सकनेकी कला सीख लेनी चाहिए। तुम्हें अपना स्वास्थ्य ठीक रखना चाहिए और वहीं, यानी सीमाप्रान्तमें, रहते हुए ही ठीक रखना चाहिए। मैं तुम्हारी मृत्युका जोखिम उठानेके लिए तैयार हूँ लेकिन यह नहीं चाहूँगा कि अपना स्वास्थ्य सुधारनेके लिए तुम लौटकर सेगाँव आ जाओ। पेशावरमें तुम ठीक रहोगी। यदि उटमंजईमें तबीयत ठीक न रहती हो तो सप्ताहका अन्तिम दिन तुम पेशावरमें बिता सकती हो। तुम्हें तीन चीजोंकी जरूरत है। तुम्हें घूमने-फिरनेके लिए बाहर जानेकी सुविधा होनी चाहिए, इसके सिवा तुम्हारे पास, केवल तुम्हारे ही लिए एक लड़का या लड़की होनी चाहिए। खानसाहबसे कहना कि ऐसी अपेक्षा नहीं है कि वे तुम्हारे ऊपर खर्च करें; मैं कुछ पैसा तुम्हारे लिए कल ही भेजनेकी उम्मीद करता हूँ।

मैंने अगाथासे कहा था कि वह जार्डिनसे तुम्हें निमन्त्रित करनेको कहे। तुम हिन्दुओंके घरोंमें बेशक जा सकती हो। लेकिन मैं चाहता हूँ कि फिलहाल तुम ऐसा तब तक मत करो जब तक खानसाहब स्वयं तुम्हें ऐसा करनेके लिए न कहें।

जो भी हो तुम अच्छी तरह सोच-समझ लो कि तुम्हें मेरा यह सुझाव पसन्द आया है या नहीं कि तुम्हें वहीं करना या मरना है। मैं निस्सन्देह वहाँ मार्चमें आ रहा हूँ। अलबत्ता यह मार्चके मध्यके पहले नहीं हो सकेगा, क्योंकि कांग्रेसकी बैठक १० मार्चके पहले नहीं होगी।

महादेव कल लौट आया। कलकत्ताके प्रवासके आखिरी दिन उसके स्वास्थ्यने जवाब दे दिया। वैसे, शरीरसे तो ठीक दिखता है लेकिन उसका दिमाग अच्छी तरह काम नहीं कर रहा है। उसे विश्रामकी और उन्मुक्त आहारकी जरूरत है। गोसाबामें उसने अपने शरीरसे आवश्यकतासे अधिक काम लिया।

यहाँ मुलाकातियोंकी काफी भीड़ है किन्तु मैं विभिन्न कामोंके लिए निर्धारित अपने समयका ठीक पालन कर रहा हूँ। मुझे पहले जितने सम्पूर्ण रूपसे मौनकी आवश्यकता होती थी उतना अब नहीं चाहिए। मेरे विषयमें तुम्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिए। मैं अपना स्वास्थ्य सचमुच बहुत ठीक रख रहा हूँ, बल्कि लगातार ज्यादा अच्छा होता जा रहा हूँ।

साथमें होम्स^१ का पत्र है। एक पत्र लोदियनका भी आया है जिसके विषयमें मैं 'हरिजन' में लिखूँगा।^२

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४२१) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००१६ से भी।

२९४. भेंट : अमेरिकी अध्यापकोंको^३

[२९ दिसम्बर, १९३८ के पूर्व]^४

अध्यापक : एक बुजुर्ग और अनुभवी नेताके नाते आप युवकोंको अपना जीवन मानवताकी सेवामें होम देनेकी सलाह कैसे देंगे ?

गांधीजी : यह प्रश्न सही ढंगसे नहीं पूछा गया। जब आप सत्याग्रहका अस्त्र अपनाते हैं तो आप अपना जीवन होम नहीं देते, अपितु आप अपने-आपको इसके लिए तैयार करते हैं कि घोरतम संकट और उत्तेजनाका बिना प्रतिशोध मुकाबला करें। इससे आपको अवसर मिलता है कि समय आनेपर आप अपना जीवन समर्पित कर दें। अहिंसात्मक तरीकेसे वैसा कर सकनेके लिए पहले प्रशिक्षणकी आवश्यकता होती है। यदि आप पुराने तरीकेको मानते हैं तो आप सिपाही बननेकी तालीम लेते हैं। यही बात अहिंसापर लागू होती है। आपको अपनी पूरी जीवन-पद्धति

१. जॉन हेन्स होम्स।

२. देखिए " अहिंसाका पालन ", ६-२-१९३९।

३ और ४. प्यारेलालके २९-१२-१९३८ के " बीकली लेटर " से उद्धृत।

बदलनी होती है और इसके लिए शान्तिकालमें भी उतना ही प्रयत्न अपेक्षित होता है जितना युद्धकालमें। निस्सन्देह यह एक कठिन काम है। आपको अपना सारा मन इसमें लगाना पड़ता है और यदि आप सच्चे हृदयसे यह काम करें तो आपके उदाहरणसे आपके इर्द-गिर्दके लोग भी प्रभावित होंगे। आजकल अमेरिका दूसरी शक्तियोंके साथ मिलकर संसारके तथाकथित कमजोर राष्ट्रोंका शोषण कर रहा है। यह संसारका सबसे अधिक वैभव-सम्पन्न देश बन गया है। जिन तरीकोंको अपनाकर यह वैभवशाली बना है उन्हें देखते हुए यह कोई अभिमान करनेकी बात नहीं है। और फिर इस वैभवकी रक्षाके लिए आपको हिंसाका सहारा लेना पड़ता है। आपको यह वैभव छोड़नेके लिए तैयार रहना होगा। इसलिए यदि आप सचमुच हिंसाको त्याग देना चाहते हैं तो आप यह कहेंगे “हमें हिंसा द्वारा उपार्जित द्रव्यसे कोई वास्ता नहीं है और इसके फलस्वरूप यदि अमेरिका गरीब हो जाता है तो इसकी भी हमें कोई परवाह नहीं।” तब आपको वह योग्यता हासिल होगी जो पवित्र बलिदान दे सकनेके लिए आवश्यक होती है। तैयारीका अर्थ यह है। यदि आपका सारा राष्ट्र पूरी तरह यह सीख जाये कि शान्तिके लिए कैसे जिया जाता है तो शायद चरम बलिदान देनेका अवसर ही न आये। अहिंसाके लिए जीवित रहना उसके लिए मरनेसे ज्यादा कठिन है।

मित्रगण जानना चाहते थे कि क्या गांधीजी द्वारा प्रतिपादित अहिंसा व्यवहार्य है।

यदि मैंने ‘प्रेम’ शब्दका प्रयोग किया होता, जो वास्तवमें अहिंसा ही है, तो आपने यह प्रश्न नहीं पूछा होता। परन्तु सम्भवतः प्रेम शब्दसे मेरा अभिप्राय पूरी तरह अभिव्यक्त नहीं होता। सबसे ज्यादा समीप अर्थवाला शब्द है ‘उदारता’। हम अपने मित्रों और अपनी बराबरीके लोगोंसे प्रेम करते हैं। परन्तु एक निर्दय तानाशाहके प्रति हमारे मनमें प्रतिक्रिया हिंसात्मक होनेपर भयकी और अहिंसात्मक होनेपर दयाकी होती है। अहिंसा भय नहीं जानती। यदि मैं सच्चा अहिंसावादी हूँ तो मुझे तानाशाहपर दया आयेगी और मैं अपने-आपसे कहूँगा—“उसे ज्ञान नहीं कि मानव कैसा होना चाहिए। एक दिन जबकि उसका सामना ऐसे लोगोंसे होगा जिन्हें उसका कोई भय नहीं होगा, जो न उसके आगे झुकेंगे और न उसके सामने नाक रगड़ेंगे; और वह चाहे कुछ भी करे, उसके प्रति उनके मनमें कोई दुर्भाव नहीं होगा; तब वह जान पायेगा कि मानव कैसा होता है। आजकल जर्मन लोग जो-कुछ कर रहे हैं उसका कारण यह है कि अन्य सभी राष्ट्र उनसे भयभीत हैं। उनमें से कोई भी राष्ट्र हिटलरके सामने यह भाव लेकर नहीं जा सकता कि उसके हाथ साफ हैं।

अध्यापक : आज जिस नये भारतका निर्माण हो रहा है, उसमें ईसाई-मिशनोंका क्या स्थान है? इस महान कार्यमें सहायता करनेके लिए वे क्या कर सकते हैं?

गांधीजी : भारत क्या है और क्या कर रहा है, उसके प्रति वे आदरभाव रखें। अब तक तो वे ऐसे शिक्षकों और धर्मोपदेशकोंकी हैसियतसे आते रहे हैं जिनकी

भारत और भारतके महान धर्मोंके प्रति अजीब धारणाएँ रही हैं। हमें अज्ञ और अन्धविश्वासी नास्तिकों, तथा ईश्वरकी सत्ता अस्वीकार करनेवालोंका राष्ट्र बताया गया है। उनकी दृष्टिमें, मरडोकके शब्दोंमें हम शैतानकी सन्तान हैं। क्या बिशप हेबरने अपने प्रसिद्ध भजन “फ्रॉम ग्रीनलैंड्स आइसी माउंटेन्ज” में भारतको ऐसा देश नहीं बताया “जिसमें हर दृश्य लुभावना है परन्तु जहाँ आदमी ही धिनौता है”? मैं समझता हूँ कि यह ईसा मसीहकी शिक्षाके मर्मका सम्पूर्ण उल्लंघन है। इसलिए मेरा निजी दृष्टिकोण तो यह है कि यदि आप ऐसा मानते हैं कि भारतके पास संसारको देनेके लिए कोई सन्देश है और भारतके धर्म भी सच्चे हैं, भले ही वे अन्य सभी धर्मोंके समान अधूरे हों—क्योंकि उनका प्रचार भी मानवके माध्यमसे ही हुआ है और मानव स्वयं अपूर्ण है और यदि आप सहायक और सहान्वेषी बनकर भारत आयें, तो आपके लिए यहाँ स्थान है। परन्तु यदि आप अन्धकारमें भटकनेवाले लोगोंके लिए ‘सच्चे धर्मके’ प्रचारक बनकर आयें तो जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है आपके लिए यहाँ कोई स्थान नहीं। हाँ, आप अपने-आपको हमपर जवर्दस्ती अवश्य लाद सकते हैं।

अध्यापक : संसारके लिए भारतका सही सन्देश क्या है?

गांधीजी : अहिंसा। भारतमें अहिंसाकी यह भावना परिव्याप्त है। भारतने अभी इस भावनाका प्रदर्शन इस सीमा तक नहीं किया है कि आप इस भावनाके जीते-जागते साक्षी बनकर अमेरिका जायें और वहाँ यह बात कहें। परन्तु आप ईमानदारीसे इतना कह सकते हैं कि भारत इस आदर्श तक पहुँचनेकी जी-जानसे कोशिश कर रहा है। यदि यह नहीं तो फिर और कोई ऐसा सन्देश नहीं जो भारत [विश्वको] दे सके। चाहे आप कुछ भी कहें यह तथ्य तो आपके सामने है ही कि इस सारे उपमहाद्वीपने अपने लिए यह निश्चय किया है कि वह अहिंसाके सिवाय और किसी साधनसे स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं करेगा। किसी दूसरे देशने इस दिशामें प्रयत्न तक नहीं किया है। मैं दूसरे लोगोंको इतना भी राजी नहीं कर सका हूँ कि कम-से-कम अहिंसाका प्रयोग करके तो देखा जाये। निस्सन्देह यूरोपमें भी ऐसा मत जोर पकड़ता जा रहा है जो अहिंसा-रूपी शस्त्रकी सम्भावनाओंका महत्व स्वीकार करने लगा है। परन्तु जब भारत इतना अद्भुत प्रयोग कर रहा है, तो मैं उसके लिए यदि सम्भव हो तो सारे संसारकी सहानुभूति उपाजित करना चाहता हूँ। वहरहाल, आप इस प्रयासके साक्षी तभी बन सकते हैं जबकि आप सचमुच यह महसूस करें कि हम अहिंसाके आदर्शपर पहुँचनेका प्रयत्न ईमानदारीसे कर रहे हैं; और जो-कुछ हम कर रहे हैं वह कोई छल-प्रपंच नहीं है। यदि आपका यह काफी गहरा और जाग्रत विश्वास हो तो इससे आपके लोगोंके मनमें एक विचार-मंथनकी क्रिया शुरू हो जायेगी।

अध्यापक : यह तो बहुत सुन्दर दायित्व सौंप रहे हैं आप।

गांधीजी : तो फिर यह दायित्व आप अपने साथ लेकर जाइये।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ७-१-१९३९

२९५. पत्र : अमृत कौरको

सेगाँव

[२९ दिसम्बर, १९३८]^१

प्रिय पगली,

तुम्हारी प्यार-भरी पचियाँ मिलीं। मुझपर कामका इस वक्त बड़ा बोझ है। पर मैं बिलकुल ठीक हूँ। शारदाके पत्र मैं नहीं पढ़ता। उसमें परेशानीकी बात क्या थी ?

तुम कहती हो कि मैंने नागपुरके लिए तुम्हें कोई सन्देश नहीं भेजा। वह तो मुझे से ँँठ लिया गया था। और यह करिश्मा केवल तुम्हीं कर सकती थीं। लेकिन उस स्थितिमें जब मुझे डाल दिया गया, तो ताईके पाससे माँग आनेपर बच निकलने का कोई मार्ग नहीं था। मैं तो उसे सिर्फ तुम्हारी ही करतूत कह सकता हूँ।^१

तुम्हारे स्वास्थ्यकी मुझे चिन्ता है। जितनी जल्दी तुम मेरे पास आ जाओ उतना ही अच्छा है।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३९०१) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७०५७ से भी।

२९६. पत्र : मीराबहनको

सेगाँव, वर्धा

२९ दिसम्बर, १९३८

चि० मीरा,

तुम्हें जार्डिनका कोई पत्र नहीं मिला, यह हैरानीकी बात है। क्या मैंने तुम्हें खान साहबसे कह देनेको लिखा था कि अगर गवर्नर उन्हें बुलायें तो उन्हें इनकार नहीं करना चाहिए? शायद तुम्हें भी बुलाया जाये। मुझे खुशी है कि अब तुम्हारे शिष्य काफी नियमित रूपमें आते हैं।^१ यह एक बड़ा काम हो रहा है।

१. तारीख अमृत कौरके हाथ की है।

२. देखिए “पत्र : अमृत कौरको”, पृ० २५५ भी।

३. मीराबहन खुदाई खिदमतगारोंको धुनाई और कताई सिखा रही थीं।

मिलड्रेड आज यहाँ आ गई। वह म्यूरियलके दलसे दो दिन पहले ही आ गई है।

यहाँ अब जाड़ा नहीं रहा है। इन जाड़ोंमें ठंड प्रायः पड़ी ही नहीं। २५ रुपये इसके साथ हैं।

सप्रेम,

वापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४२२) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००१७ से भी।

२९७. पत्र : चन्दन पारेखको

सेगाँव, वर्धा

२९ दिसम्बर, १९३८

चि० चन्दन,

शंकरको पैसे भेज दिये हैं। अनन्तभाईको पत्र न लिखा हो, तो आभारका सुन्दर पत्र लिख देना, और उसकी नकल मुझे भेजना। इस पत्रके साथ ह०^१ का पत्र है। उसपर विचार करना। यदि तुम दोनोंके निर्दोष होनेकी सम्भावना हो, तो ह० को उसका लाभ देना। यदि न हो, तो जो तुझे लिखना हो, लिख भेजना। पत्र मुझे भेजना और उसकी नकल अपने पास रखना।

तूने मुझे पत्र लिखनेका वचन तो दिया था, लेकिन वचनका पालन नहीं किया। करती, तो पहुँचते ही पत्र लिखती।^१ वहाँ कैसा-क्या चल रहा है, यह जाननेकी इच्छा रहती ही है। बा के समाचार भी तू ही दे सकती है। बा तो एक प्रकारसे अपाहिज ही है। वह जबतक वहाँ है, तब तक उसकी ओरसे तू लिख सकती है।

सुबहका भूला शाम तक घर वापस आ जाये, तो भूला नहीं कहलाता। अब भी अपने वचनको पूरा करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९४५) से; सौजन्य : सतीश द० कालेलकर।

१. नाम नहीं दिया गया है।

२. अमेरिकासे लौटनेके बाद चन्दन पारेख लड़कियोंको अंग्रेजी पढ़ाने और स्वयं हिन्दी सीखने कन्या गुच्छुल, देहरादून गई थीं। कस्तूरबा और द० बा० कालेलकर उनके साथ गये थे।

२९८. भाषण : मगन संग्रहालय और उद्योग-भवनके उद्घाटन-समारोहमें'

वर्धा

३० दिसम्बर, १९३८

मगनलाल गांधी उन थोड़े-से व्यक्तियोंमें एक थे जिन्होंने, दक्षिण आफ्रिकामें जिस समय मैंने स्वैच्छिक गरीबी और सेवाका आदर्श अपनानेके लिए बकालत छोड़ने का निर्णय किया तब, अपना भाग्य मेरे साथ जोड़कर अनिश्चित भविष्यमें छलांग लगाई थी। वे फीनिक्स आश्रमके संस्थापक सदस्योंमें थे और जब 'इंडियन ओपि-नियन' को वहाँसे डबन ले जाया गया तो मुद्रणालयका काम उन्होंने सँभाला था। वे दक्षिण आफ्रिका मुख्यतः धनोपार्जनके लिए गये थे, किन्तु उन्होंने अपनी इस आकांक्षाकी बलि देकर मेरे साथ ही जीने या मरनेका निश्चय किया और उसपर सदा अटल रहे।

उनमें असाधारण प्रतिभा थी, ऐसी मेरी राय है। उनके मस्तिष्कका अनेक विषयोंमें खासा प्रवेश था। उनका जीवन बहुत ही व्यवस्थित और अनुशासनबद्ध था इसलिए किसी भी नई चीजको वे आसानी और सरलतासे ग्रहण कर सकते थे। उन्होंने यद्यपि यन्त्रशास्त्रकी शिक्षा नहीं पाई थी, फिर भी वे फीनिक्समें छपाईकी मशीनोंके बहुत कम समयमें जानकार बन गये थे। भारत आनेके बाद तो उन्हें लोकसेवाकी ही लगन लग गई। 'वणाट शास्त्र' नामक किताब लिखकर उन्होंने खादी-विज्ञानकी नींव डाली। मगनलालकी मृत्युके बाद खादी-विज्ञानने बहुत प्रगति की है, फिर भी वह पुस्तक आज भी अपने विषयकी एक प्रामाणिक पुस्तक मानी जाती है। अभी ग्रामोद्योग संघने जिन-जिन उद्योगोंको हाथमें लिया है उन सबमें वे प्रवीण तो नहीं थे, लेकिन उनके खादी-प्रवृत्ति-रूपी मध्यबिन्दुसे ही ग्रामोद्योग संघका विकास हुआ है, और इस तरह यह प्रवृत्ति उसकी पुरोगामी बन गई है।

अब दो शब्द इन मकानोंके बारेमें। जैसाकि श्री कुमारप्पाने कहा है, इन मकानोंको इस तरह बनानेका प्रयत्न किया गया है कि वे ग्रामीण जीवनको शोभा दे सकें। फिर भी हमारे देहातोंमें आज जो झोंपड़े देखनेमें आते हैं, उनके मुकाबलेमें तो ये महँगे और आलीशान ही माने जा सकते हैं। ग्रामोद्योग संघ जिस तरहका ग्रामीण भारत बनानेका स्वप्न देख रहा है, उसमें कारीगरोंके घर कैसे होने चाहिए

१. प्यारेलाके "ए ड्रीम फुलफिड" से उद्धृत। इस समारोहमें तीसरे व्यादा अर्थशास्त्री भी उपस्थित थे; वे अर्थशास्त्री नागपुरमें हो रहे एक अर्थशास्त्रीय सम्मेलनमें भाग लेनेके लिए आये हुए थे। गांधीजीने अपना भाषण हिन्दुस्तानीमें दिया था।

और कैसे होंगे, उसकी कुछ झाँकी ये मकान कराते हैं। मैं आपको इस विषयमें इतना विश्वास दिला सकता हूँ कि जिस उद्देश्यको पूरा करनेके लिए वे बनाये गये हैं, उसके अनुरूप कफायत और सादगी रखनेमें जरा भी ढिलाई नहीं की गई है। संघके व्यवस्थापकोंके बारेमें अधिकसे-अधिक आलोचना यही की जा सकती है कि वे अभी अपना काम जैसा चाहिए वैसा नहीं समझ सके हैं। संघ अपनी गलतियोंको माननेके लिए और गलतियोंसे भी भविष्यके लिए नये-नये सबक सीखनेके लिए हमेशा तैयार है। उसे डर तो केवल पूर्णताके वेशमें आनेवाले अज्ञानका ही है।

इतना तो हुआ बाह्य वस्तुओंके बारेमें। भीतर जानेसे आलोचक शायद यह पूछेंगे कि इन पुराने औजारों और उत्पादनकी क्रियाओंसे स्वराज्य किस तरह हासिल होगा? ये ग्रामोद्योग तो हमारे पास पहलेसे ही थे। पश्चिमकी औद्योगिक प्रतिस्पर्धामें क्या ये बाजी मार सकेंगे? और पाश्चात्य देश अपने आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों और इंजीनियरीकी कुशलतासे जो उपलब्धियाँ प्राप्त कर सके हैं, उन्हें क्या ये प्राप्त कर सकेंगे? मेरा जवाब यह है कि ग्रामोद्योग हमारे पास पहलेसे थे तो सही, लेकिन उनमें जो प्रचण्ड शक्तियाँ छिपी हुई हैं, उनका हमारे पूर्वजोंको खयाल नहीं था और जाग्रत जनसमूहने स्वतन्त्रता-प्राप्तिके साधनके रूपमें उनसे कभी काम नहीं लिया था। यह बात मैं स्वीकार करता हूँ कि हमारे कॉलेजोंमें सिखाये और समझाये जानेवाले एक ही साँचेमें ढले हुए प्रचलित अर्थशास्त्रमें और उसके अनुसार चलनेवाले समाजमें, चरखे और ग्रामोद्योगोंका शायद स्थान न हो और इस अर्थशास्त्रको सीखनेवालों और उस समाजमें रहनेवाले लोगोंको खादी और ग्रामोद्योगका पुनरुद्धार करना शायद मध्ययुगकी तरफ लौटने-जैसा लगे। लेकिन मैं तो यह चाहता हूँ कि आप सब मस्तिष्क में जमे पुराने विचारोंको छोड़कर इस उद्योग-भवनमें प्रवेश करें। कल्पना कीजिए कि चरखा एक छोटी-सी मिल है जिसकी सहायतासे सतत और सर्वत्र फैली हुई बेकारी और कंगालियतसे भरे हुए इस देशमें आदमी घर बैठे दो आना रोज कमा सकता है और अगर यह न हो तो उसे दो पैसे भी नहीं मिलेंगे। इस मिलकी स्थापना लाखों घरोंमें हो जाये — और हो सकती है — तो फिर मैं संसारमें ऐसी एक भी चीज नहीं देखता जो इसके साथ प्रतिस्पर्धामें उतर सके।

और फिर यह बात भी नहीं कि इससे दो आना रोजगरे ज्यादा कमाई हो नहीं सकती। अगर मैं अपने बुद्धिजीवियोंका सहयोग प्राप्त कर सकूँ, तो मैं यह आशा रखता हूँ कि मेरी मृत्युसे पहले ही चरखा उस स्थितिको पहुँच जायेगा कि जिसमें कत्तिन आठ आना रोज कमा सकेंगे। दुनियामें आप मुझे दूसरा ऐसा एक भी उद्योग या उद्योग-संघ आज बतायें कि जिसने १८ वर्षके कार्यकालमें इतनी कम पूँजीके जरिये लाखों गरीब आदमियोंकी जेबमें चार करोड़ रुपया डाला हो। फिर वह पैसा हिन्दू-मुसलमान, सवर्ण-अवर्ण सबमें बिना किसी भेदभावके तकसीम होता है, और इस तरह उसने उन्हें आर्थिक सम्बन्धके सूत्रसे जोड़कर एक-दूसरेसे संयुक्त कर दिया है। इस जीवनप्रद और ऐक्यवर्द्धक प्रवृत्तिको सात लाख गाँवोंमें फैला देनेके लिए अगर काफी आदमी काम करनेवाले पैदा हो जायें, तो आप जरा कल्पना

कीजिए कि स्वराज हमारे कितने नजदीक आ जाये। इस औद्योगिक क्रान्तिमें भाग लेनेके लिए बहुत बड़ा इंजीनियर या यन्त्रशास्त्री होनेकी जरूरत नहीं। कोई भी सामान्य मनुष्य, स्त्री या बालक इसमें सम्मिलित हो सकता है।

मैं चाहता हूँ कि आप सब लोग इस संग्रहालय और उद्योग-भवनको एक खिलौनोंकी दुकान नहीं, बल्कि स्वशिक्षण और अध्ययनका जीवित ग्रन्थ समझें।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १४-१-१९३९

२९९. बातचीत : अर्थशास्त्रियोंके साथ

वर्धा

३० दिसम्बर, १९३८

मैं चाहता हूँ कि जो-कुछ आपने यहाँ देखा है, उसकी आलोचना करके मुझे बतलायें कि उसमें आपको क्या-क्या खामियाँ मालूम पड़ती हैं। खाली प्रशंसासे मुझे कोई मदद नहीं मिलेगी, क्योंकि मेरी प्रशंसा कहाँ होनी चाहिए यह मैं जानता हूँ। बिना सोचे-विचारे एकदम यह कहनेसे भी काम नहीं चलेगा, कि यह सब तो असफल ही होना है। कुछ अर्थशास्त्रियोंने ऐसा ही किया है, लेकिन ऐसी निन्दाका मुझपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अलबत्ता अगर बारीकीसे सहानुभूतिपूर्वक अध्ययन करके आप कोई खामियाँ पायें, तो उन्हें मुझे बतलायें, उसके लिए मैं आपका आभार मानूँगा।

प्र० : क्या आप बड़े पैमानेपर उत्पादनके खिलाफ हैं?

उ० : मैंने ऐसा कभी नहीं कहा। यह विश्वास तो उन गलतफहमियों पर ही आधारित है जो मेरे बारेमें फैली हुई हैं। मेरा आधा वक्त ऐसी बातोंके जवाबमें ही चला जाता है। लेकिन वैज्ञानिकोंसे तो मुझे ज्यादा अच्छी जानकारीकी आशा करनी चाहिए। आपका सवाल तो खबरारी तथा अन्य गैरजिम्मेदार खबरोंपर आधारित है। बड़े पैमानेपर उत्पादनके खिलाफ तो मैं उन चीजोंके सम्बन्धमें हूँ, जिन्हें गाँववाले ही बिना किसी कठिनाईके पैदा कर सकते हैं।

प्र० : योजना-आयोगके बारेमें आपका क्या खयाल है?

उ० : उसके बारेमें मैं कुछ नहीं कह सकता, क्योंकि मैंने उसका अध्ययन नहीं किया है। कार्य-समितिमें मेरे सामने उसपर विचार नहीं हुआ। मैं तो कार्य-समिति को किसी मामलेपर तभी कोई सलाह देता हूँ जब वह मुझसे उसके लिए कहती

१. प्यारेलालके “वीकली लेटर” से उद्धृत। ये अर्थशास्त्री, जिनकी संख्या करीब तीस थी, नागपुरमें हो रहे अर्थशास्त्रीय सम्मेलनमें भाग लेनेके लिए आये थे; वे गांधीजीसे मिलनेके लिए वर्षा जा पहुँचे थे और मगन संग्रहालयके उद्घाटन-समारोहमें शामिल हुए थे।

है। मतलब यह है कि कार्य-समिति जो-कुछ भी करे उसके लिए यह नहीं समझ लेना चाहिए कि उस सबमें मेरी छाप है या मेरे सामने उसपर विचार हुआ है। जहाँ तक आम निर्णयोंका ताल्लुक है, मैंने खास तौरसे अपने ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं रखी है।

प्र० : क्या उसे आपका आशीर्वाद प्राप्त नहीं है?

उ० : जिस चीजको मैं जानता ही नहीं या जिसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है उसमें मेरे आशीर्वादका क्या मतलब?

प्र० : क्या आप समझते हैं कि गृह-उद्योगों और बड़े-बड़े उद्योगोंका मेल बैठ सकता है?

उ० : हाँ, बशर्ते कि उनका आयोजन इस तरह किया जाये जिससे गाँवोंको मदद मिले। जिन प्रधान उद्योगोंकी राष्ट्रको आवश्यकता है, उनका केन्द्रीकरण हो सकता है। लेकिन तब ऐसे किसी उद्योगको मैं प्रधान उद्योगके रूपमें स्वीकार नहीं करूँगा, जो थोड़े-से संगठनसे गाँववालोंके द्वारा किया जा सकता हो। उदाहरणके लिए, पहले मुझे यह पता नहीं था कि हाथका बना कागज भी चल सकता है। लेकिन अब मैं ऐसी आशा करता हूँ कि अखबारों वगैरहके लिए तो नहीं, पर मेरे खयालसे हरएक गाँव अपनी जरूरतका कागज तो खुद ही तैयार कर सकता है। फर्ज कीजिए कि कागज बनाने पर सरकारी नियन्त्रण है और वह इस उद्योगका केन्द्रीकरण करती है, तो उस हालतमें मैं यह आशा करूँगा कि सरकार गाँवोंमें बन सकनेवाले सारे कागजका संरक्षण करेगी।

प्र० : गाँवोंके संरक्षणका क्या मतलब है?

उ० : शहरोंके दबावसे उन्हें बचाना। एक वक्त ऐसा था जब शहर गाँवों पर निर्भर थे, लेकिन अब इससे उलटा है। परस्परवलम्बन भी नहीं है। आज तो शहर गाँवोंका शोषण करके उन्हें चूसे जा रहे हैं।

प्र० : क्या गाँवोंको उन बहुत-सी चीजोंकी जरूरत नहीं है, जो शहरोंमें बनती हैं?

उ० : मुझे तो कुछ ऐसा ही लगता है। लेकिन जो भी हो मेरी योजना तो यह है कि जो माल शहरोंकी ही तरह गाँवोंमें भी बन सकता हो, उसे शहरोंमें किसी हालतमें तैयार न किया जाये। शहरोंका काम तो यह है कि गाँवोंमें जो-कुछ पैदा हो उसका वे उपयुक्त रूपमें वितरण करें।

प्र० : मिलोंमें बने कपड़ेका क्या हम हाथसे बने कपड़ोंके साथ मेल बैठा सकते हैं?

उ० : जहाँ तक मैं जानता हूँ, मेरा जवाब 'नहीं' में ही हो सकता है। हमें जितने कपड़ोंकी जरूरत है वह सब तो गाँवोंमें ही तैयार हो सकता है।

प्र० : लेकिन मिलोंकी तादाद तो बढ़ रही है।

उ० : यह हमारा दुर्भाग्य है।

प्र० : लेकिन यह तो एक ऐसी बात है जिसको करनेका योजना-आयोगने भी निश्चय किया है।

उ० : यह मेरे लिए नई खबर है। ऐसा हो तब तो कांग्रेसको पहले खादीवाले अपने प्रस्तावको फाड़ फेंकना पड़ेगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २८-१-१९३९

३००. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेगाँव, वर्धा

३१ दिसम्बर, १९३८

भाई वल्लभभाई,

शम्भुशंकरको तो तुम जानते ही हो। वे पालीताणाके लिए स्वराज्य लेनेकी आशा रखते हैं। दरबारको पत्र तो लिखा ही है। शम्भुशंकर काफी स्वतन्त्र स्वभावके हैं। उन्हें उम्मीद तो यह है कि केवल ईश्वरके भरोसे रहकर वे अपनी मुराद हासिल कर लेंगे, परन्तु बुजुर्गोंके आशीर्वादकी आशा तो रखते ही हैं। मैंने कह दिया है कि यदि वे ऐसी श्रद्धासे लड़ें, और लड़ सकें तो उन्हें आशीर्वाद तो मिलेंगे ही। जो सत्य और अहिंसाके पुजारी हैं, आशीर्वाद तो उनकी जेबमें रहते हैं। परन्तु उन्हें इतनेसे थोड़े सन्तोष हो सकता है? तुम्हारे आशीर्वाद तो उन्हें जरूर चाहिए। उनकी बात सुनकर आशीर्वाद देना।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाई पटेल

पुरुषोत्तम बिल्डिंग

ऑपेरा हाउसके सामने

बम्बई-४

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २३१

३०१. पत्र : राधाकृष्ण बजाजको

३१ दिसम्बर, १९३८

“जमनालालजी
पता लिखो^१
दिल्ली

तार मिला। आदेशके सम्बन्धमें कोई चिन्ता नहीं। सम्भव हो तो बारडोली आ जाना। बापू।”^२

चि० राधाकृष्ण,

यह तार कल भेजो^३, खत भी साथमें है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

म्यूरियल लेस्टरके बारेमें प्रबन्धका सन्देशा मिला होगा। उनको ३ बजे कल यहाँ भेजो।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०३९) से।

३०२. पत्र : हीरालाल शर्माको

सेर्गांव

३१ दिसम्बर, १९३८

चि० शर्मा,

तुमने ठीक कहा है, समय हमारा शत्रु हो रहा है। विचारश्रेणीमें तुमको अन्तर नहीं लगता यह मेरे लिये बहुत संतोषजनक बात है। लेकिन सबसे ज्यादा संतोष

१. राधाकृष्ण बजाजको पता लिखनेके लिए कहा गया था। गांधीजी ने यह आदेश गुजरातीमें लिखा था।

२. यह अंग्रेजीमें है। आगेका अंश हिन्दीमें है।

३. पत्र लिखते समय जमनालाल बजाजका तार मिला था। इसी समय गांधीजी ने प्यारेआलसे कहा कि तुम राधाकृष्ण बजाजसे पहलेके स्थानपर निम्नलिखित तार भेजनेके लिए कहो: “तुम्हारा तार मिला। बारडोलीमें चार तारोखको तुमसे और जयपुरके मित्रोंसे मिलूँगा। बापू” (पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २०८)।

मुझे तुमारे निश्चयसे होता है। तुमारा धर्म धी बेचनेका नहीं है। तुमारा धर्म नैसर्गिक तथा अन्य लेकिन ग्राह्य उपचारोंसे रोगियोंको दुरुस्त करना है। और अब शहरमें ऐसे उपचार करके आजीविका पैदा करोगे यह मुझे अच्छा लगता है। “स्व-धर्मे निधनं श्रेयः” यह ‘भगवद्गीता’ के एक श्लोकका हिस्सा है और उसका अर्थ लाभ यह है कि अपने धर्ममें नाश भी अच्छा है। परधर्ममें तो हमेशा भय ही है कभी नहीं है।

अगर अच्छा लगे तो छोटी-सी पत्रिका भी निकाल दो। जो निवेदन^१ पुस्तकों को छोड़ते समय किया था उसका उल्लेख करके। अब क्या करोगे यह बता दिया जाय। मुझे खबर देते रहो।

एक परीक्षामें तुम्हारे उत्तीर्ण होना होगा। सबके साथ आसानीसे और उनमें भी मेरे साथ रहने वालोंके साथ आसानीसे रहनेकी कला हस्तगत करना।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० २७४-५

३०३. भेंट : टिमोथी टिंगफांग ल्यूको^१

३१ दिसम्बर, १९३८

रेवरेंड ल्यूने . . . चीनियोंकी सहायताके लिए भेजे गये भारतीय चिकित्सक मिशनके लिए धन्यवाद देते हुए कहा :

“हम इसे चीनके प्रति भारतकी सहानुभूति और सद्भावनाकी अभिव्यक्ति मानते हैं। चीनका यह संघर्ष केवल चीनके लिए नहीं बल्कि पूरे एशियाके लिए है। . . .

“हमें भौतिक विनाशका भय नहीं है, . . . पर सांस्कृतिक विनाशका है। शंघाईमें पहला बम पुस्तकालयपर पड़ा था। हमारे कॉलेज मिटा दिये गये हैं। प्रोफेसर मारे गये हैं। . . .

“इससे भी ज्यादा दुःखदायी चीज नैतिक क्षति है। . . .

१. भगवद्गीता, अध्याय-३, श्लोक ३५।

२. गांधीजीकी टीका-टिप्पणियोंके साथ यह १४-१२-१९३४ के हरिजन में प्रकाशित हुआ था। देखिए खण्ड ५९, पृ० ४७५-६।

३. प्यारेलाल लिखित “ए वर्ल्ड इन एगोनी” से उद्धृत। रेवरेंड टिमोथी टिंगफांग ल्यू ताम्बरमके मिशनरी सम्मेलनमें भाग लेनेवाले चीनी प्रतिनिधिमंडलके सदस्य थे। ल्यू चीनकी विधानसभा ‘युआन’ के प्रतिनिधि थे। दो अन्य चीनी प्रतिनिधियों, शंघाई-स्थित वाई० एम० सी० ए० के एसोसिएशन प्रेसके सम्पादक वाई० टी० वू० और कन्फ्यूशियस-सम्बन्धी कई ग्रन्थोंके लेखक पी० सी० शू के साथ वे गांधीजी से मिलने सेगाँव आये थे। रौडेशियाके कुछ प्रतिनिधि और जापानके एक प्रतिनिधि भी वहाँ थे। गांधीजी ने उन्हें एक ‘छोटी-सी दुनिया’ कहा था; देखिए “पत्र : एक मेरी वारको”, ७-१-१९३९।

हम आपका सन्देश चाहते हैं। . . . हम आपसे आध्यात्मिक मार्गदर्शनकी आशा रखते हैं।”

गांधीजी : शान्तिनिकेतनके एक चीनी मित्रने एक बार मुझसे चीनियोंके लिए सन्देश देनेको कहा था। मुझे उनसे क्षमा माँगनी पड़ी। उसके कारण मैंने उन्हें बता दिये थे। यदि मैं इतना ही कहता कि चीनियोंके संघर्षमें मेरी उनके साथ सहानुभूति है, तो मेरे-जैसे व्यक्तिके इस कथनका कोई बहुत महत्व नहीं होता। मैं तो चीनियोंसे निश्चित रूपसे यह कह सकनेके योग्य होना चाहता हूँ कि उनकी मुक्ति केवल अहिंसाके ही तरीकेसे सम्भव है। परन्तु मेरे-जैसे व्यक्तिके जो उस लड़ाईसे बाहर है, ऐसे लोगोंसे, जो जिन्दगी और मौतके संघर्षमें जुटे हैं, यह कहना उपयुक्त नहीं लगता कि “इस तरह नहीं, उस तरह लड़िए।” नये तरीकेको अपनानेकी उनकी तैयारी नहीं होगी, और पुरानेके बारेमें उनके मनमें दुविधा ऊपरसे पैदा हो जायेगी। मेरा हस्तक्षेप केवल उन्हें डाँबाँडोल करेगा और उनके मनमें उलझन पैदा करेगा।

परन्तु संघर्षमें जुटे हुए चीनियोंको भेजनेके लिए मेरे पास कोई ‘सन्देश’ न होते हुए भी मुझे आपके आगे अपना दृष्टिकोण रखनेमें कोई संकोच नहीं है। मैं आपसे यह पूछने ही जा रहा था कि आपका सांस्कृतिक विनाश हो रहा है, इससे आपका क्या आशय है। यह जानकर तो मुझे दुःख ही होगा कि चीनी संस्कृति ईट और चूनेमें बसती है या उन भारी ग्रन्थोंमें बसती है जिन्हें दीमक खा सकती है। किसी राष्ट्रकी संस्कृति उसके लोगोंके हृदय और आत्मामें बसती है। चीनी संस्कृति उसी हृदयतक चीनी है जहाँ तक वह चीनी जीवनका अंग बन गई है। इसलिए आपका यह कहना कि आपकी संस्कृति और आपकी नैतिकताके लिए विनाशका खतरा उपस्थित है, मुझे यह सोचनेको मजबूर करता है कि आपके देशका सुधार-आन्दोलन केवल सतही था। जुएकी भावना लोगोंके हृदयसे गई नहीं है। वह कानूनके दण्डसे दबी है, समाज द्वारा पैदा किये गये वातावरणसे नहीं दबी है। हृदय बराबर जुआ खेलता रहा है। जापान निस्सन्देह दोषी है और वह जो-कुछ कर चुका है या कर रहा है, उसके लिए उसे अवश्य दोष देना चाहिए। परन्तु जापान तो इस समय भेड़ियेकी तरह है, जिसका काम ही भेड़ोंका खात्मा करना है। भेड़ियेको दोष देनेसे भेड़ोंको कोई खास मदद नहीं मिलेगी। भेड़ोंको यह सीखना होगा कि भेड़ियेके पंजोंमें पड़नेसे कैसे बचा जाये।

यदि आपमें से कुछ लोग भी अहिंसाको अपना लें, तो वे चीनी संस्कृति और नैतिकताके जीवन्त स्मारकोंकी तरह अडिग रहेंगे। और तब, चाहे चीन युद्ध-क्षेत्रमें पराजित हो जाये, पर अन्तमें चीनका भला ही होगा, क्योंकि वह साथ ही ऐसा सन्देश प्राप्त कर रहा होगा जिसमें आशा और मुक्तिका आश्वासन होगा। जापान संगीनकी नोंकसे अनिच्छुक लोगोंके गलोंमें जबर्दस्ती मादक द्रव्य नहीं उतार सकता। वह केवल प्रलोभन खड़े कर सकता है। आप जापानी शस्त्र-शक्तिके शस्त्र-शक्तिसे जवाब देकर लोगोंको इन प्रलोभनोंके प्रतिरोधकी शिक्षा नहीं दे सकेंगे। शस्त्र-शक्ति चाहे और कुछ प्राप्त कर सके या न कर सके, पर वह चीनी नैतिकता और चीनी संस्कृतिकी रक्षा नहीं कर सकती।

यदि आप मेरे विचारोंके सत्यको अनुभव करते हैं, तो आप चीनके लिए एक जीवन्त सन्देश बन जायेंगे। आप तब चीनियोंसे कहेंगे: “जापान चाहे कितना भी भौतिक विनाश करे, वह चीनका सांस्कृतिक विनाश नहीं कर सकता। हमारे लोगोंको इतना शिक्षित और प्रबुद्ध होना चाहिए कि वे जापान द्वारा सोचे जा सकनेवाले सभी प्रलोभनोंका प्रतिरोध कर सकें। स्मारक और नगर धूलमें मिलाये जा सकते हैं। वे दो दिनका तमाशा हैं, जिनका समय खुद किसी दिन खात्मा कर देगा। यदि जापानी उन्हें नष्ट करते हैं तो वह महज समयके मुँह से निवाला निकालना होगा। जापानी हमारी आत्माको भ्रष्ट नहीं कर सकते। चीनकी आत्मा यदि जल्मी होती है, तो वह जापानके हाथों नहीं होगी।”

चीनी मित्रकी यह राय थी कि जापानकी अर्थ-व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाये तो ही चीनकी रक्षा हो सकती है। वे यह जानना चाहते थे कि भारतमें जापानी मालके बहिष्कारकी क्या सम्भावनाएँ हैं।

गांधीजी: काश, मैं यह कह सकता कि उसकी बहुत आशा है। हमारी सहानुभूतियाँ आपके साथ हैं, पर उन्होंने हमें गहराई तक झकझोरा नहीं है, नहीं तो हमने समस्त जापानी मालका, खासकर जापानी कपड़ेका बहिष्कार कर दिया होता। जापान केवल आपको ही नहीं जीत रहा, वह अपनी मशीनकी बनी सस्ती-कमजोर वस्तुओंसे हमें भी जीतनेकी कोशिश कर रहा है। चिकित्सक मिशनका भेजा जाना मित्रता और सद्भावनाका संकेत है, जो यहाँ प्रचुर मात्रामें हैं। पर मैं उससे बहुत सन्तुष्ट नहीं हूँ, क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि हम इससे बहुत ज्यादा कर सकते थे। आपकी तरह हमारा राष्ट्र भी एक बड़ा राष्ट्र है। यदि हम जापानसे यह कह देते कि ‘हम आपका गज-भर भी कपड़ा आयात नहीं करेंगे और न आपको अपनी रुई ही भेजेंगे’, तो जापान अपना आक्रमण जारी रखनेसे पहले दो-बार सोचता।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २८-१-१९३९

३०४. पत्र : अमतुस्सलामको

[१९३८]

चि० अ० स०,

मैं क्या कहूँ! जो करती है उसमें ‘मैं’ है। उसकी शिकायत नहीं है। कल खा न सकी वही बताता है कि मेरी नहीं चलती है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१२) से।

१. बापुके पत्र - ८ : बीबी अमतुस्सलामके नाम में इस पत्रको इसी स्थानपर रखा गया है।

३०५. पत्र : अमनुस्सलामको

[१९३८]^१

बेटी,

तू तेरी तबीयतको सुधारनेके लिए कुछ भी कर सकती है। बहाना ढूँढ़ कर कुछ नहीं कर सकती है। अच्छी हो जायेगी तो मुझे बड़ी खुशी होगी।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१३)से।

३०६. पत्र : अमनुस्सलामको

[१९३८]^२

चि० अ०स०,

मैं तो आज कुछ लिख नहीं सकता हूँ। सुशीलाने जो कुछ लिखा है ऐसा ही करना। शरीर बिगड़ना नहीं चाहिए।

बापुकी दुआ

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१४) से।

३०७. सुसंस्कृत अराजकता — राजनैतिक आदर्श

मेरी दृष्टिमें राजनैतिक सत्ता हमारा ध्येय नहीं हो सकता। जिन साधनोंकी बदौलत जीवनके प्रत्येक विभागमें अपनी उन्नति करनेकी लोगोंमें शक्ति आती है, उनमें से राजनैतिक सत्ता एक है। राष्ट्रके प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रीय जीवनका नियमन करनेकी शक्तिका ही नाम राजनैतिक सत्ता है। यदि राष्ट्रीय जीवन इतना पूर्ण हो जाये कि वह स्वयं नियंत्रित रहे तो प्रतिनिधित्वकी आवश्यकता ही नहीं रहती। वह एक सुसंस्कृत अराजकताकी अवस्था होगी, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपना ही शासक होगा। वह अपना नियमन आप ही इस तरह करेगा कि जिससे उसके पड़ोसीके हितमें बाधा न हो। आदर्श स्थितिमें राजसंस्था ही नहीं रहेगी तो फिर राजनैतिक सत्ता कहाँसे आयेगी।

१. बापूके पत्र - ८ : बीबी अमनुस्सलामके नाम में इस पत्रको इसी स्थानपर रखा गया है।

२. बापूके पत्र - ८ : बीबी अमनुस्सलामके नाम में इस पत्रको इसी स्थानपर रखा गया है।

इसलिए थोरोने अपने अभिजात सूत्रमें कहा है कि सबसे बढ़िया सरकार वह है जो कमसे-कम शासन करती है।

सर्वोदय, जनवरी, १९३९

३०८. बातचीत : मॉरिस फ्रीडमैनके साथ^१

[१ जनवरी, १९३९ या उसके पूर्व]^२

फ्रीडमैन : मैं तो यथार्थवादी हूँ इसलिए दुनियामें आज औद्योगीकरणकी जो बाढ़ आ रही है, उसके विषयमें मुझे कैसी वृत्ति रखनी चाहिए ? . . . यदि हम उसका केवल विरोध ही करें तो क्या यह शक्तिका अपव्यय नहीं होगा ? क्या यह ज्यादा अच्छा न होगा कि हम इसकी दिशा बदलनेकी कोशिश करें ?

गांधीजी : आप इंजीनियर हैं इसलिए अपनी बात समझानेके लिए मैं यान्त्रिकीसे एक उदाहरण देता हूँ, क्योंकि आप वह समझ सकेंगे। जिसे बल-समान्तर चतुर्भुज कहते हैं उससे आपका परिचय है ही। उसमें ये विभिन्न बल एक-दूसरेको काटते नहीं हैं। प्रत्येक बल अपनी निर्धारित दिशामें बिना किसी बाधाके काम करता है और इन सबकी क्रियाके परिणामस्वरूप हमें गतिकी अन्तिम दिशा प्राप्त होती है। आपने जो सवाल उठाया है उसके साथ भी यही नियम लागू होता है। हममें औद्योगीकरणकी उपासना हो रही है — बड़े-बड़े यन्त्र-उद्योग वहाँ परकाष्ठापर पहुँच गये हैं, लेकिन वहाँका जीवन मुझे आकर्षक नहीं लगता। 'बाइबिल' की भाषामें कहें तो "यदि मनुष्य सारी दुनियाको जीत ले पर अपनी आत्माको खो दे, उससे उसका क्या श्रेय हो सकता है ?" आधुनिक भाषामें कहें तो मनुष्य अपना व्यक्तित्व खो दे और यन्त्रका मात्र एक पुर्जा बनकर रह जाये तो यह चीज उसकी मानवीय गरिमाको शोभा नहीं देती बल्कि उसे घटाती है। मैं चाहता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति समाजका एक पूर्णतः विकसित और जीवन्त सदस्य हो। गाँवोंको स्वावलम्बी होना चाहिए। अहिंसाके मार्ग पर चलना हो तो मुझे इसके सिवा कोई दूसरा हल नहीं दिखता। मेरा तो अब यही विश्वास है। मैं जानता हूँ कुछ लोगोंका विश्वास औद्योगीकरणमें ही है। मैं तो अपनी सारी शक्ति लगाकर अपने विश्वासकी सिद्धिमें लगा हुआ हूँ। समंजनकी क्रिया चल रही है। जो अनेक शक्तियाँ काम कर रहीं हैं, उनमें से क्या परिणाम निकलेगा, इसका मुझे पता नहीं। पर जो भी परिणाम आये वह श्रेयस्कर ही होगा।

फ्रीडमैन : लेकिन क्या स्वावलम्बी गाँवोंके आदर्शको जोखिममें डाले बगैर औद्योगीकरणके साथ कुछ समझौता नहीं किया जा सकता ?

१. प्यारेलखे "वीकली लेटर" से उद्धृत। डॉ० फ्रीडमैन, जिन्हें भारद्वाज भी कहा जाता था, मूलतः पोलैंडके निवासी थे। वे बंगलौरमें गवर्नमेंट इलेक्ट्रिकल वर्कशॉपके प्रमुख थे। भारतीय राजनीति और दर्शनमें उनकी गहरी रुचि थी।

२. गांधीजी ने यह बातचीत फ्रीडमैन ने सेगाँव में की थी, जहाँपर गांधीजी १ जनवरी तक थे।

गांधीजी : किया जा सकता है। रेलवेको ही लीजिए। इसका मैंने त्याग नहीं कर दिया है। मोटर मुझे अप्रिय लगती है, फिर भी, अनिच्छासे ही क्यों न हो, उसका उपयोग मैं करता ही हूँ। फाउन्टेनपेन मुझे अच्छा नहीं लगता, पर आज इसीसे काम ले रहा हूँ, हालाँकि पेटीमें बर्लकी कलम भी रखता हूँ। फाउन्टेनपेनसे लिखते वक्त हमेशा मेरा मन मुझे डंक-सा मारता है, और पेटीमें पड़ी हुई बर्लकी कलमकी याद आ जाती है। ऐसा समझौता तो पग-पगपर होता रहता है। पर हमें इसका खयाल रहना चाहिए कि वह समझौता है, और उचित आदर्श हमेशा नजरके सामने रखना चाहिए और उसका चिन्तन करना चाहिए।

फ्रीडमैन : व्यस्त पश्चिमके साथ जब मैं भारतके गाँवोंकी तुलना करता हूँ, तब ऐसा लगता है, मानो मैं बिल्कुल ही निराली दुनियामें विचरण कर रहा हूँ। यहाँके गाँव जरा भी आगे बढ़ते हुए नहीं दिखाई देते।

गांधीजी : ऊपरी नजरसे आप देखेंगे, तो ऐसा ही प्रतीत होगा। पर जिस क्षण आप उन लोगोंके साथ बात करेंगे, आप देखेंगे कि उनकी जिह्वासे ज्ञान झर रहा है। उनके अन्दर गहरी आध्यात्मिक वृत्ति है। इसे मैं संस्कारिता कहता हूँ। यह चीज आपको पश्चिममें देखनेको नहीं मिलेगी। यूरोपके किसी किसानके साथ आप बात करेंगे, तो आप देखेंगे कि ईश्वर या आत्माके बारेमें उसे कोई दिलचस्पी नहीं होती। भारतके ग्रामीणमें तो युगों-पुरानी संस्कारिता छिपी हुई पड़ी है। उसकी दरिद्रता और निरक्षरताको आप दूर कर दें, तो आपको उसमें शिष्ट, संस्कारवान, स्वतन्त्र नागरिकका सुन्दर-से-सुन्दर नमूना देखनेको मिलेगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २८-१-१९३९

३०९. पत्र : एस० वेलु पिल्लैको'

वर्धा

१ जनवरी, १९३९

आपका तार पढ़कर दुःख हुआ। मैंने अपनी योग्यतानुसार अच्छीसे-अच्छी सलाह दी है। दीवानके प्रति मेरा कोई पक्षपात नहीं है। जो मित्रजन यहाँ आये थे उन्हें मैंने बार-बार यह बता दिया था कि यदि उन्हें मेरी सलाह बिल्कुल सही न लगती हो तो उन्हें आरोप वापस लेनेकी जरूरत नहीं है। मैंने यह कभी नहीं कहा था कि जनताकी स्पष्ट इच्छाके प्रतिकूल भी वे वापस ले लिये जायें। आखिर आपसे, नेता होनेके नाते, यह अपेक्षा तो की ही जाती है कि आप जनताकी इच्छा जानते हैं।

१. यह एस० वेलु पिल्लैके तारके उत्तरमें था, जिसमें यह कहा गया था कि राज्य कांग्रेसने तो आरोप वापस ले लिये लेकिन दीवानने उसका उसी भावनासे उत्तर नहीं दिया, त्रावणकोरकी लड़ाईका कोई नतीजा नहीं निकला, गिरफ्तारियाँ अभी भी जारी हैं, और रियासतमें हर-कहीं असन्तोष है।

आपके तारके बावजूद, मेरी यह धारणा है कि आरोपोंका वापस ले लेना ठीक था। यदि अब मुकदमे जारी रहते हैं तो आपका रास्ता साफ है। यदि वहाँ असन्तोष है तो आप नेताओंको, जो कदम आपने उठाया है उसका औचित्य दिखाकर, असन्तोष दूर कर सकना चाहिए। आन्दोलन यदि सचमुच सही आधारपर खड़ा है और लोग समझ-बूझकर उसका समर्थन कर रहे हैं, तो वह अब पहलेसे भी ज्यादा प्रबल होना चाहिए। आरोपोंका बोझ हट जानेसे आपका रास्ता बिल्कुल साफ हो जाता है, और यदि आप हिंसाकी शक्तियोंपर नियन्त्रण रख सकें तो आपको सविनय अवज्ञा शुरू करनेमें कोई कठिनाई नहीं होगी। मेरा अपना अन्तःकरण बिल्कुल साफ है। मेरी सलाह अभी भी आपके लिए हाजिर है।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १६-१-१९३९

३१०. पत्र : सम्पूर्णानन्दको

सेगाँव, वर्धा

१ जनवरी, १९३९

भाई सम्पूर्णानन्दजी,

डा० जाकेर हुसेन कुछ दिनों तक मेरे साथ थे। हिन्दू-मुस्लिम मसलेके बारेमें उन्होंने एक यादी तैयार की है। उसमें से यू० पी० के बारेमें जो लिखा है वह आपको भेजता हूँ।^१ उसमें जो सूचनाएं हैं मुझको तो बहुत अच्छी लगती हैं। आप उसे देखें, और उनमें से जिसका अमल हो सकता है किया जावे। चाहें तो डा० जाकेर हुसेनको सीधा आप पत्र लिख सकते हैं। मैं उन्हें बरसोंसे पहचानता हूँ। वह सज्जन हैं।

आपका,

मो० क० गांधी

मूल पत्रसे : सम्पूर्णानन्द पेपर्स; सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार।

१. इसमें जाकिर हुसेनने संयुक्त प्रान्तकी विभिन्न मुस्लिम शैक्षणिक संस्थाओंको सरकारी सहायता देनेका सुझाव दिया था। उन्होंने यह भी सिफारिश की थी कि पुस्तकालयों तथा उर्दूमें साहित्यिक कार्य करनेवाली संस्थाओंकी भी मदद की जानी चाहिए।

३११. भेंट : टिमोथी टिंगफांग ल्यू, वाई० टी० वू और पी० सी० शूको^१

[१ जनवरी, १९३९]^१

चीनी शिष्टमण्डलके सदस्योंने सूक्ष्म प्रश्न पूछे . . . उनमें से एकने पूछा :
“क्या यह जरूरी नहीं है कि व्यक्ति पहले अपने जीवनमें, अन्य व्यक्तियोंके साथ
अपने व्यवहारमें, अहिंसाका पालन करे ? ”

गांधीजी : अन्यथा सोचना तो भ्रम ही होगा। यदि कोई व्यक्ति दूसरोंके प्रति
अपने निजी सम्बन्धोंमें अहिंसाका व्यवहार नहीं करता और बड़े मामलोंमें इसका
व्यवहार करनेकी आशा करता है तो यह उसकी भारी भूल है। उदारताकी तरह
ही अहिंसा भी घरसे ही शुरू होती है। परन्तु यदि व्यक्तिके लिए अहिंसामें प्रशिक्षित
होना जरूरी है तो राष्ट्रके लिए तो यह और भी जरूरी है। ऐसा नहीं हो सकता
कि कोई व्यक्ति अपने निजी दायरेमें तो अहिंसक रहे और बाहर वह हिंसक हो
उठे। अन्यथा वह अपने दायरेमें भी अहिंसक नहीं होगा; उसकी अहिंसा अहिंसाका
दिखावा मात्र ही होगी। जब कोई प्रतिद्वन्द्वी विरोधमें खड़ा होता है तभी, उदाहरण
के तौरपर किसी चोर या हत्यारेके सामने आनेपर ही, आपकी अहिंसाकी परीक्षा
होती है। उस हालतमें आप चोरका सामना उसीके शस्त्रोंसे करनेकी कोशिश करते
हैं या आपको वैसी कोशिश करनी चाहिए, अथवा आप प्यारसे उसे निरस्त्र करनेकी
कोशिश करते हैं। शालीन लोगोंके बीच रहते हुए अहिंसाकी परीक्षाका अवसर आता
ही नहीं; अतः उस स्थितिको अहिंसात्मक नहीं कहा जा सकता। पारस्परिक सहन-
शीलता अहिंसा नहीं है। इसलिए जैसे ही आपको यह विश्वास हो जाये कि अहिंसा
जीवनका नियम है, आपको उनके प्रति अहिंसाका आचरण करने लगना चाहिए जिनका
व्यवहार आपके प्रति हिंसात्मक रहा है। यह नियम राष्ट्रों और व्यक्तियोंपर समान
रूपसे लागू होता है। निस्सन्देह इसमें प्रशिक्षण जरूरी है। आरम्भ सदा स्वल्पसे ही
होता है, परन्तु यदि विश्वास दृढ़ हो तो शेष बादमें स्वयं होता चलता है।

प्र० : क्या हिंसाके व्यवहारमें यह खतरा नहीं रहता कि व्यक्तिके ‘शहादतकी
भाव ग्रन्थि’ उत्पन्न हो जाये या इसके कारण उसमें कुछ अभिमान घर कर जाये ?

१. प्यारेडालके “ए वर्ल्ड इन एगोनी” से उद्धृत।

२. प्यारेडालके अनुसार ताम्बरम् सम्मेलनके सदस्य “वर्षके अन्तिम दिन तथा नये सालके दिन
सेगॉवमें थे”। ल्यू पहले दिन गांधीजी से अलगसे मिले (देखिए पृ० २८८-९०) और “बादमें” उन सभी
लोगोंने एक साथ गांधीजी से बात्चीत की। ऐसा अनुमान है कि यह जूनवरीकी पहली तारीख थी।

उ० : यदि किसीमें वैसा अभिमान और अहंमन्यताका भाव हो तो वह अहिंसा नहीं है। नम्रताके बिना अहिंसा आ ही नहीं सकती। मेरा अपना यह अनुभव है कि जब कभी मैंने अहिंसात्मक रूपसे कार्य किया है, मुझे उसकी प्रेरणा किसी अदृश्य शक्तिसे मिली है और उसीके बलपर मैं उसमें लगा रहा हूँ। यदि मैं अपनी ही इच्छाशक्ति पर निर्भर रहता तो मैं बुरी तरह असफल हो जाता। जब मैं पहली बार जेल गया तो यह सोचकर कि अब क्या होगा, मेरा दिल धड़कने लगा था। जेल-जीवनके विषयमें मैंने भयावह बातें सुनी थीं। परन्तु ईश्वरकी शरणमें मुझे विश्वास था। हमारा अनुभव यह था कि जो लोग प्रार्थनाकी भावनासे जेल गये, वे विजयी होकर वापस लौटे; और जो अपनी ही शक्तिके भरोसे गये, वे असफल हुए। जब आप यह कहते हैं कि ईश्वर आपको शक्ति देता है तो उसमें आत्मदयाकी भी कोई गुंजाइश नहीं रहती। आत्मदया तभी आती है जब आप कोई ऐसा काम करते हैं, जिसके लिए आप दूसरोंसे मान्यताकी आशा रखते हैं। परन्तु यहाँ तो मान्यताका कोई प्रश्न ही नहीं है।

दूसरे मित्रने अपने मनकी उलझन इस तरह सामने रखी : “मेरा अहिंसापर दृढ़ विश्वास है। आठ साल पहले मैंने आपकी पुस्तक ‘एक्सपेरिमेंट्स विद ट्रुथ’ पढ़ी और . . . उसका चीनी भाषामें अनुवाद किया। उसके बाद जापानी आक्रमण हुआ। अहिंसापर मेरे विश्वासकी कड़ी परीक्षा हुई। . . . एक ओर तो मैं यह महसूस करता था कि मैं अपने ही लोगोंको अहिंसाका उपदेश नहीं दे सकता, जिनका . . . यह विश्वास था कि शक्तिसे प्रतिरोध करना ही एकमात्र उपाय है। . . . परन्तु दूसरी ओर जब मैं सहानुभूतिपूर्ण रख अपनानेकी कोशिश करता हूँ और ऐसी स्थितिमें कुछ सहायता-कार्य करनेकी कोशिश करता हूँ तो मुझे लगता है कि जिसे मैं परम धर्म मानता हूँ . . . उसके विरुद्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमें मैं नैतिक और भौतिक दोनों तरहका समर्थन दे रहा हूँ।”

गांधीजी : आपकी स्थिति कठिन है। ऐसी कठिनाइयाँ मेरे सामने कई बार आई हैं। बोअर युद्धमें मैंने एम्बुलेंस दस्ता तैयार करके अंग्रेजोंके पक्षमें भाग लिया। तथाकथित जुलू-विद्रोहके वक्त भी मैंने ऐसा ही किया। तीसरी बार महायुद्धके दौरान भी ऐसा ही हुआ। तब मेरा अहिंसामें विश्वास था। मेरा उद्देश्य पूर्णतः अहिंसात्मक था। इस असंगत आचरणसे मुझे शक्ति मिली। दूसरे लोग अनुसरणके लिए मेरा उदाहरण नहीं अपना सकते। इन तीनों अवसरोंपर अपने आचरणपर दृष्टिपात करते हुए मुझमें कोई पश्चात्तापकी भावना नहीं है। मुझे यह भी मालूम है कि इन अनुभवोंके कारण मेरी अहिंसात्मक शक्तिमें कोई कमी नहीं आई है। विशेषकर जुलू-विद्रोहके दौरान जो असली काम मुझे सौंपा गया वह बिल्कुल लोकोपकारका ही काम था। मुझे और मेरे साथियोंको यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि हमने जख्मी जुलूओंकी मरहम-पट्टी करके उन्हें फिरसे जीवन-दान दिया। यह कहा जा सकता है कि यदि उन्हें हमारी सेवाएँ नहीं मिलतीं तो उनमें से कुछ-एक तो मर ही जाते। मैं

इस अनुभवका उल्लेख इसलिए नहीं कर रहा हूँ कि मैंने उसमें चाहे कितने ही अप्रत्यक्ष रूपसे भाग लिया हो, वह युक्तिसंगत था। मैं यह उल्लेख यह दिखानेके लिए कर रहा हूँ कि उस अनुभवसे मुझमें अहिंसाका भाव और भी दृढ़ हो गया और महान जुलू जातिके लिए मेरे मनमें पहलेसे ज्यादा प्रेम-भाव उत्पन्न हुआ। मुझे यह समझनेका अवसर भी मिला कि अश्वेत जातियोंके विरुद्ध गोरोके युद्धका क्या अभिप्राय है।

इससे आपको यह सबक सीखना है कि आप अत्यन्त अल्पसंख्याकी स्थितिमें हैं, इसलिए आप अपने लोगोंसे हथियार छोड़ देनेके लिए तब तक नहीं कह सकते जब तक कि उनका हृदय-परिवर्तन न हो जाये और हथियार रख देनेपर वे अपने-आपको ज्यादा उत्साही और बहादुर न महसूस करने लगें। परन्तु लोगोंको युद्धसे विमुख करनेकी चेष्टा न करते हुए भी आप निजी तौरपर अहिंसाका पूर्ण पालन कीजिए और युद्धमें किसी तरहसे भी भाग लेना अस्वीकार कर दीजिए। अपने हृदयमें जापानियोंके लिए प्यार बढ़ाइए। आप आत्म-निरीक्षण करें कि क्या आप उन्हें सचमुच प्यार करते हैं? और क्या उनके आपको नुकसान पहुँचानेके बावजूद आपके मनमें उनके प्रति कोई दुर्भाव तो नहीं है? इतना ही काफी नहीं है कि उनके गुणोंका स्मरण करके उन्हें प्यार किया जाये। उनके बुरे कारनामोंके बावजूद आपको चाहिए कि आप उनसे प्यार करें। यदि आपके दिलोंमें जापानियोंके प्रति वैसा प्यार हो तो आप अपने आचरणमें ऊँचा हौसला दिखायेंगे जो सच्ची अहिंसाका उच्चतम मापदण्ड है और जिसे आपके चीनी मित्र अवश्य देख पायेंगे और उसे पहचानेंगे। क्योंकि आप जापानियोंसे प्यार करते हैं इसलिए आप जापानी शस्त्र-बलकी विजय नहीं चाहेंगे। इसी प्रकार चीनी शस्त्र-बलकी विजयके लिए भी प्रार्थना नहीं करेंगे। जब दोनों ओरसे शस्त्रोंका प्रयोग हो रहा हो तो यह निर्णय कर पाना कठिन है कि किस पक्षको सफलता मिलनी चाहिए। इसलिए आप केवल यही प्रार्थना करेंगे कि सही पक्षकी ही विजय हो। यद्यपि आप अपने-आपको सब तरहकी हिंसासे दूर रखेंगे, फिर भी आप खतरेसे मुंह नहीं मोड़ेंगे। अपने जीवनकी रत्ती-भर भी परवाह किये बिना आप मित्र और शत्रुकी सेवा समान भावसे करेंगे। यदि कहीं कोई महामारी फूट पड़े या आग बुझाई जानी हो तो वहाँ आप दौड़े हुए जायेंगे और अपने अपरिमित उत्साह और अहिंसापूर्ण बहादुरीसे अपना नाम रोशन करेंगे। परन्तु आप यह नहीं चाहेंगे कि ईश्वर जापानियों का बुरा करे। यदि संयोगवश कुछ जापानी सिपाही या हवाबाज चीनियोंके हाथ लग जायें और चीनियोंकी क्रुद्ध भीड़ द्वारा उनका वध कर दिये जानेका खतरा हो या किसी दूसरी तरह उनसे दुर्व्यवहार हो रहा हो तो आप अपने लोगोंसे उनके पक्षमें बहस करेंगे और यदि जरूरत पड़े तो अपना जीवन देकर भी उनकी रक्षा करेंगे। आप एमिली हॉबहाउसकी कहानी जानते हैं। वह अंग्रेज महिला थी, फिर भी वह साहस-पूर्वक बोअर बन्दी शिविरोंमें जाती थी। वह बोअर लोगोंको प्रोत्साहित करती थी कि वे हौसला न छोड़ें, और कहा जाता है कि यदि उसने बोअर महिलाओंके दिल उस तरह अपने ही तरीकेसे मजबूत न किये होते तो शायद युद्ध कोई अलग रुख

अख्तियार कर लेता। उसका हृदय अपने लोगोंके प्रति रोषसे भरा था; उनके बारेमें एक भी अच्छी बात उसके मुँहसे कभी नहीं निकली। आप उसके अपरिमित रोषकी नकल मत कीजिए जिसकी वजहसे उसकी अहिंसा कुछ दोषपूर्ण हो गई थी, परन्तु आप 'शत्रुके' प्रति उसके स्नेहकी नकल कीजिए जिसके कारण उसने अपने देशवासियोंके बुरे कारनामोंकी निन्दा की। आपके उदाहरणका चीनियों पर प्रभाव पड़ेगा। और शायद इससे कुछ जापानियोंको शर्म भी आये। वही लोग जापानियोंमें आपका सन्देश ले जानेवाले होंगे।

सम्भवतः आप कहेंगे कि यह प्रक्रिया तो बहुत धीमी है। सम्भवतः वर्तमान विपरीत परिस्थितियोंमें आरम्भमें तो ऐसा ही होगा। परन्तु आप जैसे आगे बढ़ेंगे लगातार उसका वेग अकल्पित गतिसे बढ़ता जायेगा और उसमें तेजी आयेगी। मैं एक दुर्दमनीय आशावादी हूँ। मेरा आशावाद मेरे इस विश्वासपर आधारित है कि व्यक्तिमें अहिंसाके विकासके लिए अपरिमित संभावनाएँ हैं। जितना ज्यादा अपने अन्दर इस अहिंसा-भावनाको विकसित करेंगे, उतनी ही यह ज्यादा फैलेगी और अन्तमें यह आपके डर्द-गिर्द सब जगह छा जायेगी और शायद क्रमशः सारे संसारमें व्याप्त हो जायेगी।

प्र० : मेरा अहिंसामें विश्वास है; मैं प्रायः अनुभव करता हूँ कि विभिन्न प्रेरणाएँ मुझे एक साथ प्रेरित करती हैं। युद्धमें एक जनरलको भी विभिन्न प्रेरणाएँ प्रभावित करती हैं। क्या यह सम्भव नहीं है कि शत्रुको प्यार करते हुए उसके साथ युद्ध किया जाये? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम अपने मनमें प्यार रखते हुए शत्रुको गोली मारें?

उ० : प्रायः हम विभिन्न प्रेरणाओंसे प्रभावित होते ही हैं। परन्तु वह अहिंसा नहीं होगी। हिंसाकी अवस्थाएँ हो सकती हैं, अहिंसाकी नहीं। अहिंसाके पुजारीका अनवरत प्रयत्न यह रहता है कि वह तथाकथित शत्रुके प्रति घृणाकी भावना अपने मनसे बिलकुल निकाल बाहर कर दे। प्यारसे शत्रुको गोली मारने-जैसी कोई बात, जैसाकि आप सुझाते हैं, नहीं हो सकती।

श्री पी० सी० शूने अन्तमें अपनी समस्या गांधीजी के सामने रखी।

पी० सी० शू : मैं ईमानदारीसे कह सकता हूँ कि मेरे मनमें जापानियोंके प्रति घृणाका भाव नहीं है। परन्तु मैं महसूस करता हूँ कि उनकी सैनिक पद्धति ही बुरी है। . . . मुझे आशा थी कि ताम्बरम्में कदाचित् पारस्परिक सद्भावना और शान्तिके आधारपर दोनों देशोंके बीच कोई अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित हो जायेगा। परन्तु निराशा ही मेरे हाथ लगी। . . . हमारी कठिनाई यह है : यद्यपि हम ईमानदारीसे अहिंसापर विश्वास करते हैं तो भी इसे प्रभावपूर्ण बनानेका तरीका हम नहीं खोज पाये हैं।

गांधीजी : उससे क्या कोई कठिनाई होनी चाहिए? एक व्यक्ति जो अपने समय की किसी विशेष बुराईको समझता है और देखता है कि यह बुराई उसपर हावी हो रही है तो वह प्रेरणाके लिए अपने हृदयकी गहराईमें प्रवेश करता है और जब उसे प्रेरणा मिल जाती है तब वह दूसरोंको भी वैसी प्रेरणा देता है। सभाएँ और

वर्ग-संगठन तो ठीक हैं। उनसे कुछ मदद मिलती है। परन्तु वह बहुत कम होती है। वे एक ढाँचेके समान हैं, जिसे वास्तुकार खड़ा करता है—वह एक अस्थायी और कामचलाऊ उपाय है। वास्तविक महत्व तो उस अजेय निष्ठाका है जिसे कभी दबाया नहीं जा सकता।

निष्ठा विकसित की जा सकती है। केवल वह साधन, जिसके द्वारा निष्ठाका विकास किया जा सकता है और जिस तरह यह फलवती होती है, हिंसाके लिए अपनाये गये साधनसे भिन्न है। आप प्रार्थना द्वारा हिंसाका विकास नहीं कर सकते। दूसरी ओर निष्ठाको विकसित करनेका प्रार्थनाके अतिरिक्त और कोई दूसरा उपाय है ही नहीं।

अहिंसा तभी सफल होती है जब हमारा ईश्वरमें जीवन्त विश्वास हो। बुद्ध, ईसा, मुहम्मद अपने-अपने तरीकेसे शान्तिके योद्धा थे। संसारके इन शिक्षकों द्वारा अपने पीछे छोड़ी गई इस परम्पराको हमें समृद्ध करना है। ईश्वर अपनी योजनाएँ अपने आश्चर्यजनक तरीकोंसे कार्यान्वित करता है और अपने साधन स्वयं जुटाता है। पैगम्बर और अबूबक्र एक गुफामें फँस गये थे। एक मकड़ीने, जिसने उस गुफाके प्रवेश-द्वारपर ही अपना जाला बुन रखा था, उन्हें आतताइयोंसे बचा लिया था। आपको मालूम होना चाहिए कि संसारमें जितने भी धर्म-संस्थापक हुए हैं उन्होंने अपना कार्य शून्यसे आरम्भ किया है!!

प्र० : ईसा-जैसा अन्तःकरण रखनेवाले लोग कहीं इक्के-दुक्के मिलते हैं और क्योंकि उनमें भी एकता और संगठन नहीं है इसलिए उनकी बात अरण्यरोदन बनकर रह जाती है। मेरे मनमें यह बात आती है कि क्या प्यार संगठित किया जा सकता है? यदि हाँ, तो कैसे?

उ० : पुराने तरीकेसे संगठन तो शायद सम्भव नहीं होगा। परन्तु यदि संगठित होकर अहिंसात्मक कार्रवाई की जाये तो उसमें कोई बन्धन नहीं है। मैं प्रयोगोंकी एक श्रृंखला द्वारा यह दिखानेकी कोशिश कर रहा हूँ कि यह सम्भव है। इसका अपना एक तरीका है।

प्र० : यदि चीन युद्धमें विजयी होता है तो उस विजयके कारण उसकी हालत बेहतर होगी या खराब?

उ० : यदि चीन जीत जाये और जापानी तरीकोंकी नकल करने लगे तो वह जापानको उसीकी बाजीमें पछाड़ देगा। परन्तु चीनकी विजयसे संसारको कोई नई आशा नहीं मिलेगी। क्योंकि तब चीन जापानका ही परिवर्तित रूप होगा। परन्तु चीन चाहे जीते या हारे, आपकी कार्रवाईकी दिशा स्पष्ट है। यदि चीन लड़ाई के मैदानमें हार जाये तो भी आपकी अहिंसा निर्भय रहेगी और उसका फर्ज पूरा हो चुकेगा। यदि चीन जीत जाता है तो जापानके तरीकोंकी नकल करनेसे चीनको रोकनेके प्रयासमें आपको फाँसीके तख्तेपर झूलना होगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २८-१-१९३९

३१२. भेंट : एस० एस० तेमाको'

[१ जनवरी, १९३९]

तेमा : हमारे लोग अपनी कांग्रेसको भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जितना सफल कैसे बना सकते हैं ?

गांधीजी : कांग्रेसकी सफलताका सीधा-सादा कारण यही है कि इसका श्रीगणेश ऐसे लोगों द्वारा किया गया था जो उस समयके सबसे अधिक निःस्वार्थ और सुसंस्कृत लोग थे। उन्होंने अपनेको जनताका प्रतिनिधि बनाया और सेवा और आत्मत्याग द्वारा उसका हृदय जीत लिया। वे जनतामें से आये थे और जनताके थे। आपके पास, जहाँ तक मुझे विदित है, ऐसे आफ्रिकियोंका कोई दल नहीं है जो गरीबीमें रहने और काम करनेसे सन्तुष्ट रहे। जो शिक्षित हैं उनमें वैसा पूर्ण निःस्वार्थ-भाव नहीं है। और फिर आपके अधिकांश नेता ईसाई हैं, जबकि बंटु और जुलू लोगोंका विशाल जनसमूह ईसाई नहीं है। आपने यूरोपीय वेश-भूषा और तौरतरीके अपना लिये हैं, और इसलिए आप अपने ही लोगोंके बीच अजनबी बन गये हैं। राजनीतिक दृष्टिसे यह एक असुविधा है। इससे आपके लिए जन-साधारणके दिलों तक पहुँचना कठिन हो जाता है। आपको 'बंटु' कहलाये जानेका भय नहीं होना चाहिए और 'ऐसगर्ड' लेकर चलने या कमरमें सिर्फ एक छोटा-सा अँगोछा बाँधकर घूमनेमें शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए। जुलू या बंटुका शरीर काफी सुडौल होता है, इसलिए उसे अपने उघड़े शरीरपर शरमानेकी जरूरत नहीं है। उसे आपकी तरहके कपड़े पहननेकी जरूरत नहीं है। आपको एक बार फिर आफ्रिकी बनना होगा।

ते० : कुछ समयसे दक्षिण आफ्रिकामें एक संयुक्त भारतीय-आफ्रिकी अश्वेत मोर्चा बनानेकी कुछ बात चल रही है। आपका इस बारेमें क्या विचार है ?

गां० : यह एक गलती होगी। आप इस तरह शक्तिको नहीं, दुर्बलताको इकट्ठा कर देंगे। आपमें से हरएक अपने पैरोंपर खड़ा होकर ही एक-दूसरेकी ज्यादा-से-ज्यादा सहायता कर सकेगा। दोनों मामले अलग-अलग हैं। भारतीयोंकी संख्या बहुत ही कम है। वे गोरे लोगोंके लिए कभी भी 'खतरा' नहीं बन सकते। दूसरी ओर,

१. प्यरेलाउके "ए वर्ल्ड इन एगोनी-२" से उद्धृत। जोहानिसबर्गके डी० आर० मिशनके रेक्ॉर्ड एस० एस० तेमा नीग्रो थे और आफ्रिकी कांग्रेसके सदस्य थे। वे नॉम्बरम् सम्मेलनके उन प्रतिनिधियोंमें से थे जो सम्मेलनके बाद गांधीजी से मिलने आये थे।

२. प्रतिनिधि ३१ दिसम्बर और १ जनवरीको सेगॉवमें थे। ३१ दिसम्बरको केवल ल्यूने ही गांधीजीसे भेंट की थी। तेमा सम्भवतः उनसे १ जनवरीको मिले थे।

३. आफ्रिकियोंका छोटा-सा भाड़ा।

आप उस धरतीकी सन्तान हैं; आपका उत्तराधिकार छीना जा रहा है। आपको उसका प्रतिरोध करना ही होगा। आपका सवाल बहुत बड़ा है। उसे भारतीयोंके सवालके साथ मिलाना नहीं चाहिए। इससे इन दोनों जातियोंके बीच अत्यन्त मैत्रीपूर्ण सम्बन्धोंकी स्थापनाका निषेध नहीं होता। भारतीय कई तरहसे आपके साथ सहयोग कर सकते हैं। वे आपके साथ सदा ईमानदारीसे व्यवहार करके आपकी सहायता कर सकते हैं। वे यह कर सकते हैं कि आपकी न्यायोचित आकांक्षाओंका विरोध न करें, अपनेको 'सुसंस्कृत' और आपको 'जंगली' न बतायें, और इस तरह आपको नुकसान पहुँचाकर अपने लिए रियायतें हासिल करनेकी कोशिश न करें।

ते० : इन दोनों जातियोंमें आप कैसे सम्बन्ध पसन्द करेंगे ?

गा० : जितने घनिष्ठ हो सकते हों उतने घनिष्ठ। लेकिन जहाँ मैंने आफ्रिकी और भारतीयके बीच सभी भेदभाव खत्म कर दिये हैं, वहाँ उसका अर्थ यह नहीं है कि मैं उनमें कोई भिन्नता ही नहीं मानता। मानव-समुदायकी विभिन्न नस्लें किसी पेड़की विभिन्न शाखाओंकी तरह हैं। जिस समान मूल स्कन्धसे हम फूटे हैं, उसे एक बार स्वीकार कर लेनेपर हम मानव-परिवारकी मूल एकताको समझ जाते हैं, और तब द्वेष और अस्वस्थ प्रतिस्पर्धाके लिए कोई गुंजाइश नहीं रहती।

ते० : हमें अपनी मुक्तिके लिए हिंसाको साधन बनाना चाहिए या अहिंसाको ?

गा० : हर हालतमें निश्चय ही अहिंसाको। परन्तु आपकी उसमें जीवन्त आस्था होनी चाहिए। आपके चारों ओर जब घटाटोप अँधेरा हो, तब भी आपको आशा नहीं छोड़नी चाहिए। जो व्यक्ति अहिंसामें विश्वास करता है, वह एक जीवन्त ईश्वरमें विश्वास करता है। वह पराजय स्वीकार नहीं कर सकता। इसलिए, मेरी सलाह सदा अहिंसाकी ही है, पर वह वीरकी अहिंसा होनी चाहिए, कायर की नहीं।

ते० : आपके उदाहरणने हमें इतना प्रभावित किया है कि हम सोचते हैं कि क्या यह सम्भव नहीं है कि हमारे एक-दो युवक, जो हमें आशा है आगे नेतृत्व करनेवाले हों, आपके पास प्रशिक्षणके लिए आ जायें।

गा० : यह एक काफी अच्छा और सही विचार है।

ते० : आपके खयालसे क्या ईसाई धर्म आफ्रिकाको मुक्ति दिला सकता है ?

गा० : ईसाई धर्म, जिस रूपमें वह आज जाना जाता है और प्रयोगमें लाया जाता है, आपके लोगोंको मुक्ति नहीं दे सकता। मेरा यह विश्वास है कि जो लोग आज अपनेको ईसाई कहते हैं वे ईसाके वास्तविक सन्देशको समझते नहीं हैं। जुलू-विद्रोहके दिनोंमें मैंने जुलू लोगोंपर किये गये कुछ भयानक अत्याचारोंको देखा था। क्योंकि एक आदमीने, उनके सरदार बाम्बात्ताने, टैक्स देनेसे इन्कार कर दिया, इसलिए पूरी जातिको यातनाएँ दी गईं! मैं [तब] एक ऐम्बुलेंस-दस्तेका नायक था। जिन जुलू लोगोंको कोड़े लगाये गये थे उन्हें इलाजके लिए हमारे पास लाया गया था, क्योंकि कोई गोरी नर्स उनकी परिचर्याको तैयार नहीं थी। उन लोगोंकी जख्मी पीठों को मैं कभी भूल नहीं सकूँगा। फिर भी, उन सब जुल्मोंको करनेवाले अपने-आपको

ईसाई कहते थे। वे 'शिक्षित' थे, जुलू लोगोंसे अच्छे कपड़े पहनते थे, पर वे नैतिक रूपसे उनसे ऊँचे नहीं थे।

ते० : हमारे बीचमें से जब भी कोई नेता उभरता है, तो कुछ समय बाद ही उसका पतन हो जाता है। उसमें या तो धनकी लालसा भड़क उठती है, या वह मद्यपान या किसी अन्य व्यसनमें डूब जाता है और हम उससे हाथ धो बैठते हैं। इसका इलाज हम कैसे करें?

गा० : यह समस्या कोई खास तौरपर आपके लिए ही नहीं है। आपका नेतृत्व प्रभावहीन इसलिए सिद्ध हुआ है कि वह जन-साधारणमें से नहीं उभरा है। यदि आपका सम्बन्ध जन-साधारणसे हो तो आप उन्हींकी तरह रहेंगे, उन्हींकी तरह सोचेंगे। तब आपका और उनका ध्येय एक होगा। यदि मैं आपकी जगह होऊँ तो एक भी आफ्रिकीसे अपनी वेशभूषा बदलने और अपनेको असाधारण बनानेको न कहूँ। उससे उसका नैतिक स्तर एक इंच भी ऊँचा नहीं होता।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १८-२-१९३९

३१३. राजकोट

राजकोटका संघर्ष जिस शानके साथ शुरू हुआ था उसी शानके साथ अभी हालमें समाप्त भी हो गया है।^१ लेकिन अभी तक उसके बारेमें मैंने शायद ही कुछ कहा हो। मेरी खामोशीकी यह वजह नहीं थी कि उसमें मेरी दिलचस्पी नहीं थी। इस राज्यके साथ मेरे गहरे सम्बन्ध रहे हैं, इसलिए यह तो सम्भव ही नहीं था। इस रियासतमें मेरे पिता दीवान थे। इसके अलावा स्वर्गीय ठाकुर साहब [वर्तमान ठाकुर साहबके पिता] मुझे अपने पिताकी तरह मानते थे। मेरी खामोशीकी वजह तो यह थी कि सरदार वल्लभभाई इस आन्दोलनकी आत्मा थे, और उनकी या उनके कामकी प्रशंसा करना आत्म-स्तुति करनेके समान होगा।

इस संघर्षने यह दिखा दिया कि अगर जनता अच्छी तरहसे उसपर अमल करे, तो अहिंसात्मक असहयोग क्या कुछ नहीं कर सकता है। जनताने जो एकता, दृढ़ता और त्यागकी क्षमता दिखलाई है उसकी मुझे बिलकुल आशा नहीं थी। लेकिन लोगोंने दिखला दिया कि अपने शासककी बनिस्वत वे महान हैं और अहिंसात्मक कार्यमें एकजुट प्रजाके सामने अंग्रेज दीवानकी भी कुछ नहीं चल सकती।

१. उत्तरदायी सरकारकी स्थापनाके बारेमें समझौता २६-१२-१९३८ को हुआ था। उसकी मुख्य शर्तें थीं : (१) सभी दमनकारी कार्रवाइयाँ खत्म कर दी जायें; (२) सभी राजनैतिक बन्दी छोड़ दिये जायें; (३) सत्याग्रह बन्द कर दिया जाये; (४) संविधानका मसविदा तैयार करनेके लिए दस व्यक्तियोंकी एक समिति बनाई जाये जिनमें से सात व्यक्तियोंकी नियुक्ति वल्लभभाई पटेलके सुझावके अनुसार होनी चाहिए।

ठाकुर साहबने अंग्रेज दीवानकी सलाह और रेजिडेंटकी ज्ञात इच्छाओंको ठुकराकर बागडोर अपने हाथोंमें ले ली है, इसके लिए वे बधाईके पात्र हैं।

मेरे पास जो कागजात है उनपर से मैं जानता हूँ कि रेजिडेंटके समर्थनसे सर पैट्रिक कैडेलने जो-कुछ किया, वह ठाकुर साहबके नौकरकी हैसियतसे उनके लिए बड़ा अशोभनीय है। उन्होंने तो इस तरहका काम किया मानो वही राज्यके मालिक हों। उन्होंने इस बातका कि वे शासक-जातिके हैं और उनकी नियुक्ति केन्द्रीय सत्ताकी मंजूरीसे हुई है, बड़ा दुरुपयोग किया और वे यह मानकर चले कि अपनी मनमानी करनेका उन्हें पूरा इस्तियार है। यह लिखते वक्त तक मुझे यह मालूम नहीं है कि वे समझदारीसे नौकरीसे रिटायर हो गये हैं या उनका क्या हुआ है। मेरे पास जो पत्र-व्यवहार है उससे जाहिर होता है कि राजा लोग इस पर गम्भीरताके साथ विचार कर रहे हैं कि अंग्रेज दीवानका रखना कहाँ तक अक्लमन्दी है। केन्द्रीय सत्ताको भी अपने रेजिडेंटोंपर इस बातकी निगरानी रखनी चाहिए कि उसकी घोषणाओंके शब्दों पर ही नहीं बल्कि उनमें निहित भावनापर भी अमल होता है या नहीं।

जो राजा लोग रेजिडेंटोंसे डरते हैं, वे आशा है राजकोटके उदाहरणसे यह जान जायेंगे कि अगर वे सच्चे हैं और उनकी प्रजा वस्तुतः उनके साथ है, तो उन्हें रेजिडेंटोंसे डरनेकी कोई जरूरत नहीं है। निस्सन्देह उन्हें यह महसूस करना चाहिए कि सर्वोच्च सत्ता न तो शिमलामें है, न व्हाइट हॉलमें, उसका निवास तो उनकी प्रजामें ही है। अपनी अहिंसात्मक शक्तिपर भरोसा रखनेवाली जागृत प्रजा तो सशस्त्र शक्तियोंके कैसे भी गठजोड़के सामने स्वतन्त्र ही रहती है। राजकोटमें तीन महीनेके अन्दर जो हुआ वही हरएक रियासतमें हो सकता है, बशर्ते कि वहाँकी प्रजा भी वैसी ही हो जैसीकि राजकोटकी साबित हुई है।

मैं यह दावा नहीं करता कि राजकोटकी प्रजामें अहिंसा-गुणका वह दुर्लभ स्तर आ गया है, जो किसी भी कठिनाईका मुकाबला कर सकता है। लेकिन राजकोटने यह बतला दिया है कि समस्त प्रजा द्वारा संगठित रूपसे ग्रहण की हुई मामूली अहिंसा भी कितना काम कर सकती है।

राजकोटकी प्रजाका काम निश्चय ही महान है, लेकिन सत्याग्रहीके रूपमें उसकी सच्ची परीक्षा तो अभी होनी है। उसने जिन गुणोंसे विजय प्राप्त की है, उसे कायम रखनेके लिए भी यदि वह उन्हीं गुणोंपर कायम न रही, तो सारा किया-कराया चौपट हो जायेगा। सारे हिन्दुस्तानके कांग्रेसियोंने एक लम्बे अभ्यासके बाद सविनय प्रतिरोध करनेकी अपनी क्षमता तो दिखला दी है, लेकिन रचनात्मक अहिंसाकी अपनी क्षमता अभी उन्हें दिखलानी है। सविनय अवज्ञा तो अविनय अर्थात् हिंसासे मिश्रित होनेपर भी काम लायक समझी जा सकती है, लेकिन रचनात्मक कार्य बहुत कठिन है, उसमें हिंसाका आसानीसे पता चल जाता है। और हिंसाका जरा भी समावेश विजयको भी एक जालमें परिणत कर देता है और वह विजय एक भ्रम साबित होती है। क्या जनता आवश्यक निःस्वार्थता और आत्म-त्याग दिखलायेगी? अपना और अपने आश्रितोंका स्वार्थ-साधन करनेके प्रलोभनसे क्या वह दूर रहेगी?

सत्ताके लिए किसी भी तरहकी छीना-झपटीसे आम जनताको वह लाभ नहीं होगा जोकि एक दूरदर्शी और दृढ़ निश्चयी नेतृत्वसे, जिसके आज्ञा-पालनके लिए सब स्वेच्छापूर्वक तैयार हो, और वस्तुतः होना भी चाहिए। काठियावाड़ अन्दरूनी कुचक्रोंके लिए प्रसिद्ध है। उसमें जहाँ वीरोंको पैदा करनेकी खासियत है, वहाँ राजनीतिज्ञोंकी एक ऐसी जाति भी मौजूद है जिसके जीवनका एकमात्र उद्देश्य अपना स्वार्थ सिद्ध करना है। अगर इन राजनीतिज्ञोंकी चली तो राजकोटमें रामराज्य नहीं होगा। रामराज्यका मतलब तो है सर्वतोमुखी स्वार्थ-त्याग। उसके लिए लोगोंको अपने ऊपर स्वयं अंकुश लगाना चाहिए। जनता अगर रचनात्मक अहिंसाको अमली रूप दे, तो राजकोटका ऐसा प्रभाव पड़ सकता है कि वह आसानीसे एक अनुकरणीय उदाहरण बन जायेगा।

इसलिए विजयके इस अवसरपर आत्मसन्तोष करने और व्यर्थकी खुशियाँ मनानेके बजाय, विनम्रता, आत्म-निरीक्षण और प्रार्थनासे काम लेना चाहिए। मैं सब-कुछ उत्सुकताके साथ देखता रहूँगा और ईश्वरसे प्रार्थना करूँगा।

बारडोली जाते हुए रेलगाड़ीमें, २ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ७-१-१९३९

३१४. क्या अहिंसाका कोई प्रभाव नहीं पड़ता ?

अपने लेखपर हुई इस आलोचनाका कि यहूदी तो पिछले २,००० वर्षोंसे अहिंसक ही रहे हैं, मैंने जो जवाब^१ दिया था, उसपर एक सम्पादकीय लेखमें 'स्टेट्स-मैन' ने लिखा है :

पास्टर नीमोलर^२ और लूथरन चर्चपर हुए अत्याचारोंकी बात सारी दुनियाको मालूम है; अनेक पास्टरों (पादरियों) और साधारण ईसाइयोंने 'जनता' की अदालतों, हिंसा और धमकियोंके कण्ठोंको बहादुरीके साथ बरदाश्त किया और बदले या प्रतिहिंसाका विचार लाये बिना वे सत्यपर कायम रहे। लेकिन जर्मनीमें कौन-सा हृदय-परिवर्तन नजर आता है? बाइबिल सरचर्ष लोगके जिन सदस्योंने नाजी सैनिकवादको ईसाके शान्ति-सन्देशका विरोधी मानकर अस्वीकार किया, वे आज जेलखानों और नजरबन्द कैम्पोंमें पड़े सड़ रहे हैं और पिछले पाँच सालोंसे उनकी यही दुर्दशा हो रही है। कितने जर्मन ऐसे हैं, जो उनके बारेमें कुछ जानते हैं या जानते भी हैं तो उनके लिए कुछ करते हैं ?

१. देखिए "आलोचनाओंका जवाब", पृ० २११-३।

२. नाजी विरोधी प्रोटेस्टेंट धर्मशास्त्रविद् मार्टिन नीमोलर गेस्टापो द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये थे और उन्हें एक नजरबन्दी कैम्पमें कैद करके रखा गया था।

अहिंसा, चाहे वह निर्बलकी हो या बलवान की, किन्हीं अत्यन्त विशेष परिस्थितियोंको छोड़कर सामाजिकके बजाय व्यक्तिगत प्रयोगकी ही चीज मालूम पड़ती है। मनुष्य अपनी मुक्तिके लिए क्या करे, यह सम्बन्धित व्यक्तिके विचारका विषय है। पर राजनीतिज्ञोंका सम्बन्ध तो कारणों, सिद्धान्तों और अल्पसंख्यकोंसे है। श्री गांधीका कहना है कि हिटलरको उस साहसके सामने झुकना पड़ेगा जो उसके “तूफानी दस्तों द्वारा प्रदर्शित साहससे निश्चित-रूपेण श्रेष्ठ है।” अगर ऐसा होता, तो वॉन ओसिट्ज्की^१ जैसे मनुष्यकी उसने जरूर तारीफ की होती। मगर नाजियोंके लिए साहस उसी हालतमें गुण मालूम पड़ता है जबकि उनके अपने ही समर्थक उससे काम लें; अन्यत्र वह ‘माक्सवादियों-यहूदियोंके धृष्टतापूर्ण उत्तेजक कार्य’ हो जाता है। बड़े-बड़े राष्ट्र इस विषयमें अभी तक कुछ भी नहीं कर पाये, यह देखकर श्री गांधीने अपना नुस्खा पेश किया है। बड़े राष्ट्रोंकी यह ऐसी असमर्थता है जिसके लिए हम सबको अफसोस है और हम सब चाहते हैं कि यह दूर हो। यहूदियोंको श्री गांधीकी सहानुभूतिसे तसल्ली मिल सकती है, लेकिन उनके उत्थानमें इससे ज्यादा मदद मिलनेकी सम्भावना नहीं है। ईसामसीहका उदाहरण अहिंसाका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है और उन्हें जिस बुरी तरह मारा गया, उससे हमेशाके लिए यह सिद्ध हो गया है कि सांसारिक और भौतिक रूपमें यह बड़ी बुरी तरह असफल हो सकती है।

मैं तो नहीं समझता कि पास्टर नीमोलर और दूसरे व्यक्तियोंका कष्ट-सहन बेकार साबित हुआ है। उन्होंने अपने स्वाभिमानको कायम रखा है और यह साबित कर दिया है कि उनकी श्रद्धा किसी भी कष्ट-सहनसे विचलित नहीं हो सकती। हिटलरके दिलको पिघलानेके लिए वे काफी साबित नहीं हो सके, इससे केवल यही जाहिर होता है कि हिटलरका दिल पत्थरसे भी अधिक कठोर चीजका बना हुआ है। मगर, सख्त-से-सख्त धातु भी पर्याप्त गर्मीसे पिघल जाती है, उसी प्रकार सख्त-से-सख्त दिल भी अहिंसाकी गर्मीसे पिघल जायेगा और गर्मी उत्पन्न करनेकी अहिंसाकी ताकतकी तो कोई सीमा ही नहीं।

हर एक कार्य बहुत-सी ताकतोंका परिणाम है, चाहे वे एक-दूसरेके विरुद्ध असर करनेवाली ही क्यों न हों। ऊर्जा कभी जाया नहीं होती। यह हम यांत्रिकी की किताबोंमें पढ़ते हैं। मनुष्यके कामोंमें भी यह उसी तरहसे लागू है। अन्तर यह है कि पहले मामलेमें हमें आमतौरपर यह मालूम होता है कि वहाँ कौन-कौनसी ताकतें काम कर रही हैं और ऐसी हालतमें हम हिसाब लगाकर उसका नतीजा भी पहले ही से बता सकते हैं। जहाँ तक मनुष्यके कामोंका ताल्लुक है, वे

१. वॉन ओसिट्ज्की (१८८९-१९३८), जर्मन शांतिवादी और लेखक। उन्हें राज्यके शत्रुके रूपमें गिरफ्तार करके जेलमें डाल दिया गया था। जेलमें रहते हुए उन्हें शांतिका नोबेल पुरस्कार दिया गया था। हिटलर इस बातसे इतना नाराज हुआ कि उसने जर्मनोंके लिए ऐसे पुरस्कार स्वीकार करनेकी मनाही कर दी थी।

ऐसी ताकतोंके संयोगका परिणाम होते हैं जिनमें से बहुत-सी ताकतोंकी हमें कोई जानकारी नहीं होती। लेकिन हमें अपने अज्ञानको इन ताकतोंकी क्षमतामें अविश्वास करनेका कारण नहीं बनाना चाहिए। होना तो यह चाहिए कि अज्ञानके कारण हमारा इनमें और भी-ज्यादा विश्वास हो जाये। चूँकि अहिंसा दुनियाकी सबसे बड़ी ताकत है और काम भी यह बहुत छुपे ढंगसे करती है, इसलिए इसमें बहुत ज्यादा श्रद्धा रखनेकी जरूरत है। जिस तरह ईश्वरमें हमारा विश्वास श्रद्धा पर आधारित है, उसी तरह अहिंसामें हमारा विश्वास श्रद्धा पर आधारित होना चाहिए।

हिटलर मात्र एक आदमी ही तो है और उसकी जिन्दगी एक औसत आदमीकी स्वल्प जिन्दगीसे बड़ी नहीं है। अगर जनता उसका साथ देना छोड़ दे, तो वह एकदम अशक्त हो जाये। मैंने यह आशा नहीं छोड़ी है कि मानव-समाजके कष्ट-सहनका चाहे इन कष्टोंका कारण वह स्वयं ही हो उसके हृदयपर असर पड़ेगा। मगर, यह तो मैं मान ही नहीं सकता कि जर्मनोंके पास दिल नहीं है या संसारकी दूसरी जातियोंकी अपेक्षा वे कम सहृदय हैं। अगर समय रहते उसकी आँखें नहीं खुलीं तो वे एक-न-एक दिन अपने इस नेताके खिलाफ, जिसकी वे इतनी पूजा कर रहे हैं, विद्रोह कर देंगे। और जब उसकी आँखें खुलेंगी या वे विद्रोह करेंगे तब हम देखेंगे कि पास्टर नीमोलर और उसके साथियोंकी मुसीबतों और कष्ट-सहनने इस जागृतिको पैदा करनेमें कितना काम किया है।

सशस्त्र संघर्षसे जर्मनोंकी शस्त्र-शक्तिको नष्ट किया जा सकता है, पर जर्मनोंके दिलको नहीं बदला जा सकता। पिछले महायुद्धमें उनकी पराजय हुई थी पर उससे भी उनके दिल तो नहीं बदले थे। उसने एक हिटलर पैदा किया, जो विजयी राष्ट्रोंसे बदला लेनेपर तुला हुआ है। और यह बदला कैसा भयानक है। इसका जवाब वही होना चाहिए जो स्टीवेन्सनने अपने साथियोंको दिया था, जो गहरी खाईको पाटनेसे हताश हो गये थे और जिसको भरनेके बाद ही पहली रेलवे-लाइनका निकलना मुमकिन हो सका था। उसने अपने साथियोंसे, जिनमें विश्वासकी कमी थी, कहा कि “विश्वास बढ़ाओ और गढ़ेको भरे चले जाओ। वह अथाह नहीं है और इसलिए वह जरूर भर जायेगा।” इसी तरह मैं भी इस बातसे मायूस नहीं हुआ हूँ कि हिटलर या जर्मनीका दिल अभी तक नहीं पिघला है। इसके बरखिलाफ, मैं यहीं कहूँगा कि मुसीबतों-पर-मुसीबतें सहते चले जाओ, जब तक कि अन्धेको भी यह नजर न आने लगे कि दिल पिघल गया है। जिस तरह पास्टर नीमोलरने मुसीबतें बरदाश्त करके अपनी महिमा बढ़ाई है, उसी तरह अगर एक यहूदी भी बहादुरीके साथ डटकर खड़ा हो जाये और हिटलरके हुक्मके आगे सर झुकानेसे इनकार कर दे, तो उसकी शान भी बढ़ जायेगी और वह अपने भाई यहूदियोंके लिए मुक्तिका रास्ता साफ कर देगा।

मेरा यह विश्वास है कि अहिंसा सिर्फ व्यक्तिगत गुण नहीं है, बल्कि एक सामाजिक गुण भी है जिसे कि दूसरे गुणोंकी तरह विकसित करना चाहिए। इसमें कोई शक नहीं कि समाज अपने आपसके कारोबारमें अहिंसाका प्रयोग करनेसे ही व्यवस्थित होता है। मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि इसे एक बड़े राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पैमानेपर काममें लाया जाये।

‘स्टेट्समैन’ द्वारा जाहिर की गई इस रायसे मुझे आश्चर्य हुआ है कि ईसा-मसीहकी मिसालने हमेशाके लिए यह साबित कर दिया है कि अहिंसा सांसारिक बातोंमें नाकामयाब साबित होती है। हालाँकि मैं साम्प्रदायिक अर्थमें अपने-आपको ईसाई नहीं कह सकता, मगर ईसामसीहने अपनी कुर्बानीसे जो उदाहरण कायम किया है, उससे अहिंसामें मेरी अखंड श्रद्धा और भी बढ़ गई है और अहिंसाके इसी सिद्धान्तके अनुसार ही मेरे तमाम धार्मिक और सांसारिक काम होते हैं। मुझे यह भी मालूम है कि सैकड़ों ईसाई ऐसे हैं, जिनका ऐसा ही विश्वास है। अगर ईसा-मसीहसे हमें अपने सम्पूर्ण जीवनको विश्व-प्रेमके सनातन सिद्धान्तके अनुसार ढालनेकी शिक्षा नहीं मिली, तो उनका जीवन और बलिदान बेकार है।

बारडोली जाते हुए रेलगाड़ीमें, २ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ७-१-१९३९

३१५. तार : च० राजगोपालाचारीको

[४ जनवरी, १९३९ या उसके पश्चात्]^१

श्री रमण मेननके असामयिक निधनपर उनके शोक-संतप्त परिवारको कृपया मेरी ओरसे हार्दिक संवेदना प्रकट करें। सेठ जमनालाल बजाज भी अपनी संवेदना प्रकट करते हैं।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ६-१-१९३९

३१६. तार : कृष्णस्वामीको^२

५ जनवरी, १९३९

तार पुनर्प्रेषित। मेरी रायमें ऐसे उम्मीदवार अयोग्य, लेकिन आपको प्रान्तीय कमेटीसे अधिकृत निर्णय प्राप्त करना चाहिए।

गांधी

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल।

१. रमण मेननका देहान्त ३ जनवरीको हुआ था। जमनालाल बजाज बारडोलीमें, जहाँ गांधीजी उस समय थे, ४ जनवरीको आये थे।

२. कृष्णस्वामीने तार द्वारा पूछा था कि क्या अप्रमाणित खादीके उत्पादक और बुनकर त्रिपुरा कांग्रेस अधिवेशनके लिए प्रतिनिधियोंके चुनावमें खड़े हो सकते हैं।

३१७. पत्र : शुएब कुरेशीको

बारडोली

५ जनवरी, १९३९

प्रिय शुएब,

जाकिर हुसेन चार-पाँच दिन मेरे साथ रहे। उनसे बातचीतके दौरान मुझे पता चला कि भोपालसे जामिया मिलियाको जो सहायता मिलती थी वह बन्द कर दी गई है। क्या पैसेकी तंगीके सिवा सहायता बन्द करनेका कोई और कारण है? अगर नहीं, तो मैं चाहूँगा कि जामियाकी खातिर तुम कुछ छँटनी करनेकी बातपर विचार करो। जामिया एक ऐसी संस्था लगती है जिसकी जरूरत है। ऐसा लगता है कि यह एकमात्र ऐसी मुस्लिम संस्था है जिसके कार्यकर्ता आत्म-त्यागी हैं और पक्के मुसलमान होनेके साथ ही पक्के राष्ट्रवादी भी हैं।

मेरे मनपर जो बोझ रखा हुआ था, उसे कहकर उतार देनेके बाद अब मैं मामलेको तुम्हारे हाथोंमें सौंपता हूँ।

आशा है, गुलनार और बच्ची ठीक-ठाक हैं।

तुम सबको प्यार सहित,

बापू

जनाब शुएब कुरेशी साहब
भोपाल

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल

३१८. पत्र : रणछोड़लाल पटवारीको

बारडोली

६ जनवरी, १९३९

आदरणीय भाई,

आपका पत्र मिला। आप जो लिखते हैं, बिल्कुल सच है। सच्ची परीक्षा तो अब आगे होनी है।^१ सरदारको आपका पत्र दिखा दिया है। वे अभी बम्बई रवाना हो गये। कहते गये कि आपको जो भय है, वह निराधार है।

१. यहाँ संकेत राजकोट सत्याग्रहकी ओर है; देखिए “पत्र : रणछोड़लाल पटवारीको”, पृ० १८०-१।

मेरा अहमदाबाद जाना तो कार्यक्रममें नहीं है।

मोहनदासके साष्टांग दण्डवत

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१२३) से। सी० डब्ल्यू० २७८९ से भी;
सौजन्य : छगनलाल गांधी।

३१९. तार : पट्टम् ताणु पिल्लैको

बारडोली

७ जनवरी, १९३९

अध्यक्ष, राज्य कांग्रेस

त्रिवेन्द्रम्

प्रसन्नता है कि प्रदर्शन रद्द कर दिये गये और मद्यनिषेध कार्य आरम्भ कर दिया गया है। मुकदमे वापस ले लिये जानेका हर्ष है।^१

गांधी

मूल अंग्रेजीसे : पट्टम् ताणु पिल्लै पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

३२०. तार : जी० रामचन्द्रनको

[७ जनवरी, १९३९]^२

तुमने कुछ क्यों नहीं लिखा। प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल।

१. यह कार्यकारी अध्यक्ष आर० शंकर के ३ जनवरी, १९३९ के तारके जवाबमें था। अपने तारमें आर० शंकरने गांधीजीको सूचित किया था कि मद्य-निषेध आन्दोलन शुरू किया जा चुका है।

२. यह तार उसी पृष्ठ पर लिखा गया था जिसपर पट्टम् ताणु पिल्लैके नाम तारका मसविदा लिखा गया था। देखिए पिछला शीर्षक।

३२१. तार : घनश्यामदास बिड़लाको'

७ जनवरी, १९३९

जयपुर रियासतको लिखे जमनालालजीके पत्रमें आपके १२ अक्टूबरके तारका उल्लेख है, जिसमें कहा गया है कि सीकरके बाकी कैदी १३ तारीखको छोड़ दिये जायेंगे। इसमें आपके नामका उल्लेख नहीं है। लेकिन चुनौती दी जाये तो आपका नाम प्रगट करनेकी जरूरत पड़ सकती है। क्या आपको कोई आपत्ति है? बारडोलीके पते पर तार कीजिए।

[अंग्रेजीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २०९

३२२. जमनालाल बजाजके लिए समाचारपत्रोंको दिये जानेवाले वक्तव्यका मसबिदा^१

बारडोली

७ जनवरी, १९३९

जयपुरकी रियासतमें—जो मेरा जन्मस्थान है और पूर्वजोंसे चला आ रहा घर है—अपने प्रवेशपर प्रतिबन्ध लगाये जानेके बारेमें मैं क्या करने जा रहा हूँ, इसके बारेमें कई अफवाहें फैल रही हैं। यह प्रतिबन्ध मुझे तथा मेरे मित्रोंको भी आश्चर्यमें डालनेवाला है। जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें मैंने अपना सारा जीवन शान्तिके ही कार्योंमें लगाया है। कांग्रेसजनकोंके लिए अहिंसाका और चाहे जो अर्थ हो परन्तु मेरा तो यह धर्म है और मैं यथाशक्ति इसका पालन करनेकी कोशिश करता हूँ। मैं रियासतोंका दुश्मन नहीं हूँ। मेरा उनके प्रति सदा मित्रताका रुख रहा है। मेरा सदा यह विश्वास रहा है कि भारतमें जो नई जागृति आई है उसके प्रति रियासतोंकी प्रतिक्रिया अनुकूल हो सकती है। इस प्रतिबन्धके पीछे क्या रहस्य छिपा है यह जाननेके लिए मैं अब पत्र-व्यवहार कर रहा हूँ। आदेशके शब्द किसी भी अर्थमें मुझपर लागू नहीं होते। मैं जल्दबाजीमें कोई काम नहीं करना चाहता। जयपुर रियासतके अधिकारियों को उलझनमें डालनेका भी मेरी कोई मंशा नहीं है। परन्तु प्रतिबन्ध हटवानेकी

१. यह तार पिलानी भेजा गया था।

२. मसबिदा गांधीजी की लिखावटमें था।

दिशामें किया गया प्रत्येक सम्मानजनक प्रयास यदि असफल हो जाता है तो जनता को भरोसा होना चाहिए कि मैं अपने कर्तव्यका पालन करूँगा।

मेरा तात्कालिक उद्देश्य अभी तो जयपुर रियासतमें दुर्भिक्ष-पीड़ितोंको मण्डल^१ की मार्फत राहत पहुँचाना है। मुझे आशा है कि प्रतिबन्ध भावी दान-कर्त्ताओंके आड़े नहीं आयेगा। मैं सभी सम्भावनाओंको ध्यानमें रखते हुए प्रबन्ध कर रहा हूँ। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मेरे जयपुर जानेका मुख्य कारण दुर्भिक्षसे राहत दिलानेके उपाय करना था।

मेरी चिन्ताका दूसरा विषय इस समय यह है कि हालके संकटके दौरान सीकरमें जिन नौ व्यक्तियोंको कैदमें डाल दिया गया है उन्हें रिहा करानेकी कोशिश की जाये। उनमें से एकको सजा दी जा चुकी है और बाकी आठपर अभी मुकदमा चलाया जायेगा। मेरे पास ऐसी आशा करनेका खासा आधार था कि उन्हें आम माफी दे दी जायेगी। मैं उन्हें मात्र यही आश्वासन दे सकता हूँ कि जब तक मैं स्वतन्त्र हूँ, मैं उन्हें रिहा करवानेमें कोई कसर उठा नहीं रखूँगा।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०७७) से।

३२३. जमनालाल बजाजके लिए पत्रका मसविदा^२

कैम्प बारडोली

७ जनवरी, १९३९

अध्यक्ष

प्रशासन परिषद् (कौंसिल ऑफ स्टेट), जयपुर

श्रीमान्,

गत १६ दिसम्बरका संलग्न आदेश मुझे उसी मासकी २८ तारीखको सवाई माधोपुरमें जयपुर जाते समय मिला था।

इस आदेशसे मुझे दुःख भी हुआ और आश्चर्य भी। श्री एफ० एस० यंग, आई० जी० पी०, से मेरी स्टेशनपर एक घंटेसे भी अधिक बातचीत हुई, जिसमें वे मुझे आदेशका उल्लंघन न करनेकी बात समझाते-बुझाते रहे। वैसे मुझे यह सब समझाने-बुझानेकी जरूरत नहीं थी, क्योंकि जब मैं इस तरहका कोई आदेश मिलनेकी सम्भावना पर गांधीजी के साथ विचार-विमर्श कर रहा था तो उन्होंने मुझे यह सलाह दी थी कि मैं इस आदेशको तुरन्त न तोड़ूँ, बल्कि कोई अन्तिम कदम उठानेसे पहले सारी परिस्थितिपर उनके साथ सलाह-मशविरा कर लूँ।

१. जयपुर राज्य प्रजा-मण्डल

२. यह मसविदा गांधीजी द्वारा तैयार किया गया था और दो बार संशोधित किया गया था। गांधीजी के हाथका लिखा पहला मसविदा जी० एन० ३०७६ में उपलब्ध है।

इसलिए मैंने अपनी यात्रा स्थगित कर दी और मैं दिल्ली चल दिया। मित्रों, साथी कार्यकर्ताओं और अंतमें गांधीजीसे विचार-विमर्श करनेके बाद, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि यदि यह आदेश अगली १ फरवरीसे पहले बिना शर्त रद्द न किया जाये तो उस दिन मुझे इसका उल्लंघन करना चाहिए।

अधिकारियोंको यह मालूम है कि गत १ नवम्बरको मैंने जयपुर रियासत प्रजामण्डलकी ओरसे, जिसका कि मैं प्रधान हूँ, एक सार्वजनिक अपील जारी की थी। उसमें यह कहा गया था कि क्योंकि शेखावाटी और अन्य इलाके अकालग्रस्त हैं, इसलिए मण्डलको और सब कार्य छोड़कर सहायता-कार्यकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेनी चाहिए। वे यह भी जानते थे कि एक समाचारपत्रमें यह खबर छपनेपर कि जयपुरमें सत्याग्रह शुरू होनेवाला है, मैंने उसका साफ-साफ खण्डन किया था।

मुझे पता नहीं कि १६ दिसम्बरको या उससे पहले ऐसा क्या हुआ जिसके कारण जयपुर रियासतमें मेरे प्रवेशका पूर्वानुमान कर यह आदेश पारित किया गया। मैंने देखा कि उसी दिन रियासतके गजटमें इस आशयकी एक अधिसूचना प्रकाशित हुई थी कि “एक आपत्कालीन स्थिति पैदा हो गई है जिसमें लोगोंको गैरकानूनी रूपसे कई देनदारियोंकी अदायगी न करनेके लिए भड़काया जा सकता है, और उसके खिलाफ कदम उठाना आवश्यक है।” इस चीजको देखते हुए कि मेरे प्रवेशके खिलाफ आदेश उसी दिन पारित किया गया, यह मानना युक्तियुक्त होगा कि अधिकारियोंकी रायमें मेरा सम्बन्ध कर-बंदीके आशंकित अवैध आन्दोलनसे है। यदि अधिकारियोंको यह भय था कि मैं इस तरहके आन्दोलनका नेतृत्व करनेवाला हूँ, तो उन्हें कम-से-कम मुझसे यह मालूम करना चाहिए था कि उनके पास जो सूचना है वह सही भी है या नहीं। वे मुझे इतना तो जानते ही थे कि यह विश्वास कर सकते कि मैं सचाईको उनसे छिपाऊँगा नहीं।

वस्तुतः, अधिकारियोंको यह मालूम है कि सीकरके हालके संकटमें मैंने, लोगोंके प्रति अपने दायित्वको निभाते हुए, उनकी भी सहायता की थी। वे यह जानते हैं कि मेरा प्रभाव पूर्णतया शांतिके लिए ही प्रयुक्त किया गया था।

इसीलिए उस आदेशसे जब मैंने यह जाना कि “आपकी (मेरी) उपस्थिति और गतिविधियोंसे शांति-भंग होनेकी संभावना है” और यह कि, इस कारण, “सार्वजनिक हितकी दृष्टिसे तथा लोगोंमें अमन कायम रखनेके लिए जयपुर-रियासतमें आपके (मेरे) प्रवेशपर प्रतिबन्ध लगाना आवश्यक समझा गया है”, तो मुझे कितना आश्चर्य हुआ होगा, इसकी आप स्वयं अच्छी तरह कल्पना कर सकते हैं। मेरे लिए उसका ठीक तरह वर्णन करना सम्भव नहीं है। मैं निस्संकोच कह सकता हूँ कि यह अधिसूचना मेरे पूरे सार्वजनिक जीवनको झूठा ठहराती है।

इस आदेशमें मुझे वर्धाका निवासी बताया गया है। मेरे खयालसे, ऐसा शायद गलतीसे ही लिखा गया है। क्योंकि जयपुर-रियासतके लिए तो निश्चय ही मैं जयपुरका निवासी हूँ। वर्धा और दूसरे स्थानोंमें मेरा कारोबार है इसका यह अर्थ नहीं हो सकता कि मैं जयपुरका निवासी नहीं रह गया।

रियासतमें हमारी स्थिति क्या है, यह आज मेरे और मेरे सहकर्मियोंके लिए एक विचारणीय गम्भीर प्रश्न बन गया है।

प्रजामण्डल जुलाई १९३१ में शुरू किया गया था और नवम्बर १९३६ में उसका पुनर्गठन हुआ था। उसका एक संविधान है। जयपुर रियासतके बहुत-से प्रतिष्ठित व्यक्ति उसके सदस्य हैं। उसने अपनी गतिविधियाँ अभी तक जयपुरके कानूनकी सीमाओंके अन्दर ही रखी हैं और सभाओं व जुलूसोंपर लगाये गये कण्टप्रद तथा अनुदार प्रतिबन्धोंका पालन किया है।

परन्तु मुझे दिये गये इस आदेशसे मण्डलकी आँखें खुल गई हैं। वह अब इस निष्कर्षपर पहुँचा है कि यदि नागरिक स्वतन्त्रता नहीं मिलती है और ऐसी सभाओं, जुलूसों और संस्थाओंके संगठनकी यदि बेरोकटोक अनुमति नहीं मिलती है जिनमें अहिंसाका कड़ाईसे पालन होता हो, तो उसे अवश्य सत्याग्रह का सहारा लेना चाहिए।

मैं यह बता दूँ कि हमारी गतिविधिका क्षेत्र क्या है। हमारा लक्ष्य बहुत स्पष्ट है। हम महाराजाकी संरक्षतामें उत्तरदायी सरकार चाहते हैं। इसलिए हमें लोगोंको यह बताना होगा कि उत्तरदायी सरकार क्या होती है और उसके योग्य बननेके लिए उन्हें क्या करना चाहिए। परन्तु हमारा इरादा इसके लिए सत्याग्रह करनेका नहीं है। लेकिन हमें जनताके सभी वर्गोंकी शिकायतें दूर करानेकी कोशिश करनी है; हमें रचनात्मक और शिक्षात्मक गतिविधियाँ चलानी हैं। फिर भी मण्डलकी इच्छा इस समय करबन्दीका प्रचार करनेकी कतई नहीं है। यदि हमें अपनी गति-विधियोंमें, जो मूल रूपसे शांतिपूर्ण और जीवनका निर्माण करनेवाली हैं, रियासतका सहयोग मिलता है, और स्वीकृत शिकायतोंको दूर करानेमें सहयोग मिलता है, तो करबन्दीका सहारा लेनेकी कभी जरूरत नहीं पड़ेगी। पर यदि दुर्भाग्यसे वह जरूरी हो गया, तो मण्डल रियासतके अधिकारियोंको वैसा करनेके अपने इरादेकी पर्याप्त सूचना देगा। क्योंकि मण्डल खुले, सम्मानित और पूर्णतया अहिंसात्मक तरीकोंके पक्षमें है। इसलिए मेरा निवेदन यह है कि मण्डलको अपनी पूर्णतया वैध और अहिंसात्मक गतिविधियाँ बेरोकटोक चलानेकी पूरी स्वतन्त्रता होनी चाहिए। परन्तु यदि यह युक्तियुक्त प्रार्थना इस महीनेकी ३१ तारीखसे पहले स्वीकार नहीं की गई तो मैं, न चाहते हुए भी, इस आदेशके बावजूद रियासतमें घुसनेका प्रयास करनेको बाध्य होऊँगा और मण्डल अपनेको ऐसे कदम उठानेके लिए स्वतन्त्र मानेगा जो उसे मानव-गरिमाके अनुरूप अपनी अभिव्यक्तिके लिए आवश्यक लगते हैं।

मेरी ऐसी धारणा है कि इससे कम कुछ करना सामाजिक आत्महत्या होगा! मुझे विश्वास है कि रियासतकी परिषद् मेरी और मण्डलकी वफ़ादारीपर असह्य दबाव नहीं डालेगी।

भवदीय

[अंग्रेजीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३९३-६ से। जी० एन० ३०७६ से भी।

३२४. पत्र : एफ० मेरी बारको

बारडोली,
७ जनवरी, १९३९

चि० मेरी,

बेशक, तुम्हारे पत्र कारोबारी पत्र हैं, पर यदि कारोबार भगवानके प्राणियोंकी सेवा ही हो, तो कारोबारी पत्र भी प्रेमपत्र बन जाते हैं। इसलिए तुम्हें अपने पत्रोंके कारोबारी होनेपर क्षमायाचनाकी कोई आवश्यकता नहीं है।

तुमने जिस कार्यका उल्लेख किया है, उसके लिए उपयुक्त कोई महिला मेरे ध्यानमें नहीं आ रही है।

म्यूरियल १८ व्यक्तियोंका एक दल लायी थी। मैंने उस दलको एक लघु विश्व की संज्ञा दी।^१

यद्यपि यह एक औपचारिकता है, फिर भी तुम्हारी तरह मैं भी इस वर्षके लिए तुम्हें शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

तुम्हें और मीराको प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०७४) से। सी० डब्ल्यू० ३४०४ से भी;
सौजन्य : एफ० मेरी बार।

३२५. पत्र : बलवन्तसिंहको

बारडोली
७ जनवरी, १९३९

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा कैसे चल रहा है? क्या करते हो? चित्त प्रसन्न है? मुझे सब लिखो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९१६) से।

१. देखिए पादटिप्पणी ३, पृ० २८८।

३२६. पत्र : प्रभुदयाल विद्यार्थीको

बारडोली

७ जनवरी, १९३९

चि० प्रभुदयाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे पैर आशा है अब तक अच्छे हो गये होंगे।

बस्तीके बारेमें तुमने जो लिखा है, उस विषयमें वहाँ खत भेजा था। पुरी तहकीकात हो गई है। वहाँसे कुछ जवाब भी आ गया था। जब हम वापिस लौटेंगे तो पूछ लेना। यदि खत कहीं पड़ा होगा तो तुम्हें बता दूंगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ११६८८)से।

३२७. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

७ जनवरी, १९३९

उड़ीसाकी रियासतोंके पोलिटिकल एजेंट मेजर आर० एल० बजलजेटकी हत्या अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है और इससे हमें बड़ा सदमा पहुँचा है। मैं शोकाकुल परिवारको अपनी सहानुभूति भेजता हूँ। मुझे आशा है कि मृतकके साथ जो सूवेदार गया था, उसके घाव अच्छे हो जायेंगे। मैं प्रजा-मण्डलसे यह आशा करता हूँ कि वह कड़ाईके साथ इस घटनाकी पूरी छानबीन करेगा और हत्याके कारणका पता लगा लेगा। इससे सभी कार्यकर्ताओंको चेतावनी मिल जानी चाहिए कि वे सामूहिक आन्दोलन चलानेमें बहुत ज्यादा सावधानी बरतें। उन्हें यह जान लेना चाहिए कि अहिंसासे रत्तीभर भी डगमगानेसे स्वाधीनता आन्दोलनको, चाहे वह रियासतोंमें चल रहा हो या सारे भारतमें, हानि ही होगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १४-१-१९३९

१. उड़ीसाकी रामपुर रियासतमें ५-१-१९३९ का एक भीड़के द्वारा बजलजेटकी हत्या कर दी गई थी।

३१५

३२८. अप्रमाणित खादी-विक्रेता^१

तमिलनाडुके चरखा-संघके मन्त्रीने हमारे पास एक शिकायत भेजी है, जिसके बारेमें उन्हें चरखा-संघकी केरल-शाखाने लिखा है। शिकायतमें इस बातका निश्चित प्रमाण है कि तिरुपुरके कुछ व्यापारी “शुद्ध खादी” के नामसे कपड़ा बेच रहे हैं, और चरखा-संघके नामका भी दुरुपयोग कर रहे हैं। संघके मन्त्रीने हमारे पास दो लेबल भेजे हैं, जिन्हें ये विक्रेता इस तरह बेचे जानेवाले कपड़ेपर चिपका देते हैं। इनपर ‘एस० मरियासुसाई चेट्टियार, खदर स्टोर, तिरुपुर’ और ‘एम० के० चिदम्बरम् चेट्टियार एण्ड ब्रदर ए० पालानिअप्पा मुदालियर, खदर-स्टोर तिरुपुर’ और कपड़ेके विवरणके तौरपर ‘अ० भा० चरखा-संघ द्वारा प्रमाणित शुद्ध खादी’ छपा हुआ है।

एस० मरियासुसाई चेट्टियारको चरखा-संघने खादीका कारोबार करनेका प्रमाणपत्र कभी नहीं दिया, और ए० पालानिअप्पा मुदालियरका प्रमाणपत्र लगभग चार साल हुए रद्द कर दिया गया था। ऐसी धोखेवाजीके लिए साधारण भारतीय दण्ड-विधानके तहत निश्चय ही सजा दी जा सकती है। बहरहाल, इन व्यापारियोंके लिए तथा जनताके लिए यह ज्यादा अच्छा होगा कि खादीकी माँगसे इस तरह अनुचित फायदा न उठाया जाये और जिन व्यापारियोंको प्रमाणपत्र चरखासंघकी ओरसे नहीं मिला है, वे ऐसे कारोबारसे अपनेको अलग ही रखें या कम-से-कम छलपूर्वक चरखा संघके नामका दुरुपयोग तो न करें।

बारडोली, ८ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १४-१-१९३९

३२९. सरदार पृथ्वीसिंह^२

सरदार पृथ्वीसिंहने मुझे पत्र लिखकर बताया है कि वे स्वस्थ हैं और उनकी आवश्यकताएँ सरकार और मित्र, जैसा भी मौका हो, पूरी कर रहे हैं। मेरा उनसे बराबर पत्र-व्यवहार होता रहता है। वे बताते हैं कि बहुत-से मित्र उनसे मिलनेकी इच्छा रखते हैं। वे चाहते हैं कि मैं उन सबको धन्यवाद दूँ, पर साथ ही यह भी बता दूँ कि उन्हें उनसे मिलनेके लिए इतनी दूर रावलपिण्डी जानेका कष्ट उठानेकी जरूरत नहीं है। और यदि वे ऐसा करना चाहें, तो भी [मुलाकातके लिए] तुरन्त

१ और २. ये “टिप्पणियाँ” शीर्षकके अन्तर्गत छपे थे।

कोई दिन निश्चित न होनेपर निराश न हों। मुलाकातके दिन आम तौरपर काफी मुलाकाती उनसे मिलने आते हैं। वे चाहते हैं कि जो भी मित्र उनसे मिलनेकी इच्छा रखते हैं, वे सब मुझसे पत्रव्यवहार करें ताकि मैं उनका मार्गदर्शन कर सकूँ। उनकी यह इच्छा मैं भावी मुलाकातियों तक पहुँचा रहा हूँ और प्यारेलाल, या महादेवको जैसे ही उसको पूरा काम करनेकी अनुमति मिलेगी, खुशीसे इसका प्रबन्ध करेंगे। परन्तु ऐसा केवल कुछ व्यक्तियोंके लिए ही हो सकेगा, क्योंकि अधिकारियोंसे पत्र-व्यवहार किये बिना कुछ सम्भव नहीं होगा। और इस तरह जो व्यक्ति आज मेरी अस्वस्थतामें मेरी सहायता कर रहे हैं, उनपर कामका इतना बोझ पड़ जायेगा कि वे शायद ही वहन कर सकें।

बारडोली, ९ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १४-१-१९३९

३३०. त्रावणकोर

त्रावणकोर से एक ईसाई मित्र लिखते हैं :

त्रावणकोरके ईसाई क्षेत्रोंमें आपके बारेमें यह भारी गलतफहमी है कि आप ईसाइयोंके हितोंके पूर्णतया विरोधी हैं, और यह तबसे पैदा हुई है जबसे आपने महाराजाके नाम लिखे अभ्यावेदन वापस लेनेपर जोर देना शुरू किया है। जनमतका रुझान, जैसाकि बहुत-से मित्रोंने मेरे आगे व्यक्त किया है, कुछ इस प्रकार है :

त्रावणकोरकी महारानी और सर सी० पी० रामस्वामी अय्यरके प्रभावसे, आपके मनमें यह गलत धारणा बैठ गई है कि त्रावणकोरका वर्तमान आन्दोलन त्रावणकोरके हिन्दुओंपर आधिपत्य जमानेके लिए ईसाइयोंके एक अभियानके सिवा और कुछ नहीं है। त्रावणकोर-आन्दोलनके विरुद्ध आप आज जो-कुछ कर रहे हैं, उसके पीछे आपके मनकी यही धारणा काम कर रही है। इसके अतिरिक्त, सर सी० पी० रामस्वामी अय्यरने मन्दिर-प्रवेशकी सुप्रसिद्ध घोषणा कर पूरे हिन्दू-समाजकी महान सेवा की है, इसलिए उनकी त्रुटियाँ चाहे कौसी भी हों, आप उन्हें हर तरहके लांछन और व्यक्तिगत आरोपसे बचाना चाहते हैं। इसी उद्देश्यको दृष्टिमें रखते हुए आप राज्य-कांग्रेस पर अपना अभ्यावेदन वापस लेनेके लिए इतना दबाव डाल रहे हैं। अन्यथा, ऐसा कोई कारण नहीं है जिससे आप राजकोटके प्रति एक तरहकी और त्रावणकोरके प्रति दूसरी तरहकी नीति अपनार्यें। राजकोटके मामलेमें वल्लभभाई पटेल और बहुत-से अन्य लोगोंने दीवानके खिलाफ कितने ही व्यक्तिगत आरोप लगाये थे, और

हाल ही में तो वल्लभभाईने वर्तमान दीवानको हटानेके लिए एक और लड़ाई छेड़ने तककी धमकी दी थी। आप इस सबका समर्थन करते हैं। लेकिन त्रावणकोरके मामलेमें यद्यपि इतनी दूर होनेके कारण आपके लिए यहाँकी परिस्थितिको समझना पूर्णतया असम्भव है, फिर भी आप अभ्यावेदनके प्रश्नपर अपनी शर्तें रख रहे हैं और सरकारके सभी न्यायविरोधी कार्योंपर चुप्पी साधे हुए हैं। अभ्यावेदनको वापस लेनेके बाद भी नेता अभी तक जेलमें हैं, बड़ी संख्यामें बराबर गिरफ्तारियाँ हो रही हैं, और यद्यपि आन्दोलन एक तरहसे मर चुका है फिर भी रियासत-भरमें लोगोंको आतंकित किया जा रहा है। आप चुपचाप यह सब देख रहे हैं और एक भी शब्द नहीं बोल रहे हैं। त्रावणकोर-सरकारके प्रति आपके पक्षपातका यह एक और प्रमाण है।

इसी तरहके, पर और ज्यादा तीखे शब्दोंवाले दूसरे भी कई पत्र मुझे मिले हैं। इन आरोपोंका यदि मैं उत्तर दूँ तो वातावरण थोड़ा साफ हो सकता है। मेरा अंतःकरण बिल्कुल साफ है। मेरा कहना यह है कि जितनी दिलचस्पी मैंने त्रावणकोर के आन्दोलनमें ली है उतनी किसी और रियासतके आन्दोलनमें नहीं ली है। और इसका सीधा-सादा कारण यह है कि साबरमती आश्रमके श्री जी० रामचन्द्रनने, जिनकी बुद्धिमत्ता, हिम्मत, लगन और अहिंसापर मेरा बहुत विश्वास है, मुझे ऐसा करनेके लिए बड़ा आग्रह किया था। मेरी स्वीकृति मिलनेके बाद उन्होंने अपनेको संघर्षमें झोंक दिया। उन्होंने मुझे बताया था कि सभी वर्ग संघर्ष चाहते हैं। उनके कहनेपर ही मैंने राजकुमारी अमृत कौरसे त्रावणकोर जाने और जो-कुछ बातचीतसे सम्भव हो, वह सब करनेकी प्रार्थना की थी।

उत्तरदायी सरकारके लिए चल रहे संघर्ष को दीवान के खिलाफ आरोपोंसे जोड़ा जाये, मैं इस बातके विरुद्ध रहा हूँ। लेकिन, साथ ही, मैं इसपर भी जोर देता आया हूँ कि अगर नेताओं को मेरी सलाह माकूल न लगे तो उन्हें आरोप वापस लेनेकी जरूरत नहीं है, क्योंकि जन-साधारणने यदि विरोध किया तो उसका वार तो आखिर उन्हींको झेलना पड़ेगा। और वे यदि अपनी बात दृढ़ विश्वासके साथ नहीं रख सके, तो ऐसा नहीं कर सकेंगे। मैंने उनसे यह भी कहा था कि यदि वे बर्खास्तगीको ही एकमात्र सवाल बना लें तो इन आरोपोंपर डटे रहना और आगेकी कार्रवाई करना न्यायोचित होगा। परन्तु यदि उनका जोर उत्तरदायी सरकार पर है, तो इन आरोपोंको लेकर कोई कार्रवाई करनेका कोई अर्थ नहीं है। इससे देशका ध्यान बँटेगा और यदि अभियोग चला तो उन्हें अपना समय और साधन आरोपोंको सिद्ध करनेमें ही लगाने होंगे। दूसरी ओर, यदि वे उत्तरदायी सरकार प्राप्त कर लेते हैं, जो कि एकता तथा अहिंसा और सत्यमें दृढ़ आस्था होनेसे वे अवश्य प्राप्त कर लेंगे, तो उनका वर्तमान और भावी सभी दीवानोंपर नियन्त्रण कायम हो जायेगा। अतः आरोप इसी-लिए वापस लिये गये कि आरोप वापस लेनेकी सलाह नेताओंको पूरी तरह जँच गई थी। अभी-अभी मुझे कार्यवाहक प्रधानका जो व्यक्तिव्य मिला है, उससे भी मुझे यही पता चलता है।

राजकोटके साथ इस मानलेकी तुलना अनभिज्ञताकी द्योतक है। वहाँ मैंने आदोलनका कभी भी मार्गदर्शन नहीं किया। मेरे मार्गदर्शनका अवसर ही नहीं था। सरदारको उसकी जरूरत नहीं थी। यदि उन्हें जरूरत होती तो वह उनके लिए सदा उपस्थित था। दीवानकी बर्खास्तगीका वहाँ कोई सवाल नहीं था। यदि लड़ाई उत्तरदायी सरकारके लिए होती, तो सरदार आरोपोंके साथ कोई भी सरोकार रखनेसे दृढ़तापूर्वक इनकार कर देते। यह ठीक है कि उन्होंने संघर्षका विरोध करनेवाले सभी तरहके लोगोंकी भर्त्सना की थी, पर वह किसी अधिकारीकी बर्खास्तगीको संघर्षका आधार बनानेसे बिल्कुल जुदा चीज थी।

त्रावणकोरके संघर्षमें मेरे मार्गदर्शनकी कभी कमी नहीं रही। परन्तु आलोचकोंको यह समझ लेना चाहिए कि मैं इस संघर्षका संचालन नहीं कर रहा हूँ। मुझसे जब सलाह माँगी जाती है तो मैं दे देता हूँ। मेरी सारी सलाह और मेरे सारे कामको सर्वसाधारणके आगे रखनेकी न तो जरूरत है और न वैसा सम्भव ही है। मेरा ज्यादातर काम पढ़ेंके पीछे है। वह गुप्त नहीं है। मेरे पास छिपानेको कुछ नहीं है। परन्तु बहुतसे काम, अपने ध्येयके हितको दृष्टिमें रखते हुए, चुपचाप करने होते हैं, गुप्त रूपसे भी (इन शब्दोंके सही अर्थोंमें) करने होते हैं।

अंतमें मेरे आलोचकोंको यह समझ लेना चाहिए कि वर्तमान दीवान अपने पदपर कायम रहें इसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है। दीवानके साथ यदि मेरा पत्र-व्यवहार रहा है तो वह केवल ध्येयके लिए रहा है, जिसमें न्यायके लिए वकालत की गई है। जहाँ तक महारानीका सवाल है, पूरे संघर्षमें उनके साथ मेरा कोई पत्र-व्यवहार नहीं हुआ है। मेरा यह कहना है कि मैं पक्षपातसे अलग हूँ और सदा रहा हूँ। ईसाइयों और गैर-ईसाइयोंमें, राजनैतिक दृष्टिसे, मैं कोई भेद नहीं मानता। धर्मकी दृष्टिसे जरूर मानता हूँ, और उसमें भी मैं ईसाई धर्म और अन्य धर्मोंका उतना ही आदर करता हूँ जितना कि अपने धर्मका।

बारडोली, ९ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १४-१-१९३९

३३१. जमनालालजी पर प्रतिबन्ध

जमनालालजी पर जो प्रतिबन्ध लगाया गया है, वह बड़ा अजीब है। उन्हें मिला हुक्म इस प्रकार है :

वर्धा (मध्यप्रान्त) के सेठ जमनालाल बजाज,

चूँकि जयपुर सरकारको यह मालूम हुआ है कि जयपुर-राज्यमें आपकी मौजूदगी और हलचलोंसे अमनमें खलल पड़नेकी सम्भावना है, लिहाजा सार्व-जनिक हित और सार्वजनिक शान्ति बनाये रखनेके लिए जयपुर-राज्यके अन्दर आपके प्रवेशकी मनाही करना आवश्यक मालूम पड़ता है।

इसलिए आपको चाहिए कि जब तक कोई और हुक्म न मिले, आप जयपुर-राज्यमें न आयें।

बहुक्म, प्रशासन परिषद्
(ह०) एम० अलताफ ए० खेरी
सचिव, प्रशासन परिषद्, जयपुर

दरअसल जमनालालजी ऐसे आदमी हैं जिनकी उपस्थितिसे कहीं कोई खतरा होनेकी संभावना नहीं हो सकती। लोग हमेशा उन्हें शान्ति करानेवालेके रूपमें ही जानते रहे हैं। सरकारी अधिकारियोंके साथ उनके सम्बन्ध बहुत ही अच्छे रहे हैं। उनके गुणोंकी कद्र भी इतनी हुई है कि १९१६ या उसके आसपास उन्हें रायबहादुरका खिताब दिया गया, जिसे असहयोगके दिनोंमें उन्होंने छोड़ दिया। व्यापारकी दुनियामें वे एक बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति हैं और बहुत बड़े व्यापारी होनेके अलावा, बैंकर भी हैं। यों तो वे बड़े उत्साही कांग्रेसी हैं, मगर 'आन्दोलनकारी' के रूपमें वे कभी प्रसिद्ध नहीं रहे। हाँ, रचनात्मक कार्य और समाज-सुधारमें वे सबसे आगे हैं। यह जरूर सच है कि अपनी अन्तरात्माके अनुसार चलनेका उनमें साहस है और उसके लिए वे कई बार अपने सर्वस्वकी भी बाजी लगा चुके हैं। जेलसे वे कभी नहीं डरते। जमनालालजी पर तामील किये गये हुक्ममें जो-कुछ कहा गया है, स्पष्टतः वह गलत है और उनपर बिलकुल लागू नहीं होता। शायद यह कहा जाये कि हुक्मकी शब्दावली तो सिर्फ औपचारिकताके लिए है, क्योंकि बिना उसके कानूनन उनपर ऐसा हुक्म तामील नहीं किया जा सकता। अगर ऐसा है, तो इससे निश्चित रूपसे ही सिद्ध होता है कि यह कानून जमनालालजी-जैसे लोगोंपर लागू करनेकी मन्शासे हरगिज नहीं बना था। जमनालालजी-जैसे व्यक्तिको जयपुर या देशके किसी अन्य भागमें न आने देनेके लिए इसका प्रयोग तो कानूनका बिलकुल स्पष्ट दुरुपयोग है।

और इसमें भी मजेदार बात वह है कि जमनालालजीको 'वर्धा निवासी' कहा गया है। वे दरअसल तो जयपुर राज्यके ही निवासी हैं, वहाँ उनकी जायदाद है और वहाँ उनके अनेक सगे-सम्बन्धी रहते हैं।

ऐसे हुक्मके आगे मेरी ही सलाहपर जमनालालजीने सिर झुकाया है। ऐसी अफवाह थी कि अगर उन्होंने जयपुरमें दाखिल होनेकी कोशिश की, तो शायद उन्हें गिरफ्तार कर लिया जायेगा। इसलिए उन्होंने मुझसे सलाह ली कि अगर इस तरहका हुक्म उनपर तामील हो तो उनका क्या कर्तव्य होगा। जयपुरके उनके साथी कार्यकर्ताओंका यह मत था कि ऐसा कोई आदेश हो तो वे वहीं फौरन उसे भंग करें। लेकिन मेरा मत इससे भिन्न था, और अपनी रायपर पछतानेकी मुझे कोई वजह मालूम नहीं पड़ती। मैंने अपने मनमें सोचा कि ऐसा हुक्म देना तो पागलपन होगा और जो पागल हैं उनकी बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए, बल्कि उन्हें शान्त होनेका मौका देना चाहिए। मुझे मालूम हुआ है कि गिरफ्तारीके खयालसे बड़ी-बड़ी तैयारियाँ की गई थीं। अतः जो लोग गिरफ्तार करनेके लिए आये थे, उन्हें अपना शिकार न पाकर एक तरहकी निराशा जरूर हुई होगी।

इन्तजार करनेमें और अधिकारियोंको यह समझानेकी कोशिश करनेमें कि उन्होंने जल्दबाजी की है और गलत काम किया है, जमनालालजीका कोई नुकसान नहीं हुआ है। जयपुरकी प्रजा और एक जिम्मेदार आदमी होनेके नाते, शायद यह उनका फर्ज ही था कि वे अधिकारियोंको अपने निश्चयपर फिरसे विचार करनेका मौका दें। फिर भी वे ध्यान न दें और जमनालालजी यह आदेश भंग करनेका निश्चय करें, जैसाकि उन्हें करना ही होगा, तो वह ऐसा और भी ज्यादा नैतिक शक्ति और प्रतिष्ठाके साथ करेंगे। और अहिंसात्मक कार्यमें तो नैतिक शक्ति ही महत्वपूर्ण है।

यह स्मरण रहे कि महाराजा तो अपने मन्त्रियोंके हाथोंकी कठपुतली मात्र है, और वे सब बाहरी आदमी हैं, बल्कि उनमें से कुछ तो अंग्रेज हैं। वहाँकी प्रजा, अथवा वहाँके प्रदेशके बारेमें वे कुछ नहीं जानते। वे तो एक तरहसे उनपर जबर्दस्ती थोपे गये हैं। जयपुरके स्थानीय लोगोंको राजकाजके लिए अयोग्य माना जाता है, हालाँकि विदेशियोंके आनेसे पहले भी, किसी-न-किसी रूपमें, जयपुर राज्यका काम चल ही रहा था। पिछले सप्ताह मुझे बताना पड़ा था कि अपने बहुत संक्षिप्त कार्यकालमें राजकोटमें अंग्रेज दीवानने अपने-आपको कितना अयोग्य सिद्ध किया था। इसमें कोई शक नहीं कि जयपुर परिषद्का, जिसमें बाहरी आदमी ही भरे हुए हैं, कम-से-कम यह कृत्य उसकी गैर-जिम्मेदारी और अयोग्यताका एक दुःखद प्रदर्शन है। एक आदमीका निर्वासन, फिर वह आदमी चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो, नगण्य-सी बात मालूम पड़ सकती है। लेकिन आगेकी घटनाओंसे यह कार्रवाई मूर्खतापूर्ण और महँगी सिद्ध हो सकती है। पाठकोंको शायद यह पता न हो कि जयपुरमें प्रजामण्डल भी है, जो पिछले छः सालसे जमनालालजीकी प्रेरणासे काम कर रहा है। इस समय जमनालालजी ही उसके अध्यक्ष हैं। मण्डल एक शक्तिशाली

संस्था है, जिसके सदस्य जिम्मेदार आदमी हैं, और उसने काफी रचनात्मक कार्य किया है। अगर यह प्रतिबन्ध न उठा, तो मण्डलको भी अपना फर्ज अदा करना पड़ेगा क्योंकि यह प्रतिबन्ध, ऐसा कहा जाता है, मण्डलके रचनात्मक और वैध कार्योंको रोकनेकी पेशबन्दी भी है। अधिकारी ऐसी संस्थाके बढ़ते हुए प्रभावको बर्दाश्त नहीं कर सकते जिसका उद्देश्य महाराजाकी छत्रच्छायामें जयपुरमें उत्तरदायी शासन प्राप्त करना है, फिर उसके साधन चाहे कितने ही खरे क्यों न हों। ऐसा मालूम पड़ता है कि जिन संस्थाओंकी किसी भी रूपमें कोई राजनीतिक आकांक्षा है, उनकी हलचलोंको रोकनेकी क्रूर नीतिकी यह पेशबन्दी है। और अफवाह तो यह भी है कि राजपूतानेकी सभी रियासतों द्वारा ग्रहण की जानेवाली यह एक संयुक्त नीति है। यह नीति सिर्फ जयपुरकी ही हो या अन्य सभी रियासतोंकी भी हो, वह काफी अनिष्टकारी है और जमनालालजी तथा जयपुरकी जनताके लिए अपनी पूरी शक्तके साथ इसका प्रतिरोध करना आवश्यक है। यह जरूर है कि वह प्रतिरोध कांग्रेसके सत्य और अहिंसाके सिद्धान्तके अनुरूप होना चाहिए।

बारडोली, ९ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १४-१-१९३९

३३२. तार : अकबर हैदरीको'

बारडोली

९ जनवरी, १९३९

सर अकबर हैदरी

हैदराबाद, दक्षिण

तारके लिए, जिसमें कुछ रिहाइयोंकी सूचना दी गई है, धन्यवाद।
पत्र अभी नहीं मिला।

गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १००९४) से; सौजन्य : आन्ध्र प्रदेश सरकार।

३३३. पत्र : जमनालाल बजाजको

[९ जनवरी, १९३९]^१

चि० जमनालाल,

घ० का तार मिल गया है।^१ वे राजी हो गये हैं। पत्र राजिस्टर्ड डाकसे भेज दिया गया।^२

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९९९) से।

३३४. औंधका संविधान^३

औंध-राज्यके लिए जो नया संविधान हालमें बनाया गया है उसमें कितनी ही चौंका देनेवाली चीजें हैं। पर यहाँ तो मैं मताधिकारके लिए अयोग्यताएँ और न्यायालय, इन दो विषयोंके बारेमें ही लिखना चाहता हूँ।

अब तक मैं यह मानता और कहता आया हूँ कि हरएक वयस्क आदमीको — फिर वह निरक्षर हो या साक्षर — मत देनेका अधिकार होना चाहिए। लेकिन कांग्रेस-विधानको जिस तरह अमलमें लाया जा रहा है उसको देखकर मेरी राय बदल गई है। अब मैं यह मानने लगा हूँ कि मताधिकारके लिए अक्षरज्ञानका होना आवश्यक है। इसके दो कारण हैं। मत एक खास अधिकार माना जाना चाहिए, और इस कारण उसके लिए कुछ योग्यता भी आवश्यक समझी जानी चाहिए। सबसे सरल और सीधी योग्यता साक्षरताकी — लिखना, पढ़ना आ जानेकी — है। और साक्षरतापर आधारित मताधिकारके प्रयोगसे बना हुआ मन्त्रि-मण्डल यदि मताधिकारसे वंचित निरक्षर प्रजाजनोंके हितकी चिन्ता रखनेवाला होगा, तो इस वांछित अक्षरज्ञानका प्रसार तो देखते-देखते हो जायेगा। औंधके संविधानमें प्राथमिक शिक्षाको निःशुल्क और अनिवार्य बना दिया गया है। श्रीमन्त अप्पा-साहबने मुझे विश्वास दिलाया है कि वे इस बातकी कोशिश करेंगे कि औंध-राज्यमें छह महीनेके अन्दर निरक्षरता समाप्त हो जाये। इसलिए मुझे आशा है कि मताधिकारके

१. तारीख गांधीजी के हाथ की नहीं, किसी और के हाथ की लिखी है।

२. देखिए “तार : घनश्यामदास बिड़लाको”, पृ० ३१०।

३. आशय अनुमानतः कौंसिल ऑफ स्टेट, जबपुर के अध्यक्ष को लिखे पत्रसे है; देखिए “जमनालाल बजाजके लिए पत्रका मतविदा”, पृ० ३११-३।

४. यह “टिप्पणियाँ” शीर्षकके अन्तर्गत छपा था।

लिए अक्षरज्ञानकी जो योग्यता निश्चित की गई है, उसका औंध-राज्यमें कोई विरोध नहीं होगा।

प्रचलित प्रथामें दूसरा परिवर्तन यह किया गया है कि निम्न श्रेणीकी अदालतमें न्यायप्रणालीको मुफ्त और बहुत सादा बना दिया गया है। लेकिन आलोचक न्यायके मुफ्त और सादा होनेसे तो नहीं, पर एक दूसरी बातसे शायद नाराज होंगे। वह यह कि बीचकी तमाम अदालतोंको उड़ा दिया गया है, और विवादियों तथा अभियुक्तोंका भाग्य मात्र उच्च न्यायालयके हाथमें सौंप दिया गया है और उसमें एक ही न्यायाधीश है। पौन लाखकी जनसंख्यामें बहुत-से न्यायाधीशोंका होना अनावश्यक है और अशक्य भी है। और अगर योग्य मनुष्यको मुख्य न्यायाधीश बना दिया जाये, तो यह सम्भव है कि वह बड़ी-बड़ी तनखाहवाले न्यायाधीशोंकी न्यायापीठ जितना ही शुद्ध न्याय दे सके। न्यायका स्वरूप इतना सादा कर देनेमें कल्पना यह रही है कि अदालतोंकी बोझिल और लम्बी-चौड़ी कार्य-विधि समाप्त कर दी जाये, और कानूनोंके बड़े-बड़े पोथे और ब्रिटिश अदालतोंमें काममें आनेवाली रिपोर्टोंका उपयोग भी खत्म कर दिया जाये।

बारडोली, १० जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १४-१-१९३९

३३५. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

बारडोली

[११ जनवरी, १९३९]^१

चि० काका,

तीन दिनका मौन चल रहा है, इसलिए पत्रोंके उत्तर दे पा रहा हूँ।

संजीव कामतके सम्बन्धमें जो चाहिए उसे इस पत्रके साथ रख रहा हूँ।

शंकरका पत्र तुम्हारे देखनेके लिए है। उसे फिर लिखना। मैंने नानावटीको पत्र लिख दिया है। अधिक विचार करनेके बाद मैंने उसे यह सुझाव दिया है कि रात सेगाँवमें बिताये और दिन तुम्हारे पास। लेकिन अगर सफरमें भी उसकी जरूरत हो, तो भले वह बराबर तुम्हारे साथ रहे। तुम्हारी जरूरत पूरी करना मुझे अधिक महत्वका काम मालूम होता है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

मेरे वहाँ आनेमें अभी और समय लगेगा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९१७) से।

१. तारीख किसी औरके हाथकी लिखी है।

३३६. पुर्जा : वल्लभभाई पटेलको

बारडोली

११ जनवरी, १९३९

मेरा सदासे यह निश्चित मत रहा है (और इस समय भी यह मेरे मनपर हावी है) कि प्रत्येक प्रान्तमें एक-दो चुने हुए नेताओंके सिवाय बाकी सब कार्यकर्ताओं को चुप रहना चाहिए। और यदि यह संभव न हो तो उन्हें सभाओंमें पहलेसे अच्छी तरह सोचे हुए, संक्षिप्त, सादे, लिखे हुए भाषण पढ़ देने चाहिए। सबको याद रखना चाहिए कि अब लोगोंके हाथ अधिकाधिक सत्ता आती जा रही है। ऐसी स्थितिमें लोकनायकोंके मुँहसे ऐसा एक भी शब्द नहीं निकलना चाहिए जिसपर पहलेसे विचार न कर लिया गया हो।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २३२

३३७. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

बारडोली

१२ जनवरी, १९३९

चि० काका,

महादेवको लिखा तुम्हारा पत्र पढ़ा। क्या मेरी नीति बदल गई है? कलकत्तेमें जो हुआ सो हुआ। हमें इस कक्षासे हाथ खींच लेना चाहिए। वामनचन्दका वेतन तो वह आज देगा न? अभी नई कक्षा न खोलना ही शायद बेहतर होगा। मैं आऊँगा, तब इस बातकी चर्चा करेंगे। मुझे डर है, हम लोग कहीं आपसमें ही न लड़ने लगें।

कलका मेरा पत्र^१ मिला होगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

साथका पत्र श्रीमनके लिए है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९१८) से।

१. देखिए पृ० ३२४।

३३८. पत्र : कृष्णचन्द्रको

बारडोली

१२ जनवरी, १९३९

चि० कृष्णचंद्र,

मेरे पास एक भी मिनिट नहीं रहती। यह भी कष्टसे लिख रहा हूँ।

ब्रह्मचर्यके लिये बलवान साधन चित्त शुद्धि है। उसमें बाह्य साधन कुछ अंश तक सहायक होते हैं।

प्रार्थना अनजान पनमें भी चलती है उसका मतलब यह है कि जब मनुष्य उसीमें रत रहता है तो उसे पता नहीं है कि वह प्रार्थना करता है। जैसे घाढ़ निशमें सोता हुआ मनुष्यको निद्राका पता नहीं रहता है। रामनामका विस्तृत अर्थ यह कृष्ण नाम भी आया, चर्खा चलाना भी रामनाम हो सकता है: आज तो इतना ही।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३०९) से। एस० जी० ७२ से भी।

३३९. बातचीत : तोयोहिको कागावाके साथ^१

[१४ जनवरी, १९३९]^२

अब गांधीजीसे उनकी बातचीतको लेते हैं।

आपकी ख्याति यहाँ आपसे पहले ही पहुँच चुकी है, डॉ० कागावा।

इन शब्दोंके साथ गांधीजी डॉ० कागावाके अभिनन्दनके लिए उठे। . . . प्रारम्भिक प्रश्न दक्षिण भारतके सूखे, अकालों और सहकारी आन्दोलनके बारेमें थे। [उन्होंने पूछा:] क्या यह आन्दोलन भारतमें फूल-फल रहा है?

गांधीजी: फूल-फल रहा है, यह तो मैं नहीं कह सकता। जैसे-तैसे चल रहा है। यह ब्रिटिश सरकार द्वारा शुरू किया गया था। यह भीतरसे नहीं उठा, बल्कि

१. महादेव देसाई लिखित “डॉ० कागावाज विजिट” से उद्धृत। कागावा एक जापानी समाज-सुधारक, इवेंजेलिस्ट और लेखक थे और ताम्बरम् सम्मेलनमें भाग लेनेके लिए भारत आये थे।

२. महादेव देसाईकी हस्तलिखित डायरीसे।

लोगोंपर ऊपरसे थोपा गया। इसकी व्यवस्था एक घिसे-पिटे नमूनेपर की गई है, इसलिए इसमें समयकी आवश्यकताओंके अनुरूप विकासकी गुंजाइश नहीं है। पर आपके यहाँ, मुझे मालूम है, एक बृहत् सहकारी आन्दोलन है।

कागावा : हाँ, वह दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। उत्पादकोंकी ही ३,५०,००० सहकारी समितियाँ हैं जो खुद उन्हींके द्वारा संगठित की गई हैं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा सहकारी समितियाँ हैं, फसल-बीमा सहकारी समितियाँ हैं और गोदामोंमें माल का संग्रह करनेवाली सहकारी समितियाँ हैं।

गां० : युद्धके बारेमें जापानमें लोगोंकी भावनाएँ क्या हैं?

का० : मेरी स्थिति तो जापानमें एक विधर्मीकी-सी है। अपने विचार व्यक्त करनेकी बजाय, मैं आपसे यह जानना चाहूँगा कि यदि आप मेरी स्थितिमें हों तो क्या करेंगे।

गां० : अपने विचार व्यक्त करना मेरी धृष्टता होगी।

का० : नहीं, मैं यह जाननेको बहुत उत्सुक हूँ कि आप क्या करेंगे।

गां० : मैं अपने ऊपसिद्धान्तोंकी घोषणा करूँगा और गोलीका शिकार हो जाऊँगा। मैं सहकारी समितियों और आपके सारे कामको एक पलड़ेमें रखूँगा, और आपके राष्ट्रके सम्मानको दूसरेमें। और यदि आपको लगे कि राष्ट्रका सम्मान बेचा जा रहा है, तो मैं आपसे कहना चाहूँगा कि जापानके विरुद्ध अपने विचारोंकी घोषणा कीजिए और ऐसा करके अपनी मृत्यु द्वारा जापानको जीवित रखिए। परन्तु इसके लिए आन्तरिक विश्वास आवश्यक है। मुझे नहीं मालूम कि यदि मैं आपकी स्थितिमें होता तो जो-कुछ मैंने कहा है, वह सब कर सकता या नहीं, पर क्योंकि आपने मेरी राय माँगी है इसलिए वह तो मुझे देनी ही है।

का० : विश्वास तो है। परन्तु मित्र मुझसे एकनेको कह रहे हैं।

गां० : आपके अन्दरका मित्र जब कहता है, “यह करो”, तो उन मित्रोंकी बात मत सुनो। मित्र, चाहे कितने ही अच्छे हों, कभी-कभी हमें थोखा दे सकते हैं। उनका तर्क अन्यथा हो ही नहीं सकता। वे तो आपसे जीवित रहने और अपना काम करनेको ही कहेंगे। मैंने जब जेल जानेका फैसला किया तो मुझसे यही अनुरोध किया गया था। परन्तु मैंने मित्रोंकी बात नहीं सुनी, जिसका फल यह हुआ कि जेलकी ठोस चारदीवारीमें बंद हो जानेपर मुझे स्वतन्त्रताका आलोक मिला। मैं एक अँधेरी कोठरीमें था, पर यह महसूस करता था कि उन दीवारोंके अन्दरसे मैं सब-कुछ देख सकता हूँ, जबकि बाहर रहकर कुछ नहीं देख सकता था।

का० : क्या आपके यहाँ भारतमें कुछ सिचाई सहकारी समितियाँ हैं?

गां० : मेरे खयालसे नहीं है। निस्संदेह आपके यहाँ ये सब चीजें हैं। आपने शानदार काम किये हैं, और हमें आपसे बहुत-सी बातें सीखनी हैं। परन्तु चीनको जिन्दा निगलना, उसे मादक विषसे मूच्छित करना और कितनी ही अन्य भयानक बातोंको, जो पंडित जवाहरलाल द्वारा दी गई एक पुस्तक ‘व्हाट वार मीन्स’ में मैंने

पढ़ी हैं, हम कैसे समझें। ये सब अत्याचार आप कैसे कर सके? और आपके महा-कवि इसे मानवताका युद्ध और चीनके लिए एक वरदान कहते हैं!

डा० कागावा धर्मोके अध्येता हैं। वे यह जानना चाहते थे कि गांधीजी की अहिंसाकी शिक्षाका 'भगवद्गीता' से कैसे मेल बैठता है। गांधीजी ने कहा कि इसपर इतने थोड़े समयमें कोई चर्चा नहीं हो सकती, पर मैं कहूंगा कि आप 'गीता' पर मेरी भूमिका पढ़ें, जहाँ मैंने इस प्रश्नका उत्तर दिया है। वह उत्तर मुझे अपने अनुभवमें से ही मिला था और वह व्याख्या मेरे खयालसे जरा भी बनावटी नहीं है।

का० : मैंने सुना है आप 'भगवद्गीता' का प्रतिदिन पाठ करते हैं?

गा० : हाँ, हम एक सप्ताहमें पूरी 'गीता' का पाठ कर लेते हैं और हर सप्ताह करते हैं।

का० : परन्तु 'गीता' के अंतमें कृष्ण हिंसाका उपदेश देते हैं।

गा० : मैं ऐसा नहीं मानता। मैं भी लड़ रहा हूँ। यदि मैं हिंसात्मक ढंगसे लड़ता तो प्रभावशाली ढंगसे नहीं लड़ सकता था। 'गीता' का संदेश 'गीता' के दूसरे अध्यायमें मिलता है जहाँ कृष्ण स्थितप्रज्ञता और समत्वकी बात करते हैं। 'गीता' के दूसरे अध्यायके अन्तिम १९ श्लोकोंमें कृष्ण यह समझाते हैं कि यह स्थिति कैसे प्राप्त की जा सकती है। वे हमें बताते हैं कि यह अपने समस्त विकारोंको नष्ट करके प्राप्त की जा सकती है। अपने समस्त विकारोंको नष्ट कर देनेके बाद आपके लिए अपने भाईको कत्ल करना सम्भव ही नहीं है। जिसमें कामनाएँ नष्ट हो गई हैं, जो सुख और दुःखके प्रति उदासीन हैं, जो उन तूफानोंमें भी अक्षुब्ध रहता है जो मरणशील मानवको उद्धिग्न कर देते हैं—ऐसा कोई आदमी हत्या करे, तो उस आदमीको मैं देखना चाहूँगा। यह सारी बात ऐसी भाषामें समझाई गई है जिसका सौन्दर्य अनुपम है। ये श्लोक यह दिखाते हैं कि कृष्ण जिस युद्धकी बात कर रहे हैं, वह आध्यात्मिक युद्ध है।

का० : परन्तु तब वास्तविक लड़ाई हो रही थी। आपकी यह व्याख्या आपकी अपनी विशिष्ट व्याख्या है।

गा० : यह मेरी हो सकती है, पर मेरी व्याख्याके रूपमें तो इसका कोई मूल्य नहीं है।

का० : साधारण बुद्धिको तो ऐसा ही लगता है कि वह वास्तविक लड़ाई थी।

गा० : उस सबको आप शान्तचित्त होकर उसके सही सन्दर्भमें पढ़ें। युद्धका एक बार उल्लेख होनेके बाद फिर कोई उल्लेख नहीं है। शेष तो आध्यात्मिक उपदेश है।

का० : क्या किसीने उसकी आपकी तरह व्याख्या की है?

गा० : हाँ। वहाँ युद्धका उल्लेख जरूर है, पर वह युद्ध अन्दर चल रहा है। पाण्डव और कौरव सत और असतकी आन्तरिक शक्तियाँ हैं। वह युद्ध मानव-हृदयमें चलनेवाला देवों और असुरोंका युद्ध है, ईश्वर और शैतानका युद्ध है। इस व्याख्याके

पक्षमें आन्तरिक प्रमाण स्वयं उस रचनामें है और महाभारतमें है जिसका कि 'गीता' एक लघु अंश है। यह दो परिवारोंके आपसी युद्धका इतिहास नहीं है, बल्कि मनुष्यका इतिहास है — मनुष्यके आध्यात्मिक संघर्षका इतिहास है। अपनी व्याख्याके लिए मेरे पास ठोस कारण है।

का० : इसीलिए मैं कहता हूँ कि यह आपकी व्याख्या है।

गां० : पर उससे कुछ नहीं होता। प्रश्न यह है कि यह व्याख्या युक्तियुक्त है या नहीं, यह बुद्धिको जँचती है या नहीं। यदि ऐसा है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह मेरी है या किसी क ख ग की है। यदि ऐसा नहीं है, तो मेरी होनेपर भी इसका कोई मूल्य नहीं है।

का० : मुझे तो अर्जुनके विचार अद्भुत लगते हैं। कृष्णने उसके लिए कुछ बहाना ढूँढ़ लिया है, और ईसाई धर्म से पहले यह स्वाभाविक और आवश्यक था।

गां० : यह व्याख्या तो ऐतिहासिक दृष्टिसे भी गलत है। बुद्ध ईसाके कालसे बहुत पहले मौजूद थे, और उन्होंने अहिंसाका उपदेश दिया था।

का० : परन्तु अर्जुनके विचार मुझे कृष्णके विचारोंसे अच्छे लगते हैं।

गां० : तो आपके अनुसार, शिष्य गुरुसे बड़ा था !

का० : परन्तु आप जो कहते हैं मैं उससे, अहिंसाकी आपकी शिक्षासे सहमत हूँ। आपकी व्याख्याको ध्यानमें रखते हुए मैं 'गीता' को फिर पढ़ूँगा। . . .

डॉ० कागावा फिर अपने कृषि और सहकारिताके विषय पर आ गये जिसका उन्होंने बहुत ही सावधानीसे अध्ययन किया है। वे बोले, "आपके यहाँ हर दस सालमें एक बार अकाल पड़ जाता है।"

गां० : हमारे यहाँ वह हर साल पड़ता है, अकाल हमारा स्थायी मित्र है।

का० : तब आपको ज्यादा पेड़ लगाने चाहिए, ईधन और मवेशियोंके चारेके लिए और ज्यादा पेड़ लगाने चाहिए। चावल और जौ ही काफी नहीं है, आपको प्रोटीनवाले पेड़ोंकी ज्यादा जरूरत है।

गां० : नहीं, हमें शासन-प्रणालीमें परिवर्तनकी जरूरत है !

यह बड़े खेदकी बात थी कि डॉ० कागावाको उसी दिन शामको बम्बई जाना था। . . . अपने सहकारिताके कार्यक्रमपर विस्तारसे विचार-विमर्श करनेके लिए ही क्यों न हो, वे भारतके प्रमुख व्यक्तियोंके पास शायद और ज्यादा दिन ठहर सकते थे। पर गांधीजीने उनसे जो अपीलकी वह एक और ही आधारपर थी।

गां० : शान्तिनिकेतनको देखे बिना आप भारतसे कैसे जा सकते हैं ?

का० : मैंने कविवरकी कविताएँ पढ़ी हैं और मुझे वे प्रिय हैं।

गां० : परन्तु आपको कविवरसे प्रेम करना है।

का० : यदि मैं 'गीतांजलि' का प्रतिदिन पाठ कर सकूँ तो मैं कविवरको प्रतिदिन देख सकता हूँ, और मुझे क्या उनसे प्रेम नहीं है ? शायद वे अपनी कविताओंसे अधिक महान हैं।

गा० : कभी-कभी सचाई इससे उल्टी होती है। पर कविवरका जहाँ तक सवाल है, वे अपनी महान कविताओंसे कहीं ज्यादा महान हैं। अब, एक प्रश्न और। अपने कार्यक्रम में क्या आपने पांडिचेरीको भी रखा है? यदि आप आधुनिक भारतका अध्ययन करना चाहते हैं, तो आपको शांतिनिकेतन और अरविन्द घोषका आश्रम दोनों देखने चाहिए। पता नहीं आपकी इस यात्राके सलाहकार कौन हैं। काश कि इस मामलेमें आपने मुझे अपना सलाहकार बनाया होता।

का० : नहीं, आप तो जीवनके एक अच्छे मार्गदर्शक हैं।

डॉ० कागावाने गांधीजीसे पूछा कि वे और कौन-सी पुस्तकें नित्य पढ़ते हैं। गांधीजीने 'रामायण' का उल्लेख किया और कहा कि ऐसा माना जाता है कि उसमें काफी युद्ध और रक्तपात आदि है "पर मेरे लिए नहीं हैं।" डॉ० कागावाने कहा कि सीताकी कथाके कारण, जो पवित्रताका आदर्श है, वह मुझे भी प्रिय है।

गा० : पर उस अनुपम काव्यमें और भी सुन्दर चीजें हैं। मैंने मूल नहीं पढ़ी है जो महान है। परन्तु जो हिन्दीमें है वह एक महान भक्तकी रचना है और वह भारतके जन-साधारणका धर्मग्रंथ है। उत्तर भारतमें तुलसीकृत रामायण चार सौ सालोंसे हजारों परिवारोंके लिए प्रेरणाका स्रोत रही है।

डॉ० कागावाने शंकराचार्य और रामानुजकी चर्चा की और गांधीजीने शंकराचार्यके प्रति, उनकी सीधी और गजबकी तार्किक पद्धतिके प्रति अपना विशेष अनुराग व्यक्त किया। परन्तु गांधीजी फिर उनके यात्रा-कार्यक्रमकी बातपर आ गये और उन्होंने इस बातपर बड़ा अफसोस प्रकट किया कि रेवरेंड हाँजने, जिनकी कार्यक्रम बनानेकी जिम्मेदारी रही है, उनके (गांधीजीके) प्रति पक्षपातके कारण, बारडोलीको तो उसमें शामिल कर लिया पर शांतिनिकेतनको नहीं किया! [उन्होंने कहा :]

आप कलकत्ता जा रहे हैं और शांतिनिकेतन नहीं जा रहे! यह बड़े अफसोसकी बात है। आप कहते हैं कि मैं गोसावा जा रहा हूँ। देखिए, गोसावा, गोसावा है, पर शांतिनिकेतन भारत है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २१-१-१९३९

३४०. जयपुर

मालूम होता है कि जयपुरके अधिकारी उस समय तक खुश न होंगे, जब तक कि वे जयपुरके देशभक्तोंके होशहवास अच्छी तरह दुस्त न कर देंगे। अब उन्होंने जयपुर राज्य प्रजामण्डलको, जिसके कि अध्यक्ष जमनालालजी हैं, गैरकाननी घोषित कर दिया है। जमनालालजीने राज्य परिषद्के अध्यक्षके नाम अपना पत्र^१ प्रकाशित कर दिया है। यह पत्र इसी अंकमें अन्यत्र मिलेगा। उम्मीद थी कि वह पत्र अधिकारियोंको अपना हुक्म वापस लेनेकी प्रेरणा देगा। मगर जयपुर परिषद्, जिसके बारेमें भूलसे पिछले सप्ताह मैंने यह लिखा था^२ कि उसमें सब बाहरके ही आदमी हैं, मगर अब मुझे मालूम हुआ है कि उसके चार सदस्य राज्यके ही हैं, इस बातपर आमादा लगती है कि उन सब कार्योंका अस्तित्व ही मिटा दिया जाये, जिनसे जमनालालजी और उनके सहयोगियोंका सम्बन्ध है, फिर वे कार्य चाहे सामाजिक हों, या मानव-सेवाके अथवा कोई और।

अधिकारियोंका ऐसे लोगोंसे जिनको वे पसन्द नहीं करते, पेश आनेका यह एक नया तरीका है। मैं केवल यह आशा ही कर सकता हूँ कि जयपुरके अधिकारी अखिल भारतीय संकट उत्पन्न करनेसे बाज आयेंगे। ऐसे तीन कारण हैं जिनसे जयपुरका सवाल वैसा रूप धारण कर सकता है। जमनालालजी खुद ही एक संस्था हैं। इसके अलावा वे कांग्रेसके कोषाध्यक्ष और उसकी कार्य-समितिके सदस्य भी हैं। जयपुरमें जो तरीका अपनाया जा रहा है, वह इतना भीषण है कि पूरी शक्तिके साथ उसका मुकाबला करना ही चाहिए। उसका मुकाबला यदि नहीं किया गया तो रियासतोंमें होनेवाली ऐसी हरेक हलचलका, जिसका प्रजाकी न्यायोचित राजनीतिक आकांक्षाओंसे जरा भी सम्बन्ध हो, सर्वथा अन्त हो जायेगा।

जयपुरके बारेमें विचित्र बात यह है कि वहाँ असली शासन महाराजाका नहीं बल्कि एक ऊँचे अंग्रेज अधिकारीका^३ है। क्या इसका मतलब यह है कि वे केन्द्रीय सत्ताकी इच्छानुसार चलते हैं? अगर ऐसा है, तो हालकी घोषणाओंका क्या हुआ? अगर ऐसा नहीं है तो क्या कोई अंग्रेज दीवान ऐसी नीतियाँ शुरू कर सकता है, जो अन्तमें खुद राज्यके लिए विनाशक हों? मैं समझता हूँ कि जयपुरका खजाना इतना भरा-पूरा है कि सर्वनाशके आधुनिक हथियारोंका सहारा लेनेके बावजूद यदि प्रजा आत्मसमर्पण न करे और लगातार बहिष्कार करती रहे, तो भी उससे हर हालतमें राज्यका काम चलता रहेगा। लेकिन यह वक्त है कि राजा लोग और केन्द्रीय

१. देखिए “जमनालाल व. राजके लिए पत्रका मसविदा”, पृ० ३११-३।

२. देखिए “जमनालालजी पर प्रतिबन्ध”, पृ० ३२०-२।

३. सर डब्ल्यू० बीकम सेंट जॉन, जयपुर रियासतके प्रधानमंत्री।

सरकार इस सम्बन्धमें अपनी कोई समान नीति बना लें। या जैसाकि कुछ लोग कहते हैं, यह समझा जाये कि जयपुरने जो तरीका अपनाया, वही उनकी समान नीति है? मैं तो केवल यही उम्मीद कर सकता हूँ कि ऐसा नहीं है।

बारडोली, १६ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २१-१-१९३९

३४१. मेथिलेटेड स्प्रिट पीना^१

पत्र-लेखक लिखते हैं :^२

मद्य-निषेधके काममें लगे हुए लोगोंको पत्र-लेखकके पत्रपर ध्यान देना चाहिए।
बारडोली, १६ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २१-१-१९३९

३४२. हिंसा बनाम अहिंसा

हिन्दुस्तानमें आज जगह-जगह हिंसा और अहिंसाकी पद्धतिके बीच एक द्वन्द्व चल रहा है। हिंसा तो पानीके प्रवाहकी तरह है। पानीको निकलनेका रास्ता मिलते ही वह प्रबल वेगसे बहने लगता है। अहिंसा पागलपनसे काम कर ही नहीं सकती। वह तो अनुशासनका सारतत्त्व है। किन्तु जब वह सक्रिय बन जाती है, तब फिर हिंसाकी कोई भी शक्ति उसे कुचल नहीं सकती। अहिंसा सोलहों कलाओंसे वहीं उदित होती है, जहाँ उसके नेताओंमें कुंदनकी शुद्धता और अटूट श्रद्धा होती है इसलिए द्वन्द्वमें यदि अहिंसा हारती हुई दिखाई दे तो ऐसा नेताओंकी श्रद्धा कम होनेसे या उनकी शुद्धतामें कमी आ जानेसे अथवा दोनों ही कारणोंसे होगा। यह होते हुए भी अन्तमें हिंसापर अहिंसाकी ही विजय होगी, यह माननेका कारण मालूम होता है। जो घटनाएँ घट रही हैं, उनका रूख ऐसा है कि हिंसाकी व्यर्थता कार्यकर्ता खुद ही समझ जायेंगे। पर एक प्रसिद्ध कार्यकर्ताने लिखा है :^३

१. यह “टिप्पणियाँ” शीर्षकके अन्तर्गत छपा था।

२. पत्र यहाँ नहीं दिया गया है। इसमें कहा गया था कि मद्य-निषेध लागू होनेके साथ शराबियोंने हल्की मेथिलेटेड स्प्रिट पीनी शुरू कर दी है। उन्होंने सुझाव दिया था कि इसकी बिक्रीपर नियन्त्रण लगाया जाना चाहिए।

३. केवल कुछ अंश ही दिये गये हैं।

“सत्याग्रहका मुकाबला करनेका रियासतोंका तरीका ब्रिटिश सत्ताके तरीकेसे भिन्न मालूम होता है। कुछ रियासतोंमें जो तरीके अस्तित्थार किये गये हैं वे बहुत ही अमानुषिक और बर्बर हैं। क्या ऐसे बर्बर तरीकोंके विरुद्ध अहिंसा सफल हो सकेगी है? . . . ,

उड़ीसाके पोलिटिकल एजेंटकी हत्याके सम्बन्धमें आपने जो विचार प्रकट किये हैं^१, उन्हें मैंने कई बार पढ़ा है। अफसोसकी बात यह है कि उड़ीसाके देशी राज्योंकी प्रजापर जो अत्याचार हुए हैं उनका आपने उल्लेख नहीं किया। . . . अगर भीड़ने पोलिटिकल एजेंटके विरुद्ध हिंसासे काम लेनेमें गलती की, तो क्या पोलिटिकल एजेंटका गोली चलाना और इस तरह भीड़को उत्तेजना दिलानेका काम उचित था? . . .

. . . सत्य और अहिंसाके आप-जैसे महान उपदेशकने भारत-सरकारके पोलिटिकल विभागको—और खासकर पूर्वी रियासतोंकी एजेंसीको—क्यों चेतावनी नहीं दी कि देशी राज्योंकी प्रजाके साथ पेश आनेमें वे ऐसे जंगली तरीके इस्तिथार न करें? इस एजेंसीकी कार्रवाई सचमुच ही भयंकर रही है और पोलिटिकल एजेंटकी हत्या पूर्वी रियासतोंकी एजेंसीकी पाशविक दमन-नीतिकी पराकाष्ठाका परिणाम है। . . . और यदि एजेंटके लिए हमदर्दी जाहिर की जाती है, तो उसी जगह जो दो आदमी सम्भवतः पुलिसकी हिंसाके परिणाम-स्वरूप मारे गये, उनके लिए सहानुभूति क्यों न जाहिर की जाये? . . .

निस्सन्देह, आत्मरक्षाका अधिकार हर किसीको है, और इसी तरह सशस्त्र विद्रोह करनेका अधिकार भी है। पर गहराईसे विचार करनेके बाद कांग्रेसने जान-बूझ कर दोनोंका ही त्याग कर दिया है और ठोस कारणोंसे किया है। अहिंसामें यदि बड़ी-से-बड़ी उत्तेजनाके आगे भी डटे रहनेकी ताकत न हो, तो उसकी कोई कीमत नहीं। चाहे जितनी उत्तेजनाके सामने टिके रहनेकी शक्तिमें ही उसकी सच्ची कसौटी है। स्त्रियोंका सतीत्व लूटा गया हो और उसे अपनी आँखों देखनेवाले अहिंसात्मक रहे हों, तो वे जीवित क्यों हैं? और सतीत्व लूटनेकी घटनाओंका पीछेसे पता लगा, तो उस वक्त फिर हिंसक बलके प्रयोगका अर्थ ही क्या रहा? अहिंसाका तरीका तो पीछे भी कारगर हो सकता है। अत्याचारियोंपर मामला चलाया जा सकता है, या उनके कृत्योंको जनताकी अदालतमें रखा जा सकता है। अपराधियोंको क्रुद्ध भीड़के हवाले कर देना तो बर्बरता होगी।

एजेंटकी हत्यासे सम्बन्ध रखनेवाली दलील प्रस्तुत विषयके लिए अप्रासंगिक है। मुझे एक तरफ राजा तथा पोलिटिकल एजेंट, और दूसरी तरफ लोगोंकी कार्रवाईका औचित्य कुछ तोलना तो था नहीं। एजेंटकी हत्याकी साफ-साफ शब्दोंमें

निन्दा करना, और वह भी सिर्फ सहानुभूतिकी भावनासे नहीं, बल्कि कांग्रेसकी मौलिक नीतिका भंग करने और अनुशासनहीन कृत्यके लिए — इतना ही मेरे लिए काफी था। राजाओंके दुष्कृत्योंपर मैंने 'हरिजन' में अकसर प्रकाश डाला है, पर इसलिए नहीं कि लोग उनपर अपना गुस्सा उतारें, बल्कि लोगोंको मात्र यह बतानेके हेतुसे कि वे उन दुष्कृत्योंका अहिंसक ढंगसे मुकाबला किस प्रकार कर सकते हैं। उडीसामें खासा सुन्दर काम चल रहा था, इस बातके मैं काफी प्रमाण दे सकता हूँ। इस हत्याने वहाँके आन्दोलनमें, जो ठीक तरहसे चल रहा था, खलल डाल दिया है। रणपुरमें आज भयानक वीरानी छा गई है। निर्दोष और दोषी सभी भाग-भाग कर डधर-उधर छिप रहे हैं। दमनसे बचनेके लिए वे घर-बार छोड़-छोड़ कर गाँवोंको वीरान करते जा रहे हैं; कारण, ऐसा तो नहीं है कि केवल वास्तविक अपराधी ही दमनकी चक्कीमें पिसेंगे। किसी-न-किसी रूपमें वहाँ आतंक फैलाया जा रहा है, और सारे हिन्दुस्तानको लाचार होकर आज यह सब देखना पड़ रहा है। सत्ताधारी अपने अफसरोंकी — खास कर गोरे अफसरों की — हत्या होने पर उससे निपटनेका इससे भिन्न कोई दूसरा तरीका जानते ही नहीं। नया तरीका जाननेके लिए तो अहिंसाके मार्गकी उन्हें धीरे-धीरे शिक्षा लेनी है। पर मुझे अपनी दलीलको बहुत विस्तार देनेकी जरूरत नहीं। हाथ-कंगनको आरसीकी जरूरत ही क्या? दोनों ही मार्गोंकी हिन्दुस्तानमें आज परीक्षा हो रही है। कार्यकर्ताओंको दोनोंमें से एक मार्ग चुन लेना है। मैं जानता हूँ कि भारतवर्ष केवल अहिंसाके ही मार्गसे स्वतन्त्र होगा। जो कार्यकर्ता कांग्रेसमें रहकर इससे अन्यथा विचार रखते हैं, अथवा उलटी रीतिसे काम लेते हैं, वे अपने प्रति तथा कांग्रेसके प्रति अन्याय कर रहे हैं।

बारडोली, १६ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २१-१-१९३९

३४३. पत्र : मीराबहनको

बारडोली

१६ जनवरी, १९३९

चि० मीरा,

इन दिनों कामका इतना बोझ रहा है कि मैं एक भी पत्र नहीं लिख सका हूँ। आज मैं 'हरिजन' के लिए सायं ५ बजेके बाद तक काम करता रहा। अभी सन्ध्याकी प्रार्थनाके लिए जानेसे पहले मेरे पास एक-दो मिनटका समय है।

तुम जुराबको उसके कामके लिए [पारिश्रमिक], जैसा तुमने लिखा है, उस हिसाबसे अवश्य दे देना। यदि तुम्हें उसके कामसे पूरा सन्तोष हो तो उसे उतना ही या उससे अधिक भी दे दिया जाये तो कुछ अनुचित नहीं होगा।

मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हारे अभी हालके पत्र आशाप्रद रहे हैं। यदि वे निराशा-जनक होते तो चाहे एक-आध पंक्ति ही लिखनेके लिए मैं समय जरूर निकालता।

सुशीला तुम्हें प्रतिदिन पत्र लिखती ही रही है। इस तरह तुम्हें मेरी सेहतके बारेमें सब-कुछ पता है। मैं महसूस तो बहुत अच्छा करता हूँ।

घटनाएँ बड़ी तेजीसे घट रही हैं। 'हरिजन' के अगले अंकमें तुम देखोगी कि क्या हो रहा है।

मुझे आशा है कि तुम्हें जैसा भोजन चाहिए वह अब मिल रहा है।

देवदास और लक्ष्मी अभी यहाँ हैं। रामदास कल आया था। वह कल पूना जा रहा है। कैलेनबैक जहाजसे शनिवारको आ पहुँचेंगे।

यहाँ असंख्य मुलाकाती हैं। सेगाँव-जैसी शान्ति यहाँ नहीं है। परन्तु सरदार अवाञ्छित दर्शनार्थियोंसे मुझे बचाये रखते हैं।

रामदासकी तबीयत बहुत अच्छी तो नहीं मालूम होती। प्रेमाबहन आज आई है। मृदुला पिछले चार दिनोंसे यहाँ है।

आगा खाँ मिलने आये थे। उस मुलाकातके बारेमें बतानेके लिए कुछ है नहीं। वह चाहते हैं कि यदि जरा भी सम्भव हो तो कांग्रेस जिन्नाके साथ मामला तय कर ले।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४२४) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००१० से भी।

३४४. पुर्जा : अमृतलाल वि० ठक्करको

बारडोली

१६ जनवरी, १९३९

इसे हरिजन फंडमें दाखल किया जाय। मुझे रसीद भेजी जाय।

मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ११८१) से।

३४५. पत्र : सर डब्ल्यू० बीकम सेंट जॉनको

बारडोली

१८ जनवरी, १९३९

प्रिय मित्र,

पहले मेरा विचार था कि साथका यह पत्र प्रकाशित कर दूँ, जिसमें सेठ जमनालालजीके जयपुर-रियासतमें प्रवेशपर प्रतिबन्ध-सम्बन्धी आपके रुखका स्पष्टीकरण किया गया है। लेकिन दूसरी बार विचार करनेपर मुझे लगा कि श्री चुडगर^१ के पत्रकी प्रति आपको भेजकर उसपर आपकी राय जाननेसे मेरा प्रयोजन अधिक सिद्ध होगा। मेरा उद्देश्य राजा-महाराजाओं और उन लोगोंके बीच सद्भावना बढ़ाना है जिन्हें ऐसे मामलोंके सिलसिलेमें जिनमें मंत्रीपूर्ण बातके जरिये न्याय दिलवासा सम्भव हो, किसी-न-किसी तरह उनके सम्पर्कमें आना पड़ता है। और अब चूँकि मुझे आपके साथ पत्र-व्यवहार करना ही पड़ रहा है इसलिए कि श्री चुडगरके पत्रके बारेमें आपकी राय जो भी हो, मैं आपको यह सुझाव देना चाहूँगा कि आपको सेठ जमनालालजी और उनके संगठनपरसे प्रतिबन्ध हटा लेना चाहिए। इससे जयपुर-रियासतमें शान्तिको खतरा नहीं होगा। सच तो यह है कि मैं ऐसा मानता हूँ कि प्रतिबन्धोंसे निश्चय ही शान्तिको खतरा है।^२

हृदयसे आपका,

सर डब्ल्यू० बीकम सेंट जॉन

दीवान, जयपुर-राज्य, जयपुर

[अंग्रेजीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३९७-८। सी० डब्ल्यू० ७८०९ से भी;
सौजन्य : धनश्यामदास बिड़ला।

१. सीकरके राव रामाके वकील और कानूनी सलाहकार; देखिए “जयपुर” ३०-१-१९३९।

२. सर बीकमके उत्तरके लिए, देखिए “जयपुर”, ३०-१-१९३९।

३४६. पत्र : चन्दन पारेखको

बारडोली

१८ जनवरी, १९३९

चि० चन्दन,

तेरा पत्र मिला। ह० को तूने जो पत्र लिखा है, वह मैं उन्हें भेजे देता हूँ। मेरा पत्र पाकर ह०ने दक्षिणामूर्तिको छोड़ दिया है। नानाभाई मुझसे मिल भी गये हैं। इस प्रकार ह०ने पहला विकल्प ही स्वीकार कर लिया है। अपनी निर्दोषताके बारेमें तो वे दृढ़ ही हैं। लेकिन जब उन्होंने दक्षिणामूर्तिको छोड़ दिया है और स्त्री-शिक्षाके क्षेत्रसे अलग हो गये हैं, तब और कुछ करनेको नहीं रह जाता।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९४६) से; सौजन्य : सतीश द० कालेलकर ।

३४७. पत्र : रवीन्द्र आर० पटेलको

बारडोली

१८ जनवरी, १९३९

चि० रवीन्द्र,

तेरा पत्र मिला। वहाँके अनुभवसे तू वहाँसे उकता जाये, और धनवान बननेका लोभ सर्वथा छोड़कर, गरीबीके साथ देशसेवामें मस्त हो जाये, तो उसे मैं सफलता ही मानूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७४५५) से।

३४८. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

बारडोली

१८ जनवरी, १९३९

बापा,

आपको ५,००० रु० का एक चेक सीमा-प्रान्तसे भेजा गया था। श्री जसाराम लिखते हैं कि वह खादी-कार्यके लिए था, इसलिए आप इतने रुपये डॉ० गोपीचन्द को भेज दीजिएगा। मैं जब फिर सीमा-प्रान्त जाऊँगा, तब इसी व्यक्तिसे हरिजन-कार्यके लिए भी पैसा प्राप्त करनेकी आशा करता हूँ।

बापू

[पुनश्च:]

उड़ीसा-सम्बन्धी आपका पत्र अभी मिला। सरदारका वहाँ जाना बहुत मुश्किल है। राजेन्द्र बाबू तो जायेंगे ही। यहाँसे भी वे काम चला रहे हैं। क्या आप खान-देशको मद्यनिषेधके कामके लिए १५ दिन दे सकते हैं? डॉ० गिल्डरने वचन दिया है कि आप आयें, तो वे १२ दूकानें बन्द करवा देंगे। आ सकें, तो झटपट आ ही जाइए। तार करना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११८२) से।

३४९. पत्र : बलवन्तसिंहको

बारडोली

१८ जनवरी, १९३९

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा पुराना खत वापिस करता हूँ। अक्षर पहिले से ठीक तो है। परन्तु सुधारके लीये काफी जगह है। ठूस ठूस कर लिखना नहीं चाहिये। बायें बाजु पर हमेशा जगह होनी चाहिये। परन्तु शब्द-शब्दके बीचमें भी जगह रखी जाये। कलम की नोक पतली होनी चाहिये। और यह सब सुधारना भी गोमाताके निमित्त करना यह संकल्प करना। संकल्पकी महिमा तो जानते हैं न।

जो हिसाब तुमने भेजा है वह तो अच्छा है ही है। तुम्हारी प्रमाणिकताके बारेमें, तुम्हारी निस्वार्थ बुद्धिके बारेमें कभी शंका थी ही नहीं।

३३८

शान्तिसे रहते हैं वह अच्छा ही है। शरीर मजबूत कर लो, हिन्दी ज्ञानमें वृद्धि करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १९१७) से।

३५०. प्रेम एक सार्वभौम गुण

एक भारतीय ईसाई सज्जन लिखते हैं :^१

आपके लेख “यहूदी लोग”^२ पर कई तरहकी और काफी टीका-टिप्पणी हुई है। मैं अपनेको यहाँ इस आलोचना तक ही सीमित रखना चाहता हूँ कि ईसा मसीहने जिस प्रेमका उपदेश दिया, वह सामाजिक या सामूहिक नहीं, बल्कि वैयक्तिक गुण था।

इस बातसे इनकार करना कि ईसा मसीहकी जीवन-प्रणाली जितनी व्यक्तिके लिए थी उतनी ही पूरे समुदायके लिए भी थी, निश्चय ही ईसाई धर्मके मूल सत्यको नकारना है। वे प्रचलित व्यवस्थासे बिल्कुल असन्तुष्ट थे। फरीसियों और धर्मशास्त्रियोंके पाखंड और धमंडसे उन्हें इतनी चिढ़ थी कि उन्हें वे “साँपोंकी औलाद” और “पाखंडी” कहते थे। उन्होंने सराफोंके काले कारनामोंका भण्डा फोड़कर और उनपर अपने घरको “चोरोंका अड्डा” बनानेका आरोप लगाकर, रिश्ततखोरी और भ्रष्टाचारका खुल्लम-खुल्ला विरोध किया था। उन्होंने जाति-बहिष्कृतोंके साथ भोजन किया और वेश्याओंसे सांतवनाके शब्द कहे और इस प्रकार अस्पृश्यताके पापकी भर्त्सना की।

उनके उपदेश क्रांतिकारी और सार्वभौम होनेके कारण लोगोंके रोषको जगाते थे; अन्यथा सत्ताधिकारी एक ऐसे आदमीको, जिसमें उनका न्यायाधीश तक कोई ‘पाप’ नहीं देख पाया था, गिरफ्तार करने और मृत्यु-दण्ड देनेकी बात भला क्यों सोचते?

उनके उपदेशोंमें उन्हें [सत्ताधिकारियोंको] एक ऐसी शक्तिकी गन्ध मिली थी जिसका उपयोग करके उनमें [ईसा मसीहमें] आस्था रखनेवाले निश्चय ही उनके समाजके पूरे ढाँचेको गिरा सकते थे। ‘जो तुम्हारे एक गालपर चाँटा मारे उसके आगे दूसरा गाल कर देना’, ‘शत्रुसे प्रेम करना’, ‘कष्टमें आनन्द अनुभव करना’, ‘अपने पड़ोसीसे वैसा ही प्रेम करना जैसा तुम्हें अपने-आपसे है’, ‘दूसरेके दोषकी ओर इशारा करनेसे पहले अपने दोषको देखना’, ‘जो तुम्हें यंत्रणा देते हैं उनके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करना’, ‘अपराधीको

१. पत्रके केवल कुछ अंश ही उद्धृत किये गये हैं।

२. देखिए पृ० १५३-७।

बार-बार क्षमा करना', 'गरीबोंकी सेवा करना', 'सब-कुछ छोड़कर ईसाका अनुसरण करना'—यह सब उस-सार्वभौम सिद्धान्तका सार है जिसके लिए वे जिये और मरे थे। इसका पर्याप्त प्रमाण कि अपने शिष्योंसे उन्होंने कहा था कि स्वयं अपने उदाहरणसे वे विश्वको यह सन्देश प्रत्यक्ष करके दिखायें, और उनके शिष्योंने खुद एक नई व्यवस्थाके पुनर्निर्माणका आह्वान अनुभव किया था कि हमें प्रारम्भिक चर्चमें मिलता है, जिसकी रचना उन शिष्यों के बलिदानोंसे हुई थी और जिसे ईसाका शरीर कहा गया है। 'न्यू टेस्टामेंट' का एक अत्यन्त सुन्दर अंश, '१-कॉरिन्थियन्स' का १३ वाँ परिच्छेद, सन्त पॉलने उस समय लिखा था जब कॉरिन्थका चर्च आन्तरिक विवादोंके कारण छिन्न-भिन्न होने लगा था। उसमें जो प्रेमका सन्देश है वह सामूहिक कार्यका सन्देश था। 'जंगजू चर्च' [चर्च मिलिटेंट] नामसे अभिहित यह चर्च निश्चय ही, उस ईसाई समाजका प्रतीक है जो 'सर्वविजयी' प्रेमके द्वारा बुराईकी ताकतोंके खिलाफ लड़नेकी कोशिश करता है।

हमारे मनमें साहस और आस्थाका अभाव होनेके कारण, ईसाई धर्मकी मुख्य शिक्षाको केवल वैयक्तिक आचारका नियम कहकर ढाल देना हमारे लिए सुविधाजनक तो हो सकता है, पर यह एक खतरनाक सिद्धान्त है जिससे तथाकथित ईसाई राष्ट्रोंकी स्थिति आज शोचनीय हो गई है।

यह ठीक है कि अहिंसाका परिणाम चर्म-चक्षुओंको सदा दिखाई नहीं देता। यह भी सच है कि प्रेमकी राह पर चलना—अहिंसा अपार प्रेमके सिवा और क्या है—कोई आसान बात नहीं है। परन्तु प्रेमको एक सामाजिक गुण न मानना न केवल ईसाई धर्मके अस्तित्वको, बल्कि विश्वके सभी बड़े धर्मोंके अस्तित्वको नकारनेके समान होगा और उस भयकी भावनाके आगे घुटने टेकनेके समान होगा जो आज सारे विश्वपर छाया हुआ है।

अहिंसाको अभी राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर काफी आजमाया नहीं गया है। गांधीजी ने जहाँ इसे आजमाया है वहाँ यह सफल रही है। 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' के सिद्धान्तका गुलाम होकर यूरोप क्या ईसाकी शिक्षाको बिल्कुल झुठला नहीं रहा है? ईसाई जगतके सामने आज यही प्रश्न है। सबसे बड़ी स्वतंत्रता क्या शक्तिका प्रतिरोध शक्तिके साधनोंसे कर सकनेमें है, या उसका उच्चतम और शाश्वत रूप उस रक्तमें से उभरेगा जो किसी एक राष्ट्र या अनेक राष्ट्रों द्वारा स्वेच्छासे बहाया जायेगा?

सलीब रे, तूने मुझ,

गिरे हुँको, सँभाला,

तेरे पाससे भागनेकी

फिर में कैसे करूँ कामना।

धूलमें पड़ा था,
बुझ गई थी जीवन-ज्योति ।
और धरती से फूट रहा है
— जीवनका रक्त-सुमन,
जिसे कभी नहीं है मुरझाना ।

इस पत्रसे सच्चे शंकालुओंको यह विश्वास हो जाना चाहिए कि ईसाने जिस प्रेमका उपदेश दिया था और जिस प्रेमको अपनाया था, वह मात्र वैयक्तिक गुण नहीं था, बल्कि तत्त्वतः सामाजिक और सामूहिक गुण था। ईसासे छः सौ साल पहले बुद्धने भी यही उपदेश दिया था और यही मार्ग अपनाया था।

बारडोली, २० जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-३-१९३९

३५१. पत्र : अकबर हैदरीको

बारडोली

२० जनवरी, १९३९

प्रिय सर अकबर,

मुझे आपके तार मिले और इसी माहकी ५ तारीखका पत्र भी। संलग्न दस्तावेज भी मिल गये जो बादमें आये। ये दो दस्तावेज वर्धासे पता बदलकर भेजे गये थे और इससे पहले कि मैं उत्तर भेज सकता, मुझे राज्य-कांग्रेसके अपने मित्रोंसे मुलाकात करनी थी। इसलिए देर हो गई है; तदर्थ आप क्षमा करें।

सबसे पहले मैं आपके पत्रके मित्रतापूर्ण स्वरके लिए आपको धन्यवाद दे दूँ। आपसे इससे भिन्न या इससे कमकी आशा भी नहीं थी।

फिर भी इस पत्रसे मुझे सन्तोष नहीं हुआ है। मेरी प्रार्थनासे सम्बद्ध बात एक ही थी और वह थी सविनय अवज्ञा आन्दोलनको वापस लेते हुए राज्य-कांग्रेस द्वारा जारी किया गया घोषणापत्र^१ तथा उसकी भाषा। यदि इससे सारी अपेक्षाएँ पूरी हो जातीं तो इसका परिणाम तत्काल यह होना चाहिए था कि उन सब कैदियोंको रिहा कर दिया जाता, जिन्होंने अन्दर रहते हुए और राज्य-कांग्रेसके सदस्योंके रूपमें सत्याग्रह किया था।

श्री काशीनाथराव वैद्यका वक्तव्य भी अप्रासंगिक था। राज्य-कांग्रेसका घोषणापत्र उनके सामने नहीं था। यदि उन्हें घोषणापत्रके फलितार्थोंका ज्ञान होता तो वह कभी जेल नहीं जाते। तो भी राज्य-कांग्रेसके घोषणापत्रके आधारपर ही

१. देखिए “हैदराबाद राज्य-कांग्रेसके लिए वक्तव्यका मसविदा”, पृ० २६८-९।

उनके मामलेमें माफी दे दी जानी चाहिए। श्री काशीनाथराव वैद्यका वक्तव्य पढ़नेपर आपके पत्रके आशयकी पुष्टि नहीं होती। मैं उनके वक्तव्यको सौम्य और नम्रतापूर्ण मानता हूँ। उसमें धमकी की कोई बात नहीं है। उन्होंने संयत ढंगसे और तर्कपूर्वक राज्य-कांग्रेसकी स्थितिको स्पष्ट करनेकी कोशिश की है और अपनी सजा सुनाये जानेकी तारीख तककी घटनाओंको पेश किया है। यह ध्यानमें रखने योग्य है कि उन्होंने सविनय-अवज्ञा स्थगित किये जानेकी बात स्वीकार कर ली है और राज्य-कांग्रेसके सदस्योंसे अनुरोध किया है कि वे सविनय अवज्ञा न करें।

आर्यन लीग और हिन्दू महासभाके कार्योंको राज्य-कांग्रेसकी गतिविधियोंसे अलग करके देखना चाहिए। राज्य-कांग्रेसका उनके साथ एकीकरणका इरादा कभी नहीं था।

क्या आप यह चाहते हैं कि मैं इस बातका पता लगाऊँ कि सरदार पटेल, श्री देव या श्री भूलाभाईने क्या कहा या क्या किया? सच तो यह है कि यद्यपि मैं फिलहाल सरदारके साथ ही रह रहा हूँ, मैंने आपका पत्र उन्हें नहीं दिखाया है। यह बात नहीं कि मैं आपका पत्र उन्हें दिखाना नहीं चाहूँगा, लेकिन बात यह है कि उनके पास उनका अपना निश्चित काम है जैसाकि मेरे पास अपना है। तथापि यदि उन लोगोंकी रायका मेरे उद्देश्य या इस चर्चासे कोई सम्बन्ध होता तो मैं इस बातका पता लगा सकता हूँ कि उन्होंने क्या कहा था। बहरहाल, यदि आप चाहते हैं कि मैं इसका पता लगाऊँ तो मैं ऐसा खुशीसे करूँगा।

मैंने किसीको गुप्तरूपसे हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच समझौतेके प्रयत्नोंके खिलाफ सलाह दी थी, इस बातको आपने अपने मनसे निकाल दिया, वह ठीक किया। श्री नरसिंह रावको अपने साथ बाबा लाया था। मौलवी बहादुर यार जंग भी उस दलमें शामिल होनेवाले थे। परन्तु वह आ नहीं सके। वहाँ गतिरोध की स्थिति आ गई थी। इसलिए मैंने उन्हें सलाह दी कि वे आगे न बढ़ें अपितु मौलाना अबुल कलाम आजादकी सलाहका इन्तजार करें और उनके निर्देशनमें काम करें। मौलाना साहब इस वक्त आपसे पत्र-व्यवहार कर रहे हैं।

अब 'वन्देमातरम' के बारेमें। कुछ विद्यार्थी मेरे पास आये जरूर थे। मैंने उनसे कहा कि 'वन्देमातरम' धार्मिक प्रार्थना नहीं है तो भी उन्हें पूरा अधिकार है कि वे इसे अपने कमरोंमें या अपने प्रार्थना-कक्षमें गायें। मैंने उनसे यह भी कहा कि यदि वे अपनी बात [अधिकारियोंके समक्ष] रीतिपूर्वक पेश करें तो उनकी शिकायत दूर हो जानी चाहिए, और जबतक शिकायत दूर न हो तबतक, यदि कहीं और नहीं जा सकते, अपनी पढ़ाई बन्द रखें। उस्मानिया विश्वविद्यालय द्वारा जारी किया गया स्पष्टीकरण मैंने देखा है। उससे मुझे सन्तोष नहीं हुआ है। मेरा यह विचार जरूर है कि यह ऐसा मामला है जिसे आपको जल्दी ही सुलझा लेना चाहिए। पूरे तथ्य मेरे पास नहीं हैं। इसलिए यदि मैंने गलती की हो तो कृपया आप मेरी भूल दुरुस्त कर दें। परन्तु कहनेकी जरूरत नहीं कि यह सवाल एक अलग और स्वतन्त्र सवाल है।

मैंने इस मामलेमें कोई दिलचस्पी नहीं ली है। मैं विद्यार्थियोंका मार्गदर्शन नहीं कर रहा हूँ। जो मेरे पास आये थे उनसे मैंने कह दिया था कि यद्यपि मैं यह मानता हूँ कि उनका यह प्रश्न महत्वपूर्ण है परन्तु उसका अध्ययन करनेके लिए मेरे पास वक्त नहीं है।

आपका कहना है कि शराबी और इस तरहके दूसरे लोग सत्याग्रह करके जेल गये हैं। मुझे सूचना देनेवालोंका कहना है कि यदि ऐसे लोग जेल गये हैं तो उन्हें ऐसा करनेका अधिकार नहीं दिया गया था और राज्य-कांग्रेससे उनका कोई सम्बन्ध नहीं था।

मेरा विश्वास है कि आपके पत्रके सभी मुद्दोंका जवाब इसमें आ गया है।

यदि मेरे तर्कमें कुछ सार हो तो मैं वही प्रार्थना फिरसे दोहराता हूँ कि राज्य-कांग्रेसके सभी कैदी रिहा कर दिये जायें और राज्य-कांग्रेसको, राजनीतिक या दूसरी तरहकी जो भी वैधानिक कार्रवाइयाँ हैं, उन्हें चालू रखनेकी अनुमति दे दी जाये।

आशा है, आप पूर्ण स्वस्थ होंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६८४६) से।

३५२. पत्र : ना० २० मलकानीको

बारडोली

२० जनवरी, १९३९

प्रिय मलकानी,

तुमने बैंकर^१ को जो पत्र लिखा है उससे मैं शर्मिदा हूँ। उसकी जो प्रति मुझे मिली है उसे मैं साथ संलग्न कर रहा हूँ। क्या एजेंसीके विषयमें तुम्हारी धारणा इतनी खराब और खादीका महत्व इतना कम है कि तुम वैसी बातें लिखनेको बाध्य हो गये? खादीके प्रति जैसा तिरस्कार तुमने दिखाया है, उसे सहन करनेकी अपेक्षा मैं यह बात ज्यादा पसन्द करूँगा कि खादी सिन्धमें नष्ट ही हो जाये। निस्सन्देह तुम्हारे लिए खादी-कार्यका स्थान पहला होना चाहिए और दूसरे किसी भी काम का उसके बाद। मैं नहीं चाहता कि तुम तपाकसे यह उत्तर दो कि चोइथराम और यहाँ तक कि जयरामदाससे तुम्हारी जो अपेक्षा थी, उनका काम उससे भी ज्यादा खराब रहा है। तब वह मजबूरीकी बात थी।

मुझे गहरी चोट पहुँची है।
सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३०) से।

३५३. पत्र : मीराबहनको

बारडोली

२० जनवरी, १९३९

चि० मीरा,

तुम्हारे सारे पत्र, संक्षिप्त हों या लम्बे, कला-कृतियाँ होते हैं। मुझे खुशी है कि तुम्हारी जानके साथ अच्छी पट रही है। अगर धीरज रखोगी तो तुम देखोगी कि पठानके लिए तुम्हारे दिलमें आदर बढ़ता जाता है। वह बहुत बढ़िया आदमी होता है—एक बार उसे तुमपर विश्वास हो जाये तो खुले दिलसे व्यवहार करता है।

मेरे स्वास्थ्य की तुम्हें चिन्ता करनेकी आवश्यकता नहीं है। जितनी सावधानी रख सकता हूँ, रख रहा हूँ। जितना आराम सम्भव है, ले रहा हूँ। रक्तचाप काबूमें है। मुझे डर है कि जब तक मैं बनवासी न बन जाऊँ और समस्त बाह्य गतिविधियाँ न छोड़ दूँ, यह जरूर घटता-बढ़ता रहेगा। लेकिन वह तो गलत होगा। मुझे ऐसी कला खोजनी होगी, जिससे मैं दीर्घजीवी होते हुए अन्त तक काम करता रहूँ। युवावस्थामें अपनी बहुत-सी जिन्दगी व्यर्थ गाँवानेके कारण मैं वह कला पूरी तरह तो कभी सीख नहीं सकूँगा। अब जो भी जिन्दगी बची है, उसमें परमात्मा मुझे जो भी दे, उसके लिए हमें आभारी होना चाहिए।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४२५) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००२० से भी।

३५४. पत्र : अमृतलाल टी० नानावटीको

बारडोली

२० जनवरी, १९३९

चि० अमृतलाल,

काकासाहबका पत्र तुम्हें कल भेजा था। तुम्हें जाना पड़ेगा, यह सुनकर यहाँ सब लोगोंको दुःख हो रहा है। संगीत वहाँकी एक स्थायी चीज मानी जाती थी, वह अब बन्द हो जायेगा। यह बात किसीको अच्छी नहीं लगती। मुझे भी यह बात अखरती जरूर है। अगर तुम्हारा शरीर साथ दे, तो मेरा यह सुझाव है। तुम्हें रोज सवेरे फल और दूधका नाश्ता करके ६ बजे पैदल चल देना चाहिए। तुम आरामसे काकासाहबके पास सवा-सात बजे पहुँच जाओगे। साढ़े-सातसे काम शुरू किया जा सकता है। रोज पाँच बजे या साढ़े चार बजे काम बन्द करो और छः या साढ़े-छः बजे सेगाँव पहुँचो। ऐसा कर सको, तो दोनों पक्ष सध जायें। स्वस्थ शरीरवालेके लिए इतनी मेहनत कुछ भी नहीं है। दक्षिण आफ्रिकामें मैं अपने ऑफिससे सात मील दूर रहता था, और रोज या तो पैदल या बाइसिकिलसे आया-जाया करता था। लेकिन तुम्हारे ऊपर मुझे अधिक बोझ नहीं डालना है। विचार करके देखना। यह पत्र काकासाहबको दिखाना और जो उचित हो सो करना। काकासाहबके पास तो जाना ही है, इतना निश्चित मानकर बाकी विचार करना। काकासाहब २४ घंटे तुम्हारी हाजिरी चाहते हों, ऐसा मैं नहीं समझता। लेकिन अगर ऐसा हो, तो फिर प्रश्न नहीं उठता। यदि वे तुम्हें अपने साथ सफरमें भी ले जाना चाहें, उस दशामें भी फिर सेगाँवमें सेवा करना सम्भव नहीं रह जाता। मैंने यह कुछ-कुछ अँधेरेमें लिखा है।

बाकी सब ठीक चल रहा होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०७८३) से।

३५५. तार : बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' को

बारडोली

२१ जनवरी, १९३९

बालकृष्ण

'प्रताप' कार्यालय

कानपुर

पूरा ध्यान दे रहा हूँ।^१ मेहताब^२ मेरा मार्गदर्शन कर रहे हैं।

गांधी

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल ।

३५६. पत्र : जयरामदास दौलतरामको

बारडोली

२१ जनवरी, १९३९

प्रिय जयरामदास,

तुम्हें स्वयं नहीं लिखना चाहिए, बल्कि किसी औरसे लिखनेको कहना चाहिए। न जाने क्यों मुझे ऐसा लगता है कि हैदराबाद जाना गलत है। माताएँ प्रायः समझदार कम और स्नेहमयी अधिक होती हैं। परन्तु यदि उनकी इच्छा पूरी न करनेसे तुम्हारा मन उद्विग्न होता है तो मैं समझता हूँ कि तुम्हें जरूर हैदराबाद चले जाना चाहिए। क्या इन्दौर जाना सम्भव नहीं है? माथेरान क्यों नहीं? नासिक या देवलाली अच्छे स्थान हैं। इस दृष्टिसे सिंहगढ़ भी अच्छा है। और वहाँ तुम्हें दिनशा मेहताकी भी सहायता मिल सकती है। मेरी बड़ी इच्छा है कि तुम शीघ्र ही कोई निश्चय कर लो।

लिखना नहीं।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९२५३) से; सौजन्य : जयरामदास दौलतराम ।

१. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपने तारमें गांधीजीका ध्यान ढेंकानाल सत्याग्रह शिविरमें शरणार्थियों की दुर्दशाकी ओर आकृष्ट किया था।

२. हरेकृष्ण मेहताब।

३५७. पत्र : सुशीला गांधीको

बारडोली

२१ जनवरी, १९३९

चि० सुशीला,

तेरा पत्र अभी मिला। मेरा मौन चल रहा है, इसलिए जवाब तुरन्त दे पाता हूँ। अगर तुझे रोकनेका कारण ममता मात्र हो, तो तेरा दक्षिण आफ्रिका चले जाना ही ठीक होगा। तेरे जानेसे मणिलालको मदद भी मिलेगी। सीताकी तुझे चिन्ता रहती है, मुझे नहीं। वहाँ भी वह कुछ तो सीखेगी ही। अतः मेरी राय यह है: अगर अकोलामें तेरी सेवाकी जरूरत न हो, तो तू मजसे दक्षिण आफ्रिका चली जा। यह करना तेरा कर्तव्य है। लेकिन अब तू ठहर ही गई है, तो मणिलालको लिखकर उसकी राय भी जान ले, यही बुद्धिमानी है।

सीताको जो पुस्तक मिली थी, वह उसे पढ़ती है क्या?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८९१) से।

३५८. पत्र : चन्दन पारेखको

बारडोली

२१ जनवरी, १९३९

चि० चन्दन,

तेरा पत्र मिला। मैंने तुझे रुपये भेजे या नहीं? कन्तु यहाँ नहीं है। मुझे याद है कि मैंने उससे कह दिया था।

ह० के जो पत्र मेरे पास पड़े हैं, भेज रहा हूँ। तू ही इन्हें रखना। अब इन्हें प्रगट करनेकी जरूरत नहीं रही। उसने दक्षिणामूर्ति छोड़ दिया, स्त्री-शिक्षा भी छोड़ दी। यही हमारी माँग थी। इन पत्रोंका तुझपर क्या असर होता है, मुझे बताना। अब ह० को तेरे लिखनेकी कोई जरूरत नहीं रही। फिर भी, अगर तेरी इच्छा हो, तो लिखना और पत्र मुझे भेजना। मुझे उचित लगेगा, तो भेजूंगा। अब ह० काण्डका बोझ तेरे मनपर नहीं रहना चाहिए।

अपने अध्ययनमें जुट जाना। तब्रीयत बिगड़ने न देना। रोज खूब चलनेका ध्यान रखना। वहाँ फल मिलते हैं या नहीं? मसालों और तेलसे बचना।

अपने अक्षर सुधारना। गुजराती भाषामें भी सुधारकी गुंजाइश है। अंग्रेजोंमें तो है ही। मुझे लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनरुत्तः]

शंकरका सुन्दर पत्र पैसोंकी पहुँचके बारेमें था।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९४७)से; सौजन्य : सतीश द० कालेलकर।

३५९. पत्र : पुरुषोत्तम के० जेराजाणीको

बारडोली

२१ जनवरी, १९३९

भाई काकुभाई,

सरकारको कम दामपर बेचनेका जो तुमने कारण बताया है वह यहाँ लागू नहीं होता। बड़ा आर्डर मिलनेपर हमें दाम तो कम बताने ही चाहिए, क्योंकि ऐसा करनेमें खर्च भी कम होता है। अब तुमने जो लिख दिया सो ठीक है। मैंने तो भविष्यके लिए सुझाव दिया है। मेरे सुझावके औचित्य-अनौचित्यके विषयमें शंकरलालके साथ बातचीत करना। अन्तमें तुम्हारे अनुभवके सामने मेरी राय तो गौण ही बैठती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०८४०) से; सौजन्य : पुरुषोत्तम के० जेराजाणी।

३६०. पत्र : सर डब्ल्यू० बीकम सेंट जॉनको

बारडोली

२२ जनवरी, १९३९

प्रिय मित्र,

मेरे १८ तारीखके पत्रका तुरन्त उत्तर देनेके लिए आपको धन्यवाद।

भेंटके बारेमें यदि आप श्री चुडगरके विवरणको नहीं मानते तो मुझे आशा थी कि आप अपना विवरण मुझे भेजेंगे। यह मामला इतना महत्वपूर्ण है कि मैं इसे यों ही छोड़ नहीं सकता। यदि आप चाहें तो चुडगर द्वारा दिये गये विवरणके साथ मैं आपका विवरण भी खुशीसे छाप दूंगा।^१

हृदयसे आपका,

सर डब्ल्यू० बीकम सेंट जॉन
दीवान, जयपुर-राज्य, जयपुर

[अंग्रेजीसे]

पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३९९। सी० डब्ल्यू० ७८०९ से भी;
सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला।

३६१. पत्र : ना० र० मलकानीको

बारडोली

२२ जनवरी, १९३९

प्रिय मलकानी,

महादेव अभी काम नहीं कर रहे हैं। और खजांची कनु^१में अभी इतना बचपना है कि वह भार उठा नहीं सकता। वह लड़का भला है, पर यदि कोई अपने कर्तव्य पर ध्यान न दे तो कोरी भलमनसाहत किस काम की? चाँदवानीका चेक आते ही मैंने उसे तुम्हारे पास भेजनेको दे दिया था। वह उसे भेजना भूल गया। फिर छुट्टीपर चला गया। आज पूछनेपर उसने निर्लज्जतासे बताया कि उसकी उसे बिलकुल याद ही नहीं रही। कसूर उसका नहीं मेरा है। मैंने उसे अच्छी तरह प्रशिक्षित नहीं किया है।

कृपया क्षमा करना। चेक इस पत्रके साथ ही है।

१. सर बीकमके उत्तरके लिए, देखिए “जयपुर”, ३०-१-१९३९।

२. कनु गांधी।

यदि तुम ग्राम-पुनर्निर्माण कार्य पर एकाग्रतासे ध्यान न दे सको, तो इसे लौटा देना। मुझे चाँदवानीके प्रति ईमानदार रहना है। यदि तुम इस कार्यपर अपना सारा ध्यान नहीं लगा सकते तो मुझसे हर महीने रुपयेकी आशा मत रखो। वैसे हर हालतमें मैं तुम्हें तीन महीने तो रुपये भेजूंगा ही।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३१) से।

३६२. पत्र : सुशीला गांधीको

बारडोली

२२ जनवरी, १९३९

चि० सुशीला,

मणिलालका पत्र मैं कल ही पूरा पढ़ पाया। वह पत्र इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। लगता है, सीधा आ गया है। इस पत्रको पढ़कर मुझे यही लगा कि तुझे जो पहला स्टीमर मिले उससे भागना चाहिए। कलका लिखा मैं रद करता हूँ। मणिलालका यह पहला पत्र है, जिससे मुझे सन्तोष हुआ है। तुम दोनोंके पत्रोंमें सामान्यतः कुछ होता नहीं। पत्र ऐसे होने चाहिए कि उनमें लिखनेवालेके जीवनकी झलक मिले। यह पत्र मुझे इतना भाया है कि मुझे वापस चाहिए। बा की राय तो है ही कि तुझे तुरन्त मणिलालके पास जाना चाहिए। मैं जब यह राय दे रहा हूँ तब मुझे अकोलाकी जंरुरतका भान भी है ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८९२) से।

३६३. पत्र : मनुबहन सु० मशरूवालाको

बारडोली

२२ जनवरी, १९३९

चि० मनुड़ी,

तुझे मैं खुद पत्र न लिखूँ, बल्कि दूसरेसे लिखाऊँ, तो ठीक होगा न? कल शारदासे लिखाया। इसपर दादी नाराज़ हो गई और बोली, “मनुको पत्र लिखने जितना भी समय तुम्हें नहीं मिलता, और वह लड़की तुम्हारे लिए मरी जाती है।” अब तू मरी जाती है या नहीं, यह तो तू जाने, लेकिन ले यह पत्र। अपने समाचार तो तू बिलकुल नहीं लिखती, न सुरेन्द्रको लिखती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १५७४) से; सौजन्य : मनुबहन सु० मशरूवाला।

३६४. पत्र : रामीबहन के० पारेखको

बारडोली

२२ जनवरी, १९३९

चि० रामी,

तेरी लिखावट कई महीनों (या शायद वर्षों) बाद देखी। तू लिखती रहे तो अच्छा लगे। मैं तो काममें लगा रहता हूँ, न भी लिखूँ, तब भी तुझे लिखना ही चाहिए। बच्चों-सहित तुम दोनों मजेमें होगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७२७) से।

३६५. पत्र : डाह्याभाई म० पटेलको

बारडोली

२२ जनवरी, १९३९

भाई डाह्याभाई,

तुम्हारा पत्र मिला था। नैतिक दृष्टिसे तो तुम्हारे कामकी सफाई नहीं दी जा सकती। तुम किसान नहीं माने जा सकते। बल्कि ऐसा कहा जा सकता है, कि किसान न होते हुए भी, तुमने किसान माने जानेके लिए जाल रचा। लेकिन अपने इस काममें तुम्हें अनीतिकी गंध नहीं आई, तो अभी तो कुछ करने-जैसा नहीं लगता। जल्द-से-जल्द बोर्डसे अलग हो जाओ, यह शायद उचित होगा। इस सम्बन्धमें कानूनको ठीक समझनेवाले किसी वकीलसे पूछ कर, वह जैसा कहे वैसा करो। यही सबसे अच्छा उपाय मालूम होता है।

शिकायत करनेवालेको मैं कोई जवाब नहीं देना चाहता। वह इन बारीकियोंको नहीं समझेगा।

रामजीभाईके बारेमें समझा।

झुमड़े और मरे डोरोके बारेमें तो मुझे याद नहीं है। महत्वकी बात हो, तो फिर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २७१०) से; सौजन्य : डाह्याभाई म० पटेल।

३६६. पत्र : अमृतुस्सलामको

बारडोली

२२ जनवरी, १९३९

प्यारी बेटे,

तेरी चिट्ठी मिली। मैं क्या कहूँ? बा दुःखी है सही। वह चाहती है तू जल्दी आ जा। मैं नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि वहाँ तेरा काम है तो नहीं आना। भाइयोंके पास भी जाना चाहिये। मेरे सिवाय नहीं रह सकती वह पागलपन है। फिर तो जैसा चाहे सो कर।

मेरे शकके बारेमें क्या लिखूँ? मेरे निकालनेसे नहीं निकलेगा। वखत ही निकाल सकता है। अपने आप घुसा है और जाना है तो अपने आप जायगा। तू

स्थिर हो जायगी। अपना फर्ज अदा करेगी तो शक निकल ही जायगा। कोई न कोई खत तो तुझे मिला करेगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४११) से।

३६७. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

बारडोली

२१ जनवरी, १९३९

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारे दोनों खत मिले।

भाईको अच्छा होगा, दिल्लीके . . . के बारेमें समजा।

दिल्लीके नजदीक दा० गोपीचंद काम करे तो भले करे।

प्रार्थना भवनमें ज्यादा पैसा हरिजन आश्रम देवे उसमें क्या हानि हो सकती है? यह तो स्वीकार्य मानना चाहिये। उसमें विचार करनेकी आवश्यकता नहीं है।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। यहां काफीसे अधिक काम रहता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४७६) से।

३६८. देशी राज्य

देशी राज्योंमें स्वतन्त्रताका आन्दोलन एक नया रूप धारण करता जा रहा है। इतिहासकी पुनरावृत्ति होनेवाली है। तालचेर और ढेंकानालने दमनमें सबसे बाजी मार ली है। तालचेरकी कुल ७५,००० की आबादीमें से २६,००० आदमी तालचेर छोड़कर ब्रिटिश उड़ीसामें चले गये हैं। यह कोई मामूली बात नहीं है। इन शरणार्थियोंको जो तकलीफें बरदाश्त करनी पड़ रही हैं, प्रो० रंगाने उनका हृदय-विदारक विवरण प्रकाशित किया है। महान समाज-सुधारक और परोपकारी ठक्कर बापाने भी, जो कहींसे भी आर्तवाणी सुनाई पड़ते ही सहायताके लिए पहुँच जाते हैं, उनकी बातोंका समर्थन किया है। कोई दो महीनोंसे वे लोग निर्वासित हैं। मैंने आशा की थी कि वे अपने घरोंको लौट गये होंगे। लेकिन मालूम पड़ता है कि इन लोगोंके भाग्यमें अभी भी शान्ति नहीं बदी है।

१. मूलमें शब्द स्पष्ट नहीं हैं।

अकेले उड़ीसाके लिए यह सम्भव नहीं है कि वह इनकी सहायताका काम सँभाल ले। उड़ीसाकी सरकारके पास इतना खपया नहीं, जो इनके लिए खर्च कर सके। इसलिए मैं उम्मीद करता हूँ कि मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी शरणार्थियोंके लिए कोई काम ढूँढ़कर उनकी सहायताका भार अपने ऊपर ले लेगी।

राणपुरमें पोलिटिकल एजेंटकी हत्या हो गई है।^१ इसलिए पुलिस और फौज निर्दोष स्त्री-पुरुषोंके ऊपर मनमाने जुल्म कर रही हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि उड़ीसाकी सरकार परिस्थितिका दृढ़तासे मुकाबला करेगी और साम्राज्यीय सत्ताको मनमानी न करने देगी। साम्राज्यीय सत्ता तो अपने वर्गके किसी आदमीको उन परिस्थितियोंमें खोते ही अपनी बुद्धि खो बैठती है, जिन परिस्थितियोंमें मेजर बजलगेटकी दुर्भाग्यपूर्ण हत्या हुई है। इस हत्यासे हमको यह जान लेना चाहिए कि ऐसे कृत्योंसे जनताको कोई लाभ नहीं हो सकता।

जयपुर रियासत जयपुरियोंको ऐसी शिक्षा देना भी बरदाश्त नहीं करती जिससे वे उत्तरदायी शासनकी माँग करें, उसके योग्य बनें, और अब वह अपने ही एक सर्वोत्तम पुत्रको जिन्दा ही दफना देना चाहती है।

राजकोटके ठाकुरसाहब जो बात कह चुके, उसीसे उनको मुकरवाने और प्रजाको गम्भीरताके साथ दिये उनके वादेको तुड़वानेमें उनके सलाहकारोंको कोई पक्षो-पेश नहीं होता। इस सम्बन्धमें मेरे पास जो सबूत हैं, यदि उनपर विश्वास किया जाये, तो पश्चिमी रियासतोंके रेजिडेंट खुद ही इस वचन-भंगमें शामिल हैं। उसके लिए तो कांग्रेस और सरदार एक बला हैं। राजकोटमें हिन्दू-मुसलमानों तथा आम जनता और भायातोंके बीच झगड़े करानेके लिए भूमिका तैयार की जा रही है। यों इनमेंसे कोई भी अभी तक आपसमें नहीं लड़ा है। आशा है कि मुसलमान और भायात खुद अपनी मुक्तिके दुष्मन साबित नहीं होंगे। सुधारकोंका काम तो स्पष्ट है। उन्हें सभी तरहके संघर्षोंको रोकना चाहिए और मौका पड़नेपर अपने ही आदमियोंके हाथों मरनेके लिए तैयार रहना चाहिए। अहिंसात्मक असहयोगके हथियारका प्रयोग उन्होंने अद्भुत सफलताके साथ किया है। अब भी चुपचाप बैठे हुए वे पूरी तरह इसको अपना सकते हैं। असली मौलिक तो प्रजा ही है, राजा और राज्याधिकारी तो उसके नौकर हैं, जिनका काम अपने मालिकोंकी इच्छाका पालन करना है। जागृत और सचेत प्रजाके लिए, जो एकमतसे सोचना और काम करना जानती है, यह बात अक्षरशः सत्य है।

अन्य रियासतोंकी प्रजासे मैं प्रार्थना करूँगा कि वह आगे बढ़नेमें जल्दबाजीसे काम न ले। वह धैर्य और संयमसे काम लेगी, तो स्वतन्त्रता उसे मिलकर रहेगी। उसे चाहिए कि आपसमें मिल-जुलकर रहे और अपनी शक्तिको समझे। आपसी मतभेद उसमें नहीं रहने चाहिए। फूट डालकर शासन करनेकी अनुत्तरदायित्वपूर्ण भेद-नीतिका किस तरह मुकाबला किया जाये, इसका उसे ज्ञान होना चाहिए। सुधारक अहिंसाकी कलामें प्रवीण हों तो यह कोई मुश्किल बात नहीं है।

त्रावणकोरवाले जरा सावधान रहें। इस बातका मेरे पास काफी सबूत मौजूद है कि वहाँ हिन्दुओं, ईसाइयों और एजवाओंमें फूट डालनेकी कोशिश हो रही है। उन्हें उत्तरदायी शासन प्राप्त करना है, तो इस बात को भूल ही जाना होगा कि वे भिन्न-भिन्न जातियोंके हैं। उन्हें यह सीखना होगा कि वे एक और अखण्ड राजनैतिक इकाई हैं और हिंसाकी सभी शक्तियोंपर नियन्त्रण रखना होगा। यदि उन्हें अहिंसात्मक उपायोंसे स्वतन्त्रता प्राप्त करनी है तो सारे त्रावणकोरमें पुलिसकी मददके वगैर शान्ति बनाये रखनेकी जिम्मेदारी भी उन्हें उठानी होगी। अज्ञानी जनतामें प्रचार करनेके लिए सभा और जलूस आवश्यक हैं। लेकिन नागरिकताके अपने कर्तव्यको समझनेवाली जागृत जनताके लिए उनकी कोई जरूरत नहीं है। स्वराज्य जागृत जनताके ही लिए है, निद्राग्रस्त और अज्ञानी जनताके लिए नहीं है।

बारडोली, २३ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २८-१-१९३९

३६९. अन्दरकी गन्दगी

मेरा और मेरे साथियोंका बहुत-सा वक्त कांग्रेसजनोंमें व्याप्त भ्रष्टाचारकी शिकायतों पर ध्यान देनेमें जाता है। इस तरहके पत्रोंका एक ताजा नमूना बम्बईके एक कांग्रेसीने भेजा है। वह लिखते हैं :^१

पिछले इतवारको बम्बईमें त्रिपुरी-कांग्रेसके लिए प्रतिनिधियोंका चुनाव हुआ था। मतदान सबरे ८ बजेसे शुरू होनेवाला था। मैं कोई पौने नौ बजे कांग्रेस-भवन पहुँचा, लेकिन यह जानकर तो मैं हैरतमें आ गया कि इस ४५ मिनटके थोड़े-से समयमें ही कोई मेरे नामसे मतदान कर चुका था। और भी बहुतों को ऐसा ही अनुभव हुआ। मैंने इसका पता लगानेकी कोशिश की और यद्यपि (जैसी आशा थी) ऐसा करनेवालेका तो मैं पता नहीं लगा सका, मगर मुझे मालूम हुआ कि दूसरोंके नामसे मतदान करनेका यह काम नियमित रूपसे संगठित था और मतदान शुरू होते ही सामूहिक रूपसे शुरू हो गया था। ऐसी हालतमें यह स्वाभाविक ही था कि जो लोग आध घंटेकी भी देरीसे आये, उन्हें निराशा होना पड़ा, क्योंकि इस बीच उनके नामसे मतदान हो चुका था।

इस गन्दगीको रोकनेके लिए अनेक उपाय आपको सुझाये जा चुके हैं, लेकिन मेरी नम्र सम्मतिमें जब तक हम मतदाताओंको मतकी पर्ची देनेसे पहले अपनी सदस्यताके कार्ड पेश करनेकी और उनपर बाक्यदा मुहर लगवानेकी पद्धति न डालेंगे, तब तक इस बारेमें कुछ नहीं हो सकता। . . .

१. यहाँ पत्रका एक अंश ही उद्धृत किया जा रहा है।

इस पत्रमें सुझाई हुई बात बिल्कुल ठीक है। मेरा तो यही खयाल था कि अपनी शिनाख्तका कार्ड पेश करनेपर ही हरएक मतदाताको मत देने दिया जाता है।

मगर उपर्युक्त पत्रको उद्धृत करनेमें मेरा मंशा सिर्फ यही नहीं है कि बम्बईमें होनेवाली जालसाजीकी ओर ध्यान आकर्षित करके उसको रोकनेका उपाय बतायें। यह पत्र तो एक तरहका संकेत है। जाली मत देनेके अलावा कांग्रेस-रजिस्ट्रारोंमें भी पूरी गड़बड़ की जाती है और उनमें जाली नाम दर्ज रहते हैं। इन रजिस्ट्रारोंकी वही कीमत है जो जाली सिक्कोंसे भरी हुई तिजोरीकी हो सकती है। कांग्रेसके चुनावोंमें झगड़ा होनेकी बात आम होती जा रही है। कांग्रेसजनोंकी अनुशासनहीनता हर जगह बढ़ती ही जा रही है। उनमें से अनेक तो ऐसे भाषण देते हैं जिनमें न केवल उत्तरदायित्वकी भावना नहीं होती बल्कि जो हिंसात्मक भी होते हैं। बहुत-से सदस्य हिंदायतोंका पालन नहीं करते। बिहारका उदाहरण इस समय उल्लेखनीय है। बिहारके किसान कांग्रेसी समझे जाते हैं। उनके नेता कांग्रेसी हैं। लेकिन बिहारके मन्त्रियोंको किसानोंके विद्रोह तथा प्रदर्शनका सदा भय बना रहता है। अभी दो दिन पहलेकी बात है, जब खानदेशसे एक सुप्रसिद्ध कांग्रेसी कार्यकर्ताके नेतृत्वमें कलेक्टरके बंगलेपर किसानोंके प्रस्तावित कूचकी तार द्वारा खबर मिली थी। इसी तरहके और भी अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं।

रोमके पतनसे बहुत पहले उसका ह्रास शुरू हो गया था। जिस कांग्रेसकी परवरिश पचास सालसे अधिक वर्ष तक देशके सर्वोत्तम मस्तिष्कवाले लोग करते रहे हैं, वह अपने अन्दर ह्रास शुरू होते ही नष्ट नहीं हो जायेगी। और अगर भ्रष्टाचारका वक्त पर ही मुकाबला कर लिया जाये, तब तो उसके नष्ट होनेकी कोई जरूरत ही नहीं है।

मेरी रायमें कांग्रेसके सामने सबसे बड़ा काम इस चतुर्मुखी ह्रासका मुकाबला करना है। अपने लक्ष्यसे अभी भी हम बहुत दूर हैं। जब तक कि हमें अपने साधनों और उनके अर्थ तथा फलितार्थोंका ही ठीक निश्चय न हो तब तक उसकी ओर हम बढ़ ही नहीं सकेंगे। और जब परीक्षाकी घड़ी सचमुच आयेगी तब हम उसके लिए तैयार नहीं मिलेंगे। उस हालतमें अगर मुझे सत्याग्रहियोंकी किसी सेनाका नेतृत्व करनेके लिए कहा गया तो मैं उस बोझको नहीं उठा सकूंगा। यह एक बहुत बड़ी बातको स्वीकार करना है। लेकिन मैं अगर ऐसा न करूँ तो मैं कायर ही नहीं बल्कि उससे भी बड़ा अपराधी ठहराया जाऊँगा। जनसाधारणमें तो अहिंसाका भाव काफी परिमाण में मौजूद है, लेकिन जिन्हें जनसाधारणका संगठन करना है उनमें वह काफी परिमाण में नहीं है। और जिस तरह अपनी तिजोरीमें कुछ न होनेपर कोई बैकर बैंक नहीं चला सकता, उसी तरह जब तक बिना टालमटोल आज्ञा-पालन करनेवाले सैनिक न हों, तब तक कोई सेनापति किसी लड़ाईका संचालन भी नहीं कर सकता।

किसी कांग्रेसीको मुझे इस तरह सोचनेके लिए दोष नहीं देना चाहिए। कांग्रेसमें न होते हुए भी मैंने उससे अपना सम्बन्ध नहीं तोड़ा है। कांग्रेसवाले अब भी मुझसे उम्मीद करते हैं कि जब मेरी रायमें कुछ करनेका अवसर आये तब मैं

उनको आह्वान करूँ। यही नहीं, यदि ईश्वर चाहेगा तो मैं समझता हूँ कि मैंने अबतक जो लड़ाइयाँ लड़ी हैं उनसे भी ज्यादा जबरदस्त लड़ाईका नेतृत्व करनेकी मुझमें शक्ति और सामर्थ्य है। लेकिन रास्तेमें बड़े-बड़े रेगिस्तान हैं। उनमेंसे एकका मैंने यहाँ उल्लेख किया है जिसे कांग्रेसवाले देख सकते हैं, जिससे निपट सकते हैं। मेरे परदा उठाकर इस गन्दगीको लोगोंके सामने ले आनेसे कांग्रेसका कोई नुकसान नहीं होगा। हाँ, यदि इस बातको जानते हुए भी मैं लोगोंसे छिपाऊँ, तो जरूर नुकसान होगा।

इस समय कांग्रेसकी जो हालत है उसमें मुझे देशके अन्दर अराजकता और सर्वनाश फैलनेके सिवा और कुछ होता नजर नहीं आता। क्या त्रिपुरीमें हम इस कठोर सत्यका सामना करेंगे ?

बारडोली, २३ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २८-१-१९३९

३७०. ‘ कितने भगवत्परायण ! ’

कुमारी म्यूरियल लेस्टर, जो दुनिया घूमी हुई है, और गोलमेज सम्मेलनके दिनोंमें [लन्दनके] ईस्ट एण्डमें मेरी मेजबान थीं, आजकल सीमाप्रान्तमें हैं। बादशाह खानसे मिलनेके बाद वे उनके बारेमें लिखती हैं :

अब मुझे खान अब्दुल गफ्फार खाँको भलीभाँति जान लेनेके बाद, मैं ऐसा महसूस करती हूँ कि जहाँ तक अद्भुत व्यक्तियोंसे मिलनेका सवाल है, इस तरहका सौभाग्य मुझे अपने जीवनमें शायद कोई और नहीं मिलनेवाला है। वे ‘न्यू टेस्टामेंट’ की सौम्यतासे युक्त, ‘ओल्ड टेस्टामेंट’ के राजकुमार हैं। वे कितने भगवत्परायण हैं ! आपने उनसे हमारा परिचय सम्भव कराया, इसके लिए मैं आपकी आभारी हूँ।

वे कल हमें उटमंजई ले जा रहे हैं। मीरासे फिर भेंट करके खुशी होगी।

यह वैयक्तिक प्रमाण-पत्र यदि मुझे एक असन्तुलित मनकी अतिरंजना लगता, तो मैं इसे कभी प्रकाशित न करता। यह सच है कि म्यूरियल लेस्टर जिससे मिलती हैं, तुरन्त उसके उज्ज्वल पक्षको देख लेती हैं। यह कोई दोष नहीं, बल्कि एक गुण है। कोई भी व्यक्ति, भगवत्परायण मनुष्य भी, दोषसे मुक्त नहीं है। वह भगवत्परायण इसलिए नहीं है कि वह दोषमुक्त है, बल्कि इसलिए है कि वह अपने दोषोंको जानता है, उन्हें दूर करनेका प्रयास करता है, वह उन्हें छिपाता नहीं है और अपने-आपको सुधारनेके लिए सदा तैयार रहता है। खानसाहब, जो अपनेको खुदाई खिदमतगार कहनेमें गर्वका अनुभव करते हैं, ऐसे ही हैं। वे एक निष्ठावान मुसलमान हैं जिनकी नमाजों और रोज़ाओंमें कभी कोई नागा नहीं होता। ‘कुरान’ की उनकी व्याख्या इतनी उदार है जितनी मैंने अब तक नहीं देखी थी। खुदाई खिदमतगारोंमें कताई

आदि चालू करनेके लिए मैंने उन्हें जिन कार्यकर्ताओंकी सेवाएँ पेश कीं उसमें से उन्हें एकको चुनना था। उन्होंने जानबूझकर मीराबाई, मेडेलीन स्लेड, को चुना। वह अभी तक उसी घरमें रह रही थी जिसमें खानसाहब रहते हैं और अब खानसाहबके घरसे लगे कमरोंमें रह रही है। वहाँ वह अपनी कक्षा चलाती है। वह मुझे प्रायः नित्य पत्र लिखती है। यद्यपि वह जिनसे प्रेम करती है उन्हें बझती नहीं, फिर भी मुझे यह कहते हुए खुशी होती है कि म्यूरियल लेस्टरके मन पर इस महामना फकीरकी जो पहली छाप पड़ी है, उसकी उसके [मीराके] पत्रोंसे भी पुष्टि होती है। फिर भी अंग्रेज अधिकारियोंके लिए इस व्यक्तिका कोई उपयोग नहीं है। वे इससे डरते हैं और इसपर अविश्वास करते हैं। यह अविश्वास वैसे मुझे बुरा न लगता, पर इससे प्रगतिमें बाधा पड़ती है, इससे भारत और इंग्लैंडकी हानि होती है और इस तरह विश्वकी भी होती है।

बारडोली, २३ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २८-१-१९३९

३७१. इस्लामी संस्कृति

एक महान मुसलमान सज्जनने मुझे उस दिन कुछ ऐसे प्रश्न पूछे, जो मुझे अजीब-से मालूम हुए। अजीब इसलिए कि मेरा तो यह खयाल था कि हरएक मुसलमान जो मुझे जानता है — और यह महान मुसलमान सज्जन भी मुझे जानते हैं — वह मेरे बदले उनका जवाब दे सकता था। वह सवाल-जवाब यह है :

प्र० : मुसलमानोंके लिए क्या आप अब भी वही हैं, जोकि दक्षिण आफ्रिकामें थे — यानी उनके मित्र, पिता और रहनुमा।

उत्तर : मैंने दक्षिण आफ्रिकामें उनका या और किसीका पिता होनेका कभी दावा नहीं किया। उनका रहनुमा और दोस्त मैं बेशक था। (मैं यहाँ यह कह दूँ कि वहाँ मुसलमान और दूसरे लोग मुझे 'भाई' कहकर पुकारते थे।) चौबीस साल पहले दक्षिण आफ्रिकामें मैं उनके लिए जो था आज भी बिलकुल वही हूँ। दूसरे भारतवासियोंकी तरह मुसलमानोंको भी मैं सहोदर भाई समझता हूँ। जिन आम और खास अधिकारोंके अन्य भारतवासी हकदार हैं, उनका मुसलमानोंको भी हक है।

प्र० : तो जिस तरह आप अपनी हिन्दू-संस्कृतिकी उन्नति चाहते हैं, उसी तरह क्या आप उनकी संस्कृतिकी भी तरक्की चाहते हैं ?

उत्तर : बेशक। इसके विपरीत मैं कुछ और कर ही नहीं सकता, क्योंकि मेरा विश्वास है कि इस्लाम और दूसरे महान धर्म उतने ही सच्चे हैं, जितना सच्चा कि मेरा अपना धर्म है। इस्लाम और ईसाई धर्म अपने साथ जो संस्कृतियाँ यहाँ लाये, उनसे भारत और समृद्ध हुआ है। मौजूदा परस्पर-विरोधकी भावनाएँ, मेरी रायमें, टिकनेवाली नहीं हैं।

प्र० : आपकी इजाजत से मैं जरा साफ बात करूँगा। अकबर जो सपना देखा करता था, उसमें मेरा विश्वास नहीं है। वह सब मजहबोंको मिलाकर एक नया धर्म स्थापित करना चाहता था। क्या आपका भी वैसा ही कोई ध्येय है?

उत्तर : मुझे पता नहीं कि अकबर कैसा सपना देखा करता था। सब मजहबोंको एक बनानेका मेरा कोई इरादा नहीं है। हर एक धर्मका मानवीय विकासमें अपना खास योगदान है। संसारके बड़े-बड़े धर्मोंको मैं एक ही वृक्षकी अनेक शाखाएँ मानता हूँ। हालाँकि ये निकली एक ही वृक्षसे हैं, पर एक शाखा दूसरी शाखासे भिन्न है।

प्र० : आप मुझे बतायेंगे कि हिन्दुस्तानी जवानसे आपका क्या मतलब है? क्या आप एक सामान्य शब्दकोशके पक्षमें हैं?

उत्तर : जरूर। मेरा खयाल है कि मौलवी अब्दुल हक साहबने एक ऐसा शब्दकोश तैयार किया है जिसमें उर्दूके उन तमाम शब्दोंको ले लिया गया है जो काशीके शब्द-सागरमें मिलते हैं, और हिन्दीके उन शब्दोंको लिया है, जो उस्मानिया लुग़तमें पाये जाते हैं। मौलवी साहबके शब्दकोशको स्वीकार कर लेनेके लिए मैंने कांग्रेससे सिफारिश की है। और नये शब्द दाखिल करनेके लिए मैंने मौलाना अबुल कलाम आजाद और राजेन्द्रबाबूका एक बोर्ड बना देनेकी तजवीज रखी है।

प्र० : सरहदी जनजातियोंके बारेमें आपका क्या खयाल है? आपको यह तो मालूम ही है कि वे लोग ब्रिटिश हुकूमतके नीचे रौंदे जा रहे हैं? क्या आप इस पक्षमें हैं कि हिन्दुस्तानसे उनके सम्बन्धोंका नियमन सीमाप्रान्तकी इच्छाके अनुसार हो?

उत्तर : अवश्य। इस दिशामें मैं प्रयत्न कर रहा हूँ। मैंने तो कई बार सार्व-जनिक रूपसे कहा है कि हिन्दुस्तानको उनके साथ विश्वास और मित्रताका सम्बन्ध जोड़ना चाहिए, उन्हें उसे अपना कुदरती दुश्मन नहीं समझना चाहिए। मैं उनके बीचमें खुद जानेकी कोशिशमें हूँ और बादशाह खानके लिए भी इजाजत लेनेका प्रयत्न कर रहा हूँ।

उन्होंने कुछ और भी प्रश्न पूछे, पर वे सर्वसाधारणके लिए उतनी दिलचस्पीके प्रश्न नहीं हैं, जितने कि वे प्रश्न जिनके जवाब मैंने ऊपर दिये हैं। और जहाँ तक मैं जानता हूँ, उनमें वाद-विवादकी भी कोई बात नहीं है। मुझे यहाँ यह भी कह देना चाहिए कि साम्प्रदायिक एकतामें मेरा जो विश्वास था वह अब भी है। मेरा जीवन अब भी उसके लिए अर्पित है। यद्यपि कोई-न-कोई राजनीतिक समझौता तो होना ही है, पर बगैर हृदयकी एकताके मुझे उससे सन्तोष नहीं होगा। और स्थायी मित्रता या भ्रातृत्वका आधार अगर अहिंसा नहीं होगी, तो हृदयकी एकता की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

बारडोली, २३ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २८-१-१९३९

३७२. तार : जमनालाल बजाजको

बारडोली

२३ जनवरी, १९३९

जमनालाल बजाज
मार्फत कानोडिया
कलकत्ता

समय निश्चित कर रखा गया है ।

बापू

[अंग्रेजीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २१०

३७३. पत्र : अमनुस्सलामको

बारडोली

२३ जनवरी, १९३९

प्यारी बेटो,

तेरा खत मिला । कैसा खत ? दूर बैठी भी काटती है । तेरी चिंता मैं क्यों करूँ । भगवान सबकी करता है ।

ताजुबी है मृदुलाबहन नहीं मिली ।

मेरी तबीयत अच्छी है । १६०/९४ दोपहरको था ।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१२) से ।

३७४. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

बारडोली

२३ जनवरी, १९३९

प्रिय भगिनि,

तुमारे दोनों खत मिले हैं। लेख 'हरिजन' में प्रगट होंगे।^१ मैंने ही तो मांगे थे ना? मैं दूसरेकी राह देख रहा था। बहु अच्छी होगी। बा अच्छी है।

वापुके आशीर्वाद

रामेश्वरी नेहरू

पाकपट्टम

पंजाब

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९८७) से। सी० डब्ल्यू० ३०८३ से भी;
सौजन्य : रामेश्वरी नेहरू।

३७५. भेंट : 'टाइम्स ऑफ इंडियाके प्रतिनिधि' को

बारडोली

२४ जनवरी, १९३९

प्रतिनिधि द्वाराके यह पूछनेपर कि पिछले सप्ताहके 'हरिजन' में आपके इस कथनका क्या अभिप्राय है कि "यदि जयपुरके अधिकारी इस जिवपर अड़े रहे कि सेठ जमनालाल बजाजको रियासतमें प्रवेश नहीं करने दिया जायेगा तो अखिल भारतीय संकट खड़ा हो जायेगा," गांधीजी ने कहा :

सेठ जमनालाल जयपुरकी प्रजा होते हुए भी अखिल भारतीय स्तरके आदमी हैं। वे कांग्रेस-कार्यसमितिके सदस्य भी हैं और यह तो सभी स्वीकार करेंगे कि वे मूलतः एक शान्तिप्रिय व्यक्ति हैं। वे उस संगठनके प्रधान हैं जो पिछले कुछ सालोंसे जयपुरमें कार्य करता आ रहा है और जिसे काम करनेकी अनुमति भी दी गई है। इसकी गतिविधियोंमें कभी कुछ भी गुप्त नहीं रहा है। इस संगठनमें गम्भीर प्रकृतिके

१. इन्हें १८-३-१९३९, १-४-१९३९, १५-४-१९३९, २९-४-१९३९, ६-५-१९३९, और २०-५-१९३९ के हरिजन में प्रकाशित किया गया था।

२. देखिए "जयपुर", पृ० ३३१-३२।

प्रसिद्ध कार्यकर्ता हैं जिन्होंने पुरुषों और महिलाओं दोनोंके बीच काफी ज्यादा रचनात्मक कार्य किया है। जयपुरमें शासन-तन्त्रकी बागडोर एक प्रसिद्ध राजनैतिक-सैनिक-अधिकारीके हाथमें है; जमनालालजी और उनके संघ अर्थात् जयपुर राज्य प्रजा मण्डलके विरुद्ध घोषित प्रतिबन्धके बारेमें रियासतकी नीतिका निर्धारण और संचालन वही कर रहे हैं। मैं यह मानता हूँ कि जयपुरके प्रधानमन्त्री, सर बीकम सेंट जॉन, इस सम्बन्धमें जो भी कर रहे हैं, केन्द्रीय सत्ताकी कम-से-कम मौन स्वीकृतिके बिना नहीं कर रहे होंगे, क्योंकि उसकी अनुमतिके बिना वह जयपुर-जैसी महत्वपूर्ण रियासतके प्रधानमन्त्री भी नहीं बन सकते थे।

यदि जयपुरके अधिकारियोंकी कार्यवाहीसे एकाएक प्रथम श्रेणीका संकट पैदा हो जाये तो ऐसा नहीं हो सकता कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और सारा भारत उदासीन भावसे चुपचाप देखता रहे और वहाँ जमनालालजी बिना किसी अपराधके जेलमें बन्द कर दिये जायें और प्रजामण्डलके सदस्योंसे भी ऐसा ही व्यवहार किया जाये। ताकत होते हुए भी कांग्रेस यदि इसका उपयोग नहीं करती और जयपुरकी जनताको इस प्रकार अपने समर्थनके लाभसे वंचित करके उनकी भावनाका दमन होने देती है तो वह अपने कर्तव्यकी अवहेलना करेगी। मेरे इस कथनका कि जयपुर या राजकोटमें जो-कुछ हो रहा है, उससे अखिल भारतीय संकट पैदा हो सकता है, यही अर्थ है।

मेरी तो राय यह है कि कांग्रेस द्वारा हस्तक्षेप न करनेकी नीति तब तक राजनीतिमत्ताका श्रेष्ठ उदाहरण मानी जा सकती थी जब तक कि रियासतोंके लोगोंमें जागृति नहीं आई थी। लेकिन इस समय जब रियासतोंके लोगोंमें चहुँमुखी जागृति है और अपने न्यायसंगत अधिकारोंको स्थापित करनेके लिए वे लम्बी अवधि तक कष्ट सहनेको तैयार हैं तो अब वह नीति कायरताकी द्योतक होगी। यदि एक बार यह चीज समझ ली जाये तो सारे भारतमें जहाँ भी कहीं स्वतन्त्रताके लिए संघर्ष होता है, यह सारे भारतका संघर्ष माना जायेगा। जहाँ कहीं कांग्रेस ऐसा समझती है कि उसका हस्तक्षेप करना उपयोगी होगा वहाँ इसे हस्तक्षेप अवश्य करना चाहिए।

गांधीजी से एक और प्रश्न पूछा गया : एक संस्थाके रूपमें कांग्रेसका और विभिन्न प्रान्तोंके कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलोंका एक ऐसे मसलेपर संकट खड़ा करना कहाँ तक उचित माना जा सकता है जिसका सम्बन्ध महज एक रियासतसे हो है ? इसके उत्तरमें गांधीजी ने कहा :

मान लीजिए कि ब्रिटिश भारतके किसी खास जिलेमें जिलाधीश उस जिलेके लोगोंकी हत्या कर दे तो क्या कांग्रेसके लिए हस्तक्षेप करना और अखिल भारतीय स्तर पर संकट खड़ा कर देना उचित नहीं होगा ? यदि इसका उत्तर 'हाँ' हो तो हस्तक्षेपके विषयमें कांग्रेसके आचरणकी जाँच करनेके लिए जयपुरके मामलेमें भी यही बात लागू होती है। यदि कांग्रेसने ऐसा प्रस्ताव न किया होता कि वह [रियासतोंमें] हस्तक्षेप नहीं करेगी तो वास्तवमें यह सवाल ही न उठता। इसलिए बिना सोचे-समझे बात करनेवाले लोग मुझपर बहुत बार यह आरोप लगाते हैं कि मैंने यह क्यों कहा

था कि भारतीय रियासतें संवैधानिक दृष्टिसे हमारे लिए विदेशी राज्यों-जैसी हैं। मैं यह आरोप स्वीकार नहीं करता। मैं रियासतोंमें घूमता रहा था और मुझे ठीक पता था कि रियासतोंके लोग अभी तैयार नहीं हैं।

जिस क्षण वे लोग तैयार हो गये, कानूनी, संवैधानिक और कृत्रिम सीमाएँ नष्ट हो गईं। यह बहुत बड़ा नैतिक प्रश्न है। कानूनी या संवैधानिक औचित्य और इसी तरहकी दूसरी चीजें अपने-अपने क्षेत्रमें तो सही हैं परन्तु मानव-मनके इन कृत्रिम बन्धनोंको तोड़कर ऊपर उठते ही ये चीजें मानव-प्रगतिमें बाधक बन जाती हैं। मैं अपनी आँखोंके सामने आज यही चीज होते देख रहा हूँ। किसी बाहरी प्रेरणाके बिना ही मुझे यह सूझा कि समय आ गया है जब कांग्रेसको इस तरहका हस्तक्षेप करना चाहिए जैसाकि आप देख रहे हैं। और यदि कांग्रेसने नैतिक शक्तिका जो दर्जा हासिल किया है उसे वह कायम रखती है, दूसरे शब्दोंमें, यदि कांग्रेस अपनी अहिंसाकी नीतिका पालन कर पाती है, तो यह हस्तक्षेप मंजिल-दर-मंजिल बढ़ता ही जायेगा।

लोग कहते हैं कि मैंने अपना दृष्टिकोण बदल दिया है और जो-कुछ मैंने सालों पहले कहा था अब मैं उससे उल्टा कहता हूँ। सच्चाई यह है कि मैं वही हूँ परन्तु परिस्थितियाँ बदल गई हैं। मेरी बातें और कार्य सामयिक परिस्थितियों द्वारा प्रेरित होते हैं। मेरे वातावरणमें क्रमशः विकास होता रहा है और एक सत्याग्रहीके रूपमें मैं उससे प्रभावित हुआ हूँ।

प्रतिनिधिने गांधीजी का ध्यान राजकोट और बड़ौदाकी हालकी घटनाओंकी ओर दिलाया जहाँ अल्पमतवाले लोग कांग्रेसके हुक्म चलानेके रवैयेके खिलाफ विरोध प्रकट कर रहे हैं। गांधीजी ने उत्तरमें कहा कि इन घटनाओंसे वे विवर्लित नहीं हुए हैं। उन्होंने कहा :

चूँकि इस वक्त साम्प्रदायिक मनमुटाव है इसलिए स्वतन्त्रता-आन्दोलन वापस ले लिया जाये या उसे फिलहाल रोक लिया जाये, ऐसा नहीं हो सकता। मुझे दिखाई दे रहा है कि इतिहास अपने-आपको दुहरा रहा है और सत्ताधारी, जिन्हें कि पीछे हटना पड़ रहा है, अपना होश खो बैठे हैं और [जनतामें] अन्दर-ही-अन्दर झगड़े खड़े कर रहे हैं और मतभेद उभार रहे हैं। उन्हें आशा है कि वे इन मतभेदोंके द्वारा अपनेको जैसे-तैसे सत्तामें बनाये रख सकेंगे। यदि लोगोंको यह पता हो कि अहिंसाकी पद्धति किस तरह काममें लाई जाती है तो इस तरह काम करनेवाली शक्तियाँ हतबुद्धि हो जायेंगी और जनताकी विजय होगी।

उदाहरणके लिए, यदि राजकोटके लोगोंको स्वतन्त्रता मिल जाये तो वहाँके मुसलमानोंको सब प्रकारसे लाभ ही होगा। आज वे वहाँके शासकोंकी नहीं अपितु उनके सलाहकारोंकी मर्जी पर निर्भर हैं। कल वे जनताके साथ उसके अधिकारोंमें हिस्सेदार होंगे, क्योंकि वे भी तो प्रजा ही हैं। लेकिन मैं सचमुच ऐसा नहीं मानता कि राजकोटमें मुसलमान वास्तवमें विरोध कर रहे हैं। यह बात मैं निजी अनुभवके आधारपर जानता हूँ कि हिन्दुओंके साथ उनके बहुत अच्छे सम्बन्ध हैं। तीन महीनेके

संक्षिप्त किन्तु शानदार संघर्षके दौरान राजकोटके हिन्दुओं और मुसलमानोंमें कोई मतभेद नहीं रहा। चाहे मुसलमान ज्यादा संख्यामें जेल न गये हों, लेकिन सामूहिक रूपसे उन्होंने संघर्षका समर्थन किया।

बड़ौदाका यह दुर्भाग्यपूर्ण झगड़ा सचमुच मेरी समझमें नहीं आता। मैं अभी इतना हतप्रभ हूँ कि वस्तुस्थितिको पूरी तरह समझ नहीं पा रहा हूँ। लेकिन इस मामलेमें भी मैं यही कहूँगा कि यदि बड़ौदामें स्वायत्त शासन हो जाता है तो महाराष्ट्रीयोंको क्या हानि हो सकती है? उनमें इतनी ताकत है कि वे अपने अधिकारोंकी रक्षा कर सकते हैं। यह बात नहीं है कि तथाकथित बहुसंख्यक गुजराती उन्हें कुचल डालेंगे और यदि बहुसंख्यक लोगोंको रियासतकी नौकरियोंमें अपने हिस्सेके चन्द टुकड़े मिल भी जायें, तो यह कोई ऐसी बात नहीं है जिसके कारण महाराष्ट्रके लोग स्वतन्त्रताके संघर्षमें भाग नहीं लें। इसलिए यद्यपि मैं इस झगड़ेकी तह तक नहीं जा सका हूँ तो भी जब तक सुधारक अहिंसक बने रहते हैं और महाराष्ट्रीयोंकी कार्रवाईकी वजहसे उनके प्रति अपने मनमें कोई दुर्भाव नहीं लाते हैं तब तक मुझे इसमें कोई खतरा नहीं लगता। जहाँ तक बड़ौदाका सम्बन्ध है, जब यह बात ध्यानमें आती है कि २,५००,००० की आबादीमें से कुछ-एक हजार ही महाराष्ट्रीय हैं और वे भी ज्यादातर बड़ौदा शहरमें ही हैं, तब इस प्रश्नका कोई महत्व नहीं रह जाता।

[अंग्रेजीसे]

टाइम्स ऑफ इंडिया, २५-१-१९३९, और हरिजन, २८-१-१९३९

३७६. पत्र : मणिलाल गांधीको

बारडोली

२५ जनवरी, १९३९

चि० मणिलाल,

इस पत्रके साथ १०० पौंडका चेक है। यह पुस्तकालयकी इमारतकी मरम्मत के लिए है न? ज्योतिषीकी भविष्यवाणीका क्या डर? मेरे कूच करनेका वक्त तो अब है ही। कल मेरे चले जानेका समाचार सुनो, तो रोना मत। मेरा काम तुम दोनों करना, और मेरे उत्तराधिकारियोंके रूपमें अपनेको शोभान्वित करना। बल्कि उस उत्तराधिकारमें वृद्धि करना। पैसा तो हाथका मेल है, लेकिन अगर मुझमें कुछ गुण रहे हों, तो वे ही तुम्हारी विरासत हैं। उनमें इजाफा करना और सुखी होना। इस विरासतमें सबका हिस्सा है।

बापूके आशोर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८९३) से।

३७७. पत्र : सुशीला गांधीको

बारडोली

२५ जनवरी, १९३९

चि० सुशीला,

तेरा पत्र तेरे ही योग्य है। यह मुझे ६-३० पर मिला। इस समय ७-५० हुए हैं। मैं तो केवल तुम लोगोंका श्रेय ही सोचता हूँ, वर्ना बाप कैसा? सपनेसे या भविष्यवाणीसे डर कर रुक जाना अनुचित माना जायेगा। भविष्यवाणी सच्ची हो, तो भी कर्तव्यसे चूकना उचित नहीं। मैं मर जाऊँ या अकोलामें कोई मर जाये, तो तेरे यहाँ नहीं रहनेसे क्या हर्ज होगा? अगर तेरी हाजिरी यहाँ सेवाके लिए जरूरी होती, तो यहाँ रहना तेरा कर्तव्य होता, अन्यथा तेरा स्थान मणिलालके बाजूमें है। तू उसकी वामांगी है। वामांग याने बायाँ बाजू। तू उसकी अर्द्धांगिनी है। जहाँ मणिलाल, वहाँ तू। बिना संकोचके और हलके मनसे जा। यही तेरा कर्तव्य है।

साथका पत्र मणिलालके लिए है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८९४) से।

३७८. पत्र : लॉर्ड लिनलिथगोको

बारडोली

२६ जनवरी, १९३९

गोपनीय

प्रिय लॉर्ड लिनलिथगो,

पिछले महीनेकी २३ तारीखके मेरे पत्रके उत्तरमें इसी महीनेकी ४ तारीखका आपका जो स्पष्ट पत्र मिला उसपरसे मैं आपका ध्यान अमुक घटनाओंकी ओर, मैं उन्हें जिस तरह देखता हूँ उसके अनुसार, आकर्षित करनेका साहस कर रहा हूँ।

उड़ीसामें हालत सबसे खराब लगती है।^१ वहाँ जनमत अन्य स्थानोंकी तरह शक्तिशाली नहीं है और रणपुरमें मेजर बजलजेटकी अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण हत्यासे परिस्थिति और जटिल हो गई है। उड़ीसा सरकारने, जैसाकि सरकारी तौरपर स्वीकार

१. देखिए “देशी राज्य”, पृ० ३५३-५५।

भी किया गया है, जो भी सहायता वह दे सकती थी, दी है। इस दुर्भाग्यपूर्ण काण्डके अलावा, तालचरकी कुल ७५,००० की आबादीमें से २६,००० व्यक्ति ऐसे कष्टोंके कारण जो अवर्णनीय बताये जाते हैं, ब्रिटिश उड़ीसामें चले आनेको बाध्य हुए हैं।

मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि इस देशान्तरणके कारणोंकी छानबीन करवाना और लोगोंकी शिकायतें दूर करना रेजीडेंटका कर्तव्य है।

काठियावाड़के रेजीडेंटने, जहाँ तक मैं समझ सका हूँ, राजकोटके ठाकुर साहब को प्रजाके साथ हुए अपने पवित्र समझौतेको, जो एक सरकारी अधिसूचना^१ के रूपमें प्रकाशित हुआ था, तोड़नेके लिए प्रेरित किया है। राजकोटमें इसलिए संघर्ष फिर शुरू हो गया है।

जयपुरके अंग्रेज प्रधानमन्त्रीने, कहते हैं, सुप्रसिद्ध बैंकर, परोपकारी और समाज-सुधारक सेठ जमनालाल बजाजको और उस सामाजिक-राजनैतिक संगठनको, जिसके कि वे प्रधान हैं, कुचल डालनेकी प्रतिज्ञा की है।^२ उनका अपराध यही है कि वे महाराजाके अधीन उत्तरदायी सरकार चाहते हैं।

मैं ऐसा समझता हूँ कि यदि यह जानकारी विश्वसनीय है, तो केन्द्रीय सरकार उसकी जिम्मेदारीसे बच नहीं सकती।

इसका अर्थ यह है कि रियासतके लोगोंको केवल अपने शासकोंसे ही नहीं लड़ना है, जो स्वयं अपनी प्रजाका प्रतिरोध करनेमें असमर्थ हैं, बल्कि उन्हें केन्द्रीय सरकारके अदृश्य और अति शक्तिशाली हस्तक्षेपसे भी लड़ना है।

इस भयानक समस्याको मैं आपके आगे रखनेका दुस्साहस कर रहा हूँ। भयानक मैं इसे इसलिए कहता हूँ क्योंकि मुझे नहीं मालूम कि यह केन्द्रीय सरकार और कांग्रेस दोनोंको कहाँ तक उलझायेगी—उस कांग्रेसको जिसका रियासतके लोगोंके प्रति एक नैतिक कर्तव्य है। मैं यह बात समझ सकता हूँ कि सर्वोच्च सत्ता पर रियासतोंको बाहरी खतरे और भीतरी अराजकतासे बचानेके संधिजन्य दायित्व हैं। परन्तु क्या इसीसे जुड़ी हुई यह बात भी उतनी ही सत्य नहीं है कि यदि रियासतें अपनी प्रजाका दमन करती हैं तो सर्वोच्च सत्ताको उसकी भी रक्षा करनी चाहिए। क्या कोई रियासत भाषण, सभाओं और इसी तरहकी अन्य स्वतन्त्रताओंका दमन कर सकती है, और इसके बावजूद वह सर्वोच्च सत्तासे यह अपेक्षा रख सकती है कि यदि उसकी प्रजा अपनी स्वाभाविक स्वतन्त्रताके लिए, जिसका कि किसी भी अच्छे समाजमें हर मानव-प्राणी को अधिकार होता है, अहिंसात्मक संघर्ष करे तो उसके दमनमें वह उसकी सहायता करेगी?

जब तक कि मुझे बतानेके लिए कोई खास बात न हो, मुझे अपने इस पत्रके उत्तरकी अपेक्षा नहीं है। मैं जानता हूँ कि आप हर समय कितने व्यस्त रहते हैं।

१. देखिए “देशी राज्य”, पृ० ३५३-५५।

२. देखिए पृ० ३३१-३३२।

मेरे लिए यह जान लेना ही काफी है, जैसाकि मैं जानता भी हूँ, कि मेरे पत्रों पर आप स्वयं ध्यान देते हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी मुद्रित प्रतिकी माइक्रोफिल्मसे : लॉर्ड लिनलिथगो पेपर्स; सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार। पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ४०१-२ से भी।

३७९. पत्र : चन्दन पारेखको

बारडोली
२६ जनवरी, १९३९

चि० चन्दन,

तुझे ३० रुपये भेज देनेको मैंने कनुसे कहा है। यह भेजना रह गया था, इसका मुझे खेद है।

अगर तेरा मामला ह० के खिलाफ नहीं होता, तो वे जानेवाले नहीं थे, इतना तू निश्चित समझ ? अपने पहले पत्रका उद्देश्य तू मत भूल। ह० से तुझे स्त्री-शिक्षा छुड़वानी थी, वह छूट गई है। अब और कुछ करना निर्दयताकी सीमामें आयेगा। तेरा प्रयोजन सिद्ध हो गया है। तुझे मैं दोषी नहीं मानता। तू मुझसे यही न्याय चाहती थी न ? जमनालालजी आदिको ये पत्र सौंपूँ और वे तुझे दोषी ठहरायें, तो क्या तू अपने-आपको दोषी मानेगी ? क्या तू इतनी मूर्ख है ? तेरे पत्रका तो यही अर्थ है, क्योंकि तू लिखती है कि “अगर वे लोग मुझे दोषी ठहरायें तो मैं दोषी हूँ।” यह वाक्य बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं है। मैं तुझे निर्दोष ठहराऊँ, उसके बाद तेरे लिए और क्या करनेको रह जाता है ? लेकिन मैंने तो तुझे इससे अधिक दिलाया है। तुझे निर्दोष ठहराया है, और ह० से दक्षिणामूर्ति और स्त्री-शिक्षा छुड़ाई है। ह० के मुँहसे उनका दोष स्वीकार करानेसे तुझे और क्या मिलेगा ? कैदीको दण्ड दिया जाता है, लेकिन कैदीसे जबरदस्ती अपराध स्वीकार नहीं कराया जाता। सचमुच तू मूर्खता प्रदर्शित कर रही है। तुझे कहने जितना अधिकार तूने मुझे दिया है या नहीं ? स्वस्थ होकर जवाब लिखना। तू कहेगी, तो मैं जरूर जमनालालजी आदिको कष्ट दूँगा।

मेरी सलाह है कि तू ह० को भूलकर अपने काममें ध्यानावस्थित हो जा। भोजन अनुकूल न पड़े, तो स्वयं पकाना। कुकरमें बनानेमें १५ मिनट लगेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९४८) से; सौजन्य : सतीश द० कालेलकर।

३८०. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

२६ जनवरी, १९३९

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमको मेरा खत मिला होगा। तुमारा प्रश्न यथार्थ है। इसमें क्या हुआ यह कहनेसे औषध नहीं मिलेगा। क्यों हुआ वह जानना चाहिये। आर्यन लीगमें काफी हिंसा है, उसको कौन पहुँचेगा, तुमारे वर्णनका अर्थ यह निकलता है कि मुसलमान हिंसाशास्त्र ज्यादा जानते हैं, दो हिंसक युद्ध करें तब अहिंसक क्या करे? जब कुछ नहीं कर सकता है तब वह प्रार्थना करे, बलवासे दूर रहे। और बलीदान देनेका मौका ढूँढ़े।

हि० टाइम्सके बारेमें तुमारे देवदाससे बात करना।

दंगा का बयान यहाँके अखबारमें तो कुछ नहीं है। स्टेट्समेन कुछ था?

कृपालनीका खत मैंने पढ़ा नहीं है। प्या०^१ को दिया है। कृ०^१ को भेजेगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४७५) से।

३८१. भाषण : किसानोंकी सभामें^१

बारडोली

२६ जनवरी, १९३९

जो प्रस्ताव आपने पास किये हैं, उन्हें मैंने यहाँ आनेसे पहले ही पढ़ लिया था। जो निर्णय आपने किये हैं, उनके लिए मैं दोनों पक्षोंको धन्यवाद देता हूँ। सरदारने

१. प्यारेलाल ।

२. आचार्य जे० बी० कृपालनी ।

३. इस सभामें लगभग दस-पन्द्रह हजार भूपति और 'हाली'—खेतिहर मजदूर—या 'दुबला' लोग उपस्थित थे। सभाका आयोजन किसानों और ग्राम-कार्यकर्ताओंकी उस समितिकी सिफारिशोंको स्वीकार करनेके लिए किया गया था जो पिछले वर्ष हालियोंका उनकी अवदशासे उद्धार करनेके सवालपर विचार करनेके लिए नियुक्त की गई थी। समितिकी सिफारिशें निम्नलिखित थीं:

(१) प्रत्येक हालीको २६ जनवरी, १९३९ से साढ़े चार आना प्रति पुरुष और तीन आना प्रति स्त्री मजदूरी दी जाये; (२) ऐसे प्रत्येक हाली जो अपने मालिकके खेत पर १२ या उससे ज्यादा वर्ष काम कर चुका हो, मालिकके कर्जेसे मुक्त माना जायेगा; (३) जिन्होंने १२ से कम वर्ष तक काम किया हो, उनका कर्ज, कर्जकी कुल रकमका बारहवाँ हिस्सा प्रतिवर्षके हिसाबसे कम हो जायेगा; (४) ऐसे हालियोंकी दैनिक मजदूरीसे एक आना प्रतिदिन तबतक काटा जाता रहेगा जब तक पूरा कर्ज अदा नहीं हो जाता; स्त्रियोंकी मजदूरीसे कुछ नहीं काटा जायेगा; (५) १२ वर्षकी अवधि पूरी होनेपर प्रत्येक

आपसे कहा कि यह निर्णय आप ईश्वरको साक्षी मानकर कर रहे हैं। जो मनुष्य अपनी प्रतिज्ञा भंग करता है, उसका क्या हाल होता है, इसका थोड़ा-बहुत अनुभव आप लोगोंको हो चुका है। मैं आशा करता हूँ कि आप अपने इन निर्णयोंका पूरी तरह पालन करेंगे। कई बार ऐसा होता है कि लोग स्वेच्छासे ऐसा नहीं करते। तब उन्हें कानूनकी प्रेरणासे करना पड़ता है और उसके पीछे दण्डका भय भी होता है। आपने ये निर्णय स्वेच्छासे किये, यह बहुत अच्छी बात है। 'दुबला' जातिके लोग इन निर्णयोंके बाद अब 'दुबला' नहीं रहे, वे बन्धनसे मुक्त हो गये। यह कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। वैसे, इन निर्णयोंको बारीकीसे देखने पर तो मुझे यह लगता है कि यहाँके किसान बड़े कुशल व्यापारी हैं। कारण, इन निर्णयोंके द्वारा तो आपने एक लाभका सौदा किया दीखता है। पहले 'दुबला' लोगोंसे आप अपनी इच्छाके अनुसार काम लेते थे। अब इसके बदले आप उनसे पूरा काम लेंगे और उन्हें समुचित मजदूरी देंगे। तो, इस निर्णयसे आपने कोई बड़ा कार्य किया है, ऐसा नहीं है। मैं इससे बहुत प्रभावित नहीं हुआ। मेरी राय तो यह है कि स्त्री हो या पुरुष, यदि वह आठ घंटे काम करे, तो उसे कम-से-कम आठ आना अवश्य मिलना चाहिए। ईश्वरकी इच्छा होगी, तो किसी दिन मेरे जीते-जी यह स्थिति होगी। आठ आने आपको शायद ज्यादा मालूम होते होंगे, लेकिन सच पूछो तो ये ज्यादा नहीं हैं और आपने तो स्त्रीके तीन आने ही ठहराये हैं, जबकि स्त्रीसे काम तो पुरुष जितना ही लिया जाता है। इसीलिए मैंने आपको धन्यवाद तो दिया, लेकिन उसके साथ यह भी कहा कि इस सौदेमें आपको लाभ भी है।

मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि इस प्रस्तावका आप अक्षरार्थ न करें। ऐसा न मानें कि साढ़े चार आने और तीन आनेसे ज्यादा दिया ही नहीं जा सकता। 'दुबला' लोगोंको आपने बन्धन-मुक्त किया, इसका अर्थ यह है कि वे जहाँ चाहें वहाँ मजदूरी कर सकते हैं और जितनी चाहें उतनी मजदूरी पा सकते हैं। लेकिन इस निर्णयका रहस्य तो इस बातमें है कि वे जहाँ हैं वहाँ रहेंगे और इस निर्णयके कारण आपके और उनके सम्बन्ध पवित्र बनेंगे। हमने कहा है कि 'दुबला' लोगोंको अब 'हलपति' का दर्जा मिल गया है। इसका अर्थ यह नहीं कि किसान हल नहीं चलायेंगे। हलपति तो किसान ही होंगे। 'दुबले' उनके लिए ही हल चलायेंगे। अलबत्ता, सच्ची बात तो यही है कि जो जमीन जोतता है, वही हलपति है और आदर्श स्थिति यह होगी कि किसी दिन किसान और 'दुबले', दोनों ही हलपति हो जायेंगे। एक बात और। प्रस्तावका यह अर्थ नहीं है कि किसी बार साल अच्छा आये और फसल बढ़िया हो, तो भी आप उन लोगोंको साढ़े चार आने ही दें। यदि आपने ऐसा किया, तो मैं कहूँगा कि आपने प्रस्तावका पालन नहीं किया है।

हाली, कर्ज पूरा अदा हुआ हो या न हुआ हो, कर्जसे मुक्त हो जायेगा; (६) कर्जदारकी मृत्यु हो जानेपर कर्ज समाप्त माना जायेगा। (७) प्रत्येक 'दुबला' को ८० २० वार्षिक मजदूरी दी जायेगी और यदि उसपर कोई कर्ज हो तो इस मजदूरीमें से कर्जकी अदायगीके लिए १५ २० काटे जा सकेंगे। (८) कर्जसे सम्बन्धित सारे प्रश्नोंका निपटारा करनेके लिए ग्राम-पंच नियुक्त किये जायेंगे।

आप लोगोंने १९२१ में आजादीकी बड़ी प्रतिज्ञा ली थी। उस प्रतिज्ञाके अधिकांशका पालन आपने अभी तक नहीं किया है। जो आपने आज किया है, वह तो १९२१ में करना चाहिए था। अनेक वर्ष पूर्व जो करना चाहिए था, उसे आज आपने इतनी देरमें किया है। तथापि, यह पुण्य-कार्य है और आप धन्यवादके पात्र हैं।

खेती हमारा मुख्य धन्धा है किन्तु सही खेती करना हमें आता नहीं है और खेतीका काम बारह माह तो होता नहीं है। इसके सिवा उससे पेट भी नहीं भरता। इसीलिए मैंने चरखेको “अन्नपूर्णा” का नाम दिया है। और चरखेके जितने गीत मैं पहले गाता था, उतने ही आज भी गाता हूँ। अतः यदि हलपतियोंको आगे बढ़ना है, तो उन्हें चरखा चलाकर अपनी कमाईमें वृद्धि करनी चाहिए। अपना काम करनेके बाद जो भी समय बचे, उसमें आपको चरखा चलाना चाहिए।

मैं आशा करता हूँ कि आप दोनों पक्ष इस प्रस्तावका पूरा-पूरा पालन करेंगे।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, १९-२-१९३९

३८२. पत्र : सर डब्ल्यू० ब्रीकम सेंट जॉनको

बारडोली

२७ जनवरी, १९३९

प्रिय मित्र,

इसी माहकी २५ तारीखके आपके पत्रके लिए धन्यवाद।

मुझे डर है कि आपकी हिचकिचाहटसे मेरी कोई हमदर्दी नहीं है। श्री चुडगरने जो रिपोर्ट भेजी है, वह इतनी महत्वपूर्ण है कि अवश्य छपनी चाहिए। मुझे चिन्ता केवल यह थी कि मैं ऐसी रिपोर्ट न छापूँ जिसकी सचाईपर कोई उँगली उठा सके।

मेरा श्री चुडगरसे पत्र-व्यवहार जारी है और अगर वे सेठ जमनालालजीको दी गई अपनी रिपोर्ट पर जमे रहते हैं, तो मुझे जयपुरकी जनताके हितमें उसे प्रकाशित करना पड़ सकता है।

श्री चुडगरके विवरणको प्रकाशित करनेपर आप जो “उचित कार्रवाई” करनेवाले हैं, उसका अर्थ मेरी समझमें नहीं आया।

हृदयसे आपका,

[अंग्रेजीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ४००-१। सी० डब्ल्यू० ७८०९ से भी;
सौजन्य : धनश्यामदास बिड़ला।

३८३. पत्र : अमनुस्सलामको

२७ जनवरी, १९३९

वि० अमनुल सलाम,

मैं हैरान हूँ मैंने मनाइ नहीं की है। मैंने तो मेरी हालत बताई। तूने कहा और मैंने पसंद कीया। तेरा ठिकाना ही नहीं है और जब तुझे स्पर्श न मिले तो भी फिकर नहीं है कि और तेरी फिकर मौलानाके इनकारकी तो क्यों स्पर्शकी बातसे खत भरा है। लेकिन अब इस झगड़े में पड़ना नहीं चाहता हूँ। मृदुलाके पास जानेकी कुछ भी जरूरत नहीं है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६९) से।

३८४. तार : विश्वनाथदासको

[२८ जनवरी, १९३९ के पूर्व]^१

मुख्यमन्त्री,
कटक

ठक्करबापा कहते हैं कि तालचेरके शरणार्थी भूखों मर रहे हैं और कष्ट पा रहे हैं। चिकित्सीय सहायता चाहते हैं। कृपया राहत पहुँचायें।

गांधी

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल ।

१. तालचेरके शरणार्थियोंकी दुर्दशाके जिक्रके आधारपर; देखिए “देशी राज्य”, पृ० ३५३-५।

३८५. तार : जानकीदेवी बजाजको

बारडोली

२८ जनवरी, १९३९

जानकीदेवी बजाज

वर्धा

अभी तब तक जयपुर न जाओ, जब तक कि डॉक्टर और मैं यह न कह दें कि तुम बिल्कुल स्वस्थ और प्रसन्नचित्त हो।

बापू

[अंग्रेजीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २१०

३८६. जमनालाल बजाजके लिए वक्तव्यका मसविदा^१

बारडोली

२८ जनवरी, १९३९

ऐसा पता चला है कि जयपुरके प्रधानमन्त्रीने जयपुर राज्य प्रजा मण्डलको और मुझे कुचल डालनेकी प्रतिज्ञा की है। उस नीतिका अनुसरण करते हुए अपने विचारसे उन्होंने मेरे लिए ऐसा प्रबन्ध किया है जिससे उनके लिए कोई खतरा न रह जाये। शीघ्र ही मण्डलके सदस्योंके साथ भी यही होना है। परन्तु यदि हम अपने प्रति और उस दायित्वके प्रति जो हमने स्वयं अपने ऊपर लिया है, सच्चे हैं तो चाहे हमारे शरीर बन्दी हो जायें या किसी और तरह आहत हो जायें, पर हमारी आत्मा स्वतन्त्र रहेगी।

अब जब मेरी आवाज जबर्दस्ती बन्द की जानेवाली है, मैं एक बार फिर यह बता दूँ कि हम किसलिए लड़ रहे हैं। हमारा लक्ष्य महाराजाके अधीन उत्तरदायी सरकारकी स्थापना है परन्तु सविनय अवज्ञा हमने इसलिए शुरू नहीं की है कि दरबार पर उत्तरदायी सरकार देनेके लिए दबाव डाला जाये। सविनय अवज्ञाका उद्देश्य तो अहिंसाके दायरेमें रहते हुए बोलने, लिखने, सभाएँ करने, जुलूस निकालने, संगठन बनाने आदिकी स्वतन्त्रताके उस मूल अधिकार पर जोर देना है, जो सभी

१. यह जमनालाल बजाज द्वारा अपनी गिरफ्तारीके समय जारी किया जाना था। जी० एन० ३०७८ में गांधीजीके हाथका लिखा मसविदा उपलब्ध है।

बातचीत : नगरपालिकाओं और स्थानीय मण्डलोंके प्रतिनिधियोंके साथ ३७३

समाजोंको प्राप्त है। हम सविनय अवज्ञा करनेको इसलिए वाध्य हुए हैं कि यह मूल अधिकार हमसे छीन लिया गया है। जैसे ही यह अधिकार वापस मिल जायेगा सविनय अवज्ञा बन्द कर दी जायेगी।

इसलिए सामूहिक सविनय अवज्ञा या करबन्दी आन्दोलनका अभी कोई सवाल नहीं है।

इस चीजको देखते हुए कि मण्डल एक तरहसे अवैध संस्था घोषित कर दिया गया है, हमें अपने मौजूदा रजिस्टरको रद्द ही मानना चाहिए। यदि सम्भव हो तो रियासतके अन्दर, और यदि आवश्यक हो तो रियासतके बाहर एक नया रजिस्टर खोला जाना चाहिए। जो लोग यह जानते हैं कि आज मण्डलका सदस्य बनने तकमें खतरा है केवल वही अब सदस्य बनेंगे। फिर भी, आशा है कि रियासतके अन्दर या बाहर रहनेवाले जयपुरिये वड़ी संख्यामें मण्डलके सदस्य बनेंगे और कम-से-कम इसी तरह इस प्रतिबन्धके प्रति अपने विरोधका प्रदर्शन करेंगे।

इन सदस्यों के नाम, पते और व्यवसाय पंजीकृत किये जायेंगे, और समय-समय पर प्रकाशित किये जायेंगे।

मण्डलके कार्योका प्रबन्ध मेरी अनुपस्थितिमें . . .^१ करेंगे और वे मण्डल और अध्यक्षके अधिकारोंका उसी तरह उपयोग करेंगे मानो संविधान चालू हो। पाँच व्यक्तियोंकी इस परिषद्को इनके स्थानपर अन्य व्यक्तियोंको रखनेका अधिकार होगा। सविनय अवज्ञाके सभी मामलोंमें आवश्यक होने पर परिषद् गांधीजीकी सलाह लेगी और उसके अनुसार चलेगी।

[अंग्रेजीसे]

पाँचवे पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ४०३-४। जी० एन० ३०७८ से भी।

३८७. बातचीत : नगरपालिकाओं और स्थानीय मण्डलोंके प्रतिनिधियोंके साथ^२

बारडोली

२८ जनवरी, १९३९

उनका पहला सवाल कर लगानेके प्रश्नसे सम्बन्धित था।

कांग्रेसने करका बोझ कम करनेकी नीति स्वीकार की है। फिर जब कांग्रेसजन स्थानीय मण्डलों और नगरपालिकाओंमें जाते हैं तो उन्हें नगरपालिकाओंसे सम्बन्धित कल्याण कार्योंके कार्यक्रमको लागू करनेके लिए ज्यादा पैसेकी जरूरत होती है। नये

१. साधन-सूत्रमें यह स्थान खाली छोड़ा हुआ है।

२. प्यारेलाल के “म्युनिसिपल सर्विस ऐण्ड नॉन-वायलेम्स” से उद्धृत। नगरपालिकाओं और स्थानीय मण्डलोंके लगभग २०० प्रतिनिधि अपने प्रतिदिन के कामकी विभिन्न जटिल समस्याओंपर विचार-विमर्श करनेके लिए गांधीजीसे मिले थे।

कर लगाये बिना यह कैसे किया जा सकता है? और लोग तो स्वभावतः नये कर नहीं देना चाहते। यह दुविधा कैसे सुलझाई जा सकती है?

उ० : यदि किसी स्थानीय मण्डल या नगरपालिकाके अधिकारक्षेत्रमें मैं करदाता होता तो अतिरिक्त करके रूपमें मैं एक पाई तक नहीं देता और दूसरोंको भी ऐसी ही सलाह देता कि जब तक हमारा दिया हुआ पैसा हमें चौगुना होकर वापस न मिले, तब तक कोई नया कर न दिया जाये। जो लोग लोगोंके प्रतिनिधि बनकर स्थानीय मण्डलों या नगरपालिकाओंमें जाते हैं वे वहाँ मान प्राप्त करने या आपसी प्रति-द्वन्द्विताओंमें पड़नेके लिए नहीं अपितु प्रेम-भावसे सेवा करनेके लिए जाते हैं और यह सेवा पैसे पर नहीं निर्भर होती। हमारा देश गरीब है। यदि हमारे नगरपालिकाओंके सदस्य सच्चे सेवाभावसे अनुप्राणित हों तो वे बिना तनख्वाहके काम करनेवाले सफाई-कर्मचारी, भंगी और सड़क बनानेवाले मजदूर बन जायेंगे और इस काममें गर्व अनुभव करेंगे। वे अपने साथी पार्षदोंको भी, जो कांग्रेसके टिकट पर न आये हों, अपने साथ आनेके लिए कहेंगे और यदि उन्हें अपने-आपमें और अपने मिशनमें निष्ठा होगी तो उनके उदाहरणकी उचित प्रतिक्रिया अवश्य होगी। इसका अर्थ है कि नगरपार्षदोंको अपना सारा वक्त अपने काममें देना होगा। उनका अपना कोई स्वार्थ नहीं होगा। अगला कदम यह होगा कि नगरपालिका या स्थानीय मंडलके अधिकार-क्षेत्रकी सारी वयस्क जनसंख्याका जायजा ले लिया जाये। सबको यह कहा जाये कि वे नगरपालिकाके काममें अपना हाथ बँटायें। एक नियमित रजिस्टर बना लिया जाना चाहिए। जो इतने गरीब हैं कि पैसेका सहयोग तो नहीं दे सकते, परन्तु हृष्टपुष्ट हैं, उन्हें बिना पारिश्रमिक लिये परिश्रम करनेको कहा जा सकता है। सच्चा भारत कुछ-एक बड़े शहरों नहीं अपितु सात लाख गाँवोंमें रहता है। भारतकी वास्तविक समस्याओंका सामना और समाधान गाँवोंमें किया जाना है। हमें गाँवोंके लिए बेहतर सड़कें, बेहतर सफाई और बेहतर पेय जलकी पूर्तिकी आवश्यकता है।

यदि हम पैसेको आधार बनाकर चलें तो हम इस भगीरथ कार्यको अंशमात्र भी नहीं निपटा सकेंगे। परन्तु भारतके पास जनशक्तिका अपार भंडार है। यदि हम इस जनशक्तिको संगठित कर सकें, तो बहुत ही कम समयमें देशका रूप बदल सकते हैं।

अपने श्रम-साधनोंको जुटानेके लिए चरखेसे बढ़कर और कोई साधन नहीं है। यह अहिंसाका स्वाभाविक प्रतीक-चिह्न भी है जोकि समस्त जीवनदायी सामूहिक क्रिया-कलापकी आत्मा है। नगरपालिकाकी किसी भी योजनामें चरखेके प्रचारका स्थान निश्चित होना चाहिए—वह योजना चाहे गाँवोंकी बेकारी दूर करनेसे सम्बन्धित हो, जिसके कारण ग्रामीण जनसंख्याका अधिकांश गरीबीमें तथा भयावह परिस्थितियोंमें अपने दिन काट रहा है, या वह उन गन्दी बस्तियोंका जीवन सुधारनेसे सम्बन्धित हो जो हमारे बड़े-बड़े शहरोंके लिए कलंक-स्वरूप हैं।

परन्तु इसके लिए चरखेमें हमारा जीवन्त विश्वास होना चाहिए—ऐसा विश्वास जिससे कि हमें कताई-शास्त्र और इससे सम्बन्धित सारी प्रक्रियाओंका सूक्ष्म अनुशीलन करने और इनमें पारंगत होनेकी प्रेरणा मिले। आज तो स्थिति यह है कि सिनेमा

जाने और यहाँ तक कि बेकारकी बातोंमें अपना समय नष्ट करना हमें अच्छा लगता है। बिना काम किये पैसा बनानेका धन्धा हमें रुचिकर लगता है, चरखा नहीं। फिर भी, मेरा तो यह विश्वास है कि हम अपने अहिंसाके उद्देश्यकी ओर उसी सीमा तक आगे बढ़ सकेंगे जिस सीमा तक हम चरखेका व्यापक प्रचार करनेमें सफल होंगे।

उपर्युक्त योजनाका अनुसरण करके हम करदाताको उसके द्वारा दिया गया कर अत्यन्त उन्नत सेवाओं और नागरिक सुविधाओंके रूपमें कई गुना करके लौटा सकेंगे और तब यदि अतिरिक्त कर लगाना अनिवार्य हो जाये तो वह उसका बुरा नहीं मानेगा।

जम्बुसर नगरपालिकाके एक सदस्यने पूछा : “हमारी नगरपालिकामें सत्रह सदस्य हैं जिनमेंसे आठ कांग्रेस टिकटपर और शेष नौ गैर-कांग्रेसी हैं। वे हमेशा ही हमें बहुमतसे हरा सकते हैं और हमारी योजनाओंको उलट सकते हैं। ऐसी स्थितिमें हमें क्या करना चाहिए ?”

गांधीजी : यह कोई समस्या नहीं है। अगर वे पुराने ढर्रे पर चलना चाहते हैं और भाषण देने और इस तरहके अन्य कामोंमें लगे रहना चाहते हैं तो आपको उनकी नकल करनेकी या उनकी तरह वक्त बरबाद करनेकी जरूरत नहीं है। आप इन बैठकोंमें हाजिर तो हो जायें परन्तु व्यर्थके वाद-विवादमें अपना समय नष्ट न करें। इसके बदले आप अपना सारा वक्त अपने हाथोंमें बाट्टी और झाड़ पकड़कर, फावड़ा और टोकरीसे काम करके, बीमार और अस्वस्थ लोगोंकी परिचर्या करके तथा उन्हें डाक्टरी मदद दिलाकर, अशिक्षित करदाताओंको पढ़ाकर, उनके बच्चोंको लिखना-पढ़ना सिखाकर करदाताओंकी उपयोगी सेवा करनेमें लगायें। उसके परिणामस्वरूप दो बातें हो सकती हैं। या तो आपके उदाहरणकी छूट आपके विरोधियोंको भी लगेगी और वे स्वयं आपके साथ हो जायेंगे और तब विवादका कोई सवाल ही नहीं रहेगा। या फिर करदाता खरे और खोटेमें अन्तर करना सीख जायेगा और अगले चुनावोंमें सारे सत्रह स्थान कांग्रेसियों द्वारा ही भरे जायेंगे। विरोधका अन्त करनेका यह अहिंसात्मक तरीका है। इससे संघर्ष और झगड़ा मिटता है और दूसरा दल चाहे कुछ करे या नहीं, हमारा रास्ता साफ हो जाता है।

प्र० : गुजरातमें कई जगह राष्ट्रीय सप्ताह मनाया जा रहा है। और इस सिलसिलेमें लोगोंको ग्राम-मुधार अथवा नगर-सेवाकार्यमें भाग लेनेके लिए आमन्त्रित किया जा रहा है। क्या यह अच्छा नहीं होगा कि इस समारोहकी तारीख बदलकर शुक्ल पक्षमें कर दी जाये ? इससे सामूहिक कार्य रात हो जानेके बाद भी जारी रह सकता है और रोशनीके खर्चमें कमी की जा सकती है।

उ० : देशके विभिन्न भागोंमें विभिन्न पंचांग प्रचलित हैं। परन्तु राष्ट्रीय पर्वके लिए सर्वसामान्य पंचांगका ही अनुसरण किया जाना चाहिए। यदि आपका नगर-सेवा-सम्बन्धी उत्साह दिखावा मात्र नहीं है जो राष्ट्रीय सप्ताहके आरम्भके साथ शुरू होकर उसका अन्त होते ही समाप्त हो जायेगा तो राष्ट्रीय सप्ताहके अलावा भी

आपको नगर-सेवाके ऐसे अनेक सप्ताह मनाने चाहिए। इन सप्ताहोंकी तारीखें किसी स्थानके लिए जो प्रवृत्ति चुनी जाये उसकी आवश्यकताओंको ध्यानमें रखते हुए नियत की जा सकती हैं।

प्र० : सूरत नगरपालिकाके एक सदस्यने पूछा, “नगरपालिकाके लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, किस प्रकारका कर लगाना बेहतर है?”

गां० : करदाता अप्रत्यक्ष कर ज्यादा पसन्द करते हैं, क्योंकि इसका प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव नहीं किया जाता। परन्तु प्रत्यक्ष कर का शिक्षणात्मक महत्व ज्यादा है और जब इसका उद्देश्य करदाताको नगरपालिकाके प्रति अपने कर्तव्योंके विषयमें ज्यादा जागरूक करना हो तो प्रत्यक्ष कर इसके लिए उपयुक्त सिद्ध होंगे।

खेड़ा जिलेके एक सज्जनकी शिकायत थी : “स्थानीय मण्डलों द्वारा संचालित प्रारम्भिक स्कूलोंमें हम बुनियादी शिक्षाकी वर्धा-योजनाको चलाना चाहते हैं। स्थानीय मण्डल इसके लिए रजामन्द है। परन्तु शिक्षा-विभागका निरीक्षक-वर्ग और शिक्षा-विभागके उच्च अधिकारियोंका अभी वही पुराना दृष्टिकोण है। वर्धा योजनाके सिद्धान्तोंमें अभी उनका विश्वास नहीं है। हम इस कठिनाईको कैसे दूर करें?”

गां० : यह मेरे लिए आश्चर्यकी बात नहीं है। मुझे आश्चर्य तो तब होता जब उच्च शिक्षाधिकारियोंका वर्धा शिक्षा-योजनामें एकदम विश्वास हो गया होता। विश्वास अनुभवसे आयेगा। फिलहाल मैं इतना ही कह सकता हूँ कि जहाँ चाह होती है वहाँ राह निकल ही आती है। मैं नहीं समझता कि शिक्षा-मन्त्रीके लिए शिक्षा निदेशकको यह अनुदेश देनेमें कोई बंध कठिनाई हो सकती है कि जो स्कूल वर्धा शिक्षा-योजनाको कार्यान्वित करना चाहें उनकी हर मुमकिन तरीकेसे मदद की जाये। शिक्षा विभागको अपने पथका अनुसरण करानेमें मध्यप्रदेश मन्त्रि-मण्डलको कोई कठिनाई नहीं हुई। परन्तु यदि कोई बंध या प्राविधिक कठिनाई सामने आती है तो वह बंध तरीके से दूर भी की जा सकती है।

प्र० : प्रौढ़ शिक्षा योजनामें हमारा उद्देश्य साक्षरता-प्रसार होना चाहिए या ‘उपयोगी ज्ञान’ का प्रसार? स्त्री-शिक्षाके विषयमें क्या किया जाना चाहिए?

उ० : धन्धेमें लगे हुए वयस्क लोगोंकी मूलभूत आवश्यकता यह है कि उन्हें पढ़ना-लिखना आना चाहिए। व्यापक निरक्षरता भारतके लिए पापरूप और लज्जा-स्पद है। निरक्षरताका अन्त होना ही चाहिए। अलबत्ता, साक्षरता-प्रसारकी अथ और इति वर्णमाला सीखनेमें ही नहीं हो जानी चाहिए। इसके साथ-साथ उपयोगी ज्ञानका प्रसार भी किया जाना चाहिए। परन्तु नगरपालिका संस्थाओंको एक ही समयमें दो नावोंपर पैर रखनेके प्रयाससे बचना चाहिए। अन्यथा उनकी असफलता निश्चित है।

जहाँ तक महिलाओंमें व्याप्त निरक्षरताका सम्बन्ध है, इसका कारण पुरुषोंमें व्याप्त निरक्षरताकी तरह मात्र सुस्ती या निष्क्रियता नहीं है। अधिक प्रबल कारण तो उनकी वह हीन स्थिति है जिसे अत्यन्त प्राचीन कालसे चली आ रही परम्पराने उन पर थोप दिया है। यह उनके प्रति किया गया एक बहुत बड़ा अन्याय है। पुरुषने

उसे अपनी सहयोगिनी और अर्धांगिनी बनानेके बजाय घरका काम करनेवाली परिचारिका और सुखोपभोगका साधन-मात्र बना लिया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि हमारा समाज लुंजपुंज हो गया है। स्त्रीको मनुष्य जातिकी जननी कहा जाता है और यह ठीक ही है। हमारा उसके प्रति और अपने प्रति भी यह कर्तव्य है कि हमने उसके साथ जो महान् अन्याय किया है उसका परिमार्जन करें।

खेड़ा जिलेके कपड़वंजसे आये हुए एक मित्रने पूछा, “आपने कुछ विषयोंपर अलग-अलग अवसरोंपर विभिन्न मत प्रकट किये हैं। हमारे विरोधी हमारी वर्तमान नीतियोंका विरोध करनेके लिए उनका दुरुपयोग करते हैं। ऐसी परिस्थितियोंमें हमें क्या करना चाहिए ?”

गाँ० : इन कथनोंमें जो विरोध है वह ऊपरी है और इसका समाधान आसानी से किया जा सकता है। निरापद नियम यह है कि समयके क्रममें जो बात सबसे बादमें कही गई हो उसे पिछली सब बातों पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए। परन्तु पहले या बादका मेरा कोई भी कथन, यदि वह आपके हृदय और मस्तिष्कको प्रभावित नहीं करता, तो आप उसे माननेके लिए बाध्य नहीं हैं। उसका यह अर्थ नहीं होगा कि मेरा दृष्टिकोण गलत है। परन्तु ऐसे किसी दृष्टिकोणको स्वीकार कर लेना गलत होगा जिसकी सचाई आप देख नहीं पाते या जिसे आप आत्मसात् नहीं कर सकते।

प्र० : ऐसे लोगोंसे कैसे निबटा जाये जो हर किसी जगहको शौचादिके लिए इस्तेमाल करते हैं और गन्दगी फैलाते हैं ? वे इसके पक्षमें यह तर्क देते हैं कि उनके धर्मका यही विधान है। इसके अलावा मक्खियों, मच्छरों, पागल कुत्तों, बन्दरों आदिका उपद्रव कैसे शान्त किया जा सकता है ? कुछ लोग अहिंसाकी आड़ लेकर उन्हें नष्ट करनेका विरोध करते हैं।

उ० : जहाँ तक शौचादिका सम्बन्ध है इस समस्याका समाधान करनेके दो तरीके हैं—एक, बाहरी तौर पर जोर-जबरदस्तीका और दूसरा, अहिंसाका। सफाईके नियमों का भंग करनेवाले लोगोंको कानूनी दण्ड दिया जा सकता है। मैंने उसके लिए “बाहरी तौर पर जोर-जबरदस्ती” शब्दोंका उपयोग जानबूझ कर किया है। स्वतन्त्रताकी तरह ही जब धार्मिक स्वतन्त्रताका उपभोग दूसरेके स्वास्थ्य और सुरक्षाकी कीमत पर या शालीनता और नीतिकी अवहेलना करते हुए किया जाता है तब वह स्वेच्छाचार बन जाती है। यदि आप अपने लिए अप्रतिबन्धित और पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते हैं तो आपको चाहिए कि आप समाजसे संन्यास लेकर एकान्तवास करें। जहाँ कहीं भी शौचादि करनेकी आदतको, जिसमें दूसरोंकी सुविधा और स्वास्थ्यका ध्यान नहीं रखा जाता, मैं अहिंसाकी विडम्बना मात्र मानता हूँ। जहाँ कहीं गन्दगी हो, चाहे वह शारीरिक हो या नैतिक, वहाँ अहिंसा नहीं रह सकती।

दूसरा तरीका यह है कि इस तरहकी गन्दगी फैलानेवाले सम्प्रदायोंके धर्माचार्योंको खोज निकालना चाहिए और धीरे-धीरे तर्क द्वारा उनके हृदयको प्रभावित करनेका प्रयत्न करना चाहिए।

जहाँ तक मक्खियों, मच्छरों, आवारा कुत्तों और बन्दरों आदिका सम्बन्ध है, मैं निजी तौर पर तो इसे सहन कर लूँगा, परन्तु सारा समाज, यदि उसे जीवित रहना है, तो इस स्थितिको सहन नहीं कर सकता। ये हानिकर जीवजन्तु हमारे दुष्कृत्योंका ही परिणाम हैं। यदि मैं किसी सार्वजनिक स्थान पर बन्दरोंका पोषण करूँ और इस तरह दूसरोंका जीवन दूभर कर दूँ तो मैं ही हिंसा करता हूँ और समाजके लिए सिवाय इसके और कोई चारा नहीं है कि वह मेरी हिंसा द्वारा पैदा किये गये इन हानिकर जीवोंको नष्ट कर दे। अमुक कार्यमें अहिंसा है या नहीं, इसकी कसौटी उस कार्यके पीछे छिपी मनोवृत्ति है, स्वयं वह कार्य नहीं। ऐसा नागरिक जो जीवदयाकी गलत भावनामें पड़कर दूसरों पर हानिकर जीव छोड़ता है, हिंसाका अपराधी है।

अहमदाबादमें महिलाओंके उद्धार और स्वतन्त्रताके लिए स्थापित संस्था, ज्योति संधकी संस्थापिका और समाजसेविका श्रीमती मृदुला साराभाईने गांधीजीसे समाजमें महिलाओंकी स्थितिके बारेमें चन्द महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछे : “महिलाओंमें नागरिक और राजनीतिक चेतनाके जागृत होनेसे उनके परम्परागत गृहस्थीके कार्य और समाजके प्रति उनके कर्तव्यके बीच संघर्ष पैदा हो गया है। यदि कोई महिला सार्वजनिक कार्यमें मन लगाती है तो उसे अपने बच्चों या अपने घरबारकी उपेक्षा करनी पड़ती है। इस उलझनको कैसे सुलझाया जाये?”

‘गीता’ के प्रसिद्ध श्लोकको अपने उत्तरका आधार बनाते हुए गांधीजी ने कहा कि सहज-प्राप्त स्वधर्मको छोड़कर दूरके ढोल सुनकर उनके पीछे जाना हमेशा गलत होता है। प्रस्तुत कर्तव्यकी उपेक्षा करना विनाशका मार्ग है। सवाल यह है कि क्या अपना सारा समय घरके काममें लगा देना ही महिलाओंका कर्तव्य है? बहुत बार ऐसा होता है कि महिलाओंका समय घरके आवश्यक कामोंमें नहीं अपितु अपने पतिके लिए आसोद-प्रसोद जुटाने और अपने ही शौकोंको पूरा करनेमें लगता है।

गांधीजी : मैं समझता हूँ कि महिलाओंकी यह घरकी दासता हमारे जंगलीपन की निशानी है।

मेरे मतमें रसोईघरकी गुलामी मुख्यतः हमारे जंगलीपनका ही अवशेष है। यह बहुत उपयुक्त अवसर है कि हमारा महिला-समाज इस दुःस्वप्नसे मुक्ति पा जाये। महिलाओंका सारा वक्त घरके काममें ही नहीं लग जाना चाहिए।

मृदुलाबहन : चुनावके दौरान आपके कांग्रेसजन हमसे सब तरहकी सहायताकी आशा करते हैं। परन्तु जब हम उनसे कहते हैं कि वे अपनी पत्नियों और पुत्रियोंको घरसे बाहर हमारे साथ भेजें तो वे कई तरहके बहाने बनाते हैं और उन्हें घरकी चार-दीवारीके अन्दर बन्दी बनाकर रखना चाहते हैं। आप इसका क्या उपाय सुझाते हैं?

गां० : ऐसे सब प्रागैतिहासिक नमूनोंके नाम ‘हरिजन’ में प्रकाशनके लिए मेरे पास भेज दो।

सेगाँव, ७ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १८-२-१९३९

३८८. पत्र : जनरल शिन्देको

बारडोली

२९ जनवरी, १९३९

प्रिय जनरल शिन्दे,

आपके इसी २५ तारीखके पत्रके लिए मैं आपका आभारी हूँ।

मैं महाराष्ट्रीय और गुजराती लोगोंके बीच एकता चाहता हूँ। उनके बीच दरार पैदा होनेका कोई भी कारण नहीं है।

अगर आपके पास सरदार वल्लभभाई द्वारा भद्रन और एनामें दिये गये भाषणोंकी प्रतियाँ हों, तो मैं उन्हें देखना चाहूँगा। सरदार इन दोनों समुदायोंमें फूट पैदा करने वाले व्यक्ति नहीं हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल।

३८९. पत्र : मैसूरके महाराजाको

बारडोली

२९ जनवरी, १९३९

प्रिय महाराजा साहब,

श्री रंगास्वामीके हाथों आपने कृपापूर्वक जो ऊनी शाल भेजा था, उसके लिए मैं बहुत दिनोंसे आपको धन्यवाद देना चाह रहा था। मुझे आशा है कि रियासत और प्रजाके बीच सुखद सम्बन्ध है, और आगामी सुधारसे शान्ति और समृद्धिके एक नये युगका सूत्रपात होगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

मैसूरके महाराजा

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल।

१. जनरल शिन्देने अपने पत्रमें सरदार पटेल पर आरोप लगाया था कि भद्रन और एनामें दिये गये अपने भाषणों और अपने प्रेस-वक्तव्यों द्वारा सरदार पटेलने महाराष्ट्रियों और गुजरातियोंके बीच मनमुटाव पैदा करनेकी कोशिश की थी। उन्होंने गांधीजी से अनुरोध किया था कि वे सरदार पटेलको वैसा करनेसे रोकनेके लिए अपने प्रभावका इस्तेमाल करें।

३९०. पत्र : अमनुस्सलामको

२९ जनवरी, १९३९

प्यारी बेटी,

तेरे दो खत मिले।

मैं क्या हुक्म करूं। मैंने कह दिया है जो चाहे वह कर सकती है क्योंकि मैं नहीं जानता हूं किसमें तेरा श्रेय है। ऐसी हालतमें मेरा कुछ भी कहना बेहुदापन सा लगता है। अच्छा यही है कि जैसा तुझे अच्छा लगे वही करना। मैं उसीमें राजी हूंगा। यह मैं न दुःखमें लिखता हूं न रोषमें। सिर्फ तेरा भला समझकर लिखता हूं।

वहां सब खुश होंगे? तेरी तबीयत अच्छी होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१३)से।

३९१. भाषण : किसानोंकी सभामें^१

वराड

[२९ जनवरी, १९३९]^१

यह एक अत्यन्त शुभ अवसर है, इस विषयमें दो मत नहीं हो सकते। जब जमीनें जानेका समय आया और वे गईं, तब हम अपने भाषणोंमें कहते थे कि ये जमीनें सरकारको पचेंगी नहीं; ये हमें वापस मिलेंगी। और अब वे हमें वापस मिल गई हैं। ऐसा न समझना कि इसमें किसीका पुरुषार्थ काम आया है। ऐसा मानोगे, तो बड़ी भूल करोगे। जिस हद तक हमने अहिंसा और सत्यका पालन किया है, उस हद तक हमें सफलता मिली है। छीता पटेल^२ अपनी बात पर दृढ़ रहे, वे वराड अन्त तक नहीं आये और इस तरह उन्होंने अपनी प्रतिज्ञाका पूरा पालन किया।

१. जन्तु दुई जमीनें वापस मिलेके अवसर पर; भाषणका पाठ महादेव देसाईकी “बारडोली” शीर्षकसे गुजराती और अंग्रेजीमें लिखित तत्सम्बन्धी विवरणसे लिखा गया है।

२. गांधीजीनी दिनवारी के अनुसार।

३. छीता पटेलने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक जन्तु की दुई जमीनें वापस नहीं मिलतीं तब तक वे ब्रिटिश प्रदेशमें पाँव नहीं रखेंगे।

ऐसी प्रतिज्ञा केवल छीताभाईने ही नहीं की, भारतमें जगह-जगह ऐसे अनेक व्यक्ति पड़े हुए हैं और उन्हींके पुण्य-प्रतापसे हमें आज ये जमीनें वापस मिल गई हैं।

किन्तु वापस मिली हुई अपनी ये जमीनें हमें पुनः खोना आना चाहिए। जमीनों की प्राप्तिका आप यह अर्थ न लगायें कि स्वराज्य मिल गया है और हम इस स्वराज्यका भोग करने योग्य हो गये हैं। यदि हमने ऐसा माना तो हम पापके भागी होंगे। उनके मिलनेसे इतना ही सूचित होता है कि जिस मार्ग पर हम आज तक चलते आये हैं, उसी मार्ग पर चलकर अन्तमें हम स्वराज्य प्राप्त करेंगे। इसलिए अब हमें कुछ भी करनेके लिए नहीं रह गया, ऐसा माननेकी भूल हम न करें। यदि हम अपने स्वार्थ-साधनमें लगे रहे, पैसा कमाते रहे और जुआ खेलते रहे, तो हम यह जीती हुई बाजी हार जायेंगे, इतनी चेतावनी मैं आपको देना चाहता हूँ।^१

आज हम प्रभुसे यह याचना करें कि आज तक उसने हमें जितना बल दिया, उससे सौ-गुना अधिक बल दे। अभी तक तो हमने अपना घर-बार खोनेकी, जेल जानेकी ही शक्ति प्रकट की है, अब हमें फाँसी पर चढ़ने अथवा आगमें जलकर भस्म हो जानेकी शक्ति प्राप्त करनी है। यदि हमने इस शक्तिका विकास किया और उसे प्रकट किया, तो स्वराज्य मिलेगा, मिलेगा, अवश्य मिलेगा। किन्तु यदि हम यह भूल गये, तो हम अपनी सारी अर्जित सम्पत्ति खो बैठेंगे और हमें दिवाला निकालना होगा। मेरी आपसे विनय और प्रार्थना है कि हममें से कोई भी परीक्षाकी घड़ीमें ऐसा दिवाला न निकाले।

[गुजरातीसे]

हरिजनबन्धु, २६-२-१९३९, और हरिजन, १८-२-१९३९

३९२. राजकोट

राजकोटके संघर्षमें मेरी व्यक्तिगत दिलचस्पी है। वहीं मैंने मैट्रिक तककी अपनी शिक्षा पाई, और अनेक वर्षों तक मेरे पिता वहाँ दीवान रहे। वहाँके लोगोंको जो तमाम मुसीबतें उठानी पड़ रही हैं, उन्हें मेरी पत्नी इतना ज्यादा सहसूस करती है कि मेरी ही तरह वृद्ध और जेल-जीवनकी कठिनाइयोंको बहादुरीके साथ बर्दाश्त करनेमें मुझसे कम समर्थ होते हुए भी उसे ऐसा लगता है कि उसे राजकोट जाना ही चाहिए। और सम्भवतः पाठकोंके हाथोंमें यह लेख पहुँचनेसे पहले वह वहाँ चली भी गई होगी।^१

लेकिन मैं तो इस संघर्ष पर तटस्थ रूपसे ही विचार करना चाहता हूँ। इस सम्बन्धमें अन्यत्र उद्धृत सरदारका वक्तव्य^१ इस दृष्टिसे एक कानूनी दस्तावेज है कि

१. इसके बादका अनुच्छेद हरिजन से लिया गया है।

२. कस्तूरबा गांधीको ३ फरवरीको सत्याग्रहके लिए रियासतमें प्रवेश करने पर गिरफ्तार कर लिया गया था।

३. देखिए परिशिष्ट १।

एक भी शब्द फालतू नहीं है और न उसमें ऐसी कोई बात है जिसका असं-दिग्ध सबूतसे समर्थन न होता हो। और उस सबूतका अधिकांश उन लिखित दस्तावेजों पर आधारित है जो वक्तव्यके साथ परिशिष्टके रूपमें संलग्न हैं।

यह इस बातका सबूत पेश करता है कि राजकोटके शासक और उनकी प्रजा के बीच जो पवित्र समझौता हुआ था, वह जानबूझकर तोड़ा गया।^१ और समझौते को तोड़नेका काम ब्रिटिश रेजिडेंट^२ की, जिसका वाइसरायसे सीधा सम्बन्ध है, प्रेरणासे और उसके आदेशपर हुआ।

जो समझौता हुआ उसमें एक ब्रिटिश दीवान^३ भी शरीक था। उसे इस बात पर गर्व था कि वह ब्रिटिश सत्ताका प्रतिनिधि है। उसने शासक पर शासन करनेकी उम्मीद की थी। इसलिए वह इतना मूर्ख नहीं था कि सरदारके फन्देमें आ जाता। अतएव समझौता दुर्बल शासकसे जबर्दस्ती नहीं ऐंठा गया था। ब्रिटिश रेजिडेंटको कांग्रेस और सरदारसे इसलिए नफरत थी कि वे ठाकुर साहबको दिवा-लिया होने और शायद गद्दी छिननेसे बचाना चाहते थे। कांग्रेसके प्रभावको वह सह नहीं सका। इसलिए ठाकुरसाहब अपनी प्रजासे किये हुए वायदेको पूरा करें, उससे पहले ही उसने उनसे उसे तुड़वा दिया। सरदारको राजकोटसे जो समाचार मिल रहे हैं उनपर विश्वास किया जाये, तो रेजिडेंट ब्रिटिश सिंहके खूनी पंजे दिखाकर प्रजासे मानो यह कह रहा है कि 'तुम्हारा शासक तो मेरे हाथका खिलौना है। मैंने उसे गद्दी पर बैठाया है और उतार भी सकता हूँ। वह भलीभाँति जानता था कि उसने मेरी इच्छाके विरुद्ध काम किया है। इसलिए अपनी प्रजाके साथ समझौता करनेके उसके कामको मैंने चौपट कर दिया है। तुम जो कांग्रेस और सरदारसे सम्बन्ध रखते हो, उसके लिए मैं तुम्हें ऐसा सबक दूँगा जिसे तुम अगली पीढ़ी-तक भी नहीं भूलोगे।'

शासकको एक तरहसे कैदी-सा बनाकर उसने राजकोटमें दमन-चक्र शुरू कर दिया है। सरदारको मिले एक ताजा तारमें कहा गया है :

बेचरभाई जसानी और दूसरे स्वयंसेवक गिरफ्तार हो गये। २६ स्वयं-सेवकोंको रातके वक्त एजेंसीकी सीमामें एक दूरकी जगह ले जाकर बुरी तरह पीटा गया। गाँवमें भी स्वयंसेवकोंके साथ इसी तरहका व्यवहार हो रहा है। एजेंसीकी पुलिस स्टेट-एजेंसीका नियन्त्रण कर रही है और गैर-फौजी सीमामें निजी मकानोंकी तलाशी ले रही है।

ब्रिटिश भारतमें सविनय अवज्ञाके दिनोंमें ब्रिटिश अधिकारी जो कुछ करते थे, उसीकी ब्रिटिश रेजिडेंट वहाँ पुनरावृत्ति कर रहा है।

मैं जानता हूँ कि यदि राजकोटकी जनता इस सब पागलपनका खुद पागल हुए बगैर मुकाबला कर सके और अपने पर होनेवाली क्रूरताओंको विनम्रता मगर दृढ़ता

१. देखिए “पत्र : लॉर्ड लिन्लियगोको”, पृ० ३६५-६७, और “देशी राज्य”, पृ० ३५३-५।

२. ई० सी० गिब्सन।

३. सर पैट्रिक आर० कैडेल।

और बहादुरीके साथ बर्दाश्त कर सके, तो वह विजयी ही नहीं होगी बल्कि ठाकुर साहबको भी आजाद करा सकेगी। वह यह सिद्ध कर देगी कि कांग्रेसकी प्रभुताके अधीन वही सच्ची शासक है। लेकिन अगर वह पागल हो गई और दुर्बल प्रतिशोध की बात सोचने और हिंसात्मक कामोंका सहारा लेने लगी, तो उसकी हालत पहलेसे भी बदतर हो जायेगी और तब कांग्रेसकी प्रभुताका कोई असर नहीं पड़ेगा। कांग्रेसकी प्रभुता तो केवल उन्हींके काम आती है जो अहिंसाके झंडेको अपनाते हैं जैसेकि ब्रिटेनकी प्रभुता 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' के सिद्धान्तको माननेवालोंके ही काम आती है।

राजकोटकी प्रजा का जब शासक और रियासतके छोटे-से पुलिस दस्तेसे नहीं, बल्कि ब्रिटिश साम्राज्यके अनुशासित सैनिकोंसे मुकाबला है, तब ऐसी स्थितिमें कांग्रेसका कर्तव्य क्या है ?

पहली और स्वाभाविक बात यह है कि राजकोटकी प्रजाकी सुरक्षा और सम्मान-रक्षाकी जिम्मेदारी कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल अपने ऊपर ले ले। यह सच है कि भारत सरकार अधिनियम मन्त्रियोंको रियासतोंके बारेमें कोई अधिकार नहीं देता। लेकिन वे एक ऐसे शक्तिशाली प्रान्तके शासक हैं, जिसमें राजकोट तो एक छोटा-सा टुकड़ा मात्र है। इस हैसियतसे भारत सरकार अधिनियमके दायरेसे बाहर भी उनके अधिकार और कर्तव्य हैं, जो और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं। फर्ज कीजिए कि भारतमें जितने भी गुण्डे हैं वे सब राजकोटमें जा बसें, और वहाँसे वे हिन्दुस्तान-भरमें उत्पात मचायें, तो स्पष्टतया मन्त्रियोंका यह अधिकार और कर्तव्य होगा कि बम्बईमें रहनेवाले ब्रिटिश प्रतिनिधिकी मार्फत वे सर्वोच्च सत्तासे राजकोटकी स्थिति सुधारनेकोक हैं। और सर्वोच्च सत्ताका यह फर्ज होगा कि वह या तो ऐसा करे या मन्त्रियोंसे हाथ धोये। क्योंकि हरएक मन्त्रीपर ऐसी हरएक बातका असर पड़े बिना नहीं रह सकता, जो उसके प्रान्तकी भौगोलिक सीमामें होती है, फिर वह चाहे उसके कानूनी दायरेके बाहर ही क्यों न हो, खासकर जब वह बात उसकी शालीनताको भी चोट पहुँचाती हो। उन भागों में उत्तरदायी शासन है या नहीं, यह देखना चाहे मन्त्रियोंका काम न हो, लेकिन अगर उन भागोंमें प्लेग फैले या मार-काट मचे तो उसपर ध्यान देना उनका काम जरूर है। नहीं तो उनका शासन मात्र दिखावा और धोखा ही है। इस प्रकार उड़ीसाके मन्त्री अगर तालचैरके २६,००० शरणार्थियोंको उनकी रक्षाका और भाषणकी तथा सामाजिक तथा राजनीतिक स्तर पर मिलने-जुलनेकी आजादीका पूरा आश्वासन देकर उनके घर भेजनेमें कामयाब न हों, तो वे आरामसे अपनी कुर्सियों पर बैठे नहीं रह सकते। जो कांग्रेस आज ब्रिटिश सरकारके साथ मिलकर काम कर रही है, वह ब्रिटिश सरकारके अधीनस्थ देशी राज्योंके अन्दर दुश्मन और विदेशी मानी जाये, यह बात तो असह्य है।

राजकोटमें ब्रिटिश रेजिडेंटकी प्रेरणासे प्रजाकी आजादीके फरमानको धृष्टतापूर्वक तोड़ा गया है। यह ऐसी गलती है जिसको यथासम्भव जल्दी-से-जल्दी दुरुस्त करना ही चाहिए। यह ऐसा जहर है जो सारे शरीरमें व्याप्त हो रहा है। क्या वाइसराय महोदय राजकोटके महत्वको समझकर इस जहरको दूर करेंगे ?

बारडोली, ३० जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-२-१९३९

३९३. आधुनिक लड़की

मुझे ११ लड़कियोंकी तरफसे लिखा हुआ एक पत्र मिला है। उनके नाम और पते मेरे पास भेज दिये गये हैं। मैं उस पत्रमें सिर्फ इतना परिवर्तन करके नीचे दे रहा हूँ जिससे वह अधिक पठनीय बन जाये, लेकिन उसके अर्थमें कोई परिवर्तन नहीं कर रहा हूँ :

‘हरिजन’ के ३१ दिसम्बर, १९३८ के अंकमें “विद्यार्थियोंके लिए लज्जाजनक”^१ शीर्षकसे प्रकाशित एक छात्राके पत्रपर की गई आपकी टिप्पणी विशेष ध्यान देने योग्य है। मालूम होता है कि आधुनिक लड़कीने आपको इतना ज्यादा चिढ़ा दिया है कि आपने उसके बारेमें यहाँ तक कह डाला कि उसे तो अनेक भँवरोंकी दृष्टिमें आकर्षक बनना प्रिय है। आपका यह वचन, जिससे स्त्रियोंके बारेमें आपकी सामान्य धारणा प्रगट होती है, बहुत उत्साह-वर्धक नहीं है।

इन दिनों जब स्त्रियाँ चारदीवारीसे बाहर निकलकर पुरुषोंकी सहायता के लिए आगे आ रही हैं और जीवनका भार वहन करनेमें समान भाग ले रही हैं, यह सचमुच आश्चर्यकी बात है कि उनके साथ पुरुषों द्वारा दुर्व्यवहार होनेपर भी दोष उन्हींको ही दिया जाता है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि ऐसे दृष्टान्त दिये जा सकते हैं, जिनमें दोनों पक्षोंका एक-सा दोष हो। कुछ लड़कियाँ ऐसी हो सकती हैं, जिन्हें अनेक भँवरोंकी दृष्टिमें आकर्षक बनना प्रिय हो। परन्तु ऐसी घटनाओंसे यह तो सिद्ध होता ही है कि फूलकी खोजमें सड़कोंपर मँडरानेवाले अनेक भँवरे मौजूद हैं। और यह तो कभी नहीं माना जा सकता और न माना जाना चाहिए कि सभी आधुनिक लड़कियाँ ऐसी होती हैं और सभी आधुनिक नौजवान भँवरे होते हैं। आप खुद बहुत-सी आधुनिक लड़कियोंके सम्पर्कमें आये हैं और आपको उनके दृढ़ संकल्प, त्याग और अन्य उत्तम स्त्रियोचित गुणोंका परिचय मिला होगा।

जहाँ तक आपकी पत्र-लेखिकाके बताये हुए दुर्व्यवहारोंके खिलाफ लोकमत तैयार करनेका सवाल है, यह काम लड़कियोंके करनेका नहीं है। इसका कारण उनकी झूठी शर्म नहीं, बल्कि उनकी असमर्थता है।

१. देखिए पृ० २७०-४।

परन्तु आपके जैसे जगद्बन्ध महात्माका ऐसा कथन यह सिद्ध करता है कि आप भी इस दकियानूसी और अशोभनीय कहावतका समर्थन करते हैं कि 'नारी नरककी खान है।'

परन्तु उपरोक्त बातोंसे आप यह निष्कर्ष न निकालें कि आधुनिक लड़कियोंमें आपके लिए आदर नहीं है। वे आपका उतना ही आदर करती हैं, जितना हर एक नौजवान करता है। लेकिन उन्हें यह बहुत बुरा लगता है कि कोई उनसे धृणा करे या उनपर दया दिखाये। अगर वे सचमुच दोषी हों, तो वे अपना तौर-तरीका सुधारनेको तैयार हैं। उन्हें दोष देनेसे पहले उनका कोई दोष हो, तो वह पूरी तरह साबित किया जाना चाहिए। इस बारेमें वे न तो स्त्रियोंके प्रति विशेष सुविधाके नियमोंकी शरण लेना चाहती हैं और न यह चाहती हैं कि वे चुपचाप खड़ी रहें और न्यायाधीश मनमाने तौरपर उनको दोषी ठहरा दें। सचाईका सामना करना चाहिए; और आधुनिक लड़की सचाईका सामना करनेका काफी साहस रखती है।

मेरी पत्र-लेखिकाओंको शायद यह पता नहीं कि मैंने ४० वर्षसे भी पहले दक्षिण आफ्रिकामें भारतीय स्त्रियोंकी सेवा आरम्भ की थी, जब शायद इनमें से किसीका जन्म भी नहीं हुआ होगा। मेरा यह विश्वास है कि मैं स्त्री-जातिके लिए कोई अपमानजनक बात लिख ही नहीं सकता। स्त्री-जातिके लिए मेरा आदर इतना अधिक है कि वह मुझे उनका बुरा सोचने ही नहीं दे सकता। जैसाकि अंग्रेजीमें कहा गया है, स्त्री पुरुषका उत्तम अर्धांग है। और मेरा लेख विद्यार्थियों की वेह्याईकी कलाई खोलनेके लिए लिखा गया था, न कि लड़कियोंकी दुर्बलताओंका विज्ञापन करनेके लिए। परन्तु सही उपचार बता सकनेके लिए यह आवश्यक था कि मैं रोगका निदान करते समय बीमारी पैदा करनेवाले सभी कारणोंका उल्लेख करूँ।

'आधुनिक लड़की' शब्दका विशेष अर्थ है। इसलिए अपनी बातका दायरा कुछ लड़कियों तक सीमित रखनेका कोई सवाल नहीं था। परन्तु जो लड़कियाँ अंग्रेजी शिक्षा पाती हैं, वे सब आधुनिक लड़कियाँ नहीं हैं। मैं बहुत-सी ऐसी लड़कियोंको जानता हूँ, जिनमें 'आधुनिक लड़की' की कोई बू नहीं है। परन्तु कुछ लड़कियाँ ऐसी हैं जो आधुनिक लड़कियाँ बन गई हैं। मेरे शब्दोंका अर्थ भारतीय छात्राओंको यह चेतावनी देनेका था कि वे आधुनिक लड़कीकी नकल करके उस समस्याको, जो एक गम्भीर खतरा बन गई है, पेचीदा न बनायें। कारण, जिस समय मुझे उपरोक्त पत्र मिला उसी समय आन्ध्रकी एक छात्राका पत्र भी मिला था, जिसमें आन्ध्रके विद्यार्थियोंके व्यवहारकी सख्त शिकायत की गई थी। वर्णनसे लगता है कि यह व्यवहार उससे भी अधिक अशोभनीय है जिसका लाहौरवाली लड़कीने वर्णन किया है। आन्ध्रकी इस पुत्रीका कहना है कि उसकी सहेलियोंके सादे वेशसे उनकी रक्षा नहीं होती। परन्तु उनमें इतना साहस नहीं है कि जो लड़के अपनी संस्थाके लिए कलंक-स्वरूप हैं, उनके जंगलीपनका भंडाफोड़ कर सकें। मैं विश्वविद्यालयके अधिकारियोंसे इस शिकायतपर ध्यान देनेका अनुरोध करता हूँ।

इन ११ लड़कियोंसे मेरा अनुरोध है कि वे विद्यार्थियोंके असभ्य व्यवहारके खिलाफ एक जिहाद शुरू कर दें। ईश्वर उन्हीं की मदद करता है जो अपनी मदद आप करते हैं। लड़कियोंको पुरुषोंकी गुंडागर्दीसे अपनी रक्षा करनेकी कला सीखनी ही चाहिए।

बारडोली, ३० जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-२-१९३९

३९४. जयपुर

जयपुर तथा राजकोटके संघर्षका अन्तर पाठकोंको समझा देना जरूरी है।

राजकोटका संघर्ष स्पष्टतः इसलिए है कि राज्यके अन्दर उत्तरदायी सरकार कायम की जाये, और अब इसलिए कि राजाने अपनी प्रजाको जो वचन दिया था, उसका पालन कराया जाये। राजकोटके हरएक मर्द और औरतमें अगर कुछ आन होगी, तो वहाँ के ब्रिटिश रेजिडेंटके अपमानजनक व्यवहारका मुकाबला वे मरते दम तक करेंगे।

किन्तु जयपुरका संघर्ष एक बहुत छोटे प्रश्नको लेकर है। राज्यकी एक राजनीतिक संस्थाको उत्तरदायी शासनकी माँग करनेके अपराधमें एक तरहसे गैर-कानूनी करार दे दिया गया है; और उसके अध्यक्ष पर, जो खुद जयपुरके निवासी हैं, पाबन्दी लगा दी गई है। जिस क्षण ये पाबन्दियाँ उठा ली जायेंगी, और आजादीके साथ मिलने-जुलने, सभा वगैरह करनेका अधिकार दे दिया जायेगा, उसी क्षण सविनय अवज्ञा बन्द हो जायेगी। पर यहाँ भी ब्रिटिश सिंहने अपना भयंकर पंजा बढ़ाया है। सीकरके रावराणाके कानूनी सलाहकार बैरिस्टर चुडगरकी जयपुरके अंग्रेज प्रधानमन्त्रीके साथ बातचीत हुई थी। बातचीतके सारांशकी निम्नलिखित रिपोर्ट श्री चुडगरने जमनालालजीके पास भेज दी :

आपको यह जतला देना मैं अपना फर्ज समझता हूँ कि जयपुरके प्रधान मन्त्री सर बीकम सेंट जॉनसे गत ९ जनवरीको ११ बजे मैं नटनीका बाग स्थित उनके बंगलेपर सीकरके बारेमें मिला था। उस समय जयपुरके मामलेपर भी हमारी थोड़ी-सी चर्चा हुई थी, जिसका सार यह है :

मैंने सर बीकमसे कहा कि जयपुर राज्यकी हदमें जमनालालजीके प्रवेश पर जो पाबन्दी लगाई गई है, उससे सारे हिन्दुस्तानमें लाखों आदमियोंको दुःख और आश्चर्य हुआ है — खासकर इसलिए कि जमनालालजी एक शान्तिप्रिय व्यक्तिके रूपमें अच्छी तरह प्रसिद्ध हैं, और इस वक्त तो उनका उद्देश्य राज्यके अकाल-पीड़ित इलाकेमें सहायता-कार्यकी देखरेख और उसका निर्देशन ही था। इसके जवाबमें सर बीकमने यह तो स्वीकार किया कि आप शान्तिप्रिय

व्यक्ति हैं, पर उनका ऐसा खयाल था कि आप और आपके आदमी अकाल-पीड़ित इलाकोंकी आम जनताके सम्पर्कमें आयेंगे; और यह उन्हें चन्द स्पष्ट राजनीतिक कारणोंसे पसन्द नहीं था। मैंने उन्हें बताया कि जमनालालजी अनिश्चित काल तक इस आदेशको माननेवाले नहीं हैं इसलिए राज्य तथा प्रजाके हितकी दृष्टिसे यह बेहतर होगा कि यह आदेश मिलनेके बाद जमनालालजीने पत्रोंमें जो वक्तव्य प्रकाशित कराया है, उसे ध्यानमें रखते हुए आदेश वापस ले लेना चाहिए, जिससे कि अनावश्यक संकट टल जाये। सर बीकम पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। उन्होंने कहा कि जमनालालजी अगर आदेशकी अवज्ञा करते हैं, तो उनके ऐसा करनेसे पैदा होनेवाली किसी भी स्थितिका मुकाबला करनेके लिए मैं तैयार हूँ। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेसवाले अहिंसक संघर्ष द्वारा क्रान्ति करनेपर उतारू हैं, पर अहिंसा तो शक्तिमें हिंसासे किसी भी तरह कम नहीं है, बल्कि उसमें हिंसासे भी प्रबल शक्ति है। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दुस्तानी लोग अंग्रेज जातिकी स्वभावगत मानवीय भावनाओंका अनुचित लाभ उठा रहे हैं। अंग्रेजोंकी जगह हिन्दुस्तानमें अगर जापान या हिटलरका शासन होता तो अहिंसा कभी भी इतनी कारगर नहीं हो सकती थी।

इसके बाद उन्होंने कहा कि मैं पूर्ण विचारके बाद इस रायपर पहुँचा हूँ कि अहिंसा चाहे कितनी ही शुद्ध हो, उसका जवाब हिंसासे ही देना चाहिए। और, जयपुरके अहिंसक आन्दोलनका जवाब मैं 'मशीनगन' से दूँगा। मैंने सर बीकमको ध्यान दिलाया कि सब अंग्रेज इस प्रकार नहीं सोचते हैं और अंग्रेज जाति भी, एक राष्ट्रके रूपमें, उनके विचारोंसे सहमत नहीं होगी। उन्होंने कहा कि "सहमत हो या न हो", पर मेरी खुदकी तो ऐसी ही राय है कि अहिंसा और हिंसामें कोई अन्तर नहीं है, और अहिंसाका जवाब हिंसासे देनेमें कुछ भी अनुचित नहीं है।

अगर आप या महात्माजी इस वक्तव्यका कोई उपयोग करना चाहें, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।

मैं तो यह पढ़कर हक्का-बक्का रह गया। मुझे यह इतना आश्चर्यजनक लगा कि मैंने यह वक्तव्य जयपुरके प्रधानमन्त्रीको अपने निम्नलिखित (१८-१-१९३९) पत्रके साथ भेज दिया :^१ प्रधानमन्त्रीने (२०-१-१९३९ को) मुझे उस पत्रका यह जवाब दिया :

आपका १८ तारीखका कृपापूर्ण पत्र प्राप्त हुआ। साथ ही श्री चुडगरके उस पत्रकी नकल भी मिली जो उन्होंने सेठ जमनालाल बजाजको लिखा था। उस पत्रमें जो-कुछ लिखा है, उसकी सचाईकी जाँच करनेसे पहले आपने उसे प्रकाशित करनेमें झिझक दिखाई, यह बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य था, जिसकी मैं निजी

तौरपर इसलिए बहुत कद्र करता हूँ क्योंकि अब मैं आपको यह बतला सकता हूँ कि इस पत्रमें दिया हुआ मेरे विचारोंका बयान बिल्कुल गलत है। समझमें नहीं आता कि श्री चुडगर मेरे कथनको इतना गलत कैसे समझे। इस घटनासे भविष्यमें ऐसी मुलाकातें देनेके सम्बन्धमें मेरी शिक्षक और पक्की हो गई है।

अब चूँकि हकीकत आपको मालूम हो गई है, इसलिए मुझे विश्वास है कि ऐसे पत्रको प्रकाशित करनेकी आपकी अनिच्छा और पुष्ट हो जायेगी। लेकिन अगर आप विपरीत निर्णयपर पहुँचे, तो जितनी जल्दी हो सके, कृपया मुझे उसकी खबर दे दें, ताकि मैं उचित कार्रवाई कर सकूँ।

आपने मेरे ऊपर जो कृपा दिखाई उसके लिए पुनः धन्यवाद।

इसका जवाब मैंने इस प्रकार दिया (२२-१-१९३९) :^१

उसका जवाब (२५-१-१९३९ को) यह आया :

आपके इसी २२ ता० के पत्रके लिए अनेक धन्यवाद।

मुझे विश्वास है कि निजी तथा व्यक्तिगत समझी जानेवाली मुलाकातको कलमबन्द करनेमें मेरी स्वाभाविक हिचकिचाहटके प्रति आप सहानुभूति दिखायेंगे—खासकर जबकि मुलाकात लेनेवाला गलत रिपोर्ट प्रकाशित करनेकी धमकी दे चुका है। मुझे विश्वास है कि आप मेरी इस बातसे सहमत होंगे कि ऐसी कार्रवाईसे केवल कटुता ही बढ़ेगी, और जहाँ तक मैं देखता हूँ कोई उपयोगी हेतु पूरा नहीं होगा।

लेकिन अगर श्री चुडगर अपनी गलत रिपोर्ट प्रकाशित कर देना उचित ही समझे तो मुझे विश्वास है कि आप मुझे आगाह कर देंगे ताकि मैं, जैसाकि मैं पहले ही कह चुका हूँ, इस सम्बन्धमें उचित कार्रवाई कर सकूँ।

इसका जवाब मैंने (२७-१-१९३९ को) नीचे लिखे अनुसार भेजा :^२

यह सारा पत्र-व्यवहार मैंने श्री चुडगरको दिखाया और उन्होंने इस सम्बन्धमें (२८-१-१९३९ को) श्री जमनालालजीको जो पत्र लिखा था, उसकी निम्नलिखित नकल मेरे पास भेज दी :

महात्माजी और सर डब्ल्यू० बीकम सेंट जॉनके बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ है और जिसका अन्त महात्माजीके २७ तारीखके पत्रसे होता है, उसे मैं पढ़ गया हूँ। आपको मैंने १५ तारीखको जो पत्र लिखा था उसे मैंने फिर एक बार ध्यानपूर्वक पढ़ लिया है। मैं कहता हूँ कि उसमें जो बयान मैंने दिया है, वह मेरे और सर बीकमके बीच हुई बातचीतकी बिल्कुल सही रिपोर्ट है।

१. पत्रके पाठके लिए देखिए पृ० ३४९।

२. पत्रके पाठके लिए देखिए पृ० ३७०।

प्रधानमन्त्रीके पत्र बड़े ही विचित्र हैं। मैंने उनसे माँगी तो थी रोटी, पर उन्होंने दिया मुझे पत्थर ! अब अगर वे अपना बयान देनेमें असमर्थ हों और इस स्थितिमें मैं श्री चुडगरके बयानको सच्चा मान लूँ, तो वे (सर बीकम) मुझे क्षमा करें। उनका महज इनकार करना और साथ ही धमकी देना, कोई महत्व नहीं रखता।

कांग्रेस, ताकत रखते हुए भी, इन्तजार करती रहे और चुपचाप देखती रहे, और जयपुरकी प्रजाको मानसिक तथा नैतिक भूखसे मरने दे — खासकर जबकि प्राकृतिक अधिकारपर लगाई गई ऐसी पाबन्दीके पीछे ब्रिटिश साम्राज्यकी ताकत हो — यह सम्भव नहीं है। अगर प्रधानमन्त्री जो कुछ कर रहे हैं उसे करने का उन्हें अधिकार नहीं है तो कम-से-कम उन्हें उस पदसे तो हटा ही देना चाहिए।

बारडोली, ३० जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ११-२-१९३९। (सी० डब्ल्यू० ७८०९) से भी; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला।

३९५. पत्र : कान्ति लाल गांधीको

बारडोली

३० जनवरी, १९३९

चि० कान्ति,

मैंने तुझे कई सन्देश भेजे थे। बा, मैं और सब लोग चिन्तामें रहते हैं कि तेरे पत्र क्यों नहीं आते। आज तेरा पत्र मिला। मेरी तबीयत ठीक ही है। तुझे हफ्तेमें एक कार्ड लिखना तो नहीं ही भूलना चाहिए।

रामचन्द्रनके साथ मेरी खूब बात हुई है। उसका पत्र अभी ही आया। अब उसे विश्वास हो गया है। सरस्वतीको भेजनेके लिए उसे मना तो रहा हूँ। इसमें सरस्वतीकी मदद चाहिए।

अब प्रार्थनाका समय हो गया, इसलिए बस।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मैं पहलीको सेगाँव जाऊँगा।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७३५७) से; सौजन्य : कान्ति लाल गांधी।

३९६. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

३० जनवरी, १९३९

चि० कान्ति,

इन दिनों मैं कोई सुझाव अपनी ओरसे पेश नहीं करता। प० का नाम मेरे आगे रखा गया था, और वही एक नाम था। दूसरी बार चुने जानेके खिलाफ मैंने अपनी आपत्ति व्यक्त की थी।

कलका मेरा पत्र मिला होगा।

सरस्वतीके पत्र मेरे पास कभी-कभी आते हैं।

अपनी तबीयतका ध्यान रखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७३५६) से; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी ।

३९७. “लताड़ और प्यार”

अभी हालमें बम्बईमें हुई नरेन्द्र मण्डलकी बैठकका निम्नलिखित विवरण, जिसे प्रामाणिक बताया गया है, पढ़ने में पाठकोंको दिलचस्प मालूम होगा — साथ ही इसे पढ़ते हुए उन्हें दुःख भी होगा :

बीकानेरके महाराजा साहबने राजकोटकी घटनाओंका विवरण देते हुए चर्चा आरम्भ की। उन्होंने कहा कि वहाँकी अशान्तिका कारण यह है कि वहाँ प्रभावशाली जागीरदारोंका अभाव है, निजी खर्च और राज्यके खर्चमें भेद नहीं रखा गया है और काठियावाड़की रियासतें छोटी हैं। कांग्रेस इसे एक आजमाइशी लड़ाई मानती है और राजकोटको उसने कई कारणोंसे चुना है। उसमें मुख्य कारण ये हैं : राजकोट छोटी और सीमित साधन-सामग्रीवाली रियासत होनेके कारण कांग्रेसके हमलेका सामना देर तक नहीं कर सकेगी, और ऐसे हमलेके लिए पृष्ठभूमि तैयार की जा चुकी है। काठियावाड़में कांग्रेस सशक्त और सक्रिय है, और फिर लड़ाईका संचालन करने तथा अभियान चलाने के लिए सरदार वल्लभभाई पटेल पास ही बैठे हुए हैं। इसके बाद, बीकानेरके महाराजा साहबने यह सुझाव दिया कि कई-एक रियासतोंके लिए संयुक्त पुलिस रखी जाये, क्योंकि अलग-अलग रियासतोंके — विशेषकर छोटी

रियासतोंके — साधन-सामग्री सीमित हैं और इसलिए इस खतरेका सामना करनेके लिए, जो हम सबपर समान रूपसे आया हुआ है, वे काफी नहीं हैं। सर्वोच्च सत्ता और उसके प्रतिनिधियोंका भी ऐसा ही संकेत है। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश भारतीय प्रदेशोंसे मिलनेवाली सहायता और सहयोगपर भी अब ज्यादा निर्भर नहीं रहा जा सकता, क्योंकि वहाँ कांग्रेसका ही बोलबाला है और स्वभावतः वे लोग भारतीय रियासतोंकी मदद नहीं करना चाहेंगे। उल्टे मौन या मुखरूपसे उनकी सहानुभूति तो भारतीय रियासतोंकी प्रजा अथवा बाहरी आन्दोलनकारियोंके साथ है। उड़ीसाकी रियासतोंमें जब इसी तरहका उपद्रव हुआ और उन्होंने उड़ीसा सरकारसे मदद माँगी तो उड़ीसा सरकारके खूबसे वास्तवमें यही बात प्रकट हुई थी।

अपनी बात जारी रखते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस भारतीय रियासतों की ओर अब अधिकाधिक ध्यान देगी। अब तक कांग्रेसकी नीति, जैसाकि कांग्रेसके हरिपुरा-अधिवेशनके प्रस्तावमें और उससे पहले बताया गया था, यह थी कि वह रियासतोंके मामलोंमें हस्तक्षेप नहीं करेगी और रियासतोंकी प्रजासे यही कहा गया था कि वे अपने बलबूतेपर ही सब काम करें। कारण स्पष्ट है। कांग्रेस सक्रिय रूपसे ब्रिटिश भारतकी समस्याओंमें व्यस्त थी और भारतीय रियासतोंकी जनतामें शक्ति पैदा करना और उनमें आत्म-निर्भरताकी भावना पोषित करना चाहती थी। कांग्रेस ब्रिटिश भारतमें अपना दबदबा लगभग कायम कर चुकी है, अतः यह स्वाभाविक है कि अब वह अपनी शक्ति और प्रभावका उपयोग भारतीय रियासतोंके मामलेमें करे।

एक दूसरी बात भी है : कांग्रेसजनोंमें जो मतभेद पैदा हो रहे हैं उनकी ओरसे लोगोंका ध्यान हटाने के लिए लड़ाईकी योजनाएँ सामने लाना जरूरी है। राजनीतिका यह एक सूक्ष्म किन्तु छोटा सिद्धान्त-वाक्य है। इटली द्वारा अबीसीनियाकी विजय और आस्ट्रिया और सूडेटेन लैंडके विरुद्ध जर्मनीकी मुहीमोंके कारणोंमें एक यह भी है। इससे इन शक्तियोंको दलगत फूटसे लोगोंका ध्यान हटाने और अपने अनुयायियोंमें उत्साह पैदा करनेमें सहायता मिलती है। हमें सर्वोच्च सत्ताका खूब भी ध्यानमें रखना है। इस सम्बन्धमें इस विषयपर अभी हालमें श्री गांधीने जो-कुछ कहा उसे हमें ध्यानमें रखना है। मेरी रायमें किसी बाहरी शक्तकी बनिस्बत, हमें अपनी ही ताकतपर ज्यादा भरोसा रखना चाहिए; क्योंकि बाहरी सहायता मिल भी सकती हो तो वह अनिश्चित और अपर्याप्त ही होगी।

राजकोटके मामलेके विहंगावलोकनके पश्चात् महाराजाने राजपूतानाकी रियासतोंकी समस्याकी चर्चा की और राजाओंको उन्होंने उस नीतिकी रूपरेखा बताई जिसका अनुसरण वह अपनी रियासत बीकानेरमें कर रहे थे। उन्होंने बताया कि उन्होंने १९१३ में राज्य विधानसभा शुरू की थी और यह सभा

तबसे सरकारी व्ययपर चर्चा करती आई है। बीकानेरमें 'राजपत्र'—सरकारी गजट—प्रकाशित होता है। बाहरसे आनेवाले आन्दोलनकारियों और उन आन्दोलनकारियोंमें भेद करते हैं जो राज्यके ही प्रजाजन हैं। उन्होंने कहा कि यह अन्तर बहुत महत्वपूर्ण है और सदा ध्यानमें रखा जाना चाहिए। बाहरी आन्दोलनकारी, जिनकी रियासतकी भलाईमें कोई आर्थिक दिलचस्पी नहीं है, और जो मात्र नेता कहलाने और जनताकी नजरोंमें आनेके लिए यह भूमिका अपनाते हैं उन्हें तो तत्काल निकाल बाहर करना चाहिए। उनका कोई लिहाज नहीं करना चाहिए। उनकी गतिविधियाँ जारी रहना रियासतके लिए संकट-रूप है और वहाँ उनकी उपस्थिति खतरनाक है। इसका उपाय है कि उनको रियासतसे बाहर कर दिया जाये और उनके प्रवेशपर प्रतिबन्ध लगा दिया जाये। यद्यपि रियासतके अन्दरके आन्दोलनकारी भी रियासतके लिए और रियासतकी शान्ति-सुव्यवस्था तथा प्रगतिके लिए उतने ही हानिकारक हैं, परन्तु उनकी स्थिति कुछ भिन्न है। राज्यमें उनकी थोड़ी-बहुत जमीन-जायदाद होती है, उससे उनके कुछ हित-सम्बन्ध होते हैं। वेकभी-कभी शायद ऐसी तकलीफोंकी भी शिकायत करते हैं जो किसी सीमा तक सही होती हैं और ऐसी तकलीफें जहाँ तक हो सके दूर कर देनी चाहिए ताकि उस आन्दोलनमें जोर न रह जाये जिसका कि वे समर्थन और पोषण करते हैं। जहाँ तक सम्भव हो सही शिकायतें दूर कर दी जानी चाहिए और आन्दोलन दबा दिया जाना चाहिए। यदि आन्दोलनकारी प्रामाणिक किस्मके हों और शिक्षित बेकारोंके वर्गमें से हों तो रियासतमें उन्हें उपयुक्त नौकरी देकर उनके मुँह बन्द करनेकी कोशिश की जानी चाहिए। कहावत है कि "कौर डालकर मुँह बन्द कर देना ज्यादा अच्छा है।"

उसके बाद प्रजा-मण्डलोंके प्रश्नपर चर्चा हुई। इस चर्चामें बीकानेरके महाराजा, सर कैलाश नारायण हकसर, जयपुरके रा० ब० पण्डित अमरनाथ अटल, उदयपुरके पण्डित धर्मनारायण और अलवरके मेजर हावेंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। बूंदीके श्री राबर्टसन और सिरोहीके श्री मैकग्रेगरने कुछ प्रश्न पूछे। श्री अटलने जयपुरमें प्रजामण्डलकी उत्पत्ति और विकासका सविस्तार वर्णन किया। उससे यह स्पष्ट था कि इन प्रजा-मण्डलोंके संस्थापक और उन्नायक प्रजाके असन्तुष्ट लोग और रियासतकी नौकरीसे बरखास्त किये गये छोटे अधिकारी होते थे। सबको सावधान और सचेत रहने के लिए आगाह किया गया। इस बातपर सहमति प्रकट की गई कि इन लोगोंपर कड़ी निगरानी रखी जाये और उनकी गतिविधियोंकी पूरी खबर दी जाये चाहे वे कितनी ही सीमित या व्यापक क्यों न हों। यह कहा गया कि इन प्रजा-मण्डलोंको तत्काल कुचल दिया जाये और उन्हें शक्ति या प्रभाव प्राप्त नहीं करने दिया

जाये। यदि उन्होंने कुछ शक्ति या प्रभाव प्राप्त भी कर लिया हो तो चतुराईसे उनकी गतिविधियोंको शारदा-कानून जैसे सामाजिक कार्योंकी ओर मोड़ देनेका प्रयास किया जाये। दूसरी ओर यह सुझाव दिया गया कि रियासतोंकी जनता की प्रामाणिक और निर्दोष सलाहकार संस्थाएँ बनाने को प्रोत्साहन दिया जाये, जो रियासतोंमें तथाकथित उत्तरदायी सरकारके विषयमें लोगोंको प्रशिक्षण देने के कामकी शुरुआत करें। रियासतोंसे बाहरके प्रजामण्डलोंकी उपेक्षा की जाये।

सर्वश्री गांधी और पटेल-जैसे कांग्रेसके नेता रियासतोंमें जिस उत्तरदायी शासनकी वकालत कर रहे हैं उसके बारेमें सामान्य राय यह थी कि रियासतों की प्रजा इसके लिए बिलकुल तैयार नहीं है और इसलिए ऐसा शासन देना रियासतों और प्रजाके लिए हानिकर और व्यवस्थित प्रगति तथा शान्तिके लिए घातक होगा। इस सभाकी रायका सार इस सूत्रमें आ जाता है कि ‘लोगोंकी शिकायतों आदिपर ध्यान दो परन्तु उन्हें उत्तरदायी शासनकी बात मत करने दो।’ बीकानेरके महाराजाने कांग्रेसके प्रति अपनी नीति दृढ़तापूर्वक बताई। उन्होंने जो-कुछ कहा उसका सार यह था कि ‘न्याय दो परन्तु दृढ़ बने रहो। लॉर्ड मिंटोके सन् १९०८ में लिखित प्रसिद्ध पत्रमें सुझाई गई दमन और समझौते की, ‘लताड़ और प्यार’ की, नीतिका अनुसरण करो। कब नरमी बरती जाये और कब कठोरता दिखाई जाये और दोनोंका मिश्रण कैसे किया जाये, इन सबमें तालमेल रखना होगा और इसके लिए काफी चतुराई और विवेक-बुद्धिकी आवश्यकता होगी। निर्णय इस बातपर निर्भर करेगा कि रियासत-को जिस स्थितिका सामना करना पड़ रहा है वह कैसी है और प्रस्तुत समस्या किस प्रकार की है। बहरहाल उनकी चर्चमें यह बात बिलकुल साफ थी कि प्रजा-मण्डलोंको ऐसी सामान्य संस्थाओं और राजनीतिक संस्थाओंके रूपमें रियासतोंमें स्थापित नहीं होने देना चाहिए और यदि वे पहलेसे कायम हों तो उन्हें कुचल दिया जाना चाहिए और उनपर प्रतिबन्ध लगा दिया जाना चाहिए, और उनकी गतिविधियोंपर कड़ी निगरानी रखी जानी चाहिए। उनका दमन कैसे किया जाये, इसके लिए कोई सुनिश्चित नियम नहीं बनाये जा सकते। अलग-अलग रियासतें अपनी योजनाएँ बनायेंगी और काम करने के अपने ढंग निश्चित करेंगी।

निम्नांकित अस्थायी निर्णय लिये गये : १. रियासतोंके लिए संयुक्त पुलिस रखी जाये; २. प्रजा-मण्डलोंको तत्काल कुचल दिया जाये; ३. प्रजाकी उचित शिकायतें दूर की जायें; ४. बाहरी आन्दोलनकारियोंके साथ सख्ती बरती जाये और उन्हें बाहर निकाल दिया जाये; ५. सामाजिक गतिविधियोंको प्रोत्साहन दिया जाये किन्तु राजनीतिक गतिविधियोंको नहीं; ६. रियासतके प्रजाजनोंकी प्रामाणिक सलाहकार समितियोंको प्रोत्साहन दिया जाये; ७. ‘दमन और समझौते’ की तथा ‘न्याय दो पर दृढ़ बने रहो’ की नीतिका पालन किया जाये।

यदि इस रिपोर्टमें सम्मेलनमें दिये गये भाषणोंका यह सार सही है तो इससे पता चलता है कि कुछ रियासतोंमें अन्ततः स्वतन्त्रताका जो आन्दोलन चल पड़ा है, उसे कुचलने का कुचक्र चल रहा है। लताड़ और प्यार साथ-साथ चलनेवाले हैं। इससे मुझे एक लैटिन कहावत याद आती है जिसका अर्थ है : “मुझे यूनानियोंसे डर लगता है खासकर जब वे भेंट लाते हैं!” आगेसे शासकोंके अनुग्रहको सन्देहकी दृष्टिसे ही देखना होगा। जब-कभी सुधार किये जायेंगे, वे लोगोंकी सुख-समृद्धिके लिए नहीं अपितु कौर डालकर मुँह बन्द करनेके लिए किये जायेंगे। परन्तु मनुष्यकी योजनाएँ, वह चाहे राजा ही क्यों न हो, प्रायः उलट जाती देखी गई हैं। ईश्वरको अक्सर मनुष्यकी योजनाओंको उसकी अपेक्षासे भिन्न बिल्कुल दूसरा ही मोड़ देते पाया गया है। यदि लोग भयसे मुक्त हो गये हैं और उन्होंने आत्मबलिदानकी कला सीख ली है तो उन्हें किसीके अनुग्रहकी कोई आवश्यकता ही नहीं है। लताड़से वे कभी नहीं डरेंगे। जिस चीजकी उन्हें जरूरत होगी, उसे वे ले लेंगे और उसे आत्मसात् कर लेंगे।

बारडोली, ३१ जनवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-२-१९३९

३९८. पत्र : लॉर्ड लिनलिथगोको

३१ जनवरी, १९३९

प्रिय लॉर्ड लिनलिथगो,

श्री क० मा० मुन्शी, सर पुरुषोत्तमदास और अब श्री घनश्यामदास बिड़लाने भी मुझे बताया है कि रियासतोंके बारेमें और विशेषकर जयपुरके बारेमें ‘हरिजन’ में प्रकाशित मेरे लेखोंसे आपको बड़ी परेशानी हो रही है। इसलिए मैंने संलग्न लेख^१का प्रकाशन स्थगित कर दिया है। वैसे, मैं यह लेख पूनामें ‘हरिजन’के प्रबन्धकको भेज चुका था।

यह कहनेकी जरूरत नहीं कि मेरी यह कतई इच्छा नहीं है कि मैं ऐसा कोई काम करूँ जो आपको परेशानीमें डालनेवाला हो। यदि यह मेरे बसके ही बाहर हो तब दूसरी बात है। मेरा उद्देश्य यह है कि सम्बन्धित प्रजाको न्याय मिले।

मैंने अपने पिछले पत्रमें^२ जिन तीन मामलों का जिक्र किया है, उनके बारे में आप कोई प्रभावपूर्ण कार्रवाई कर सकें तो कितना अच्छा हो!

१. देखिए “जयपुर”, पृ० ३८६-९।

२. देखिए पृ० ३६५-७।

क्या मैं यह आशा रखूँ कि आप मुझे एक पंक्ति लिखकर यह बतायेंगे कि इस लेखका, जिसका प्रकाशन फिलहाल स्थगित कर दिया गया है, मैं क्या कहूँ?

हृदयसे आपका,

अंग्रेजीकी प्रति (सी० डब्ल्यू० ७८०६) से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला ।

३९९. पत्र : पुरुषोत्तम गांधीको

बारडोली

३१ जनवरी, १९३९

चि० पुरुषोत्तम,

ये रहे पण्डितजी के बारेमें दो शब्द ।^१

तेरी तबीयत ठीक रहती होगी ।

कभी-कभी कुसुम, मंजु वगैरहके समाचार भी देना ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइफ्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से ।

४००. नारायण मोरेश्वर खरेकी स्मृतिमें^२

बारडोली

३१ जनवरी, १९३९

पण्डितजीके बारेमें लिखना मुझे अच्छा लगता है । उनके अनेक मधुर संस्मरण मेरे मस्तिष्कमें भरे पड़े हैं । लेकिन उन्हें लिखनेका समय बिल्कुल नहीं है । सारे संस्मरणोंका सार यह है कि पवित्रता और संगीतका मेल मैंने बहुत थोड़े व्यक्तियों में देखा है, और यह मेल पण्डितजीमें बड़ी मात्रामें था । गुजरातमें अच्छे संगीतके प्रति रुचि उत्पन्न करनेवाले पण्डितजी ही थे । इसके लिए गुजरात सदैव उनका ऋणी रहेगा ।

मो० क० गांधी

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से ।

१. देखिए अगला शीर्षक ।

२. इनका ६ फरवरी, १९३८ को हरिपुरामें निधन हो गया था ।

४०१. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको^१

बारडोली

३१ जनवरी, १९३९

श्री सुभाष बोसने अपने प्रतिद्वन्द्वी उम्मीदवार डॉ० पट्टाभि सीतारामैयापर निर्णायक विजय प्राप्त की है। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि शुरूसे ही कुछ कारणोंवश, जिनमें इस समय जानेकी कोई आवश्यकता नहीं है, मैं निश्चित रूपसे उनके दोबारा चुने जानेके विरुद्ध था। इस चुनावके सम्बन्धमें उन्होंने जो वक्तव्य जारी किये हैं, उनमें दी गई दलीलों या तथ्योंसे मैं सहमत नहीं हूँ। मेरे खयालमें तो उन्होंने अपने सहयोगियोंके बारेमें जो-कुछ कहा है, वह अनुचित और अशोभनीय है। तो भी मैं उनकी विजयसे खुश हूँ और चूँकि मौलाना अबुल कलाम आजाद द्वारा अपना नाम वापस ले लेनेके बाद डॉ० पट्टाभिको चुनावसे पीछे न हटनेकी सलाह मैंने दी थी, इसलिए यह हार उनसे ज्यादा मेरी है। अगर मैं अमुक निश्चित नीति और सिद्धान्तोंका प्रतिनिधित्व नहीं करता हूँ, तो फिर कुछ भी नहीं हूँ। इसलिए यह स्पष्ट हो गया है कि कांग्रेसके प्रतिनिधि उन सिद्धान्तोंको और उस नीतिको मान्य नहीं करते, जिनका कि मैं प्रतिपादन करता हूँ।

इस हारसे मैं खुश हूँ। इससे मुझे उस बातको अमलमें लानेका अवसर मिला है, जिसकी सलाह मैंने दिल्लीमें हुई अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीमें अल्पसंख्यक गुटवालोंके सभासे उठकर चले जानेपर एक लेख^१ लिखकर दी थी। सुभाष बाबू अब उन लोगोंकी कृपाके सहारे अध्यक्ष नहीं बने जिन्हें वे दक्षिण पंथी कहते हैं, बल्कि चुनावमें जीतकर अध्यक्ष बने हैं। इससे वह अपने ही समान विचारवाली कार्य-समिति चुन सकते हैं और बिना किसी बाधा या अड़चनके अपना कार्यक्रम अमलमें ला सकते हैं।

एक बात तो अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक दोनों गुटोंको मान्य है; दोनों ही कांग्रेसकी आन्तरिक शुद्धि चाहते हैं। 'हरिजन' में प्रकाशित मेरे लेखोंसे यह साफ हो चुका है कि कांग्रेस तेजीसे एक अष्ट संगठन बनती जा रही है, क्योंकि उसके रजिस्ट्रारोंमें बहुत बड़ी संख्यामें जाली नाम दर्ज हैं।^२ पिछले कई महीनोंसे मैं यह सलाह देता आ रहा हूँ कि कांग्रेसके इन रजिस्ट्रारोंका संशोधन किया जाये और उन्हें नये सिरेसे लिखा जाये। मुझे इसमें जरा भी शक नहीं कि इस समय इन नकली मतदाताओंके कारण जो प्रतिनिधि चुने गये हैं, छानबीन करनेपर वे प्रतिनिधि

१. यह साधन-सूत्रमें "आइ रिजॉयस इन दिस डिफिट" शीर्षकके अंतर्गत प्रकाशित हुआ था तथा बॉम्बे क्रॉनिकल, ३-२-१९३९, हिन्दू, ३१-१-१९३९, और हिन्दुस्तान टाइम्स, १-२-१९३९ तथा अन्य अनेक समाचारपत्रोंमें भी प्रकाशित हुआ था।

२. देखिए खण्ड ६७, पृ० ४४६-७।

३. देखिए "अन्दर की गन्दगी", पृ० ३५५-७।

नहीं रहने पायेंगे। लेकिन मैं ऐसा कोई उग्र कदम उठानेका सुझाव नहीं दे रहा हूँ। इतना ही काफी होगा कि रजिस्ट्रारोंसे जाली मतदाताओंके नाम निकाल दिये जायें और ऐसी व्यवस्था की जाये कि भविष्यमें ऐसा करना सम्भव न रह जाये।

अल्पसंख्यकोंको हतोत्साह होनेकी जरूरत नहीं। अगर वे कांग्रेसके वर्तमान कार्यक्रममें विश्वास रखते हैं तो उन्हें मालूम हो जायेगा कि उसके अनुसार काम किया जा सकता है, फिर चाहे वे अल्पमतमें हों अथवा बहुमतमें और कांग्रेसके बाहर हों या अन्दर।

मौजूदा परिवर्तनसे केवल संसदीय कार्यक्रममें फर्क पड़ सकता है, और किसीमें नहीं। मन्त्रिमण्डलोंका चुनाव उन लोगोंने किया है जो अभी तक बहुमतमें थे और उन्होंने ही उसका कार्यक्रम बनाया है। लेकिन संसदीय कार्यक्रम कांग्रेस-कार्यक्रमका एक छोटा-सा अंग है। कांग्रेसी मन्त्रियोंको आखिरकार यही समझकर चलना है कि उन्हें अपना पद किसी भी दिन छोड़ना पड़ सकता है। कांग्रेसी मन्त्रियोंके लिए इस बातका कोई महत्व नहीं है कि उनसे किसी ऐसे मुद्देपर पद-त्याग करनेको कहा जाता है जिसके विषयमें वे कांग्रेसकी नीतिसे सहमत हैं अथवा वे स्वयं इस कारण त्यागपत्र देते हैं कि वे कांग्रेसकी नीतिसे सहमत नहीं हैं।

सुभाष बाबू देशके दुश्मन तो हैं नहीं। उन्होंने उसके लिए कष्ट सहन किये हैं। उनकी रायमें उनका कार्यक्रम और उनकी नीति दोनों अत्यन्त अग्रगामी हैं। अल्पसंख्यक उसकी सफलता ही चाहेंगे। लेकिन यदि वे उसके अनुसार न चल सकें, तो उन्हें कांग्रेसके बाहर आ जाना चाहिए। उनसे बन पड़ा तो वे बहुमतकी शक्ति बढ़ायेंगे।

वे किसी भी स्थितिमें बाधक न होंगे। यदि वे सहयोग न कर सकें, तो उन्हें अलग हो जाना होगा। कांग्रेसजनोंको मैं यह याद दिलाना चाहता हूँ कि जो लोग कांग्रेस-मनोवृत्ति रखते हुए भी सोच-समझकर कांग्रेससे बाहर हैं, वे उसका सर्वाधिक प्रतिनिधित्व करेंगे। इसलिए जो लोग कांग्रेसके भीतर रहनेमें असुविधा अनुभव करते हों, वे बाहर आ सकते हैं, लेकिन दुर्भाग्यसे नहीं, बल्कि ज्यादा सेवा करनेकी भावना से।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-२-१९३९

४०२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको^१

बारडोली

३१ जनवरी, १९३९

मुझसे अपीलें की जा रही हैं कि देशी रियासतोंके मामलेमें मैं जल्दबाजी न करूँ। इन अपीलोंकी कोई जरूरत नहीं है। राजकोटके लोगों द्वारा तीन-महीने तक अहिंसात्मक संघर्ष करनेके बाद सपरिषद् ठाकुर साहब और प्रजाका प्रतिनिधित्व करनेवाले सरदार पटेलके बीच एक सम्मानजनक समझौता हुआ था और सर्वत्र हर्षोल्लासके साथ वह संघर्ष समाप्त हुआ था। मगर ब्रिटिश रेजिडेंटने ठाकुर साहब और प्रजा द्वारा किये गये इस सुन्दर कार्य पर पानी फेर दिया है।^१

इज्जतका तकाजा था कि लोग उस समझौतेको बहाल करानेके लिए मरते दम तक लड़ें जो ठाकुर साहब और उनकी प्रजामें हुआ था। अब यह संघर्ष राजा और उनकी प्रजाके बीच नहीं, बल्कि असलमें कांग्रेस और ब्रिटिश सरकारके बीच है, जिसके प्रतिनिधि रेजिडेंट हैं। खबर है कि वे संगठित गुंडागर्दोंसे काम ले रहे हैं। वे उन बेकसूर स्त्री-पुरुषोंका हौसला पस्त करनेकी कोशिश कर रहे हैं, जो विश्वास-भंगके कारण नाराज हैं और सही नाराज हैं।

यह कहना भ्रमात्मक है कि राजकोट आजमाइशी मामला बनाया गया है।^२ काठियावाड़की रियासतोंके बारेमें कोई योजनाबद्ध कार्य नहीं किया जा रहा है। यही हो रहा है कि जो लोग अपनेको कष्ट सहनेके लिए तैयार समझते हैं, वे सरदार से सलाह लेने आते हैं और सरदार उनको राह बताते हैं। राजकोट तैयार जान पड़ा, इसीलिए वहाँ लड़ाई शुरू हुई।

जयपुरका मामला बहुत ही सीधा और राजकोटसे भिन्न है। अगर मुझे मिली खबर सही है, तो वहाँके अंग्रेज प्रधानमन्त्री इस बातपर तुले हुए हैं कि उत्तरदायी शासनकी भावनाको लोगोंमें फैलाने तकका कोई आन्दोलन वहाँ न चलने दिया जाये।^३ इसलिए जयपुरमें सविनय अवज्ञा उत्तरदायी शासनके लिए नहीं, बल्कि प्रजामण्डल और उसके अध्यक्ष सेठ जमनालाल बजाजपर लगाये गये प्रतिबन्धको हटानेके लिए की जा रही है।^४

१. यह वक्तव्य “राजकोट ऐण्ड जयपुर” शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था तथा हिन्दू, हिन्दुस्तान टाइम्स और बाँम्बे क्रॉनिकल में भी छपा था।

२. इसका भारत सरकारने जो उत्तर दिया उसके लिए देखिए परिशिष्ट २।

३. देखिए “लताइ और प्यार”, पृ० ३९०-४।

४ और ५. देखिए “जयपुर”, पृ० ३८६-९।

मेरी रायमें वाइसरायका कर्तव्य है कि वे राजकोटके रेजिडेंटसे कहें कि वह उस समझौतेको बहाल करें और जयपुरके अंग्रेज प्रधानमन्त्रीसे कहें कि वह प्रतिबन्ध हटा ले। वाइसरायके ऐसा करनेसे किसी भी हालतमें यह नहीं समझा जा सकता कि उन्होंने देशी रियासतोंके मामलोंमें अनावश्यक हस्तक्षेप किया है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-२-१९३९

४०३. तार : घनश्यामदास बिड़लाको

वर्धागंज

२ फरवरी, १९३९

घनश्यामदास बिड़ला

नई दिल्ली

बिलकुल ठीक हूँ। जरूरी आराम कर रहा हूँ। चिन्ता की कोई बात नहीं है।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ७८०२) से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला।

४०४. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

सेगाँव

२ फरवरी, १९३९

प्रिय कु,

मैं आज ही यहाँ आया हूँ। संलग्न लेख-सामग्री^१ को तैयार करनेमें मुझे इतना अधिक समय नहीं लेना चाहिए था। असलमें मैं पूरी पुस्तक पढ़ जाना चाहता था, पर वह असम्भव था। और अब तो मैं खाटपर पड़ गया हूँ। मतलब यह कि डॉक्टरोंका कहना है कि यदि मैं आत्महत्या करना नहीं चाहता तो मुझे बिस्तरपर लेटे रहना चाहिए और यथासम्भव कम-से-कम काम करना चाहिए। पूर्ण मौन रखनेको कहा गया है। इसलिए इसे मैं अत्यन्त आवश्यक हो जानेपर ही तोड़ूंगा। इन परिस्थितियोंमें मैंने सोचा कि कुछ शब्द तुम्हें तुरन्त भेजने चाहिए। हजार क्षमायाचनाओं सहित वे यहाँ प्रस्तुत हैं।

आशा है, तुम्हारी समिति ठीक प्रगति कर रही होगी और सीता^१ अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रही होगी।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१४८) से।

४०५. प्राक्कथन

सेगाँव, बर्धा

२ फरवरी, १९३९

‘व्हाई द विलेज मूवमेण्ट’ का तीसरा संस्करण निकालना पड़ रहा है। यह एक शुभ लक्षण है। यह पुस्तक एक ऐसी जरूरतको पूरा करती है जो काफी महसूस की जा रही थी। आन्दोलनकी आवश्यकता और व्यावहारिकता के बारेमें जितनी भी शंकाएँ प्रकट की गई हैं, प्रोफेसर जे० सी० कु[मारप्पा] ने प्रायः उन सभीका समाधान किया है। कोई भी देहात-प्रेमी इस पुस्तिकाको लिये बिना नहीं रह सकता। किसी भी शंकालुकी शंकाएँ इससे मिट सकती हैं। यह पुस्तिका उन लोगोंके लिए बेकार है जो यह मान बैठे हैं कि अगर कोई आन्दोलन जरूरी है तो वह गाँवोंको मिटाने और भारतमें जगह-जगह ऐसे बड़े शहर कायम करनेका आन्दोलन होना चाहिए जहाँ अत्यन्त केन्द्रीकृत उद्योग हों और हरएकके पास पर्याप्तसे भी अधिक चीजें हों। सौभाग्यसे विनाशकी इस विचारधाराके अनुयायी अभी बहुत नहीं हैं। मैं सोचता हूँ कि जिसे देखकर भविष्यके विषयमें निराशा होने लगती है, ऐसी इस प्रवृत्तिके प्रसारको रोकनेके लिए क्या ग्राम-आन्दोलन बिलकुल सामयिक नहीं है? यह पुस्तिका इस प्रश्नका उत्तर देनेका एक प्रयास है।

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०१४९) से।

४०६. पत्र : मीराबहनको

सेगाँव, वर्धा
२ फरवरी, १९३९

चि० मीरा,

मैंने कई दिन तक तुम्हारी उपेक्षा की है, परन्तु सुशीलाको हिदायत है कि तुम्हें रोज पत्र लिखती रहे। मुझे शारीरिक-श्रमसे तो पूर्ण विश्राम लेना ही है, परन्तु जितना हो सके, मानसिक श्रमसे भी विश्राम लेना है। चिन्ता न करना। अपने काममें डूब जाओ।

बा को राजकोट जाना है इसलिए वह वहीं' रह गई।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४२६) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००२१ से भी।

४०७. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

सेगाँव
२ फरवरी, १९३९

बा,

तू क्यों चिन्तित होती है? मेरी चिन्ता मत कर। अपनी तबीयत ठीक कर। रामनाम ले। यह मान कर चल कि अनेकोंके पुण्यसे हम यह लड़ाई जीतेंगे। उसमें तेरे पुण्य भी हैं ही।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३१

४०८. पत्र : हीरालाल शर्माको

सेगाँव, वर्धा
२ फरवरी, १९३९

चि० शर्मा,

बारडोलीमें इतने काममें फंस गया था कि बीमार होकर आज आया। यही कारण है तुमारे खतका देरसे उत्तर भेजना का। चिंताकी बात नहीं है ठीक हो जायगा।

३ फरवरी; १९३९

लेकिन मैं किसीको एक लाइन भेजनेका कह सकता था कि उत्तर जल्दी नहीं भेजा जायगा यह नहीं किया क्योंकि शीघ्र उत्तर भेजनेकी आशा बनी रही।

डिस्ट्रक्शन कन्स्ट्रक्शन साथ चलाने वाली चीज है। तुमारा डिस्ट्रक्शन कुछ ऐसा लगता है कि उसकी तुम बर्दाश्त न कर सको। आज एक करें और कल दूसरा ऐसे न बनने पाय।

पत्रिका मैं नहीं लिख सकता हूँ। तुमने ही कहीं लिखा है कि जब तक कनस्ट्रक्शन शरु नहीं हुआ तब तक सब बात बेकार है। जो चल रहा है उसमें पत्रिकाको शायद स्थान भी नहीं है।

तुमारे अगले खतमें कुछ सिद्धांतकी बात थी कि समाज और कुटुंब अलग बात है और होनी चाहिये। अगर दोनों एक समजते हो लेकिन आज वहां तक नहीं पहुँचते हो तो कहना क्या?

मेरे साथ रहनेवाले और तुममें भेद नहीं है यह बात अमलमें बता दोगे तब मेरा काम हो गया समजुंगा।

कुत्ताकी मिसाल तो कठोर है। लेकिन बात सही है। यों तो हम सब कुत्तेके जैसे हैं सहिष्णुता नहीं है। लेकिन समाजमें रहना और असहिष्णु रहना बड़ी विपरीत बात है।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० १७७-८ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतितसे।

४०९. पत्र : सम्पूर्णानन्दको

[२ फरवरी, १९३९ के पश्चात्]^१

भाई सम्पूर्णानन्दजी,

आपका पत्र मिला था। शीघ्र स्वीकृति न भेज सका। जो बात मुझको लिखी है वही डाँ० जाकिर हुसेनको लिखी होगी।

झंडा और बन्दे मातरम्के विषयमें आपका खत मुसाफरीमें मिल गया था। आपने लिखा वह सही था। उसी दिशामें मैं काम कर रहा हूँ।

कौंसिल इत्यादिमें जानेवालोंकी स्थितिका मसला दिन प्रति दिन कठिन होता जाता है। लेकिन यह हमारी व्याधिका एक लक्षण ही है। मैं तो प्रत्यक्ष देख रहा हूँ कि कांग्रेसकी अवनति हो रही है। स्वार्थ, खटपट, असत्य, हिंसा इत्यादिका जोर काफी बढ़ रहा है। मुझे डर है कि हम अन्दरूनी त्रुटियोंके कारण मिट रहे हैं। देखें ईश्वरकी क्या इच्छा है।

आपका,
मो० क० गांधी

मूल पत्रसे : सम्पूर्णानन्द पेपर्स; सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार।

४१०. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको^२

सेगाँव
३ फरवरी, १९३९

भारत सरकार तथा जयपुरकी सरकारने राजकोट और जयपुरके बारेमें मेरे वक्तव्यों^३ के जवाबमें जो विज्ञप्तियाँ^४ निकाली हैं, वे इस अर्थमें उल्लेखनीय हैं कि उनमें बहुत-सी बातें छोड़ दी गयी हैं, बहुत-सी दबा दी गयी हैं और बहुत-सी अपनी ओरसे मिला दी गयी हैं।

१. यह पत्र सम्पूर्णानन्दके नाम लिखे १-१-१९३९ के पत्रसे सम्बद्ध प्रतीत होता है। गांधीजी इस तारीखको वापस सेगाँव पहुँचे थे।

२. यह “नोट ए वार ऑफ वर्ड्स” शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था तथा ४-२-१९३९ के हिन्दू, बॉम्बे क्रॉनिकल, और हिन्दुस्तान टाइम्समें भी प्रकाशित हुआ था।

३. देखिए “राजकोट”, पृ० ३०२-४ और ३८१-२ तथा “जयपुर”, पृ० ३३१-२ और ३८६-९।

४. भारत सरकार द्वारा जारी की गयी विज्ञप्तिके लिए देखिए परिशिष्ट २।

कमेटीके सदस्योंके चुनावके बारेमें ठाकुर साहबने जो पत्र भेजा था, उसे प्रकाशित करना सरदार वल्लभभाई पटेलका कर्तव्य नहीं था। कमेटीके सदस्योंके चुनावके सम्बन्धकी शर्तें एक अलग पत्रमें ठाकुर साहबकी सुविधाके लिए बतलाई गई थीं। नाजुक वार्ता करनेमें इस प्रकारकी कार्रवाईका किया जाना कोई नई बात नहीं है। ठाकुर साहबने जो पत्र भेजा था उसके दो अर्थ किसी हालतमें नहीं निकाले जा सकते, और इसमें कोई सन्देह नहीं कि अपने पत्रका वे जो अर्थ कर रहे हैं वह इस प्रसंगमें बिलकुल ही अप्रस्तुत है।

मेरा यह कहना है कि ठाकुर साहबने अपने पत्रका जो अर्थ लगाया है वह पत्र लिखते समय उनके मस्तिष्कमें नहीं था, बल्कि बादमें आया है और यह अर्थ उन्होंने ब्रिटिश रेजिडेंटको खुश करनेके लिए ढूँढ़ निकाला है, क्योंकि ब्रिटिश रेजिडेंट इस बातसे सख्त नाराज हो गये थे कि ठाकुर साहबने उन्हें कोई सूचना दिये बिना एक कांग्रेसी से बातचीत करने तथा उसे पत्र लिखनेका साहस किया। जो लोग इन ब्रिटिश रेजिडेंटों और देशी राज्योंके बारेमें कुछ भी ज्ञान रखते होंगे, उन्हें यह अवश्य मालूम होगा कि देशी राज्योंके नरेश रेजिडेंटके सचिव और चपरासियोंसे भी कितना अधिक डरते हैं। ऐसा मैं अपनी व्यक्तिगत जानकारीके आधारपर लिख रहा हूँ।

आन्दोलनके फिसे आरम्भ होनेके बारेमें सरदार वल्लभभाई पटेलने जो वक्तव्य^१ दिया है, उसके परिशिष्टोंमें इस बातका काफी प्रमाण है कि सारा झगड़ा रेजिडेंटकी नाराजीकी वजहसे हुआ है। यह कहना बिलकुल गलत है कि कमेटीके सदस्योंके नामों में परिवर्तन करनेसे इनकार करनेके कारण सरदार पटेलने नहीं बतलाये। इन परिशिष्टोंमें से एक में उनके पत्रका अनुवाद दिया गया है।

सरदार वल्लभभाई पटेलने जिन लोगोंको कमेटीमें रखे जानेकी सिफारिश की थी उन्हें कमेटीमें नामजद करनेपर जब ठाकुर साहब राजी हुए तो उनकी दृष्टिमें मुसलमान और भायात भी थे। किन्तु यह बात दोनों पक्षोंको मान्य थी कि सुधारोंके अन्तर्गत सभी अधिकारोंको सुरक्षित किया जायेगा। उपयुक्त कार्यवाही तो यह होती कि कमेटीके सामने शहादत दिलवाई जाती। मेरा तो यह कहना है कि जैसा हिन्दुस्तानके हर एक स्थानपर होता है, मुसलमानों तथा भायातोंने कमेटीके सदस्योंके चुनावपर जो आपत्ति की, उसके लिए बादमें उकसाया गया।

मैंने यह नहीं कहा कि ठाकुर साहबसे अमुक-अमुक काम करनेके लिए कहा जाये। उनकी कोई स्वतन्त्र इच्छा नहीं है। उनकी इच्छा तो वही होगी जो रेजिडेंटकी होगी। एक बार ठाकुर साहबने रेजिडेंटकी इच्छाके विरुद्ध काम करनेका साहस किया। नतीजा यह हुआ कि उनकी गद्दी जाते-जाते बची। मेरी गाँग यह है कि ब्रिटिश रेजिडेंट समझौतेको फिसे प्रतिष्ठापित करें और उसे कार्यान्वित करनेमें मदद पहुँचायें। अगर अमुक पक्षोंको संतुष्ट करनेके लिए केवल कमेटीके सदस्योंमें परिवर्तन किये जानेका सवाल हो, तो मैं सरदार वल्लभभाई पटेलको

राजी करनेके लिए तैयार हूँ, किन्तु शर्त यह है कि बाकी सब बातें पूर्णरूपसे पूरी कर दी जायें।

किन्तु विज्ञप्तिमें प्रस्तुत प्रश्नसे सम्बद्ध इस अत्यन्त महत्वपूर्ण बातका कोई जिक्र नहीं किया गया है कि कमेटीके कार्यक्षेत्रमें भी इतना परिवर्तन कर दिया गया है कि उसकी शक्ल ही बदल गई है। कमेटीके इस कार्यक्षेत्रका निर्धारण सपरिषद् ठाकुर साहबकी सहमतिसे हुआ था और परिषद्का एक सदस्य ब्रिटिश दीवान भी था। जिसपर राजाकी ओरसे हस्ताक्षर किये गये हों, ऐसे किसी समझौतेका इस प्रकार भंग किया जाना मैंने कभी नहीं देखा था। मैं यह अवश्य कहूँगा कि राजकोटके सम्बन्धमें रेजिडेंटने, जिसे अपने क्षेत्रके नरेशोंके सम्मानका रक्षक होना चाहिए, ठाकुर साहबका नाम मिट्टीमें मिला दिया है।

सुसंगठित गुण्डागर्दीका आरोप मैं फिर दुहराता हूँ। ब्रिटिश एजेन्सीकी पुलिस राजकोटमें कार्य कर रही है। सरदार वल्लभभाई पटेलके पास जो तार आये हैं उनसे यह जाहिर होता है कि सत्याग्रह करनेवाले सुदूर स्थानोंपर ले जाये जाते हैं और वहाँ पर वे नंगे करके पीटे जाते हैं, और बादमें वहींपर बिना किसी सहायके छोड़ दिये जाते हैं। इन तारोंसे यह भी प्रकट होता है कि रेडक्रॉसके डाक्टरों तथा एम्बुलेंस-दलोंको हालेन्डामें हुए लाठी-जार्चमें घायल लोगोंको किसी प्रकारकी सहायता पहुँचानेसे मना कर दिया गया है। इसीको मैं सुसंगठित गुण्डागर्दी कहता हूँ। ये आरोप अगर अस्वीकार किये जाते हैं तो उनके बारेमें निष्पक्ष जाँच करवाई जाये।

मैं प्रश्नको साफ-साफ प्रस्तुत कर दूँ। मैं राजकोटके अन्दरूनी मामलोंमें कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहता। मैं यह चाहता हूँ कि राजकोट स्थित रेजिडेंट अपना हस्तक्षेप रोकें। राज्य और प्रजाके बीच इस समय जो तनातनीका सम्बन्ध है उसके लिए रेजिडेंट प्रत्यक्षरूपसे जिम्मेदार है। सर्वोच्च सत्ताका यह कर्तव्य है कि वह देखे कि जो भी समझौता हुआ है, उसका पूरी तौरसे पालन किया जाये।

मुसलमानों और भायातोंके प्रतिनिधित्वको लेकर जो आपत्ति की गई है, यदि वह वास्तवमें सचाई और ईमानदारीके साथ की गई हो तो उसे दूर किया जा सकता है। मैं एक बार फिर वाइसरायसे अपील करता हूँ कि वे प्रश्नका अध्ययन ज्यादा गहराईके साथ करें। ऐसा न हो कि दिल्लीके सचिवालयमें जब दोषोंपर परदा डालनेवाली विज्ञप्तियाँ तैयार की जा रही हों, उस बीच कोई गम्भीर दुःखद घटना हो जाये। यह वाग्युद्ध नहीं है। यह युद्ध ऐसा है जिसमें कि वे लोग, जो अब तक कभी जेल नहीं गये हैं और जिन्होंने न कभी लाठियोंकी मार ही खाई है, सभी मुसीबतों और खतरोंका सामना करनेके लिए तैयार हो गये हैं और उन्हें झेल रहे हैं।

जयपुरके बारेमें मुझे केवल एक शब्द कहना है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि वहाँके अंग्रेज प्रधानमन्त्री जयपुर राज्य परिषद्के एक सदस्य हैं। मेरा कहना यह है कि वही सब-कुछ हैं। उन्होंने प्रजा-मण्डल तथा सेठ जमनालाल बजाजसे बदला

चुकानेकी शपथ ले ली है और मैं दावेके साथ कहता हूँ कि प्रजा-मण्डलके सम्बन्धमें राज्य जो कार्रवाई कर रहा है, उसके बारेमें वह चाहे जो शब्दाडम्बर रचे, वस्तुतः प्रजा-मण्डलको गैरकानूनी संस्था घोषित किया जा चुका है। अगर प्रजा-मण्डल गैरकानूनी संस्था नहीं घोषित की गई है, तो अधिकारियोंको चाहिए कि वे सेठ जमनालाल बजाजको जयपुर-राज्यमें प्रवेश करनेकी स्वतन्त्रता दे दें और उन्हें तथा मण्डलको बगैर किसी प्रकारकी छेड़खानी किये प्रजाको उत्तरदायी शासनके सम्बन्धमें शिक्षा देने दें। और अगर वे प्रत्यक्ष रूपसे या अप्रत्यक्ष रूपसे हिंसाका प्रचार करें, तो अधिकारीगण उन्हें सजा भी दें।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ११-२-१९३९

४११. तार : जमनालाल बजाजको

[३ फरवरी, १९३९ या उसके पूर्व]^१

अपनी योजनापर डटे रहो। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है और तुम्हारी सफलता निश्चित है।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ५-२-१९३९

४१२. तार : घनश्यामदास बिड़लाको

बधा

३ फरवरी, १९३९

घनश्यामदास
बिड़ला हाउस
अल्बुकर्क रोड
नई दिल्ली

सूजन बहुत घट गई है। एक तरहसे पूर्ण विश्राम ही कर रहा हूँ। रक्तचाप कल रात १५६/९८ था। अधिकारी जब तक लिखित

१. जमनालाल बजाज जयपुर राज्य प्रजा-मण्डलके अध्यक्ष थे और एक आदेश द्वारा जयपुर रियासतमें उनके प्रवेशपर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। उस आदेशकी अवज्ञा करके वे रियासतमें प्रवेश करनेवाले थे। उन्होंने ३ फरवरीको गांधीजी को तार दिया था: “घनश्यामदास प्रवेशमें बिलम्ब करनेके लिए जोर डाल रहे हैं।” गांधीजी ने स्पष्टतः इसीके जवाबमें यह तार भेजा था।

२. जमनालाल बजाजने ३ फरवरीकी अपनी डायरीमें लिखा है कि उन्हें गांधीजी का एक तार मिला। सम्भवतः वह यही तार था।

रूपमें उनसे ऐसी प्रार्थना न करें, जमनालालजीको प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए।^१ मैं इस आशयका एक वक्तव्य दे चुका हूँ कि जयपुर सरकारकी विज्ञप्ति सर्वथा असन्तोषजनक है।^२

बापू

अंग्रेजीकी प्रति (सी० डब्ल्यू० ७८०३) से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला ।

४१३. पत्र : मीराबहनको

सेगाँव, वर्धा

३ फरवरी, १९३९

चि० मीरा,

तुम्हारा पेशावरसे भेजा गया पत्र समाचारोंसे भरा है। तुम अब घटनाओंके बीचमें रह रही हो। तुम्हें हर तरहसे अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करनी ही चाहिए। पैरोंको अच्छी तरह ढँककर रखो। जिस खुराककी तुम्हें जरूरत हो, उसका आग्रह रखो। उसमें अति न करो। अपने बूतेसे बाहर भी न जाओ। फिर सब ठीक हो जायेगा।

मेरी कोई चिन्ता न करो। जब तक ईश्वरको मेरी जरूरत है, वह मुझे पृथ्वी पर रखेगा। मैं यहाँ होंऊँ या और कहीं, दोनों ठीक है। हमारी नहीं, उसकी इच्छा पूरी हो।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४२७) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००२२ से भी।

१. यह घनश्यामदास बिड़लाके तारके उत्तरमें था जिसमें यह सुझाया गया था कि जमनालाल बजाज जयपुर लौटनेके लिए एक पखवाड़े और प्रतीक्षा कर सकते हैं।

२. देखिए पिछला शीर्षक।

४१४. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

सेगाँव, वर्धा
३ फरवरी, १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

चुनाव^१ के बाद और जिस ढंगसे वह लड़ा गया, उसे देखते हुए मैं यह महसूस करता हूँ कि मैं कांग्रेसके अगले अधिवेशनमें शरीक न होकर देशकी सेवा करूँगा। इसके अलावा मेरा स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा नहीं है। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी मदद करो। कृपया मुझपर उपस्थित होनेके लिए दबाव मत डालना।

आशा है, तुम्हें और इन्दुको खालीमें आराम करनेसे लाभ हुआ होगा। इन्दुको चाहिए कि मुझे पत्र लिखे।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीसे : गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३९; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय; ए बंच ऑफ ओल्ड लेटर्स, पृ० ३०७ से भी।

४१५. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

३ फरवरी, १९३९

चि० काका,

कवि खबरदार^१ के लिए प्रबन्ध हो गया है। अम्बालालभाई उसे हर महीने २०० रुपये या तो स्वयं या उगाह कर देंगे।

बुक उसके बारेमें ज्यादा जानकारी चाहता है। छातीका एक्स-रे भी माँगता है। वह ज्यादा मदद कर सकेगा, इसकी आशा कम है। क्या तुमने पार्वतीको पत्र लिखा?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९१९) से।

१. कांग्रेस-अध्यक्ष का।

२. अर्देशर फरामजी खबरदार।

४१६. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

३ फरवरी, १९३९

चि० काका,

मैं अब अपनेको विलकुल निकम्मा महसूस कर रहा हूँ। तुम आना, किन्तु मैं क्या कर सकूँगा, यह समझमें नहीं आता। ३ या ४ तारीख तक तो [बुनियादी] तालीमवाले प्रशिक्षणाथी यहाँ है ही। आशा करता हूँ कि रोमन लिपि^१ के बारेमें लिख पाऊँगा। हिन्दी-प्रचारकोके सम्बन्धमें जो उचित हो सो करना। मुझे कोई रास्ता साफ-साफ सूझ नहीं रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९२०) से।

४१७. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

सेगांव

[३ फरवरी, १९३९ के पश्चात्]^२

बा,

तेरा पत्र मिला। तू तो अब राज्यकी मेहमान हो गई। अपनी तबीयतका ध्यान रखना। मणि^३ तेरे साथ है, इसलिए मैं निश्चित हूँ। हाँ, तेरे पत्र मुझे मिलने चाहिए। तेरी बात मैं याद रखूँगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३२

१. देखिए “रोमन लिपि बनाम देवनागरी लिपि”, पृ० ४२०-१।

२. ३ फरवरी, १९३९ को कस्तूरबा गांधी राजकोटमें प्रवेश करनेपर गिरफ्तार कर ली गई थीं।

३. मणिबहन पटेल।

४१८. बातचीत : अध्यापक-प्रशिक्षणार्थियोंके साथ^१

३/४ फरवरी, १९३९

आजकल अल्पसंख्यकोंके अधिकारोंकी बहुत चर्चा चलती है। इसलिए आज मैं अंग्रेजीमें बोलूंगा यद्यपि केवल अंग्रेजी समझनेवालोंकी संख्या यहाँ बहुत ही कम है।^१ लेकिन मैं आपको आगाह करता हूँ कि अगली सभामें मैं यह नहीं करूँगा। आपको हिन्दुस्तानी सीखनेका दृढ़ संकल्प करके यहाँसे वापस जाना चाहिए। यदि हमारी बुद्धि अंग्रेजी माध्यमके द्वारा ही काम कर सकती है तो बुनियादी तालीमकी कल्पनाको कार्यान्वित करना असम्भव है और हमारे करोड़ों लोगोंकी शैक्षणिक आवश्यकताओंकी पूर्ति तो बुनियादी तालीम ही कर सकती है।

प्रतिनिधियोंने गांधीजी से कितने ही प्रश्न किये। पहले प्रश्नसे यह शंका प्रकट होती थी कि वर्धा-योजना भविष्यकी कसौटीपर टिक सकेगी, या वह महज एक अस्थायी चीज है? बहुत-से बड़े-बड़े शिक्षाशास्त्रियोंका तो यह मत है कि एक-न-एक दिन व्यापक औद्योगीकरणके लिए दस्तकारियोंको स्थान खाली करना ही होगा। एक ऐसा समाज जिसने कि वर्धा-योजनाके अनुसार शिक्षा पाई होगी और जो न्याय, सत्य और अहिंसापर आधारित होगा, क्या औद्योगीकरणके प्रबल प्रवाहमें टिक सकेगा?

गांधीजी : यह कोई व्यावहारिक प्रश्न नहीं है। हमारे तात्कालिक कार्यक्रम पर इसका कोई असर नहीं पड़ेगा। हमारे सामने प्रश्न यह नहीं है कि आगे आनेवाले जमानेमें क्या होने जा रहा है, बल्कि सवाल तो यह है कि हमारे गाँवोंमें जो करोड़ों लोग रहते हैं, उनकी सच्ची आवश्यकता इस बुनियादी तालीमकी योजनासे पूरी हो सकेगी या नहीं। मेरा खयाल यह नहीं है कि हिन्दुस्तानमें इस हद तक कभी औद्योगीकरण हो जायेगा कि गाँव रहेंगे ही नहीं। हिन्दुस्तानका अधिकांश भाग तो हमेशा गाँवोंका ही रहेगा।

“हालमें कांग्रेसके अध्यक्षका जो चुनाव हुआ है, उसके फलस्वरूप अगर कांग्रेसकी नीतिमें परिवर्तन हुआ, तो बुनियादी तालीमकी योजनाका क्या होगा?” यह दूसरा प्रश्न था।

१. प्यारेलाल के “वर्धास्कीम अंडर फायर” से उद्धृत। पूरे भारत से लगभग ७५ प्रतिनिधि वर्धाके अध्यापन प्रशिक्षण केन्द्रके तीन सप्ताहके शिविरमें एकत्रित हुए थे। अपने-अपने प्रान्तोंमें जानेसे पहले वे गांधीजीसे मिले थे।

२. आशा देवीके कहने पर गांधीजीने हिन्दी में बोलना आरम्भ किया था लेकिन कुछ प्रतिनिधि उनकी बात समझ नहीं रहे थे।

गांधीजी ने जवाब दिया कि यह भय अकारण है। कांग्रेसकी नीतिमें अगर कोई हेरफेर हुआ, तो वर्धा-योजनापर उसका कोई असर नहीं पड़ेगा।

उसका असर अगर पड़ेगा ही, तो ऊँची राजनीतिक बातों पर ही पड़ेगा। आप लोग यहाँ तीन हफ्तेके अभ्यासक्रमका शिक्षण लेनेके लिए आये हैं, जिससे कि आप अपने-अपने प्रान्तमें जाकर अपने विद्यार्थियोंको वर्धा-योजनाके अनुसार तालीम दे सकें। आपको यह विश्वास रखना चाहिए कि इस शिक्षा-पद्धतिसे हमारी आवश्यकताएँ जरूर पूरी होंगी।

औद्योगीकरणकी भारी-भारी योजनाएँ भले पेश की जायें, पर कांग्रेसने आज अपना जो लक्ष्य निर्धारित किया है, वह देशका औद्योगीकरण नहीं है। बम्बईमें कांग्रेसने जो प्रस्ताव पास किया था, उसके अनुसार उसका ध्येय तो ग्रामोद्योगोंका पुनरुद्धार है। किसानोंके हितोंको ध्यानमें रखनेवाली औद्योगीकरणकी किसी लम्बी-चौड़ी योजनाके जरिये आप लोक-जागृति नहीं कर सकते। इन योजनाओंसे उनकी आमदनीमें एक पाईकी भी वृद्धि नहीं होगी; जबकि अ० भा० चरखा संघ और अ० भा० ग्रामोद्योग संघ एक सालके ही अरसे में उनकी जेबोंमें लाखों रुपये पहुँचा देंगे। कांग्रेस कार्य-समिति या मन्त्रिमण्डलोंमें चाहे जो परिवर्तन हों, मुझे तो जाती तौर पर कांग्रेसकी रचनात्मक प्रवृत्तियोंके लिए कोई खतरा मालूम नहीं होता। हालाँकि इन प्रवृत्तियोंकी शुरुआत कांग्रेसने ही की थी, पर एक लम्बे अरसेसे वे अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाये हुए हैं और अपनी उपयोगिता उन्होंने पूरी तरह साबित कर दी है। बुनियादी तालीम इनकी एक शाखा है। शिक्षा-मन्त्री भले ही बदल जायें, पर यह तो रहेगी ही। इसलिए जो लोग बुनियादी तालीममें दिलवस्पी रखते हैं, उन्हें कांग्रेस की राजनीतिके बारेमें परेशान होनेकी जरूरत नहीं। शिक्षाकी इस नई योजनामें कोई अपने गुण होंगे तो वह जीवित रहेगी, न होंगे तो आप ही खतम हो जायेगी।

लेकिन इन प्रश्नोंसे मुझे सन्तोष नहीं होगा। इनका बुनियादी तालीमकी योजनासे कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। ये प्रश्न हमें उस दिशामें जरा भी आगे नहीं ले जाते। मैं चाहता हूँ कि आप मुझसे इस योजनासे सीधा सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्न पूछें; जिससे मैं एक विशेषज्ञकी तरह आपको सलाह दे सकूँ।

सभामें जानेसे पहले एक भाईने गांधीजीसे पूछा था : क्या इसके पीछे असली मुद्दा यह है कि तकलीके साथ जिसका सम्बन्ध न साधा जा सके, ऐसी कोई बात शिक्षक विद्यार्थीसे न कहे? इसका उत्तर आम सभामें देते हुए गांधीजीने कहा :

यह तो मेरे ऊपर लांछन लगाना है। यह सच है कि सारी शिक्षाका किसी बुनियादी उद्योगके साथ सम्बन्ध जोड़ना चाहिए, ऐसा मैंने कहा है। आप जब किसी उद्योग द्वारा ७ या १० वर्षके बालकको ज्ञान देते हों, तब शुरुआतमें उस दस्तकारीके साथ जिनका मेल नहीं बैठया जा सके, ऐसे सब विषय आपको छोड़ देने चाहिए। ऐसा

करते हुए शुरू-शुरूमें छोड़ी हुई ऐसी बहुत-सी वस्तुओंको दस्तकारीके साथ जोड़नेके रास्ते आप ढूँढ़ निकालेंगे। यदि आप शुरूमें इस तरह काम लेंगे तो अपनी खुदकी और विद्यार्थियोंकी शक्ति बचा सकेंगे। आज तो [जो तरीका ऊपर बताया गया है] उसके अनुसार चलने के लिए कोई पुस्तकें नहीं हैं, न हमें रास्ता दिखानेवाली मिसालें ही मौजूद हैं। इसलिए हमें धीरे-धीरे चलना है। मुख्य बात यह है कि शिक्षकको अपने मनकी ताजगी बनाये रखनी चाहिए। जिसका दस्तकारीके साथ मेल न बैठया जा सके, ऐसा कोई विषय आनेपर आप निराश न हों, खीझ न उठें, बल्कि उसे छोड़ दें और जिसका मेल बैठ सकें, उसे आगे चलायें। सम्भव है कि कोई दूसरा शिक्षक सही रास्ता ढूँढ़ निकाले और यह बता सके कि उस विषयका दस्तकारीके साथ कैसे मेल बैठ सकता है। और जब आप बहुत-से लोगोंके अनुभवोंका संग्रह करेंगे, तो बादमें आपको रास्ता बतानेवाली पुस्तकें भी मिल जायेंगी, जिससे आपके पीछे आनेवालोंका काम अधिक सरल बन जायेगा।

आप पूछेंगे कि जिन विषयोंका मेल न बैठया जा सके, उनको छोड़नेकी क्रिया कितने समय तक की जाये? मैं तो कहूँगा कि जिन्दगी-भर। आखिरमें आप देखेंगे कि बहुत-सी चीजें जो आप पहले शिक्षाक्रममें से छोड़ चुके थे, उनका आपने उसमें समावेश कर लिया है तथा जितनी चीजें समावेश करने लायक थीं, उन सबका समावेश हो चुका है और आपने आखिर तक जिनको छोड़ दिया था, वे बहुत अनावश्यक थीं और उन्हें छोड़ना ही बेहतर था। यह मेरा जीवनका अनुभव है। मैंने यदि बहुत-सी चीजें छोड़ न दी होतीं, तो मैं जितनी चीजें कर सका हूँ, वह नहीं कर पाता।

हमारी शिक्षामें आमूल परिवर्तन होना ही चाहिए। दिमाग को हाथके काम द्वारा शिक्षा मिलनी चाहिए। मैं कवि होता तो हाथकी पाँच उँगलियोंकी अद्भुत शक्तियोंके बारेमें कविता लिख सकता। दिमाग ही सब-कुछ है और हाथ-पैर कुछ नहीं, ऐसा आप क्यों मानते हैं? जो अपने हाथको शिक्षा नहीं देते, जो शिक्षाकी सामान्य रूढ़िमें से होकर निकलते हैं, उनका जीवन नीरस बन जाता है। उनकी सारी शक्तियोंका विकास नहीं होता। केवल पुस्तकीय ज्ञानमें बालकको इतना रस नहीं आता कि उसका सारा ध्यान उसीमें लगा रहे। दिमाग खाली शब्दोंसे थक जाता है और बच्चेका मन दूसरी जगह भटकने लगता है। हाथ न करने लायक काम करते हैं, आँखें न देखने लायक चीजें देखती हैं, कान न सुनने लायक बातें सुनते हैं और उनको क्रमशः जो-कुछ करना, देखना और सुनना चाहिए, उसे वे करते, देखते और सुनते नहीं हैं। उन्हें सही चुनाव करना नहीं सिखाया जाता। और इससे उनकी शिक्षा कई बार उनका विनाश करनेवाली सिद्ध होती है। जो शिक्षा हमें अच्छे-बुरेका भेद करना और अच्छेको ग्रहण करना तथा बुरेको त्यागना नहीं सिखाती, वह शिक्षा सच्ची शिक्षा ही नहीं है।

श्रीमती आशादेवीने पूछा कि हाथ द्वारा मनको किस प्रकार शिक्षा दी जा सकती है, यह आप समझायेंगे?

गांधीजी : स्कूलमें चलनेवाले सामान्य पाठ्यक्रममें एकाध दस्तकारी जोड़ देना, यह पुरानी कल्पना थी। अर्थात् उसमें दस्तकारीको शिक्षासे बिल्कुल अलग रखकर सिखलानेकी बात थी। मुझे यह एक गम्भीर भूल लगती है। शिक्षकको दस्तकारी सीख लेनी चाहिए और अपने ज्ञानको उस दस्तकारीके साथ जोड़ना चाहिए, जिससे वह खुद पसन्द की गई दस्तकारीके द्वारा यह सारा ज्ञान विद्यार्थियोंको दे सके।

कताईका उदाहरण लीजिए। जब तक मैं गणित नहीं जानता, तब तक मैंने तकलीपर कितने गज सूत काता या उसके कितने तार हुए या मेरे काते हुए सूतका अंक कितना है, यह मैं नहीं बता सकूंगा। यह करनेके लिए मुझे अंक सीखने चाहिए और जोड़, बाकी, गुणा तथा भाग भी सीखने चाहिए। अटपटे हिसाब गिननेमें मुझे अक्षरोंका इस्तेमाल करना पड़ेगा, अतः इससे मैं बीजगणित सीखूंगा। इसमें भी मैं रोमन अक्षरोंके बजाय हिन्दुस्तानी अक्षरोंके उपयोगका आग्रह रखूंगा।

फिर ज्यामिति लीजिए। तकलीकी चकतीसे वृत्तका अच्छा प्रमाण और क्या हो सकता है? इस प्रकार मैं यूक्लिडका नाम लिये बिना ही विद्यार्थीको वृत्तके बारेमें सब-कुछ सिखा सकता हूँ।

फिर आप शायद पूछें कि कताई द्वारा बालकको इतिहास, भूगोल किस तरह सिखाये जा सकते हैं? थोड़े समय पहले 'कपास—मनुष्यका इतिहास'^१ नामक पुस्तक मेरे देखनेमें आई थी। उसे पढ़नेमें मुझे बहुत ही आनन्द आया। वह एक उपन्यास जैसी लगी। उसके शुरूमें प्राचीन कालका इतिहास दिया गया था। फिर कपास पहले-पहल किस प्रकार और कब बोई गई, उसका विकास किस तरह हुआ, अलग-अलग देशोंके बीच रुईका व्यापार कैसे चलता है, आदि वस्तुओंका वर्णन था। जब मैं अलग-अलग देशोंके नाम बालकोंको सुनाऊँगा, तब साथ ही स्वाभाविक रीतिसे उन देशोंके इतिहास-भूगोलके बारेमें भी कुछ कहता जाऊँगा। अलग-अलग समयमें अलग-अलग व्यापारिक सन्धियाँ किस-किसके राज्य-कालमें हुईं? कुछ देशोंमें बाहरसे रुई मँगानी पड़ती है और कुछ में कपड़ा बाहरसे मँगाना पड़ता है, उसका क्या कारण है, हर एक देश अपनी-अपनी जरूरतके मुताबिक रुई क्यों नहीं उगा सकता? यह चर्चा मुझे अर्थ-शास्त्र और कृषिशास्त्रके मूल तत्वों पर ले जायेगी। कपासकी अलग-अलग जातियाँ कौन-सी हैं, वे किस तरहकी जमीनमें उगती हैं, उन्हें कैसे उगाया जाये, वे कहाँसे प्राप्त की जा सकती हैं, वगैरह जानकारी मैं विद्यार्थियोंको दूँगा। इस तरह तकली कातनेकी बात परसे मैं ईस्ट इंडिया कम्पनीके सारे इतिहासपर आऊँगा। वह कम्पनी यहाँ कैसे आई, उसने हमारे कताई-उद्योगको किस तरह नष्ट किया; अंग्रेज आर्थिक उद्देश्य से हमारे यहाँ आये और फिर राजनीतिक सत्ता जमानेकी आकांक्षा वे क्यों रखने लगे; यह वस्तु मुगल और मराठोंके पतनका, अंग्रेजी राज्यकी स्थापनाका और फिर हमारे जमानेमें लोक-जागरणका कारण कैसे हुई, यह सब भी मुझे वर्णन करके बताना पड़ेगा। इस तरह इस नई योजनामें शिक्षा देनेकी अपार गुंजाइश है। और

बालक यह सब दिमाग और स्मरण-शक्तिपर अनावश्यक बोझ पड़े बिना ही बहुत जल्दी सीखेगा।

इस बातको अधिक विस्तारसे समझा दूँ। जैसे किसी प्राणिशास्त्रीको अच्छा प्राणिशास्त्री बननेके लिए प्राणिशास्त्रके अलावा दूसरे बहुत-से शास्त्र सीखने चाहिए, उसी प्रकार बुनियादी तालीमको यदि एक शास्त्र माना जाये, तो वह हमें ज्ञानकी अनन्त शाखाओंमें ले जाता है। तकलीके ही उदाहरणका विस्तार किया जाये, तो जो शिक्षक-विद्यार्थी केवल कातनेकी यान्त्रिक क्रियापर ही अपना ध्यान एकाग्र नहीं करेगा (इस क्रियामें तो बेशक वह निष्णात होगा ही) बल्कि इस वस्तुका तत्व ग्रहण करनेकी कोशिश करेगा, वह तकली और उसके अंग-उपांगका अभ्यास करेगा। तकलीकी चकती पीतलकी और सींक लोहेकी क्यों होती है, यह प्रश्न वह अपने मनसे पूछेगा। प्रारम्भिक तकलीकी चकती तो चाहे-जैसी बनाई जाती थी। इससे भी पहलेकी प्राचीन तकली में बाँसकी सींक और पत्थर या मिट्टीकी चकती उपयोगमें लाई जाती थी। अब तकलीका शास्त्रीय ढंगसे विकास हुआ है और जो चकती पीतलकी और सींक लोहेकी बनाई जाती है, वह सकारण है। यह कारण विद्यार्थीको ढूँढ़ निकालना चाहिए; उसके बाद विद्यार्थीको यह भी जाँचना चाहिए कि इस चकतीका व्यास इतना ही क्यों रखा जाता है, कम-ज्यादा क्यों नहीं रखा जाता? इन प्रश्नोंका सन्तोषजनक हल ढूँढ़नेके बाद और इस वस्तुका गणित जान लेनेके बाद आपका विद्यार्थी अच्छा इंजीनियर बन जाता है। तकली उसकी कामधेनु बनती है। इसके द्वारा अपार ज्ञान दिया जा सकता है। आप जितनी शक्ति और श्रद्धासे काम करेंगे, उतना ज्ञान इसके द्वारा दे सकेंगे। आप यहाँ तीन सप्ताह रहे हैं। इतने समयमें इस योजनाके पीछे मर-मिटने तकको तैयार होनेकी श्रद्धा आप लोगोंमें आ गई हो, तो आपका यहाँ रहना सफल माना जायेगा।

मैंने कताईका उदाहरण विस्तारसे बतलाया है, इसका कारण यह है कि मुझे उसका ज्ञान है। मैं बढ़ई होता तो अपने बालकको ये सब बातें उसी कलाके द्वारा सिखाता। अथवा कार्डबोर्डका काम करनेवाला होता, तो उस कामके जरिये सिखाता।

हमें असली जरूरत तो ऐसे शिक्षकोंकी है, जिनके विचार मौलिक हों, जिनमें सच्चा उत्साह और जोश हो और जो हर रोज यह सोच सकें कि आज विद्यार्थियोंको क्या सिखाया जाये। शिक्षकको यह ज्ञान पुरानी पोथियोंमें से नहीं मिलेगा। उसे अपनी निरीक्षण और विचार करनेकी शक्तिका उपयोग करना है और हस्त-उद्योगकी मददसे शब्दों द्वारा बालकको ज्ञान देना है। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा-पद्धतिमें क्रान्ति होनी चाहिए, शिक्षककी दृष्टिमें क्रान्ति होनी चाहिए। आज तक आप निरीक्षकोंकी रिपोर्टोंसे मार्गदर्शन पाते रहे हैं। आपने, निरीक्षकको जो पसन्द आये, वही करनेकी इच्छा रखी है, ताकि आपकी संस्थाके लिए अधिक पैसे मिलें अथवा आपकी अपनी तनख्वाहमें वृद्धि हो। पर नया शिक्षक इस सबकी परवाह नहीं करेगा। वह तो कहेगा, यदि मैं अपने विद्यार्थीको अधिक अच्छा मनुष्य बनाऊँ और वैसा करनेमें

अपनी सब शक्ति लगा दूँ, तो मानूँगा कि मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया। मेरे लिए इतना ही काफी है।

प्र० : इस अध्यापन-मन्दिरमें आनेवाले विद्यार्थी-शिक्षकोंको पहले कोई दस्तकारी सिखाई जाये और फिर उस दस्तकारी द्वारा शिक्षा किस तरह दी जाये, इसका ठोस और स्पष्ट विवेचन उनके सामने किया जाये तो क्या ज्यादा ठीक न होगा? अभी तो उन्हें यह कहा जाता है कि अपनेको सात बरसका लड़का मानिए और हर एक विषय दस्तकारीके माध्यमसे फिरसे सीखिए। इस तरह नई पद्धतिमें कुशल बनकर शिक्षक बननेमें तो उन्हें कई वर्ष लग जायेंगे।

गा० : नहीं, बरसों नहीं लगेंगे। कल्पना कीजिए कि शिक्षक जब मेरे पास आता है, तब उसको गणित, इतिहास और दूसरे विषयोंका कामचलाऊ ज्ञान होता है। मैं उसको कार्डबोर्डकी पेटी बनाना या कातना सिखाता हूँ। उसी समय मैं उसको बताता हूँ कि इस दस्तकारी द्वारा गणित, इतिहास और भूगोलका ज्ञान वह किस प्रकार पा सकता है। इस तरह वह सीखता है कि अपने ज्ञानका दस्तकारीके साथ कैसे मेल बैठाया जाये। ऐसा करनेमें उसे अधिक समय नहीं लगना चाहिए। दूसरा उदाहरण लीजिए। मान लीजिए कि मैं अपने सात वर्षीय लड़केके साथ बुनियादी तालीमके स्कूलमें जाता हूँ। हम दोनों कातना सीखते हैं और मैं अपने सारे पूर्वज्ञानका कताईके साथ मेल बैठा लेता हूँ। उस लड़केके लिए यह सब नया-नया है। ७० वर्षके पिताके लिए यह सब दोहराना-भर है, पर वह अपना पुराना ज्ञान नये ढंगसे जमा लेगा। क्रियामें उसे थोड़े सप्ताहसे अधिक समय नहीं लगना चाहिए। इस तरह यदि शिक्षक इस ७ वर्षके बालक-जितनी ग्रहण-शक्ति और उत्कंठा नहीं रखेगा, तो वह अन्तमें केवल यान्त्रिक कतैया ही बन जायेगा और इससे उसमें नई पद्धतिका शिक्षक बननेकी योग्यता नहीं आयेगी।

प्र० : मैट्रिक-पास लड़केको आज कॉलेजमें जानेकी इच्छा हो तो वह जा सकता है। जो बालक बुनियादी तालीमके पाठ्यक्रमको पढ़कर निकलेगा, वह भी क्या ऐसा ही कर सकेगा?

गा० : मैट्रिक पास होनेवाला लड़का और बुनियादी तालीम पाया हुआ लड़का — इन दोनोंमें से दूसरा अधिक कार्यक्षम होगा, क्योंकि उसकी शक्तियोंका विकास हो चुका होगा। कॉलेजमें जाते वक्त मैट्रिक-पासको आमतौरपर जैसी लाचारी महसूस होती है, वैसी उसे नहीं होगी।

प्र० : कहा गया है कि बुनियादी तालीमके स्कूलमें दाखिल होनेके लिए बालक की उम्र कम-से-कम सात वर्षकी होनी चाहिए। यह उम्र काल-मर्यादासे नापी जाये या मानसिक विकाससे?

गा० : कम-से-कम औसत उम्र सात वर्षकी होनी चाहिए। पर कुछ बालक इससे अधिक उम्रके और कुछ कम उम्रके भी होंगे। इसमें शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकारकी उम्रका विचार करना पड़ता है। किसी बालकका ७ वर्षकी उम्रमें इतना

शारीरिक विकास हो जाता है कि वह हस्त-उद्योग चला सकता है। दूसरा बालक शायद ७ वर्षमें उतना न कर सके। अतः इस बारेमें कोई निश्चित नियम नहीं बनाया जा सकता। सब बातोंका विचार करके निर्णय करना पड़ेगा।

आपके बहुत-से प्रश्नोंसे मालूम होता है कि आपमेंसे अधिकांशके मनमें शंकाएँ भरी पड़ी हैं। यह काम करनेका गलत तरीका है। आपके मनमें दृढ़ विश्वास होना चाहिए। हमारे करोड़ों बालकोंको जीवनकी शिक्षा देनेके लिए वर्धा-योजनाके अन्तर्गत दी जानेवाली शिक्षा ही सच्ची आवश्यक वस्तु है, ऐसी जो प्रतीति मेरे मनमें है वह आपके मनमें हो तो आपका काम चमक उठेगा। ऐसा विश्वास आपमें न हो तो आपके अध्यापकोंमें कुछ कमी अवश्य है। वे आपको और कुछ दे सकें या न दे सकें, पर इतना विश्वास आपके मनमें पैदा करनेकी शक्ति तो उनमें होनी ही चाहिए।

प्र० : बुनियादी तालीमकी योजना गाँवके लिए है, ऐसा माना जाता है। क्या शहरवालोंके लिए कोई रास्ता नहीं है? क्या उन्हें पुरानी पद्धतिसे ही चलना पड़ेगा?

गां० : यह सवाल प्रासंगिक है और अच्छा है, पर मैं इसका जवाब 'हरिजन' में दे चुका हूँ। जितना काम हाथमें लिया है, उतना पूरा कर दें तो बहुत है। हमने जो काम उठाया है, वही काफी बड़ा है। ७ लाख गाँवोंकी शिक्षाका प्रश्न हम हल कर सकें, तो अभीके लिए इतना काफी है। बेशक, शिक्षा-शास्त्री शहरोंके लिए भी विचार कर रहे हैं। पर हम गाँवोंके साथ-साथ शहरोंका प्रश्न भी उठावेंगे, तो हमारी शक्ति व्यर्थ नष्ट हो जायेगी।

प्र० : मान लीजिए कि किसी गाँवमें तीन स्कूल हैं और हरएकमें अलग-अलग दस्तकारीका प्रशिक्षण दिया जाता है। यदि एक स्कूलमें दूसरेकी अपेक्षा शिक्षाकी अधिक गुंजाइश हो, तो बालकको उनमेंसे किस स्कूलमें जाना चाहिए?

गां० : एक गाँवमें अनेक दस्तकारियोंका प्रशिक्षण नहीं दिया जाना चाहिए, क्योंकि हमारे ज्यादातर गाँव इतने छोटे हैं कि उनमें एकसे अधिक स्कूल रखना ठीक नहीं रहेगा। बड़े गाँवमें एकसे अधिक स्कूल हो सकते हैं। पर वहाँ दोनोंमें एक ही दस्तकारी सिखाई जानी चाहिए। फिर भी इसके बारेमें मैं कोई अटल नियम नहीं बनाना चाहता। ऐसी बातोंमें अनुभवके अनुसार चलना ही उत्तम तरीका है। विभिन्न दस्तकारियोंमें विद्यार्थियोंकी कितनी रुचि है और वे विद्यार्थियोंकी शक्तिका कितना विकास कर सकते हैं, उसका निरीक्षण करना चाहिए। मुद्दा यह है कि आप जो भी दस्तकारी पसन्द करें, इससे बालककी शक्तियोंका पूर्ण और एक समान विकास होना चाहिए। यह कोई ग्रामोद्योग होना चाहिए और उपयोगी होना चाहिए।

प्र० : बड़ा होनेपर यदि बालकका व्यवसाय दूसरा ही होनेवाला हो, तो वह सात वर्ष किसी हस्त-उद्योगको सीखनेमें क्यों बिगाड़े? उदाहरणके लिए, सराफका लड़का, जो बड़ा होनेपर सराफ होनेवाला है, सात बरस तक कताई करना क्यों सीखे?

गा० : यह प्रश्न नई शिक्षा-योजनाके बारेमें घोर अज्ञान प्रदर्शित करता है। बुनियादी तालीममें लड़का केवल दस्तकारी सीखनेके लिए स्कूल नहीं जाता। वह स्कूलमें दस्तकारीकी मार्फत प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करनेके लिए, अपने मनका विकास करनेके लिए जाता है। मेरा यह दावा है कि जिस बालकने ७ वर्षका प्राथमिक शिक्षाका नया पाठ्यक्रम पूरा किया होगा, वह किसी सामान्य स्कूलमें ७ वर्ष तक पढ़े हुए बालककी अपेक्षा अधिक अच्छा सर्राफ बन सकेगा। सामान्य स्कूलमें जानेवाला बालक सराफीके स्कूलमें जायेगा, तो वह उसे अच्छा नहीं लगेगा, क्योंकि उसकी सब शक्तियोंका विकास नहीं हुआ होगा। पुराने वहम, जो जड़ जमाकर बैठे होते हैं, निकलने मुश्किल हैं। इस नई शिक्षा-योजनाका अर्थ तनिक अक्षर-ज्ञान और थोड़ी दस्तकारी — इन दोका मिश्रण नहीं है। यदि यह मुख्य बात मैं आप लोगोंके मनमें बिठा सकूँ, तो मेरा आजका काम सफल माना जायेगा। दस्तकारीके माध्यमसे पूरी प्राथमिक शिक्षा देना ही इस नई योजनाका ध्येय है।

प्र० : प्रत्येक स्कूलमें एकसे अधिक दस्तकारियाँ सिखाना क्या ठीक नहीं है? सम्भव है कि हर माह और हर साल एक ही दस्तकारी सीखनेमें बालक उकता जाये।

गा० : यदि मुझे कोई शिक्षक ऐसा मिले जिसके विद्यार्थियोंको एक महीना कातनेके बाद उसमें दिलचस्पी न रह जाये, तो मैं उस शिक्षक को हटा दूँगा। जैसे एक ही वाद्यपर संगीतके नये-नये स्वर निकल सकते हैं, वैसे ही शिक्षकके हरएक पाठमें नवीनता होनी चाहिए। कभी एक दस्तकारी और कभी दूसरी हाथमें लेनेसे बालककी स्थिति एक शाखासे दूसरी शाखापर कूदनेवाले और कहीं भी स्थिर न बैठनेवाले बन्दर-जैसी हो सकती है। पर मैंने अपनी चर्चामें बताया है कि शास्त्रीय तरीकेसे कताई सिखानेमें कताईके अलावा दूसरे अनेक विषय सिखाने पड़ते हैं। शीघ्र ही बालक को अपनी तकली और अटेरन बनाना सिखाया जायेगा। अर्थात् शुरूमें कही हुई बात मैं फिर कहता हूँ कि यदि शिक्षक दस्तकारीका काम शास्त्रीय वृत्तिसे करेगा, तो वह अपने विद्यार्थियोंको अनेक और विविध चीजें सिखायेगा और ये सब विद्यार्थियोंकी सभी शक्तियोंके विकासमें मदद करेंगे।

सेगाँव, ९ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १८-२-१९३९ तथा ४-३-१९३९

४१९. तार : महादेव देसाईको^१

वर्धा

[४ फरवरी, १९३९]^२

महादेव देसाई
बिड़ला हाउस
नई दिल्ली

हालाँकि पूरी बात न जाननेके कारण तुम्हारा सुझाव मुझे नहीं जँचता, तो भी मैं जमनालालजीको सलाह दे रहा हूँ कि वे तुम्हारी हिदायतों पर चलें। स्वास्थ्य अच्छा है।

बापू

[अंग्रेजीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २१२

४२०. तार : जमनालाल बजाजको

[४ फरवरी, १९३९]^३

जमनालाल
मार्फत लकड़शोर, आगरा

तुम्हारा तार मिला। महादेवने तुमको तारसे कुछ सुझाव भेजे हैं। उनका पालन करो। स्वास्थ्य अच्छा है। बा, मणिबहन गिरफ्तार हो गई, राज्यकी मेहमान हैं।

बापू

[अंग्रेजीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ४०४

१. महादेव देसाईने ४ फरवरीको नई दिल्लीसे अपने तारमें कहा था : “जमनालालजी की निगरानी करनेवाले पुलिस-अधिकारीने उनसे जबानी यह प्रार्थना की है कि वे अधिकारियोंको पुनर्विचारके लिए कुछ समय दें। इसलिये क्या मैं जमनालालजीसे यह कह सकता हूँ कि अधिकारियोंको एक पत्र लिखे, जिसमें पुलिस-अधिकारीकी प्रार्थनाका उल्लेख हो, विज्ञप्तिकी असंगति दिखाई जाये और उन्हें आठ तकका समय दे दिया जाये। पत्रके लिए उपयुक्त मसविदा मैं उन्हें भेज रहा हूँ। यदि आप सहमत हों तो आप उन्हें पत्र भेजनेकी सलाह दे दें।”

२. देखिए अगला शीर्षक।

३. साधन-सूत्रके अनुसार।

४२१. पत्र : इन्दिरा नेहरूको

सेगाँव, वर्धा
४ फरवरी, १९३९

चि० इंदु,

अब तू मुझे क्यों याद करेगी ? आलमोडामें तुझे लाभ हुआ सुनकर मुझे आनंद हुआ। ईश्वरसे मेरी प्रार्थना है कि तू बिलकुल अच्छी हो जा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९८०१) से; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

४२२. पत्र : जनरल शिन्देको

सेगाँव
४ फरवरी, १९३९

प्रिय जनरल शिन्दे,

आपके पत्र तथा संलग्न कागजातके लिए अनेकानेक धन्यवाद।^१

आपने जो उद्धरण मुझे भेजे हैं उनमें मुझे कोई आपत्तिजनक बात नहीं दिखाई पड़ती।

जहाँ तक छपे हुए परिपत्रकी बात है, यदि उसमें कही गई बात सच है तो यही कहूँगा कि वह एक दुःखद स्थितिकी सूचक है। सचाईका पता चलानेकी जिम्मेदारी बड़ौदाके समझदार लोगोंपर है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल।

१. देखिए “पत्र : जनरल शिन्देको”, पृ० ३७९।

४ फरवरी, १९३९

चि० बबुड़ी,

तू मुझसे दूर नहीं रह सकती तो विवाहके बाद भी यहाँ रह सकती है। मैंने तो जल्दी इसलिए की कि तेरी इच्छा भी थी ही। फिर, मेरा कोई ठिकाना नहीं। शरीर भी कमजोर है। इसलिए मैंने सोचा कि यह काम मेरे हाथसे ही हो जाये, तो इस ऋणसे छुटकारा पा जाऊँ। तू कुछ दिन ससुरालमें रहकर भी तुरन्त वापस आ सकती है। तबीयत ठीक न रहे, तब तो आ ही जाना। जो तुझे ठीक लगे वह कर सकती है। मेरी यह भी इच्छा है कि तू बारडोलीके काममें शामिल हो जाये।

कपड़ा कहाँ है? लेकिन मैं जो कपड़े पहनता हूँ, उनमें से कोई नया कपड़ा तू ले ले, क्या यह ठीक नहीं होगा? ऊपर ओढ़नेके लिए ठीक होगा या सायेके लिए; जहाँ भी सफेद कपड़ा ठीक लगे? चरखा कैसा? पुस्तकें सब मिलेंगी। सूत्र तो तैयार ही हैं।

दूर रहकर भी तू मेरी सेवा, मेरा काम करेगी।

कलके पत्रका उत्तर सरदारके पत्रमें नहीं दिया जा सका। मेरी सलाह है कि तू सरदारको इस सम्बन्धमें अपने विचार बता।

धार्मिक वाचनके बारेमें फिर दूसरी बार पूछना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०००३) से; सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला

४२४. रोमन लिपि बनाम देवनागरी लिपि'

मुझे मालूम हुआ है कि असममें कुछ जन-जातियोंको देवनागरीकी जगह रोमन लिपिमें लिखना-पढ़ना सिखाया जा रहा है। मैं अपनी यह राय जाहिर कर ही चुका हूँ कि अगर हिन्दुस्तानमें सर्वमान्य हो सकनेवाली कोई लिपि है तो वह देवनागरी ही है, फिर चाहे उसे सुधरे रूपमें स्वीकार किया जाये या वह जैसी अब है उसी रूपमें। जब तक मुसलमान स्वेच्छासे शुद्ध वैज्ञानिक और राष्ट्रीय दृष्टिसे देवनागरीकी श्रेष्ठता स्वीकार नहीं करते, तबतक उर्दू या फारसी लिपि जरूर जारी रहेगी। मगर मौजूदा समस्याके लिए यह बात अप्रासंगिक है। इन दो

१. यह "टिप्पणियाँ" शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

लिपियोंके साथ-साथ रोमन लिपि नहीं चल सकती। रोमन लिपिके समर्थक तो इन दोनों ही लिपियोंको रद्द कर देनेकी राय देंगे। किन्तु विज्ञान तथा भावना, दोनों ही दृष्टियोंसे रोमन लिपि नहीं चल सकती। रोमन लिपिमें अच्छाई केवल यह है कि छापने और टाइप करनेमें वह आसान पड़ती है। किन्तु उसे सीखनेमें करोड़ों लोगोंको जो मेहनत पड़ेगी, उसे देखते हुए इस लाभका हमारे लिए कोई मूल्य नहीं है। लाखों-करोड़ों लोगोंको तो देवनागरीमें या अपने-अपने प्रान्तकी लिपिमें ही अपना साहित्य पढ़ना है, इसलिए उन्हें रोमन लिपि जरा भी सहायता नहीं पहुँचा सकती। करोड़ों हिन्दुओं और मुसलमानोंके लिए भी देवनागरी सीखना आसान है, क्योंकि अधिकांश प्रान्तीय लिपियाँ देवनागरीसे ही निकली हैं। मैंने इसमें मुसलमानोंका समावेश जान-बूझकर किया है। मसलन, बंगालके मुसलमानोंकी मातृभाषा बंगला है, और तमिलनाडुके मुसलमानोंकी तमिल। उर्दू-प्रचारके वर्तमान आन्दोलनका स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि हिन्दुस्तान-भरके मुसलमान अपनी-अपनी मातृ-भाषाके अलावा उर्दू भी सीखें। हर हालतमें 'कुरानशरीफ' पढ़नेके लिए उन्हें अरबी सीखनी ही पड़ेगी। मगर करोड़ों हिन्दू-मुसलमानोंके लिए रोमन लिपिका प्रयोजन तो अंग्रेजी सीखनेके सिवा दूसरा कुछ भी नहीं है। इसी तरह हिन्दुओंको अपने धर्म-ग्रन्थ मूल भाषामें पढ़नेके लिए देवनागरी सीखनेकी जरूरत पड़ती है, और वे उसे सीखते ही हैं। इस तरह देवनागरी लिपिको सर्वमान्य बनानेके लिए एक ठोस आधार है। अगर हम रोमन लिपिको लागू करें, तो वह ऊपरसे थोपी हुई ही होगी और कभी लोकप्रिय नहीं हो सकेगी। जब सच्ची लोक-जागृति आयेगी, तो ऊपरसे थोपी गई कोई भी चीज टिक नहीं सकेगी। और यह लोक-जागृति ज्ञात कारणोंसे कोई जितनी आशा कर सकता है, उससे कहीं ज्यादा जल्दी आनेवाली है। फिर भी लाखों-करोड़ों लोगोंको जगानेमें वक्त लगेगा। जागृति कोई ऐसी चीज तो है नहीं जो साँचेमें ढालकर बनाई जा सकती हो। यह तो रहस्यमय ढंगसे आती है या आती हुई प्रतीत होतीहै। राष्ट्रीय कार्यकर्ता जन-मानसको पहलेसे समझकर उस प्रक्रियाको केवल तेज कर सकते हैं।

सेगांव, ५ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ११-२-१९३९

४२५. क्षमायाचना नहीं

यहूदी मित्रोंसे मुझे दो पत्र मिले हैं जिनमें यहूदी समस्यापर 'हरिजन' में प्रकाशित एक वार्तालापमें मेरे एक कथनपर विरोध प्रकट किया गया है। उनमें से एक पत्र यहाँ उद्धृत किया जा रहा है :

मेरा ध्यान २४ दिसम्बर, १९३८ के 'हरिजन' के एक अनुच्छेद की ओर आकर्षित किया गया है जिसमें रिपोर्ट के अनुसार आपने यह कहा है कि "यहूदियोंने यह कामना की है कि जर्मनोंको सारी मानवजातिका शाप लगे और वे यह चाहते हैं कि अमेरिका और इंग्लैंड उनकी ओरसे जर्मनीसे लड़ें।" मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आपकी बात गलत ढंगसे रखी गई है, क्योंकि ऐसा कुछ नहीं है जिससे इस तरहका कथन उचित ठहराया जा सके। फिर भी इन शब्दोंसे मुझे बड़ी व्यथा पहुँची है, इसलिए आपकी ओरसे आश्वासनके दो शब्द पाकर मुझे खुशी होगी।

मुझे यह कहते हुए खेद होता है कि जो आश्वासन माँगा गया है वह मैं नहीं दे सकता। क्योंकि श्री प्यारेलालने जो शब्द मुझसे कहलवाये हैं वे मैंने कहे थे। पश्चिमसे मुझे जो पत्र मिलते हैं प्रायः उन सभीमें यहूदियोंके कष्टोंका वर्णन रहता है और जनतन्त्रीय देशोंसे जर्मन अत्याचारोंका बदला लेनेकी माँग होती है। मैं यह भी कह दूँ कि इस रखमें मुझे कोई बुराई भी नहीं दिखती। यहूदी कोई परिश्रमे नहीं हैं। मेरा आशय यह था कि मैं अहिंसाका जो अर्थ करता हूँ उस अर्थमें वे अहिंसक नहीं हैं। उनकी अहिंसामें प्रेम न तो था और न है। वह निष्क्रिय है। वे प्रतिरोध इसलिए नहीं करते क्योंकि वे जानते हैं कि उन्हें प्रतिरोधमें कोई सफलता नहीं मिलेगी। यदि मुझमें सक्रिय अहिंसा न हो, तो उनकी जगह मैं भी निश्चय ही अपने उत्पीड़कोंपर ईश्वरका कोप पड़नेकी कामना करूँगा। मुझे पत्र लिखनेवालोंने यह दावा नहीं किया है कि जर्मन यहूदी यह नहीं चाहते कि इंग्लैंड, अमरीका और फ्रांस जैसी बड़ी शक्तियाँ इन अत्याचारोंको रोकें और यदि जरूरी हो तो इसके लिए जर्मनीके विरुद्ध युद्ध तक करें। एक यहूदी मित्र मेरे साथ रह रहे हैं। उनका अहिंसामें बौद्धिक विश्वास है। परन्तु वे कहते हैं कि वे हिटलरके लिए प्रार्थना नहीं कर सकते। जर्मन अत्याचारोंपर उनमें इतना रोष है कि उनकी चर्चा करते हुए वे अपनेपर नियन्त्रण नहीं रख पाते हैं। उनके इस रोषपर मैं उनके साथ झगड़ता नहीं हूँ। वे अहिंसक होना चाहते हैं, परन्तु अपने यहूदी भाइयोंके कष्टोंको बरदाश्त नहीं कर पाते हैं। जो बात उनके बारेमें सच

१. देखिए पृ० २२४।

है, वह उन हजारों यहूदियोंके बारेमें भी सच है जिन्होंने “शत्रुसे भी प्रेम करने” की बात कभी सोची नहीं है। उनके लिए, और लाखों लोगोंके लिए, “प्रतिशोध मधुर है, क्षमा दिव्य है।”

सेगाँव, ५ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १८-२-१९३९

४२६. पत्र : सुभाषचन्द्र बोसको

सेगाँव

५ फरवरी, १९३९

प्रिय सुभाष,

आशा है, तुम्हें मेरा निजी पत्र और कल भेजा हुआ पत्र^१, दोनों मिल गये होंगे।

मुझे मौलाना साहबका तार मिला है जिसमें यह सुझाव है कि वे और दूसरे लोग कार्य-समितिसे अलग हो जायें।^२ मैंने उसको यह उत्तर दिया है कि इससे शायद तुम्हें [सुभाषको] परेशानी होगी। अब राजेन बाबूका पत्र आया है। उसमें भी वही सुझाव है और उसका इस तर्क द्वारा समर्थन किया गया है कि यदि इस्तीफे तुम्हारे हाथमें हों तो इससे तुम्हें मदद ही मिलेगी। इससे तुम एक अस्थायी कार्य-समिति चुन सकते हो जो भावी कार्यक्रम बनानेमें तुम्हारी मदद करेगी। राजेन बाबूका तर्क मुझे सही लगता है। मेरी समझके अनुसार पुराने साथी, जिन्हें तुम दक्षिणपंथी मानते हो, कार्य-समितिके काम नहीं करेंगे। यदि तुम्हारे लिए यह ज्यादा सुविधाजनक हो तो तुम उनके इस्तीफे अभी ले सकते हो। उनकी उपस्थिति तुम्हारे लिए और उनके लिए भी उचित नहीं होगी। तुम्हें अपना कार्यक्रम गढ़नेके लिए स्वतन्त्र रहना चाहिए और दक्षिणपंथियोंसे (मैं चाहता हूँ तुम्हारी कल्पनामें जो दल हैं उनके लिए कोई ज्यादा अच्छे और देसी नाम चुनो) यह आशा रखनी चाहिए कि जहाँ तक उनसे बन पड़ेगा, वे तुम्हें समर्थन देंगे और जहाँ वे तुमसे सहमत नहीं होंगे, वहाँ तुम्हारे काममें रोड़ा अटकाये बिना तटस्थ रहेंगे।

अपने वक्तव्य^३ के उत्तरमें दिया गया तुम्हारा वक्तव्य^४ मैंने अभी-अभी पढ़ा है। यद्यपि इसका उत्तर दिया जाना चाहिए, लेकिन मैं इसका उत्तर नहीं दे रहा हूँ। जहाँ तक मेरा बस चले, मैं तुम्हारे साथ सार्वजनिक विवादमें नहीं पड़ना चाहता।

१. ये पत्र उपलब्ध नहीं हैं।

२. कार्य-समितिके सदस्योंके इस्तीफेके पत्रके लिए देखिए परिशिष्ट ३।

३. देखिए पृ० ३९६-७।

४. देखिए परिशिष्ट ४।

यदि जरूरी समझो तो यह पत्र तुम मित्रोंको दिखा सकते हो। मैं इसकी प्रतियाँ मौलाना साहब आदिको भेज रहा हूँ।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीसे : गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३९; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

४२७. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

५ फरवरी, १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

यह प्रति^१ तुम्हारे सूचनार्थ है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीसे : गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३९; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

४२८. पत्र : जानकीदेवी बजाजको

[५ फरवरी, १९३९]*

चि० जानकीबहन,

कल तो नानाभाई और मनुभाई आते हैं। उनको सेगाँव आने देना अच्छा होगा। आजकल यहाँ भीड़ नहीं है। और उनको लेनेके लिये पुन्नालाल जाते हैं तो खाली क्यों तुमको तकलीफ दूँ ? मंगलवारको शायद पांच आदमी आवेंगे। उनको भी सेगाँव लाना तो चाहता हूँ। कुछ परिवर्तन करना होगा तो देख लूँगा। जमनालाल पकड़े गये सो अच्छा ही हुआ है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनरुच :]

विवाह विधि नानाभाई करेंगे। व्यासजी भले आवे।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३००२) से।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. यह तारीख जमनालालजीकी गिरफ्तारी तथा मंगलवार, दिनांक ७ फरवरी, १९३९ को सम्पन्न हुए विजया पेटेल और शारदा शाहके विवाहके उल्लेखके आधारपर निश्चित की गई है।

४२९. पुर्जा : अमृत कौरको

[५ फरवरी, १९३९ या उसके पश्चात्]^१

विरोधाभासवाली बात बिल्कुल लागू नहीं होती। मेरा मतलब यह है कि साधारण मनुष्य यदि यह कामना करता है कि ईश्वर अत्याचारीको दण्ड दे, तो उसमें गलत कुछ नहीं है। अहिंसा नई चीज है। अहिंसामें आस्था रखनेवालेके लिए किसीके ऊपर ईश्वर अथवा मनुष्यके प्रकोपकी कामना करना गलत होगा। परन्तु यदि कोई उत्पीड़ित मनुष्य प्रत्याक्रमण करता है और इसमें दूसरोंकी सहायता चाहता है, तो अहिंसामें आस्था रखनेवालेको वह गलत नहीं लगना चाहिए। इस तर्कको समझनेकी तुम्हें कोशिश करनी चाहिए।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४२०९) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७८४५ से भी।

४३०. भेंट : दक्षिण आफ्रिकाके भारतीय विद्यार्थियोंको^२

बारडोली

[६ फरवरी, १९३९ के पूर्व]^३

विद्यार्थियोंने गांधीजीसे पूछा : “दक्षिण आफ्रिकामें पैदा हुए हम लोग अपने अभिगृहीत देशमें भारतीय संस्कृतिको सुरक्षित रखनेके लिए क्या करें? अंग्रेजीके अलावा अन्य कौन-सी भाषाएँ आप हमें सीखनेके लिए कहेंगे?”

गांधीजीने पहले तो उन्हें अंग्रेजीको प्रथम स्थान देनेके लिए झिड़का और फिर यह सलाह दी कि उन्हें उसके बजाय हिन्दुस्तानी सीखनी चाहिए जिसमें संस्कृत और फारसी या अरबी मूलके वे सब शब्द हों जिन्हें आम लोग इस्तेमाल करते हैं। उन्होंने कहा कि हिन्दू लोग संस्कृतके अध्ययनकी और मुसलमान अरबीके अध्ययनकी उपेक्षा नहीं कर सकते। केवल इसीलिए नहीं कि उनके लिए इन भाषाओंका अध्ययन अपने-अपने धार्मिक ग्रन्थोंको मूल भाषामें पढ़नेके लिए अनिवार्य है, अपितु इसलिए भी कि इन दोनों भाषाओंमें संसारकी सर्वोत्तम कविताका सृजन किया गया है। उन्होंने अन्तमें कहा :

१. वह पुर्जा एक तारके पृष्ठभाग पर लिखा हुआ है, जो दामोदरकी ओरसे बच्छराज, वर्धाको ५-२-१९३९ को भेजा गया था।

२ और ३. प्यारेलालके “ए वरडं इन एगोनी-२” ६-२-१९३९ से उद्धृत। ये विद्यार्थी भारतमें डॉक्टरी शिक्षा पानेके लिए आये थे और वे चाहते थे कि मेडिकल कॉलेजोंमें प्रवेश पानेके लिए गांधीजी उनकी सहायता करें।

सबसे ज्यादा ध्यान रखनेकी बात यह है कि आप सादगी और अध्यात्म-भावनाको, जो भारतीय संस्कृतिकी विशिष्ट पहिचान है, निष्ठापूर्वक बनाये रखें।

विद्यार्थियोंका दूसरा प्रश्न यह था कि वे दक्षिण आफ्रिकामें अपने अधिकारोंके लिए संघर्षको सत्याग्रह द्वारा जारी रखें या वैधानिक आन्दोलन द्वारा।

गांधीजी : मैं कहूँगा कि यदि दक्षिण आफ्रिकाके लोगोंमें साहस हो तो वे सत्याग्रह द्वारा ही संघर्ष जारी रखें और विश्वास रखें कि इसमें उनकी जीत अवश्य होगी। मुझे आशा है कि किसी दिन दक्षिण आफ्रिकामें जन्मे युवकोंमेंसे कोई ऐसा अवश्य निकलेगा जो वहाँ बसे हुए अपने देशवासियोंके अधिकारोंका पक्ष लेगा और उन अधिकारोंको सिद्ध करना अपने जीवनका लक्ष्य बनायेगा। उसका आचार-व्यवहार इतना विशुद्ध, सुसंस्कृत, सच्चा और गरिमा-युक्त होगा कि वह सारे विरोधको निरस्त कर देगा। गोरी जातियाँ तब कहेंगी, “यदि सभी भारतीय इस-जैसे हों तो उन्हें अपने समान दर्जा देनेमें हमें कोई आपत्ति नहीं है।” परन्तु वह उत्तर देगा : “इतना ही काफी नहीं है कि भारतीय लोगोंके एक ही प्रतिनिधिको आप अपनी बराबरीका माननेके लिए तैयार हो जायें। मैं जो-कुछ हूँ वही मेरे दूसरे देशवासी भी हो सकते हैं, बशर्ते कि उन्हें बुरा-भला कहने और उन पर अनेक प्रकारकी नियोग्यताएँ लादनेके बजाय आप उन्हें उदारतापूर्वक शिक्षा-सम्बन्धी और दूसरी सुविधाएँ प्राप्त करनेका अवसर दें। आज उन्हें उन सुविधाओंसे वंचित रखा जाता है। जब कभी कोई ऐसा व्यक्ति निकल आयेगा, तब उसे मेरी सीखकी जरूरत नहीं होगी। वह अपनी चारित्रिक प्रतिभासे अपनी शक्ति और योग्यता स्वयं ही प्रमाणित कर देगा और सफलता प्राप्त करेगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १८-२-१९३९

४३१. महात्माकी मूर्ति

कांग्रेस-नगरमें २५,००० रुपयेकी लागतसे महात्माकी मूर्ति बनानेकी खबरको लेकर उसके विरोधमें मेरे पास लोगोंके पत्र-पर-पत्र आ रहे हैं। इस मूर्तिके बारेमें मुझे कुछ भी पता नहीं है। इस सम्बन्धमें मैंने पूछताछ की है। मगर इस खबरकी पुष्टि होने तक मैं इन्तजार नहीं करना चाहता। यह मानकर कि ऐसी मूर्ति बनाई जा रही है, मैं अपने पत्र-लेखकोंके विरोधका जोरदार समर्थन करता हूँ और उनकी इस बातसे सहमत हूँ कि एक मनुष्यकी आकृतिकी मिट्टी या धातुकी प्रतिमा बनानेपर २५,००० रुपये खर्च करना निश्चय ही पैसेकी बरबादी है—एक ऐसे मनुष्यकी प्रतिमा पर, जो कि खुद ही मिट्टीका बना हुआ है और जो उस काँचकी चूड़ीसे भी अधिक नाजुक है जिसे यदि ठीक तरहसे रखा जाये, तो वह हजारों साल तक सुरक्षित रखी

रह सकती है, जबकि मानव-काया तो रोजरोज क्षीण होती रहती है और निश्चित आयु पूरी होनेपर बिलकुल नष्ट हो जाती है। अपने मुसलमान दोस्तोंसे, जिनके बीचमें मेरी जिन्दगीका सबसे अच्छा हिस्सा गुजरा है, मैंने अपनी मूर्तियों और तसवीरोंके प्रति अपनी नापसन्दगी सीखी है। और अगर यह खबर सच है, तो मैं चाहूँगा कि स्वागत-समिति इस बेकार चीजको बनानेका इरादा छोड़ दे। जितना पैसा स्वागत-समिति बचा सके उतना उसे बचा लेना चाहिए। अगर यह खाली अपवाह ही है, तो मेरी ये पंक्तियाँ उन लोगोंके लिए चेतावनी-स्वरूप होनी चाहिए, जो मेरी आकृति की प्रतिमा और तसवीरें बनवाकर, जिन्हें कि मैं दिलसे नापसन्द करता हूँ, मेरा सम्मान करना चाहते हैं। जो लोग मुझमें विश्वास करते हैं अगर वे कृपा कर उन प्रवृत्तियोंको, जिनके लिए कि मैं लड़ रहा हूँ, आगे बढ़ायेंगे और कमसे-कम उस रुपयेको, जिसे कि वे प्रतिमाओं और तसवीरोंपर खर्च करना चाहते हैं, हरिजन सेवक संघ, अ० भा० ग्रामोद्योग संघ, अ० भा० चरखा-संघ या हिन्दुस्तानी तालीमी-संघके काममें लगायेंगे, तो मैं उसे अपना काफी सम्मान समझूँगा।

सेगांव, ६ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ११-२-१९३९.

४३२. कस्तूरबा गांधी राजकोट क्यों गई ?

राजकोटकी लड़ाईमें अपनी पत्नीके शरीक होनेके बारेमें मैं कुछ भी नहीं कहना चाहता था। लेकिन उनके शरीक होनेके बारेमें कुछ ऐसी निष्ठुर टीकाएँ मेरे देखनेमें आई हैं कि स्पष्टीकरण देना जरूरी हो गया है। मुझे यह कभी नहीं मूझा था कि उसे लड़ाईमें जाकर शामिल होना चाहिए। इसका एक कारण तो यही था कि वह इतनी वृद्ध हो गई हैं कि सविनय अवज्ञाकी लड़ाईकी मुसीबतें उनसे अब बरदाश्त नहीं हो सकतीं। आलोचकोंको भले ही इसमें ताज्जुब हो, लेकिन उन्हें मेरी इस बात पर जरूर यकीन कर लेना चाहिए कि हालाँकि वह बेचारी बहुत पढ़ी-लिखी नहीं हैं, मगर जो वह करना चाहती हैं, उसे करनेके लिए वह बिलकुल स्वतन्त्र हैं और वर्षोंसे रही हैं। जब उन्होंने दक्षिण आफ्रिका या हिन्दुस्तानकी आजादीकी लड़ाईमें भाग लिया, तो ऐसा उसने अपनी आन्तरिक प्रेरणासे ही किया था। और राजकोट की लड़ाईमें भी ऐसा ही हुआ है। मणिवहनकी गिरफ्तारकी बात सुनने पर वह अपनेको काबूमें न रख सकी और मुझसे बोली, मैं उन्हें राजकोट जाने दूँ। मैंने उनसे कहा कि वह बहुत ज्यादा कमजोर हैं। दिल्लीमें हाल ही में वह स्नानगृहमें बेहोश हो गई थी, और देवदासने प्रत्युत्पन्नमतिसे काम न लिया होता तो उनकी वहीं मृत्यु हो जाती। लेकिन उन्होंने कहा कि इसकी चिन्ता नहीं थी। इसके बाद मैंने

उन्हें सरदारसे सलाह लेनेके लिए कहा। उन्होंने भी इनके आग्रहको अमान्य कर दिया।

पर इस बार तो सरदारको पिघल ही जाना पड़ा। रेजिडेंटके उकसानेपर ठाकुर साहब द्वारा वचन-भंग किये जानेसे मुझे जो वेदना हुई उसे उन्होंने देखा था। पाठकोंको यह जानना चाहिए कि राजकोटके साथ मेरा पैतृक सम्बन्ध है और वर्तमान ठाकुर साहबके पिताके साथ तो मेरे व्यक्तिगत सम्बन्ध बहुत ही घनिष्ठ थे। कस्तूरबा राजकोटकी लड़की हैं। उन्हें यह व्यक्तिगत आह्वान जैसा लगा। राजकोटकी दूसरी पुत्रियाँ वहाँ की प्रजाके स्वातन्त्र्य-युद्धमें कष्ट झेलती रहीं और वह चुपचाप बैठी रहें यह उन्हें सहन न हो सका। इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तानके नक्शेपर राजकोट एक तुच्छ स्थान है। किन्तु मेरे और मेरी पत्नीके लिए वह तुच्छ नहीं है। उनका जन्म यद्यपि पोरबन्दरमें हुआ था, पर लालन-पालन तो राजकोटमें ही हुआ। और फिर जो युद्ध अहिंसापर आधारित हो और जिसमें इतने तमाम विश्वसनीय साथी कार्यकर्ताओंने भाग लिया हो, उससे कस्तूरबा या मैं कोई ताल्लुक न रखूँ, यह कैसे हो सकता है?

स्वातन्त्र्य-युद्धमें राजकोटकी लड़ाईकी सफलता एक अगली मंजिलका काम करेगी। और जब यह लड़ाई सफलताके साथ समाप्त होगी—जल्दी या देरीसे सफल यह जरूर होगी—तब मैं आशा करता हूँ कि कस्तूरबाका उसमें भाग लेना उस स्वातन्त्र्य-यज्ञमें एक तुच्छ योगदान माना जायेगा। सत्याग्रहकी लड़ाई एक ऐसी लड़ाई है, जिसमें अगर दिल मजबूत हो तो, वृद्ध-से-वृद्ध और कमजोर-से-कमजोर शरीरवाला भी हिस्सा ले सकता है।

सेगाँव, ६ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ११-२-१९३९

४३३. अहिंसाका पालन

‘हरिजन’ के हालके अंकोंको और यूरोपके संकट और पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्तके बारेमें आपने जो-कुछ लिखा, उसे मैं बड़ी दिलचस्पीके साथ पढ़ता रहा हूँ। लेकिन अहिंसाकी समस्यामें एक बात ऐसी है, जिसके बारेमें अगर समय होता तो मैं सेगाँवमें ही आपसे बातचीत करता,^१ क्योंकि उसका उल्लेख आप या तो कभी करते ही नहीं, या कभी-कभार ही करते हैं। आप कहते हैं कि अहिंसात्मक असहयोग, जिस रूपमें आपने उसे विकसित किया है, उस हिंसाका जवाब है जो अब सारे संसारका ध्वंस करनेपर उतारू है। ऐसी भावना और

१. लॉर्ड लोथियन १८ जनवरी से २० जनवरी, १९३८ तक सेगाँवमें थे; देखिए खण्ड ६६, पृ० ३८३-४।

ऐसे कामका महान प्रभाव हो सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं। लेकिन शत्रु-मित्र सबके लिए एक समान निःस्वार्थ प्रेमकी अहिंसात्मक भावनाको सफल होनेके लिए क्या यह जरूरी नहीं है कि जहाँ वह प्रकट हो वहाँ शासन उदार, लोकतन्त्रात्मक और वैधानिक होना चाहिए? कानून और सरकारके बगैर समाज कायम नहीं रह सकता। अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तब तक स्थापित नहीं हो सकती जब तक कि विभिन्न राष्ट्र वैधानिक शासनकी एक ऐसी पद्धतिकी स्वीकार न कर लें जो उन्हें एकता और कानून प्रदान करके अराजकताका खात्मा कर दे। इसमें कोई शक नहीं कि किसी-न-किसी दिन ईश्वरीय कानून मनुष्योंके दिल और दिमागपर इस प्रकार अंकित हो जायेगा कि उसका पालन करनेके लिए किसी मानवी कानून या शासनकी कोई जरूरत नहीं होगी, बल्कि व्यक्तिगत रूपमें वे खुद ही उसके अभिव्यंजक बन जायेंगे। लेकिन वह तो चरम स्थिति है। इस दिव्य लक्ष्यकी ओर बढ़नेका आरम्भ इस रूपमें होना जरूरी है कि सबसे पहले विविध जातियाँ, धर्म और राष्ट्र एक ऐसे विधानके अन्तर्गत एक होनेको रजामन्द हों, जिसके द्वारा उनकी एकता और पारस्परिक सदस्यता कायम रहे। जिन कानूनोंके मातहत वे रहें, वे सार्वजनिक विचार-विमर्श के बाद और किसी-न-किसी रूपमें बहुमतके निश्चयसे जारी होने चाहिए और जहाँ उनका पालन स्वेच्छापूर्वक न हो, वहाँ समझाने-बुझाने और उदाहरण पेश करनेसे काम न चलनेपर, उनका पालन युद्ध द्वारा नहीं बल्कि पुलिस द्वारा कराया जाये। सर्वप्रभुतासम्पन्न राष्ट्रोंके बीच रचनात्मक अहिंसाकी भावनाको काममें लानेसे हम संघ-शासन [फेडरेशन] के किसी-न-किसी रूपपर ही पहुँचेंगे। क्योंकि ऐसा किये बगैर वह सफल नहीं हो सकती। वह प्रभावकारी रूपमें कायम है, इसका सबूत संघात्मक पद्धतिका उभरना ही होगा। इस प्रकार यूरोपकी समस्याका एकमात्र सच्चा हल यही है कि वहाँके २५ राष्ट्रोंका एक लोकतन्त्रीय संविधानके मातहत संघ बनाया जाये, जो ऐसी सरकारका निर्माण करे जो यूरोपको प्रतिस्पर्धी और परस्पर विरोधी राष्ट्रोंका एक समूह मानकर नहीं, बल्कि स्वायत्त भागोंवाली एक पूर्ण इकाई मानकर उसकी समस्याओंपर विचार करे और उनके लिए कानून बनाये। इसी प्रकार भारतीय समस्याका एकमात्र हल यह है कि ग्रेट ब्रिटेनके नियन्त्रणके स्थानपर वहाँ लोकतन्त्रीय संविधान कायम किया जाये। और जो बात यूरोप तथा भारतके लिए ठीक है, कालान्तरमें वही सारी दुनियाके लिए भी ठीक है और युद्धको रोकनेका एकमात्र अन्तिम साधन है।

हो सकता है कि दिल और दिमागमें ऐसा परिवर्तन लानेका, जिससे कि विभिन्न राष्ट्र संघीय लोकतन्त्रीय संविधानको स्वीकार कर सकें, अहिंसात्मक असहयोग सर्वोत्तम — शायद एकमात्र — साधन हो। लेकिन लोकतन्त्रीय संघ-

शासनकी प्राप्ति आवश्यक है, उसीसे इसकी (अहिंसात्मक असहयोग की) सफलता निश्चित होती है, उसके बिना यह सफल नहीं हो सकती। इस बातपर मैं हमेशा उत्सुकतासे ध्यान देता रहा हूँ और आश्चर्य करता रहा हूँ कि आप यह सोचते मालूम पड़ते हैं कि अहिंसात्मक असहयोग खुद अपनेमें ही काफी है, और आप यह कभी नहीं कहते कि इसका लक्ष्य मनुष्यों, जातियों, धर्मों और राष्ट्रोंको मिलानेवाली लोकतन्त्रीय शासन-पद्धतिकी स्थापना ही होना चाहिए, हालाँकि उसकी प्राप्ति हृदयके आध्यात्मिक परिवर्तनके द्वारा ही सम्भव है, बल या हिंसा अथवा चालाकीसे उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता।

मैं यह सब भारतीय संविधानके पक्षमें परोक्ष रूपसे तर्क करनेके लिए नहीं लिख रहा हूँ, हालाँकि उस समस्यासे भी स्पष्ट ही इसका सम्बन्ध है। भारत सरकार अधिनियम लोकतन्त्रीय संघ-शासनके सिद्धान्तका स्पष्टतः एक बहुत अपूर्ण रूप है, और यदि उसको चलाना है तो तेजीके साथ उसका विकास होना आवश्यक है। उसके लिए जो खास दलील हमेशा मैंने दी वह यह है कि मौजूदा हालातमें प्रान्तों, रियासतों, मुसलमानों और हिन्दुओंको एक सूत्रमें पिरोनेवाले एकमात्र वैधानिक समझौतेका वही ऐसा आधार है जिसको अमली रूप दिया जा सकता है। और उसमें आमतौरपर जितने समझे जाते हैं, उससे कहीं ज्यादा विकासके बीज मौजूद हैं। अगर आपका आध्यात्मिक सन्देश लोगों में घर कर जाये, तो इसका विकास शीघ्रतासे और आसानीके साथ हो सकता है। मेरा उद्देश्य इस वैधानिक समस्याके बारेमें आपकी कोई राय प्राप्त करना नहीं है, लेकिन इस पत्रके पूर्व भागमें जो बृहत्तर प्रश्न उठाया गया है, उसका मैं जरूर जवाब चाहता हूँ।

लॉर्ड लोथियनका यह पत्र मुझे जनवरीके शुरूमें मिला था, लेकिन आवश्यक कार्योंके कारण इससे पहले मैं इसमें उठाये गये महत्वपूर्ण सवालकी चर्चा नहीं कर सका।

सोच-समझकर अहिंसापर आधारित समाजमें शासनका रूप क्या हो, इस बारेमें कुछ लिखनेसे मैं जान-बूझकर बचता रहा हूँ। अहिंसा सारे समाजकी एकताको उसी प्रकार कायम रखे हुए है जिस प्रकार कि गुरुत्वाकर्षण पृथ्वीको उसकी स्थितिमें कायम रखे हुए है। लेकिन जब गुरुत्वाकर्षणके नियमका पता लगा, तो उस खोजसे ऐसे परिणाम निकले, जिनका हमारे पूर्वजोंको कुछ ज्ञान न था। इसी प्रकार जब सोच-समझकर अहिंसाके नियमानुसार समाजका निर्माण होगा, तो उसका ढाँचा खास-खास बातोंमें आजसे भिन्न होगा। लेकिन पहलेसे ही मैं यह नहीं कह सकता कि सम्पूर्णतया अहिंसापर आधारित शासनका रूप कैसा होगा।

आज तो जो हो रहा है, वह यह कि अहिंसाके नियमकी उपेक्षा करके हिंसाको सर्वोच्च स्थान प्रदान कर दिया गया है मानो वह एक शाश्वत नियम हो। इसलिए इंग्लैंड, अमेरिका और फ्रांसमें जिन लोकतान्त्रिक प्रणालियोंको हम काम करते

हुए देखते हैं, वे नाम मात्रको ही लोकतान्त्रिक हैं, क्योंकि वे भी हिंसापर नाजी जर्मनी, फासिस्ट इटली या सोवियत रूससे कुछ कम निर्भर नहीं हैं। फर्क सिर्फ यह है कि पिछले तीन देशोंमें हिंसा लोकतन्त्रीय देशोंकी बनिस्बत कहीं ज्यादा अच्छे रूपमें संगठित है। फिर भी हम देखते हैं कि शस्त्रास्त्रोंके मामलेमें एक-दूसरेसे आगे बढ़नेकी आज पागलोंकी-सी होड़ मची है। और संघर्ष होनेपर, जिसका कि एक दिन होना अनिवार्य है, अगर इन लोकतन्त्रोंकी विजय हुई तो वह सिर्फ इसलिए होगी कि उनके पीछे यह सोचनेवाली प्रजाओंका सहारा होगा कि अपने यहाँके शासनमें हमारी भी आवाज है। जबकि हो सकता है कि अन्य तीन राष्ट्रोंमें वहाँकी प्रजाएँ ही अपने यहाँकी तानाशाहियोंके खिलाफ विद्रोह कर दें।

मैं यह मानता हूँ कि अहिंसाको राष्ट्रीय पैमानेपर स्वीकृत किये बगैर वैधानिक या लोकतन्त्रीय शासन-जैसी कोई चीज नहीं हो सकती। इसीलिए अपनी शक्ति मैं इस बातको प्रतिपादित करनेमें लगाता हूँ कि अहिंसा हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवनका नियम है। मैं समझता हूँ कि मैंने प्रकाश देख लिया है, हालाँकि देखा है कुछ धुँधले रूपमें ही। सावधानीके साथ मैं इसलिए लिखता हूँ क्योंकि मैं यह दावा नहीं करता कि मैंने उस सारे नियमको जान लिया है। जहाँ अपने प्रयोगोंकी सफलताओंको मैं जानता हूँ, वहीं अपनी असफलताओंका भी मुझे ज्ञान है। मगर सफलताएँ इतनी हैं कि मेरे अन्दर एक अमर आशा पैदा हो गई है।

मैं अक्सर कहता रहा हूँ कि अगर साधनोंकी फिक्र रखी जाये तो ध्येय अपनी फिक्र खुद कर लेगा। अहिंसा साधन है, और ध्येय है हरएक राष्ट्रके लिए पूर्ण स्वाधीनता। अन्तर्राष्ट्रीय संघ तभी होगा जबकि उसमें शामिल होनवाले बड़े-छोटे सभी राष्ट्र पूरी तरह स्वाधीन हों। राष्ट्र अहिंसाको जितना आत्मसात् करेंगे, स्वाधीनता उतनी ही अधिक होगी। एक बात निश्चित है। अहिंसापर आधारित समाजमें छोटे-से-छोटा राष्ट्र भी अपनेको बड़े-से-बड़े राष्ट्रके बराबर मानेगा। बड़े-छोटेका भाव बिलकुल समाप्त हो जायेगा।

इससे यह परिणाम निकलता है कि भारत सरकार अधिनियम तो सिर्फ काम-चलाऊ चीज है, जिसका स्थान एक ऐसे अधिनियमको लेना चाहिए जो खुद राष्ट्रके द्वारा ही बनाया जाये। जहाँ तक प्रान्तीय स्वराज्यका सम्बन्ध है, किसी हद तक उसको सँभालना सम्भव पाया गया है। वैसे उसके अमलका मेरा अपना जो अनुभव है, वह किसी भी प्रकार सुखद नहीं है। कांग्रेसी सरकारोंका जनतापर वैसा अहिंसात्मक प्रभाव नहीं है जिसकी मैंने उनसे आशा की थी।

लेकिन संघ-शासनका ढाँचा तो मेरे लिए सोचनेके लायक भी नहीं है, क्योंकि उसमें असमानोंकी साझेदारीकी कल्पना की गई है, फिर वह चाहे शिथिल ढंगकी ही क्यों न हो। रियासतें कितनी असमान हैं, इसका जिस बुरे रूपमें प्रदर्शन किया जा रहा है उसके लिए मैं तैयार नहीं था। इसलिए भारत सरकार अधिनियममें जिस संघ-शासनकी कल्पना है, उसे मैं बिलकुल असम्भव मानता हूँ।

इस प्रकार अपने-आप यह परिणाम निकलता है कि जब तक अहिंसाको खाली नीतिके बजाय एक जीवित शक्ति, एक अलंघ्य सिद्धान्तके रूपमें स्वीकार नहीं किया

जायेगा, तब तक मुझ-जैसोंके लिए, जो अहिंसाके हामी हैं, वैधानिक या लोकतन्त्रीय शासन एक दूरका स्वप्न ही रहेगा। यद्यपि मैं विश्वव्यापी अहिंसाकी हिमायत करता हूँ, पर मेरा प्रयोग हिन्दुस्तान तक ही सीमित है। यहाँ उसे सफलता मिली, तो संसार बिना किसी प्रयत्नके उसे स्वीकार कर लेगा। मगर इसमें एक बड़ा 'लेकिन' मौजूद है। पर विघ्नोंकी मुझे चिन्ता नहीं। अन्धकार जितना ही अभेद्य होता है, मेरा विश्वास भी उतना ही प्रखर होता है।

सेगाँव, ६ फरवरी, १९३९

बापूके आशीर्वाद

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ११-२-१९३९

४३४. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

सेगाँव

६ फरवरी, १९३९

बा,

इसके साथ अकोलासे आये पत्र रख रहा हूँ। तू मजेमें होगी। कल दोनों लड़कियों का विवाह है। तेरी गैरहाजिरी सबको अखर रही है। कन्यादान मुझे करना है, और वह भी तेरी गैरहाजिरी में।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३१

४३५. पत्र : जानकीदेवी बजाजको

७ फरवरी, १९३९

चि० जानकीबहन,

तुम्हें चिन्ता नहीं करनी है। जो चिन्ता करता है वह योद्धा नहीं कहलाता। जयपुर जानेमें कुछ सार नहीं है। इसलिए यहीं बैठे धर्मपालन करना है। ईश्वरको जो करना होगा, वह होगा।

टेलीफोनसे आई हुई सूचनाएँ अपने पास रखता हूँ।^१ कुछ वक्तव्य निकालनेकी इच्छा है। मोटर नहीं रोकता।

१. ७ फरवरीको विजया पटेलका विवाह मनुभाई पंचोलीसे और शारदाबहन शाहका विवाह गोरधनदास चोखावालासे हुआ था।

२. देखिए “वक्तव्य : समाचारपत्रोंको”, ८-२-१९३९।

अपनी आजकी हालतमें तुम यहाँ किसलिए आना चाहती हो ?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०००) से ।

४३६. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेगाँव, वर्धा

७ फरवरी, १९३९

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा पत्र मिल गया । लीम्बड़ीमें जो-कुछ हो रहा है, वह भयानक है । परन्तु हमारे लिए आश्चर्यजनक नहीं है । ऐसी घटनाएँ तो होंगी; इससे भी भयानक होंगी । इसीसे प्रजाकी परीक्षा होगी । हमारा मार्ग सीधा है । इसपर कुछ लिखनेकी सोच रहा हूँ । चूँकि अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करते हुए सब-कुछ करता हूँ इसलिए सब चीजोंको जिस तरह मैं चाहता हूँ, उस तरह नहीं निपटा पाता । सुभाषबाबू जो कर रहे हैं, वह मुझे बहुत अच्छा लग रहा है । अच्छा हुआ, हम बच गये । राजेन्द्रबाबूके बारेमें देख लेना ।

जब भी मिलना हो मैं तैयार हूँ ।

मणिका पत्र आया है सो साथमें है । दोनों लड़कियोंके विवाह करके अभी लिखने बैठा हूँ । सादगीका कोई पार न था । किसीको नहीं बुलाया गया । गाँवके हरिजन वगैरह थे । बहुत अच्छा लगा ।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २३२-३

४३७. तार : चंद्रभाल जौहरीको^१

[७ फरवरी, १९३९ या उसके पश्चात्]

जमनालालजी जहाँ कहीं भी हैं सुरक्षित हैं ।^१ वक्तव्य प्रकाशित करनेका प्रयत्न कर रहा हूँ । मुझे सूचित करते रहो ।

[अंग्रेजीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २१३

१. यह चंद्रभाल जौहरीके ६ फरवरी, १९३९ के तारके उत्तरमें था जो ७ तारीखको गांधीजीको मिला था । जमनालाल बजाज ५ फरवरी, १९३९ को निरपतार हुए थे और जयपुर सरकारने यह नहीं बताया था कि वे कहाँ ले जाये जा रहे हैं । जौहरीने अपने तारमें इस बानपर चिन्ता व्यक्त की थी ।

२. जमनालालको भरतपुर रियासतमें ले जाकर ७ फरवरीको रिहा कर दिया गया था ।

४३८. तार : राजेन्द्रप्रसादको

[७ फरवरी, १९३९ या उसके पश्चात्]^१

रा[जेन्द्र प्रसाद]

सदाकत आश्रम

पटना

सम्मेलन नहीं बुलाया है। मेरे सामने ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं है। क्या आप सम्मेलन चाहते हैं ?

अंग्रेजीकी प्रतिसे : जमनालाल बजाज पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

४३९. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

[७ फरवरी, १९३९ के पश्चात्]^१

चि० बबुड़ी,

तेरे दो पत्र मिले। यदि तू पत्रके ऊपर 'निजी' आदि लिख दे, तो तेरा पत्र कोई नहीं पढ़ेगा। और मैं पढ़कर फाड़ डालूँगा।

तू घबरा मत। छुट्टी लेकर झटपट मेरे पास आ जा। यहाँ मन भरके बातें करेंगे। तेरा अनुभव कोई नया नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

यदि साथके पत्र का उपयोग करना चाहे तो कर लेना।

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००२१) से; सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला।

१. यह तथा पिछला शीर्षक चन्द्रलाल चौधरी से प्राप्त तारकी पीठपर लिखा गया था; देखिए पिछला शीर्षक।

२. स्पष्ट है कि यह पत्र शारदाका विवाह, जो ७ फरवरीको सम्पन्न हुआ था, होनेके कुछ दिन बाद लिखा गया था।

३. देखिए अगला शीर्षक।

४४०. पत्र : गोरधनदास चोखावालाको

सेगाँव, वर्धा
[७ फरवरी, १९३९ के पश्चात्]^१

चि० गोरधनदास,

शारदाको अटपटा लगता हो, तो अभी उसे मेरे पास भेज दो। कभी घरसे बाहर नहीं निकली, इसलिए सम्भव है उसे वहाँ सब नया-नया-सा लगता हो।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००८४) से; सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला।

४४१. तार : लीम्बड़ी प्रजा मण्डलको

[८ फरवरी, १९३९ के पूर्व]^१

इन घटनाओंमें यदि लोग अहिंसक और बहादुर बने रहें, उत्पीड़न तथा सम्पत्ति, शरीर और जीवनकी हानि सहन करते रहें तो विजय उनकी होगी। मुझे जानकारी देते रहिए।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, १०-२-१९३९

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. इस तारकी रिपोर्ट दिनांक ८ फरवरीके अन्तर्गत छपी थी।

४४२. तार : जेठानन्दको

वर्धा

८ फरवरी, १९३९

रायबहादुर जेठानन्द

डेराइस्माइलखाँ

दंगोंके लिए गहरा दुःख है । मैं लाचार हूँ, हालाँकि मुख्यमंत्रीको तार^१ भेज रहा हूँ । अखबारोंमें जैसा कहा गया है, क्या मुसलमान मारे गये हैं ।

गांधी

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल ।

४४३. तार : डॉ० खानसाहबको

वर्धा

८ फरवरी, १९३९

डॉ० खानसाहब

पेशावर

डेराके दंगोंके बारेमें क्या आप कोई प्रभावकारी कदम उठा रहे हैं ।

बापू

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल ।

१. देखिए अगला शीर्षक ।

४४४. पत्र : मोतीलाल रायका

सेगाँव, वर्धा
८ फरवरी, १९३९

प्रिय मोतीबाबू,

सीधे अ० भा० च० सं० को किस्त भेजना बेहतर होगा।

दीक्षान्त भाषण अभी नहीं मिला है।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (जी० एन० ११०५३) से।

४४५. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

सेगाँव
८ फरवरी, १९३९

बा,

तुझे बहुत कष्ट हो रहा है। जो भी अमुविधा हो, उसकी खबर जरूर देना। तू दुःख सहन करनेके लिए ही जन्मी है, इसलिए तेरी तकलीफोंकी बात सुनकर मुझे कोई अचम्भा नहीं होता। सरकारको तार तो मैंने किया है। तेरी तकलीफोंके बारेमें अखबारमें कुछ नहीं देना चाहता। भगवान तो वहाँ भी तेरे पास बैठे ही हैं; जो उन्हें करना होगा, सो करेंगे।

कानम मजेमें है। रातको तुझे याद करता है। बिल्कुल चिन्ता न करना। अमरुत्सलाम यहाँ है। वह कानमको सँभालती है।

चि० मणि, तू वहाँ है, यह कितनी अच्छी बात है!

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३१

४४६. पत्र : कृष्णचन्द्रको

८ फरवरी, १९३९

चि० कृष्णचन्द्र,

लंबा खतकी आशा न की जाय। ब्रह्मचारी वही है जो दूसरोंकी शादी निश्चेष्ट होकर कर सके। जिसको देखनेमें क्षोभ है वह न देखे। मैंने किसीको नहीं बुलाये थे।

अ० व० को दूरसे प्रणाम करो बाकी भूल जाओ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३१०) से। एस० जी० ७३ से भी।

४४७. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको^१

वर्धा

८ फरवरी, १९३९

सेठ जमनालाल बजाजके बारेमें निम्नांकित टेलीफोन रिपोर्ट मिली है।^१ सेठ जमनालालजी जब दुबारा कैद किये गये तब उनका पुत्र, उनका सचिव और एक नौकर उनके साथ थे।

सेठ जमनालालजीको जयपुरसे ५० मील दूर अजमेर रोड स्टेशनपर रोका गया और वहाँ उन्हें डाक बैगलेमें रखा गया। श्री यंग स्वयं सेठजीके पास गये और उनसे अपनी कारमें बैठनेके लिए कहा। सेठजीने यह कहकर मना कर दिया कि “आप मुझे जयपुर रियासतकी सीमासे बाहर करना चाहते हैं। मैं जयपुरमें दाखिल होना चाहता हूँ। मैं आपके साथ नहीं जाऊँगा।” इसपर श्री यंगने कहा, “हम आपको जयपुर ले जा रहे हैं। हमारे साथ आइए।”

१. वक्तव्य ९ फरवरीके हिन्दू में और बॉम्बे क्रॉनिकल में प्रकाशित हुआ था, और किञ्चित् परिवर्तित रूपमें “बारबेरस बिहेवियर” शीर्षकसे ११ फरवरीके हरिजन में भी प्रकाशित हुआ था। किन्तु बादमें ऐसा प्रगट हुआ कि जिस रिपोर्टके आधारपर गांधीजीने वक्तव्य दिया था, वह पूरी तरह सही नहीं थी। देखिए “वक्तव्य : समाचारपत्रोंको”, १२-२-१९३९।

२. रिपोर्ट हिन्दीमें थी; गांधीजीने इसका अनुबाद किया था; देखिए “वक्तव्य : समाचारपत्रोंको”, १२-२-१९३९।

सेठजीने उत्तर दिया, “मैं आपकी बातपर यकीन नहीं कर सकता।” तब श्री यंगने कहा, “मुझे आदेश हुआ है। आपको मेरे साथ आना ही होगा।” सेठजीने आदेश दिखानेके लिए कहा परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि आदेश श्री यंगके पास नहीं था। अन्तमें श्री यंगने सेठजीसे फिर कहा कि उन्हें जयपुर ले जाया जायेगा। “यदि हम आपको वहाँ नहीं ले जाते तो आप अखबारोंमें यह छपवा सकते हैं कि जयपुर ले जानेकी प्रतिज्ञा करके हम आपको दूसरी जगह ले गये।” सेठजी उनकी किसी भी बातका विश्वास करनेको तैयार नहीं थे। उन्होंने कहा, “मैं अपनी मर्जीसे आपके साथ नहीं जाऊँगा। यदि आप चाहें तो जबरदस्ती मुझे ले जायें।”

इस बातचीतमें लगभग एक घण्टा लग गया। अन्तमें पाँच जनोंने सेठजीको जबरदस्ती कारमें डाला और उन्हें ले गये। इस तरह ताकत इस्तेमाल किये जानेमें सेठजीको आँखके नीचे बायें गाल पर चोट आई। उन्हें अलवर रियासतमें ले जाया गया। यहाँ सेठजीने कहा कि “आप इस तरहकी हरकत नहीं कर सकते। आप मुझे किसी दूसरी रियासतमें नहीं छोड़ सकते। यदि आप ऐसा करेंगे तो मैं आपके खिलाफ मुकदमा चलाऊँगा।” इसपर श्री यंग सेठजी को फिर जयपुर रियासतमें ले आये परन्तु उनके वर्तमान ठौर-ठिकानेका हमें कोई पता नहीं है।

मैं यहाँ सिर्फ इतना ही कहूँगा कि यह व्यवहार बर्बरतापूर्ण है। शरीरकी पवित्रता, कानूनी प्रक्रिया और स्वतन्त्रताको ताकपर रख दिया गया है। एक अंग्रेज पुलिस महाधीक्षक इस तरह धोखेबाजी करे, और अपने कैदीको शारीरिक चोट पहुँचाए—इसी बातको मैं संगठित गुण्डागर्दी कहता हूँ। परन्तु मुझे मालूम है कि जमनालालजी का आत्मबल कभी नहीं टूटेगा। वह जयपुर रियासतमें दाखिल अवश्य होंगे—चाहे स्वतन्त्र नागरिकके रूपमें दाखिल हों या कैदीके रूपमें।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, ९-२-१९३९

४४८. तार : घनश्यामदास बिड़लाको

वधगिंज

९ फरवरी, १९३९

घनश्यामदास बिड़ला

लकी

कलकत्ता

मैं समझता हूँ कि सबसे अच्छा यही होगा कि जमनालालजीके मनको जो ठीक लगे, उन्हें करने दिया जाये। नोटिस भेजना मैं अच्छा नहीं समझता। यदि अनिवार्य हो तो हम उन्हें कष्ट उठाने दें।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ७८०४) से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला।

४४९. तार : जवाहरलाल नेहरूको

वधगिंज

९ फरवरी, १९३९

जवाहरलाल नेहरू

आनन्द भवन

इलाहाबाद

सारी बातोंको देखते हुए मैं समझता हूँ कि बुद्धिमत्ता इसीमें होगी कि लुधियाना सम्मेलन कांग्रेस [का अधिवेशन] होने तक स्थगित रखा जाये। मुख्य-मुख्य कार्यकर्ता विभिन्न रियासतोंमें चल रहे संघर्षमें लगे हुए हैं।

बापू

अंग्रेजीसे : गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३९; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

४५०. पत्र : ना० २० मलकानीको

सेगाँव, वर्धा
९ फरवरी, १९३९

प्रिय मलकानी,

मैंने तुम्हारा पत्र समझ लिया।^१ मैं इससे सन्तुष्ट हूँ। किशोरलालके लौटते ही मैं तुम्हें २०० रु० भेज दूँगा। तुम ३०० रु०के चेकसे काम चालू रखो।
सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३२) से।

४५१. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

सेगाँव, वर्धा
९ फरवरी, १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने जो विश्लेषण किया है उसे मैं समझता हूँ। सुभाषने तार दिया है कि वह वर्धा आना चाहते हैं। देखें क्या होता है। बेशक मैं जल्दबाजीमें कोई निर्णय नहीं करूँगा। मुझे खुशी है कि सरूप^२ जल्दी आ रही है। मुझे आशा है, सेगाँवका शान्त वातावरण उसके लिए अनुकूल रहेगा।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीसे : गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३९; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

१. देखिए “पत्र : ना० २० मलकानीको”, पृ० ३४३-४ और ३४९-५० भी।

२. विजयलक्ष्मी पंडित।

४५२. पत्र : हरेकृष्ण मेहताबको

सेगाँव, वर्धा
९ फरवरी, १९३९

प्रिय मेहताब,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम इसी १६ तारीखको आ सकते हो।^१

तुम्हारा,
बापू

मूल अंग्रेजीसे : एच० के० मेहताब पेपर्स; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय
तथा पुस्तकालय।

४५३. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

सेगाँव, वर्धा
९ फरवरी, १९३९

चि० बबुड़ी,

विवाह एक धार्मिक संस्कार है, इसलिए वह भोगके लिए नहीं, बल्कि संयमके लिए है। हमारे यहाँ चार आश्रम हैं, उनमें से गृहस्थाश्रम दूसरा है। गृहस्थ-जीवनमें वैभवके लिए स्थान नहीं है, लेकिन सेवाके लिए बहुत स्थान है, और सेवा तथा सन्तति-जनन साथ-साथ नहीं चल सकते। फिर भी दाम्पत्य जीवनमें सन्तानके लिए स्थान तो है ही। लेकिन सन्तानोत्पत्तिकी जब उत्कट इच्छा हो, तभी पति-पत्नी संयोग कर सकते हैं। यह संयोग विचारपूर्वक किया जाना चाहिए, आकस्मिक उत्तेजनाके वशीभूत होकर नहीं। इस धर्मको स्वीकार कर लिया जाये, तो पति-पत्नी एक बिल्लौने पर नहीं सोयेंगे। अनेक प्रकारके हाव-भाव नहीं करेंगे। ऐसी कोई बात नहीं करेंगे, जिससे संयोग करनेकी ओर मन दौड़े। इस जमानेमें यह धर्म कठिन है, किन्तु इसका पालन करनेकी शक्ति भगवान तुम दोनोंको दे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०००४) से; सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला।

१. हरेकृष्ण मेहताब उड़ीसाकी देशी रियासतोंके मामले पर चर्चा करनेके लिए गांधीजीसे मिलना चाहते थे।

४५४. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

सेगाँव

९ फरवरी, १९३९

बा,

तेरा पत्र मिला। तू बीमार रहती है, यह मुझे अच्छा नहीं लगता। लेकिन अब तो हिम्मतसे काम लेना। सुविधाएँ तो मिल ही जायेंगी, और न भी मिलें तो क्या? मणि ठीक गा न सकती हो, तो भी तुझे 'रामायण' सुनाये। राम और सीताके दुःखके आगे हमारा दुःख किस गिनतीमें है? तू चिन्तित मत होना। फिलहाल तो मैंने लड़कियोंसे सेवा कराना छोड़ दिया है। तू चिन्ता मत करना। देखूंगा क्या करना चाहिए। सुशीला तो मेरी सेवा करती ही है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३१-२

४५५. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको'

वर्धा

९ फरवरी, १९३९

हालमें राजकोट और जयपुर पर मैंने जो कई लेख लिखे हैं, उनके सम्बन्धमें आलोचकोंने मुझे मिथ्याचार और हिंसा का दोषी ठहराया है। ऐसे आलोचकोंको जवाब देना मेरा फर्ज है। इस किस्मके आरोप पहले भी, या वास्तवमें जबसे मैंने सार्वजनिक जीवनमें प्रवेश किया है तभीसे, मुझपर लगाये गये हैं। मगर मैं यह सहर्ष कह सकता हूँ कि बादमें मेरे अधिकतर आलोचकों को यह कबूल करना पड़ा कि मैं असत्यपूर्ण और उत्तेजना फैलानेवाली भाषा इस्तेमाल करनेका दोषी नहीं था, और मेरे वक्तव्योंका आधार उनमें मेरा विश्वास होता था, तथा द्वेषकी भावना उनमें कभी नहीं होती थी।

१. यह वक्तव्य डॉ॰ क्राँनिकल और हिन्दू में १० फरवरीको तथा १८ फरवरीके "नॉट गिल्टी" शीर्षकके अन्तर्गत हरिजन में भी छपा था।

आज भी ठीक वही बात है। मैं अपनी जिम्मेदारी भली-भाँति समझता हूँ। मैं जानता हूँ कि मेरे अनेक देशवासी मेरे वक्तव्योंमें असन्दिग्ध श्रद्धा रखते हैं। मेरे वक्तव्योंके समर्थनमें मुझसे प्रमाण माँगे गये हैं। मैंने प्रमाण पेश भी कर दिये हैं।

सरदार पटेलने राजकोटके बारेमें जो वक्तव्य^१ दिया है, उसमें रेजिडेंटके उन शब्दोंको भी उन्होंने उद्धृत कर दिया है, जो उसने कांग्रेस और उनके बारेमें कहे थे। रेजिडेंट, ठाकुर साहब और उनके सलाहकारोंके बीच, जिनमें सर पैट्रिक कैडेल भी थे, जो बातचीत हुई थी, उसका विवरण मेरे पास है। वह इतना लम्बा है कि प्रकाशित नहीं किया जा सकता; लेकिन अगर जरूरत समझी गई तो उसे मौका आनेपर प्रकाशित कर दिया जायेगा।

संगठित गुण्डाशाहीके सम्बन्धमें तथ्य प्रकाशित कर दिये गये हैं।^१ मैं मानता हूँ कि इसमें रेजिडेंटका हाथ है, क्योंकि उसीने रियासतमें एजेंसीकी पुलिसको भेजा है। अतः उसके एजेन्टोंकी कारगुजारियोंकी जिम्मेदारी उसपर होनी ही चाहिए।

इसी तरह, जयपुरमें जो-कुछ हो रहा है, उसकी जिम्मेदारी जयपुरके ब्रिटिश प्रधानमन्त्री पर है। सेठ जमनालाल बजाज जब भी अपनी जन्मभूमिमें प्रवेश करनेके अपने अधिकारका प्रयोग करते हैं, तभी उन्हें फुटबालकी तरह ठोकर मारकर जयपुरसे बाहर निकाल दिया जाता है। यह निश्चय ही निहायत अनुचित कार्रवाई है।

अगर मैं बुरे कामको बुरा बताऊँ तो मुझे हिंसक भाषा प्रयोग करनेका दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए। हिंसाका दोषी तो मैं तब होऊँगा, जब मैं काठियावाड़के रेजिडेंट या जयपुरके प्रधानमन्त्रीके खिलाफ अपने मनमें कोई द्वेषभावना रखूँ। मैं नहीं जानता, लेकिन सम्भव है, कि वे बहुत ही आदरणीय व्यक्ति हों, पर उनका आदरणीय होना राजकोट या जयपुरकी प्रजाके लिए किस कामका? सत्य और अहिंसाका पुजारी होनेके नाते, मेरा काम तो यह है कि मैं अन्यायकर्ताओंके प्रति द्वेष रखे बिना बगैर किसी भयके जो नग्न सत्य हो, उसे जाहिर कर दूँ। मेरी अहिंसाको कटु सत्यपर मुलम्मा चढ़ानेकी जरूरत नहीं। इसलिए मुझपर यह इल्जाम नहीं लगाया जाना चाहिए कि मैं गोरोंसे द्वेष करता हूँ।

नग्न सत्यको छिपाकर या उसपर मुलम्मा चढ़ाकर मैं लोगोंको हिंसाके पथसे हटानेमें सफल नहीं हो सकता। हाँ, यह कहकर या इससे भी अधिक खुद अपने आचरणके द्वारा यह दिखाकर कि घोर-से-घोर अन्याय करनेवालोंका भी भला चाहना न केवल उचित है, बल्कि लाभकारी भी है, मैं प्रजाको हिंसा-पथसे हटानेकी जरूर आशा करता हूँ।

नरेशोंकी रक्षा करना सर्वोच्च सत्ताका फर्ज है, मगर उनके अधीन रहनेवाली प्रजाकी रक्षा करना भी निश्चय ही उसका उतना ही आवश्यक फर्ज है। मुझे लगता है कि सर्वोच्च सत्ताका यह भी फर्ज है कि वह उस समय नरेशोंकी सहायता करना

१. देखिए परिशिष्ट १।

२. देखिए पृ० ४०५।

छोड़ दे जब यह साबित हो जाये कि अमुक राजाने अपनी प्रजाके साथ विश्वासघात किया है, जैसाकि राजकोटमें हुआ है, या जब यह साबित हो जाये कि अमुक राजा अपनी प्रजाको साधारण नागरिक-अधिकार देनेके लिए भी तैयार नहीं है और उसके एक नागरिकको इधर-से-उधर भटकाया जा रहा है, और अदालतमें भी उसे पैर नहीं रखने दिया जाता, जैसाकि जयपुरमें हो रहा है।

हिन्दुस्तानमें रियासतोंकी घटनाओंपर मैं जितना ही अधिक विचार करता हूँ, मुझे तो ऐसा दिखाई देता है कि अगर सर्वोच्च सत्ता इन दुःखद घटनाओंको असहाय दृष्टिसे देखती रही, तो इस अभागे देशका भविष्य अन्धकारमय ही समझना चाहिए। कारण, राजकोट और जयपुरकी घटनाओंसे हमें पता चल सकता है कि दूसरे राज्योंमें भी क्या-क्या होनेवाला है। महाराजा बीकानेरने नरेशोंको सलाह तो यह ठीक ही दी है कि उन्हें मिलकर काम करना चाहिए,^१ पर नेतृत्व उन्होंने गलत दिशामें दिया।

लताड़ने और प्यार करनेकी नीतिसे नरेशोंको कुछ हासिल नहीं होगा। इससे तो कटुता और संघर्ष ही पैदा हुआ है। सम्भव है रियासतोंकी प्रजा, नरेशोंकी तरह, मिलकर काम न कर सके, पर नरेश लोग अन्य रियासतोंकी प्रजा या ब्रिटिश भारतके लोगोंके साथ विदेशियोंका-सा व्यवहार नहीं कर सकेंगे। आज तमाम नरेश मिल भी जायें, तब भी प्रजामें इतनी जागृति पैदा हो चुकी है कि उनके द्वारा किये जानेवाले संयुक्त दबावका भी वह डटकर मुकाबला कर लेगी।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, १०-२-१९३९

४५६. तार : जमनालाल बजाजको

[९ फरवरी, १९३९ या उसके पश्चात्]^१

जमनालालजी
सैनिक, आगरा

आपका तार मिला। मेरे बयानमें निश्चित संशोधन करके भेजिए। तब संशोधित रूप प्रकाशित करायेंगे। मेरा स्पष्ट मत है कि आपको एक छोटे-से दलके साथ बिना सूचना दिये अगर सम्भव हो तो पैदल सरहद पार करनी चाहिए। जानकीदेवीको वर्धा नहीं छोड़ना चाहिए। वह शरीरसे कमजोर हैं और कमलाका प्रसूति-काल निकट है, इसलिए उनका वर्धा छोड़ना खतरनाक है। अगर वह

१. देखिए “लताड़ और प्यार”, पृ० ३९०-४।

२. यह तार जमनालाल बजाजके ९ फरवरी, १९३९ के तारके उत्तरमें भेजा गया था। देखिए “वक्तव्य : समाचारपत्रोंको”, १२-२-१९३९।

गई तो संघर्षमें जरूर भाग लेंगी और [उसके] समाप्त होनेके पहले कभी वापस न लौट सकेंगी। मेरा पक्का मत है कि अभी उनके लिए ऐसा करनेका समय नहीं आया है। वह यदि स्वस्थ होतीं और वर्धा स्वतन्त्रतासे छोड़ सकतीं तो भी मैं उनके वर्धा छोड़नेको प्रोत्साहन न देता बल्कि उन्हें भविष्यके लिए रोककर रखता जबकि संघर्ष पूरे जोरपर होता।

[अंग्रेजीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २१४

४५७. पत्र : एफ० मेरी बारको

सेगाँव

११ फरवरी, १९३९

चि० मेरी,

तुम हमेशा दूसरोंका ध्यान रखती हो। लेकिन यदि तुम आ जाती तो तुम्हारे आनेसे मुझे कोई परेशानी न होती। हाँ, यदि मैं कांग्रेसकी बैठकमें भाग लेनेके लिए गया तो तुम वहाँ मेरे साथ ही ठहरोगी।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६०७५) से। सी० डब्ल्यू० ३४०५ से भी;
सौजन्य : एफ० मेरी बार।

४५८. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

सेगाँव, वर्धा

११ फरवरी, १९३९

तुम्हारा तार मिला और पत्र भी। सम्मेलन और कार्य-समितिके बारेमें तुम्हारी जो स्थिति है, वह मैं समझता हूँ। किसी ध्येयके लिए काम करनेवाले लोगोंका विचार किये बिना मैं उस ध्येयके बारेमें नहीं सोच सकता। मुलतवी करनेकी बात, मैंने बलवन्तराय मेहतासे जो-कुछ सुना था, उसके आधारपर लिखी थी। वे काठियावाड़के संघर्षमें फँसे हैं। अचिन्तराम उनके बिना कुछ कर नहीं सकते थे। इसीलिए मैंने तुम्हें तार दिया। लुधियानाकी स्थितिकी मुझे कोई जानकारी नहीं है।

सरूपके लिए अफसोस है। मैं तो यह आशा कर रहा था कि वह कुछ दिन मेरे साथ बितायेगी।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीसे : गांधी-नेहरू पेपर्स, १९३९; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय ।

४५९. पत्र : एल० एम० पाटिलको

सेगाँव, वर्धा

११ फरवरी, १९३९

प्रिय पाटिल,

तुम्हारा पत्र मिला। किसी कम्पनीके डाइरेक्टर भारतीय हैं और कम्पनीके प्रबन्धमें उनकी चलती है, और वह कम्पनी भी पूरी तरह भारतके हितमें है, तो उस कम्पनीको मैं स्वदेशी कहूँगा, भले ही उसकी सारी पूँजी विदेशी ही क्यों न हो। मसलन, यदि एक हाथ-कताई कम्पनीका पूरा नियन्त्रण मेरे हाथमें हो, लेकिन मैं अपने अधीन कुशल गोरे कर्मचारी रखूँ और ब्याज या बिना ब्याजकी यूरोपीय पूँजी भी उसमें लगाऊँ तो मेरा दावा होगा कि वह कम्पनी पूरी तरह स्वदेशी है।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल ।

४६०. पत्र : च० राजगोपालाचारीको

सेगाँव, वर्धा

११ फरवरी, १९३९

प्रिय सी० आर०,

मैं चाहूँगा कि विरोधी आलोचनाके बावजूद रोजगारके बारेमें आप जो-कुछ कर रहे हैं, करते रहें। हमें किसीकी नकल करनेकी जरूरत नहीं है।

हिन्दी-विरोधी प्रचारके पीछे यह महिला कौन है ?

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २०७३) से।

४६१. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

सेगाँव, वर्धा

११ फरवरी, १९३९

चि० कान्ति,

कहा जा सकता है कि मैं सही अर्थमें बीमार हूँ। प्रभा तुझे लिखेगी। सरस्वती के पत्र अगर मैं रामचन्द्रनको नहीं दिखा सकता, तब तो उसे यहाँ बुलाना मुश्किल होगा। जो अपना दुःख छिपाता है, उसे कैसे बचाया जा सकता है? मैंने यों तो सरस्वतीको भेजनेके लिए रामचन्द्रनको लिखा है। लेकिन यह बात और है, तथा उसे गाली-गलौज, मार-पीटसे बचानेके लिए बुलाना और है। इसलिए तुझे मुझे पूरी छुट देनी चाहिए। जो हो, तू अपने मनकी शान्ति मत खो देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७३५८) से; सौजन्य : कान्तिलाल गांधी।

४६२. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

सेगाँव

११ फरवरी, १९३९

बा,

तेरे स्थानान्तरणकी बात अखबारमें पढ़ी। जहाँ भी रखें, निश्चिन्त होकर रहना। चिन्ता मत करना। भगवान तो, तू जहाँ होगी, वहाँ तेरे साथ है ही। डॉक्टर मेरी परीक्षा करने आये हैं। आराम करनेको कहते हैं। कर तो रहा हूँ। यहाँसे तुझे पत्र रोज भेजे गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३२

४६३. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेगाँव, वर्धा
११ फरवरी, १९३९

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारे भेजे हुए कागजात मुझे मिल गये।

मणिको वा से अलग रखनेकी बातपर विश्वास नहीं होता।

२२ तारीखको कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठक यहाँ हो तो बारडोलीका क्या होगा? जमनालाल लिखते हैं कि २२ तारीखको बैठक यहाँ है। तुम अभी यहीं रहो तो कैसा रहे?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

साथका पत्र पहुँचा देना।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २३३

४६४. पत्र : कृष्णचन्द्रको

११ फरवरी, १९३९

चि० कृष्णचंद्र,

जबतक समभाव पैदा नहीं हुआ है तब तक मैंने कहा है वही मर्यादा उचित है। इसका यह अर्थ हरगीज नहीं है कि उसकी आवश्यक सेवा भी नहीं हो सकती है या कारणवशात् बोला भी नहीं जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४३११) से। एस० जी० ७४ से भी।

४६५. हैदराबाद

हैदराबाद राज्य-कांग्रेसके लोग बड़े बेचैन हो रहे हैं। चूँकि वे मेरी सलाहपर चल रहे हैं, इसलिए उनमें से कुछ मेरे पास आये और कहने लगे : “आपके और दूसरे नेताओंके कहनेपर हमने सत्याग्रह स्थगित किया है। आपने यह आशा बैधाई थी कि हम सत्याग्रह स्थगित कर देंगे, तो बहुत मुमकिन है कि कैदियोंको रिहा कर दिया जायेगा और राज्य-कांग्रेसको मान्यता दे दी जायेगी। लेकिन दोमें से कोई भी बात नहीं हुई। जबकि हमारे साथी रियासतकी जेलोंमें पड़े मुसीबतें उठा रहे हैं, हम कब तक चुपचाप बाहर बैठे रहें? आपकी रायमें हमें क्या करना चाहिए ? ”

चूँकि इन मित्रोंको अपने बहुत-से साथियोंको जवाब देना पड़ता है, इसलिए मैंने इन्हें जो जवाब दिया, उसका सार यहाँ दे देना ठीक होगा। मैंने कहा :

आपके साथ मेरी पूरी हमदर्दी है। मैं आपकी जगह होता तो मैं भी ऐसा ही महसूस करता। लेकिन सत्याग्रह कोई मामूली चीज नहीं है। वह तो जीवनका एक तरीका है। उसके लिए अनुशासनकी जरूरत है। वह अपार धीरज और ज्यादा-से-ज्यादा कष्ट सहनेकी क्षमता माँगता है। सविनय अवज्ञा तो सत्याग्रहका महज एक अंग है, जिसे स्थगित करना ही होगा, फिर चाहे साथियोंकी गिरफ्तारी, जेल-जीवनकी कठिनाइयाँ और इससे भी बदतर कष्ट क्यों न उठाने पड़ें। और यह सब उन्हें शालीनताके साथ, प्रसन्नतापूर्वक और जिनके कारण उन्हें कष्ट सहने पड़ें, उनके प्रति कोई दुर्भाव रखे बिना बर्दाश्त करना चाहिए। यह भी याद रखिए कि जेल चले जानेवालोंकी बनिस्बत जेलके बाहर रहनेवाले सच्चे सत्याग्रहीको ज्यादा मानसिक कष्ट बर्दाश्त करना पड़ता है। कारण, जेल जानेवाले तो फिलहाल अपना काम पूरा कर चुकते हैं और उनकी फिक्र खत्म हो जाती है। उनका तात्कालिक उद्देश्य तो बस इतनेसे पूरा हो जाता है कि वे आदर्श कैदीकी तरह रहें और जो भी तकलीफें उठानी पड़ें उन्हें प्रसन्नताके साथ बर्दाश्त करें। इसके विरुद्ध बाहर रहने-वालोंको लड़ाईकी व्यवस्थाका बोझ उठाना पड़ता है, रोज-रोजकी योजनाएँ बनानी पड़ती हैं और ऊपरसे जो आदेश आयें, उनका पालन करना पड़ता है।

मुझे तो आपसे यही कहना है कि अपने आन्दोलनको अभी आप स्थगित ही रखें। इसकी वजह बिल्कुल साफ और निश्चित है, क्योंकि दो और संस्थाएँ भी सत्याग्रह कर रही हैं, जिनके उद्देश्य चाहे कितने ही अच्छे हों फिर भी आपसे बिल्कुल भिन्न हैं। आर्यसमाजका सत्याग्रह बिल्कुल धार्मिक कोटिका है, क्योंकि वह सत्याग्रह अपने धर्मकी रक्षाके लिए किया जा रहा है। हिन्दू महासभा भी, मेरा खयाल है, आर्यसमाजका समर्थन कर रही है। इसलिए इस आन्दोलनने साम्प्रदायिक रूप अस्तित्वार कर लिया है। आप यदि सत्याग्रहको फिरसे शुरू करें तो आपके लिए

अपने राष्ट्रवादी रूपको बनाये रखना बड़ा मुश्किल होगा। आपको अनावश्यक सन्देहका शिकार बनना पड़ेगा, और फिर आपके तरीके भी शायद दूसरोंके जैसे न हों। ऐसी हालतमें अपने उद्देश्यपर आगे बढ़े बगैर उल्टे आप एक अटपटी हालत पैदा कर देंगे।

परिस्थितिको सावधानीसे सँभालनेकी जरूरत है। मेरा विश्वास है कि आपके आत्मसंयमसे आपके प्रति जो सन्देह है वह काफी हदतक मिट जायेगा और उस हद तक आप अपने ध्येयकी ओर निश्चित रूपसे आगे बढ़ेंगे। इस बीच मैं आपको यही आश्वासन दे सकता हूँ कि मित्रोंके द्वारा जो-कुछ हो सकता है, वह किया जा रहा है और बराबर किया जाता रहेगा। मेरी दलीलें सुननेके बाद, आपको जो ठीक लगे वह करें। मेरी सलाह अगर आपके दिल और दिमागको अच्छी न लगती हो तो आप उसे अवश्य अस्वीकार कर दें। लेकिन अगर आप उसे स्वीकार करें तो याद रखिए कि प्रत्येक सदस्यसे, जैसाकि मैंने आपको बताया है, पूरी तरह रचनात्मक कार्यक्रममें लगनेकी आशा की जायेगी।

सेगाँव, १२ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १८-२-१९३९

४६६. पत्र : लॉर्ड लिनलिथगोको

सेगाँव, वर्धा, म० प्र०

१२ फरवरी, १९३९

प्रिय लॉर्ड लिनलिथगो,

बारडोलीसे पुनर्प्रेषित किया गया इसी माहकी ५ तारीखका आपका पत्र मुझे मिल गया है।

आपने अपनी स्थिति विस्तारपूर्वक साफ-साफ और ईमानदारीके साथ स्पष्ट करनेका जो कष्ट किया, उसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ। बड़े सोच-विचारके बाद मुझे लगा कि आपने जो लेख वापस भेजा है उसे प्रकाशित कर देना मेरा कर्तव्य है। श्री चुडगर सर बीकम सेंट जॉन के बारेमें जात-बूझकर या अनजानमें गलतबयानीके दोषी हों,^१ तब भी सत्यका निश्चय तो पत्र-व्यवहारको प्रकाशित कर देनेसे ही हो सकता है। चूँकि श्री चुडगरकी रिपोर्टके सही होनेका मुझे यकीन है इसीलिए मैंने सोचा कि उसको जनताके सामने प्रकट न करना गलत होगा। इस प्रसंगमें मैं यह भी कह दूँ कि मैंने जयपुरके दीवानसे कहा था कि यदि वे श्री चुडगरके विवरणको अस्वीकार करते हैं तो वे अपना विवरण दें, परन्तु उन्होंने वैसा नहीं किया।^२ लेकिन जयपुर, राजकोट और उड़ीसामें जो दुःखद घटनाएँ घट रही हैं, उनको

१. देखिए “जयपुर”, पृ० ३८६-९।

२. देखिए पृ० ३४९ और ३७०।

देखते हुए अब इस सवालका कोई महत्व नहीं रह गया है कि इस पत्र-व्यवहारको प्रकाशित करना बुद्धिमानी होगी अथवा नहीं।

यद्यपि आपने अपने पत्रमें इसके गलत होनेकी सम्भावना व्यक्त की है, तो भी इन स्थानोंपर जो-कुछ हो रहा है उससे मेरा वह विश्वास दृढ़ हुआ है जो मैंने आपको लिखे अपने गत मासकी २६ तारीखके पत्रमें अभिव्यक्त किया है।

यदि आप समझते हैं कि आपसे मिलनेपर आप मेरे मनकी इस अशान्तिको दूर कर सकेंगे और दिखा सकेंगे कि मेरा विश्वास गलत है तो मैं खुशीसे दिल्ली दौड़ा आऊंगा। हालाँकि मेरे डॉक्टर मित्रोंने मुझे हिदायत दी है कि अपने शरीरको बिल्कुल जवाब देनेसे बचानेके लिए मुझे कुछ समयतक पूर्ण विश्राम करना चाहिए। किन्तु यदि मुझे मेरी गलती बताई जा सके या मैं आपको विश्वास दिला सकूँ कि आपकी ओरसे कार्रवाईमें देरी करना खतरनाक हो सकता है तो मैं सहर्ष अपना स्वास्थ्य संकटमें डालनेके लिए तैयार हूँ।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजीकी प्रति (सी० डब्ल्यू० १०३८८) से; सौजन्य : प्यारेलाल।

४६७. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

सेगाँव

१२ फरवरी, १९३९

बा,

तेरा पत्र मिला। तुझे सारे समाचार तो दिये ही जाते हैं। चिन्ता बिल्कुल मत करना। एनीमा तुझे मिल गया है, यह मालूम हुआ। दवा यहाँसे कौन-सी भेजी जाये? अब तो वहाँ डॉक्टर आता है। कोई जरूरत मालूम पड़े, तो उसकी दवा ले लेना। यहाँसे पत्र तो तुझे रोज लिखा ही जायेगा। खूब हिम्मतसे काम लेना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३२

४६८. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेगाँव, वर्धा

१२ फरवरी, १९३९

भाई वल्लभभाई,

चुडगर मेरे लिए जो लेख लिखनेवाले थे उसका क्या हुआ ? वह मुझे जल्दी चाहिए। वाइसरायका लम्बा पत्र आया है। उसका मैंने जो जवाब दिया है, उसकी नकल मैं तुम्हारे पास भेजूंगा।

साथकी अधिसूचनामें उल्लिखित 'प्रिंसेज प्रोटेक्शन ऐक्ट' की एक प्रति मुझे भेज देना।

मणिको पहले ले क्यों गये और फिर बा के पास वापस क्यों ले आये, यह बात कुछ समझमें नहीं आई। डॉक्टर कौन है ? नर्स कौन है ?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २३४

४६९. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको^२

वर्धा

१२ फरवरी, १९३९

सेठ जमनालालने जयपुर रियासतसे उनके दुबारा निकाल दिये जानेपर समाचारपत्रोंको दिये गये मेरे वक्तव्यको पढ़कर मुझे निम्नलिखित तार भेजा है :

इसी माहकी ९ तारीखको मैंने देखा कि श्री यंगके बारेमें मैंने जो विवरण दिया है, उसके बारेमें आपका वक्तव्य टेलीफोन द्वारा भेजे गये सन्देशमें कुछ गड़बड़ होनेके कारण गलत हो गया है। सही विवरण ८ और ९ तारीखके 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में निकला था।^१ आशा है कि आप आवश्यक कार्रवाई करेंगे।

१. देखिए पृ० ४५१-२।

२. यह वक्तव्य १८-२-१९३९ के हरिजन में "माई अपॉलोजी" शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था; यही वक्तव्य १३-२-१९३९ के बॉम्बे क्रॉनिकल में तथा दूसरे समाचारपत्रों में भी प्रकाशित हुआ था।

३. यह दामोदरदास द्वारा दिये वक्तव्यके रूपमें ट्रिव्यून, ८-२-१९३९ में भी प्रकाशित हुआ था और उससे यह स्पष्ट होता था कि यंगने जमनालाल बजाजको ऐसा कोई आश्वासन नहीं दिया था कि उन्हें जयपुर राज्यके बाहर नहीं ले जाया जायेगा।

तब तक मैंने सेठजी द्वारा उल्लिखित 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में प्रकाशित विवरण नहीं देखा था। अब मैंने इन दोनों तारीखोंके अंक देखे हैं और मैं पाता हूँ कि मैंने समाचारपत्रोंको दिये गये अपने वक्तव्यमें श्री यंगके प्रति अन्याय किया है। मैंने उन पर यह आरोप लगाया था कि उन्होंने सेठजीसे धोखा किया है। मैंने यह आरोप टेलीफोन द्वारा प्राप्त उस सन्देशके आधारपर लगाया था जो वर्धामें उनके पुत्रको मिला था। अपने वक्तव्यमें मैंने इस सन्देशका अक्षरशः अनुवाद दिया था। सेठजीके पुत्रको टेलीफोन द्वारा प्राप्त सन्देशके बारेमें रत्तीभर भी सन्देह नहीं था। परन्तु अनजान ही मैं मुझसे जो गलती हो गई उसकी सफाई न तो यह कहकर दी जा सकती है कि उन्होंने सन्देशका बिल्कुल सही विवरण दिया था और न ही यह कहकर दी जा सकती है कि मैंने तो सन्देशका हूबहू अनुवाद किया था। इसलिए मैं श्री यंगसे बिना शर्त क्षमा-याचना करता हूँ और आगेसे मैं टेलीफोनके सन्देशोंका उपयोग करनेमें बहुत अधिक सावधानी बरतूँगा।

अब मुझे पता चला है कि न केवल श्री यंगने कोई धोखेबाजी नहीं की, बल्कि उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि उच्च अधिकारियोंके आदेशका पालन करते हुए वे एक दुःखद कर्तव्य निभा रहे थे। और उस कर्तव्यका पालन करते हुए उन्होंने उन परिस्थितियोंमें यथासम्भव सावधानी और सौजन्यसे काम लिया।

इस भूल-सुधारके बाद मैं यह कहूँगा कि 'हिन्दुस्तान टाइम्स' की रिपोर्टसे, जिसका सेठजीने समर्थन किया है, पता चलता है कि उनके प्रति किया गया दुर्व्यवहार टेलीफोनके सन्देशमें जो-कुछ कहा गया था, उससे भी बदतर था। राजपूतानेकी सर्दीमें रातकी वह सारी यात्रा अनावश्यक यन्त्रणा थी। जयपुरमें शान्ति बनाये रखनेके लिए उनका बाहर निकाला जाना यदि आवश्यक था, तो भी रातकी यात्रा और ताकतका इस्तेमाल टाला जा सकता था।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १२-२-१९३९

४७०. अखबारोंमें असत्य

देशी रियासतके एक अधिकारी लिखते हैं:

कांग्रेसकी सामान्य गतिविधियोंके बारेमें और विशेषकर वह रियासतोंमें जो-कुछ कर रही है, उसके बारेमें 'हरिजन' में लिखे आपके कई लेख मैंने पढ़े। इनमें से एक लेख कांग्रेसियोंमें फैले भ्रष्टाचार और कम-से-कम भावार्थकी दृष्टिसे उन अवांछनीय प्रवृत्तियोंके बारेमें है जो उस भावनाके विपरीत है जिसे आपने कांग्रेस-कार्यकर्ताओंमें सामूहिक स्तरपर भरनेकी कोशिश की है।

उसे पढ़कर मुझे ऐसा लगा कि इस बातकी ओर आपका ध्यान आकर्षित करूँ कि कुछ अखबार ऐसे हैं जो सत्यकी हत्या करके आपके दिलमें जो

उद्देश्य है, उसको चोट पहुँचा रहे हैं। गाली-गलौजपर ही ये जिन्दा रहते हैं और जो निरा झूठ उनमें प्रकाशित होता है, उसके लिए वे तथाकथित 'कांग्रेस कार्यकर्ताओंपर' ही निर्भर करते हैं।

जहाँ तक रियासतोंकी टीकाका सवाल है, असंदिग्ध प्रमाणोंपर आधार रखनेवाली वाजिब आलोचना अच्छी हो सकती है और वह सहायक भी होगी। बहरहाल इस बातको आप मानेंगे कि केवल सचाई ही प्रकाशित होनी चाहिए।

लेकिन, दरअसल, हो क्या रहा है कि कुछ लोग, जो ऐसा मानते हैं कि उनके साथ उस रियासतने जिसमें वे किसी समय रहते थे, सद्-व्यवहार नहीं किया, उस रियासतमें जाते हैं और जब उनकी आपतिजनक प्रवृत्तियोंके कारण वहाँकी सरकार उन्हें रियासतसे बाहर जानेके लिए बाध्य करती है तो उससे बदला लेनेकी कोशिश करते हैं और इसके लिए कांग्रेसमें शामिल होकर वे समझते हैं कि अब उनकी स्थिति बहुत मजबूत हो गई है। जिन अखबारोंमें वे रियासतोंके खिलाफ लिखते हैं वे अखबार इन निन्दात्मक लेखोंपर पनपते हैं और स्वयं इन लोगोंको अपने अन्दर इकट्ठा हुआ जहर उगलनेका एक वांछित साधन मिल जाता है। इसका दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम यह होता है कि देशी भाषाओंके ये पत्र अज्ञानी जनताको भड़कानेमें कितने ही कामयाब क्यों न हो जायें मगर जिम्मेदार लोगोंपर इनकी निन्दाओंका कोई असर नहीं पड़ता।

यह दुःखका विषय है कि कुछ ऐसी बातें जिन्हें रियासतोंके शासनमें अपने कर्तव्योंके प्रति जागरूकता पैदा करनेकी शुद्ध भावनासे प्रकाशमें लाया जा सकता है, वे जानकारीके अभावमें कभी प्रकाशित ही नहीं होतीं। जो-कुछ प्रकाशित होता है वह या तो व्यर्थकी बातोंको खूब बढ़ा-चढ़ाकर लिखा हुआ होता है, या जैसाकि अकसर होता है, निरी कल्पनासे काम लेकर बिल्कुल झूठी बातें लिखी जाती हैं।

आपकी मौजूदा नीति यह मालूम पड़ती है कि जहाँ लोगोंमें अपनी व्यवस्था स्वयं करनेकी इच्छा हो वहाँ उस उद्देश्यकी सिद्धिके लिए उनकी मदद करना कांग्रेसका फर्ज है। मैं यह सोचनेकी हिम्मत करता हूँ कि हिन्दुस्तान-भरमें उत्तरदायी शासनके आदर्शकी प्राप्तिके लिए लोगोंके सन्तोषको असन्तोषमें बदल देनेकी आपकी नीति नहीं है।

विशेषतः मेरे खयालमें आपकी नीति सत्यके प्रचार और प्रसार तथा असत्यके विरुद्ध सतत युद्धकी है। इसी विश्वासके आधारपर, मैं आपको यह सुझानेकी हिम्मत करता हूँ कि आप अगर 'हरिजन' में एक-दो लेख कांग्रेस-कार्यकर्ताओंके ऊपर ही निर्भर रहनेवाले अखबारों और उन कार्यकर्ताओंकी जिम्मेदारीके बारेमें लिखेंगे, तो उससे कांग्रेस-आन्दोलनको कुछ विनाशक

कीटाणुओंसे मुक्त कर सकेंगे तथा इस प्रकार उसे दलित-पीड़ित जनताके उद्धार तथा देशके सर्वोच्च ध्येयकी सेवा, इन दोनों कामोंके लिए अधिक प्रभावशाली भी बना सकेंगे।

पत्र-लेखककी इस बातसे सहमत होनेमें तो मुझे कोई कठिनाई नहीं है कि जो अखबार झूठी या अतिरंजित बातें लिखते हैं, वे जिस उद्देश्यके समर्थनका दावा करते हैं, उसको नुकसान ही पहुँचाते हैं। यह भी मैं मानता हूँ कि कितने ही अखबारोंमें इतना असत्य मिलता है कि इस सम्बन्धमें कुछ करना जरूरी मालूम होता है। लेकिन मेरा अनुभव यह है कि जो अखबार ऐसी नीतिसे ही अपना गुजारा करते हैं उनकी कितनी ही सार्वजनिक टीका क्यों न की जाये, उनकी नीतिपर कोई असर नहीं पड़ेगा।

मगर पत्र-लेखकको तथा रियासतोंसे सम्बन्ध रखनेवाले इन जैसे दूसरे लोगोंको मैं बतलाना चाहता हूँ कि अपनेको सुरक्षित समझनेके भ्रममें पड़कर अगर राज्याधिकारी असत्यका निराकरण या वस्तुस्थितिका स्पष्टीकरण करना मुनासिब न समझेंगे, तो झूठी बातोंपर विश्वास करनेके लिए जनताको हरगिज दोष नहीं दिया जा सकता। फिर कभी-कभी जब वे सफाई देनेका कष्ट करते हैं, तो उनकी सफाई अखबारोंके झूठसे भी ज्यादा झूठी होती है। इस सम्बन्धमें तालचैरका उदाहरण ताजा है। वहाँसे भागे हुए शरणार्थियोंका जो अत्यन्त प्रभावोत्पादक चित्र 'स्टेट्समैन' में निकला था उस तकको वहाँके शासकने झूठा बतलाया। इस बातपर 'स्टेट्समैन' के सम्पादकने उनकी जो भर्त्सना की वह ठीक ही है। मेरे पास ठक्कर बापाका भेजा हुआ तालचैरका एक बुलेटिन है, जिसपर मुझे हँसी आती है और रोना भी। उसमें दी हुई बातोंसे इनकार करना शर्मनाक झूठ है। मेवाड़के बारेमें इस अंकमें मैं एक हैरतमें डालनेवाली खबर^१ प्रकाशित कर रहा हूँ।

मैं चाहूँगा कि या तो इस खबरका प्रामाणिक रूपसे प्रतिवाद किया जाये, या अगर पुलिसने उसे दी गई हिदायतोंकी परवाह न कर मनमानी की हो, तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाये। लेकिन अखबारोंके झूठको किसी प्रकार दरगुजर करनेके लिए मैं यह नहीं लिख रहा हूँ। मेरी तो यह निश्चित धारणा है कि यदि अखबार अपने प्रत्येक शब्दको अच्छी तरह तोलकर ही छापें तो इससे रियासतोंकी अथवा अन्य स्थानोंकी बुराइयाँ जल्दी दूर की जा सकेंगी।

सेगाँव, १३ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १८-२-१९३९

४७१. त्रावणकोर

त्रावणकोरके बारेमें यों ऊपरसे तो मैं चुप मालूम होता हूँ, पर कार्यकर्ता यह विश्वास रखें कि मैं उसके सम्बन्धमें लापरवाही नहीं बरतता रहा हूँ। मौन कभी-कभी वाणीसे अधिक प्रभावकारी होता है। मैं इतना ही कह सकता हूँ कि मेरा मौन सोद्देश्य रहा है। मुझे इस बातका दुःख है कि वहाँकी हालतें अच्छी नहीं रही हैं। मुझे आशा थी कि राज्य-कांग्रेसने दीवानके विरुद्ध जो आरोप लगाये थे, उनके वापस ले लिये जानेसे रास्ता साफ हो जायेगा, और उत्तरदायी शासनका आन्दोलन त्रावणकोरमें निर्विघ्न रीतिसे चलने दिया जायेगा।^१ लेकिन हम अन्यत्र जो बुलेटिन^२ छाप रहे हैं उससे पता चलता है कि त्रावणकोर-निवासियोंकी शनिकी दशा अभी समाप्त नहीं हुई है। त्रावणकोर विधान-सभाके १९ प्रमुख सदस्योंके सदस्यतासे वंचित कर दिये जानेके पीछे द्वेषभाव दिखाई देता है।^३ सदस्योंने क्या कोई अप्रतिष्ठापूर्ण काम किया है? जहाँ तक मैं जानता हूँ, उन्होंने ऐसा कोई काम नहीं किया।

मेरे पास एक पत्र है, जिसमें श्रीमती अक्कम्मा चेरियन नामक एक राज-नीतिक बन्दिनीके साथ किये गये दुर्व्यवहारका वर्णन किया गया है। इन बहनने अदालतके सामने जो-कुछ कहा है, अगर वह सच है, तो उनके साथ किया गया बरताव सचमुच बहुत नीचतापूर्ण था। वे एक सुशिक्षित, सुसंस्कृत महिला हैं। वे एक स्कूलकी प्रधान अध्यापिका थीं। स्कूलसे इस्तीफा देकर वे आजादीकी लड़ाईमें शरीक हुईं। त्रावणकोर राज्य तो इस बातका अभिमान करता है कि उसके महाराजा बड़े प्रबुद्ध हैं और उतनी ही प्रबुद्ध महाराजाकी माता महारानी साहिबा हैं तथा वहाँके दीवान बहुत अनुभवी हैं। लेकिन ऐसे उन्नत राज्यमें भी असम्य दमन-नीतिके द्वारा स्वतन्त्रताका गला घोंटा जा रहा है, यह सोचकर हृदयको बड़ा आघात पहुँचता है।

लेकिन एक अन्य पत्रमें कहा गया है कि त्रावणकोरमें यह दमन हिन्दू-धर्मके नामपर और एक हिन्दू रियासतको बचानेके लिए किया जा रहा है। उस पत्रके अनुसार इरादा ईसाइयोंको पूरी तरह दबा देनेका है, क्योंकि वे ही इस स्वतन्त्रता-आन्दोलनमें प्रमुख हिस्सा ले रहे हैं।

१. देखिए “बातचीत : त्रावणकोर राज्य-कांग्रेस शिष्टमण्डलके साथ”, पृ० १४६-९ और “त्रावणकोर”, पृ० ३१७-९।

२. जी० रामचन्द्रन द्वारा लिखा “त्रावणकोर बुलेटिन”।

३. ये सदस्य राज्य-कांग्रेससे सम्बन्धित थे और इनकी सदस्यता इस आधार पर समाप्त कर दी गई थी कि उन्हें फौजदारी कानून संशोधन विनियमके अधीन सजा हुई थी।

आजके जमानेमें हिन्दू राज्य और मुसलमानी राज्यकी बात सचमुच बहुत पुरानी हो गई है। और इसके लिए कसौटी क्या है? क्या कश्मीर इसलिए हिन्दू राज्य है कि वहाँका नरेश एक हिन्दू है, यद्यपि अधिकांश आबादी मुसलमानोंकी है? या हैदराबाद इसलिए मुसलमान राज्य हो गया कि यद्यपि वहाँ अधिकांश आबादी हिन्दुओंकी है, लेकिन एक मुसलमान शासक उनका भाग्य-विधाता है? मैं तो इस तरहकी बातोंको हमारी राष्ट्रीय भावनाके लिए लांछन-रूप समझता हूँ। हिन्दुस्तान क्या इसलिए एक ईसाई राज्य है, कि उसका भाग्य-विधाता एक ईसाई सम्राट है? राज्य चाहे कोई भी कर रहा हो, फिर भी भारत तो भारतीय राज्य ही है। इसी तरह देशी राज्य भी केवल भारतीय ही हैं, फिर भले ही उनके शासक किसी भी कौमके हों। और वर्तमान नरेशगण और उनके उत्तराधिकारी जाग्रत प्रजाका सद्भाव प्राप्त करके ही राज्य कर सकेंगे। प्रजामें जो जागृति आई है वह स्थायी है। दिन-प्रति-दिन उसकी रफ्तार बढ़ती ही जायेगी। नरेशगण और उनके सलाहकार चाहे थोड़े दिनोंके लिए अपनी प्रजाके मनोबलको दबा देनेमें सफल हो जायें, लेकिन वे उसको समाप्त करनेमें कदापि सफल नहीं होंगे। इसमें उनके सफल होनेका अर्थ है भारतीय जनताके मनोबलको समाप्त कर देनेमें सफल होना। भारतमें क्या कोई इतना अदूरदर्शी है, जो स्वतन्त्रताका पदरव न सुन रहा हो? और क्या इस बातकी कल्पना भी की जा सकती है कि स्वतन्त्र भारत अपनी सीमाके अन्दर किसी भी जगह, चाहे वह जगह कितनी ही बड़ी हो या कितनी ही छोटी और मामूली हो, एक क्षणके लिए भी दमन-नीति सहन करेगा। मेरी कल्पनाके स्वतन्त्र भारतमें देशी राज्योंके लिए गुंजाइश है, लेकिन इस शर्तपर कि उनके राजाओंकी स्थिति संवैधानिक न्यासियोंकी-सी होगी, जैसीकि औंधके राजाकी है।^१ अंग्रेजोंके लिए भी गुंजाइश हो सकती है, लेकिन वे प्रजाके सेवकके बतौर रहेंगे, बतौर मालिकके कदापि नहीं। इसलिए देशी राजाओंके लिए स्वतन्त्र भारतमें बने रहनेका एकमात्र रास्ता यही है कि वे समयके स्वरको पहचानें, उसको सिर-माथे लें, और उसीके अनुसार आचरण करें। त्रावणकोरके हिन्दू राजा, हिन्दू राजमाता तथा हिन्दू दीवान ऐसा आचरण करें जिससे वे इस बातपर गर्व कर सकें कि उनके मनमें कभी भी अपने ईसाई प्रजाजनोंका कोई भय नहीं रहा। मान लीजिए कि त्रावणकोरमें उत्तरदायी शासन हो जाता है, तो ईसाई, हिन्दू या मुसलमान क्या करेंगे? चाहे जो भी लोग विधायक हों, उन्हें मतदाताओंकी हरएक बातका जवाब देना पड़ेगा। इसमें भयके लिए गुंजाइश ही कहाँ है, कोई रुकावट कहाँ है? लेकिन मौजूदा दमन-नीति भय और आशंकाओंसे भरी हुई है और उसमें बाधाएँ भी अनेक हैं।

सेगाँव, १३ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १८-२-१९३९

४७२. शिष्टाचारका सवाल

एक मित्रका कहना है कि राजकोटके ठाकुरसाहब और सर पैट्रिक कैंडेलके बीच हुए गुप्त पत्र-व्यवहार और सपरिषद् ठाकुरसाहबके साथ होनेवाली रेजिडेंटकी बातचीत के उद्धरण प्रकाशित^१ करके मैंने शायद मर्यादाका उल्लंघन किया है। लेकिन मुझे ऐसा बिलकुल महसूस नहीं होता। मैं दावा करता हूँ कि जहाँ मर्यादाकी कोई बात हो वहाँ मैं बड़ा भावुक हूँ। यहाँ तक कि मेरी सबसे अधिक बुराई करने-वालोंने भी मुझे इस बातका श्रेय दिया है कि अपने प्रति लोगोंके विश्वासको मैं सदा निबाहता हूँ और मुझे बताई गई गुप्त बातोंको प्रकट न करनेकी मुझमें काफी क्षमता है। लेकिन इसे मैंने अपना फर्ज कभी नहीं समझा कि मैं वादाखिलाफियोंको जाहिर न करूँ, या जिन अपराधोंका मुझे साधारण सूत्रोंसे पता लगे उन्हें छिपा लूँ। हाँ, जो बातें मुझपर विश्वास रखकर कही जायें उनको मैं जरूर गुप्त रखता हूँ, जैसेकि रौलट ऐक्ट आन्दोलनके वक्त अहमदाबादमें हुए दुर्भाग्यपूर्ण दंगेमें अदालतसे सजा की धमकी मिलनेपर भी मैंने अपराधियोंके नाम नहीं बताये थे। लेकिन इस मामलेमें तो मर्यादाका कोई सवाल ही नहीं है। सत्यकी खातिर और लोकहितके लिए उस पत्र-व्यवहार और उन उद्धरणोंको प्रकाशित करना पड़ा है। जो कागजात प्रकाशित किये गये, वे साधारण रूपमें सरदारको मिले थे और उन्हें उन लोगोंने दिया था, जिनके कि पास कानूनन वे थे। इसलिए, जहाँ तक मैं समझ सकता हूँ, उनको प्राप्त करनेमें कोई बेईमानी नहीं हुई और, जैसाकि मैंने कहा है, उनको प्रकाशित करनेमें भी कोई गलती या बेईमानी नहीं हुई है। उसे प्रकाशित किये बगैर जनताका पक्ष सिद्ध नहीं किया जा सकता था।

- सेगांव, १३ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १८-२-१९३९

४७३. मेवाड़

एक पत्र-लेखकने केवल कामकी बातोंको बहुत ही व्यवस्थित ढंगसे पेश करते हुए मुझे निम्नलिखित विवरण भेजा है :^१

पहली घटना : घटनाकी तिथि : १४ दिसम्बर, १९३८। घटना-स्थल : देवली कस्बेके ब्रिटिश इलाकेके रास्तेका एक पुल, जहाँसे मेवाड़का इलाका कोई १२ गजके फासलेपर है।

. . . प्रजामण्डलके एक कार्यकर्ता श्री मथुराप्रसाद वैद्य पर, जो . . . प्रजामण्डलकी ओरसे देवलीमें प्रचार-साहित्य बाँट रहे थे, . . . मेवाड़के ऊँचा थानेके दो सिपाहियोंने अचानक हमला किया। उनमेंसे एकने उनके पास जो साहित्य था उसे छीन लिया . . .। दूसरेने उन्हें जमीनपर पटक दिया और फिर दोनों उन्हें अर्धचेतनावस्थामें घसीटते हुए नजदीकके मेवाड़ी इलाकेमें, जो वहाँसे केवल लगभग १२ गज दूर है, ले गये . . .। वैद्य मथुराप्रसादको ऊँचा थाने ले जाते हुए उन सिपाहियोंने बुरी तरह पीटा। अब उन्हें नौ महीनेकी कैदकी सजा दे दी गई है।

दूसरी घटना : घटनाकी तारीख : २ फरवरी, १९३९। घटना-स्थल : ब्रिटिश इलाकेमें देवली कस्बेकी सीमापर।

. . . शामके साढ़े छः बजेके करीब कस्बेकी सीमापर मेवाड़-पुलिसके १५ आदमियोंने मेवाड़ प्रजामण्डलके सचिव श्री माणिकलाल वर्मा और उनके चार अन्य साथियोंपर एकाएक लाठियोंसे हमला किया। पाँचों आदमी बुरी तरह घायल हो गये। इसके बाद वे माणिकलालजी को काँटों और झाड़ियोंमें बड़ी निर्दयताके साथ घसीटते हुए मेवाड़के इलाकेमें ले गये, जो वहाँसे कम-से-कम कुछ सौ गज के फासलेपर तो था ही। इस खींचातानीके बीच देवलीकी पुलिस को खबर की गई, लेकिन उसपर कोई ध्यान नहीं दिया गया। और थानेका दीवान तो काफी तलाश करनेपर भी नहीं मिला, मानो सारी कार्रवाई पूर्व-योजनाके अनुसार की गई थी। इसके बाद माणिकलालजी को गिरफ्तार करके मेवाड़के ऊँचा थानेमें ले गये।

पत्र-लेखकने आगे लिखा है :

श्री माणिकलालजी बिजौलियाके हैं। पिछले बीस सालसे वे किसानोंकी सेवामें लगे हुए हैं। एक साल पहले प्रजामण्डलकी स्थापना उन्होंने ही की थी।

१. यहाँ केवल कुछ अंश ही दिये हैं।

लेकिन कुछ ही दिनोंके अन्दर उसे गैर-कानूनी करार दे दिया गया। इसलिए कुछ महीने पहले उन्होंने सविनय अवज्ञा शुरू की। यह विवरण में आपको इसलिए भेज रहा हूँ कि रियासतोंके मामलेमें आपने खुले आम लिखना शुरू कर दिया है। क्या आप हम कार्यकर्ताओंको भी यह बतलायेंगे कि ऐसी परिस्थितियोंमें हमें क्या करना चाहिए?

यह खबर यदि सच हो तो बड़ी अजीब है। यह समझमें नहीं आता कि पुलिसने इन कार्यकर्ताओंको मेवाड़के इलाकेमें ही क्यों नहीं गिरफ्तार किया। या कि बात ऐसी थी कि ये कार्यकर्ता मेवाड़के इलाकेमें अपना काम करनेसे बच रहे थे? जो भी हो, ये गिरफ्तारियाँ मुझे गैरकानूनी मालूम पड़ती हैं। घसीटना तो हमला ही हुआ। इस बारेमें मैं सिर्फ यही सलाह दे सकता हूँ कि यह तो कानूनी कार्रवाई करनेके लायक मामला है। अतः प्रजामण्डलको यह कार्रवाई करनी चाहिए।

लेकिन रियासतोंके सत्याग्रहियोंको यह याद रखना चाहिए कि असली लड़ाई तो अभी आनेवाली है। छोटी-बड़ी सभी रियासतें एक ही नीतिपर चल रही मालूम पड़ती हैं। ब्रिटिश भारतमें सत्याग्रह-आन्दोलनके समय अंग्रेज जो उपाय काममें लाये थे, उन्हींकी वे नकल कर रही हैं, और हो सकता है, त्रास फैलानेमें वे ब्रिटिश हुकूमतसे भी आगे निकल जायें। वे समझती हैं कि उनके लिए लोकमतसे डरनेकी तो कोई बात है ही नहीं, क्योंकि रियासतोंमें सामान्यतः कोई संगठित लोकमत होता ही नहीं। लेकिन सच्चे सत्याग्रहियोंका मार्ग तो किसी भी तरहका त्रास नहीं रोक सकता।

सेगाँव, १३ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १८-२-१९३९

४७४. तार : घनश्यामदास बिड़लाको

वर्धा

१३ फरवरी, १९३९

घनश्यामदासजी

लकी

कलकत्ता

गिल्डर [और] जीवराजने कल जाँच की। परन्तु डॉ० राय^१ को जब चाहें तब आनेका हक है।

बापू

अंग्रेजीकी प्रति (सी० डब्ल्यू० ७८०५) से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला।

४७५. पत्र : मीराबहनको

[१३ फरवरी, १९३९]^१

चि० मीरा,

तुम्हारे सब पत्र अच्छे और कलापूर्ण हैं। मुलाकातका तुम्हारा वर्णन चित्रवत् है। हमें आशा रखनी चाहिए कि इसका फल निकलेगा।

आशा है, रुपया तुम्हें समयपर मिल गया होगा।

मैं यथाशक्ति जल्दी आनेका प्रयत्न करूँगा।

बाकी सुशीला लिखेगी।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४२८) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००२३ से भी।

४७६. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

१३ फरवरी, १९३९

बा,

अब तो तुझे अकेले रहनेका भी खासा अनुभव हो गया। लेकिन मैं भूलता हूँ। तू अकेली थी ही कहाँ? रामजी तो हमेशा तेरे साथ हैं ही न? और जहाँ वे हों, वहाँ और दूसरे हों या न हों, क्या फर्क पड़ता है? लेकिन अब तो मृदु और मणि, दो हो गई। खुश रहना। वे दोनों भी लिखें।

तुम सबको,

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३२

१. डाक की मुहर से।

४७७. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सेगाँव, वर्धा
१३ फरवरी, १९३९

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारे पत्र मिल गये। गरासिये ऐसे कहाँ हैं कि अपना माना हुआ 'गरास'¹ झट छोड़ देनेके लिए तैयार हो जायें? हम चुपचाप सहन कर लेंगे, तो सब ठीक हो जायेगा।

बा का मामला जल्दी निपट गया। मणि चतुर लड़की है। कब क्या करना है इसकी कला उसने हस्तगत कर ली है।² अपना नाम चरितार्थ कर रही है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २३४

४७८. पत्र : हीरालाल शर्माको

सेगाँव, वर्धा
१३ फरवरी, १९३९

चि० शर्मा,

तुमको तार भेजा था सो मिला था? यहाँ तो उत्तर मिला था "यहाँ अनेक शर्मा हैं। तार ठिकाने पहुँचाया नहीं जा सका।"³

एक ही बातका उत्तर देना है ना? नैसर्गिक उपचारका इतना गहिरा अर्थ न किया जाय। ऐसा अर्थ करनेका उसीको अधिकार है जो उसकी प्रसिद्ध अर्थको अमलमें ला सका हो। हम सब अहं ब्रह्मास्मि थोड़े कह सकते हैं? जेल जानेका तुमारा समय आवेगा तब भगवान रास्ता खुल्ला कर देगा। यों भी मैं जो कल्पना कर रहा हूँ वह जेल जानेकी नहीं है। इसलिए अपने कर्ममें रत रहो।

बापूके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० २७८-९ के बीच प्रकाशित प्रतिकृतिसे।

१. राजवंशियोंको राज्यकी ओर से दी जानेवाली जमीन।

२. कस्तूरबासे अलग कर दिये जानेके बाद मणिबहनने तब तक भोजन ग्रहण नहीं किया था जब तक उन्हें फिरसे कस्तूरबाके पास नहीं ले जाया गया।

३. मूलमें ये दो वाक्य अंग्रेजीमें हैं।

४७९. बातचीत : डॉ० चेस्टरमैनके साथ'

सेगाँव

१३ फरवरी, १९३९

. . . उन्होंने कहा कि भारतीय समस्याओंकी पेचीदगीको देखकर मेरा दिमाग चक्कर खाने लगता है। स्वभावतः चिकित्सा-सम्बन्धी समस्याएँ मेरे मनमें सबसे पहले आती हैं। जब मैंने सुना कि प्रतिवर्ष दो लाख स्त्रियाँ प्रसूता होनेपर मर जाती हैं, एक लाख लोग चेचकसे तथा ३६ लाख तरह-तरहके बुखारोंसे मर जाते हैं, १० लाख कोढ़ी हैं और ६ लाख अन्धे हैं, तो निरोधक तथा उपचारात्मक, दोनों तरहके चिकित्सा-कार्यकी विशालताका अनुमान लगाकर मैं सचमुच डर गया। उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि पता नहीं आप यह जानते हैं या नहीं कि भारतमें मिशनके २६६ अस्पताल और ५०० औषधालय हैं, जिनमें २५४ यूरोपीय और ३६० भारतीय डॉक्टर तथा ३०० यूरोपीय और ४०० भारतीय नर्स काम करती हैं। इन अस्पतालोंमें प्रतिवर्ष २० लाख बीमार देखे जाते हैं और ५० लाखका इलाज होता है। सारे देशमें तपेदिककी चिकित्साका आधा और कोढ़ियोंकी चिकित्साका सारा काम मिशनके हाथों होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि धर्म-परिवर्तनका काम भी होता है और इसके बारेमें मैं आपका मत जानता हूँ, तथापि मैं आपका ध्यान इस तथ्यकी ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि मिशनोंका तीन-चौथाई चिकित्सा-कार्य उन क्षेत्रोंमें होता है जहाँ धार्मिक शिक्षाका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। . . . इसलिए मैं इस बारेमें आपकी राय जानना चाहता हूँ कि यह काम सफलतापूर्वक आगे कैसे बढ़ाया जा सकता है और हम लोग आपकी सहायता और सहयोगपर कहाँ तक निर्भर रह सकते हैं।

उत्तरमें गांधीजीने कहा कि इसका उत्तर कठिन तो है लेकिन साथ ही सरल भी है।

चिकित्साका सही कार्य क्या है, इस विषयमें मेरे विचार कुछ विचित्र-से हैं। सालों पहले मैंने ये विचार सशक्त शब्दोंमें व्यक्त किये थे। और तबसे लेकर अबतकके लम्बे अनुभवके दौरान मेरे उन विचारोंके सारमें कोई परिवर्तन नहीं आया है। परन्तु इन विचारोंकी आपके समक्ष व्याख्या करनेकी अब कोई आवश्यकता नहीं है। मैंने मिशनके

१. अमृत कौर द्वारा लिखित “ए गुड समेरिटन” से उद्धृत। डॉ० चेस्टरमैन इंग्लिश बैप्टिस्ट मिशनके चिकित्सकीय मन्त्री थे और ताम्बरम्में होनेवाली इन्टरनेशनल मिशनरी कान्फ्रेंसमें भाग लेने तथा मिशन द्वारा संचालित अनेक अस्पताल देखनेके लिए भारत आये थे।

बहुत-से अस्पताल देखे हैं। कोढ़ियों के बीच मिशनरियों का अद्भुत कार्य देखा है। इस काम में उनका एकाधिकार माना जा सकता है। कोढ़ियों की सेवा उनकी अपनी विशिष्टता है; कारण, इस काम को करने के लिए और कोई सामने नहीं आया है। कटक का 'लेपर होम' (कोढ़ी-सेवा भवन) मैंने देखा है। मैंने पुरुलिया के कोढ़ियों के अस्पताल में काफी वक्त गुजारा है और वहाँ का काम देखकर प्रभावित हुआ हूँ। मैंने इलाहाबाद में श्रीमती हिगिनबॉटम का काम देखा है, कई दूसरी जगहों का भी देखा है; क्योंकि कोढ़ियों के लिए बने आश्रमों में जाना मुझे बहुत भाता है। लेकिन चिकित्सा के क्षेत्र में मिशनरियों के काम के लिए मेरे मन में प्रशंसा का जो भाव है, उसके बावजूद मैं उनके काम में दोष भी देखता रहा हूँ और मेरे मन में आलोचना का भाव भी रहा है। मैंने यह महसूस किया है कि इन सज्जन और सद्भाव-सम्पन्न मिशनरियों ने इस विशाल प्रश्न की बाहरी परत को भी नहीं छुआ है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कोढ़ियों, अन्धों, तपेदिक के रोगियों और दूसरे रोगियों के लिए काफी काम किया गया है, परन्तु यह सहायता इस विशाल देश के करोड़ों रोगपीड़ितों तक नहीं पहुँच पाई है। यह चिकित्सा-सहायता मुख्य रूप से उन लोगों को पहुँची है जो शहरों में या शहरों के पास रहते हैं जबकि भारत की बहुसंख्यक ग्रामीण जनता को अछूता छोड़ दिया गया है। ग्रामीणों की चिकित्सा-सम्बन्धी जरूरतों को देखकर प्रान्तीय सरकारें, यहाँ तक कि कांग्रेस सरकारें भी भयभीत हो उठी हैं। वे किकर्तव्यविमूढ़ हो गई हैं और विभिन्न प्रयोगों के बावजूद अभी कुछ नहीं किया गया है। इसलिए यदि मुझे मिशनरियों को सलाह देने के लिए कहा जाये तो मैं उनसे कहूँगा कि वे सारी पश्चिमी चिकित्सा-पद्धति को भारत में प्रतिरोपित न करें। हम इसके लिए साधन नहीं जुटा सकते। देशी जड़ी-बूटियों और औषधियों के अध्ययन से बहुत लाभ उठाया जा सकता है परन्तु इस दिशा में लगभग कुछ भी कार्य नहीं किया गया है। हमारे मैदानों और वनों में जाने और इन औषधियों को खोज करने की बात किसी को सूझी ही नहीं। परिणामस्वरूप बहुत-सारी देशी प्रतिभा, क्योंकि इसे मौलिक और वैज्ञानिक नहीं माना जाता, व्यर्थ जा रही है। मैं आपको आज ही की एक घटना बताता हूँ। आपको शायद मालूम होगा कि कुछ दिनों से मेरे एक पैर में थोड़ी सूजन है। डॉक्टर डर रहे हैं। उन्होंने इसे इस बात का लक्षण समझा है कि दिल और गुर्दे क्षीण होने लगे हैं। मेरे सहयोगियों में से एक — आप उन्हें लगभग निरक्षर ही कह सकते हैं — बहुत चिन्तित हो उठे जैसा कि मेरे बारे में सभी हो जाते हैं। उन्होंने मुझे बताया कि वह पिछली रात बिल्कुल सो नहीं सके। आज सुबह वह एक हरा पत्ता लाये और उन्होंने मुझसे कहा कि उनके पिताजी को भी ऐसी ही तकलीफ थी और इससे वह ठीक हो गये थे। उन्होंने मुझसे प्रार्थना की कि मैं भी इसका प्रयोग करके देखूँ। उनका प्रस्ताव मानने में मुझे कोई संकोच नहीं हुआ। लेकिन यदि किसी उच्च-शिक्षा प्राप्त डॉक्टर ने मुझे हैरानी में डालने वाला कोई लम्बा-चौड़ा नुस्खा बताया होता तो उसके प्रति मेरी प्रतिक्रिया ठीक वैसी ही न होती। इसलिए मैं ऐसा मानता हूँ कि ग्रामीण जनकों को इन साधारण तरीकों से राहत

मिल सकती है। मेरा यह कहना नहीं है कि यह पत्नी इस तकलीफको दूर कर देगी। परन्तु ऐसी कोई संस्था होनी चाहिए जो निश्चयपूर्वक यह बता सके कि ये जड़ी-बूटियाँ क्या हैं और उनके गुण क्या हैं।

गांधीजी ने स्पष्ट किया कि उनके मनमें पश्चिमी चिकित्सा या डॉक्टरोंके खिलाफ कोई पूर्वग्रह नहीं है। उन्होंने कहा कि मैंने अपने एक दक्षिण आफ्रिकी मित्र, श्री कैलेनबैकके लिए, जो यहाँ मलेरियासे बीमार पड़े हुए हैं, आज ही ग्लूकोज मँगवाया है। वह कुनैन लेनेसे इनकार कर रहे हैं यद्यपि मेरा इस औषधिमें पूरा विश्वास है।

यहाँ डॉ० चेस्टरमैनने बीचमें कहा कि कुनैन तो देशी औषधि ही है। गांधीजी ने उत्तर दिया कि देशी औषधि होते हुए भी इसपर एकाधिकार है और इसलिए यह बहुत महँगी और ग्रामीणजनोकी पहुँचसे बिल्कुल बाहर है।

इसलिए मैं चाहूँगा कि मिशनरी गाँवमें दवाफरोशोंका काम करें और जहाँ तक सम्भव हो वे अपने-आपको देशी दवाइयों तक सीमित रखें। यह महत्वपूर्ण अनुसन्धान-कार्य करनेके लिए उनको सरकारकी ओरसे सोनेके तमगे या खिताब नहीं मिलेंगे। परन्तु मेरी रायमें उन्हें ईसा मसीहकी ओरसे खिताब जरूर मिलेगा जो कहीं ज्यादा मूल्यवान होगा।

आगे बोलते हुए गांधीजी ने कहा कि बहुत समयसे वह महसूस करते रहे हैं कि भारतमें चिकित्सा-संकायको ग्रामीण कार्यकर्ताओंके लिए प्रशिक्षणका छोटा-सा कार्यक्रम तैयार करना चाहिए, और कई साल पहले उन्होंने बम्बईके सर्जन-जनरल हूटनसे यह बात कही भी थी। गाँवोंके स्कूलोंके शिक्षकोंका इस उद्देश्यके लिए उपयोग किया जा सकता है। वे स्वास्थ्यके विषयमें सारे गाँवको अपने अधिकार-क्षेत्रमें मानें और वहाँके निवासियोंको स्वास्थ्य-विज्ञान और रोग-निवारणके सीधे-सादे नियम बतायें। साधारण रोगोंके लिए आम दवाइयाँ बाँटनेके लिए स्कूलोंका औषधालयोंके रूपमें उपयोग किया जा सकता है। इस सन्दर्भमें उन्होंने अपने ही जीवनसे एक उदाहरण दिया। दक्षिण आफ्रिकामें उन्होंने छः हफ्तोंका उपयोगी प्रथमोपचार-प्रशिक्षण प्राप्त किया था और उसके बाद ही उन्हें बोअर युद्धके दौरान घायलोंकी सेवाके लिए अपना एक दल बनाने और उसका नेतृत्व करनेकी अनुमति मिली थी।

... इसके बाद डॉक्टर चेस्टरमैनने गांधीजी से अस्पतालोंकी इमारतोंके ऊपर होनेवाले खर्च और उनके लम्बे-चौड़े साज-सामानके बारेमें उनकी राय पूछी। गांधीजीने उत्तर देते हुए कहा कि वह कभी इसके पक्षमें नहीं रहे हैं और उनकी प्रायः यह कोशिश रही है कि लोगोंको अनावश्यक चीजोंपर खर्च करनेसे रोका जाये। जब तात्कालिक जरूरतोंको पूरा करनेके लिए पैसेकी कमी है तब ऐसा करना अनुचित ही कहा जायेगा। बड़े-बड़े अस्पताल कुल मिलाकर गरीब आदमीकी मदद नहीं करते, क्योंकि वे उसे इस बातकी कोई शिक्षा नहीं देते कि अस्पताल छोड़नेके बाद उसे अपने स्वास्थ्यका ध्यान कैसे रखना है।

डॉ० चेस्टरमैन : चिकित्सा-क्षेत्रमें कार्य करनेवाले मिशनरी लोग चिकित्सा-व्यवसायका नैतिक स्तर ऊँचा उठानेमें क्या योगदान दे सकते हैं?

गांधीजी : वे सहायता कर सकते हैं, परन्तु मुझे ऐसा नहीं लगता कि वे मेरे मानदण्डके अनुसार ज्यादा-कुछ कर सकते हैं। आप मुझे अनुदार मान सकते हैं परन्तु जब तक यह आशंका मनमें है कि चिकित्सा-कार्य करनेवाले मिशनरी अपने सारे रोगियों और सारे सहयोगियोंसे यह अपेक्षा करते हैं कि वे धर्म-परिवर्तन करके ईसाई बन जायें, तब तक सच्चा भाईचारा आनेमें अड़चन बनी रहेगी। इसके अलावा एक और अड़चन यह है कि वे शासक-वर्गके लोग हैं और इसी कारण वे अलग-थलग रहते हैं। मिशनरियोंने “जैसा देश, वैसा भेष” वाली कहावत नहीं सीखी है। वे अपने दैनिक जीवनमें हर बातमें पश्चिमका ही अनुकरण करते हैं और यह भूल जाते हैं कि वस्त्र तथा भोजन और जीवन-चर्या जलवायु और आसपासके वातावरणके अनुरूप होनी चाहिए और इसलिए उनमें तदनुसार परिवर्तन करना जरूरी है। दिल जीतनेके लिए झुकना होता है, जो उन्होंने नहीं किया है। फलतः पारस्परिक अविश्वासकी खाई बनी हुई है और चिकित्साके क्षेत्रमें काम करनेवाले मिशनरियों और यही कार्य करनेवाले भारतीयोंमें सहज सम्पर्क नहीं है।

डॉ० चेस्टरमैनने इस बातका प्रतिवाद किया। उनका कहना था कि मिशनरियोंके प्रति पर्याप्त सद्भाव भी है। वह बम्बईमें एक हिन्दू मित्रसे मिले थे जिन्होंने उन्हें निश्चित आश्वासन दिया था कि मिशनके अस्पतालोंकी जरूरत बनी हुई है, क्योंकि सरकारी चिकित्सा-संस्थाओंकी अपेक्षा वहाँ लोगोंको ज्यादा ध्यानसे रखा जाता है और वहाँ उन्हें ज्यादा सहानुभूति मिलती है।

सरकारी अस्पतालोंमें यद्यपि फीस नहीं ली जाती, किन्तु वहाँके अधीनस्थ कर्मचारी मरीजोंसे प्रायः अवांछित तरीकोंसे पैसा ऐंठते हैं। इसके विपरीत मिशनके अस्पतालोंमें यदि उन लोगोंसे फीस ली जाती है जो फीस दे सकते हैं तो यह उचित है अथवा नहीं, इस प्रश्नके उत्तरमें गांधीजीने कहा कि फीस न लेनेका कोई कारण उन्हें नजर नहीं आता।

डॉ० चेस्टरमैनने अन्तिम प्रश्न यह पूछा कि धर्म-परिवर्तनके बारेमें आपकी आपत्ति क्या कौंड हिल्स-जैसे क्षेत्रोंके बारेमें भी लागू होती है जहाँकी आदिवासी जातियाँ पत्थरों और वृक्षों आदिकी पूजा करती हैं। गांधीजीने निस्संकोच भावसे उत्तर दिया :

अवश्य लागू होती है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि यद्यपि इन जातियोंको पत्थरों और वृक्षों आदिकी पूजा करनेवाली बताया जाता है, ये जातियाँ अविस्मरणीय कालसे हिन्दू-धर्ममें शामिल रही हैं। वे देशी औषधियोंकी तरह इसी धरतीकी उपज हैं और उनकी जड़ें यहाँ बड़ी गहरी हैं। परन्तु आप इसका समर्थन तभी कर सकते हैं जब आप यह महसूस करते हों कि हिन्दू-धर्म भी उतना ही सच्चा है जितना ईसाई धर्म। मेरा विश्वास है कि सभी धर्म सच्चे हैं परन्तु मनुष्य द्वारा

प्रतिपादित किये जानेके कारण अपूर्ण भी है और उनपर मानवीय अपूर्णताओं और कमजोरियोंकी छाप है। मिशनरियोंसे मेरा झगड़ा इस बातपर है कि वे समझते हैं ईसाई धर्मके अलावा और कोई धर्म सच्चा नहीं है।

गांधीजीसे विदा लेते हुए डॉ० चेस्टरमैनने गांधीजी का इस बातके लिए आभार माना कि उन्होंने उन्हें इतना समय दिया। उन्होंने आशा प्रकट की कि बातचीतसे उन्हें ज्यादा थकावट नहीं हुई होगी और प्रार्थना की कि वे उनकी [ईसाइयोंकी] उदात्त भावनाओंको जगाते ही रहें। गांधीजी का उत्तर जिससे डॉ० चेस्टरमैन बहुत ज्यादा प्रभावित हुए, यह था :

मैं तो यह अपील हृदयके अन्तरतमसे निरन्तर कर रहा हूँ। उसका महत्व लिखित शब्दोंसे कहीं ज्यादा है यद्यपि मैं लिखनेका काम भी करता रहा हूँ।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २५-२-१९३९

४८०. पत्र : नारणदास गांधीको

सेगाँव

१४ फरवरी, १९३९

त्रि० नारणदास,

क्या तुम्हारा काम ठीक ढंगसे चल रहा है? बीमार कैसे पड़ गये थे?

इस पत्रके साथ शेख चाँदभाईके लिए एक पत्र है।

मेरे जानने लायक कुछ हो, तो लिखना।

कह सकते हैं कि मेरा स्वास्थ्य आजकल ठीक नहीं है, वैसे फिलहाल तो चिन्ताकी कोई बात नहीं है।

क्या तुम्हें या गोकीबहनको बा से मिलनेकी इजाजत मिल सकती है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ८५५५ से भी;
सौजन्य : नारणदास गांधी।

४८१. पत्र : गुलाम रसूल कुरेशीको

सेगाँव, वर्धा
१४ फरवरी, १९३९

चि० कुरेशी,

अमृतुस्सलामने मुझसे बात की थी, किन्तु मैं तुम्हें लिखना भूल गया। सार्व-जनिक सेवाके लिए पैसे लेनेमें संकोच करनेकी कोई जरूरत नहीं। मैंने तो बात कर ली है। जब इत्रका धन्धा छोड़ सको तबसे ही तुम বেশक पैसे लेना शुरू कर दो। याद रखना कि तुम्हें कर्ज नहीं चढ़ाना है।

बच्चोंके बारेमें तो मैंने समझाया ही है न? घरमें उनको धार्मिक शिक्षा मिले, और बाकी सामान्य शिक्षण वे दूसरे बच्चोंके साथ ग्रहण करें। सुलताना तो शायद दूसरी लड़कियोंकी ही तरह हरिजन आश्रममें पढ़ सकती है। मैं नरहरिसे पूछ नहीं पाया कि आश्रममें तुम्हारे लिए जगह हो सकेगी या नहीं, -और बादमें बात रह गई। अब मैं उससे भी पुछवाऊँगा।

बापूकी दुआ

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०७६५) से; सौजन्य : गुलाम रसूल कुरेशी।

४८२. पत्र : सुरेशसिंहको

सेगाँव, वर्धा
१४ फरवरी, १९३९

भाई सुरेश,

मैंने कानून भंगका तो अब तक कुछ नहीं सोचा है न मैं ऐसी आबोहवा पाता हूँ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६९१) से। सी० डब्ल्यू० २८९३ से भी; सौजन्य : सुरेशसिंह।

४८३. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

सेगाँव, वर्धा

१५ फरवरी, १९३९

चि० बबुड़ी,

तेरा दूसरा पत्र मिला था। समय सब ठीक ही कर देगा। धीरज रखना चाहिए। सब नया-नया है, इसलिए अटपटा तो लगेगा ही। अन्तमें सब ठीक हो जायेगा। हिम्मतसे काम लेना। मेरा पत्र तुझे मिला होगा।

श्री कैलेनबैक काफी बीमार हो गये थे, लेकिन अब ठीक हैं। तेरी गैरहाजिरी यहाँ अकसर महसूस होती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०००९) से; सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला।

४८४. पत्र : विजयाबहन म० पंचोलीको

सेगाँव, वर्धा

१५ फरवरी, १९३९

चि० विजया,

तेरे बिना अभीसे ही सूना लगने लगा। प्रार्थनामें ही तेरी आवाज गायब थी। लेकिन संसार ऐसे ही चलता है। मिलना, जुदा होना, फिर मिलना, फिर जुदा होना। यह चक्र इसी प्रकार चलता रहेगा और यह जानकर हमें निश्चिन्त रहना चाहिए।

तू अपने धर्मको समझ ले। दाम्पत्य-धर्म सरल है, कठिन भी है। जो समझता है, उसके लिए सरल है। तुझे मनुभाईमें समा जाना है, मनुभाईको तुझमें। लेकिन इसमें लेन-देनको स्थान नहीं होता। धर्ममें लेन-देन नहीं होता। धर्मका पालन तो स्वयं ही करना पड़ता है। अतः मनुभाई तुझमें समायें या न समायें, तुझे उनमें समा ही जाना चाहिए। इसका मतलब यह है कि तुझे अपनी सारी आध्यात्मिक सम्पत्ति उन्हें सौंप देनी चाहिए। अतः तुम दोनों परस्पर एक-दूसरेको उत्तरोत्तर ऊँचे उठाओ, नीचे कभी न गिराओ। जैसे यहाँ तू अपने आनन्दसे घरको भर देती थी, वैसे ही वहाँ भी वातावरणको भर देना। यदि तूने 'गीता' के मर्मको समझ लिया है, तो तू जिस स्थितिमें भी होगी, उसीमें खुश रहेगी।

शालाके काममें ठीक जुट जाना। तुझे गये अभी दो घंटे भी नहीं हुए, इसलिए समाचार तो क्या दिये जा सकते हैं? लेकिन कल प्रभा आयेगी। यह पत्र भी कल ही भेजा जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४५९९) से; सौजन्य : विजयाबहन म० पंचोली।

४८५. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

[१६ फरवरी, १९३९ के पूर्व]^१

बा,

तेरा और मणि का, दोनों पत्र मिले। सभी परीक्षाओंको पार करना। यहाँसे पत्र तो तुझे भेजे गये हैं। वहाँके अधिकारीसे पूछना। कैलेनबैक बीमार पड़ गये हैं, बीमारी कठिन है। लीलावती सोमवारको उपवास करती है। मणिको अलगसे नहीं लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३३

४८६. पत्र : च० राजगोपालाचारीको

सेगाँव, वर्धा

१६ फरवरी, १९३९

प्रिय सी० आर०,

यदि तुम दे सकते हो तो मेरे द्वारा चिह्नित अंशोंके बारेमें उन्हें नोटिस दे दो और उनसे माफी माँगने तथा भविष्यमें फिर ऐसा न करनेका वचन देनेकी माँग करो। पर तुम्हारा उनपर सीधे मुकदमा चलाना भी ठीक होगा।

ताताचारके संलग्न पत्रको पढ़ना। केवल भावनाहीन तर्कसे तुम शासन नहीं कर सकते। पर मौकेपर तो तुम्हीं हो। तुम्हें मेरी नहीं, अपनी समझसे काम करना चाहिए।

१. देखिए “पत्र : कस्तूरबा गांधीको”, पृ० ४७२, जिसमें कहा गया है कि “कैलेनबैक अब अच्छे हैं।”

कताईकी कीमतकी क्षतिपूर्तिकी कृपया मुझसे माँग न करो। जो तुमसे अपनी सेहतका खयाल रखनेको कहते हैं उनकी बातपर ध्यान दो।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१७४) से।

४८७. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

१६ फरवरी, १९३९

चि० बबुड़ी,

मैं तुझे पत्र लिखूँ, फिर भी वह तुझे न मिले, तो यह भी क्या मेरा दोष है? अब तू शान्त हो गई होगी। विजया कल गई, रो रही थी। और दूसरे बहुत लोग अभी आये हैं। उनमें यशोदा भी है, सरूपबहन है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०००५) से; सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला।

४८८. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

१६ फरवरी, १९३९

बा,

तुझे पत्र रोज लिखा जाता है, फिर भी अगर न मिले, तो उसका क्या उपाय है? जैसे तेरी चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं है, वैसे ही मेरी चिन्ता करनेकी जरूरत तो कभी थी ही नहीं। सुभाष बाबू आ गये। और भी लोग आ-जा रहे हैं। श्री कैलेनबैक अब अच्छे हैं। कानम मजेमें है। वह मेरे साथ खाता है और दोपहरको सोता भी मेरे साथ ही है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे:]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३३

४८९. पत्र : मणिबहन पटेलको

सेगाँव, वर्धा
१६ फरवरी, १९३९

चि० मणि,

तेरा लम्बा पत्र और दूसरे पत्र मिल गये। तूने जो-जो कदम उठाये उनसे मैं तो मुग्ध हो गया हूँ। कहीं दोष निकालने-जैसी बात नहीं। मैं देखता हूँ कि तू सत्याग्रहका शास्त्र अच्छी तरह समझ गई है। इसलिए मैं बिल्कुल निश्चिन्त हूँ।

मुझे राज्यकी ओरसे रोज तार नहीं मिलता। दो-तीन आये थे। यहाँसे रोज पत्र गये हैं। तूने जो पता दिया था पहले तो मैंने उसपर लिखे थे। फिर मैंने राज्यसे शिकायत की कि मेरे पत्र क्यों नहीं मिलते, तब मुझे तार दिया गया कि पत्र प्रथम सदस्यकी मारफत भेजे जायें। अब मैं वैसा ही करता हूँ।

तुम्हारी तरफसे तो रोज पत्र मिलते ही हैं। इसलिए सन्तुष्ट हूँ।

मृदुको अलग पत्र नहीं लिखता। वह चिन्ता न करे। क्या वहाँका भार कम है जो वह कांग्रेसका उठायेगी?

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती मणिबहन पटेल

राज्य बन्दी

मारफत परिषद्के प्रथम सदस्य

राजकोट (काठियावाड़)

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १२४

४९०. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

सेगाँव, वर्धा

१७ फरवरी, १९३९

चि० बबुड़ी,

तू बम्बईका पता दे, वहाँ तुझे पत्र लिखूँ और वह न मिले, तो इसमें दोष तेरा है या मेरा? मेरे पास तो तारीखें दर्ज हैं। अब तू यहाँ आ जाये, तो ज्यादा अच्छा हो। बीमार पड़ना ठीक नहीं। मेरा बारडोली जाना अभी रद हो गया है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तेरे पत्र मैं ही खोलता हूँ।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०००६) से; सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला।

४९१. तार : घनश्यामदास बिड़लाको

वर्धा

१८ फरवरी, १९३९

घनश्यामदास बिड़ला

लकी

कलकत्ता

विधानको बताना बारडोली कार्यक्रम रद हो गया है। चिन्ता न करें।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ७८०८) से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला।

४९२. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

सेगाँव

१८ फरवरी, १९३९

चि० बबुड़ी,

तेरा पत्र मिला। तुझे मैंने प्रायः रोज पत्र लिखे हैं या लिखाये हैं। तू भुलाई नहीं जाती। तेरे सोनेकी जगहपर रोज नजर पड़ती है, लेकिन किस काम की? तुझे जीर्ण ज्वर रहता है, यह ठीक नहीं। यदि यह चलता रहे, तो तुझे समय रहते मेरे पास आ जाना चाहिए। अगर तू मच्छरदानी न लगाती हो, तो अब बराबर उसका उपयोग करना। मैं तो बिल्कुल मजेमें हूँ, लेकिन तू कहीं मुझे अपने बारेमें चिन्तामें न डाल देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०००७) से; सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला।

४९३. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

सेगाँव

१८ फरवरी, १९३९

बा,

तुझे यहाँसे रोज डाक गई है। अब वहाँ पत्र न मिलें, तो उनका क्या किया जाये? मेरी चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं है। लेकिन मेरी हालत चिन्ताजनक हो जाये, तब भी मैं तो तुझसे इस प्रकारके उत्तरकी आशा करता हूँ : “हम दोनोंके वियोगमें ही उनकी मृत्यु बदी होगी तो वैसा ही होगा, लेकिन मैं तो वहाँ पड़ी हूँ जहाँ मेरे बच्चोंपर अत्याचार हो रहा है। मुझे जेल भेजो, तो मैं इससे भी अधिक प्रसन्न होऊँगी। ठाकुर साहब अपने वचनका पालन करें, इसमें तुम सब मेरी मदद करो। यदि तुम मेरा उपयोग नहीं करोगे तो मेरी इच्छा है कि मैं राजकोटकी सीमाके भीतर ही मर जाऊँ।” चूँकि तू स्वयं अपनी विशेष इच्छाके कारण वहाँ गई है, तो यदि तेरे हृदयमें इस प्रकारके उद्गार उत्पन्न हों, तो उन्हें प्रगट करना। अपने मनमें भी ऐसी ही धारणा रखना।

तू रोज लिखती है कि ‘लड़कियोंसे सेवा लो’। लेकिन फिलहाल तो वह बन्द ही है। सुशीला मालिश करती है, लेकिन आखिर वह भी तो बन्द करना है न?

४७५

हाँ, अभी मेरी तबीयत खराब है, इसलिए अभी तक नहीं बन्द कर पाया। मेरी चिन्ता इस सम्बन्धमें भी मत करना। मेरा निबाह करनेवाले तो अन्तमें भगवान ही हैं न ?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३३

४९४. पत्र : विजयाबहन म० पंचोलीको

सेगांव, वर्धा

१८ फरवरी, १९३९

चि० विजया,

अब तेरा मन बिलकुल शान्त हो गया होगा और तू आनन्द कर रही होगी। अगर तू वहाँ जरा भी दुखी रही, तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा और मेरे शिक्षणपर भी कलंक लगेगा। तुम दोनोंको एक-दूसरेके अनुकूल होनेमें जरा भी अड़चन नहीं आनी चाहिए। मुझे ब्योरेवार पत्र लिखना। किस प्रकार रहती हो ? रहने और घूमने-फिरनेकी व्यवस्था कैसी है ?

आज अमृतलालको थोड़ा ज्वर आ गया है। जरा भी कुछ रद्दोबदल हो, तो उसपर उसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। फिर भी चिन्ता करने-जैसा तो कुछ नहीं है। श्री कैलेनबैक वैसे ठीक कहे जा सकते हैं, यद्यपि बुखार पूरी तरह उतरा नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

बा को पत्र लिखना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१०८) से; सी० डब्ल्यू० ४६०० से भी;
सौजन्य : विजयाबहन म० पंचोली।

४९५. पत्र : मणिबहन पटेल और मृदुला साराभाईको

सेगाँव

१८ फरवरी, १९३९

चि० मणि और मृदुला,

तुम दोनों वहाँ हो, यह ईश्वरका अनुग्रह है। तुम तीनों सबके साथ रहो, यह मुझे अच्छा लगेगा। परन्तु ईश्वर जैसे रखे वैसे रहना।

सुभाषबाबू वगैरहके बारेमें तुम्हें कुछ नहीं सोचना है। जहाँ तक इसका सवाल है, तुम तो जेलमें हो। ईश्वर मुझे जैसी बुद्धि देगा वैसा करता रहूँगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-४ : मणिबहन पटेलने, पृ० १२५

४९६. टिप्पणियाँ

जयपुर

आखिरकार जयपुर दरबारको जमनालालजी को गिरफ्तार करना ही पड़ा। कहते हैं कि उनके रहनेका इंतजाम अच्छा है पर उन्हें एक अलग-थलग जगहमें रखा गया है और उनपर कड़ा पहरा है। हर बातको रहस्य बनाकर रखा जा रहा है। मेरा निवेदन यह है कि अधिकारियोंको उनका पता-ठिकाना, उन्हें दी जानेवाली सुविधाएँ तथा उनके साथ पत्र-व्यवहार और मुलाकात करने-सम्बन्धी पाबंदियाँ प्रकाशित कर देनी चाहिए। क्या उन्हें डॉक्टरी सहायता सुलभ है?

मगर शेखावटीके बारेमें जो खबरें सुनाई पड़ती हैं, वे अगर सत्य हैं तो उनके आगे जमनालालजी की नजरबन्दी और उनके साथ किया जानेवाला बरताव मामूली चीज है। राज्यकी ओरसे तफसीलवार खबरें प्रकाशित न होनेसे जनता अखबारोंमें आनेवाली तरह-तरहकी खबरोंको ही सत्य मानेगी।

सेगाँव, २० फरवरी, १९३९

सच्चा स्वदेशी

अगर मैं स्वदेशीके पहले 'सच्चा' विशेषणका प्रयोग करूँ, तो आलोचक मुझसे पूछ सकते हैं कि 'क्या झूठा स्वदेशी भी होता है?' दुर्भाग्यवश मुझे यह

जवाब देना पड़ेगा कि 'हाँ, होता है।' चूँकि खादी की प्रवृत्तिके आरम्भसे ही स्वदेशीके सम्बन्धमें मेरा मत प्रामाणिक माना जाता है, इसलिए पत्र-लेखकोंने मेरे सामने इसके बारेमें अनगिनत गुत्थियाँ रखी हैं। फलतः मुझे स्वदेशीके दोनों प्रकारोंका परिचय देनेके लिए मजबूर होना पड़ा है। अगर विदेशी पूँजीको स्वदेशीके साथ मिला दिया जाये, या विदेशी हुनरको स्वदेशीके साथ, तो उसके फलस्वरूप तैयार होनेवाली चीज क्या स्वदेशी रहेगी? और भी प्रश्न हैं। लेकिन हाल ही में एक मन्त्रीको मैंने जो परिभाषा बताई थी उसको उद्धृत कर देना मैं बेहतर समझता हूँ। वह परिभाषा इस प्रकार थी: "ऐसी कोई भी चीज स्वदेशी है जिससे करोड़ों देशवासियोंका हित-साधन होता हो। यदि वह चीज विदेशी हुनर और विदेशी पूँजीसे बनी हो तो भी वह स्वदेशी ही है, बशर्ते कि उस पूँजी और हुनरपर भारतीयोंका प्रभावकारी नियन्त्रण हो।" इस प्रकार चरखा संघकी परिभाषापर खरी उतरनेवाली खादी सच्ची स्वदेशी है, भले ही सारी पूँजी विदेशी हो और भारतीय बोर्ड द्वारा नियुक्त खादी-विशेषज्ञ भी पाश्चात्य हों। इसके विपरीत, बाटाके रबड़के या दूसरे जूते विदेशी माने जायेंगे, भले ही उसमें सब कारीगर हिन्दुस्तानी हों और पूँजी भी हिन्दुस्तानने ही जुटाई हो। वे जूते दोहरे विदेशी होंगे, क्योंकि एक तो उन्हें बनानेकी पूरी व्यवस्थाका नियन्त्रण विदेशियोंके हाथोंमें होगा, और दूसरे, वे चाहे जितने सस्ते हों, लेकिन वे गाँवोंके चमड़ा कमानेवालोंमें से अधिकांशको और मोचियोंमें से तो सबको बेरोजगार बना देंगे। बिहारके मोची तो इस घातक प्रतिस्पर्धाको महसूस भी करने लग गये हैं। बाटाके जूते भले ही यूरोपके लिए निजात हों, पर हमारे गाँवके मोचियों और चमड़ा कमानेवालोंके लिए तो उनका अर्थ विनाश ही होगा। मैंने ये दो स्पष्ट उदाहरण दिये हैं, और ये दोनों आंशिक रूपसे कल्पित हैं। कारण, चरखा संघमें सारी पूँजी स्वदेशी ही है और कारीगर भी सब देशी हैं। हालाँकि मेरे हृदयके किसी कोनेमें यह विश्वास जमा हुआ है कि हमारे देशके कारीगरोंने अपने कौशलसे जो सुधार किये हैं, वे किसी भी तरह नगण्य समझे जाने लायक नहीं हैं, मगर मैं यह पसन्द करूँगा कि हमें पाश्चात्य इंजीनियरीका हुनर ऐसा ग्रामोपयोगी चरखा बनानेके लिए मिल सके जो तमाम मौजूदा चरखोंसे बाजी मार ले जाये। पर यह तो मैं विषयान्तर कर गया। मुझे पूरी आशा है कि मन्त्री या दूसरे लोग, जो जनताको मार्ग दिखाते हैं या उसकी सेवा करते हैं, सच्चे और झूठे स्वदेशीके अन्तरको पहचाननेकी आदत डालेंगे।

सेगाँव, २० फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २५-२-१९३९

४९७. फिर त्रावणकोर

श्री रामचन्द्रनने राजकुमारी^१ को जो पत्र लिखा है, उसका निम्नलिखित अंश मैं यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ :

मैं यह जानता हूँ कि अपने ध्येयके लिए जब तक हम शान्ति और सचाईके साथ अपनेको कुर्बान न कर दें, तब तक हम किसी सुफलकी आशा नहीं कर सकते। आपने देखा होगा राज्य-कांग्रेसकी कार्य-समितिकी पिछली बैठकमें हमने सविनय प्रतिरोध कार्यक्रमको शुरू करनेके लिए छः सप्ताहकी मियाद नियत की। हम शान्तिके लिए उत्सुक हैं, इस बातका ईश्वर साक्षी है। लेकिन नौ जगहोंपर होनेवाले गोली-काण्डोंकी कोई जाँच नहीं हुई है। पिछले आन्दोलनमें भाग लेनेवाले अनेक वकीलोंको दो सालके लिए वकालत करनेसे रोक दिया गया है। राज्य-कांग्रेसके १९ विधायकोंको विधान-सभाका वर्तमान अधिवेशन शुरू होनेके ठीक पहले उसमें भाग लेनेके अयोग्य करार दे दिया गया है। सरकारके पास इस बातके लिए काफी वक्त था कि वह पहले ही उन्हें अयोग्य करार देकर नये चुनावकी घोषणा कर देती। अब १९ निर्वाचनक्षेत्र बिना प्रतिनिधित्वके रहेंगे। जुमानोंकी रकमें वापस नहीं मिली हैं। जन्त की हुई सम्पत्ति लौटाई नहीं गई है। अखबारों पर लगी हुई पाबन्दियाँ भी बदस्तूर कायम हैं। स्वभावतः लोग ऐसा सोचते थे कि महाराजाके जन्म-दिनके अवसरपर क्षमादानकी घोषणामें ये सब बातें शामिल होंगी। इसके बजाय, एक दूसरे शरारत-भरे विनियमके जरिये राज्य-कांग्रेसके स्वयंसेवक-संगठनको नष्ट करनेका सुनियोजित ढंगसे प्रयत्न किया जा रहा है। यह विनियम खास तौरपर इसी उद्देश्यसे लागू किया गया है। इस समय यहाँ २०० से अधिक राजनीतिक कैदी हैं। गुण्डोंके खिलाफ मुकदमा चलानेकी व्यवस्था करनेवाली ९०वीं धाराके मातहत अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति गिरफ्तार किये गये हैं। सदर-जेलमें कैदियोंको रखनेकी गुंजाइश बढ़ाई गई है। विशेष पुलिस-दलमें १००० से अधिक लोग भरती किये गये हैं। इसमें बदमाश किस्मके लोगोंको रखा गया है और उनकी तनख्वाह देखकर तो चकित रह जाना पड़ता है—प्रति व्यक्ति सिर्फ ५ रुपये माहवार! क्या इससे बड़ा अजूबा हो सकता है? और मानो त्रावणकोरकी पुलिसपर यह भरोसा नहीं किया जा सकता कि वह ऐसा गन्दा काम करेगी, इसलिए पुलिसके बहुत-से सिपाही त्रावणकोरके बाहरसे भरती किये गये हैं। सरकारकी दमन-नीति

बराबर जारी है। अलबत्ता इसमें कोई शोर-शराबा नहीं होने दिया जा रहा है और आमने-सामने खुले संघर्षकी स्थिति नहीं आने दी जा रही है। यही कारण है कि हम छः सप्ताहकी मियाद नियत करनेके लिए मजबूर हो रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि मैंने बापूको जो कागजात भेजे हैं उनका आप सावधानीके साथ अध्ययन करें—खासकर उन दो प्रस्तावोंका जिन्हें कार्य-समितिकी पिछली बैठक में हमने पास किया है। मुझे इस बातपर बड़ा दुःख है कि सर सी० पी० रामस्वामी अय्यरकी नीति शासक और प्रजाके बीच गहरी खाई बना देगी।

इस पत्रमें जिन प्रस्तावों और भूमिकाका जिक्र किया गया है उन्हें मैंने यहाँ नहीं दिया है। राज्य-कांग्रेस क्या कर रही है, यह जाननेके लिए पाठक उन्हें सामने रखें तो ठीक होगा। उन्हें हम अन्यत्र दे रहे हैं।

इन कागजातोंको पढ़कर बड़ा दुःख होता है। महाराजा साहबके जन्म-दिनपर दिये गये इस क्षमादानको उदारतापूर्ण क्षमादानकी संज्ञा दी गई थी लेकिन उसके बादसे जो-कुछ हुआ है उसने वह सारी शोभा नष्ट कर दी है जो ऐसे क्षमादानके साथ अवश्य ही जुड़ी होनी चाहिए। यह सदाशयताका एक स्वतः-स्फूर्त संकेत था, लेकिन बादकी घटनाओंसे लगता है कि उसमें कोई उदारता नहीं थी, बल्कि वह एक चाल थी, जिसे अधिकारियोंने त्रावणकोर दरबारके खिलाफ उठ रहे आन्दोलनको शान्त करने और त्रावणकोरकी जनताके बीच विभेद डालनेके लिए अपनाया था। यदि श्री रामचन्द्रन द्वारा दी गई जानकारी सही हो तो दूसरा उद्देश्य तो बिल्कुल नहीं पूरा हुआ, लेकिन पहला अंशतः सधा। कारण, कैदियोंकी रिहाईके बाद भारतीय अखबारोंको ऐसा लग रहा था कि संघर्ष समाप्त हो चुका है।

वैसे यह सोचकर मेरे मनको सुख मिलेगा कि उस आंशिक क्षमादानके पीछे कोई दुराशयता नहीं थी। यदि बात ऐसी हो तो मुझे लगता है कि राज्य-कांग्रेसको आसानीसे सन्तुष्ट किया जा सकता है। हाँ, अगर अधिकारियोंका उद्देश्य मेलजोल और शान्ति स्थापित करना नहीं, बल्कि कांग्रेसको कुचलना हो तो बात और है। यदि क्षमादानका कार्य और सुधार-समितिकी नियुक्ति राज्य-कांग्रेसकी सलाहसे सम्पन्न की जाये तो राजा और प्रजाके बीच शान्ति-सुलह कायम होनेमें कोई सन्देह ही नहीं है।

लेकिन शायद राजा या प्रजा किसीका भी ऐसा सद्भाग्य नहीं हो। उस हालतमें, राज्य-कांग्रेसवालोंको यह याद रखना चाहिए कि सत्याग्रह अगर संसारकी सबसे बड़ी ताकत है, तो इसके लिए दिलमें क्रोध और दुर्भाव रखे बगैर अधिक-से-अधिक कष्ट-सहनकी क्षमता भी आवश्यक है। अत्याचारीकी करतूतोंकी खबरें प्रकाशित करना तो ठीक है, लेकिन सत्याग्रहियोंके लिए यह भी आवश्यक है कि उनमें अपार कष्टसहनकी असीम क्षमता हो और साथ ही अन्ततः सत्यके विजयी होनेकी ज्वलन्त श्रद्धा भी।

कांग्रेसने छः हफ्तेकी मियाद रखकर बहुत अच्छा किया है। लेकिन अगर उसे लगे कि मनुष्यके लिए जहाँ तक सम्भव है वहाँ तक अहिंसाका पालन हो सके और

रचनात्मक कार्य जारी रह सके, इस दृष्टिसे लोगोंको तैयार करनेके लिए इतना समय पर्याप्त नहीं है तो उसे इस अवधिको और बढ़ा देना चाहिए। यह उसके लिए लज्जा नहीं, बल्कि और भी श्रेयकी बात होगी। यदि विवेकहीन लोग और अनुदार आलोचक अवधि बढ़ानेको कमजोरीकी निशानी मानें तो सत्याग्रहियोंको ऐसे दोषारोपणकी परवाह नहीं करनी चाहिए। आखिर यह बात तो सिपाही ही जानता है कि उसे कब अपने हाथ रोक रखने हैं और कब आगे बढ़ना है। वह जानता है कि अक्सर तथाकथित निष्क्रियतामें भी सक्रियता हुआ करती है और विवेकशून्य सक्रियता सच्ची निष्क्रियतासे भी बदतर है। और कमजोर वह नहीं है, जिसे कमजोर कहा जाता है, बल्कि वह है जो ऐसा महसूस करता है कि मैं कमजोर हूँ। कार्य-समितिके सदस्य इस बातको समझ लें कि अहिंसात्मक संघर्षके लिए यह जरूरी है कि हिंसात्मक प्रवृत्तिपर — फिर चाहे वह प्रवृत्ति किसी प्रकार और किसीके भी द्वारा उभारी जाये — आम और प्रभावकारी नियन्त्रण कायम किया जाये। यदि संघर्ष फिर कभी आरम्भ किया जाता है, तो मैं आशा करता हूँ कि मेरे तारोंके उत्तरमें मुझे यह नहीं सुननेको मिलेगा कि इस हिंसाके लिए — यदि हिंसा भड़क उठे तो — कांग्रेस जिम्मेदार नहीं है। क्या उत्तरदायी शासनका मतलब यह नहीं है कि जनताके समस्त कार्योंके लिए सर्वोच्च सत्ता द्वारा नियुक्त तानाशाह नहीं, बल्कि स्वयं जनता ही जिम्मेदार है? उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि यदि हिंसा जरा भी बड़े पैमानेपर भड़की तो वह शायद सत्याग्रहको पुनः स्थगित करनेका संकेत हो सकती है, बल्कि कदाचित् होगी ही। ऐसी परिस्थितिमें बारडोलीमें सत्याग्रह स्थगित करना पड़ा था, हालाँकि जो हिंसा हुई थी वह बारडोलीसे बहुत दूर चौरीचौरामें हुई थी।^१

सेगाँव, २० फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २५-२-१९३९

४९८. लीम्बड़ीमें अंधेरगदीं

लीम्बड़ी काठियावाड़की एक रियासत है। उसकी इस बातके लिए शोहरत थी कि वह एक प्रगतिशील राज्य है। वहाँके बहुत-से कार्यकर्तओंको मैं जानता हूँ। वे बुद्धिमान, त्यागी और परिश्रमी हैं। अन्य अनेक राज्योंकी तरह लीम्बड़ीकी प्रजामें भी काफी जागृति आई। वहाँके कार्यकर्ता अक्सर इस बातका गर्व किया करते थे कि उनके युवराज प्रगतिशील हैं। लेकिन अब उन्हें पता लगा है कि उन्होंने पश्चिमके तानाशाहियोंके कुछ अजीब रवैये अख्तियार कर रखे हैं। वे छोटे-से लीम्बड़ी नगरमें तो सुधारकोंको चाहे जो करने देते हैं, लेकिन गाँवोंमें उनका जाना उन्हें बिल्कुल मंजूर नहीं है। गाँवोंमें वे बीचमें किसीको आने दिये बगैर खुद अपने

१. देखिए खण्ड २२, पृ० ३९९-४०० ।

ही प्रयोग करनेवाले थे। लीम्बड़ीके सुधारकोंने सोचा कि गाँववालोंके बीच काम करनेका उन्हें भी उतना ही हक है जितना कि युवराजको है — खासकर उस हालतमें जबकि वे उनके साथ पहले ही अपना सम्बन्ध कायम कर चुके हैं। इसलिए उन्होंने गाँवोंमें जानेकी हिम्मत की। इसका जो नतीजा हुआ, वह नीचे दिये हुए तारसे मालूम होगा :

५ तारीखकी आधी रातको लाठियों, धारियों, देशी बन्दूकों, तलवारों और फरसोंसे लैस कम-से-कम अस्सी आदमियोंने पंसीना गाँवपर धावा बोल दिया। गाँवमें घुसनेके रास्तोंपर तीनसे लेकर पाँच आदमियों तकके जत्थोंका पहरा बिठा दिया गया। बीस आदमियोंके दो जत्थे गाँवमें गये और प्रजामण्डलके कार्यकर्ताओं तथा उनसे सहानुभूति रखनेवालोंके मकान उन्होंने डकैतीके लिए चुन लिये। सबसे पहले वे प्रजामण्डलके दफ्तरमें गये और बाहरसे उसकी साँकल चढ़ा दी, ताकि स्वयंसेवक बाहर न जा सकें। इसके बाद एक जत्था एक प्रमुख व्यापारी और प्रजामण्डलके कार्यकर्ता छोटालालके मकानपर पहुँचा और उन्हें तथा उनकी पत्नीको बुरी तरह मारा-पीटा। इस मार-पीटमें उनकी पत्नीको बुरी तरह चोट आई, यहाँ तक कि उसके गुप्तांगोंमें भी चोट आई। प्रजामण्डलकी स्थानीय शाखाके प्रमुखपर तलवारसे हमला किया गया, जिससे उनके फेफड़ेमें जख्म हो गया। कोई तीस आदमी बुरी तरह घायल हुए। प्रजामण्डलके सक्रिय सदस्योंके दस-बारह घरोंसे लगभग साठ हजार रुपये कीमतके जेवर, नकदी तथा माल लूटा गया। डाकू कोई दो घंटे तक हवामें तथा मकानोंपर बराबर गोलियाँ चलाते रहे। इसके बाद वे रालोल नामके दूसरे गाँवमें गये, जो पंसीनासे दो मील दूर है। वहाँ भी उन्होंने ऐसा ही किया। वहाँ जन-आन्दोलनसे सहानुभूति रखनेवाले तीन सुनार और एक बनिया बुरी तरह घायल हुए और दस हजार रुपये कीमतका माल डाकू लूटकर ले गये। जयचन्द वालजी नामक एक बनियेपर आज सियानीमें चाकूसे हमला हुआ। चार जगह चाकू भोंककर उसे लूट लिया; उसकी बहनको भी मारा-पीटा। लोगोंके सामने ऐसा शक करनेके ठोस कारण मौजूद हैं कि डकैतीमें सरकारी अधिकारियोंका हाथ है। कुछ डाकू तो राज्यके पागी तथा पासायत ही बताये जाते हैं। सच तो यह है कि प्रजामण्डलके कार्यकर्ताओं और उनसे सहानुभूति रखनेवालोंको पिछले सप्ताहसे राज्यके पागी-पासायत इस बातकी धमकी भी दे रहे थे कि तुम्हें लूटा और मारा-पीटा जायेगा। लूटका माल कोई आठ मोटरों तथा दो बसोंमें रखकर ले जाया गया, जो खानगी जगहोंसे नहीं मिल सकती थीं। डाकू दो घंटे तक बराबर हवामें गोलियाँ चलाते रहे। इतने सारे कारतूस खानगी लोगोंसे नहीं मिल सकते थे। राज्यकी पुलिसने अभी तक कोई तहकीकात शुरू नहीं की है। यहाँ तक कि पंचनामे भी नहीं बनाये

गये हैं। राज्यने राजधानीसे कोई डॉक्टरी सहायता भी नहीं भेजी है। ठाकुर-साहबसे शिकायत करनेपर भी उन्होंने कोई सख्त कार्रवाई नहीं की। राज्यके पासायत दूसरे गाँवोंमें भी ऐसे ही डाके डालनेकी धमकियाँ दे रहे हैं। पहलेकी गुण्डागर्दीकी घटनाओंसे इस सन्देहकी और पुष्टि होती है। जाम्बूम मुखीके आदमियों द्वारा भक्तिबाकी मोटरगाड़ीपर किया गया हमला, सियानीमें प्रजामण्डलकी मोटरगाड़ीका तोड़ा जाना और ड्राइवर तथा कार्यकर्ताका पीटा जाना, रसका गाँवमें प्रजामण्डलके सदस्योंका पीटा जाना, सियानीमें स्वयंसेवकोंके प्रमुखको पासायतों द्वारा मार देनेकी धमकी देना, सियानीमें लगभग तीस गुण्डोंका लाठियों, धारियों और चाकुओंसे लैस हो खुले आम घूमना और ऐसी ही अन्य कई घटनाओंके कारण यहाँके लोगोंके मनमें कोई सन्देह नहीं रह गया है कि यह संगठित गुण्डागर्दी राज्यने हालमें छिड़े जन-आन्दोलनको दबानेके लिए शुरू कराई है। इन घटनाओंकी ओर ठाकुरसाहबका ध्यान बार-बार आकर्षित किया गया है, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। पिछली डकैतीके विरोध स्वरूप नगरसेठ लालचन्दभाई और दुर्लभजी उमेदचन्द और अमूलख अमीचन्द जैसे प्रमुख नागरिकों सहित कोई ४००-५०० लोगोंने भूख-हड़ताल शुरू कर दी है और वे दिन-रात महलके बाहर धरना दिये बैठे हैं। कोई तीन हजार और लोग भी आज सबरे उनमें शामिल हो गये हैं। राज्यके खिलाफ लोगोंमें भारी क्षोभ है। लोग पूरी तरह अहिंसात्मक बने हुए हैं और हरएक मुसीबतका सामना करनेके लिए तैयार हैं।

उन्होंने अपनी परिषद्की एक सभा करनेकी घोषणा करनेका भी साहस किया तो उसका जो परिणाम हुआ है, वह मुझे भेजे निम्नलिखित सन्देशसे स्पष्ट हो जायेगा :

प्रजा-परिषद्की बैठक कल करनेकी व्यवस्था की गई है। प्रजा-परिषद्को भंग करनेके लिए लीम्बड़ीमें बहुत-से गुण्डे लाये गये हैं। लोगोंको शक है कि इसमें सरकारी अधिकारियोंका हाथ है। ऐसा शक करनेके सबल कारण हैं। लाठियों, नंगी तलवारों, बन्दूकों, धारियोंसे लैस गुण्डोंका जलूस सारे दिन कस्बेमें घूमता रहा। उनमें से कुछने कुछ स्त्रियोंको मारने-पीटनेकी भी कोशिश की। बम्बईके एक प्रमुख व्यापारी सेठ अमूलख अमीचन्दने बीचमें पड़कर कहा कि स्त्रियोंके बजाय तो मुझे मार लो तो ठीक होगा। सेठ दुर्लभजी उमेदचन्द और भगवानलाल हरखचन्द छः पुरुष स्वयंसेवकोंके साथ तुरन्त घटनास्थलपर पहुँचे। पुरुष स्वयंसेवकोंको निर्दयताके साथ लाठियोंसे पीटा गया। एक दूसरी जगह गुण्डोंने भावनगरके वकील प्रह्लादराय मोदीको पकड़ लिया और तभी छोड़ा, जब उन्हें यह मालूम हो गया कि वे प्रजामण्डलके कार्यकर्ता नहीं हैं। भोगीलाल गांधीको नंगी तलवार लिए एक गुण्डेने मार डालनेकी धमकी दी। मनुभाई ठाकरपर लाठीकी मार पड़ी। गुण्डे

प्रजामण्डलके दफ्तरके बाहर शोर मचा रहे हैं। सियानीके तपुभा नामक व्यक्ति, जो एक सरकारी मुलाजिम है और जिसने दो दिन पहले सियानीमें प्रजामण्डलके स्वयंसेवकोंको पीटा था, के नेतृत्वमें गुण्डोंका एक जत्था स्थानकवासी भोजन-शालाके बाहर, जहाँ गाँवोंसे आये हुए किसान सो रहे हैं, आ डटा है। जो भी आदमी बाहर निकलता है उसे वे मार डालनेकी धमकी देते हैं। सड़कोंपर गुण्डोंके अनेक जत्थे घूम रहे हैं। लगभग फौजी नाकेबन्दीकी-सी स्थिति है, जो एक तरहसे राज्य द्वारा फौजी कानून लागू कर दिये जानेके समान है। लोगोंका खयाल है कि इस सबमें राज्यका हाथ है। गण्यमान्य लोगोंने पुलिस-अधीक्षक नरुभाको इनमें से कुछके साथ बातें करते देखा है। बहुत-से किसानोंको जबर-दस्ती गाँवोंसे लाकर इन गुण्डोंके नेतृत्वमें जलूस बनाकर गली-सड़कोंपर घूमनेके लिए विवश किया जा रहा है। लोग पूरी तरह अहिंसात्मक रह अपनाये हुए हैं और उन्होंने तय किया है कि परिषद्की बैठक करनेके अपने हकके लिए जो भी मुसीबत सहनी पड़ेगी, उसे वे सहेंगे।

अब मुझे मालूम हुआ है कि जिन लोगोंका इस सन्देशमें वर्णन किया गया है उन्होंने बादमें दरबार गोपालदास देसाई और उनकी पत्नी भक्तिबाको घेर लिया। दोनोंके ही हलकी चोटें आईं। गुण्डोंको भी थोड़ी देरके लिए यह सन्तोष मिला कि उन्होंने परिषद्की बैठक नहीं होने दी।

इन सन्देशोंमें घटनाओंका वर्णन इतने व्योरेवार ढंगसे किया गया है कि वे सहज ही विश्वसनीय लगती हैं और इन सन्देशोंमें अविश्वास करनेका मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता। इससे भी बड़ी बात यह है कि सन्देश ऐसे लोगोंने भेजे हैं जिनके बारेमें मेरी मान्यता है कि वे न तो कोई बात बढ़ा-चढ़ाकर कह सकते हैं और न झूठमूठ गढ़कर ही।

सुधारकोंमें अगर मर-मिटनेकी हिम्मत है और वे सचमुच प्रजाकी इच्छाओंका ही प्रतिनिधित्व करते हैं, तो इस सब अन्धेरगर्दिके बावजूद उनकी जीत जरूर होगी। बाहरके लोग भी उनकी मदद करेंगे। सर्वोच्च सत्ता भी संधिकी शर्तोंके अनुसार उनकी मदद करनेके लिए बँधी हुई है। प्यारेलालने ली वार्नरकी पुस्तकसे उद्धरण देकर यह बात भलीभाँति सिद्ध कर दी है। लेकिन सत्याग्रहियोंको यह जान लेना चाहिए कि मुक्ति किसी बाहरी सहायता से नहीं, बल्कि खुद अपने अन्दरकी शक्तिसे ही मिलती है। अगर वे अपनी आत्माकी रक्षा करना और स्वतन्त्रता जो उनका जन्मसिद्ध अधिकार है, प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें अपना सब-कुछ न्योछावर कर देना पड़ेगा।

सेगाँव, २० फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २५-२-१९३९

४९९. पत्र : शारदाबहन गो० चोखावालाको

सेगाँव, वर्धा

२० फरवरी, १९३९

चि० बबुड़ी,

तेरा पत्र मिला। लगता है, तू होशियार होती जा रही है। धीरजसे सब ठीक हो जायेगा। बुखारसे पिंड छुड़ाया, यह अच्छा किया। अब काममें भी जुट जाना। खाने-पीनेमें जो माफिक आये, सो खाना।

मेरा सीमा-प्रान्त जाना, हो सकता है, १२ के बाद हो। मेरी तबीयत अच्छी है। बहुत करके तो मैं कांग्रेसके अधिवेशनमें नहीं जाऊँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १०००८) से; सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला।

५००. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

सेगाँव

२० फरवरी, १९३९

बा,

सावधान रहना और अपनी तबीयत का ध्यान रखना। सब आ गये हैं, इसलिए अब अधिक नहीं लिखता। आज नानावटी काकाके पास रहने चले गये।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३४

५०१. पत्र : विजयाबहन म० पंचोलीको

सेगाँव, वेर्धा

२० फरवरी, १९३९

चि० विजया,

मेरे पत्र मिले होंगे। तू कितनी खराब है! इस तरह चक्कर क्यों आने चाहिए? अपने घर जानमें इतना दुःख क्यों? सावधान हो जा और उल्लासपूर्वक अपने कर्तव्यका पालन कर। [इस तरह] तेरा बार-बार बीमार पड़ते रहना चलेगा नहीं। बा को पत्र लिखना। पतेकी जगह मार्फत प्रथम सदस्य लिखना। औरोंको भी लिखना।

आज अमृतलाल काकासाहबके पास रहने चले गये।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७११०) से। सी० डब्ल्यू० ४६०२ से भी;
सौजन्य : विजयाबहन म० पंचोली।

५०२. पत्र : बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' को

सेगाँव, वेर्धा

२० फरवरी, १९३९

भाई बाल कृष्ण शर्मा,

कानपुरमें क्या किया? क्यों इतनी अशांति^१? कोई गणेश शंकर विद्यार्थी^२ ने वलीदान दिया?

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५१६) से। सी० डब्ल्यू० ४९९३ से भी;
सौजन्य : परशुराम मेहरोत्रा।

१. ११ फरवरी से १३ फरवरी, १९३९ तक कानपुरमें साम्प्रदायिक दंगे हुए थे।

२. प्रताप के सम्पादक; वे मार्च १९३१ में कानपुरके हिन्दू-मुस्लिम दंगेके दौरान मारे गये थे।

५०३. तार : अकबर हैदरीको^१

सेगाँव, वर्धा
२१ फरवरी, १९३९

सर अकबर हैदरी
हैदराबाद दकन

जवाबमें आपका तार शोलापुरसे मिला। अनुमति मिल जानेके बाद हमारे प्रतिनिधि सुन्दरप्रसादने सत्रहको गुलबर्गा जेलमें नारायणस्वामीसे भेंट की . . . कैदियोंकी वर्दी और पैरमें बेड़ी पहने हुए थे।

गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १००९७) से; सौजन्य : आन्ध्रप्रदेश सरकार।

५०४. पत्र : अकबर हैदरीको^२

सेगाँव, वर्धा
२१ फरवरी, १९३९

प्रिय सर अकबर,

आर्य समाज सत्याग्रहके बारेमें एक पत्र इसके साथ है। उनकी माँग मुझे युक्ति-युक्त लगती है। पर आपकी बात सुननेसे पहले मैं सार्वजनिक रूपसे कुछ कहना नहीं चाहता।

राज्य-कांग्रेसके बारेमें अपने पत्र^३ के उत्तरकी मैं अभी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

हृदयसे आपका
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १००९६) से; सौजन्य : आन्ध्रप्रदेश सरकार।

१. इस तारकी फोटो-नकल नई दिल्लीमें आयोजित १९६९-७० की गांधी दर्शन प्रदर्शनीमें दिखाई गई थी।

२. साधन-सूत्रमें यहाँ शब्द अस्पष्ट है।

३. इस पत्रकी फोटो-नकल नई दिल्लीमें आयोजित १९६९-७० की गांधी दर्शन प्रदर्शनीमें दिखाई गई थी।

४. देखिए पृ० ३४१-३।

५०५. पत्र : लॉर्ड लिनलिथगोको

सेगांव, वर्धा
२१ फरवरी, १९३९

प्रिय लॉर्ड लिनलिथगो,

आपके सौहार्दपूर्ण और स्पष्ट पत्रके लिए मैं आपका बहुत ही आभारी हूँ।^१ इन परिस्थितियोंमें मैं उस समयकी प्रतीक्षा करूँगा जो आपके विचारमें हमारी भेंटके लिए उपयुक्त होगा।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे : लॉर्ड लिनलिथगो पेपर्स; सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार। सी० डब्ल्यू० ७८१० से भी।

५०६. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

सेगांव
२१ फरवरी, १९३९

बा,

तेरे पत्र बराबर मिलते हैं। मेरी डाक यहाँसे तो ठीक जाती है, लेकिन वहाँ समयपर क्यों नहीं मिलती, इसकी जाँच करूँगा। अपनी तबीयतका अच्छी तरह

१. लॉर्ड लिनलिथगोने १९ फरवरीके अपने पत्रमें अपने नाम गांधीजीके १२ फरवरीके पत्रका उल्लेख किया था और कहा था कि “जिस लेखको आपने मुझे दिखा देनेकी कृपा की थी उसे प्रकाशित करनेके आपके फैसलेके बारेमें मुझे जरा भी गलतफहमी नहीं है। (यह सम्भवतः ३०-१-१९३९ का “जयपुर” शीर्षक लेख था, जिसके बारेमें गांधीजीने लॉर्ड लिनलिथगोको ३१-१-१९३९ के अपने पत्रमें यह लिखा था कि मैं इसे प्रकाशित नहीं कर रहा हूँ, और जिसे, जाहिर है, बादमें उन्होंने प्रकाशित करनेका फैसला कर लिया।) गांधीजीके उनसे भेंटके सुझावके विषयमें उन्होंने कहा कि मैं समझता हूँ कि यह समय उसके लिए उपयुक्त नहीं है। फिर भी यदि आप समझते हैं कि हमारी भेंट होनी चाहिए तो मुझे आपसे मिलकर बड़ी खुशी होगी। पर मैं चाहूँगा कि वह मेरी राजपूतानाकी यात्राके बाद हो।

ध्यान रखना। मुझे ब्योरेवार समाचार मिलने ही चाहिए। बाकी प्रभा लिखेगी। सुशीलाकी खुराककी देखभाल मैं आजकल नहीं कर पाता। तूने ठीक जताया।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३४

५०७. बातचीत : हैदराबाद राज्य-कांग्रेसके प्रतिनिधियोंके साथ'

सेगाँव

२१ फरवरी, १९३९

सत्याग्रही, सेनापतिकी तरह, लड़ाईके लिए समय और स्थानका चुनाव सदा स्वयं करता है। अपने ध्येयको आगे बढ़ानेके अन्य सभी साधन जब तक चुक न जायें, सत्याग्रहको प्रयोगमें नहीं लाना चाहिए। सशस्त्र युद्ध तक में लड़ाई स्थगित कर देना और पीछे हटना सामरिक दाँव-पेचोंके अंतर्गत माने जाते हैं।

[सत्याग्रह] स्थगित करनेका अर्थ यह नहीं है कि यदि लोगोंको न्यायोचित, शान्तिपूर्ण और रचनात्मक गतिविधियोंमें भाग लेते हुए गिरफ्तार किया जाये, तो भी गिरफ्तारीका सामना न करो। ये गतिविधियाँ सविनय अवज्ञा नहीं होंगी। [सत्याग्रह] स्थगित करनेका आपका फैसला बुद्धिमत्तापूर्ण है। इससे आपने कुछ भी खोया नहीं है। परिस्थितिकी फिर माँग होनेपर और ऐसे पर्याप्त कारण उपस्थित होनेपर जो सत्याग्रह फिर शुरू करनेको बाध्य करते हों, आप सत्याग्रह फिर आरम्भ कर सकते हैं। इसमें ऐसा कुछ नहीं है जो उस हालतमें आपको उससे रोक सके।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २२-२-१९३९

१. हैदराबाद राज्य-कांग्रेसका एक प्रतिनिधि-मण्डल २१-२-१९३९ को गांधीजीसे मिलने आया था और उसने उन्हें अपने इस फैसलेकी सूचना दी थी कि सत्याग्रह कुछ और समय तक स्थगित रहेगा। सत्याग्रह २६-१२-१९३८ को या उसके आसपास स्वगिन किया गया था। देखिए “पत्र : अकबर हैदरीको”, पृ० २७४ और “हैदराबाद राज्य-कांग्रेसके लिए वक्तव्यका मसविदा”, पृ० २६८-९।

५०८. शरारतपूर्ण सुझाव

एक पत्र-लेखकने मुझे 'बॉम्बे क्रॉनिकल' की एक कतरन भेजी है, जो निम्न प्रकार है :

'मैनचेस्टर गार्जियन' को लिखे एक पत्रमें श्री रशदुक विलियम्सने कहा है कि पिछले वर्षके कुछ अन्तिम महीनोंके दौरान कांग्रेस हाई कमानके दक्षिण-पंथी लोग निश्चित रूपसे ऐसा रुख अपनाते जा रहे थे जिसपर से महात्मा गांधी चाहते तो केन्द्रीय सरकारके सम्बन्धमें अधिकारियोंसे कुछ वैसी ही बातचीत चला सकते थे जैसी बातचीत उन्होंने प्रान्तीय सरकारोंके सम्बन्धमें सफलतापूर्वक चलाई थी। तब जो चीज कांग्रेसको संघ-व्यवस्थाकी स्थापना जैसी जान पड़ी उसके कारण उसे अपनी शक्तिका हिसाब-किताब लगाना आवश्यक हो गया। उसे मुसलमानोंका बहुत कम समर्थन प्राप्त था और उनके समर्थनसे वंचित रहकर — जिसका कारण मुस्लिम लोग थी — वह केन्द्रमें तब तक सरकार नहीं बना सकती जब तक कि उसे नये मित्र न मिल जाते। इसलिए देशी राज्योंपर ध्यान केन्द्रित करना जरूरी था, ताकि राज्योंके प्रतिनिधियोंके रूपमें केन्द्रीय विधान-सभामें ऐसे लोग आ सकें जो कांग्रेस-कार्यक्रमके प्रति सहानुभूतिका रुख रखते हैं।

वे आगे कहते हैं : "यह बात कुछ कम महत्वकी नहीं है कि डॉ० पट्टाभि सीतारामय्याका देशी राज्य प्रजा परिषद्से निकटका सम्बन्ध है, लेकिन श्री बोसके [कांग्रेस-अध्यक्ष] चुने जानेसे दक्षिण पक्षको भारी धक्का लगा है और इसके कारण, हाई कमानके मनमें अधिकारियोंसे जो और जैसा भी मेल-मिलाप कायम करनेकी बात थी, वह भविष्यके लिए टल गया है। श्री बोसको देशी राज्य पसन्द नहीं हैं, लेकिन साथ ही उन्हें संघ-व्यवस्था भी अच्छी नहीं लगती। इसलिए नई केन्द्रीय संस्थाओंपर कांग्रेस-प्रभुत्व कायम करनेकी तैयारीके सिलसिलेमें राज्योंको मित्र बनानेकी कोशिशके प्रति उनकी कोई सहानुभूति नहीं हो सकती। बात यह है कि ब्रिटिश भारतके भाग्यका निबटारा ब्रिटिश भारत ही करे, इस दृष्टिसे वे देशी राज्योंको अभी पास नहीं फटकने देना चाहते। वैसे उनके मनमें यह मनसूबा तो है ही कि अन्ततः देशी नरेशोंको स्थान-च्युत करके देशी राज्योंको अपनी कल्पनाके स्वशासित भारतमें शामिल कर लें।"

श्री विलियम्स एक पुराने 'शत्रु' हैं। असहयोग आन्दोलनके दिनोंमें उन्होंने एक सरकारी अब्द-कोश (इयर-बुक) का सम्पादन किया था। उसमें उन्होंने अपनी

कल्पनाकी खींचतानके बलपर बहुत-सी बातें लिखीं, और जिन तथ्योंके उल्लेखसे वे किसी तरह बच नहीं सकते थे, उन्हें उन्होंने बिल्कुल अपने ही रंगमें रंगकर पेश किया। और अगर यह मान लें कि उपर्युक्त पत्रमें उनकी बातें सही-सही उद्धृत की गई हैं तो कहना होगा कि 'मैनचेस्टर गार्जियन' को लिखे अपने पत्रमें उन्होंने फिर वही भूमिका दोहराई है। यह कहना बिल्कुल गलत है कि कांग्रेस हाई कमानके दक्षिणपंथी लोग निश्चित रूपसे या किसी रूपमें वैसा रुख अपनाते जा रहे थे जिसकी कल्पना श्री विलियम्सने की है। मुसलमानोंके समर्थनके सम्बन्धमें कही गई बात दुष्टतापूर्ण है। मेरे मनमें क्या है, मैं जानता हूँ, और जहाँ तक कांग्रेसके मनकी बात मैं जानता हूँ वहाँ तक कह सकता हूँ कि न तो कांग्रेसने और न मैंने ही कभी भी इस बातकी कल्पना की है कि मुसलमानोंके समर्थनके बिना भी संघ-व्यवस्था कायम हो सकती है। सच तो यह है कि जब तक मुसलमान संघ-व्यवस्थाका विरोध कर रहे हैं तब तक कांग्रेसको उस व्यवस्थाके आनेकी कोई फ़िक्र करनेकी जरूरत ही नहीं है। इसलिए जब तक पूर्ण साम्प्रदायिक एकता स्थापित नहीं हो जाती तब तक कोई भी कांग्रेसी संघ-व्यवस्थाकी — चाहे वह सरकारी टकसालमें तैयार की गई हो या विशुद्ध स्वदेशी साँचमें — बात न सोच सकता है, न कर सकता है।

डॉ० पट्टाभिके बारेमें तो सारा हिन्दुस्तान जानता है कि जब मौलाना साहबने अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली तब अन्तिम क्षणमें उनकी उम्मीदवारीका खयाल आया और सो भी इसलिए कि तब सुभाष बाबूके अलावा केवल वही एक उम्मीदवार रह गये थे। राज्य प्रजा परिषद्से उनके सम्बन्धके कारण श्री विलियम्सको एक ऐसा तथ्य जरूर मिल गया जिसके सहारे वे अपनी काल्पनिक दलीलका महल खड़ा कर पाये।

रही सुभाष बाबूके सम्बन्धमें श्री विलियम्स द्वारा कही गई व्यंग्योक्तियाँ, सो सुभाष बाबू अपना बचाव स्वयं कर सकनेमें समर्थ हैं। लेकिन उनके साथ एक सालसे मेरा जो गहरा सम्पर्क रहा है उसके दौरान मैंने उन्हें कभी भी देशी राज्योंके बारेमें वैसा विचार व्यक्त करते नहीं सुना जैसा विचार रखनेका आरोप उनपर श्री विलियम्स लगाते हैं। मुझे पूरा यकीन है कि यदि देशी राज्य अपनी-अपनी प्रजाके साथ उचित बरताव करनेके बारेमें कांग्रेसके साथ किसी समाधानपर पहुँच जायें तो सुभाष बाबू किसी भी अन्य कांग्रेसी-जैसी उत्सुकतासे उनके साथ सौदा पटानेको तैयार हो जायेंगे। लेकिन वे संघ-व्यवस्थाकी स्थापनाका खयाल करके ऐसा नहीं करेंगे।

देशी राज्योंके आन्दोलनसे मेरा सम्बन्ध प्रसंगवश ही जुड़ गया है। देशी राज्योंमें उत्तरदायी शासनकी स्थापना अपने-आपमें एक लक्ष्य है और संघ-व्यवस्थासे — जिसकी स्थापना शायद कभी हो ही नहीं — उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। जब तक कांग्रेस और मुसलमान दोनों उस व्यवस्थाके लिए तैयार नहीं हो जाते तब तक तो वह स्थापित होगी ही नहीं। लेकिन देशी राज्योंकी प्रजाको स्वतन्त्रता

तो हर हालतमें मिलनी है। ऐसा नहीं हो सकता कि जिसे ब्रिटिश भारत कहा जाता है, वह तो स्वतन्त्र हो जाये और देशी राज्योंकी प्रजा जंजीरोंमें जकड़ी रहे।

सेर्गाव, २३ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-३-१९३९

५०९. तार : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको^१

[२३ फरवरी, १९३९]^२

राइट ऑनरेबिल शास्त्री
मद्रास

मुझे कतई खबर नहीं थी कि आपके विश्वविद्यालयमें कोई गम्भीर संकट था। कल मिलनेवाले विस्तृत पत्रसे धक्का लगा और मेरा मन आपके पास दौड़ गया। मुझे उन छात्रोंपर तरस आता है जो आपके नेतृत्वके इतने अयोग्य सिद्ध हुए हैं।

गांधी

अंग्रेजीकी प्रतिसे : प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य : प्यारेलाल।

५१०. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

सेर्गाव

२३ फरवरी, १९३९

बा,

तेरी शिकायत है कि मैं तुझे पत्र नहीं लिखता, लेकिन आज तेरा पत्र नहीं आया; क्या बात है? यहाँ सब ठीक ही चल रहा है। चिन्ता करनेकी कोई बात नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३४

१. श्रीनिवास शास्त्री इस समय अण्णामलै विश्वविद्यालयके उप-कुलपति थे।

२. देखिए “वक्तव्य : समाचारपत्रोंको”, पृ० ४९४।

५११. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको^१

२३ फरवरी, १९३९

राजकोटमें कैदियोंके और गाँवोंके अन्यान्य लोगोंके प्रति अमानुषिक व्यवहार किया जा रहा है और इसके खिलाफ कैदी भूख-हड़ताल कर रहे हैं, इस आशयके तार मेरे पास रोज आ रहे हैं। राजा साहबके वचन-भंगके फलस्वरूप जबसे संघर्ष दुबारा शुरू हुआ है तबसे राजकोटका मामला प्रतिदिन अधिकाधिक गम्भीर होता जा रहा है। पूछताछ करनेवाले, जो इस बातपर बहुत उद्विग्न हैं, यह जान लें कि मैं रियासतके अधिकारियोंसे तारोंके आदान-प्रदान द्वारा बातचीत चला रहा हूँ। ऐसी आशा करता हूँ कि शीघ्र ही मैं सब लोगोंको वस्तुस्थितिसे अवगत करा सकूँगा। इस दौरान सत्याग्रहियोंको यह समझ लेना चाहिए कि उन्हें सबसे पहले जो गुण प्रकट करना है वह है—प्रसन्नतापूर्वक और किसीके भी प्रति राग और द्वेष रखे बिना कष्ट सहनेकी अपरिमित क्षमता।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, २४-२-१९३९

५१२. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

२३ फरवरी, १९३९

लॉर्ड ब्रैबोर्नकी मृत्युके समाचारसे मुझे गहरा शोक हुआ है।^१ मुझे उनसे घनिष्ठ मित्रताका सौभाग्य प्राप्त था।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २४-२-१९३९

१. यह हरिजन, ४-३-१९३९ में भी “गांधीजीज स्टेटमेंट ऑन राजकोट” शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

२. लॉर्ड ब्रैबोर्नका, जो बम्बई तथा बंगालके गवर्नर रह चुके थे, २३ फरवरीको कलकत्तामें निधन हो गया था।

५१३. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको^१

२३ फरवरी, १९३९

अण्णामलै विश्वविद्यालयसे अपने एक साथीके नाम भेजा हुआ एक पत्र^२ मैंने कल देखा। इसमें विद्यार्थियोंकी हड़तालका सविस्तार विवरण है। पत्रके अनुसार हड़ताली छात्र हड़तालमें शामिल न होनेवाले छात्रोंको कक्षाओंमें जानेसे रोकनेके लिए प्रवेशद्वारोंके सामने जमीनपर लेट जाते हैं और जब कक्षाएँ लगती हैं तो वे कक्षाओंके कमरोंमें दाखिल हो जाते हैं, चिल्लाते हैं और दूसरे तरीकोंसे कक्षाओंका चलना असम्भव बना देते हैं। पत्रके अन्तमें कहा गया है कि यदि हड़तालियोंको यह पता चल जाये कि उनके द्वारा अपनाये गये तरीके मेरी रायमें अहिंसाके सिद्धान्तके विपरीत हैं तो वे शायद हड़ताल बन्द कर दें।

मैंने जो विवरण उद्धृत किया है यदि वह सही है तो मुझे यह कहनेमें कोई संकोच नहीं है कि हड़तालियों द्वारा अपनाये गये तरीके अहिंसात्मक तो हैं ही नहीं अपितु वे निश्चित रूपसे हिंसात्मक हैं। मैं हड़तालियोंसे प्रार्थना करूँगा कि वे जो तरीके अपना रहे हैं उनसे बाज आ जायें और जो छात्र कक्षाओंमें जाना चाहते हैं उन्हें बिना किसी रुकावटके जाने दें।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २३-२-१९३९

५१४. तार : वाइसरायके निजी सचिवको

२४ फरवरी, १९३९

वाइसरायके निजी सचिव
नई दिल्ली।

राजकलेटके प्रथम सदस्यको निम्नांकित तार भेजा है :^३
कृपया इसे वाइसराय महोदयके आगे प्रस्तुत कीजिए।

गांधी

अंग्रेजीकी प्रति (सी० डब्ल्यू० ७८११) से; सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला।

१. यह हरिजन, ४-३-१९३९ में “ स्टुडेन्ट्स स्ट्राइक पेट अण्णामलै ” शीर्षकके अन्तर्गत प्रकाशित हुआ था।

२. देखिए “ क्या यह अहिंसा है ? ”, पृ० ५०७-१०।

३. तारके पाठके लिए देखिए “ वक्तव्य : समाचारपत्रोंको ”, पृ० ४९८-५०२।

५१५. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

सेगाँव

२४ फरवरी, १९३९

बा,

अब तो तुझे पत्र मिलते रहते होंगे। लड़कियोंसे जितनी सेवा ली जा सकती है, उतनी तो लेता हूँ। धीरज और हिम्मतसे काम लेना। सभी ठीक होकर रहेगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना बाने पत्रो, पृ० ३४

५१६. बातचीत : एक आश्रमवासीके साथ^१

सेगाँव

२४ फरवरी, १९३९

कौन जानता है? परन्तु लगता है, वैसा नहीं होगा। मुझे आशा है कि यह यात्रा बहुत थोड़े समयकी होगी। राजकोटके राज-परिवारसे मेरे सम्बन्ध ऐसे हैं कि मैं उनसे साफ-साफ बातचीत कर सकता हूँ। या तो ठाकुर साहब इकरारनामेको बहाल करेंगे या मुझे रेजिडेंटसे बात करनेको कहेंगे और उनके साथ यह मामला निवटानेमें मुझे देर नहीं लगेगी। मामला इतना स्पष्ट है कि मुझे किसी गम्भीर प्रतिरोधकी आशंका नहीं है। इसमें मेरी अहिंसाकी कसौटी भी होगी। लोग सोच सकते हैं कि बुढ़ापेमें मुझपर यह क्या सनक सवार हो गई है कि मैं राजकोट-जैसी छोटी-सी रियासतको इतना महत्व देता हूँ। परन्तु मेरे मनकी रचना ऐसी ही है। जब मेरी नैतिक भावनापर आघात होता है तब मैं चुप नहीं बैठा रह सकता।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २५-३-१९३९

१. प्यारेलाके “द राजकोट फाइट” से उद्धृत। राजकोट जानेका गांधीजीका निर्णय सुननेपर एक आश्रमवासीने उनसे पूछा था कि उनके कबतक वापस आनेकी आशा है और क्या राजकोटमें कस्तूरबाकी तरह उनके भी “राज्यका मेहमान” बनाये जानेकी सम्भावना है।

५१७. पत्र : विजयाबहन म० पंचोलीको

[२५ फरवरी, १९३९ के पूर्व]^१

चि० विजया,

अब तो मैं तेरे नजदीक आ रहा हूँ। इसका मतलब यह नहीं कि तुम दोनों को राजकोट आना चाहिए। अपना स्वास्थ्य ठीक करना। बीमार मत पड़ना। अब तो आनन्दमें होगी।

बापू के आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१०५) से।

५१८. दानकी जगह काम^२

जो भूखे और बेकार हैं उन्हें भगवान केवल एक ही विभूतिके रूपमें दर्शन देनेकी हिम्मत कर सकते हैं; वह विभूति है काम और अन्नके रूपमें वेतनका आश्वासन।

नंगोंको जिनकी जरूरत नहीं है ऐसे कपड़े देकर मैं उनका अपमान नहीं करना चाहता। मैं उसके बदले उन्हें काम दूँगा क्योंकि उसीकी उन्हें सख्त जरूरत है। मैं उनका आश्रयदाता बननेका पाप कभी नहीं करूँगा। लेकिन यह महसूस करनेपर कि उनको तबाह करनेमें मेरा भी हाथ रहा है, मैं उन्हें समाजमें सम्मानका स्थान दूँगा। उन्हें जूठन या उतरन तो हरगिज नहीं दूँगा। मैं उन्हें अपने अच्छे-अच्छे खाने और कपड़ेमें हिस्सेदार बनाऊँगा और उनके परिश्रममें खुद योग दूँगा। बिना प्रामाणिक परिश्रमके किसी भी चंगे मनुष्यको मुफ्तमें खाना देना मेरी अहिंसा बरदाश्त ही नहीं कर सकती। अगर मेरा वश चले तो जहाँ मुफ्त खाना मिलता है ऐसा प्रत्येक 'सदावर्त' या 'अन्नछत्र' मैं बन्द करा दूँ। उनकी बदौलत राष्ट्रका पतन हुआ है, और आलस्य, सुस्ती, दंभ तथा गुनहगारीको बढ़ावा मिला है।

हरिजन-सेवक, २५-२-१९३९

१. २५ फरवरीको गांधीजी राजकोटके लिए रवाना हो गये थे।

२. मूल रूपमें यह लेख गांधी सेवा संघकी मासिक पत्रिका सर्वोदय में प्रकाशित हुआ था।

५१९. पत्र : लॉर्ड लिनलिथगोको

सेगाँव, वर्धा
२५ फरवरी, १९३९

प्रिय लॉर्ड लिनलिथगो,

राजकोट रियासतके नाम मेरे तारका पाठ आपको कल रात तारसे भेजा गया था।^१ तथापि, मैं उसकी एक प्रति, साथ ही राजकोट का उत्तर और उसपर मेरे जवाबकी प्रतियाँ भी संलग्न कर रहा हूँ।

मेरे लिए राजकोटका प्रश्न एक अत्यन्त महत्वपूर्ण नैतिक प्रश्न बन गया है। मैं आशा करता हूँ कि आप इसे समझते हैं और हर प्रकारसे आप मेरी सहायता करेंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्मसे: लॉर्ड लिनलिथगो पेपर्स; सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार।

५२०. पत्र : अकबर हैदरीको^२

सेगाँव, वर्धा
२५ फरवरी, १९३९

प्रिय सर अकबर,

आपके इसी माहके पत्रोंके लिए, जिनमें से दो १६ तारीखके और एक २१ तारीखका है, आभारी हूँ।

राज्य-कांग्रेसके बारेमें अभी फिलहाल तो हमें मान लेना चाहिए कि इस विषयमें हमारा मतभेद है। राज्य-कांग्रेसको दी गई मेरी सलाह आपने देखी ही होगी।^३ लेकिन इस बातको और ज्यादा सुनिश्चित करनेके लिए मैं सम्बन्धित कतरन

१. देखिए “तार: वाइसरायके निजी सचिवको”, पृ० ४९४ और “वक्तव्य: समाचारपत्रोंको”, पृ० ४९८-५०२।

२. पत्रकी फोटो-नकल १९६९-७० में नई दिल्लीमें आयोजित गांधी-दर्शन प्रदर्शनी, आन्ध्र प्रदेशके मण्डपमें प्रदर्शित की गई थी।

३. देखिए पृ० २६८-९।

४९७

इसके साथ संलग्न कर रहा हूँ। आपने राज्य-कांग्रेसका वह घोषणापत्र भी देखा होगा जिसमें मेरी सलाह मानी गई है। आप शायद यह कहेंगे कि सलाह मानना भी काफी नहीं है। तथापि, मैं आशा रखता हूँ कि किसी दिन आप मुझसे सहमत हो जायेंगे और राज्य-कांग्रेसके कैदियोंको रिहा कर देंगे और उसे सामान्य रूपसे कार्य करने देंगे।

जहाँ तक महात्मा नारायणस्वामीका सम्बन्ध है, आपने जो-कुछ कहा है वह मैं समझता हूँ। मुझे खुशी है कि मैंने इस मामलेका जिक्र आपसे किया।^१ अब मैं अपने सूचना देनेवालोंको इस बातपर राजी करनेकी कोशिश कर रहा हूँ कि वे उस गलतीको सुधार लें जो मैं समझता हूँ उनसे बिल्कुल अनजानेमें हो गई है।

कैदियोंके बारेमें आपके पत्रोंके सन्दर्भमें मैं आपकी इस बातसे सहमत नहीं हो सकता कि घी भी विलासकी वस्तु है। परन्तु मैं आपका सुझाव ध्यानमें रखूँगा और किसी ऐसे व्यक्तिका नाम अवश्य सोच निकालूँगा, जिससे मैं जाकर आपकी जेलोंको देखनेके लिए कह सकूँ।

मुझे खुशी है कि आप स्वस्थ हो गये हैं और प्रस्तावित सुधारोंपर काम कर रहे हैं। वे प्रस्ताव, मुझे आशा है, समयकी भावनाके अनुकूल होंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १००९८) से; सौजन्य : आन्ध्रप्रदेश सरकार।

५२१. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको^२

२५ फरवरी, १९३९

मेरे और राजकोटकी राज्य परिषद्के प्रथम सदस्य^३ के बीच निम्नलिखित तारोंका व्यवहार^४ हुआ है:

सुना है कि सरधारमें बन्दियोंके साथ अमानुषिक बर्तावके कारण राजकोटकी जेलमें सत्याग्रही राजबन्दी अनशन कर रहे। क्या आप इसपर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं? — गांधी (दिनांक २०-२-१९३९)

आपका तार मिला। मैं कल खुद सरधार गया था। कैदियोंके साथ दुर्व्यवहार किये जानेकी बात बिल्कुल असत्य है। — परिषद्का प्रथम सदस्य (दिनांक २२-२-१९३९)

१. देखिए पृ० ४८७।

२. यह वक्तव्य हरिजन, ४-३-१९३९ में “गांधीजीज स्टेटमेंट ऑन राजकोट” शीर्षकके अन्तर्गत भी छपा था।

३. खान बहादुर फतेह मोहम्मद खान।

४. यहाँ उद्धृत तार किसी अन्य सूत्रसे प्राप्त नहीं हो सके।

तारके लिए धन्यवाद। अनशनके बारेमें आपके तारमें कुछ नहीं लिखा है। ज्यादातियोंके बारेमें एक और लम्बा तार आया है, जिसपर विश्वास न करना मेरे लिए मुश्किल है। दिनों-दिन यह इच्छा प्रबल होती जा रही है कि मैं खुद कूद पड़ूँ। ठाकुर साहबके वचन-भंगका कष्ट अब आतंकपूर्ण कार्योंकी अधिकाधिक खबरें मिलनेके कारण असह्य हो गया है। ठाकुर साहब या परिषद् को झमेलेमें डालनेकी मेरी बिलकुल इच्छा नहीं है। मैं चाहता हूँ कि आप इस बूढ़ेकी बात सुन लें, जो राजकोटका मित्र होनेका दावा करता है।
— गांधी (दिनांक २१-२-१९३९)

सरधारके बन्धियोंके साथ दुर्व्यवहार किये जानेके आरोपोंमें जरा भी सच्चाई नहीं है। सारी कहानी कपोल-कल्पित है। राजकोटके जैसी ही दैनिक खाने-पीने और सोनेकी व्यवस्था वहाँ भी है। इसी आशयकी सूचना मैंने स्थानीय जेलके उन बन्धियोंको, जो अनशनपर हैं, लिखकर दे दी है। इसपर भी वे अविचारपूर्वक अनशन करनेपर तुले हुए हैं। आपको मैं विश्वास दिलाता हूँ कि [कैदियोंके साथ] उचित बर्ताव हो, इसके लिए जो-कुछ सम्भव है वह सब किया जा रहा है। कृपाकर फिक्र न कीजिए। — प्रथम सदस्य (दिनांक २३-२-१९३९)

अगर सब समाचार कपोल-कल्पित ही हैं, तो मेरे और मेरे सहकर्मियोंके लिए यह बड़ी गम्भीर बात है। अगर इनमें सच्चाई है, तो यह राज्यके अधिकारियोंके लिए बुरी बात है। इधर, अनशन भी जारी है। मेरी चिन्ता असह्य है। इसलिए, मैं तो कल रातको राजकोट रवाना होनेका विचार कर रहा हूँ। मेरे साथ एक चिकित्सा सहायक, सचिव और टाइपिस्ट रहेंगे। मैं सत्यकी खोजमें और शान्ति स्थापित करनेवालेके रूपमें राजकोट आ रहा हूँ।

मेरी गिरफ्तार होनेकी इच्छा नहीं है। मैं खुद सारी बातें जानना चाहता हूँ। अगर सहकर्मियोंपर बातें गढ़नेका दोष साबित हो जायेगा, तो मैं उसका पर्याप्त प्रायश्चित्त करूँगा। ठाकुर साहबसे भी प्रार्थना करूँगा कि उन्होंने प्रजाके साथ जो वचन-भंग किया उसका वे परिमार्जन कर दें। मैं प्रजासे कहूँगा कि वह कोई प्रदर्शन न करे और सरदारसे कह रहा हूँ कि मेरे शान्ति-प्रयत्नोंके दौरान राजकोटमें स्थानीय या बाहरी लोगों द्वारा जो सत्याग्रह चल रहा है, उसे मुलतवी रखा जाये।^१ अगर सद्भाग्यसे ठाकुर साहब और परिषद् समझौतेको इस शर्तके साथ ही सही फिरसे ज्यों-का-त्यों मान लें कि सुधार-कमेटीके सदस्योंमें [दोनों पक्षोंकी सहमतिसे] कुछ हेरफेर किया जा सकेगा, और राजबन्दी फौरन छोड़ दिये जायें तथा जुर्माने वापस कर दिये जायें, तो मैं अपनी प्रस्तावित यात्रा रद कर दूँगा। सुधार-कमेटीके सदस्योंके बारेमें समझौता करनेके लिए पूरे अधिकार देकर बातचीत की खातिर आप किसी अधिकारीको यहाँ भेज सकते हैं। सरदार पटेल द्वारा नामजद किये गये

सदस्योंका बहुमत रहनेकी शर्त है। ईश्वर ठाकुर साहब और उनकी परिषद्के सदस्योंका मार्ग-दर्शन करे। क्या मैं एक्सप्रेस तारसे जवाबकी आशा करूँ?
— गांधी (दिनांक २४-२-१९३९)

अपने तारके बाद आपको मालूम हुआ होगा कि कल रातको अनशन भंग कर दिया गया। श्री नानालाल जसाणी और श्री मोहनलाल गढ़ादावालाके तारसे आपको विश्वास हो गया होगा कि अनशनका कोई औचित्य नहीं था। ठाकुर साहब ऐसा नहीं समझते कि उनकी तरफसे वचन-भंग किया गया है और इस बातके लिए वे बहुत उत्सुक हैं कि उनके द्वारा नियुक्त की गई प्रतिनिधि-कमेटी शान्त परिस्थितिमें अपना कार्य शुरू करे, ताकि जहाँ तक हो सके जल्दी-से-जल्दी वे कमेटीकी सिफारिशोंपर विचार करके जिन सुधारोंको ठीक समझें, लागू कर दें। ठाकुर साहबका विचार है कि ऐसी हालतमें आप भी मानेंगे कि आपके अभी आनेसे कोई फायदा नहीं हो सकता। वे एक बार फिर आपको आश्वासन देते हैं कि न तो कोई ज्यादाती या आतंकपूर्ण कार्रवाई करने दी गई है, और न करने दी जायेगी। — प्रथम सदस्य (दिनांक २४-२-१९३९)

आपका तार मेरी हार्दिक प्रार्थनाका कोई जवाब नहीं है। मैं अपने शान्तिके मिशनपर आज राजकोटके लिए रवाना हो जाऊँगा। — गांधी (दिनांक २५-२-१९३९)

ये तार अपनी कहानी खुद कहते हैं। मुझे खुशी है कि अनशन तोड़ दिया गया है। इससे चिन्ताका एक कारण दूर हो गया है। लेकिन दुर्व्यवहारके समाचार बनावटी होनेका उनका आरोप कायम है। राजकोटके कई कार्यकर्ताओंको मैं खुद जानता हूँ। अगर उन्होंने अधिकारियोंके खिलाफ ज्यादातियोंके आरोप गढ़नेके लिए झूठका सहारा लिया है, तो मुझे और उन साथियोंको इसका पूरा परिमार्जन करना पड़ेगा। दूसरी रियासतोंके संघर्षोंकी तरह राजकोटका संघर्ष भी भारतकी स्वतन्त्रताके संघर्षका ही एक हिस्सा है। एक-दूसरेपर कीचड़ उछालनेसे कभी काम नहीं बनता। सत्यका जरूर पता लगाना चाहिए।

राजकोट राज्य-परिषद्के प्रथम सदस्यका तार इस बातसे इनकार करता है कि कोई वचन-भंग किया गया है। इससे मैं चकरा गया हूँ और मेरी समझमें नहीं आता कि इस खण्डनके क्या मानी हैं। समझौतेकी सूचना और उसके बाद सरदार पटेलसे मतभेद होनेकी सूचना, इन दोनोंको पढ़ा जाये तो उनमें साफ विरोध देखा जा सकता है।

मैंने यह कहा है कि इस वचन-भंगके लिए राजकोटका रेजिडेंट जिम्मेदार है।^१ मुझे यह कहा गया है कि मैंने आरोप लगानेमें जल्दी की है और इसका दूसरा पक्ष भी है। अगर ऐसा है, तो मेरा यह फर्ज है कि मैं उसे जानूँ। मैं उनसे मुलाकात करनेकी कोशिश करूँगा और अगर मुझे यह मालूम हुआ कि मैंने उनके साथ

गैर-इत्साफी की है, तो मैं सार्वजनिक रूपसे माफी माँगूंगा। मैं समझता हूँ कि एक-दूसरेपर दोषारोपण होते रहनेकी हालतमें तकलीफें जारी रहने देना अनुचित है। इस बारेमें मैं जो कम-से-कम कर सकता हूँ, वह यह है कि मैं राजकोट जाऊँ और सत्यका पता लगाकर ठाकुर साहबको इस बातके लिए आमन्त्रित करूँ कि जो प्रत्यक्ष ही वचन-भंग है उसे वे दुरुस्त करें। अलबत्ता, यदि मुझे यह मालूम हो जाये कि इस आरोपका खण्डन किसी प्रकार उचित ठहराया जा सकता है तो और बात है।

अगर कार्यकर्ताओं द्वारा लगाये गये आरोप सच हैं, तो इस बातका प्रयत्न किया जायेगा कि कोई ऐसा रास्ता निकाला जाये, जिससे कि मनुष्यके सबसे निकृष्ट भावोंका ऐसा प्रदर्शन न हो सके। उसको उसकी निकृष्ट भावनाओंसे बचाया जाना चाहिए। स्वातन्त्र्य युद्ध अगर अहिंसक है तो उसका यह भी काम है कि चाहे अधिकारियोंमें गुण्डे हों या प्रजामें, उनको सुधारा जाना चाहिए। राजकोट आकर मुझे अपना पूरा जोर लगाकर समाजके गुण्डोंसे निपटनेका रास्ता खोजना है। इस मामलेमें राजकोटका मामला एक आजमाइश है। मैं इसलिए राजकोट जा रहा हूँ कि मैं, जैसाकि मैं हमेशा कहता रहा हूँ, अब भी रियासतोंका वही पुराना मित्र हूँ।

इस बातसे मुझे बहुत तकलीफ होती है कि किन्हीं परिस्थितियोंसे — जिन्हें मैं शायद सर्वांशमें नहीं जानता — लाचार हो जानेके कारण राजकोटके ठाकुर साहबको प्रजाको दिये गये वचनका उल्लंघन करना पड़ा। मेरी रायमें अगर हिन्दुस्तान-भरके नहीं तो कम-से-कम काठियावाड़के राजाओं और उनके सलाहकारोंका यह कर्तव्य है कि वे इस गलतीको, अगर यह गलती ही हो तो, दुरुस्त करायें। यदि विश्वासकी कोई कीमत ही न रहे, तो फिर कोई सम्मानपूर्ण आपसी समझौता असम्भव हो जाता है। जब मैं विश्वास-भंग होते देखता हूँ, जैसाकि इस मामलेमें हुआ है, तो मुझे जीवन भार-सा मालूम होने लगता है। यह बताना अनुचित न होगा कि समझौतेका मसविदा^१ मैंने ही बनाया था, जिसपर मामूली हेरफेरके बाद ठाकुर साहबने दस्तखत किया था। मैं यह जानता हूँ कि सरदार वल्लभभाई पटेलने इस बातमें कोई कोशिश उठा न रखी थी कि अच्छी तरह सोच-समझकर ही उसपर दस्तखत किये जायें।

चूँकि मैं शान्तिके सन्देशवाहकके रूपमें ही राजकोट जा रहा हूँ, अतः मैंने सरदार पटेलसे कहा है कि जब तक मैं प्रभुके मार्गदर्शनमें कष्ट दूर करनेके लिए अपना विनम्र प्रयत्न कर रहा होऊँ तब तकके लिए राजकोटमें सत्याग्रह-आन्दोलन स्थगित रखें। शरीर इन दिनों अस्वस्थ है इसलिए जनताको चाहिए कि वह स्टेशनों पर कोई प्रदर्शन न करे। आन्दोलन स्थगित रखनेकी अवधिमें राजकोटवासियोंको अधिकारियोंकी बात माननी चाहिए। समझौतेकी बातचीतके दौरान मुझे कोलाहलसे बचे रहनेकी जरूरत है। जिनका प्रार्थनामें विश्वास है, मैं उनकी मूक प्रार्थना-भर चाहता हूँ। हालाँकि हिन्दुस्तानके मानचित्रमें राजकोट एक बिन्दुके समान है, तो भी

जिस सिद्धान्तकी प्रतिष्ठाके लिए मैं राजकोट जा रहा हूँ, वह ऐसा है जिसके बगैर समाज छिन्न-भिन्न होनेसे बच नहीं सकता।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २५-२-१९३९

५२२. पत्र : मणिलाल गांधीको

सेगाँव, वर्धा

२५/२६ फरवरी, १९३९

चि० मणिलाल,

तेरा पत्र कल मिला। तू बांचनेवाला कमालका है, श्लेसिन भी कमाल की है। 'मा' पढ़नेके बदले 'एम० ए०' क्यों नहीं पढ़ा? किसी स्त्रीको भेजेनेकी बात ही कहाँ थी? मैंने तो श्लेसिनके सुझावके अनुसार काम किया। जिस आदमीको भेजना है, वह महादेवकी बहन निर्मलाके पतिका भाई है। तुझे तार करके पूछना चाहिए था।

२६ फरवरी, १९३९

लेकिन मैं आशा करता हूँ कि महादेवने तुझे सारा विवरण लिख दिया होगा। न लिखा हो तो भी अब तो तू समझ गया होगा। इसका वेतन अगर तू वहाँसे न दे सके, तो यहाँसे देनेकी व्यवस्था है। गुजराती, अंग्रेजी वगैरहका काम सँभाल सकता है। तुझपरसे बड़ा बोझ उतर जायेगा। अब तुझे जैसा करना हो, वैसा तार करना। यदि तुझे इसे बुलानेकी अनुमति न मिले, तो वैसा तार करना।

मि० कैलेनबैक अच्छे हो गये हैं। यों अभी सावधानीकी जरूरत तो है ही। मैं राजकोट जा रहा हूँ। इसकी चिन्ता मत करना। आशा करता हूँ कि काम निबटा कर ही वापस लौटूँगा। भगवानकी प्रेरणासे जा रहा हूँ। जो वे करायेंगे सो कहेँगा। बा भी मजेमें है। कांग्रेसके बारेमें भी चिन्ता मत करना। तू अपने काममें डूबा रहे, इतना ही काफी है।

मेरे साथ प्यारेलाल, सुशीला और कन्हैया हैं। रामी, मनु वगैरह आकर मिल गये। राजकुमारी सेगाँवमें है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८९५) से।

५२३. वचनकी रक्षाका प्रश्न

बम्बईके रास्ते राजकोट जाते हुए मुझे सारा दिन काठियावाड़ मेलके लिए इन्तजार करना पड़ रहा है। यह वक्त मैं 'हरिजन' के लिए लिखनेमें लगा रहा हूँ और मैंने निम्नांकित टिप्पणी पढ़ी :

बम्बई-कर्नाटक प्रदेशकी छोटी-सी रियासत रामदुर्गको, जिसका क्षेत्रफल १६९ वर्गमील, आबादी ३३,९९७ और राजस्व २,६९,००० रुपये है, दुर्भिक्ष तथा पिछले कुछ-एक सालोंमें कीमतीमें गिरावटके फलस्वरूप मंदी आ जानेके कारण बड़ी कठिन स्थितिका सामना करना पड़ा। २० मार्च, १९३८ को कुछ किसान गाँवोंसे निकलकर महलके सामने इकट्ठे हुए और उन्होंने राजा साहबसे प्रार्थना की कि वे भू-राजस्वके बारेमें उन्हें कुछ छूट दें। महलके सामने इकट्ठे हुए लोगोंकी ओरसे यह आरोप लगाया गया कि उन लोगोंको रामदुर्गकी पुलिस ने लाठीचार्ज करके तितर-बितर किया। दूसरी ओर, रियासतके अधिकारियोंने इन आरोपोंका खण्डन किया। ऐसा लगता है कि लोगोंकी ओरसे कोई निश्चित माँगें नहीं रखी गई थीं, न ही उनकी ओरसे बातचीत करनेवाली कोई संस्था ही थी। कुछ समय बाद रियासतके कुछ लोग श्री यालगीके पास, जो कांग्रेसी हैं और कर्नाटक प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके सचिवोंमें से एक हैं, गये और उनसे प्रार्थना की कि वे स्वयं रामदुर्ग जाकर वहाँकी स्थितिका निरीक्षण करें। इसके मुताबिक श्री यालगी अप्रैलमें रामदुर्ग गये और उन्होंने वहाँके लोगोंको सलाह दी कि वे अपनी माँगें अधिकारियोंके समक्ष प्रस्तुत करनेके लिए एक समिति संगठित करें। उनकी सलाहके मुताबिक रामदुर्ग संस्थान प्रजा संघकी स्थापना हुई और इस संघकी ओरसे माँगें तैयार करके राजा साहबके आगे प्रस्तुत की गई।

दक्कनकी रियासतोंकी जनताका एक सम्मेलन सांगलीमें २२ मई, १९३८ को सरदार वल्लभभाई पटेलकी अध्यक्षतामें हुआ। २२ को वह सांगलीसे रवाना हो गये। परन्तु सम्मेलन श्री गंगाधरराव देशपाण्डेकी अध्यक्षतामें चलता रहा।

२३ ता० को रामदुर्गका सवाल विचारार्थ लिया गया और यह निश्चय किया गया कि रामदुर्गके मामलेकी जाँच-पड़ताल करके रिपोर्ट देनेके लिए निम्न-लिखित सदस्योंकी एक समिति बनाई जाये: (१) कर्नाटक प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष श्री गंगाधरराव देशपाण्डे, (२) कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्य श्री शंकरराव देव, (३) रामदुर्ग प्रजा संघके अध्यक्ष श्री मुनोली, (४) दक्षिणी

राज्य प्रजा परिषद् के सचिव श्री कानाबूर, (५) श्री अदानेप्पा डोहामेट्टी, सदस्य विधानसभा, (६) श्री के० एस० पाटिल, सदस्य विधानसभा, और (७) रामदुर्ग राज्यके एक नागरिक और हुबलीके वकील श्री आरी। इस दौरान रामदुर्ग दरबारने स्वयं अपनी ओरसे एक सरकारी विज्ञापित जारी करके कुछ छूट देनेकी घोषणा कर दी। परन्तु इससे लोगोंको सन्तोष नहीं हुआ और आन्दोलन गम्भीर रख अख्तियार करने लगा। . . .

इसके बाद सांगलीमें बनाई गई समितिके सदस्य ५ जून, १९३८ को रामदुर्ग गये और उन्होंने जाँच शुरू की। समिति और रामदुर्ग प्रजा संघ दोनोंने महसूस किया कि मात्र जाँच करने और रिपोर्ट दे देनेसे काम पूरा नहीं होगा। इसलिए संघने समितिसे प्रार्थना की कि रामदुर्ग दरबारको प्रस्तुत की गई माँगोंके बारेमें समझौता करनेकी व्यवस्था की जाये।

मामलेपर दो घंटे बहस होती रही और ६ जूनको श्री देवको पूरा अधिकार दे दिया गया कि वे मतभेदोंको तय कर लें। उत्तरदायित्व स्वीकार करते हुए श्री देवने लोगोंके सामने यह स्पष्ट कर दिया कि वे लोग जो-कुछ कर रहे हैं, उसके क्या-क्या फलितार्थ होंगे। समितिकी ओरसे श्री देवने माँगें तैयार कीं और राजासाहबके आगे रखीं। कुछ विचार-विनिमयके बाद राजासाहबकी इच्छासे यह मामला मुलतवी कर दिया गया। तथापि, अधिकांश सुझाव थोड़े-बहुत संशोधनों सहित राजा साहबने मान लिये। श्री देशपाण्डेने जो-कुछ भी हुआ था, उसके बारेमें सरदारको लिखा। उन्होंने सरदारको बताया कि प्रजा संघकी माँगें क्या थीं और राजा साहबने उनमें से कितना-कुछ स्वीकार किया है। उत्तरमें सरदारने ११ जूनको श्री देशपाण्डेको लिखा कि राजासाहबने समझौतेकी जो शर्तें अपनी ओरसे करनी हैं, वे बहुत अच्छी हैं और लोगोंको सलाह दी जाये कि वे उसे मान लें।

यद्यपि श्री देवको शर्तें तय करनेके लिए पूरा अधिकार दिया गया था तो भी उन्होंने २१ जूनको श्री मुनोली और प्रजा संघकी प्रबन्ध समितिके सभी सदस्योंको करार की शर्तोंसे अवगत कराया और लम्बी बातचीतके बाद राजा साहब और अपने बीच तय की गई शर्तोंके बारेमें उनकी सहमति प्राप्त की। श्री शास्त्रीको, जो अनुपस्थित थे, छोड़कर सांगली-सम्मेलन द्वारा नियुक्त समितिके बाकी सभी सदस्य भी इससे सहमत थे। शर्तोंकी स्वीकृतिकी सूचना राजा साहबको दे दी गई। उसी शामको महलमें दरबार लगा जिसमें प्रजा संघके अध्यक्ष और प्रतिनिधि तथा रामदुर्गके प्रमुख व्यक्ति आमन्त्रित किये गये। राजा साहबने अपने प्रारम्भिक भाषणमें अपने शासनके इतिहासका विहंगावलोकन करते हुए समझौतेकी शर्तोंकी रूपरेखा बताई। तब राज्यके दीवान राव बहादुर प्रधानने घोषणापत्र पढ़कर सुनाया जिसमें समझौतेकी शर्तें स्पष्ट की गई थीं। उसके बाद संघकी

ओरसे, प्रजा संघके अध्यक्षने राजा साहबका यथोचित धन्यवाद किया। दरबार समाप्त होनेपर श्री देव और दूसरे लोग सार्वजनिक सभामें गये। सभामें १२,००० से ज्यादा लोग उपस्थित थे। प्रजा संघके अध्यक्षने सभा की अध्यक्षता की। जब श्री गंगाधरराव देशपाण्डे समझौतेकी शर्तोंका स्पष्टीकरण कर रहे थे तब सभाके एक कोनेमें थोड़ी-सी गड़बड़ नजर आई। यह पता लगा कि वे लोग सुरेबनके जुलाहे थे। श्री अंदानप्पा दोड़डामेति उस कोनेमें गये और शान्ति स्थापित करनेमें सफल हुए। श्री देशपाण्डेके बाद श्री अंदानप्पा एक घंटेसे ज्यादा देर तक बोले और उन्होंने शर्तोंको विस्तारसे समझाया और उनका जोरदार समर्थन किया। उनके भाषणसे श्रोताओंको शर्तोंके औचित्यका पूरा विश्वास हो गया और उनका भाषण तुमुल हर्षध्वनिके साथ समाप्त हुआ। श्री देवने भी छोटा-सा भाषण दिया और उन्होंने लोगोंसे कहा कि वे स्वीकृत सुधारोंको कार्यान्वित कर अपनी स्थितिको मजबूत बनायें। अध्यक्ष श्री मुनोलीने अपने अत्यन्त मार्मिक समापन भाषणमें समझौतेकी सभी शर्तोंका समर्थन किया और वहाँ उपस्थित लोगोंसे उन्होंने पूछा कि आपका मुझपर विश्वास है या नहीं। श्रोताओंने एक स्वरमें 'हाँ' कहा। तब उन्होंने उनसे शर्तें मान लेनेके लिए कहा और वे सहमत हो गये। सभाकी समाप्तिपर रियासतका एक अधिकारी अध्यक्षके हस्ताक्षर करवानेके लिए उनके पास एक कागज लाया, जिसमें समझौतेकी शर्तें लिखी हुई थीं। अध्यक्ष मुनोलीने उपस्थित लोगोंसे फिर पूछा कि वे उसपर हस्ताक्षर कर दें या नहीं। उन्होंने न केवल उपस्थित जनसमुदायकी ही अपितु प्रजा संघके प्रतिनिधियोंकी भी सहमतिसे उस दस्तावेजपर दस्तखत कर दिये।

कर्नाटक प्रान्तीय कांग्रेसकी प्रबन्धक समितिने निम्नांकित प्रस्ताव पारित किया :

“ समिति रामदुर्ग, जामखण्डी, मीरज (बड़ा), मीरज (छोटा) और मुधोलके लोगोंको इस बातकी बधाई देती है कि उन्हें अपनी शिकायतें दूर करवानेके लिए किये गये संघर्षमें सफलता मिली है। समितिको विश्वास है कि वे निकट भविष्यमें पूर्ण उत्तरदायी सरकारकी स्थापनाके लिए अहिंसात्मक और शान्तिपूर्ण उपायोंसे अपने संगठनोंको मजबूत बनायेंगे।

“ यह समिति प्रजाकी माँगोंको तत्काल मान लेनेके लिए उपर्युक्त रियासतोंके शासकोंके प्रति प्रशंसाका भाव अभिव्यक्त करती है और विश्वास करती है कि दोनों पक्ष जल्दी ही समझौतेकी शर्तोंको कार्यान्वित कर देंगे। यह समिति कर्नाटककी सभी रियासतोंसे प्रार्थना करती है कि वे उपर्युक्त रियासतों द्वारा अपनाई गई उदार नीतिका अनुसरण करें।

“किन्तु, इस समितिको यह देखकर बड़ा दुःख होता है कि कुछ लोग, विशेषकर कुछ कांग्रेस-जन यह तर्क देकर विरोधी प्रचार कर रहे हैं कि जनता और रामदुर्ग के राजा के बीच यह समझौता कतिपय प्रसिद्ध कांग्रेसी नेताओं के प्रयत्नों से हुआ है। यह समिति उनसे विरोधी प्रचार न करने की प्रार्थना करती है और उसका यह निश्चित मत है कि केवल समझौते का पालन करने से ही लोगों की भलाई हो सकती है।”

मैंने इसमें से कुछ अंश, जिसका मेरे उद्देश्य से सम्बन्ध नहीं था, निकाल दिया है। ऐसा लगता है कि रामदुर्ग प्रजा संघ की ओर से ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है कि राजा को आतंकित करके उन्हें और ज्यादा छूट देने के लिए विवश किया जाये। राजा साहब कांग्रेस की सहानुभूति खोने के डर से शरारत करने वालों के खिलाफ कार्रवाई नहीं कर रहे हैं। मुझे यह सवाल पूछा जा रहा है कि समझौते से सम्बन्धित कांग्रेसजनों को क्या करना चाहिए। यह मानते हुए कि मुझे जो सूचना मिली वह सही है, मेरा बिल्कुल साफ उत्तर यह है कि उन्हें प्रान्तीय समिति द्वारा किये गये समझौते का पालन तो हर हालत में करना ही है। मैं राजकोट के ठाकुर साहब से यह प्रार्थना करने राजकोट जा रहा हूँ कि वे अपने वचन का पालन करें। उन्होंने जो-कुछ किया है उसे मैं वचन-भंग मानता हूँ और उससे बहुत विक्षुब्ध हूँ। कांग्रेस के बारे में भी मेरा यही जवाब है। राजकोट देशी राजाओं का प्रतिनिधित्व करता है। उसका यश या अपयश सभी राजाओं का यश या अपयश है। यदि कोई प्रतिनिधि कांग्रेसजन अपना वचन तोड़ता है तो सारी कांग्रेस की प्रतिष्ठा पर आंच आती है। यदि प्रान्तीय कांग्रेस समिति अपने वचन का पालन नहीं कर सकती तो प्रतिष्ठा की कितनी बड़ी हानि होगी? कांग्रेस सारे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने का दावा करती है। इसका आचरण अनिन्दनीय होना चाहिए।

जागृति के इन दिनों में सब तरह की शक्तियाँ उठेंगी ही। कांग्रेस में नये-नये लोगों के प्रवेश से कई प्रकार की माँगें पेश की जायेंगी और उनमें से कुछ तो अनुचित तक होंगी। यदि कांग्रेस को अपनी साख बढ़ानी है तो ये माँगें, अगर वे कांग्रेस द्वारा किये गये वायदे से ज्यादा हों तो, रोकी जानी चाहिए। मुझे नहीं मालूम कि रामदुर्ग प्रजा संघ क्या चाहता है? यह हो सकता है कि उसकी माँग अपने-आप में ठीक हो। परन्तु समझौते के कागज की स्याही सूखने से भी पहले वे अपनी माँग को हुल्लड़बाजी मचाकर और डरा-धमकाकर नहीं लाद सकते। कर्नाटक के प्रतिनिधि कांग्रेसजनों को चाहिए कि रामदुर्ग के राजा का साथ दें और उनका प्रयत्न होना चाहिए कि वहाँ के लोग समझौते का पालन करें, भले ही इस कोशिश में लोगों के साथ उनका संघर्ष हो और उसमें उनकी जान ही क्यों न चली जाये।

बम्बई, २६ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजी से]

हरिजन, ४-३-१९३९

१. देखिए खण्ड ६९, “रामदुर्ग में सामूहिक हिंसा”, २४-४-१९३९।

५२४. अकालसे राहतके लिए खादी

इस पत्र^१ से स्पष्ट है कि अकाल-पीड़ित क्षेत्रोंमें खादीसे कितनी राहत मिल सकती है। इसलिए जिस खादीसे अकाल-पीड़ितोंको राहत मिलती है, उसे खरीदने-वाले अकाल-पीड़ितोंकी और साथ ही अपनी भी सहायता करते हैं। इसके अलावा, वे भीख नहीं अपितु मजदूरी देते हैं। और यह मजदूरी खादी-उत्पादनमें कटाईके लिए निश्चित दरसे दी जाती है जो किसी भी अन्य राहत-कार्यकी दरसे अधिक है। इसलिए मुझे आशा है कि इस अपीलका लोग उदारतापूर्वक स्वागत करेंगे।

बम्बई, २६ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-३-१९३९

५२५. क्या यह अहिंसा है ?

नीचे अण्णामलै विश्वविद्यालयके एक शिक्षकके भेजे पत्रका एक अंश दे रहा हूँ^१ :

गत नवम्बरकी बात है, पाँच-छः विद्यार्थियोंने मिलकर योजनापूर्वक विश्व-विद्यालय संघके मन्त्री पर, जो उनका एक साथी विद्यार्थी है, हमला किया। विश्वविद्यालयके उपकुलपति श्री श्रीनिवास शास्त्रीने सख्तीसे काम लिया और उस मण्डलीके नेताको विश्वविद्यालयसे निकाल दिया तथा बाकीको इस अध्ययन-सत्रके अन्त तक पढ़ाईमें शामिल न करनेकी सजा दी।

इसपर सजा पानेवाले विद्यार्थियोंसे सहानुभूति रखनेवाले उनके कुछ मित्रोंने कक्षाओंसे गैरहाजिर रहकर हड़ताल करनी चाही। . . .

दूसरे दिन कोई २० प्रतिशत विद्यार्थी पढ़ने नहीं आये, लेकिन बाकी ८० प्रतिशत बदस्तूर हाजिर रहे। यहाँ यह बता देना ठीक होगा कि इस विश्वविद्यालयमें कुल ८०० के करीब विद्यार्थी हैं।

१. यह पत्र यहाँ नहीं दिया गया है। पत्र-लेखकने कहा था कि कोयम्बदूर जिलेके कुछ तालुकोंमें सूखा पड़ने और खेती खराब हो जानेके कारण वहाँके किसानोंने कटाईका काम शुरू कर दिया है और इसलिए तमिलनाडुमें खादीका अतिरिक्त भंडार हो गया है। उसने गांधीजीसे प्रार्थना की थी कि वह हरिजन के पाठकोंसे यह अपील करें कि वे सूखाग्रस्त इलाकोंमें तैयार की गई खादी खरीदें।

२. यहाँ पत्रके कुछ अंश ही दिये गये हैं।

अगले दिन वह निष्कासित विद्यार्थी हड़तालका संचालन करनेके लिए छात्रावास आया। हड़तालको नाकामयाब होते देख उसने शामको दूसरे साधनोंका सहारा लिया। उदाहरणके लिए, कुछ लोग छात्रावाससे निकलनेके चार मुख्य रास्तोंपर लेट गये, कुछने दरवाजोंको बन्द कर दिया, कुछ छोटे लड़कोंको उनके कमरोंमें बन्द कर दिया। . . . इस प्रकार तीसरे पहर कोई पचास-साठ लोगोंने बाकी विद्यार्थियोंको छात्रावाससे बाहर आनेसे रोक दिया।

अधिकारियोंने इस तरह दरवाजे बन्द देखकर बाड़में से रास्ता खोलना चाहा। जब विश्वविद्यालयके नौकरोंकी मददसे वे बाड़को तोड़ने लगे, तो हड़तालियोंने उन रास्तोंपर भी पहुँच कर दूसरोंको उधरसे निकल कर कॉलेज जानेसे रोक दिया। . . . परिस्थितिको अपने काबूसे बाहर पाकर अधिकारियोंने पुलिससे उस निष्कासित विद्यार्थीको छात्रावासकी हदसे हटानेकी प्रार्थना की . . . जिसपर पुलिसने उसे वहाँसे हटा दिया। इसपर स्वभावतः कुछ और विद्यार्थी भी खीज उठे और हड़तालियोंके प्रति सहानुभूति दिखाने लगे। . . . इसपर श्री श्रीनिवास शास्त्रीने २९ नवम्बरसे १६ जनवरी तक, डेढ़ महीनेकी लम्बी अवधिके लिए विश्वविद्यालय बन्द कर लिया। अखबारोंमें एक वक्तव्य देकर उन्होंने विद्यार्थियोंसे अपील की कि वे छुट्टीके बाद घरसे शान्त और प्रसन्न मनसे पढ़नेके लिए आयें।

लेकिन कॉलेजके फिरसे खुलनेपर इन विद्यार्थियोंकी हलचल और भी तेज हो गई, क्योंकि छुट्टियोंमें इन्हें . . .^१ से और सलाह मिल गई थी। मालूम पड़ता है कि वे राजाजीके पास भी गये थे, लेकिन उन्होंने हस्तक्षेप करनेसे इनकार कर दिया और उनसे उप-कुलपतिका हुक्म माननेके लिए कहा। . . .

धरना देना अभी भी जारी है। . . . हड़तालियोंकी तादाद ३५-४५ के करीब है। और लगभग पचास विद्यार्थी ऐसे हैं जो इनसे सहानुभूति रखते हैं, किन्तु सामने आकर हड़ताल करनेका साहस नहीं रखते। वे अन्दर-ही-अन्दर गड़बड़ मचाते रहते हैं। वे रोज इकट्ठे आते हैं और कक्षाओंके दरवाजोंपर तथा पहली मंजिलकी कक्षाओंको जानेवाले जीनेपर लेट जाते हैं और इस तरह विद्यार्थियोंको कक्षाओंमें जानेसे रोकते हैं। लेकिन शिक्षक जगह बदल-बदल कर ऐसी जगहोंमें जाकर कक्षाएँ लगाते हैं जहाँ वे धरना देनेवालोंसे पहले पहुँच जाते हैं। . . .

कल एक नई बात हुई। हड़ताली कक्षाओंके अन्दर घुस आये, फर्शपर लेट गये और चिल्लाने लगे। और कुछ हड़तालियोंने तो, मैंने सुना, शिक्षकके आनेसे पहले ही ब्लैक बोर्डपर लिखना भी शुरू कर दिया। जिन शिक्षकोंके

बारेमें ऐसा माना जाता है कि वे दम्बू किस्मके हैं, उन्हें कुछ हड़ताली डराते-धमकाते भी हैं। सच तो यह है कि उन्होंने उप-कुलपतिको भी यह धमकी दी कि अगर उन्होंने उनकी माँगें मंजूर नहीं कीं, तो 'हिंसा और रक्तपात' का सहारा लिया जायेगा।

एक और भी महत्वपूर्ण बात है जो मुझे आपको बता देनी चाहिए। वह यह है कि हड़ताली बाहरी लोगोंकी भी मदद लेते हैं, और विश्वविद्यालयके हाते और इमारतोंमें प्रवेश करके वहाँ काम-काजमें बाधा डालनेके लिए गुण्डोंकी भी सहायता लेते हैं। . . .

अब जो बात मैं कहना चाहता हूँ, वह यह है कि हम सब, यानी बहुत-से शिक्षक और काफी बड़ी तादादमें विद्यार्थी भी सहस्रस करते हैं कि ये प्रवृत्तियाँ सत्यपूर्ण और अहिंसात्मक नहीं हैं और इसलिए सत्याग्रहकी भावनाके विरुद्ध हैं।

मुझे विश्वस्त रूपसे मालूम हुआ है कि कुछ हड़ताली विद्यार्थी इसे अहिंसक कार्रवाई ही कहते हैं। उनका कहना है कि अगर महात्माजी यह घोषणा कर दें कि यह हिंसात्मक कार्रवाई है, तो वे इन प्रवृत्तियोंको बन्द कर देंगे।

यह पत्र १७ फरवरीका है और काका कालेलकरको लिखा गया है, जिन्हें पत्र लिखनेवाले शिक्षक अच्छी तरह जानते हैं। इसके जिस अंशको मैंने नहीं छापा उसमें इस बारेमें काका साहबकी राय पूछी गई है कि विद्यार्थियोंके इस आचरणको क्या अहिंसात्मक कहा जा सकता है। इसके अलावा उसमें भारतके कितने ही विद्यार्थियोंमें अवज्ञाकी जो भावना आ गई है, उसपर अफसोस जाहिर किया गया है।

पत्रमें उन लोगोंके नाम भी दिये गये हैं, जो हड़तालियोंको अपनी जिद पर अड़े रहनेके लिए उत्तेजित कर रहे हैं। हड़तालके बारेमें मेरी राय^१ प्रकाशित होनेपर किसी ने, जो अनुमानतः कोई विद्यार्थी ही था, मुझे एक गुस्सेसे भरा हुआ तार भेजा, जिसमें लिखा था कि हड़तालियोंका व्यवहार पूर्णतः अहिंसात्मक है। लेकिन ऊपर जो विवरण मैंने उद्धृत किया है वह अगर सच है तो मुझे यह कहनेमें कोई संकोच नहीं है कि विद्यार्थियोंका व्यवहार सचमुच हिंसात्मक है। अगर कोई मेरे घरका रास्ता रोक दे, तो निश्चय ही उसकी वह कार्रवाई उतनी ही हिंसात्मक होगी, जितनी कि यदि वह मुझे धक्का देकर दरवाजेसे हटा दे, तब होगी।

विद्यार्थियोंको अगर अपने शिक्षकोंके खिलाफ सचमुच कोई शिकायत है, तो उन्हें हड़ताल करनेका, बल्कि अपने स्कूल या कॉलेजपर धरना देनेका भी हक हो सकता है, लेकिन धरना इसी हद तक दिया जा सकता है कि जो विद्यार्थी वस्तुस्थिति से अनभिज्ञ हैं, उन्हें वे विनम्रताके साथ समझा कर उनसे कक्षाओंमें न जानेकी प्रार्थना करें। बोलकर या परचे बाँटकर वे ऐसा कर सकते हैं। लेकिन उन्हें रास्ता नहीं

रोकना चाहिए, और न उन छात्रोंपर अनुचित दबाव ही डालना चाहिए जो हड़ताल नहीं करना चाहते। और हड़ताल विद्यार्थियों की किसके खिलाफ है? श्री श्रीनिवास शास्त्री भारतके श्रेष्ठतम विद्वानोंमें से हैं। शिक्षकके रूपमें उनकी तभीसे ख्याति रही है जब इनमें से बहुतेरे विद्यार्थी या तो पैदा ही नहीं हुए थे या बच्चे थे। उनकी महान विद्वत्ता और उनके चरित्रकी श्रेष्ठता दोनों ऐसी चीजें हैं जिनके कारण संसारका कोई भी विश्वविद्यालय उन्हें अपना उप-कुलपति बनानेमें गौरवका अनुभव करेगा।

काकासाहबको पत्र लिखनेवालेने अगर अण्णामलै विश्वविद्यालयकी घटनाओंका सही विवरण दिया है, तो मुझे लगता है कि शास्त्रीजीने जिस तरह परिस्थितिका मुकाबला किया है, वह बिल्कुल ठीक है। मेरी रायमें विद्यार्थी अपने आचरणसे खुद अपनी ही हानि कर रहे हैं। मैं तो उन पुराने विचारके लोगोंमें से हूँ जो शिक्षकोंके प्रति श्रद्धा रखनेमें विश्वास करते हैं। यह तो मैं समझ सकता हूँ कि जिस स्कूलके शिक्षकों के प्रति मेरे मनमें सम्मानका भाव न हो उसमें न जाऊँ, लेकिन अपने शिक्षकोंकी बेइज्जती या उनकी अवज्ञाकी बात मैं नहीं समझ सकता। ऐसा आचरण तो असज्जनता है और असज्जनता-मात्र हिंसा है।

बम्बई, २६ फरवरी, १९३९

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-३-१९३९

५२६. तार : राधाकृष्ण बजाजको

राजकोट

२६ फरवरी, १९३९

राधाकृष्ण बजाज

जयप्रजा

आगरा

जयपुर शहरमें हड़ताल न हो।

बापू

[अंग्रेजीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २१४

५२७. पत्र : महादेव देसाईको^१

२६ फरवरी, १९३९

तुम्हें उद्विग्न नहीं होना चाहिए। इस यात्रामें तुम्हारा अभाव मुझे खटक रहा है। मैं वहाँ जा रहा हूँ क्योंकि ईश्वर मुझे वहाँ ले जा रहा है। अपने अन्तरमें आनन्द और आशाका अनुभव कर रहा हूँ। कौन जाने यह आशा कहीं मृगतृष्णा ही न हो। मुझे मालूम है कि मैं राजकोटसे निराश नहीं लौटूँगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ११-३-१९३९

५२८. पत्र : सतीश द० कालेलकरको^२

२६ फरवरी, १९३९

चि० शंकर,^३

तेरे पत्रका उत्तर देनेकी फुर्सत ही नहीं थी। तेरा पत्र मुझे अच्छा लगा। चन्दन शान्त है, मजेमें है। वह निर्दोष सिद्ध हुई। यानी सच्ची सिद्ध हुई; इतना काफी होना चाहिए। हमें किसीको अपराधी सिद्ध करनेमें रस नहीं लेना चाहिए। . . .^४ जब तक स्वयं स्वीकार न करें, तब तक उनके बारेमें अन्तिम निर्णय कर लेना उचित नहीं मालूम पड़ता। अब वे निन्यान्वे प्रतिशत निर्दोष नहीं रहे। मैं समझता हूँ कि अब वे तुम्हारी निन्दा नहीं करेंगे। अब उनके बारेमें और कुछ करना मरेको मारने-जैसा होगा। तू इस किस्सेको भूल जाये, यह तो ठीक है, लेकिन अगर तू यह मान ले कि मेरी राय ठीक है, तो मुझे ज्यादा अच्छा लगे।

अपना स्वास्थ्य सँभालना।

चन्दन बेचारी राजकोट जानेको आई थी। लेकिन अब ऐसा हो गया कि कौन जाने कहीं उसके बदले ही तो मैं नहीं जा रहा हूँ। यह पत्र मैं ट्रेनमें लिख रहा

१. महादेव देसाईके “ए गॉड-गिवन फास्ट” से उद्धृत। यह पत्र जो अनुमानतः गुजरातीमें था, किसी दूसरे साधन-सूत्रसे उपलब्ध नहीं है।

२. यह पत्र उस पत्रके नीचे लिखा गया था, जो चन्दनबहनेने सतीश कालेलकरको, जिनसे बादमें उनका विवाह हुआ, लिखा था।

३. दत्तात्रेय बा० कालेलकरके पुत्र, जिन्होंने आगे चलकर अपना नाम बदलकर ‘सतीश’ रख लिया था।

४. नाम छोड़ दिया गया है।

हूँ। चन्दन साथमें ही है। यह वीरमगामसे भावनगर जायेगी। क्या होता है, वहाँ इसकी राह देखेगी।

ऊपर जो चन्दनने लिखा है, वह, सच पूछो तो, उसकी परीक्षा थी। वह मेरे कहे अनुसार आचरण कर सकी है या नहीं, यह देखना था। परीक्षामें उसे ३३ $\frac{1}{2}$ अंक मिले, ऐसा कहा जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९४९) से; सौजन्य : सतीश द० कालेलकर।

५२९. पत्र : अमृत कौरको

२७ फरवरी, १९३९

प्रिय पगली,

यात्रा अभी तक काफी सुखद रही है और विशिष्ट कुछ नहीं घटा। यह पत्र मैं वीरमगाँव पहुँचनेपर लिख रहा हूँ। तूने जुदा होते समय काफी साहस दिखाया। वैसा ही साहस बराबर रहना चाहिए। यह आश्चर्यकी बात है कि सचिव-कार्यकी जिम्मेदारी इस तरह अचानक अकेली तुझपर ही आ जाये। तूने तो इसकी आशा नहीं की थी। आज या कल तुझे राजकोटसे तार मिलेगा।

शरीर और मन दोनोंसे तुझे स्वस्थ रहना है।

सप्रेम,

जालिम

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३९०३) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७२१२ से भी।

५३०. पत्र : मीराबहनको

वीरमगाँव

२७ फरवरी, १९३९

चि० मीरा,

हम दिनके लगभग २ बजकर ५० मिनटपर राजकोट पहुँचेंगे। गाड़ी जा रही है, इसलिए विदा।

सप्रेम,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४२९) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००२४ से भी।

५३१. पत्र : महादेव देसाईको'

२७ फरवरी, १९३९

ईश्वरका विधान कितना विचित्र है ! राजकोटकी यह यात्रा स्वयं मुझे भी आश्चर्यमें डालनेवाली है। मैं क्यों जा रहा हूँ ? कहाँ और किसलिए जा रहा हूँ ? इन बातोंके बारेमें मैंने कुछ नहीं सोचा है। यदि ईश्वर मेरा मार्गदर्शन करता है तो मैं क्या सोचूँ और क्यों सोचूँ ? उसके पथ-प्रदर्शनमें यह चिन्तन भी बाधा बन सकता है।^१

तथ्य यह है कि चिन्तन-प्रवाहको रोकनेके लिए कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता। विचार आते ही नहीं हैं। मेरा मन शून्य हो गया है, ऐसी बात नहीं है; परन्तु मेरा अभिप्राय इतना ही है कि अपने इस मिशनके बारेमें मेरे मनमें कोई विचार नहीं है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २५-३-१९३९

५३२. भेंट : एसोसिएटेड प्रेसके प्रतिनिधिको

२७ फरवरी, १९३९

राजकोट पहुँचनेसे कुछ मिनट पहले महात्मा गांधीने अपने साथ ही यात्रा कर रहे एसोसिएटेड प्रेसके विशेष प्रतिनिधिको बताया कि “राजकोटमें शान्ति-स्थापनाके मिशन” के बारेमें उनके पास कोई सुनिश्चित योजना नहीं है।

यह पूछनेपर, कि राजकोटमें वे कब तक ठहरेंगे, महात्मा गांधीने कहा :

मुझे सचमुच पता नहीं कि मैं यहाँ कब तक ठहरूँगा। जब तक मेरा कार्य समाप्त नहीं हो जाता, मुझे यहाँ रुकना ही होगा।

प्रश्न : क्या इसका यह मतलब है कि आप त्रिपुरी-कांग्रेस नहीं जा सकेंगे ?

उत्तर : देखिए, अगर राजकोटके अपने कामकी वजहसे मुझे रुकना पड़ा तो मुझे डर है कि शायद मैं त्रिपुरी न जा पाऊँ।

१. महादेव देसाईके “द गॉड-गिवन फौस्ट” से उद्धृत। यह पत्र, जो अनुमानतः गुजरातीमें था, किसी भी अन्य साधन-सूत्रसे उपलब्ध नहीं है।

२. इस पर रमण महर्षिकी टिप्पणीके लिए देखिए परिशिष्ट ५।

यह बतानेपर कि राजकोट रियासतमें सत्याग्रह स्थगित हो जानेके बाद भी अधिकारीगण बराबर गिरफ्तारियाँ कर रहे हैं और जुर्माना वसूल करनेके लिए मकान नीलाम कर रहे हैं, महात्मा गांधीने कहा :

मैंने खुद ट्रेनमें अभी-अभी इस प्रकारकी खबरें सुनी हैं। अगर यह सच है तो यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण बात है।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, २८-२-१९३९

५३३. तार : अमृत कौरको

राजकोट

२७ फरवरी, १९३९

राजकुमारी
मगनवाड़ी
वर्धागंज

यात्रा अच्छी तरह तय हुई। बातचीत शुरू हो गई है। तुम्हें प्यार। प्रथम सदस्यको भेजा गया आखिरी तार यहाँ नहीं पहुँचा। पूछताछ करना।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ३९०२) से; सौजन्य : अमृत कौर। जी० एन० ७२११ से भी।

५३४. तार : मीराबहनको

राजकोट

२७ फरवरी, १९३९

मीराबहन
मार्फत बादशाहखान
चारसदा,

यात्रा अच्छी तरह तय हुई। बातचीत शुरू हो गई है।
सप्रेम।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६४३०) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० १००२५ से भी।

५३५. भेंट : एसोसिएटेड प्रेसके प्रतिनिधिको

२७ फरवरी, १९३९

मैं तो जन्मजात आशावादी हूँ। मुझे उम्मीद है कि राजकोटकी मेरी यात्रासे कोई सम्मानजनक समझौता हो जायेगा।

खान साहब फतह मुहम्मद और दरबार वीरावालासे मेरी मैत्रीपूर्ण बातचीत हुई है। उन्होंने मुझे जेलोंमें जाने, कैदियोंसे मिलने और गाँवोंमें जानेकी सारी सुविधाएँ देनेका वचन दिया है। मैं कल तीसरे पहर कैदियोंसे मिलने जाऊँगा। मुसलमानों और गिरासियों (जमीनके मालिकों)ने मुझसे भेंटके लिए समय माँगा है और मुझे आशा है कि मैं कल उनसे मिल सकूँगा।

समझौता-वार्तामें कुछ दिन लग सकते हैं। त्रिपुरी-कांग्रेसमें सम्मिलित होनेकी यद्यपि मेरी बड़ी इच्छा है, पर मुझे डर है कि राजकोटके काममें कुछ समय लग जायेगा।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, २८-२-१९३९

५३६. भेंट : 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको

२७ फरवरी, १९३९

... मैं नहीं जानता कि मुझे यहाँ कब तक रुकना पड़ेगा। मेरी कोई सुनिश्चित योजना नहीं है। परिस्थितिको मैं समझना चाहता हूँ और शासक और श्री गिब्सनसे भेंट करके प्रशासन और प्रजा परिषद्के बीच हुए समझौतेको कायम रखनेकी भरसक कोशिश करना चाहता हूँ। त्रिपुरीकी मेरी यात्रा संदिग्ध ही है। अगर मैं अपना कार्य समयपर पूरा कर सका तो त्रिपुरी जाऊँगा। अन्यथा, सम्भव है मुझे विचार छोड़ना पड़े।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २७-२-१९३९

५३७. तार : राधाकृष्ण बजाजको^१

[२७ फरवरी, १९३९ या उसके पश्चात्]

वाइसरायके आनेपर हड़ताल बन्द कर दी जानी चाहिए। पर इसका आखिरी फैसला तुम लोगोंको ही करना चाहिए।

बापू

[अंग्रेजीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २१५

५३८. बातचीत : मुसलमान प्रतिनिधियोंके साथ^२

२८ फरवरी, १९३९

लेकिन, निश्चय ही, आप सुरक्षित स्थानोंके बिना तो पृथक् निर्वाचक मण्डल चाहते नहीं हैं। उनके बिना पृथक् निर्वाचक मण्डलका कोई अर्थ ही नहीं रहता। इसलिए वे भी आपको मिलने ही चाहिए। इस एकतरफा पेशकशके बाद मैं आपसे यह कहनेकी इजाजत चाहूँगा कि यदि आप परिषद्को आपके हितोंका प्रतिनिधित्व करने दें, तो परिषद् आपके धर्म और आपकी संस्कृतिकी अवश्य रक्षा करेगी और मुसलमानोंके हर न्यायोचित हितको संरक्षण देगी। लेकिन मैं इस बातसे सहमत हूँ कि जब तक वातावरण परस्पर अविश्वास एवं सन्देहसे दूषित है, आपको पृथक् निर्वाचक मण्डलकी माँग करनेका अधिकार है।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २५-३-१९३९

१. यह राधाकृष्ण बजाजके २७ फरवरीके उस तारके उत्तरमें भेजा गया था जिसमें उन्होंने यह सूचित किया था कि वाइसरायके आगमनके विरुद्ध जयपुरमें स्वतः ही हड़ताल हो गई और बढ़ जारी है। हम हड़तालके पक्षमें हैं। आप उसके खिलाफ हों तो तार देकर सूचित करें।

२. प्यारेलाल द्वारा लिखित “द राजकोट फास्ट” से उद्धृत। प्यारेलालने लिखा है: “मुस्लिम कौंसिल ऑफ एक्शन”के प्रतिनिधि गांधीजीसे प्रातः ७ बजे मिले। उन्होंने कहा कि राजकोटके पिछले सत्याग्रह-आन्दोलनमें मुसलमानोंने अपना निष्क्रिय सहयोग दिया था। गांधीजीने बातचीतके आरम्भमें ही उन्हें यह कहकर निश्चित कर दिया कि समितिमें उनके दो प्रतिनिधि हों, यह बात मुझे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार होगी। उन्होंने पृथक् निर्वाचक मण्डलकी माँग पर भी जोर दिया। गांधीजीने वह बात भी मान ली।”

५३९. बातचीत : गिरासियोंके शिष्टमण्डलके साथ

२८ फरवरी, १९३९

मुस्लिम शिष्टमण्डलकी तरह, गांधीजीने उन्हें भी आरम्भमें ही यह कहकर निश्चित कर दिया कि समितिमें उनके एक प्रतिनिधिको सम्मिलित किया जायेगा। उनके अन्य प्रश्नोंके उत्तरमें उन्होंने कहा कि अबतक आप जिन विशेषाधिकारोंका उपभोग करते आये हैं, यदि उन सबके बारेमें हमेशाके लिए आदवासन चाहते हैं, तब तो आपको निराशा ही हाथ लगेगी। यह न तो उचित है और न सम्भव ही है। भारतके असंख्य दीन-हीन जनोंकी दशा यदि सुधारनी है, तो विशेषाधिकार-युक्त वर्गको दरिद्रनारायणकी भलाईके लिए अपने कुछ विशेषाधिकारोंका त्याग करना ही होगा। अगर गिरासिया लोग समयकी पुकारको ठीकसे समझ लें, श्रमजीवी जनताके साथ घुल-मिल जायें और उसके भलेमें अपना भला मानें, तो उनके न्यायोचित हितोंपर तनिक भी आँच नहीं आयेगी। इसलिए, मैं आपको वही परामर्श दूँगा जो मैंने नरेशोंको दिया है, अर्थात् आप जनताके सच्चे सेवक बनें और उसपर अत्याचार करना छोड़ दें। आपको अपनी सम्पत्तिको ऐसा न्यास मानना चाहिए जिसे जनताकी भलाईके लिए समझ-बूझकर इस्तेमाल करना है। आपको उचित आयका अधिकार है, किन्तु केवल अपनी सेवाओंके बदलेमें।

“कांग्रेसियोंके एक वर्ग द्वारा हमारी कटु आलोचना की गई है, हमें गालियाँ तक दी गई हैं। क्या आप हमारी रक्षा नहीं करेंगे?”

आपको यह मालूम होना चाहिए कि कांग्रेसमें आज एक काफी बड़ा और दिन-प्रतिदिन बढ़ता ऐसा वर्ग है जो सभी निहित स्वार्थके तत्त्वोंको बिल्कुल नष्ट कर देना चाहता है, क्योंकि उनके सुधारकी उन्हें कोई आशा नहीं है। इसलिए, न्यासीका जो आदर्श मैंने आपके सम्मुख रखा है, यदि आप उसे अपनायें और उसके अनुरूप बनें, तभी मैं आपको सुरक्षा देनेमें समर्थ हो सकूँगा। जब तक आप मेरे साथ सहयोग नहीं करेंगे, मैं आपकी सहायता नहीं कर सकूँगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, २५-३-१९३९

५४०. भेंट : 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको

राजकोट

२८ फरवरी, १९३९

गांधीजीने भेंटके दौरान बताया कि दिनकी शुरुआत मुस्लिम प्रतिनिधियोंके साथ सौहार्दपूर्ण विचार-विनिमयसे हुई।^१

मुस्लिम प्रतिनिधियोंसे मुलाकातके बाद मैं रेजिडेंटके बंगलेपर गया और वहाँ हम दोनोंमें अत्यन्त मैत्रीपूर्ण बातचीत हुई। दिनमें २ बजे मैं गिरासिया संघके प्रतिनिधियोंसे मिला^२ और उनके साथ भी मेरी बातचीत सौहार्दपूर्ण रही। तत्पश्चात् मैं कर्नल डेली, लेफ्टिनेंट कर्नल एस्पिनल और खान साहब फतह अहमद मुहम्मदके साथ रियासतकी जेलोंको देखने गया। वहाँ कैदियोंके साथ मुलाकातके समय ये सब भी उपस्थित थे। राजकोट-जेलमें मैंने लगभग एक घंटा सत्याग्रही पुरुषों और महिलाओंसे मिलनेमें बिताया और उसके बाद मैं सरधार-जेल गया और वहाँ डेढ़ घंटे रहा।

इन दो जेलोंमें कैदियोंसे हुई बातचीतके बारेमें जब उनकी राय पूछी गई तो गांधीजीने खान साहब फतह मुहम्मदके साथ विचार-विमर्शसे पहले अपना कोई निश्चित अभिमत प्रकट करनेसे इनकार कर दिया। अपनी बात जारी रखते हुए गांधीजीने कहा :

सरधार-जेलसे मैं त्रौम्बा गया और वहाँ कस्तूरबा, मृदुलाबहन और मणिबहनसे मिला। वहीं मैंने खाना खाया। राजधानी वापस आनेपर मैं ठाकुर साहबसे मिलने गया और लगभग डेढ़ घंटा मैंने उनके साथ बिताया।

उनके त्रिपुरी जानेकी सम्भावनाके बारेमें पूछनेपर गांधीजीने कहा :

मुझे अब भी उम्मीद है कि कोई सम्मानजनक समझौता हो जायेगा और मैं जल्दी-से-जल्दी त्रिपुरी जानेकी भरसक कोशिश कर रहा हूँ। परन्तु मेरे लिए यह कहना कठिन है कि सप्ताहान्तसे पूर्व मैं यहाँसे जा सकूँगा या नहीं।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १-३-१९३९

१. देखिए पृ० ५१६।

२. देखिए पिछला शीर्षक।

परिशिष्ट

परिशिष्ट १

एक पवित्र समझौतेकी निर्मम अवहेलना

सरदार वल्लभभाई पटेलने २५ जनवरीको निम्न वक्तव्य जारी किया :

अत्यन्त खेदके साथ मुझे घोषणा करनी पड़ रही है कि राजकोटका संघर्ष, जो सुखद ढंगसे समाप्त हो गया लगता था, अब पुनः आरम्भ करना होगा। राज्यकी इज्जत और राजकोटकी जनताके आत्मसम्मानकी रक्षाकी खातिर यह पुनरावृत्ति हमारा कर्तव्य हो गया है।

जनताको याद होगा कि राजकोट-राज्यके २६ दिसम्बरके राजपत्रमें जिस समझौतेकी घोषणा^१ की गई थी, वह ठाकुर साहब तथा उनकी परिषद्—जिसके सदस्य सर पैट्रिक कैडेल, राव साहब माणिकलाल पटेल और श्री जे० जोबनपुत्रा थे—के बीच हुए विचार-विमर्शका परिणाम था। यह विचार-विमर्श २५ दिसम्बरकी शामको शुरू होकर लगभग आठ घंटे चलता रहा और रातके १-४२ पर समाप्त हुआ। समझौतेके दिन ठाकुर साहबने मुझे निम्नलिखित पत्र दिया :

अमरसिंहजी सचिवालय, राजकोट राज्य
२६ दिसम्बर, १९३८

यह तय किया गया है कि आजकी राजकीय घोषणाकी धारा २ में उल्लिखित सात सदस्योंके नामकी सिफारिश सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा होगी और हम उन्हें नामजद करेंगे।

(ह०) धर्मेन्द्रसिंह
ठाकुर साहब, राजकोट

यहाँ याद रखा जाये कि मैं ठाकुर साहबके आमन्त्रणपर राजकोट गया था। समझौतेके बाद ही सर पैट्रिक कैडेलने अवकाश ग्रहण कर लिया। . . .

मुझे बहुत अनिच्छापूर्वक कहना पड़ रहा है कि ठाकुर साहबका नमक खानेवालोंने उनकी कुसेवा की है। दरबार बीरावाला उनके सबसे बुरे सलाहकारोंमें से एक रहे हैं। उन्होंने राज्यका सत्यानाश कर डाला है और अपनी घोर कुव्यवस्थाके फलस्वरूप खजानेको खाली कर दिया है। उन्होंने ठाकुर साहब पर ऐसा जादू फेर रखा है

कि वे चाहें तब भी उस पाशसे छूट नहीं सकते। सर पैट्रिक कैडेलको राजकोट लानेवाले वही थे। किन्तु जब उन्होंने [पैट्रिक कैडेलने] समझ लिया कि दरबार वीरावाला ही राज्यके अनिष्टकारी राहु हैं तो उन्होंने लगभग सबसे पहला काम यह किया कि एजेन्सी की मदद लेकर उन्हें राजकोटसे निर्वासित कर दिया। यदि सर पैट्रिक कैडेलने शासक-जातिके सदस्यके रूपमें अपनी प्रतिष्ठाका अनुचित लाभ न उठाया होता तो उनके राजकोटसे जानेकी नौबत न आती। जिस दीवानने उनको निर्वासित करा दिया था, उसकी मौजूदगीको दरबार वीरावाला बर्दाश्त नहीं कर सकते थे।

निर्वासित होनेके बावजूद वह बागसरासे ही गुप्त रूपसे दाँवपेच चलाते रहे। उनका पुत्र भोजवाला और भतीजा वालेरवाला अभी भी ठाकुर साहबके पास हैं। दरबार वीरावाला समझ गये कि प्रस्तावित समझौतेके विरुद्ध तो वह सफल हो नहीं सकते, अतः उन्होंने एक मित्र जैसी भूमिका अपनाई और समझौतेमें सहायक प्रतीत हुए। समझौतेके शीघ्र बाद जब सर पैट्रिक कैडेल जानेवाले थे, दरबार वीरावाला राजकोट पहुँच गये और उन्होंने अपनी कार्रवाइयाँ शुरू कर दीं जो अभी तक जारी हैं। रेजिडेंटका पत्र और पोलिटिकल एजेंटका पत्र पढ़नेमें दिलचस्प हैं।

मुझे कुछ दिनोंका समय आवश्यक था जिससे कि मैं आन्दोलनके संचालकोंसे परामर्श करके समझौतेकी शर्तोंके अनुसार बनाई जानेवाली समितिके लिए सात नाम चुन सकूँ। ४ जनवरीको मैंने निम्नांकित सात नाम भेज दिये :

१. श्री पोपटलाल धनजीभाई मालवीय
२. श्री पोपटलाल पुरुषोत्तम अनडा
३. श्री मुल्ला वलीजी अब्दुलअली
४. डॉ० डी० जे० गज्जर
५. श्री जमनादास खुशालचन्द गांधी
६. श्री ब्रजलाल मायाशंकर शुक्ल
७. श्री उच्छृंगराय नवलशंकर ढेबर

तदुपरान्त फौरन ही समितिकी नियुक्तिकी विज्ञप्ति निकल जानी चाहिए थी, किन्तु कई दिनों तक कुछ भी नहीं हुआ।

२८ दिसम्बरको सपरिषद् ठाकुर साहबका रेजिडेंट महोदय से विचार-विमर्श हुआ। इस मौके पर उपस्थित एक व्यक्ति द्वारा तैयार वार्ताका एक प्रामाणिक संक्षिप्त विवरण मेरे पास है। रेजिडेंट द्वारा कांग्रेस तथा मेरे विषयमें कही गई बातें पढ़नेमें दिलचस्प हैं। समझौते, कांग्रेस या मेरे प्रति अपनी नापसन्दकीको वह छिपा नहीं पाये।

ऐसा मालूम होता है कि ठाकुर साहब द्वारा अपनी प्रजाको गम्भीरतापूर्वक दिये गये वचनके भंगके लिए रेजिडेंट महोदय तथा दरबार वीरावाला जिम्मेदार हैं। ठाकुर साहब पर दरबार वीरावालाका कितना अधिक प्रभाव है, उसका सबूत मेरे नाम ठाकुर साहबका पत्र है जो पढ़नेमें रोचक है।

हालमें निकाली गई एकतरफा विज्ञप्तिकी तुलना समझौतेकी शर्तोंके अनुसार निकाली गई विज्ञप्तिसे करना आवश्यक है। दूसरी विज्ञप्तिमें मेरे दिये गये चार नाम रद्द हो गये हैं। इसके अलावा, समिति जिन विषयों पर विचार करनेवाली थी, दूसरी विज्ञप्तिमें उन्हें भी निकाल दिया गया है। इस विज्ञप्तिकी भाषा भी गोलमोल है, जबकि पहली विज्ञप्तिकी भाषा बिल्कुल स्पष्ट और असन्दिग्ध थी। पहली विज्ञप्तिमें कहा गया था कि इसी ३१ तारीखसे पहले ही समितिकी रिपोर्ट प्रकाशित हो जायेगी, और ठाकुर साहब उसपर अमल भी करेंगे। परन्तु इस दूसरी विज्ञप्तिमें रिपोर्टके लिए कोई मियाद नहीं रखी गई है।

पिछली घोषणासे पूर्व मुझे राव साहब भाणेकलाल पटेलसे एक पत्र प्राप्त हुआ था। ध्यान देने योग्य है कि जहाँ उस पत्रमें मेरे मनोनीत किये हुए नामोंमें से चार नामोंको स्वीकार किया गया था, वहाँ नई विज्ञप्तिमें केवल तीन नाम स्वीकार किये गये हैं। इस सम्बन्धमें मैंने गुजरातीमें एक उत्तर भेजा है जिसका अनुवाद भी उपलब्ध किया गया है।

ठाकुर साहब पर दरबार वीरावालाके प्रभाव और उनकी दखलन्दाजीके बारेमें मैंने इतना-कुछ सुन रखा था कि मुझ अपने इस पत्रमें कहना ही पड़ा कि दरबार वीरावाला किसी भी हालतमें समितिमें शामिल नहीं किये जा सकते। मैं किसी भी बहानेके लिए गुंजाइश नहीं रहने देना चाहता था।

एक पवित्र समझौतेके इस घोर भंगसे राजकोटकी जनताके सामने एक ही रास्ता रह गया है। अब मेरा काम है कि मैं राजकोटकी जनताका आह्वान करूँ कि वह स्वतन्त्रताकी रक्षाकी खातिर और राजकोट तथा ठाकुर साहबकी सर्वनाशसे बचानेके निमित्त स्वेच्छापूर्वक स्वीकृत कष्ट-सहनका मार्ग फिरसे अपनाये। बुरे-से-बुरे परिणामकी पूर्व-कल्पना कर लेना और उसके लिए प्रबन्ध कर लेना सर्वोत्तम है। बुरे-से-बुरा तो यह हो सकता है कि घोरतम आतंक फैलाया जाये, लोगोंको कठोर यन्त्रणाएँ दी जायें जो काटियावाड़में कोई अपरिचित बात नहीं है, और लोगोंमें आन्तरिक झगड़े पैदा किये जायें। पिछली बातका प्रमाण है हमारे मुसलमान भाइयोंका भड़काये जाने पर आन्दोलन करना। हमें अपने आचरण द्वारा उन्हें दिखा देना होगा कि प्रजा द्वारा सुशासित प्रशासनके अन्तर्गत जितना फायदा दूसरोंको मिलेगा, कम-से-कम उतना ही उन्हें भी मिलेगा। आत्यन्तिक कुव्यवस्था और रिश्वतखोरीने राजकोटको दिवालिया बना दिया है। यदि अधिकतर लोग एकता रखें, कितना ही कष्ट हो या कितने ही दिन तक उसे सहना पड़े, उसको सहनेकी क्षमता दिखायें, और आर्थिक हानिके बावजूद अहिंसापूर्ण असहयोग आन्दोलनके कार्यक्रमपर अमल करनेकी योग्यताका प्रदर्शन करें तो छोटे-मोटे झगड़े इस आन्दोलनको लम्बा तो कर सकते हैं, किन्तु हमारे लक्ष्यसे हमें वंचित नहीं कर सकते। लेकिन छात्रोंको किसी भी हालतमें सविनय अवज्ञा या हड़तालोंमें भाग नहीं लेना है। यदि उन्हें रचनात्मक-कार्यमें विश्वास हो तो उसे कर सकते हैं, और करना भी चाहिए। छात्रगण घर-घर जाकर लोगोंके कण्ठोंका परिहार कर सकते हैं, क्योंकि जैसे-जैसे आन्दोलन बड़ेगा, लोगोंको अनिवार्यतः कष्ट होने ही हैं।

मन, वचन तथा कर्मसे अहिंसाका पालन करना होगा। विपक्षियों तथा तटस्थ लोगोंके साथ तथा अपने सहयोगियोंके साथ भी अहिंसाका पालन होना चाहिए, जेलके भीतर भी और बाहर भी। जिस हद तक हम अहिंसाका पालन करेंगे उसी हद तक हम सफल होंगे। हमें इस सम्भावनापर आस्था रखनी होगी कि हमारी अहिंसाके परिणामस्वरूप ठाकुर साहबका मन अपनी प्रजाके लिए पसीज जायेगा। आज तो वह केवल नाममात्रके ही शासक हैं। उनकी प्रजामें से हरएक व्यक्तिको यह बात चुभ रही होगी कि इस नौजवान शासकने अपनी प्रजाके साथ किया गया पवित्र समझौता जान-बूझकर भंग कर दिया है।

मैंने दरबार वीरावालाके बारेमें कटु प्रतीति होनेवाले वचन कहे हैं। किन्तु सत्य कई बार कटु और कठोर हो जाता है। मैंने उनके सम्बन्धमें ऐसी कोई बात नहीं कही है जिसमें मेरा विश्वास न हो। परन्तु उनके साफ खटकनेवाले दोषोंके बावजूद हमें उनसे प्रेम करना चाहिए और हम यह आशा रखें कि हमारा प्रेम उनका तथा उनके प्रभावमें तथा उनके निर्देशानुसार काम करनेवालोंका हृदय-परिवर्तन कर देगा।

मुझे दुःख है कि राजकोटकी जनताकी नीति तथा कार्यक्रम बनानेमें मेरा हस्तक्षेप और कांग्रेसका प्रभाव रेजिडेंट महोदयको नापसन्द है। देशी राज्योंकी जनताने हमेशासे ही कांग्रेसका मार्गदर्शन ग्रहण किया है। उसके प्रति उनकी निष्ठा है। यहाँ तक कि आरम्भिक कालमें तो राजा लोग भी कांग्रेसका समर्थन पानेकी कामना रखते थे। राजाओं और उनकी जनताके बीच उठनेवाले विवादोंमें प्रत्यक्ष भाग न लेनेके रूपमें कांग्रेसने देशी राज्योंमें हस्तक्षेप न करनेकी नीति अपनाई थी। यह सब केवल अपनी मर्यादाको पहचान लेना मात्र था। किन्तु जब जनता अपनी शक्तिको जान गई है और कष्ट-सहनके लिए तैयार है तब भी यदि कांग्रेस अपनी ओरसे यथासाध्य मदद न दे तो वह उद्देश्यके प्रति झूठी सिद्ध होगी। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं काठियावाड़ राजकीय परिषद्का अध्यक्ष रह चुका हूँ और इस नाते काठियावाड़की जनताके प्रति मेरा एक कर्तव्य है और राजाओंके प्रति भी है, और जब मेरी सहायताकी जरूरत पड़े तब मैं भला कैसे इनकार कर सकता हूँ। राजकोटमें पहले तो प्रजाने और फिर स्वयं राजाने मेरी सहायता माँगी और मेरा दावा है कि मैंने उदारतापूर्वक मदद दी है। इसमें मुझे रेजिडेंट महोदय या साम्राज्य-सत्ताके एतराज् करने योग्य कोई बुराई नहीं दीखती। यह तो एक ऐसा सवाल है जिसका निर्णय करानेमें प्रसंगवश निमित्त बन जाना राजकोटके लिए अत्यन्त गौरवकी बात होगी।

फिलहाल यह सत्याग्रह केवल काठियावाड़ियों तक ही सीमित रहेगा। काठियावाड़के लोगोंमें इतने आपसी सम्बन्ध निकल आते हैं कि नैतिक आधार लें तो किसी भी काठियावाड़ी को व्यवहार रूपमें इस सत्याग्रहसे दूर नहीं रखा जा सकता।

सरदार वल्लभभाई पटेलको ठाकुर साहबका पत्र

अमरसिंहजी सचिवालय

राजकोट राज्य

दिसम्बर, १९३८

प्रिय सरदार वल्लभभाई,

अभी-अभी प्राप्त आपके पत्रके लिए धन्यवाद।

यदि आप आज शाम पाँच बजे मेरे साथ चाय पियें तो मुझे खुशी होगी।

उस समय मेरी परिषद्के सदस्योंकी उपस्थितिमें हम लोग इस मौजूदा प्रश्नपर चर्चा कर लेंगे।

हृदयसे आपका,
धर्मेन्द्रसिंह

सर पैट्रिक कैडेलका ठाकुर साहबको पत्र

अमरसिंहजी सचिवालय

राजकोट

१ अक्टूबर, १९३८

श्रीमान,

कल मैंने आपसे शाम आठ बजेसे पूर्व मुलाकात करनेकी अनुमति माँगी थी। मैं अत्यन्त महत्वके मामलोंपर बातचीत करना चाहता था। मैंने शामका यह समय स्वयंको असुविधाजनक होते हुए भी आपकी सुविधाकी खातिर माँगा था। आपने निजी सचिवके हाथ मुझे सन्देश भेजा कि मैं साढ़े आठ बजे आपसे मिलूँ। मैं ठीक वक्तपर उपस्थित हुआ किन्तु मुझे बताया गया कि आप स्नान कर रहे हैं। मैं नौ बजे तक प्रतीक्षा करता रहा और पता चला कि आपको अभी भी १५ मिनट या आधा घंटा और लगेगा। इसपर मैं चला गया।

आपको यह बतानेके लिए अब मैं यह पत्र लिख रहा हूँ कि अपने साथ इस प्रकारका घोर अशिष्टतापूर्ण बर्ताव होने देनेका मेरा कोई इरादा नहीं है। आपकी मददके लिए इंग्लडसे रवाना होते समय मुझे बिल्कुल भान नहीं था कि आप ऐसा आचरण कर सकते हैं। इसको मैं चलने नहीं दे सकता।

कल रात मेरा इरादा आपको यह बतानेका था कि किसी भी हालतमें मौजूदा परिस्थिति जारी नहीं रह सकती। राज्यमें हालत बहुत गम्भीर है। राज्यके विरुद्ध बहुत-सी शिकायतें तो आपके आचरणको लेकर ही हैं। ऐसा माना जाता है कि आप राजस्वमें से बहुत बड़ा अंश खर्च कर देते हैं और आपके खर्चका अधिकांश भाग

गलत मुद्दोंमें जाता है और यह कि आप राज्यके प्रशासनमें कोई भाग नहीं लेते। इस समय आपके खर्चोंकी रकम या खर्चके तरीकोंकी मैं चर्चा नहीं करना चाहता। किन्तु यह तो निःसन्देह सच है कि आप शासन-व्यवस्थामें कोई भाग नहीं लेते और अपनी प्रजाके कल्याणमें आपकी कोई रुचि प्रकट नहीं होती। यह बात इसलिए और भी ध्यानमें आती है, क्योंकि आपके पिताने जो ढंग अपनाया था, आपका ढंग उससे नितान्त भिन्न है। अपने अधिकारियोंसे आप यह अपेक्षा रखें कि वे दमनकारी कार्योंका भार उठायें और आप स्वयं कुछ न करें, यह न्यायोचित नहीं है। आपको भी इसमें कुछ हिस्सा लेना चाहिए। अतएव मेरा प्रस्ताव है कि आप निम्नांकित कार्य करें।

१. मेरा खयाल है कि आज शामको ७-३० बजे आप एक या शायद दो मन्दिरोंमें होनेवाले यज्ञ-अनुष्ठानमें शामिल होनेवाले हैं। मेरा अनुरोध है कि यदि आपके पास समय हो तो उसके बाद शहरमें आपकी सवारी निकले और मुझे भी अनुमति दें कि उस समय मैं आपके साथ रहूँ।

२. आज तो छुट्टीके कारण हुजूर दफ्तर बन्द है परन्तु सोमवारको वह खुला रहेगा। मैं सुझाव दूँगा कि आप मुझे वचन दें कि आप सोमवारको वहाँ कम-से-कम एक घंटेके लिए फरियादियोंकी फरियाद सुनने आयेंगे और शामके छः बजेसे पहले ही आयेंगे।

मुझे पक्का विश्वास है कि इन दो कार्योंका शहर पर सुन्दर प्रभाव पड़ेगा।

मुझे एक तीसरा अनुरोध करना है।

३. आप वचन दें कि मुझे जिस किसी दिन भी आपसे मिलना हो, आप ७-३० से पहले ही मुझसे मिल लेंगे और वचन दीजिए कि आप निर्धारित समयके बाद १५ मिनटसे अधिक देर नहीं करेंगे।

यदि आप मेरे इन सुझावोंको स्वीकार करनेमें असमर्थ हैं तो मैं रेजिडेंट महोदयको यह सूचित करनेको बाध्य हो जाऊँगा कि मैं अब यहाँ काम नहीं कर सकता और मेरा इरादा शीघ्रातिशीघ्र इंग्लैंड लौट जानेका है।

मुझे आशंका है कि यदि मुझे ऐसा करना ही पड़ा तो इसके फलस्वरूप आपके राज्य और स्वयं आपके लिए इसके दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम निकल सकते हैं। आपको मैं विश्वास दिला सकता हूँ कि इस बातकी सम्भावना कम ही है कि भारत सरकार आपके आचरणको अनुकूल दृष्टिसे देखेगी। आपको हानि पहुँचेगी तो मुझे दुःख होगा, लेकिन यदि आपने ऐसा ही बर्ताव रखा तो मैं यहाँ और नहीं रह सकता।

यदि आज शाम ५-३० बजेसे पहले ही आप मुझे सूचित कर दें कि क्या आप आज शाम शहरमें सवारी के लिए जानेको सहमत हैं और मुझे साथ रहनेकी अनुमति देंगे तो मैं अनुगृहीत होऊँगा।

हृदयसे आपका,
पैट्रिक कैडेल

सर पैट्रिक कंडेलको ठाकुर साहबका पत्र

गोपनीय

रणजीत विलास महल

राजकोट

२ अक्टूबर, १९३८

प्रिय सर पैट्रिक,

आपका कलका पत्र पाकर मुझे अत्यन्त क्षोभ हुआ, और मुझे कहना पड़ रहा है कि मुझे आपके पत्रका स्वर पसन्द नहीं आया। मैं यह नहीं मान सकता कि मेरे खिलाफ की गई शिकायतें तथ्योंपर आधारित हैं। वर्तमान आन्दोलन राज्योंमें उत्तरदायी शासन-व्यवस्था आरम्भ करानेके लिए कांग्रेस द्वारा फैलाई हुई एक लहर ही है। और मेरी धारणा है कि मैसूर, त्रावणकोर इत्यादि अन्य रियासतोंकी तरह ही, जहाँ की जनताको पहलेसे ही अधिक नागरिक स्वतन्त्रताका सुख प्राप्त है, काठियावाड़में राजकोटको कांग्रेसने इसी कारण चुना है।

इस स्थितिसे निपटनेके उद्देश्यसे ही मैंने आपकी सेवाएँ प्राप्त की थीं। आपका कार्य यथासम्भव सुगम करनेकी अब भी मेरी कामना है और दशहरेके उपरान्त अपनी सुविधानुसार मैं किसी दिन दफ्तर आऊँगा।

आपकी इस बातपर मुझे कड़ी आपत्ति है कि आपके चले जानेके फलस्वरूप राज्य और मेरे लिए दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम निकल सकते हैं और भारत सरकार मेरे आचरणको अनुकूल दृष्टिसे नहीं देखेगी। इस सिलसिलेमें मैं आपको स्पष्ट रूपसे समझा दूँ कि मैंने स्वयं ही आपको अपना दीवान नियुक्त किया है और यदि किसी मतभेदके परिणामस्वरूप मुझे आपसे सेवानिवृत्त हो जानेके लिए कहना पड़ा तो रेजिडेंट महोदय अथवा वाइसराय महोदयको मुझसे अप्रसन्न होनेका कोई कारण नहीं होगा। मेरे राज्य और मेरे विषयमें जो-कुछ भी सूचनाएँ आप एकत्र कर पाये हैं, वे आपको इसी कारण उपलब्ध हो सकी हैं, क्योंकि आप मेरे विश्वासभाजन हैं और यह कहना शायद ही आवश्यक होगा कि आप मेरी अनुमतिके बिना मेरे राज्यके अभिलेखोंका उपयोग नहीं कर सकते और खासकर व्यक्तिशः मेरे विरुद्ध तो बिलकुल नहीं कर सकते। रेजिडेंट महोदयको राज्यसे सम्बन्धित कोई भी सूचना प्राप्त करनेकी आवश्यकता महसूस हुई है तो वह मेरे दीवानके जरिये माँग की गई है, और तभी माँगी गई है जब मैं इसके लिए सहमत होऊँ। आपको मैं यह भी बतला दूँ कि रेजिडेंट महोदय और वाइसराय महोदय, दोनोंका मुझे भरपूर विश्वास प्राप्त है और इसे खोने लायक कोई काम मैंने नहीं किया है। अतएव मेरी कामना है कि आप अपने निश्चयपर पुनर्विचार करें और मेरी प्रतिष्ठा और नीतिके अनुरूप कार्य करनेकी अपनी सहमति अभिव्यक्त करें।

हृदयसे आपका,

धर्मेंद्रसिंह

सर पैट्रिक कंडेलको ठाकुर साहबका पत्र

राजकोट

१६ अक्टूबर, १९३८

प्रिय सर पैट्रिक,

मुझे विश्वास है कि वर्तमान परिस्थितिसे आप पूर्णतः अवगत होंगे। स्थितिमें किसी भी प्रकारका सुधार नहीं आया है और जहाँ तक मैं देख पाता हूँ, यह दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है और अब पराकाष्ठापर पहुँच गई है। अभी कुछ ही दिन हुए हमने एक बैठक बुलाई थी और उसमें जनताको कुछ रियायतें देना स्वीकार किया था। किन्तु उससे स्थितिमें कोई सुधार नहीं आया और वांछित परिणाम नहीं निकला। मैं स्वयं कायल होता जा रहा हूँ कि हमने उचित समयपर ऐसे उचित कदम नहीं उठाये जिससे कि मेरी चिन्ता दूर हो जाती। संक्षेपमें स्थिति निश्चय ही काबूसे बाहर होती जा रही है, और इससे मेरी कठिनाइयाँ बहुत बढ़ गई हैं। लान्दोलन अधिकाधिक तेज होता जा रहा है और निकट भविष्यमें उसको काबूमें लानेकी कम ही आशा दीख पड़ती है। प्रजाको लगता है और उसे सिखाया जा रहा है कि आपको सरकारने यहाँ भेजा है और अब तक जो प्रतिष्ठा मुझे प्राप्त थी, वह अब नहीं रही। आपके आनेसे पूर्व मेरे प्रति प्रजाका जितना प्रेम और जितनी वफादारी थी, उसे अब वह देनेसे इन्कार करती है। इतना ही नहीं, बल्कि प्रजाकी राय और धारणा तो यह मालूम पड़ती है कि शासनकर्ता मैं नहीं बल्कि आप हैं।

मुझे कहना चाहिए कि अवश्य ही यह भावना आपने पैदा नहीं की है, फिर भी यह भावना मौजूद है और प्रकट है कि प्रजाकी उसे त्यागनेकी मनोवृत्ति नहीं दीख पड़ती। दीवालीकी छुट्टियाँ पास आती जा रही हैं और हमेशाके समान इजारे दिये जाने चाहिए किन्तु जनताने उसका बहिष्कार कर रखा है। अनाजकी बिन्नीका बहिष्कार करनेकी उसने ठान ली है और सम्भव है कि उसके असहयोगके कारण इस साल अनाजका कोई क्रय-विक्रय न हो। इसका अर्थ होगा राज्यका आर्थिक सर्वनाश और एक ऐसी संकटकी स्थिति जिसका वर्णन करनेके बजाय उसकी कल्पना कर लेना ही बेहतर है। और मैं समझता हूँ कि शासक होनेके नाते राज्य और उसकी प्रजाके हितमें मुझे कोई भी कीमत देकर या कोई भी त्याग करके ऐसी स्थितिको टालना ही पड़ेगा।

आप जानते ही हैं कि अब प्रजाने विद्रोहका रुख अपना लिया है और दुःख भी भोग रही है। अतएव मुझे देखना ही होगा कि इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थितिका पूरी तरह समाधान हो जाये और यथासम्भव शीघ्रातिशीघ्र प्रजा और मेरे बीच किसी प्रकारका एक पक्का सुस्पष्ट समझौता हो जाये। मुझे लगता है कि जब तक मेरी प्रजा मुझे अपना वास्तविक शासक न समझ ले तब तक मैं इस दिशामें कुछ भी करनेमें असमर्थ रहूँगा। राज्यका एक हितचिन्तक होनेके नाते आप भी यही चाहेंगे

और सहमत होंगे कि ऐसी परिस्थिति अब जारी रहने देना उचित नहीं। अतः अब मेरा अनिवार्य कर्तव्य हो जाता है कि जनताकी आँखोंमें मैं पुनः उसके वास्तविक और दयालु शासकके रूपमें प्रतिष्ठित हो जाऊँ, क्योंकि तभी उसके मनमें अपने प्रति विश्वास जमाकर मैं उससे समझौता कर पाऊँगा और पुनः उसका प्रेम और विश्वास प्राप्त करूँगा।

मैंने दरबार साहब वीरावालासे इस मामलेमें आपके विचार जान लेनेको कहा था। उन्होंने मुझे बताया है कि वह आपसे १३ तारीखको मिले थे और आपने उनसे कहा कि आपके मतमें जब तक राज्यकी वित्तीय स्थिति इजाजत देती है तब तक संघर्ष जारी रखना चाहिए और हमें देखना चाहिए कि अन्ततः विजय उनकी [प्रजाकी] होती है या हमारी।

इसके अतिरिक्त आपके १ अक्टूबर, १९३८ के पत्रसे मैं समझा हूँ कि जहाँ तक आपका सम्बन्ध है, आपका पक्का मत है कि कमोबेश रूपमें मैं ही स्वयं इन सब संकटोंके लिए जिम्मेदार हूँ। मैंने उत्तरमें इन आरोपोंसे इनकार किया। इस विनाशकारी स्थितिको मुझसे बढ़कर कोई नहीं समझता, और आपके पत्रमें लगाये गये आरोपों और आपके रुखको देखते हुए मुझे लगभग पूरा विश्वास हो गया है कि मेरे राज्य और उसकी प्रजाके हितकी रक्षाके लिए, और मेरे अधिकारों, प्रतिष्ठा और शासकपदको भी देखते हुए आप और मैं अब साथ-साथ कार्य करनेमें असमर्थ हैं।

मेरी दृढ़ इच्छा है कि शीघ्रातिशीघ्र और दीवालीकी छुट्टियोंसे पहले ही मैं स्वयं अपने राज्य और उसकी प्रजाके इस घरेलू झगड़ेका समाधान कर दूँ। और मेरे मतमें यह तब तक सम्भव नहीं होगा जब तक आप और मैं शीघ्रातिशीघ्र सम्बन्ध-विच्छेद नहीं कर लेते। यह एक अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति होगी और किसीको इसपर मुझसे ज्यादा खेद नहीं हो सकता। परन्तु यह चूँकि मेरे और मेरे राज्यके हितोंका सवाल है, अतः इसके अलावा और कोई चारा भी नहीं है। आपको यह विश्वास दिलाना मेरे लिए अनावश्यक है कि मैं किसी प्रकारसे आपकी स्थिति को अटपटी बनाना नहीं चाहता, अतः मैं यह निर्णय आप पर ही छोड़ देता हूँ कि आप किस प्रकार सेवानिवृत्त होकर चले जायें। मैं अत्यन्त इच्छुक हूँ कि आप जिस प्रकार मित्रके रूपमें आये उसी प्रकार मित्रके रूपमें ही विदा हों। मैंने निश्चित रूपसे छः मासके लिए आपकी सेवाएँ प्राप्त की थीं, अतः मैं राज्यके कोषाध्यक्षको निर्देश दे रहा हूँ कि तदनुसार आपके वेतनकी अदायगी कर दें। मैं राजस्व सचिव श्री भट्टको भी निर्देश दे रहा हूँ कि आपकी सुविधानुसार वे आपको सेवानिवृत्त कर दें।

हृदयसे आपका,
धर्मन्द्रसिंह

ठाकुर साहबको श्री ई० सी० गिब्सनका पत्र

द रेजिडेंसी

राजकोट

२६ अक्टूबर, १९३८

गोपनीय

डी० ओ० नं० सी०/१३४-३८

प्रिय ठाकुर साहब,

आपको याद होगा कि आपने १६ अक्टूबरकी शामको मुझे एक पत्र द्वारा सूचित किया था कि आप सर पैट्रिक कैडेलको हटाना चाहते हैं और आपने उनके नाम लिखे अपने पत्रकी प्रति, जिसे आप पहले ही भेज चुके थे, संलग्न करके मुझे भेजी थी। दूसरे दिन सुबह हम लोगोंमें विचार-विमर्श हुआ। उस समय मैंने आपको पुरजोर सलाह दी थी कि आप इस मामले पर पुनर्विचार करें और एक ऐसा कदम न उठायें जो प्रत्येक दृष्टिकोणसे अनिवार्यतः आपके राज्य और स्वयं आपके हितमें अत्यन्त हानिकर सिद्ध होगा। मैंने आपको ध्यान दिलाया कि जब आपने २५ अगस्तको मुझे पत्र लिखा था कि मैं सर पैट्रिक कैडेलकी नियुक्तिके लिए आवश्यक स्वीकृति प्राप्त करूँ, तब आपने बिल्कुल निश्चित रूपसे कहा था कि इस नियुक्तिकी अवधि फिलहाल कमसे-कम छः महीनेकी होगी। यही समझ कर मैंने सम्राटके प्रतिनिधि वाइसराय महोदयकी स्वीकृतिके लिए आपके अनुरोधका प्रस्ताव उनके पोलिटिकल सेक्रेटरीके पास भेज दिया था।

आपके साथ १७ अक्टूबरको और फिर २२ अक्टूबरको इस विषय पर चर्चा करते हुए मैंने जो सब बातें विस्तारसे समझाई थीं, उनको यहाँ दोहराना अनावश्यक होगा। १७ अक्टूबरको आपसे बातचीत करनेके बाद, यह देखकर कि आप मेरी दी हुई सलाह माननेको अनिच्छुक हैं, मैंने आपके १६ अक्टूबरके पत्रकी एक प्रति पोलिटिकल सेक्रेटरीको भेज दी थी।

२२ अक्टूबरकी अपनी मुलाकातमें मैंने आपको बताया था कि आपको यह सूचित कर देनेका मुझे निर्देश मिला है कि वाइसराय महोदय विश्वास रखते हैं कि राज्य और अपने हितकी खातिर आप अपने उठाये हुए कदम वापस लेनेमें कोई देरी नहीं करेंगे। तबसे इस खबरकी आशामें हूँ कि आपने इस सलाहको मानकर उसपर अमल किया है। चूँकि मुझे अभी तक आपसे ऐसी कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है अतः मैं आपको पत्र लिख रहा हूँ कि हमारी २२ अक्टूबरकी मुलाकातके बाद आपने जो-कुछ कार्रवाई की है, उसकी कृपया मुझे यथाशी सूचना दें।

हृदयसे आपका,
ई० सी० गिब्सन

ई० सी० गिब्सनको ठाकुर साहबका पत्र

गोपनीय

२९ अक्टूबर, १९३८

प्रिय श्री गिब्सन,

आपके २६ ता० के गोपनीय पत्र डी० ओ० सी०/१३४-३८ के लिए मैं अत्यन्त आभारी हूँ।

सम्राट् के प्रतिनिधि वाइसराय महोदयकी इच्छा और आपकी महत्वपूर्ण सलाह और सिफारिशको ध्यानमें रखकर मैंने सर पैट्रिक कैडेलको अपनी सेवामें रखे रहनेका निश्चय किया है, हालाँकि अब भी मेरा दावा है कि इस प्रश्नका संवैधानिक पक्ष मेरे अनुकूल ही है।

मैं उत्सुक हूँ कि यथाशीघ्र उचित कार्रवाईकी जाये। राज्यमें सुलह, शान्ति तथा कानूनके प्रति आदर समुचित रूपसे कायम रहे, इस उद्देश्यसे राजकाज चलानेके लिए सर पैट्रिक कैडेल और अपने दो अफसरोंकी एक सशक्त परिषद् बनानेका मैंने निर्णय किया है।

१७ तारीखको आपके साथ मुलाकातके समय आपने परिषद् स्थापित करनेके मेरे सुझाव पर सहमति दी थी। इस कारण मैंने निम्नलिखित सदस्योंको उनके नामके साथ लिखे विभाग सौंपनेका निश्चय किया है :

प्रथम सदस्य तथा उपाध्यक्ष : सर पैट्रिक कैडेल : १. कानून और न्याय, २. राजकीय, ३. वित्त, ४. पुलिस और ५. प्रजा प्रतिनिधि सभा तथा म्युनिसिपैलिटी।

द्वितीय सदस्य : राव साहब माणिकलाल सी० पटेल : १. वित्त, २. उद्योग, ३. राजस्व, ४. लोकनिर्माण विभाग और ५. बरदाशी।

तृतीय सदस्य : श्री जयन्तीलाल एल० जोबनपुत्र : १. स्वास्थ्य-चिकित्सा, २. जेल, ३. शिक्षा और ४. घुड़साल तथा दूसरे अनुलिखित विभाग।

वर्तमान परिस्थितिको काबूमें लानेके लिए जो भी कदम उठाये जायें, उनका निश्चय यह परिषद् करेगी और उसपर मेरी मंजूरी होगी तथा अन्य दूसरे सब महत्वपूर्ण विषयोंके सम्बन्धमें यही उपलिखित कार्य-पद्धति चलेगी।

इसके बाद मैं विस्तृत निर्देश जारी करूँगा। मेरा विचार है कि ऐसी सशक्त परिषद्की स्थापनासे दिन-प्रतिदिन विकट होती जा रही मौजूदा स्थितिके सम्बन्धमें मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी।

आपका उत्तर पानेके बाद मैं सर पैट्रिक कैडेलको तदनुसार सूचना दूँगा।

इस मामलेमें मैंने आपको जो कष्ट दिया है, उसका मुझे अत्यन्त दुःख है।

हृदयसे आपका,
धर्मेन्द्रसिंह

दरबार बीरावालाको ई० सी० गिब्सनका पत्र

द रेजिडेंसी, राजकोट

२५ नवम्बर, १९३८

प्रिय बीरावाला,

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। आज सुबह यहाँ राजकोट लौटनेपर मुझे पता चला कि आप यहाँ थे और यह सुनकर मुझे सचमुच बहुत आश्चर्य हुआ। मेरा विचार है कि यदि श्री अनन्तराय पट्टणी आपसे मिलना चाहते थे तो वह आपको भावनगर आनेको कह सकते थे, या वह स्वयं नटवरनगर जा सकते थे जो भावनगरसे राजकोटकी अपेक्षा ज्यादा निकट है। मैं समझ नहीं पाया कि उन्हें ऐसा विचित्र अनुरोध करना क्यों अनिवार्य लगा। और मेरे विचारमें यह अवश्य ही खेदकी बात है कि आपको मैंने जो सलाह दी थी, उसके बाद भी आपने उनके इस अनुरोधका पालन किया। मैं समझ सकता हूँ कि आप यहाँ आनेको अनिच्छुक थे। अपनी लम्बी बीमारीके बाद, जब आपको स्वास्थ्य-लाभके लिए आराम और शान्तिकी आवश्यकता है, ऐसी लम्बी यात्रा करना आपके स्वास्थ्यके लिए बहुत हानिकर है। मुझे खुशी है कि आज आपकी तबीयत कुछ बेहतर है और मैं आपको जोरदार सलाह देता हूँ कि आप भविष्यमें अपने स्वास्थ्यकी और ज्यादा देखभाल रखें।

सौहार्दपूर्वक,

हृदयसे आपका,

ई० सी० गिब्सन

वाला श्री बीरा मुलु,

नटवरनगरके ताल्लुकेदार, राजकोट

दरबार बीरावालाको पोलिटिकल एजेंटका पत्र

व्यक्तिगत

राजकोट

२९ नवम्बर, १९३८

प्रिय वाला श्री,

आपका कलका व्यक्तिगत पत्र मिला। मुझे दुःख है कि कर्नल ऐस्पिनालके विचारमें आपको यात्राके फलस्वरूप कष्ट पहुँचा है, विशेषकर जबकि आपने मुझे बताया है कि उसके बादसे आपको अपनी तबीयत काफी खराब लग रही है।

आपने मुझे वचन दिया था कि मैंने रेजिडेंट महोदयसे जो पूछताछ की है, उसका उत्तर आनेसे पूर्व आप राजकोटमें किसीसे भी नहीं मिलेंगे। परन्तु इसके बावजूद आप राजमहल गये, यह जानकर मुझे स्वभावतः अत्यन्त आश्चर्य हुआ।

मैं केवल यही मान सकता हूँ कि आप अपने ही हितमें यह समझ जायेंगे कि ऐसा करना बुद्धिमानी नहीं था और यह कि नटवरनगर लौट जाने तक आप वही रख अपनाये रहेंगे जिसका कि आपने स्वयं ही सुझाव रखा था, अर्थात् आपको यहाँके मामलोंसे पूर्णतः अलग रहना है और किसीसे भी नहीं मिलना है।

आशा करता हूँ कि अब आपने पूरा आराम ले लिया होगा और कल नटवरनगरके लिए वापसी-यात्रासे आपको कोई कष्ट नहीं पहुँचेगा।

हृदयसे आपका,
सी० के० डेली

वल्लभभाई पटेलको ठाकुर साहबका पत्र

अमरसिंहजी सचिवालय
राजकोट राज्य
२७ दिसम्बर, १९३८

प्रिय वल्लभभाई पटेल,

राजकोट आनेके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी हूँ।

आपने गतिरोधका अन्त करनेमें मेरी जो सहायता की है, उसकी मैं बहुत कद्र करता हूँ।

मैं समझता हूँ, आप अब तक भली प्रकार जान गये होंगे कि दीवान साहब वीराभाई मेरे और राज्यके प्रति अत्यन्त वफादार रहे हैं। उन्होंने अपने कार्य-कालमें हमेशा ही मेरी प्रजाकी भलाईके लिए अपनी ओरसे यथाशक्य कार्य किया है।

मेरे और राज्यके हितोंकी रक्षा करते हुए उन्हें हानि भी उठानी पड़ी है।

अब आपसे मेरा अनुरोध है कि मेरी प्रजाके मनमें उनके प्रति जो गलतफहमी है, उसे दूर करनेका आप यथासम्भव यत्न करें।

इसके लिए मैं अत्यन्त अनुगृहीत होऊँगा।

हृदयसे आपका,
धर्मेन्द्रसिंह
ठाकुर साहब, राजकोट

रेजिडेंसीमें हुई वार्ताके विवरणमें से उद्धृत अंश

२८ दिसम्बर, १९३८

उपस्थित : माननीय श्री गिब्सन

ठाकुर साहब

सर पैट्रिक कैडेल

राव साहब एम० सी० पटेल

राज्य परिषद्के

श्री जयन्तीलाल एल० जोबनपुत्र

सदस्य

माननीय श्री गिब्सनने बातचीत शुरू करते हुए ठाकुर साहबसे कहा कि उनके समझौतेके कारण सब राजाओंमें खलबली मच गई है। श्री गिब्सनने पूछा कि वल्लभभाई पटेल राजकोट किस प्रकार आये और क्या उनको आमन्त्रित किया गया था।

ठाकुर साहब : वह स्वेच्छासे आये थे और मुझसे मुलाकात करना चाहते थे, सो मैंने उन्हें चायके लिए आमन्त्रित किया।

श्री गिब्सन : वह बिल्कुल भी भरोसेके आदमी नहीं हैं। आप जानते ही हैं कि भारत सरकारकी इच्छा थी कि कोई बाहरी हस्तक्षेप न होने दिया जाये। उनके साथ समझौता करके आप अपने राजा-बन्धुओंकी और सरकारकी सहानुभूति गँवा बैठे हैं। हालाँकि आप जो-कुछ करें, भारत सरकार उसका बुरा नहीं मानती, परन्तु पटेल के माध्यमसे समझौता करनेमें आपने गलती की है। कांग्रेसी कार्यकर्ताओंमें से भी श्री पटेल सबसे अधिक अविश्वसनीय व्यक्ति हैं। जो-कुछ भी हो, विज्ञप्तिसे प्रतीत होता है कि समझौतेकी भाषामें ऐसी कोई बुरी बात नहीं, सिवाय इन शब्दोंके : “व्यापकतम अधिकार”। इन शब्दोंका चाहे जो भी अर्थ लगाया जा सकता है। इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि आप नाममात्रके राजा रह जायेंगे। इन शब्दोंके बल पर वे लोग बिल्कुल आरम्भसे ही पूर्ण उत्तरदायी सरकारकी माँग करेंगे और आप स्वयंको बड़ी विकट स्थितिमें पायेंगे।

ठाकुर साहब : नहीं, मैंने केवल एक समितिकी नियुक्ति की है।

श्री गिब्सन : हाँ, लेकिन समितिके सदस्योंकी नियुक्ति कौन करेगा ? और जैसी भी रिपोर्ट प्राप्त हो, उसको कार्यान्वित भी तो करना होगा।

ठाकुर साहब : हाँ, श्री वल्लभभाई पटेल नामोंका सुझाव पेश करेंगे।

श्री गिब्सन : ठीक यही बात तो है। उसका मतलब होगा समिति में कांग्रेसी कार्यकर्ता आयेंगे और जो “व्यापकतम अधिकार”, इन शब्दोंको लेकर पूर्ण उत्तरदायी सरकारकी माँग करेंगे।

सर पैट्रिक : श्री पटेल किस प्रकार नामोंको पेश करेंगे ? क्या हमें उनको लिखना होगा ?

ठाकुर साहब : नहीं, वह स्वयं नाम भेजेंगे ।

श्री गिब्सन : एक धारामें आपने स्वीकार कर लिया है कि आप रिपोर्टपर पूरा अमल करेंगे । यह बहुत बुरा हुआ । आपने तो अपने हाथ ही कटा लिये ।

श्री गिब्सनने सुधार-समितिके अध्यक्षकी नियुक्तिके विषयमें ठाकुर साहबसे पूछा कि समितिका अध्यक्ष कौन होगा ।

ठाकुर साहब : दरबार वीरावाला ।

श्री गिब्सन : नहीं, वह नहीं आ सकते ।

ठाकुर साहब : क्यों ? वह अपनी अवकाश-अवधिके बाद आ जायेंगे ।

श्री गिब्सन : नहीं, वह एक ताल्लुकेदार हैं । वह नहीं आ सकते । उनको मैं इस समय आने नहीं दूंगा ।

ठाकुर साहब : नहीं, वह सर पैट्रिकके चले आनेके बाद आ सकते हैं ।

श्री गिब्सन : यह तो सर पैट्रिकके जानेके बाद देखा जायेगा ।

राजकोट राजपत्र विज्ञप्ति

राजकोट दरबारी राजपत्र असाधारण

शनिवार, २१ जनवरी, १९३९

विज्ञप्ति

नं. ६१, १९३८-३९ का

जैसाकि विज्ञप्ति नं० ५०, २६ दिसम्बर, १९३८ में कहा गया था, हम सहर्ष निम्नलिखित सात सज्जनोंकी नियुक्ति कर रहे हैं जो राज्य के सभी महत्वपूर्ण हितोंका प्रतिनिधित्व करते हैं । ये लोग एक समितिके रूपमें राज्यके तीन अफसरोंके साथ कार्य करेंगे जिनके नाम बादमें घोषित किये जायेंगे । यह समिति समुचित जाँच-पड़तालके बाद हमारे लिए एक रिपोर्ट तैयार करेगी जिसमें सुधारोंकी एक ऐसी योजनाका सुझाव होगा जिसके अनुसार जनता राज्यके प्रशासनमें अधिक भाग ले सके :

१. श्री पोपटलाल पुरुषोत्तम अनडा, अध्यक्ष, प्र० प्र० सभा,
२. जाडेजा जीवनसिंहजी धीरूभा,
३. शेठ दादा हाजी वलीमुहम्मद,
४. श्री पोपटलाल धनजीभाई मालवीय,
५. श्री मोहनलाल म० टांक, अध्यक्ष, नगरनिगम
६. डॉ० डी० जे० गज्जर, और
७. सेठ हेपतुभाई अब्दुल अली ।

समितिको पूरी और बारीकीसे जाँच-पड़ताल करनेके बाद अपनी रिपोर्ट पेश करनी है ।

धर्मेन्द्रसिंह

ठाकुर साहब, राजकोट राज्य

सरदार वल्लभभाई पटेलको माणिकलाल पटेल का पत्र

गोपनीय

रणजीत विलास

राजकोट

१२ जनवरी, १९३९

प्रिय सरदार साहब,

ठाकुर साहबकी इच्छानुसार मैं आपके ४ तारीखके पत्रकी पहुँच स्वीकार करता हूँ जिसमें आपने प्रस्तावित सुधार-समितिके लिए उनके द्वारा मनोनीत किये जानेवाले सात नामोंकी सिफारिश की है।

आपने अखबारोंसे जान लिया होगा कि ठाकुर साहबके पास आपका पत्र पहुँचनेसे पहले ही आपके प्रस्तावित नाम प्रकट हो चुके हैं। उनको खेद है कि ऐसा हुआ है, क्योंकि ऐसे प्रकटीकरणसे आपकी और ठाकुर साहबकी स्थिति कुछ विचित्र हो गई है।

ठाकुर साहब आपके प्रस्तावित सभी नाम चुन लेनेको अत्यन्त इच्छुक हैं लेकिन आप भी इस बातको समझेंगे कि अपनी प्रजाके महत्वपूर्ण वर्गोंके अनुरोधको भी वे ठुकरा नहीं सकते और उन्हें देखना होगा कि समितिमें ऐसे लोग हों जिनपर उनकी जनताके सभी महत्वपूर्ण समुदायोंका विश्वास हो। तथ्य तो यह है कि ठाकुर साहबके सामने भायात और मुस्लिम कौंसिलके निवेदन आये हैं और दलित वर्गकी भी एक याचिका है। अतएव उन्होंने मुझसे कहा है कि आपको इस प्रकार पत्र लिखूँ।

आपने यहाँ पर ठाकुर साहबसे कहा था, जो बिलकुल सही था, कि आप नहीं जानते हैं कि यहाँके असली नेता कौन-कौन हैं और इस कारण आपने नाम पेश करना स्थगित कर दिया था ताकि आप दूसरोंसे सलाह कर लें।

१, २, ४, तथा ५ संख्यावाले सज्जनोंके लिए ठाकुर साहबकी मंजूरी है।

तीसरे नम्बरवाले सज्जन यहाँ अचल सम्पत्तिके स्वामी हैं, ४० वर्षसे यहाँ उनका वास है तथा वह एक प्रतिष्ठित नागरिक हैं। परन्तु उनसे यह आशा नहीं रखी जा सकती कि वह इस प्रकारकी समितिके कार्यके लिए स्वतन्त्र मत द्वारा कुछ उपयोगी सिद्ध होंगे।

आप सहमत होंगे कि यहाँ मुसलमान एक महत्वपूर्ण इकाई हैं और वे अब इतने सुसंगठित हो चुके हैं कि आसानीसे उनकी अवगणना करना सम्भव नहीं है। मुस्लिम कौंसिलने अपने सर्वसम्मत प्रस्तावके अन्तर्गत एक निवेदन पेश किया है जिसमें उन्होंने सातमें से तीन मुसलमान सदस्य रखे जानेका अनुरोध किया है। उनकी माँग अवश्य बेजा है परन्तु बोहरा लोगोंके समेत उन्हें दो स्थान दिये जाने चाहिए और उनकी कौंसिलका अध्यक्ष उन दोनों से एक होना चाहिए। ब्रिटिश भारतके अपने सुदीर्घ अनुभवके कारण आप समझ जायेंगे कि यदि उनके उचित अनुरोधको मान न लिया गया तो वे उपद्रव मचाकर ऐसा दूषित वातावरण पैदा कर सकते

हैं जिससे हम सभी बचना चाहते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हम एक ऐसी समिति चाहते हैं जिसमें जनताके सभी अंगोंका प्रतिनिधित्व हो और वह निष्पक्ष हो और जिसके सदस्य आपसी सामंजस्य और बुद्धिमत्ताके साथ कार्य करें।

छठवें तथा सातवें सदस्यके बारेमें, प्रतीत होता है, वे विज्ञप्तिमें दिये गये 'नागरिक' शब्दकी परिभाषाके अन्तर्गत पूरी तरह नहीं आते।

श्री वी० एम० शुक्लका न तो राज्यमें जन्म हुआ है और न ही वे जन्मसे लेकर ४० वर्षोंतक राज्यके अधिकारक्षेत्रके अन्तर्गत रहे हैं। राजकोट राज्यके नागरिक की जो परिभाषाकी गई है, उसके अनुसार अपने पूर्वजोंकी सरधार पाटीमें जायदाद होनेके कारण मात्रसे वे नागरिक नहीं माने जा सकते। वे न तो राज्यमें पैदा हुए हैं, न यहाँ अधिवासी बने हैं और न ही उन्होंने यहाँकी नागरिकता प्राप्त की है।

ठाकुर साहबका विचार है कि उ० न० देवरके मामलेमें भी यही कठिनाई आड़े आती है। जैसाकि समझा गया है, वह मूल रूपसे जामनगर राज्यके हैं और उनके पिताने अपने जीवनका अधिकांश बम्बईमें बिताया। कहा जाता है कि उनकी स्वयं की शिक्षा-दीक्षा राजकोटमें हुई है और जब उन्होंने वकालत शुरू की उस समय वे सिविल स्टेशनमें रहते थे। राज्यकी सीमाके अन्तर्गत वह पिछले दो वर्षोंसे रह रहे हैं। उन्होंने गत वर्ष राज्यमें जमीन भी खरीदी है। ठाकुर साहबको लगता है कि दिवंगत ठाकुर साहबके समयसे राज्यने हमेशा जिन अन्य अग्रगण्य व्यक्तियोंको प्रजाके नेताओंके रूपमें मान्यता दी है, उनके बीच कुछ असन्तोष उत्पन्न न होने देनेके लिए उन्हें चाहिए कि वे 'प्रजा' की परिभाषाके अन्तर्गत आनेवालोंमें से ही नामजदगी करें।

यह बात भी आपके ध्यानमें लानी होगी कि भायात लोगोंने भी ठाकुर साहबसे मिलकर एक विनती की है, जो अन्यन्त उचित भी है, कि उनमें से कम-से-कम एक व्यक्ति समितिमें हो, क्योंकि वे राज्यके अत्यन्त महत्वपूर्ण और बड़े जाति-वर्गका प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः ठाकुर साहब उनमें से एक व्यक्तिको समितिमें रखना अनिवार्य मानते हैं।

जैसाकि आप सहज ही समझ जायेंगे, ठाकुर साहबकी यही इच्छा है कि समितिमें सबसे बुद्धिमान लोग होने चाहिए और वे ऐसे भी हों जो उनकी प्रजाके सभी महत्वपूर्ण वर्गोंका प्रतिनिधित्व करते हों।

यदि उपरलिखित बातोंको ध्यानमें रखकर आप कुछ सुझाव देना चाहें तो दें। तदुपरान्त ठाकुर साहब समितिके सदस्यों की घोषणा करेंगे जिनमें से समितिके अध्यक्षके अलावा राज्यके तीन सरकारी अधिकारी होंगे।

हृदयसे आपका,
एम० सी० पटेल

माणेकलाल पटेलको सरदार वल्लभभाई पटेलका पत्र

कैम्प, बारडोली

१५ जनवरी, १९३९

प्रिय श्री माणेकलाल पटेल,

आपका १२ तारीखका पत्र मिला। उससे मुझे दुःख पहुँचा है। यह वास्तवमें खेदजनक है कि मेरे प्रस्तावित नाम प्रकाशित हो गये, परन्तु जहाँ बहुत सारे लोगोंकी बात हो वहाँ सब-कुछ गुप्त रखना हमेशा सम्भव नहीं होता। और प्रकाशनके बावजूद भी यदि उचित कारण हों तो अवश्य ही उसमें फेरबदल किया जा सकता है।

मुझे दुःख है कि भायातों और मुसलमानोंके सम्बन्धमें आपने जिन नामोंकी सिफारिश की है, उन्हें मैं स्वीकार नहीं कर सकता। समझातेके अनुसार मुझे नामोंके सुझावका अधिकार दिये जानेका एक निश्चित और समझमें आनेवाला उद्देश्य था। और आपके सुझाव मान लेनेसे वही उद्देश्य विफल हो जाता है। विशिष्ट विचार रखनेवाले कुछ सच्चे ईमानदार व्यक्तियोंको समितिमें रखनेसे उस उद्देश्यकी पूर्ति होगी, इसी कारण वे नाम पेश किये गये थे। जिन सात नामोंका मेरा सुझाव है, वे लोग अवश्य ही भायातों तथा अन्य लोगोंके हितोंको ध्यानमें रखेंगे। इससे अधिककी आशा नहीं की जा सकती।

मुझे खेद है कि आपने इस आधारपर कुछ नामोंपर एतराज करना उचित समझा कि वे लोग इस राज्यकी प्रजा नहीं हैं। किन्तु यह करनेका आपको अधिकार है। यदि और सोच-विचारके बाद भी आपका यही मत रहे कि श्री डेबरभाई 'प्रजा' की परिभाषाके अन्तर्गत नहीं आते तो आपसे तर्क-वितर्क करनेके बजाय मैं उनका नाम वापस लेनेको तैयार हूँ और उनके बदले श्री गजानन जोशी वकीलका नाम पेश करूँगा। मेरा अब भी यही मत है कि श्री वजुभाई शुक्ल प्रजाकी परिभाषाके अन्तर्गत आते हैं।

ठाकुर साहबकी विज्ञप्तिका अर्थ केवल यही होगा कि समितिका अध्यक्ष दस व्यक्तियोंकी समितिमें से ही होगा और मुझे कहना पड़ेगा कि वीरावाला अध्यक्ष पदपर नियुक्त न किये जायें। उन्होंने [वीरावालाने] मुझे सन्देश भेजा है कि वह कोई पद ग्रहण करना नहीं चाहते, किन्तु फिर भी संयोगवश कहीं ऐसा न हो जाये, यही सोचकर इसका उल्लेख करना मैंने समीचीन समझा।

मैं कहे बिना नहीं रह सकता कि समितिकी नियुक्तिमें अत्यधिक विलम्ब हो गया है। समितिकी रिपोर्ट ३१ जनवरी तक प्रकाशित हो जानी चाहिए थी। अतएव मैं आशा करता हूँ कि यह पत्र पहुँचनेके बाद फौरन ही समिति नियुक्त हो जायेगी। यदि दुर्भाग्यवश नियुक्तिमें विलम्ब होता रहा तो इस बातकी बहुत आशंका है कि जनता पुनः संघर्ष जारी कर देगी। मुझे यह भी कहना है कि ठाकुर साहब और सर पैट्रिक कैडेलके बीच हुए पत्र-व्यवहारकी प्रतिलिपि तथा रेजिडेंट

महोदयके साथ हुई भेंट-वार्ताका संक्षिप्त विवरण मेरे पास मौजूद है। मुझे भय है कि समझौता टूट जानेकी स्थितिमें सार्वजनिक हितकी खातिर मेरा कर्तव्य हो जायेगा कि मैं इन तथा मेरे पास मौजूद अन्य कागजातोंको प्रकाशित कर दूँ। किन्तु आशा करता हूँ कि मुझे ऐसा कुछ भी नहीं करना पड़ेगा, तथा समितिकी नियुक्ति हो जायेगी जो फौरन ही अपना काम आरम्भ कर देगी।

क्या मैं आपसे तार द्वारा उत्तरकी अपेक्षा रखूँ?

हृदयसे आपका,
वल्लभभाई पटेल

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, ४-२-१९३९

परिशिष्ट २

भारत सरकारका वक्तव्य : राजकोटके बारेमें^१

नई दिल्ली

१ फरवरी, १९३९

१. राजकोट और जयपुर रियासतोंके बारेमें श्री गांधी द्वारा समाचारपत्रोंमें दिये गये वक्तव्यकी ओर [सरकारका] ध्यान आकृष्ट किया गया है।

२. राजकोटके बारेमें श्री गांधी कहते हैं कि “सपरिषद् ठाकुर साहब और प्रजाका प्रतिनिधित्व करनेवाले सरदार पटेलके बीच [जो] एक सम्मानजनक समझौता हुआ था . . . ब्रिटिश रेजिडेंटने . . . [उसे] चौपट कर दिया।” वह यह भी राय जाहिर करते हैं कि “वाइसरायका कर्तव्य है कि वे राजकोटके रेजिडेंटसे कहें कि वह उस समझौतेको बहाल करें।”

३. तथ्य यह है कि सपरिषद् ठाकुर साहब और सरदार पटेलके बीच इस आशयका एक समझौता हुआ कि एक समिति नियुक्त की जाये जो संवैधानिक सुधारोंके लिए जाँच-पड़ताल करे और सिफारिशें दे। इस समझौतेकी शर्तें २६ दिसम्बरको रियासतके राजपत्रमें प्रकाशित की गईं। इस घोषणामें समितिके सरकारी और गैर-सरकारी सदस्योंकी संख्या सूचित की गई थी। इसके सिवा और कोई सूचना नहीं दी गई थी जिससे पता चले कि समितिमें कौन-कौन व्यक्ति होंगे अथवा किस आधारपर उन्हें चुना जायेगा। ऐसा लगता है कि इसके साथ ही व्यक्तिशः ठाकुर साहब और सरदार पटेलके बीच खानगी तौरपर पत्रोंका आदान-प्रदान भी हुआ जिसकी कोई सार्वजनिक सूचना नहीं दी गई। इस पत्र-व्यवहारमें ठाकुर साहबने सरदार पटेलको निम्नलिखित पत्र लिखा :

अमरसिंहजी सचिवालय
राजकोट राज्य
२६-१२-१९३८

यह तय किया जाता है कि आजकी तारीखकी राजकीय घोषणाकी धारा २ में उल्लिखित समितिके सात सदस्योंके नामोंकी सिफारिश सरदार पटेल करेंगे और उन्हें हम नामजद करेंगे।

(ह०) धर्मेन्द्रसिंह
ठाकुर साहब, राजकोट

ठाकुर साहबका कहना है कि इस पत्रका अभिप्राय उन्हें इस बातकी स्वतन्त्रता प्रदान करनेका था कि वे सरदार पटेलके सुझाये नामोंको स्वीकार करें अथवा न करें। सरदार पटेलका कहना है कि इस पत्रका अभिप्राय ठाकुर साहब पर यह बन्दिश लगानेका था कि वह [सरदार पटेल] जो भी नाम सुझायें उन्हें वह स्वीकार करेंगे।

मुधार-समितिके सदस्य

सरदार पटेलने जो नाम सुझाये, उनमें से तीन नाम ठाकुर साहबने स्वीकार कर लिये। राज्यमें रहनेवाले मुसलमानों और भायातोंको समुचित प्रतिनिधित्व प्रदान करनेके उद्देश्यसे—इन दोनों जातियोंने प्रतिनिधित्वके लिए अपने दावे पेश किये थे—वह [ठाकुर साहब] शेष चार नाम स्वीकार नहीं कर सके। उनके निर्देशपर उनके दीवानने सरदार पटेलको तदनुसार सूचित कर दिया। तथापि सरदार पटेलने अपने उत्तरमें प्रश्नके गुणावगुणोंपर विचार नहीं किया और उपरोक्त जातियोंको प्रतिनिधित्व प्रदान करनेके ठाकुर साहबके प्रस्तावको स्वीकार करनेसे इनकार कर दिया। उन्होंने केवल यह कहा कि जो नाम उन्होंने सुझाये हैं, उनसे कमपर उन्हें सन्तोष नहीं होगा, और ठाकुर साहबने जो कारण बताये हैं, उससे उन्हें कोई मतलब नहीं है, और ठाकुर साहबने जो-कुछ किया है, अपनी अकेलेकी मर्जीसे किया है। जो पत्र-व्यवहार हुआ था, रेजिडेंटको उसकी कोई जानकारी नहीं है, और न उस पत्र-व्यवहारमें उसका कोई हाथ है।

श्री गांधीका सुझाव है कि ठाकुर साहबके पत्रका जो अर्थ था, उससे भिन्न सरदार पटेलने जो अर्थ लगाया है, वही अर्थ ठाकुर साहबसे स्वीकार करनेको कहा जाये। ठाकुर साहबपर अपने पत्रका एक ऐसा मतलब स्वीकार करनेके लिए दबाव डालना स्पष्टतः अत्यन्त अनुचित होगा जो पत्र लिखते समय उनके मनमें स्पष्टतः नहीं था, और जिसे अब वह स्वीकार करनेको तैयार नहीं हैं।

श्री गांधी कहते हैं कि कहा जाता है कि रेजिडेंट “संगठित गुण्डागर्दी” का सहारा ले रहा है। श्री गांधीने यह नहीं बताया है कि इस सूचनाका, जो वास्तवमें कतई निराधार है, सूत्र क्या है।

जहाँ तक जयपुरकी बात है, जयपुरकी सरकार निःसन्देह श्री गांधीके वक्तव्यके जवाबमें जैसा ठीक लगेगा, वैसा वक्तव्य जारी करेगी।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २-२-१९४०

परिशिष्ट ३

कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्योंका त्याग-पत्र^१

[२२ फरवरी, १९३९]^२

प्रिय सुभाष,

आपकी बीमारीकी खबर सुनकर हम सबोंको बहुत दुःख हुआ। यह तो सोचा भी नहीं जा सकता था कि आप अपने स्वास्थ्यको खतरेमें डालकर वर्धा आयें। हम आशा करते हैं कि आप शीघ्र ही पूर्णतः स्वस्थ हो जायेंगे।

हालकी घटनाओंपर हमने सावधानीपूर्वक विचार किया है और अध्यक्ष-पदके चुनावके बारेमें दिये गये आपके विभिन्न वक्तव्योंको भी हमने पढ़ा है। आपकी दुःखद बीमारी, और उसके परिणामस्वरूप हमारी बैठकके स्थगनके कारण हम आपके वक्तव्योंके बारेमें अपने विचार प्रकट नहीं कर रहे हैं।

इस समय तो हमारे लिए इतना ही कहना पर्याप्त है कि हम लोग, जिनके हस्ताक्षर नीचे दिये हुए हैं, अपना कर्तव्य समझते हैं कि कार्य-समितिकी सदस्यतासे अपना इस्तीफा दे दें, और इस पत्रके जरिये हम इस्तीफा दे रहे हैं। हमें लगता है कि आपको ऐसी कार्य-समिति चुननी चाहिए जो आपके विचारोंका प्रतिनिधित्व करती हो।

हमें लगता है कि वह समय आ गया है जब देशके सामने एक स्पष्ट नीति होनी चाहिए, ऐसी नीति जो कांग्रेसके विभिन्न और परस्पर-विरोधी गुटोंके बीच समझौतेपर आधारित न हो।

इसलिए यह उचित ही होगा कि आप एक समान विचारधारावाली कार्य-समिति चुनें जो बहुमतके विचारोंका प्रतिनिधित्व करती हो। आप विश्वास रखें कि आप देशके सामने जो नीतियाँ रखेंगे, उनमें जहाँ हम आपके दृष्टिकोणसे सहमत होंगे

१. देखिए पृ० ४२३।

२. ब्रजकृष्ण चौदीवालाकी डायरी पर से।

वहाँ हम आपको अपना हर सम्भव सहयोग देंगे। सार्वजनिक दुविधाको दूर करनेके विचारसे हम यह पत्र अखबारोंमें भेज रहे हैं।

भवदीय,

(ह०) अबुल कलाम आजाद
 सरोजिनी नायडू
 वल्लभभाई पटेल
 राजेन्द्र प्रसाद
 भूलाभाई देसाई
 पट्टाभि सीतारमय्या
 शंकरराव देव
 हरेकृष्ण मेहताव
 कृपालानी
 अब्दुल गफ्फार खॉ
 जमनालाल बजाज
 जयरामदास दौलतराम

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, २३-२-१९३९

परिशिष्ट ४

सुभाषचन्द्र बोसका वक्तव्य^१

हालके [कांग्रेसके] अध्यक्ष-पदके चुनावके बारेमें महात्मा गांधीने जो वक्तव्य दिया है, उसे मैंने अत्यन्त ध्यानपूर्वक पढ़ा है। मुझे यह देखकर दुःख होता है कि महात्मा गांधीने उसे अपनी निजी पराजय माना है। इस मुद्दे पर मैं विनम्रतापूर्वक उनसे अपनी असहमति प्रकट करना चाहूँगा। मतदाताओं, अर्थात् प्रतिनिधियोंसे महात्मा गांधीके पक्ष या विपक्षमें मत देनेको नहीं कहा गया था। परिणामतः चुनावका नतीजा, मेरी रायमें, और अधिकांश लोगोंकी रायमें, व्यक्तिशः उनको [गांधीजीको] प्रभावित नहीं करता।

पिछले कुछ दिनोंमें अखबारोंमें कांग्रेसके अन्दर दक्षिणपक्षी और वामपक्षी गुटोंके बारेमें काफी कुछ कहा गया है। कई लोगोंने चुनावके नतीजेको वामपक्षी गुटकी विजय माना है। तथ्य यह है कि मैंने जनताके सामने दो मुख्य प्रश्न रखे थे। एक

था संघीय योजनाके विरुद्ध संघर्ष, और दूसरा था प्रतिनिधियोंको अपना अध्यक्ष चुननेके मामलेमें पूरी स्वतन्त्रता। इन दो प्रश्नोंने अवश्य ही मतदानको काफी प्रभावित किया होगा, और इसके सिवा, उम्मीदवारोंके व्यक्तित्वका भी कुछ हद तक प्रभाव पड़ा होगा। इन परिस्थितियोंमें मुझे लगता है कि चुनाव-परिणामके महत्वका विश्लेषण करते समय हमें कल्पनाका सहारा नहीं लेना चाहिए और न ही हमें उसका कुछ विशेष अर्थ लगाना चाहिए।

बहुसंख्यकी खातिर अगर यह मान भी लें कि चुनाव-परिणामका अर्थ वामपक्षी गुटकी विजय है, तो हमें जरा ठहर कर सोचना चाहिए कि वामपक्षियोंका कार्यक्रम क्या है। निकट भविष्यके खयालसे वामपक्षी राष्ट्रीय एकता चाहते हैं और संघीय योजनाका अनवरत विरोध करना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त, वे लोकतान्त्रिक सिद्धान्तोंके पक्ष-समर्थक हैं। वामपक्षी लोग कांग्रेसमें दरार डालनेकी जिम्मेदारी नहीं लेंगे। अगर कांग्रेसमें दरार पड़ेगी भी तो वामपक्षियोंके कारण नहीं पड़ेगी, बल्कि उनकी कोशिशोंके बावजूद पड़ेगी।

निजी तौरपर मेरी यह निश्चित राय है कि कांग्रेस संगठनमें दरार पड़नेका न तो कोई कारण है और न कोई औचित्य ही है। इसलिए मेरी यह हार्दिक आशा है कि इस समय या निकट भविष्यमें तथाकथित अल्पसंख्यक दलके लिए तथाकथित बहुसंख्यक दलके साथ असहयोग करनेका कोई प्रसंग उत्पन्न नहीं होगा। मुझे यह कहनेकी जरूरत नहीं है कि ऐसी कोई भी सम्भावना उत्पन्न होनेपर मैं अन्त तक कोशिश करूँगा कि कोई दरार न पड़ने पाये।

मेरे जैसे लोग भविष्यमें किस नीतिपर चलेंगे, इस बातको लेकर बहुतोंके मनमें आशंकाएँ पैदा हो गई हैं। मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि संसदीय और गैर-संसदीय क्षेत्रोंमें जो भी नीति अभी तक चलती आई है, उससे एकदम अलग कोई नीति नहीं अपनाई जायेगी। जहाँ तक संसदीय कार्यक्रमका सवाल है, हम चुनावके समय किये गये अपने वादोंको और अपने संसदीय कार्यक्रमोंको पहलेकी अपेक्षा ज्यादा तेजीसे कार्यान्वित करनेका प्रयत्न करेंगे। गैर-संसदीय क्षेत्रमें हम संघीय योजनाका विरोध करनेके लिए और पूर्ण स्वराज्यकी दिशामें आगे बढ़नेके लिए अपनी सारी शक्ति और सारे साधन संगठित करेंगे। और हम भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके सिद्धान्तों और नीतियोंके अनुसार ही कार्य करेंगे।

इस सम्बन्धमें मैं यह कहना चाहूँगा कि कुछ अवसरोंपर सार्वजनिक प्रश्नोंपर मुझे दुःखके साथ महात्मा गांधीसे असहमत होना पड़ा है, लेकिन उनके व्यक्तित्वके प्रति मेरा आदरभाव किसीसे भी कम नहीं है। अगर मैंने उन्हें ठीक-ठीक समझा है, तो स्वयं वे भी यही चाहेंगे कि लोग स्वतन्त्र रूपसे विचार करें, हालाँकि हो सकता है कि वे उनके [महात्मा गांधीके] साथ सदैव सहमत न भी हों? मुझे पता नहीं कि महात्मा गांधी मेरे बारेमें किस तरहकी राय रखते हैं। लेकिन उनके विचार कुछ भी हों, मेरी हमेशा यही कोशिश रहेगी कि उनका विश्वास प्राप्त करूँ—और यह कोशिश मैं सिर्फ इसलिए करूँगा कि मेरे लिए यह दुःखकी बात होगी कि मैं

अन्य लोगोंका विश्वास तो जीत सकूँ लेकिन भारतके सबसे महान व्यक्तिका विश्वास न जीत सकूँ।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दुस्तान टाइम्स, ५-२-१९३९

परिशिष्ट ५

गांधीजीकी मनःस्थितिके बारेमें श्री रमण महर्षिकी टिप्पणी१

महर्षि ने इसी ११ तारीखके 'हरिजन' में प्रकाशित गांधीजीके निम्नलिखित उद्गारका उल्लेख किया :

“ईश्वरका विधान कितना विचित्र है ! राजकोटकी यह यात्रा स्वयं मुझे भी आश्चर्यमें डालनेवाली है। मैं क्यों जा रहा हूँ, कहाँ और किसलिए जा रहा हूँ ? इन बातोंके बारेमें मैंने कुछ नहीं सोचा है। यदि ईश्वर मेरा मार्गदर्शन करता है तो मैं क्यों सोचूँ ? उसके पथ-प्रदर्शनमें यह चिन्तन भी बाधा बन सकता है।

“तथ्य यह है कि चिन्तन-प्रवाहको रोकनेके लिए कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता। विचार आते ही नहीं हैं। मेरा मन शून्य हो गया है, ऐसी बात नहीं है — परन्तु मेरा अभिप्राय इतना ही है कि अपने इस मिशनके बारेमें मनमें कोई विचार नहीं है।”

महर्षिने कहा कि ये शब्द कितने सच हैं। उन्होंने उक्त उद्धरणकी एक-एक बात पर जोर दिया। इसके बाद उन्होंने विचार-शून्य स्थितिके समर्थनमें [तमिल-नाडुके प्रसिद्ध कवि और चिन्तक] तायुमानवरका हवाला दिया :

“यदि मनुष्य शान्त रहे तो आनन्दकी अनुभूति होगी। तब तक यह भ्रामक योग-क्रिया क्यों है ? क्या बुद्धिको किसी एक विशेष दिशामें संचालित करनेसे आनन्द की प्राप्ति हो सकती है ? ”

प्रश्न : गांधीजीने जिस स्थितिका वर्णन किया है, क्या वह ऐसी स्थिति नहीं जिसमें विचार भी एक अनजानी चीज बन जाते हैं ?

महर्षि : हाँ। 'मैं' का विचार उत्पन्न होनेके बाद ही अन्य सारे विचार उत्पन्न होते हैं। जब आप “मैं हूँ” का अनुभव करते हैं, उसके बाद ही संसार दिखाई पड़ता है। उनके [गांधीजीके] लिए 'मैं' का विचार और अन्य सभी विचारोंका लोप हो गया है।

प्रश्न : तब उस स्थितिमें शरीरका भान भी नहीं रहता होगा।

महर्षि : शरीरका भान भी एक विचार है, जबकि वह उस स्थितिका वर्णन कर रहे हैं जिसमें “विचार आते ही नहीं।”

प्रश्न : वह यह भी कहते हैं कि “ चिन्तन-प्रवाहको रोकनेके लिए कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता । ”

महर्षि : बेशक, चिन्तन-प्रवाहको रोकनेके लिए कोई प्रयत्न करना आवश्यक नहीं है, जबकि विचार पैदा करनेके लिए प्रयत्नकी आवश्यकता है ।

प्रश्न : गांधीजीने इतने लम्बे समय तक सत्यका पालन किया और आत्म-बोध प्राप्त कर लिया ।

महर्षि : सत्य ही अहं है । सत्य ‘सत्’ से बना है । सत् भी और कुछ नहीं, अहं ही है । इसलिए गांधीजीका सत्य केवल अहं है । . . .

उपनिषदोंकी बात ही शाश्वत सत्य है, और आत्म-ज्ञान प्राप्त करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति अपने उस अनुभवके लिए उनका ऋणी है । अहं ही ब्रह्म है, यह सुननेके बाद ही मनुष्य अहंका सही अर्थ जान पाता है और उसकी ओरसे विमुख हो जानेपर वह पुनः उसीकी ओर लौट आता है । यही आत्मज्ञानकी पूरी प्रक्रिया है ।

[अंग्रेजीसे]

डॉक्स विद श्री रमण महर्षि, पृ० ७३४-९

सामग्रीके साधन-सूत्र

नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली : गांधीजीसे सम्बन्धित साहित्य तथा कागजातका केन्द्रीय संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

सावरमती संग्रहालय, अहमदाबाद : गांधीजीसे सम्बन्धित पुस्तकों और कागजातका पुस्तकालय तथा अभिलेखागार।

‘टाइम्स ऑफ इंडिया’ : बम्बईसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

‘बॉम्बे क्रॉनिकल’ : बम्बईसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

‘सर्वोदय’ : गांधी सेवा संघके तत्त्वावधानमें प्रकाशित और काका कालेलकर तथा दादा धर्माधिकारी द्वारा सम्पादित हिन्दी मासिक।

‘हिन्दुस्तान टाइम्स’ : नई दिल्लीसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

‘हिन्दू’ : मद्राससे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

‘हरिजन’ (१९३३-५६) : हरिजन सेवक संघके तत्त्वावधान और गांधीजी की देखरेखमें प्रकाशित अंग्रेजी साप्ताहिक।

‘हरिजनबन्धु’ (१९३३-५६) : हरिजन सेवक संघ के तत्त्वावधान और गांधीजी की देखरेखमें प्रकाशित गुजराती साप्ताहिक।

प्यारेलाल पेपर्स : नईदिल्लीमें श्री प्यारेलालके पास उपलब्ध कागजात।

‘इंडियन नेशनल कांग्रेस’, फरवरी १९३८ से जनवरी, १९३९ (अंग्रेजी) : प्रकाशक :

जे० बी० कृपालानी, स्वराज भवन, इलाहाबाद।

‘इंसिडेंट्स ऑफ गांधीजीज लाइफ’ (अंग्रेजी) : सम्पादक : चन्द्रशंकर शुक्ल, बोरा ऐण्ड कम्पनी पब्लिशर्स लिमिटेड, बम्बई, १९४९।

‘टॉक्स विद श्री रमण महर्षि’ (अंग्रेजी) : रमण आश्रमम् तिरुवन्नामलै द्वारा प्रकाशित।

‘पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद’ : सम्पादक : काका कालेलकर, जमनालाल सेवा ट्रस्ट, वर्धा, १९५३।

‘(ए) पिलग्रिमेज फॉर पीस’ (अंग्रेजी) : प्यारेलाल, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९५०।

‘(ए) बंच ऑफ ओल्ड लेटर्स’ (अंग्रेजी) : सम्पादक : जवाहरलाल नेहरू, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई, १९५८।

- ‘बापुना पत्रो—४ : मणिबहेन पटेलने’ (गुजराती) : सम्पादक : मणिबहेन पटेल,
नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६०।
- ‘बापुना पत्रो—२ : सरदार वल्लभभाईने’ (गुजराती) : सम्पादक : मणिबहेन पटेल,
नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५७।
- ‘बापुना बाने पत्रो’ (गुजराती) : इंटरनेशनल प्रिंटिंग प्रेस, फीनिक्स, नेटाल, १९४८।
- ‘बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष’ : हीरालाल शर्मा, ईश्वर शरण आश्रम,
इलाहाबाद, १९६७।
- ‘(द) ब्रदरहुड ऑफ रिलिजन्स’ (अंग्रेजी) : सोफिया वाडिया, इंटरनेशनल बुक
हाउस लिमिटेड, बम्बई, १९३९।
- ‘मध्यप्रदेश और गांधीजी’ : सूचना तथा प्रकाशन निदेशालय, मध्यप्रदेश, १९६९।
- ‘महात्मा—लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गांधी’, खण्ड-४ (अंग्रेजी) : डी० डी०
तेंडुलकर, प्रकाशन विभाग, सूचना तथा प्रसारण मन्त्रालय, नई दिल्ली।

तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(१५ अक्टूबर, १९३८ से २८ फरवरी, १९३९ तक)

१५ अक्टूबर, १९३८ : गांधीजी उटमंजईमें। पेशावर लौटे।

१६ अक्टूबर : नौशेरा और होती मरदानमें खुदाई खिदमतगारोंकी सभामें भाषण दिया।

१७ अक्टूबर : मरदानमें। समाचारपत्रोंको एक वक्तव्य जारी किया जिसमें त्रावणकोरमें छात्रों द्वारा किये गये उपद्रव की भर्त्सना की।

स्वाबी गये और वहाँ खुदाई खिदमतगारोंकी सभामें भाषण दिया।

१८ अक्टूबर : उटमंजई लौटे।

१९/२० अक्टूबर : खान अब्दुल गफ्फार खाँके साथ बातचीत की।

२१ अक्टूबर : पेशावर लौटे। कोहाट पहुँचे।

२२ अक्टूबर : कोहाटमें सार्वजनिक सभामें भाषण दिया।

२३ अक्टूबर : हुंगूममें। खुदाई खिदमतगारोंके साथ बातचीतकी।

२४ अक्टूबर : बन्नूममें।

२५ अक्टूबर : बन्नूममें। सार्वजनिक सभामें भाषण दिया।

२६ अक्टूबर : बन्नूममें। समाचारपत्रोंको एक वक्तव्य जारी किया जिसमें त्रावणकोरके महाराजा और दीवानको राज्यके सत्याग्रही कैदियोंको आम माफी देनेपर बधाई दी।

लक्की गये और वहाँ सार्वजनिक सभामें भाषण दिया। खुदाई खिदमतगारोंसे बातचीत की।

२७ अक्टूबर : डेरा इस्माइल खाँ पहुँचे।

२८ अक्टूबर : डेरा इस्माइल खाँमें। सार्वजनिक सभामें भाषण दिया।

३० अक्टूबर : कुलाची गये। डेरा इस्माइल खाँ लौट आये।

३१ अक्टूबर : टाँकमें। सार्वजनिक सभामें भाषण दिया।

खुदाई खिदमतगारोंसे बातचीत की। डेरा इस्माइल खाँ लौट आये।

१ नवम्बर : पनियालामें खुदाई खिदमतगारोंसे बातचीत की।

मीराखेल पहुँचे।

२ नवम्बर : मीराखेलमें। अहमदबाँध गये। शामको पेशावर पहुँचे।

३ नवम्बर : पेशावरमें। खादी प्रदर्शनीका उद्घाटन किया।

४ नवम्बर : पेशावरमें।

५ नवम्बर : पेशावरमें। वकील मण्डलके समक्ष भाषण दिया।

६ नवम्बर : पेशावरमें। विभूति, पंजा साहब और हरिपुर गये।

७ नवम्बर : हरिपुर और ऐबटाबादमें। खुदाई खिदमतगारोंसे बातचीत की।

८ नवम्बर : ऐबटाबादमें ।

मानसेरा पहुँचे । सार्वजनिक सभामें भाषण दिया । वापस ऐबटाबाद पहुँचे ।
अल्पसंख्यकोंका शिष्टमण्डल गांधीजीसे मिला ।

सार्वजनिक सभामें भाषण दिया ।

९ नवम्बर : ऐबटाबादमें । तक्षशिला गये । दिल्लीके लिए रवाना हुए ।

१० नवम्बर : दिल्ली पहुँचे । बेगम अन्सारीसे मिलने गये । सेगाँवके लिए रवाना हुए ।

११ नवम्बर : सेगाँव पहुँचे ।

१४ नवम्बर : वल्लभभाई पटेलके साथ राजकोट सत्याग्रहके विषयमें बातचीत की ।

१५ नवम्बर : त्रावणकोर राज्य-कांग्रेस शिष्टमण्डलके साथ बातचीत की ।

१६ नवम्बर : बातचीत जारी रही ।

२१ नवम्बर : जवाहरलाल नेहरूने गांधीजीसे मुलाकात की ।

२७ नवम्बर : औंध-राज्यके नेताओंसे बातचीत की ।

२९ नवम्बर : औंधके संविधानके सम्बन्धमें अप्पा साहब पन्तसे बातचीत की ।

३० नवम्बर : औंध-राज्यके लिए संविधानका मसविदा बनाना आरम्भ किया ।

१ दिसम्बर : अप्पा साहब पन्तसे विचार-विनिमय किया ।

३ दिसम्बर : राजनन्दगाँवमें मिल-मजदूरोंकी हड़ताल तथा राज्यकी तत्सम्बन्धी नीतिपर
रुझकरके साथ बातचीत की ।

१५ दिसम्बर : कांग्रेस कार्य-समितिके सदस्योंके साथ विचार-विमर्श किया ।

२२ दिसम्बर : स्काउटोंकी रैलीमें भाषण दिया ।

२३ दिसम्बर : डॉ० राधाकृष्णन गांधीजीसे मिलने आये और गांधीजीसे अनुरोध किया
कि वे राजाजीको मनायें कि मद्रास प्रान्तमें हिन्दीको अनिवार्य न बनायें ।

२४ दिसम्बर : गांधीजी वर्धा आये ।

मगन संग्रहालय और उद्योग भवनका उद्घाटन किया ।

नागपुरमें हुए अर्थशास्त्र सम्मेलनमें शामिल होनेवाले अर्थशास्त्रियोंके साथ
विचार-विनिमय किया ।

फ्रीडमैनके साथ बातचीत की । सेगाँव लौटे ।

३१ दिसम्बर : ताम्बरम्के मिशनरी सम्मेलनमें भाग लेनेवाले चीनी प्रतिनिधि-मण्डलके
सदस्य टिमोथी टिंगफांग ल्यूको भेंट दी ।

१ जनवरी, १९३९ : ताम्बरम्के मिशनरी-सम्मेलनमें भाग लेनेवाले चीनी प्रतिनिधि
मण्डलके सदस्य टिंगफांग ल्यू और पी० सी० शूको भेंट दी ।

जोहानिसबर्गके डी० आर० मिशनके रेवरेण्ड एस० एस० तेमाको भेंट दी ।

बारडोलीके लिए रवाना हो गये ।

२ जनवरी : बारडोली पहुँचे ।

३ जनवरी : उ० न० डेबरके साथ राजकोट-सत्याग्रहपर बातचीत की ।

४ जनवरी : जयपुर-सत्याग्रहके सम्बन्धमें जमनालाल बजाजके साथ बातचीत की ।

११-१४ जनवरी : कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठकमें शामिल हुए ।

- १५ जनवरी : तोयोहिको कागावाके साथ बातचीत की। आगा खाँसे अल्पसंख्यक सम्प्रदाय और साम्प्रदायिक एकतापर बातचीत की।
- १७ जनवरी : बी० जी० खेरने गांधीजीसे मुलाकात की।
- २३ जनवरी : गांधीजीसे राजकोटके मामलोंपर विचार-विमर्शके लिए वल्लभभाई पटेल बारडोली आये।
- २४ जनवरी : गांधीजीने पट्टाभि सीतारमय्यासे बातचीत की।
- २६ जनवरी : उद्धार-दिवस पर आयोजित किसानोंकी सभामें भाषण दिया।
- २८ जनवरी : नगरपालिकाओं और स्थानीय मण्डलोंके प्रतिनिधियोंसे बातचीत की।
- २९ जनवरी : जब्त हुई जमीनें वापस मिलनेके अवसरपर किसानोंकी सभामें भाषण दिया।
- ३१ जनवरी : कांग्रेस-अध्यक्षके रूपमें सुभाषचन्द्र बोसके निर्वाचन और राजकोट तथा जयपुर-सत्याग्रहके सम्बन्धमें समाचारपत्रोंको वक्तव्य जारी किया।
- १ फरवरी : सेगाँवके लिए रवाना हुए।
- २ फरवरी : सेगाँव पहुँचे।
- ३-४ फरवरी : वर्धामें। वर्धा शिक्षा योजनाके अन्तर्गत प्रशिक्षण ले रहे अध्यापकोंसे बातचीत की।
- ५ फरवरी : सेगाँवमें।
- ८ फरवरी : जमनालाल बजाजकी गिरफ्तारीपर समाचारपत्रोंको वक्तव्य जारी किया।
- ९ फरवरी : राजकोट तथा जयपुर-सत्याग्रहके सम्बन्धमें समाचारपत्रोंको वक्तव्य जारी किया।
- १३ फरवरी : इंग्लिश बैप्टिस्ट मिशनके डॉ० चेस्टरमैनसे बातचीत की।
- १४ फरवरी : गांधीजीसे विचार-विमर्शके लिए सुभाषचन्द्र बोस सेगाँव आये।
- १५ फरवरी : बातचीत जारी रही।
- २१ फरवरी : गांधीजीने हैदराबाद राज्य-कांग्रेसके प्रतिनिधियोंसे बातचीत की।
- २३ फरवरी : अण्णामलै विश्वविद्यालयमें हड़ताल और राजकोट-सत्याग्रहके सम्बन्धमें समाचारपत्रोंको वक्तव्य जारी किया।
- २४ फरवरी : राजकोट जानेके अपने निश्चयपर एक आश्रमवासीके साथ बातचीत की।
- २५ फरवरी : राजकोट-सत्याग्रहके सम्बन्धमें समाचारपत्रोंको वक्तव्य जारी किया। राजकोट पहुँचनेके उद्देश्यसे बम्बईके लिए रवाना हुए।
- २६ फरवरी : बम्बई पहुँचे।
- २७ फरवरी : राजकोट पहुँचे। एसोसिएटेड प्रेस और 'हिन्दू' के प्रतिनिधियोंको भेंट दी।
- २८ फरवरी : मुस्लिम कौंसिल ऑफ ऐक्शनके प्रतिनिधियों और गिरासिया मण्डलके शिष्टमण्डलके साथ अलग-अलग बातचीत की। 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको भेंट दी।

शीर्षक-सांकेतिका

टिप्पणी, ३४-३५; —(डॉ० एन० बी०)
खरेके नाम पत्र पर, १६२; —[गिर्याँ],
१००-२, २४२-४३, ४७७-७८

तार,—अमृत कौरको, १५२, ५१४; —कृष्ण-
स्वामीको, ३०७; —(डॉ०) खान-
साहबको, ४३६; —जलियाँवाला बाग
स्मारक कोषके स्थानीय मंत्रीको, १८०;
—जैठानन्दको, ४३६; —(महादेव)
देसाईको, ४१८; —(बालकृष्ण शर्मा)
'नवीन' को, —३४६; —(जवाहरलाल)
नेहरूको, ४४०; —(जैनब र०) पटेल-
को, २३७; —(पट्टम् ताणु) पिल्लैको,
१८२, २३६, २३८, २३८-३९, ३०९;
—(जमनालाल) बजाजको, ३६०,
४०६, ४१८, ४४५-४६; —(जानकी
देवी) बजाजको, ३७२-७३; —(राधा-
कृष्ण) बजाजको, ५१०, ५१६; —
(घनश्यामदास) बिड़लाको, ४०, ३१०,
३९९, ४०६-७, ४४०, ४६१, ४७४;
—मीराबहनको, ५१४; —(च०)
राजगोपालाचारीको, ३०७; —राजेन्द्र-
प्रसादको, ४३४; —(जी०) रामचन्द्रन-
को, ३०९; —(रा० स०) रुइकरको,
१३४; —लीम्बडी प्रजा मण्डलको,
४३५; —वाइसरायके निजी सचिव-
को, ४९४; —विश्वनाथदास को, ३७१;
—(वी० एस० श्रीनिवास) शास्त्रीको,
४९२; —(अकबर) हैदरीको, ३२२,
४८७

(एक) पत्र, १७९; —(मूलचन्द) अग्रवालको,
२४-२५; —अमृतुस्सलामको, २९०,

२९१, ३५२-५३, ३६०, ३७१, ३८०;
—अमृत कौरको, १२, २१, ३५, ४१,
५४-५५, ६९, ७७, ८३, ८४-८५,
८८, ११०, १२२, १३३, १३६,
१४०, १४३, १४९, १५९, १६१-६२,
१६३, १६७, १७१, १७६, १९६,
२०५, २१६, २२०, २४७, २५५,
२८०, ५१२; —(एच० पी० रंगनाथ)
अय्यंगारको, ११; —(लीलावती)
आसरको, १८, २१७-१८; —(प्रेसा-
बहन) कंटकको, १४५; —(दत्तात्रेय
बा०) कालेलकरको, २४, १६२-६३,
१८२, ३२४, ३२५, ४०८, ४०९;
—(सतीश द०) कालेलकरको, ४११;
—(जे० सी०) कुमारप्पाको, ८५, १३६,
१४१, १९७, २०६, २१६, २३०,
२६०, ३९९-४००; —(गुलाम रसूल)
कुरेशीको, ४६९; —(शुएव) कुरेशी
को, १७४-७५, ३०८; —कृष्णचन्द्रको,
८१, २१८, ३२६, ४३८, ४४९;
—(सिकन्दर हयात) खाँको, १६;
—(कस्तूरबा) गांधीको, ९, २३, ६०,
९५, ४०१, ४०९, ४३२, ४३७, ४४३,
४४८, ४५२, ४६२, ४७१, ४७२,
४७५-७६, ४८५, ४८८-८९, ४९२,
४९५; —(कान्तिलाल) गांधीको,
१९-२०, ११२-१३, १४२, १४४,
१५७-५८, १६४-६५, ३८९, ३९०,
४४८; —(देवदास) गांधीको, १७७,
१९९; —(नारणदास) गांधीको, १८,
७४, १७२, ४६८; —(पुरुषोत्तम)

गांधीको, ८४, ३९५; —(मणिलाल) गांधीको, ११९-२०, ३६४, ५०२; —(सरस्वती) गांधीको, ११८; —(मुशीला) गांधीको, ११९, १७५-७६, २३७, ३४७, ३५०, ३६५; —गिरधारीलालको, १६०; —(ब्रजकृष्ण) चाँदीवालाको, ३६, ४४, २३२, २४९, ३५३, ३६८; —(गोरधनदास) चोखावालाको, ४३५; —(शारदाबहन गो०) चोखावालाको, ४३४, ४४२, ४७०, ४७२, ४७४, ४७५, ४८५; —(प्रेमी) जयरामदासको, १८०; —(पुरुषोत्तम के०) जेराजाणीको, ३४८; —(एन० एम०) जोशीको, २४९-५०; —(छगनलाल) जोशीको, ७४-७५; —(चन्द्रभाल) जौहरीको, ४३३; —(अमृतलाल वि०) ठक्करको, ९६, ३३८; —(महादेव) देसाईको, ६, ७-८, २१, ४१-४२, ४७, ५५-५६, ७३, ७८, ८३, ८७, ८८-८९, ९४, १०६, १०७-८, ११२, १२२-२३, १३३-३४, १३७, १४१-४२, १४३-४४, १७५, २४८, ५११, ५१३; —(भूलाभाई जे०) देसाईको, २३६; —(जयरामदास) दौलतरामको, ३४६; —(बालकृष्ण शर्मा) 'नवीन' को, ४८६; —(अमृतलाल टी०) नानावटीको, ९, ९५, ९९, २०१, २०६, २२०, ३४५; —(जवाहरलाल) नेहरूको, १५०, १५९, १६१, १७८, २५१, ४०८, ४१४, ४२४, ४४६-४७; —(इन्दिरा) नेहरूको, ४१९; —(रामेश्वरी) नेहरूको, १३४, २०३, ३६१; —(विजया-बहन म०) पंचोलीको, ४७०-७१, ४७६, ४८६, ४९६; —(रणछोड़लाल) पटवारीको, १८०-८१, ३०८-९;

—(डाह्याभाई म०) पटेलको, ३५२; —(मणिबहन) पटेलको, ७९-८०, १७२, २०१, २५५-५६, ४७३; —(मणिबहन) पटेल और (मृदुला) साराभाईको, ४७७; —(रवीन्द्र आर०) पटेलको, ३३७; —(वल्लभ-भाई) पटेलको, ३७-३८, १५२, १७३, २४१, २५४, २८६, ४३३, ४४९, ४५३, ४६३; —(विजया एन०) पटेलको, १०, ८०-८१, १२१, १७४, २०७; —(एल० एम०) पाटिलको, ४४७; —(इन्दु एन०) पारेखको, २६१; —(चन्दन) पारेखको, २८१, ३३७, ३४७-४८, ३६७; —(रामी-बहन के०) पारेखको, ३५१; —(एस० वेलु) पिल्लैको, २९३-९४; —पृथ्वी-सिंहको, २५१-५२; —प्रभावतीको, ४२-४३, १७३-७४, २२१; —(जमना-लाल) बजाजको, २५३, २७५-७६, ३२३; —(जानकीदेवी) बजाजको, ४२४, ४३२-३३; —(राधाकृष्ण) बजाजको, २८७; —बलवन्तसिंहको, ३८, २३१, २३५, २५६, २६१-६२, ३१४, ३३८-३९; —(एफ० मेरी) बारको, ३१४, ४४६; —(सुभाष-चन्द्र) बोसको, २४०-४१, ४२३-२४; —(देवप्रकाश) भाटियाको, १११; —(ना० र०) मलकानीको, १९७, ३४३-४४, ३४९-५०, ४४१; —(मनुबहन सु०) मशरूवालाको, २५३, ३५१; —(एम० आर०) मसानीको, ७५, १२०; —(रुस्तम) मसानीको, १९; —मीराबहनको, ७, ७२, ७७-७८, ९४, १०५, १११, १६४, १६७-६८, १७७-७८, १९५-९६, १९८, २१७, २७६-७७, २८०-

८१, ३३४-३५, ३४४, ४०१, ४०७, ४६२, ५१२; —(कन्हैयालाल मा०) मुन्शीको, २१०; —(दामोदरदास) मूंदड़ाको, २११; —(वैकुण्ठभाई ल०) मेहताको, २००; —(हरेकृष्ण) मेहता-बको, ४४२; —मैसूरके महाराजा-को, ३७९; —(शान्तिकुमार न०) मोरारजीको, १७९, २००; —(च०) राजगोपालाचारीको, २६४-६५, ४४७, ४७१-७२; —(सर्वपल्ली) राधाकृष्णन्को, २६०; —(मोतीलाल) रायको, ५९-६०, १७१-७२, ४३७; —(लॉर्ड) लिनलिथगोको, १३५, २५९, ३६५-६७, ३९४-९५, ४५१-५२, ४८८, ४९७; —(हरसरन) वर्माको, २०५, २३२; —(प्रभुदयाल) विद्यार्थीको, १८३, ३१५; —(हीरा-लाल) शर्माको, ३६, २०४, २८७-८८, ४०२, ४६३; —शामलालको, १६, १९८, २५२; —(वी० एस० श्रीनिवास) शास्त्रीको, १७; —(चिमन-लाल एन०) शाहको, ९६, २०२; —(शारदा चि०) शाहको, १०-११, ५६, ४२०; —(जनरल) शिन्देको, ३७९, ४१९; —सम्पूर्णानन्दको, २९४, ४०३; —सरस्वतीको, २६२; —(राय-कुमार) सिंहको, २३; —सुरेश सिंहको, ४६९; —(सर डब्ल्यू० बीकम) सेंट जॉनको, ३३६, ३४९, ३७०; —(मार्गरेट) स्पीगलको, २०२-३, २३१; —(आनन्द तो०) हिगोरानीको, १६५; —(विद्या आ०) हिगोरानीको, ६०; —(अकबर) हैदरीको, २७४, ३४१-४३, ४८७, ४९७-९८; —(अगाथा) हैरिसनको, ९२, २४८

पुर्जा, —अमृत कौरको, ४२५; —(अमृतलाल वि०) ठक्करको, ३३५; —(महादेव) देसाईको, १; —(वल्लभभाई) पटेलको, ३२५; —(जमनालाल) बजाजको, —२७४-७५; —(कंचन मु०) शाहको, १३८

प्रस्तावना, —‘दादाभाई नौरोजी’ की, २७-२८; —‘ब्रदरहुड ऑफ रिलिजन्स’ की, १६०

प्राक्कथन, ४००

बातचीत, —अध्यापक-प्रशिक्षणाथियोंके साथ, ४१०-१७; —अर्थशास्त्रियोंके साथ, २८४-८६; —अल्पसंख्यकोंके शिष्ट-मण्डलके साथ, ११५; —ईसाई मिशनरियोंके साथ, २२२-२९; —एक आश्रमवासीके साथ, ४९५; —(तोयोहिको) कागावाके साथ, ३२६-३०; —(अब्दुल गफ्फार) खाँके साथ, ५-६, २९-३३; —खुदाई खिदमतगारोंके साथ, १-३, ३-४, ४४-४७, ४८-५१, ६४-६७, ७०-७२, ९०-९१, ९१-९२, ९२-९३, ११३-१४; —गिरासियोंके शिष्टमण्डलके साथ, ५१७; —(डॉ०) चेस्टरमैनके साथ, ४६४-६८; —(डी०) ताकाओकाके साथ, २०७-९; —त्रावणकोर राज्य कांग्रेस शिष्टमण्डलके साथ, १४६-४९; —नगरपालिकाओं और स्थानीय मण्डलोंके प्रतिनिधियोंके साथ, ३७३-७८; —(मॉरिस) फ्रीडमैनके साथ, २९२-९३; —(जॉन आर०) मॉट के साथ, १८३-९२; —मुसलमान प्रतिनिधियोंके साथ, ५१६; —विभूति में, १०८-९; —साम्यवादियोंके साथ, १२३-२७; —हैदराबाद-राज्य-कांग्रेसके प्रतिनिधियोंके साथ, ४८९

भाषण, —ऐबटाबादकी सार्वजनिक सभामें, ११६-१८; —किसानोंकी सभामें, ३६८-७०, ३८०-८१; —कोहाटकी सार्वजनिक सभामें, ४३; —टांककी सार्वजनिक सभामें, ८९-९०; —डैरा इस्माइल खाँकी सार्वजनिक सभामें, ८१-८२; —नौशेरामें, १२-१४; —पेशावरके वकील मण्डलके समक्ष, १०७; —पेशावर खादी-प्रदर्शनीके उद्घाटन-समारोहमें, ९७-९८; —बन्तूमें, ६१-६३; —मगन संग्रहालय और उद्योग-भवनके उद्घाटन-समारोहमें, २८२-८४; —मानसेहराकी सार्वजनिक सभामें, ११४-१५; —लक्कीमें, ६८; —स्काउटोंकी रैलीमें, २५७-५९; —स्वावीमें, २२; —हरिपुरकी सार्वजनिक सभामें, १०९-१०; —होती मरदानमें, १४-१५

भेंट, —अमेरिकी अध्यापकोंको, २७७-७९; —एसोसिएटेड प्रेसके प्रतिनिधिको, ५१३-१४, ५१५; —‘टाइम्स ऑफ इंडिया’ के प्रतिनिधिको, ३६१-६४; —(एस० एस०) तेमाको, ३००-२; —दक्षिण आफ्रिकाके भारतीय विद्यार्थियोंको, ४२५-२६; —(टिमोथी टिंगफांग) ल्यूको, २८८-९०; —(टिमोथी टिंगफांग) ल्यू, (वाई० टी०) वू और (पी० सी०) शू को, २९५-९९; —(सेलिस्टीन) स्मिथको, २३३; —(एच० बी०) हॉडसनको, २६५-६६; —‘हिन्दू’ के प्रतिनिधिको, ५१५, ५१८

वक्तव्य, —समाचारपत्रोंको, २०, ६७, २२१-२२, ३१५, ३९६-९७, ३९८-९९, ४०३-६, ४३८-३९, ४४३-४५, ४५३-५४, ४९३, ४९४, ४९८-५०२

सन्देश, —अखिल भारतीय महिला सम्मेलन-को, २५४; —इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्र संघको, २३९; —कमाल अतातुर्क-के देहावसानपर, १२१; —(सी० के०) गिब्वनको, २२९; —त्रावणकोर राज्य-कांग्रेसके अध्यक्षको, २६७; —पेशावर खादी-प्रदर्शनीके उद्घाटन-समारोहके निमित्त, ९७

विविध

अ० भा० ग्रामोद्योग संघ प्रशिक्षण विद्यालय, २१९; अकालसे राहतके लिए खादी, ५०७; अखबारोंमें असत्य, ४५४-५६; अन्दरकी गन्दगी, ३५५-५७; अप्रमाणित खादी-विक्रेता, ३१६; असहयोगी, १६५-६६; अहिंसाका पालन, ४२८-३२; अहिंसा ही एकमात्र मार्ग, २६३; आधुनिक लड़की, ३८४-८६; आलोचनाओंका जवाब, २११-१३; इस्लामी संस्कृति, ३५८-५९; औंधका संविधान, ३२३-२४; कस्तूरबा गांधी राजकोट क्यों गई?, ४२७-२८; कांग्रेस और खादी, १३८-४०; काठियावाड़-यात्राकी छाप, ९८-९९; ‘कितने भगवत्परायण !’, ३५७-५८; क्या अहिंसाका कोई प्रभाव नहीं पड़ता?, ३०४-७; क्या यह अहिंसा है?, ५०७-१०; क्षमायाचना नहीं, ४२२-२३; खण्डन, ६८-६९; खादीको लोकप्रिय कैसे बनायें, १९२-९५; खुदाई खिदमतगार और बादशाह खान, १२७-३२; चेतावनी, १८१; जन-शिक्षा आन्दोलन, ८२; जन्तकी गई जमीनें, ३९-४०; जमनालाल बजाजके लिए पत्रका मसविदा, ३११-१३; जमनालाल बजाजके लिए समाचार-पत्रोंको दिये जानेवाले वक्तव्यका मसविदा, ३१०-११; जमनालालजीपर प्रतिबन्ध,

३२०-२२; जयपुर, ३३१-३२, ३८६-८९; जर्मन आलोचकोंको जवाब, २०९-१०; जिला बोर्ड, २४५-४७; टाटानगरमें हरिजन-कल्याण कार्य, १९५; त्रावणकोर, ३१७-१९, ४५७-५८; दानकी जगह काम, ४९६; देशी राज्य, ३५३-५५; देशी राज्य और प्रजा, १६८-७०; देशी राज्योंके सम्बन्धमें कांग्रेस कार्य-समितिके प्रस्तावका मसविदा, २३३-३५; नारायण मोरेद्वर खरेकी स्मृतिमें, ३९५; निर्देश-पुस्तिकाकी जरूरत, २६३-६४; प्रेम एक सार्वभौम गुण, ३३९-४१; फिर त्रावणकोर, ४७९-८१; बड़ी शक्तियाँ क्यों नहीं?, १०३-५; बिहारमें जनशिक्षा अभियान, १३५; मणिबहन और चरखा, २६७-६८; मद्य-निषेध, २४३-४५; महात्माकी मूर्ति, ४२६-२७; मेथिलेटेड स्प्रिट पीना, ३३२; मेवाड़, ४६०-६१; यहूदी लोग, १५३-५७; राजकोट, ३०२-४, ३८१-८३; राजकोटके ठाकुर साहबके

लिए वक्तव्यका मसविदा, १५०-५१; राष्ट्रीय झण्डा, ५२-५४; रोमन लिपि बनाम देवनागरी लिपि, ४२०-२१; 'लताड़ और प्यार', ३९०-९४; लाल फीता, २१३-१५; लीम्बडीमें अंधेरगद्दी, ४८१-८४; वचनकी रक्षाका प्रश्न, ५०३-६; विद्यार्थियोंके लिए लज्जाजनक, २७०-७४; शरारतपूर्ण सुझाव, ४९०-९२; शिष्टाचारका सवाल, ४५९; सच हो तो भयावह, ७६; सदस्योंकी प्रतिज्ञाकी व्याख्या, ८६-८७; सदार पृथ्वीसिंह, ३१६-१७; सुसंस्कृत अराजकता—राजनैतिक आदर्श, २९१-९२; सेलम जिलेमें मद्य-निषेध, १५१; स्त्रियोंका विशेष कार्यक्रम, ५७-५९; हिंसा बनाम अहिंसा, ३३२-३४; हिन्दुस्तानी, हिन्दी और उर्दू, २५-२७; हिन्दू-मुस्लिम एकता, २२९-३०; हैदराबाद, ४५०-५१; हैदराबाद राज्य-कांग्रेसके लिए वक्तव्यका मसविदा, २६८-६९

सांकेतिका

अ

अंगद, देखिए, 'रेनॉल्ड्स, रेजिनॉल्ड'

अंग्रेज, ३२, ४९, ६५, ९०, १२९, १३०,
२४८

अंग्रेजी, -और बुनियादी तालीमकी कल्पना,
४१०; -और हिन्दुस्तानीमें स्पर्धा, २५

अकबर, ३५९

अकाल, -जयपुरमें, ३११; -रामदुर्गमें,
५०३

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, २३२, ३९६;
-और नागरिक स्वतन्त्रता-सम्बन्धी
प्रस्ताव, १२३-४; देखिए 'भारतीय
राष्ट्रीय कांग्रेस' भी

अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ, १९४,
२८३, ४११, ४२७; -का प्रशिक्षण
विद्यालय, २१९

अखिल भारतीय चरखा संघ, ५९, ८२,
१७१, १९२, १९४, २४२, ३४३
पा० टि०, ४११, ४३७; -और
स्वराज्य, २७५; -की परिषद, २१६
पा० टि०; -की केरल शाखा, ३१६;
-की सदस्यताके लिए प्रतिज्ञा, ८६;
-खादीके बारेमें प्रमाणपत्र देनेवाली
एकमात्र संस्था, २४२; -द्वारा गरीबों
की मदद, ८२, २८३

अखिल भारतीय महिला सम्मेलन, -को
सन्देश, २५४

अग्रवाल, मूलचन्द, २४

अचिन्तराम, ४४६

अजमलख़ाँ, हकीम, ३५

अजारिया, बिशप, १८४ पा० टि०

अटल, रा० ब० पं० अमरनाथ, -के विचार

प्रजा-मण्डलोंके प्रश्नपर, ३९२

अण्णामलै विश्वविद्यालय, १५१, ४९२
पा० टि०; -में विद्यार्थियोंकी हड़ताल
की निन्दा, ४९४; ५०७-९; -संघके
मन्त्रीपर हमला, ५०७

अनन्तभाई, २८१

अनन्तराय, -और राजकोट सत्याग्रह, १७७
अनशन, -राजकोट सत्याग्रहियों द्वारा जेलमें,
४९८

अन्तर्राष्ट्रीय मिशनरी सम्मेलन, २२२ पा०
टि०, ४६४; -की मद्रासमें बैठक,
१८३

अबीसीनिया, -और अहिंसा, २१३; -की
इटली द्वारा विजय, ३९१

अबू बक्र, २९९

अब्दुल हक, मौलवी, २६, ३५९

अभय, आचार्य देवशर्मा, १०१

अभिज्ञानशाकुन्तलम्, -और अश्लीलता, १०१

अमरतुस्सलाम, ८३, १२०, १७९, २१७,
२४८, २९०, २९१, ३५२, ३६०,
३७१, ३८०, ४३७, ४६९

अमूलख अमीचन्द, -द्वारा भूख-हड़ताल,
४८३

अमेरिका, -और अहिंसा, २७८; -में लोक-
तन्त्रका आधार हिंसा, ४३०-१

अम्बेडकर, बी० आर०, ९६

अमृत कौर, ६, ८, १२, १७, २१, ३५,
४१, ४२, ४७, ५४, ५५, ५६, ६९,
७३, ७४, ७७, ७८, ८३, ८४, ८५,
८८, ९८, ९९, १०५, ११०, १२२,
१३३, १३४, १३६, १४०, १४३,

१४४, १४९, १५२, १५८, १५९,
१६१, १६३, १६७, १७१, १७६,
१९६, २०५, २१६, २२०, २४७,
२५४ पा० टि०, २५५, २८०, ४२५,
४७९, ५०२, ५१२, ५१४

अय्यंगार, एच० पी० रंगनाथ, ११

अय्यर, सी० पी० रामस्वामी, १७, ४८०;

—और मन्दिर-प्रवेश, ३१७; —और
सविनय अवज्ञा, २९३-४; —के विरुद्ध
त्रावणकोर राज्य कांग्रेसके आरोप, ३७,
२३६, २३८-९, २६७, ३१७-९, ४५७;
—को दीवान के पदसे हटानेकी माँग,
१४६, २२१-२, ३१९; —द्वारा हिन्दू
समाजकी महान सेवा, ३१७

अरब, —और यहूदी, फिलस्तीनमें, १५३-४

अरबी, २६, २७

अर्जुन, ३२९

अलीबन्धु, देखिए 'शौकत अली' और
'मुहम्मद अली'

अश्लीलता, —साहित्यमें, और आर्य समाज,
७९, १००-१

असम, —में देवनागरी लिपि, ४२०-१

असहयोग, ५, ३४

असहयोगी, —[गियों] द्वारा क्षतिपूर्तिकी
माँग, १६५-६

अस्पृश्यता, १८५, २२३; —और ईसा-
मसीह, ३३९; —और महिलाएँ,
२५४; —और हिन्दू धर्म, १५३;
—का निवारण, ६५, १००, २६९,
२७५; —निवारणके लिए गांधीजी
द्वारा २१ दिनका उपवास, १९०

अहमदाबाद, —में मद्य-निषेध, २४४; —में

रौलट अधिनियमके विरुद्ध दंगे, ४५९

अहिंसा, १५, १०९, ११०, १४७, १९०,

२०१, २०९, २३३, २३९, २५१,

२७७-९, २९५-७, २९८-९, ३३३-४,

३५४, ३५६, ३५९, ३७७, ३८७,

४१०, ४२५, ४२९, ४४४, ४८०-१;

—आफ्रिकियोंकी मुक्तिका साधन,
३०१; —आत्म-बलके रूपमें, ३;

—आत्मरक्षाका सबसे अच्छा रास्ता,

६३; —एक सार्वभौमिक और क्रिया-

शील सिद्धान्त, ३१-२, २०९, २२३,

३०६; —और अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति,

२२७; —और अमेरिका, २७८;

—और इस्लाम, २, ३३; —और

ईसाई-धर्म, २, ३३, २२७; —और ईसा-

मसीह, ३३९-४१; —और उपवास,

५१; —और कांग्रेस, ५९, १८८, २१५,

२३५, २४७, ३०३-४, ३१०, ३२२,

३३४, ३६३, ३८३; —और खुदाई

खिदमतगार तथा पठान, १-५, १२-

५, २२, ३०-२, ४३-६, ४८, ४९-

५१, ६१, ६४-८, ७०-२, ९०-३,

१०९, ११३-४, ११७, १२७-३२;

—और चरखा, ६६, ३७४-५; —और

चीन, २८८-९; —और चेक, १०३-५,

१५५, २२६-७; —और दान, ४९६;

—और निर्बल, १०३-५, १०९, ११७,

१२९; —और निष्क्रिय प्रतिरोध,

२१२; —और 'बाइबिल', २२८;

—और बुद्ध, ३२९; —और 'भगवद्-

गीता', ३२९, ३७८; —और भारत,

२१२, २२८, २७९, ४३२; —और

महिलाएँ, ५८, ५९, २५४, २७०-४;

—और यहूदी, १५३-७, २०९-१३,

२२४-५, ३०४-७, ४२२-३; —और

यूरोप, २१३, २७९; —और रचना-

त्मक कार्यक्रम, ६५; —और लोक-

तन्त्र, १०४-५, ४२८-३२; —और

विद्यार्थियोंकी हड़ताल, २०, ५०९-

१०; —और सत्य, ५०-१; —और

समाजवादी, ७५; —और सविनय अवज्ञा, ४६, ४९; —और साम्यवादी, १२४, १२६; —और स्वतन्त्रता आन्दोलन, ५१, १३१, ३१५, ३३४; —और स्वतन्त्रता आन्दोलन, देशी राज्योंमें, २३५, ३०२-३; —और हवाई लड़ाई, २२५; —और हानिकारक जन्तु, ३७७-९; —का पालन, ४२८-३२; —का प्रतीक राष्ट्रीय झण्डा, ५४; —की सफलताके लिए ईश्वरमें विश्वास जरूरी, २९९-३०१; —द्वारा अन्यायका मुकाबला, ७१-२, ९०-२; —नम्रताके बिना सम्भव नहीं, २९६; —बनाम हिंसा, ३३२-४

आ

आगाखाँ, —और जिन्नाके साथ समझौता, ३३५

आजाद, मौलाना अबुल कलाम, ८०, २२०, २४०, २४१, २५१, २५४, ३५९, ३९६, ४२३, ४२४, ४९१

आनन्द, १९६

आन्ध्र, —को प्रान्तका दर्जा दिलानेके लिए आन्दोलन, २६०, २६५

आफ्रिका, —और ईसाई-धर्म, ३०१-२; —[वासियों] को अहिंसा अपनानेकी सलाह, ३०१

आफ्रिकी कांग्रेस, ३००

आर्नोल्ड, एडविन, २०८

आरी, ५०४

आर्य समाज, २६८; —और अदलील साहित्य, ७९, १००-१; —और हैदराबादमें सविनय अवज्ञा, ४५०-१, ४८७; —की गांधीजी द्वारा सेवा, २४

आर्यन लीग, हैदराबाद, २६८, ३४२; —में हिंसा, ३६८

आर्यनायकम्, आशा देवी, ४१० पा० टि०, ४१२

आर्यनायकम्, ई० डब्ल्यू०, ७२, ८४, १४०, २६२

आसर, लीलावती, १८, २१, ४२, ५६, १३७, १७९, २१७, ४७१

इ

इंग्लिश बैप्टिस्ट मिशन, ४६४

इंग्लैंड, —और अहिंसा, १०३; —और चेको-स्लोवाकियाका मामला, ७७; —में लोकतन्त्रका आधार हिंसा, ४३१

इंडियन एनुअल रजिस्टर, २३३ पा० टि०

इंडियन ओपिनियन, २८२

इटली, —की लोकतन्त्रात्मक सरकारका आधार हिंसा, ४३१

इन्टरनेशनल मिशनरी कौंसिल (अन्तर्राष्ट्रीय मिशनरी परिषद), २२२ पा० टि०, ४६४ पा० टि०; —की मद्रासमें बैठक, १८३

इन्द्रपाल, —की रिहाईके लिए अनुरोध, १६, १९८

इस्लाम, २७, १८८; —और अहिंसा, २, ३३ [१]; —संस्कृति और हिन्दू संस्कृति, ३५८

इस्लामिया कॉलेज, १९८

ई

ईश्वर, —और अहिंसा, २९९, ३०१; —और कताई, २१८; —और प्रार्थना, ३२८-९; —का मार्गदर्शन, ५१३; —की सेवा, ४६, १३०; —भूखोंके लिए ४९६; —में गांधीजीका विश्वास, २९६

ईसामसीह, २, २११, २७९, २९९, ३०७, ३२९, ४६६; —और अस्पृश्यता, ३३९; —की शिक्षा, ३३; —द्वारा प्रेमका उपदेश, ३३९-४१

ईसाई, २, १५३, १५४, १८९, २२३, ३००,
३०१, ३०७, ३५५; —और अहिंसा,
२२७; —और त्रावणकोरमें उत्तर-
दायी सरकार, ४५८; —और साम्प्र-
दायिक निर्णय, १८४

ईसाई-धर्म, १८८, ३१९; —और अहिंसा,
२, ३३, २२७; —और आफ्रिकी,
३०१-२; —और यहूदी, १५३-४;
—और हिन्दू-धर्म, ४६७

उ

उड़ीसा, —और तालचेर शरणाथियोंका पुन-
र्वास, ३५३-४; —की प्रजा पर अत्या-
चार, ३३३-४; —की स्थिति, ४५१-२;
—के पोलिटिकल एजेंटकी हत्या, ३१५,
३३३-४, ३६५

उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रान्त, —और अहिंसा,
२२८, ४२८; —और सशस्त्र हमले,
९३; —में हमले, और उनसे सुरक्षाके
लिए बन्दूकें रखनेकी मांग, ११५;
—में हमले ब्रिटिश शासनकी विफलताके
द्योतक, ६१-२

उद्योग, —बड़े और घरेलू, २८५; —[१] का
केन्द्रीयकरण, २८५

उर्दू, —और हिन्दुस्तानी हिन्दी, २५-७;
—प्रचार आन्दोलन, ४२१

उस्मानिया विश्वविद्यालय, —और 'बन्दे-
मातरम्', ३४२; —द्वारा उर्दूकी सेवा,
२६

ए

एक्सपेरिमेंट्स विद द्युथ, २९६; देखिए
'सत्यके प्रयोग अथवा आत्मकथा' भी

एजवाहा, ३५५

एडगर, १८७

एडवर्ड कॉलेज, १९८

एल्विन, वेरियर, १६८

एशिया, —में बुद्धका प्रभाव, २०८
एस्पिनल, ले० कर्नल, ५१८

ऐ

ऐंग्लो इंडियन सिविल लिबर्टीज एसोसि-
एशन, २२९

ओ

ओल्ड टेस्टामेंट, ३५७

ओसिट्ज्की, कार्ल वान, —नाजियों द्वारा
बन्दी, ३०५ पा० टि०

औ

औंध —का संविधान, २४७, ३२३-४; —के
संविधानमें सुधार, १७६; —में उत्तर-
दायी शासन, १००; —में न्यायालय,
३२३; —में मताधिकारके लिए योग्य-
ताएँ, ३२३

औद्योगीकरण, —और रूस, २९२; —से
लोक जागृति सम्भव नहीं, ४११

क

कंटक, प्रेमाबहन, २४, १४५, १६२, ३३५
कताई, २१८, ३७४; —और खुदाई
खिदमतगार, ३, ३५७-८; —और
बेरोजगारी, २८३; —और स्वराज्य,
२८३; —का शिक्षामें स्थान, ४१३

कन्या गुरुकुल, देहरादून, २५६; —और
अश्लील साहित्य, १००-१; —का वार्षि-
कोत्सव, १२४, २६२

कपूरथला, —में उत्तरदायी सरकार, २४७

कमला, १८, ४४५

कमाल अतातुर्क, —और पर्दा, १४३; —का
देहावसान, १२१; —के प्रति श्रद्धां-
जलि, १५९

कर्नाटक प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, ५०३

कवायद, —और स्वतन्त्रता, २५७

कश्मीर, —और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस,
२६५-६

कांग्रेसी, १३, ३४, ४६ पा० टि०; —और
देवी नरेश, २५९; —और भ्रष्टाचार,
३५५-७ ४५४-५; —और सफाई,
२६४; —[सियों] के खिलाफ खादीके
सम्बन्धमें शिकायत, २४२; —द्वारा
हिन्दी और उर्दू दोनोंके हितकी
कामना, २५-६; —से खादी अपनानेकी
अपील, १९५

कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल, —और अहिंसा, १८८;
—और हिंसा, १२४; —और मद्य-निषेध,
२४३-४; —[ों] से लाल फीता समाप्त
करनेकी सलाह, २१४-५

कागावा, तोयोहिको, ३२६

काँटन-दि स्टॉरी ऑफ मैककाइंड, ४१३

काठियावाड़, —में हरिजन-कार्य, ९८-९

कानपुर, —में हिन्दू-मुस्लिम दंगे, ४८६

कानाबूर, ५०४

कामत, संजीव, ३२४

कालिदास, —के साहित्यमें अश्लीलता, १०१

कालेलकर, दत्तात्रेय बा०, २४, १६२, १८२,

२०३, २८१, ३२४, ३२५, ३४५,

४०८, ४०९, ४८५, ४८६, ५०९,

५१०

कालेलकर, बाल, २४, १६३

कालेलकर, शंकर, २८१, ३२४, ५११

कालेलकर, सतीश द०, ५११

कुँजरू, पं० हृदयनाथ, २५८

कुमारप्पा, जे० सी०, ८५, १३६, १४१,

१९७, २०६, २१६, २३०, २६०,

२८२, ३९९, ४००

कुमारप्पा, भारतन, १७७, ४०० पा० टि०

कुमारप्पा, सीता, ४००

कुरान, २, ३३, ३५७, ४२१

कुरेशी, गुलाम रसूल, ४६९

कुरेशी, शुएब, १३३, १७४, ३०८

कुसुम, ३९५

कुसालानी, आचार्य जे० बी०, ३६८

कृष्ण, भगवान, ३२९

कृष्णचन्द्र, ७८, ८१, २१८, ३२६, ४३८,
४४९

कृष्णस्वामी, ३०७

केशवदेवजी, २५३

कैडेल, सर पैट्रिक आर०, ३०३, ४४४,
४५९; —और राजकोटके ठाकुर साहब

द्वारा समझौता भंग, ३८२

कैलनबैक, हरमन, १०६, ३३५, ४६६,

४७०, ४७१, ४७२, ४७६, ५०२

कोंड हिल्स, —की आदिवासी जातियों

द्वारा पत्थरों और वृक्षोंकी पूजा, ४६७

कोसाम्बी, धर्मानन्द, २१०

कौंसिल-प्रवेश, —और कांग्रेस, ४०३

कौरव, ३२८

क्रीसस, —और सोलन, ११६

क्रूगर, १५५

ख

खबरदार, अड्डेशर फरामजी, ४०८

खरे, डॉ० एन० बी०, १६२

खरे, नारायण मोरेश्वर, —को श्रद्धांजलि,
३९५

खाँ, खान अब्दुल गफ्फार, १ पा० टि०,

२, ५, ६, १३, २२, ३०-३२, ३५,

४३, ४६, ६१, ६३, ६४, ६८, ७८,

९१, ९२, ११४, ११५, ११७, १२७-

३१, १३७, १४५, १९८, २२८,

२७६, २८०, ३५७

खाँ, मीर आलम, —द्वारा गांधीजी पर
हमला, ७१

खाँ, सिकन्दर हयात, १६

खादी, ६५, ८१, १९३, ४७८; —और

अ० भा० चरखा संघ, २४२;

—अकालसे राहतके लिए, ५०७;

—और उसके अप्रमाणिक विक्रेता,

३१६; -और कांग्रेस, १३८-४०, २८६; -और खुदाई खिदमतगार, ९८, -और कांग्रेसी मन्त्री, ९७, १९२-३, २४२; -और जवाहरलाल नेहरू, १९४; -और महिलाएँ, २५४; -और मिलका कपड़ा, १९२; -और समाजवादी, ७५; -और स्वदेशी, ९७; -और स्वराज्य, १३८-९, १४८-९; -कांग्रेस संविधानकी भावना, ९८; -का अर्थशास्त्र, १९४; -का प्रचार, १९२-५; -के लिए मगनलाल द्वारा कार्य, २८२; -कार्य, ३४३

खादी कार्यकर्ता, १९४

खादी प्रदर्शनी, ९७

खान, खानवहादुर फतेह मुहम्मद, ४९८ पा० टि०

खानदेश, -में मख-निषेध, ३३८

खान साहब, डॉ०, १४, ६२, ९७, १२०, ४३६; -से त्यागपत्रकी माँग, ६२

खुदाई खिदमतगार, २१, ३५, ६९; -और अहिंसा, १-५, १२-१५, २२, ४३, ४४, ४५-६, ४८, ४९-५१, ६१, ६४, ६५, ६६-७, ६८, ७०-२, ८२, ९०-१, ९२-३, १०८-९, ११३-४, ११७, १२७-३२; -और कताई, ४, ३०; -और ग्राम-कार्य, १३१; -और परोपकारकी भावना, ४७; -और वर्धा शिक्षा योजना, ३०; -और संगठन-क्षमता, १०८; -और साम्प्रदायिक एकता तथा स्वराज्य-प्राप्ति, ८२; -[१] का कर्तव्य हमलावरोंसे नागरिकोंकी रक्षा करना, ११५; -को कुटीर उद्योगोंमें लगानेकी सलाह, १४; -को खादी पहननेकी सलाह, ९८; -को हिन्दुस्तानी सीखनेकी सलाह, ४; -से आत्मनिरीक्षण करनेका उत्कट अनुरोध, २२

खेड़ा, -में सरकार द्वारा बेची गई जमीनोंकी वापसी, १६६

खेर, ७९, २१३, २५०

खेरी, एम० अलताफ ए०, ३२०

ग

गढ़ादावाला, मोहनलाल, ५००

गांधी, अरुण, १७६

गांधी, कनु, ३८, २५२, ३४९, ३६७, ५०२

गांधी, कस्तूरबा, ९, ३५, ६०, ९५, ११८, १२०, १२१, १३४, १७४, १७५, १७७, १९९, २०३, २२१, २३७, २५५, २६२, २८१, ३५०, ३५२, ३८१ पा० टि०, ३८९, ४०१, ४१८, ४३२, ४३७, ४४३, ४४८, ४४९, ४५८, ४५३, ४६२, ४६३, ४७१, ४७२, ४७५, ४७६, ४८५, ४८६, ४८८, ४९२, ४९५, ५०२, ५१८; -और अस्पृश्यता, १८५; -और राजकोटका संघर्ष, ४२७-२८; -की गिरफ्तारी राजकोटमें प्रवेश करनेपर, ४०९; -की बीमारी, १०, २३; -गांधीजीको अहिंसाका पाठ पढ़ानेवाली शिक्षिका, ५०, २२६

गांधी, कानम, २२०, ४३७, ४७२

गांधी, कान्तिलाल, १२, १९, ११२, १४२, १४४, १५७, १६४, २६२, ३८९, ३९०, ४४८

गांधी, छगनलाल, १२०

गांधी, जमनादास, १९९

गांधी, जे० जे०, १९५

गांधी, देवदास, २३, १४४, १७७, १९९, ३३५, ३६८, ४२७

गांधी, नारणदास, १८, ६९, ७४, १७१, १७२, ४६८

गांधी, निर्मला, १३४, १९९

गांधी, पुष्पोत्तम, १८, ८४, ३९५
 गांधी, भोगीलाल, ४८३
 गांधी, मगनलाल, —को श्रद्धांजलि, २८२
 गांधी, मणिलाल, १०६, ११९, १४४,
 १७५, ३४७, ३५०, ३६४, ३६५, ५०२
 गांधी, मो० क०, —और अशुद्धि, ५४-५;
 —और जुलू विद्रोह, २९६, ३०१;
 —और बोअर युद्ध, २९६; —और ब्रह्म-
 चर्यके प्रयोग, ८; —और स्त्रियों द्वारा
 परिचर्या, २७५-६; —का निरन्तर बढ़ता
 पत्र-व्यवहार, १०१-२; —के लिए कस्तूरबा
 अहिंसाका पाठ पढ़ानेवाली शिक्षिका,
 ५०, २२६; —को अपनी आकृतिकी
 प्रतिमा और तसवीरें बनाकर सम्मान
 करवाना नापसन्द, ४२६-७; —को
 बैरिस्टरकी उपाधि देनेवाली संस्था
 द्वारा वकालतकी सनद छीनना, १०७;
 —द्वारा आंशिक मौन, १७७, १९१;
 —पर दक्षिण आफ्रिकामें ट्रेनमें हमला;
 १८९-९०
 गांधी, रामदास, २३, ९६, १२०, १९८,
 १९९, ३३५
 गांधी, लक्ष्मी, २३, १७७, १९९, ३३५
 गांधी, सरस्वती, ११८, ४४८
 गांधी, सीता, १७६, ३४७
 गांधी, सुशीला, ११९, १२०, १७५, २३७,
 ३५०, ३६५, ५०२; —को दक्षिण
 आफ्रिका जानेकी सलाह, ३४७
 गांधी, हरिलाल, २५३ पा० टि०
 गांधी सेवा संघ, ३८, ४९६ पा० टि०
 गाँव, —की सेवा, ४२; —[१]का प्राचीन
 भारतमें शोषण, ८९, २८५; —में
 आत्मनिर्भरता, २९३; —में चिकि-
 त्सकोंके रूपमें कार्य करनेके लिए
 ग्रामीण कार्यकर्ताओंको प्रशिक्षण देनेकी
 आवश्यकता, ४६६

गिडवानी, चोइथराम, ३४३
 गिब्वन, सी० के०, २२९
 गिब्सन, ई० सी०, २४१, ५१५; —और
 राजकोटके ठाकुर साहबके बीच सम-
 झौता भंग, ३८२, ३९८-९, ४०३-४,
 ४२७-८; —कांग्रेस और सरदार पटेलसे
 असन्तुष्ट, ३४३-४, ३८२
 गिरधारीलाल, १६०
 गिरासिया शिष्टमण्डल, राजकोट, ५१७
 गिल्डर, डॉ०, १२२, ३३८, ४६१
 गीतांजलि, ३२९
 गुजराती, २६
 गुलनार, ३०८
 गेस्टापो, ३०४
 गोकीबहन, ४६८
 गोलमेज सम्मेलन, ३५७; —में जनरल स्मट्स
 द्वारा गांधीजीका समर्थन, ३३
 गोविन्द, १६७
 गोशालाएँ, २०२
 गोसेवा, २५६
 ग्रामउद्योग पत्रिका, १९७
 ग्रामोद्योग, ८६-७, २७५, २८३; —[१] का
 पुनरुद्धार, ४११
 ग्रामोद्योग संघ, २८२
 ग्रेग, रिचर्ड बी०, —और अहिंसा, २६३

घ

घोष, अरविन्द, ४४, ३३०

च

चक्रैया, ९
 चन्द्रभाई, १९८
 चन्द्रशंकर, २१, ७७
 चरखा, ५३; —अन्नपूर्णाके रूपमें, ३७०;
 —अहिंसाका प्रतीक, ६६, ३७४-५;
 —और महिलाएँ, २५४; —और

रामनाम, ३२६; —और विद्यार्थी,
१४८; —और स्वराज्य, ३८३-४
चरखा संघ, —और पूर्ण स्वराज्य, २७५
चाँदभाई, शेख, ४६८
चाँदवानी, ३४९, ३५०
चाँदीवाला, ब्रजकृष्ण, ३६, ४४, ४७, ८७,
८८, २३२, २४९, ३५३, ३६८
चावल, —पालिश किया और बिना पालिश
किया, १९७, २०६; —मिलका और
हाथ-कुटा, ८६
चिकित्सा-पद्धति, —पश्चिमी, भारतके लिए
अनुपयुक्त, ४६६-७
चीन, —का जापानसे मुकाबला और अहिंसा,
२२४, २८९; —पर जापानी हमला,
२९६-८; —में जन-शिक्षा, ८२; —में
बौद्ध प्रभाव, २०८; —में भारतीय
चिकित्सक मिशन, २९०
चुडगर, पोपटलाल, ३३६, ३७०, ४५२,
४५३; —की भेंट जयपुरके दीवानके
साथ, ३४९, ३८६-९
चेकोस्लावाकिया, —और अहिंसा, १५५,
२२६-७; —को शस्त्र-त्याग करनेकी
सलाह, ७७, १०३-५
चेट्टियार, एम० के० चिदम्बरम्, ३१६
चेट्टियार, एस० मरियामुसाई, ३१६
चेरियन, अक्कम्मा, —के साथ जेलमें दुर्व्य-
वहार, ४५७
चैस्टरमैन, डॉ०, ४६४-८
चोखावाला, गोरधनदास, ४३२ पा० टि०,
४३५
चोखावाला, शारदाबहन गो०, ४३४, ४३५,
४४२, ४७०, ४७२, ४७४, ४७५,
४८५
चौधरी, चन्द्रलाल, ४३४ पा० टि०
चौधरी, जगलाल, १९५
चौरीचौरा, —में हिंसा, ४८१

छ

छोटालाल, —का अनुभव बिना पालिश
किये चावलके बारेमें, १९७; —पर
हमला, ४८२

ज

जगन्नाथाचारी, सी० १५१
जमीन, —जब्त की गई, और उसे लौटाने-
वाला विधेयक, ३९-४०
जयचन्द बालजी, ४८२
जयपुर, —और राजकोटके संघर्षका अन्तर,
३८६; —और राजकोट पर गांधीजी
के वक्तव्योके सम्बन्धमें सरकारी
विज्ञप्तियाँ, ४०३; —के महाराजा
मन्त्रियोंके हाथोंकी कठपुतली, ३२१;
—के लोगोंके प्रति कांग्रेसका कर्तव्य,
३८९; —पर लिखे गांधीजीके लेखोंकी
आलोचनाका उत्तर, ४४३; —में
अकाल, ३१०-१; —में उत्तरदायी
सरकारकी स्थापनाके लिए आन्दोलन,
३६५-७; —में जमनालाल बजाजके
विरुद्ध कार्रवाई, ३१०-१, ३२०-
२, ३३१, ३६१-४, ४४४, ४७७;
—में जमनालाल बजाजके विरुद्ध की
गई कार्रवाईका विरोध, ३८६, ३९८-
९; —में जमनालाल बजाजपर
लगाये गये प्रतिबन्धको हटानेके लिए
सविनय अवज्ञा, ३९८; —में प्रजा
मण्डलपर निषेध, ३३१, ३९८, ४४४;
—में संघर्ष, ४५२; —में सविनय
अवज्ञा आरम्भ करनेका जमनालाल
बजाज द्वारा खण्डन, ३१२-३
जयपुर राज्य प्रजामण्डल, —और जमनालाल
बजाजके विरुद्ध कार्रवाई, ३१२-३;
—और जयपुरके प्रधान मंत्री, ३६६,
३७२; —और जयपुरमें अकालसे राहतके

लिए कार्य, ३१०-१; —और 'सर
बीकम सेंट जॉन, ४०५-६; —गैर
कानूनी घोषित, ३३१; —की गति-
विधियाँ, ३१३, ३२२; —पर जयपुरमें
रोक, ३३१, ३६१-४, ३७३, ३८१-
३, ३९८-९

जयप्रकाश नारायण, ४२, १७३, २२१
जयरामदास दौलतराम, २१७, ३४३, ३४६,
५०८

जर्मनी, —की सरकार और अहिंसा, ४३०-
१; —में ग्रहणियों पर अत्याचार,
१५३-४, १८७, २०९-१०, ३०४-७

जसाणी, नानालाल, ५००

जसाणी, बेचरभाई, —के साथ राजकोटमें
दुर्व्यवहार, ३८२

जसाराम, ३३८

जाकिर हुसैन समिति, —की रिपोर्ट, २५७

जाजू, श्रीकृष्णदास, ८५

जॉन, ३४४

जापान, —और चीनमें परस्पर युद्ध, २८८-
९, २९६-९, ३२६-७; —की भारतमें
अपना माल भरनेकी नीति, २०७;
—के मालका भारतमें बहिष्कार,
२९०; —में सहकारी आन्दोलन,
३२६-७; —में बौद्ध प्रभाव, २०८

जामिया मिलिया, —को भोपाल द्वारा मदद
देना बन्द, ३०८

जार्जिन, २७६, २८०

जिन्ना, मु० अ०, ३४, ३३५

जिला बोर्ड, —अनावश्यक चीज, २४५;

—और रचनात्मक कार्यक्रम, २४६-७

जिलानी, सन्त अब्दुल कादिर, ९३

जुराब, ३३४

जुलू, —[लुओं] पर श्वेतों द्वारा अत्याचार,
३००

जुलू-विद्रोह, —में गांधीजीका योगदान,
२९६, ३०१

जूनागढ़के नवाब, —द्वारा हरिजन कोषके
लिए दान, ७४

जेठानन्द, ४३६

जेराजाणी, पुरुषोत्तम के०, ३४८

जेहोवा, १५४

जोजेफ, पोथन, ४२

जोशी, १२

जोशी, एम० एम०, २४९

जोशी, छगनलाल, ७४, १२०

जौहरी, चंद्रभाल, ४३३

ज्यूइश कंट्रीब्यूशन टु सिविलिजेशन (सेसिल
रॉथ), १५७

ज्योति संघ, —और महिलाओंका उद्धार,
३७८

झ

झवेरी, गंगाबहन, २४८

झवेरी, नानीबहन, २४८

ट

टाइम्स ऑफ इंडिया, २४३, ३६१

ट्रिब्यून, ४५३

ठ

ठक्कर, अमृतलाल वि०, ९६, ३३५, ३३८,
३५३, ३७१

ठाकर, मनुभाई, —पर हमला, ४८३

ठाकुर, रवीन्द्रनाथ, १६१, १७८, ३२९, ३३०

ड

डायर, जनरल, ९३

डॉरोथी, ८३, २१७

डेरा इस्माइल ख़ाँ, —में दंगे, ४३६

डेली, कर्नल, ५१८

डोहामेटी, अदानेप्पा, ५०४-५

ढ

ढेकनाल, —में जन-आन्दोलन, १६९-७०;

—में दमन, ३५३; —में सत्याग्रह, ३४६

त

तमिल, ४२१
 तमिलनाडु चरखा संघ, ३१६
 ताई, २८०
 ताओ, डॉ०, १३५
 ताकाओका, डी०, २०७, २०८
 ताताचार, ४७१
 तालचेर, —में दंगे, ३५३, ३६६, ३८३;
 —में हुए दंगोंके बारेमें शासक द्वारा
 इनकार, ४५६
 तुलसीदास, २७
 तेमा, एस० एस०, ३००-२
 त्रावणकोर, —की महारानी, ३१७, ३१९;
 —के दीवानके विरुद्ध लगाये आरोप
 वापस, ३७, २३६, २३८-९, २६७,
 ३१७-९; —के बारेमें गांधीजीका मौन,
 ४५७; —के सत्याग्रही कैदियोंको आम
 माफी, ६७; —में उत्तरदायी शासन
 और साम्प्रदायिक एकता, ३५५, ४५८;
 —में ईसाई, ३१७-९; —में दमन और
 हिन्दू-धर्म, ४५७; —में मद्य-निषेध,
 ३०९; —में समाचारपत्रोंके विरुद्ध
 कार्रवाई, ४७९; —में सविनय अवज्ञा /
 कांग्रेस/सत्याग्रह आन्दोलन और उसका
 स्थगन, १७, २०, ३७, १४६-७, २२२,
 २३८, २६७, ३०९, ४७९-८१; —में
 सुधार, १७, २३६
 त्रावणकोर राज्य कांग्रेस, ४७९-८१; —द्वारा
 दीवानके विरुद्ध लगाये आरोप, ३७,
 २३६, २३८-९, २६७, ३१७-९, ४५७;
 —पर हिंसाका आरोप, ३७
 त्रावणकोर विधान-सभा, —के कांग्रेसी सदस्य
 अयोग्य करार, ४५७, ४७९
 त्रिपुरी, —में कांग्रेस अधिवेशन, ३५७

थ

थोरो, हेनरी डेविड, —और आदर्श सर-
 कार, २९२

द

द रिलीजन ऑफ द गुड लाइफ, २९
 दक्षिण आफ्रिका, —और सत्याग्रह, १५५,
 १८६, २२६, ४२६; —की लड़ाईमें
 कस्तूरबा गांधीका योगदान, ४२७;
 —में भारतीय, ४२५-८
 दण्ड-विधान संशोधन विनियम, ४५७
 पा० टि०; —और मद्रासमें कांग्रेसी
 सरकार, २४३
 दादाभाई नौरोजी, २७, ७५
 दामोदर, ४२५
 दामोदरदास, १८१, ४५३ पा० टि०
 दास, विश्वनाथ, ३७१
 दासगुप्त, सतीशचन्द्र, ३६, १२२, २०६
 दुबला, —लोगोंका उद्धार, ३६८-७०
 दुर्लभजी उमेदचन्द, ४८३
 देव, शंकरराव, ३४२, ५०३, ५०४-५
 देवनागरी, —बनाम रोमन लिपि, ४२०-१,
 —सीखना हिन्दुओं और मुसलमानोंके
 लिए आसान, ४२१
 देशपाण्डे, गंगाधरराव, ५०३, ५०५
 देशी राजा, —और अस्पृश्यता, ९८; —और
 कांग्रेसी, २५९; —और ब्रिटिश सर-
 कार, १६८-९; —और रेजिडेंटोंका
 भय, ३०३; देखिए 'सर्वोच्च सत्ता' भी
 देशी राज्य, —और अस्पृश्यता, ९८-९;
 —और कांग्रेस, १६८-७०, २३४-५,
 २५९, ३६१-४, ३९०-४, ४९१-२;
 —और कांग्रेस कार्य-समितिके प्रस्तावका
 मसविदा, २३३-५; —और सत्याग्रह,
 ३३२-४; —के सम्बन्धमें हरिपुरा
 कांग्रेसका प्रस्ताव, १६८, २३४-५; —में
 उत्तरदायी सरकारके लिए आन्दोलन,
 १६८-७०, ४९१; —में उत्तरदायी
 सरकारके लिए आन्दोलन और बाहरी
 मदद, २३४-५; —में स्वतन्त्रताका
 आन्दोलन, ३५३

देसाई, गोपालदास, -पर हमला, ४८४
 देसाई, हुंर्गा, ८, ८४, ८८, १०६, १३३
 देसाई, नारायण, ४२, ७८, ८८, १०६,
 १३३
 देसाई, प्रागजी, १२०
 देसाई, भूलाभाई जे०, २३६, ३४२
 देसाई, महादेव, १, ६, ७, ११, १२, १७,
 २१, ३५, ४१, ४७, ५५, ६०, ७३,
 ७८, ८०, ८३, ८७, ८८, ९४, १०१,
 १०६, १०७, ११२, १२०, १२२,
 १३३, १३६, १३७, १४१, १४३,
 १४९, १६२, १६४, १६५, १६७,
 १६८, १७१, १७५, १७६, १७७,
 १७८, १७९, १९६, १९९, २००,
 २०१, २०२, २०३, २०५, २०७,
 २२१, २३२, २४८, २५२, २५५,
 २७७, ३१७, ३२५, ३४९, ३८०,
 ४१८, ५०२, ५११, ५१३
 द्रौपदी, २०४

घ

धर्मदेवजी, १६४
 धर्मनारायण, पं०, -के विचार प्रजामण्डलके
 सम्बन्धमें, ३९२
 धर्मपरिवर्तन, ४६४, ४६७; -और ईसाई
 मिशनरियाँ, १८५
 धर्मोन्नासिह, ठाकुर, १४१ पा० टि०, १५०
 पा० टि०, २४१ पा० टि० ४५९,
 ४७५, ४८३, ४९५, ५१५; -और
 राजकोटकी प्रजाके बीच एक सम्मान-
 जनक समझौता, ३९८-९, ४२८,
 ४९८-५०२, ५०६; -कैदीके समान,
 ३८२, ४०४

न

नगरपार्षद, -[]का कर्तव्य करदाताओंके
 प्रति, ३७४

नम्रता, -के बिना अहिंसा सम्भव नहीं,
 २१६
 नरीमन, के० एफ०, २३६
 नरुभा, ४८४
 नवीन, बालकृष्ण शर्मा, ३४६, ४८६
 नशीली वस्तुएँ, -और उनका प्रयोग, ६५;
 -और उनपर अनुसन्धान कार्य, ४६६
 नागरिक स्वतन्त्रता, २५०; -और कांग्रेस,
 १२५; -सम्बन्धी कांग्रेसका प्रस्ताव,
 १२३-४
 नानक, गुरु, ११०
 नानावटी, अमृतलाल टी०, ९, १०, २४,
 २५, ३८, ९५, ९९, २०१, २०२,
 २०६, २२०, ३२४, ३४५, ४७६,
 ४८५, ४८६
 नायडू, पद्मजा, २२१ पा० टि०
 नायडू, प्रो० बी० बी० नारायणस्वामी,
 १५१
 नारायणस्वामी, ४८७, ४९८
 निमोलर, मार्टिन, -पर अत्याचार और
 हिटलर, ३०४
 निर्मला, ५०२
 निर्वाचक-मण्डल, -और मुसलमान, २४०;
 -पृथक्, और कांग्रेस, २४०
 निर्वाचन, -में मतदाताओंके साथ जालसाजी,
 ३५६
 नेहरू, इन्दिरा, १५०, १५९, १६१, १६३,
 १७८, ४०८, ४१९
 नेहरू, जवाहरलाल, ८०, १४३, १५०, १५८,
 १५९, १६१, १६२, १७८, २०५,
 २२०, २५१, २६८, ३२७, ४०८,
 ४२४, ४४०, ४४१, ४४६; -के अनु-
 सार खादी 'आजादीकी वर्दी', १९४;
 -द्वारा हैदराबादमें सत्याग्रह स्थगित
 करनेका सुझाव, २६८
 नेहरू, मोतीलाल, २६
 नेहरू, रामेश्वरी, १३४, २०३, ३६१

नैयर, डॉ० सुशीला, ८, ४७, ७२, १२०,
१३३, २०१, २०६, ३३५, ४०१,
४४३, ४६२, ४८९

नैयर, प्यारेलाल, १०१, ११२, १२०,
१२३, १२८, १३३, २०३, २१०,
२५१, २५२, २७७, २८२, २८४,
२८८, ३१७, ३६८, ३७३, ४१०,
४२२, ४२५, ४८४, ५०२, ५१६,
५१७

नौरोजी, दादाभाई, —को श्रद्धांजलि, २७-८
न्यू टेस्टामेंट, ३५७; देखिए 'बाइबिल' भी

प

पंचोली, मनुभाई, १२१, ४२४, ४३२ पा०
टि०, ४७०

पंचोली, विजयाबहन, १०, ८०, १२१,
१७४, २०७, ४३२ पा० टि०, ४७२,
४७६, ४८६, ४९६

पंडित, रणजित, २०५

पंडित, विजयलक्ष्मी, १७८, २०५, ४४१,
४४६, ४७२

पंत, गोविन्दवल्लभ, २१६

पंसीना, —में प्रजामण्डलके कार्यकर्ताओंके
विरुद्ध आतंक, ४८२

पटवर्धन, १४५

पटवर्धन, अप्पासाहब, ३२३

पटवारी, रणछोड़लाल, १८०, ३०८

पटेल, जे० पी०, २१९

पटेल, जैनब २०, २३७

पटेल, डॉ० रजब अली विश्राम, —की मृत्यु,
२३७ पा० टि०

पटेल, डाह्याभाई म०, ३५२

पटेल, छीता, ३८०, ३८१

पटेल, मणिबहन, ७९, ११२, १४१, १७२,
२०१, २५५, ४०९, ४१८, ४३३,
४३७, ४४३, ४४९, ४५३, ४६२,
४६३, ४७१, ४७३, ४७७, ५१८;

—और चरखा, २६७-८; —की गिर-
फ्तारी, ४२७

पटेल, रवीन्द्र आर०, ३३७

पटेल, वल्लभभाई, ३७, ७९, ८०, १४१,
१५०, १५२, १७३, १७९, १८१,
१९९, २१७, २३६, २४१, २५४,
२५९, २६७, २८६, ३०८, ३२५,
३३५, ३३८, ३४२, ३६८, ३९३,
४२०, ४२८, ४३३, ४४४, ४४९,
४५३, ४५९, ४६३, ४९९, ५०१,
५०३; —और महाराष्ट्रियों तथा

गुजरातियोंके बीच मनमुटाव, ३७९;

—और राजकोटमें उत्तरदायी सर-
कारकी स्थापनाका आन्दोलन, ३०२,
३१७-९, ३५४, ३८१-२, ३९०,
३९८, ४०४, ४४४

पटेल, विजया एन०, देखिए 'पंचोली,
विजयाबहन'

पट्टणी, अनन्तराय, १५२

पठान, —और हिंसा, ४५

पन्नालाल, २४८

परीख, नरहरि द्वा०, ४६९

परुलेकर, —और नागरिक स्वतन्त्रता-सम्बन्धी
विधेयक, २४९-५०

पर्दा, —और अतातुर्क, १४३, —और महि-
लाएँ, २५४

पाटिल, एल० एम०, ४४७

पाटिल, के० एस०, ५०४

पाण्डव, ३२८

पापरम्मा, ११३

पारनेरकर, बाई० एम०, ३८, ९६, २०२,
२३५, २५६, २६१

पारेख, इन्दु एन०, २६१

पारेख, चन्दन, १६२, २८१, ३३७, ३४७,
३६७, ५११, ५१२

पारेख, रामीबहन के०, ३५१

पालियामेन्टरी बोर्ड, ३७

पार्वती, ४०८
 पॉल, ए० ए०, १८५
 पॉल, के० टी०, १८४
 पालिताणा, —के लिए स्वराज्य लेनेकी
 माँग, २८६
 पिकेट, बिशप, १८४ पा० टि०
 पिल्लै, एस० वेलु, २९३
 पिल्लै, पट्टम ताणु, १८२, २३६, २३८,
 ३०९
 पीपोदरा, —में अखण्ड चरखा-यज्ञ, ६
 पुन्नालाल, ४२४
 पुस्तोत्तमदास ठाकुरदास, ३९४
 पुवलिया कोठी अस्पताल, ४६५
 पुलिस-अधिकारी, —और मांस-मदिराका
 सेवन ७६
 पृथ्वीसिंह, २५१ ३१६
 पैटन, विलियम, २२२
 प्रताप, ४८६ पा० टि०
 प्रभावती, १९, ४२, १७३, २२१, ४४८,
 ४७१, ४८९
 प्रवर्तक संघ, ५९
 प्राकृतिक चिकित्सा, ४६३
 प्रान्त, —[१] का भाषाओंके आधारपर पुन-
 विभाजन, २६०
 प्रार्थना, —और ईश्वर, २२८; —निष्ठा-
 विकासका साधन, २९९; —स्रष्टाके
 साथ सम्पर्क स्थापित करनेकी तीव्र
 आकांक्षा, १११
 प्रेम, —और मानव स्वभाव, ६३; —एक
 सामाजिक गुण, ३४१
 प्रेमी जयरामदास, १८०

फ

फतह मुहम्मद, खान साहब, ५१५, ५१८
 फरीसी, ३३९
 फारसी, २६, २७, ४२५
 फॉस्टर, १८५

फिलस्तीन, —में अरब-यहूदी समस्या, १५३,
 १५७
 फीनिक्स आश्रम, २८२
 फुले, आर० डब्ल्यू०, १३४
 फ्रांस, —और अहिंसा, १०३; —में प्रजातन्त्र,
 ४३०-१
 फ्रीडमैन, मॉरिस, २९२-३

ब

बंगाली, ४२१
 बंटु, ३००
 बच्छराज, ४२५
 बछड़ा, —और गांधीजीकी बससे उसका
 कुचला जाना, १०८
 बजलजेट, मेजर आर० एल०, —की हत्या,
 ३१५, ३५४, ३६५
 बजाज, जमनालाल, ३८, ६०, २५३, २७४,
 २७५, २८७ पा० टि०, ३०७, ३१०,
 ३२३, ३३१, ३६०, ३६६, ३६७,
 ३७०, ३८६, ३८७, ४०७, ४१८,
 ४२४, ४३३, ४४०, ४४४, ४४५;
 —का जयपुरके प्रधानमन्त्री द्वारा
 विरोध, ३६६, ३७२; —की गिरफ्तारी,
 ४२४, ४३८-९, ४५३, ४७७; —पर
 जयपुर राज्यमें प्रवेशपर प्रतिबन्ध,
 ३१०-१, ३१२-३, ३२०-२, ३३६,
 ३६१-२, ४०५-६, ४५३-४
 बजाज, जानकीदेवी, २५३, ३७२, ४२४,
 ४३२, ४४५
 बजाज, राधाकृष्ण, ११२, २८७, ५१०,
 ५१६
 बड़ौदा, —में साम्प्रदायिक मनमुटाव, ३६३-४
 बर्मा, —में दंगे, ११०; —में बौद्ध प्रभाव,
 २०८
 बलवन्तसिंह, ३८, २०२, २३१, २३५,
 २५६, २६१, ३१४, ३३८; —और
 गो-सेवा, २६१

बाँकेलाल, २०१
 बा, देखिए 'गांधी, कस्तूरबा'
 बाइबिल, १५३, १५६, १९१; —और
 अहिंसा, २२८
 बाइबिल सर्विस लीग, —के लोगों पर
 नाजियों द्वारा अत्याचार, ३०४
 बादशाहखान, देखिए 'खाँ, खान अब्दुल
 गफ्फार'
 बाबला, देखिए 'देसाई, नारायण'
 बाबासाहब, —का अनुभव बिना पालिश
 किये चावलके बारेमें, १९७
 बाम्बता, सरदार, —द्वारा कर देनेसे
 इन्कार, ३०१
 बॉम्बे क्रॉनिकल, २०७, ३९६, ३९८, ४९०
 बार, एफ० मेरी, २१७, ३१४, ४४६
 बारडोली, —में ज्वत् की गई जमीनोंकी
 वापसी, ३८१; —में सत्याग्रहका स्थगन,
 ४८१
 बार्नाबास, —और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस,
 १६३
 बाल, देखिए कालेलकर, बाल
 बिड़ला, घनश्यामदास, ४०, २४०, २४१,
 ३१०, ३२३, ३९४, ३९९, ४०६,
 ४४०, ४६१, ४७४
 बियाणी, बृजलाल, ६८
 बिहार, —के कांग्रेसियोंमें अनुशासनहीनता,
 ३५७; —में जन-शिक्षा अभियान, १३५
 बीकानेर [के महाराजा], ४४५, —का कांग्रेस
 के प्रति रवैया, ३९०-९४; —के राजकोट
 और जयपुरकी घटनाओंके बारेमें
 विचार, ३९०-९४
 बुक, ४०८
 बुद्ध, गौतम, २०८, २९९, ३४१; —और
 अहिंसा, ३२९
 बुनियादी तालीम, देखिए 'वर्धा शिक्षा-
 योजना'
 बेनिस, डॉ० एडुअर्ड, ७, ७७, ९४

बेरोजगारी, —और कताई, २८३; —दूर
 करनेके लिए अहिंसा एक उपाय, ६६
 बैकर, शंकरलाल, ८५, ३४३, ३४८
 बोअर युद्ध, —और गांधीजी, २९७, ४६६
 बोस, सुभाषचन्द्र, ८०, १७८, २२०, २४०,
 ३९६, ३९७, ४२३, ४४१, ४७२,
 ४७७, ४९०, ४९१
 बौद्ध-धर्म, १८८
 ब्रदरहुड ऑफ रिलिजन्स (सोफिया वाडिया),
 १६०
 ब्रह्मचर्य, —के गांधीजी द्वारा प्रयोग, ८;
 —के लिए बलवान साधन चित्त-शुद्धि,
 ३२६
 ब्रिटिश और विदेशी बाइबिल सोसायटी,
 २२२ पा० टि०
 ब्रिटिश युवराज (प्रिंस ऑफ वेल्स), ३१
 ब्रिटिश सरकार, —और उत्तरदायी सरकार,
 १६८-९; —और देशी राजा, १६९-
 ७०

ब्रुक, एडगर, १८७
 ब्रेबोर्न, लॉर्ड, —की मृत्यु, ४९३

भ

भक्तिवा, —पर हमला, ४८४
 भगवद्गीता, २, २२८, २८८, ३२८, ४७०;
 —और अहिंसा, ३२९, ३७८; —का
 पाठ, २०६
 भगवानदास, बाबू, २६
 भगवानलाल हरखचन्द, ४८३
 भणसाली, जयकृष्ण, ५६, ८३
 भय, —भारतकी दासताका कारण, ६५
 भाटिया, देवप्रकाश, १११
 भारत, —और अहिंसा, २१२, २२८, २७९,
 ४३२; —की संस्कृति, २९३; —द्वारा
 जापानी मालका बहिष्कार, २८९-९०;
 —में अकाल, ३२९

भारत सरकार अधिनियम (१९३५),
३८३, ४३१

भारतानन्द, देखिए 'फ्रीडमैन, मॉरिस'

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, १९, ३१, १०४,
१३०, ४४०, ४४६, ४७३, ४८५,
४९०, ५०२, ५१७; —और अहिंसा,
५९, १२४, २१५, २३५, २४७, २६६,
३०३, ३१०, ३२२, ३३३, ३६३,
३८३; —और ई० सी० गिब्सन,
३८२; —और कर, ३७४; —और
कश्मीर, २६५; —और कौंसिल-प्रवेश,
४०३; —और खादी, १३८-४०, २८६;
—और जयपुर, ३६१-४, ३८९; —और
देशी राज्योंमें उत्तरदायी सरकारके
लिए आन्दोलन, १६८-७०, २३३-५,
२५९, ३६१-३, ३९०-४, ४९०-२;
—और नागरिक स्वतन्त्रता, १२४,
१२५; —और निर्वाचक-मण्डल, २४०;
—और बार्नाबास, १६३; —और
मुस्लिम लीग, २६५; —और राजकोट,
३५४; —और समाजवादी, २१४-५;
—और साम्यवादी, १२५-७; —और
हिन्दुस्तानी, २५; —और हिन्दू-
मुस्लिम समस्या, २६५, ४९१;
—का कार्यक्रम, ३९७; —का त्रिपुरी
अधिवेशन, ३५७, ५१३, ५१५,
५१८; —का महाकौशल अधिवेशन,
२६३-४; —किसी खास वर्गकी नहीं
बल्कि पूरे राष्ट्रकी पूर्ण प्रतिनिधि,
२६५; —की कार्यसमिति, २५,
४४९; —की कार्यसमिति और मध्य-
निषेध, २४५; —की रचनात्मक
प्रवृत्तियाँ, ४११; —की सदस्यता, १३९-
४०; —की सफलताका रहस्य ३००;
—के कराची अधिवेशनका प्रस्ताव,
२१४; —को युद्धमें भाग न लेनेकी
सलाह, १९; —में अष्टाचार, १०६,

१३९-४०, ३९६-८, ४०३, ४५४-६;

—सर्वाधिकारवादी दल नहीं, २६६

भार्गव, डॉ० गोपीचन्द, ८७, ३३८, ३५३

भावे, बालकृष्ण, ९९, २०५

भाषा, —प्रान्तोंके विभाजनका आधार, २६०
भोपाल, —और जामिया मिलियाकी मदद,
३०८

अष्टाचार, —कांग्रेसमें, १०६, १३९-४०,
३९६-८, ४०३, ४५४-६

म

मंजु, ३९५

मगन संप्रहृलय और उद्योग भवन, २८२

मडगाँवकर, १४४

मद्रास, —और मध्य-निषेध, २४३, २४४;

—और हिन्दी विरोधी आन्दोलन, २६४;

—में कांग्रेस सरकार द्वारा दण्ड-विधान
संशोधन अधिनियमका उपयोग, २४३

मध्यप्रान्त, —के कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलमें हरि-
जन मन्त्री, ५

मध्य-निषेध, ३०९, ३३२; —अहमदाबादमें,

२४४; —और कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल,

२४३-४; —और पुलिस अधिकारी,

७९; —और राजस्व, २४४; —और

समाजवादी, ७५; —के लिए ब्रावणकोर

कांग्रेसको काम करनेकी अपील, १४८;

—ब्रावणकोरमें, २४६; —सेलम जिलेमें,

१५१; —हैदराबादमें, २६९

मरडोक, २७९

मलकानी, ना० र०, १९७, ३४९, ४४१;

—और खादी, ३४३

मशरूवाला, किशोरलाल घ०, ३८, १४५,

१७६, ४४१

मशरूवाला, गोमती, १७६

मशरूवाला, नानाभाई, ८१, ११९, १२०,

१५२, १७५, २३७, ३३७, ४२४

मशरूवाला, मनुबहन सु०, २५३, ३५१,
५०२

मशरूवाला, विजयलक्ष्मी, १७५

मशरूवाला, सुरेन्द्र, ३५१

मसानी, एम० आर० ७५, १२०

मसानी, रूस्तम, २८, २९

महमूद, डॉ० सैयद, १३५

महाभारत, ३२९

महिला आश्रम, ६०

महिलाएँ, —और अस्पृश्यता, २५४; —और
अहिंसा, ५८, ५९, २५४, २७०-४;
—और खादी, २५४; —और घरकी
दासता, ३७८; —और चरखा, २५४;
—और दुर्व्यवहार, ३८४-६; —और
पर्दा, २५४; —और हिन्दू-मुस्लिम
एकता, २५४

महोदय, डॉ०, ९९

मांटैग्यू, २२२

मांस-भक्षण, —और पुलिस अधिकारी, ७६

माँट, जॉन आर०, १८३, १९६, २१३,
२२२

माँडर्न रिव्यू, ९८

माणिकराव, प्रो०, २६४

मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी, ३५४

मालवीय, मदनमोहन, २६, २५८

माँस, लेस्ली वी०, २२२

मिन्टो, लॉर्ड, ३९३

मिल-कपड़ा, —और हाथका कपड़ा, २८५

मिलड्रेड, २८१

मिशनरी सम्मेलन, ताम्बरम्, २९८

मिशनरी, —और अहिंसा, १८८; —और
चिकित्सा तथा धर्म-परिवर्तन, ४६७;
—और रचनात्मक-कार्य, १८९

मीराबहन, ७, ११, ३८, ७२, ७७, ८१,
९४, १०५, १०६, १११, १३४, १३५,
१४२, १५९, १६४, १६७, १७६,
१७७, १९५, १९८, २१७, २४८,

२७६, २८०, ३१४, ३३४, ३४४,
३५७, ३५८, ४०१, ४०७, ४६२,
५१२, ५१४

मुदलियार, ए० पालानिअप्पा, ३१६

मुनोली, ५०३, ५०४

मुन्शी, कन्हैयालाल मा०, ७९, २१०, २१३,
३९४

मुसलमान, ६, २६, २७, ३३, ३४, ३५,
८९, ९०, ९१, १५४, ३०८, ४३०,
४५८, ४९१, ५१५; —और अरबीका
अध्ययन, ४२५; —और कांग्रेस, ४९१;
—और गांधीजी, ३५८; —और पृथक्
निर्वाचक मण्डल, ५१६; —और स्व-
राज्यके लिए आन्दोलन, २६६; —और
हिंसा, ३६८; —और हिन्दू, ९०

मुसोलिनी, बेनितो, १५, ३४, १८८, २२६,
२२७

मुस्लिम कौंसिल ऑफ एक्शन, राजकोट,
५१६ पा० टि०

मुस्लिम लीग, —और भारतीय राष्ट्रीय
कांग्रेस, २६५; —और संघ-व्यवस्था,
४९०-२

मुहम्मद, २९९

मुहम्मद अली, २६; —और चरखा, १९४

मुहम्मद अली, काजी साहब सैयद, ६९

मुँदड़ा, दामोदरदास, २११

मेनन, रमण, —का निधन, ३०७

मेवाड़, —में राष्ट्रीय जागृतिका दमन,
४६०-१

मेवाड़ प्रजामण्डल, ४६०, ४६१

मेहता, जीवराज, ७, ४६१

मेहता, दिनशा, ३४६

मेहता, बलवन्तराय, —और काठियावाड़में
संकट, ४४६

मेहता, वैकुण्ठभाई ल०, २००

मेहताब, हरेकृष्ण, ३४६, ४४२

मेहरताज, १९८

मैकगवरन, —द्वारा गांधीजीकी मिशनरियोंके साथ भेंटका काल्पनिक विवरण, १८४
मैकग्रेगर, —के विचार प्रजामण्डलों पर,
३९२

मैनचेस्टर गार्जियन ४९०, ४९१

मैसिघम, १०७, १०८; —के विचार ग्रामीण जीवनपर, ८९

मैसूर, —के महाराजा, ३७९

मोदी, प्रह्लादराय, ४८३

मोरारजी, शान्तिकुमार न०, १७९, २००

मौन, —तीव्र मानसिक व्यथाके शमनके लिए, ६१

म्युनिसिपल बोर्ड, —अनावश्यक चीज,
२४५-७

म्योरहेड, १०६

य

यंग वीमेन्स क्रिश्चियन एसोसिएशन, २३३
पा० टि०

यशोदा, ४७२

यहूदी, २५५; —और फिलस्तीन, १५३,
१५६; —[दियों] को अहिंसात्मक
प्रतिरोधकी सलाह, १५३-७, २०९-
१२, २२४, ३०४-७, ४२२-३; —पर
जर्मनीमें अत्याचार, १५३-४, १८७,
३०४-७, ४२२-३

यारजंग, मौलवी बहादुर, ३४२

यालगौ, ५०३

यंग, एफ० एस०, ३११, —द्वारा जमनालाल
बजाजका इलाज, ४३८-९, ४५३

युद्ध, —में भाग न लेनेकी कांग्रेसकी सलाह,
१९

र

रंगा, प्रो०, ३५३

रंगास्वामी, ३७९

रचनात्मक-कार्य, १३, ६७, ४८१; —और
अहिंसा, ६४, १४८; —और जिला
बोर्डके सदस्य, २४५-६; —और मिश-
नरी, १८९; —और विद्यार्थी, १४८;
—और सविनय अवज्ञा, २२१-२; —और
स्वराज्यके लिए लड़ाई, १३१, २३९;
—को अपनानेकी खुदाई खिदमतगारोंको
सलाह, २९-३३

रजब अली, २५३

रमण महर्षि, ४४, ५१३

रसेल, २६३ पा० टि०

राजकुमारी, देखिए, अमृत कौर

राजकोट, ३०२, ३६१-४, ३९०-४, ३९६-
७, ४२७, ४४३, ४५१, ४९७, ५१३;
—और जयपुर पर गांधीजीके वक्तव्यके
सम्बन्धमें सरकारी विज्ञप्तियाँ, ४०३;
—और जयपुरके संघर्षका अन्तर, ३८६;
—और मुसलमान, ४०३-५, ५१६;
—और मुसलमान तथा हिन्दू, ३५४,
३६४; —की गांधीजी द्वारा यात्रा,
४९९-५०२, ५११, ५१३; —के ठाकुर
साहब, १५०, २५९, ३५४, ४८३;
—के ठाकुर साहब द्वारा जनताके साथ
हुए समझौतेका भंग, ३६६, ३८१-३,
४४३-४; —के दीवान, ३२१; —में
अमानुषिक व्यवहारके प्रति कैदियोंकी
भूख हड़ताल, ४९३; —में उत्तरदायी
सरकारकी स्थापनाके बारेमें समझौता,
३०२; —में उत्तरदायी सरकारकी
स्थापनाके लिए संघर्ष, १४१, १५०-१,
२४१, ३६६, ३८१-३, ३८६; —में
गिरफ्तारियाँ जारी, ५१४; —में
सत्याग्रह, १७३, १७७, ३०८ पा०
टि०; —में सत्याग्रह आन्दोलनका
स्थगन, ४९९, ५०१; —में सत्याग्रह
और बाहरी मदद, १७३, १८१;
—में साम्प्रदायिक मनमुटाव, ३६३-४;

—में सुधार-समिति, १५०-१; —में
हिंसा और गुंडागर्दी, ७४-५, ४०५
राजगोपालाचारी, च०, १०१, १२४, २६०
पा० टि०, २६४, ३०७, ४४७, ४७१;

—और मद्य-निषेध, २४४

राजभूषण, ९, ९५

राजेन्द्र, ८३, १३७

राजेन्द्रप्रसाद, ३३८, ३५९, ४२३, ४३४

रणपुर, —में पोलिटिकल एजेंटकी हत्या,
३५४

राधाकृष्णन, एस०, २६०, २६४

रॉबर्टसन, ३९२

राम, भगवान, ४४३, ४६२

रामचन्द्रन, जी०, ३७, ७९, ११२, १४२,
१४९, १५७, २६२, ३०९, ३८९,
४४८, ४५७ पा० टि०, ४७९, ४८०;

—और त्रावणकोर आन्दोलन, ३१८

रामजीभाई, ३५२

रामदुर्ग, —के कांग्रेसियोंको राजासाहबका
साथ देनेकी सलाह, ५०६; —के राजा
साहब, ५०३; —में दुर्भिक्ष, ५०३;
—में प्रजाकी माँगें मंजूर, ५०५; —में
लाठीचार्ज, ५०३

रामदुर्ग संस्थान प्रजासंघ, ५०३, ५०५;
—द्वारा राजाको आतंकित करनेकी
निन्दा, ५०६

रामदेव, आचार्य, १३४

रामनाम, ४०१; —और चरखा, ३२६

रामराज्य, —का अर्थ सर्वतोमुखी स्वार्थ-
त्याग, ३०४

रामायण, ३३०, ४४३

रामानुज, ३३०

रामी, ५०२

राय, डॉ० विधानचन्द्र, ४६१, ४७४

राय, मोतीलाल, ५९, १७१, ४३७

रालोल, —में प्रजामण्डलके कार्यकर्ताओंके
खिलाफ आतंक, ४८२-३

राव, नरसिंह, ३४२

रावराणा, ३३६ पा० टि०, ३८६

राष्ट्रीय ईसाई परिषद (नेशनल क्रिश्चियन
कौंसिल), १८५

राष्ट्रीय झण्डा, —और खादी, १९४; —[डे]

और धार्मिक ध्वज-पताकाएँ, ५२-४;

—का उपयोग और दुरुपयोग, ५३-४;

—की कल्पना एकता, शुद्धता और
अहिंसाके प्रतीकके रूपमें, १४७

राष्ट्रीय सप्ताह, २४५

रुइकर, रा० स०, —का उपवास, १३४

रूस, —में औद्योगीकरण, २९२; —में लोक-
तान्त्रिक प्रणाली, ४३०-१

रेनॉल्ड्स, रेजिनॉल्ड, १९८

रोम, —का पतन, ३५६

रोमन लिपि, —बनाम देवनागरी लिपि,
४२०-१

रौलट ऐक्ट, —और अहमदाबादमें दंगे,
४५९

ल

लालकुर्ती आन्दोलन, ११४

लालचन्दभाई, ४८३

लिनलिथगो, लॉर्ड, १३५, २५३, ३६५,
३९४, ४५१, ४८८, ४९७

लीम्बड़ी, —के युवराज और उत्तरदायी
सरकारके लिए आन्दोलन, ४८१-५;
—प्रजामण्डलके सदस्योंका उत्पीड़न,
४३५, ४८१-४

लीलावती, २०६

लूथरन चर्च, ३०४

लेस्टर, म्यूरियल, २१७, २८१, २८७,
३१४; —द्वारा अब्दुल गफ्फार खाँको

श्रद्धांजलि, ३५७-८

लोथियन, लॉर्ड, २७७, ४२८ पा० टि०
४३०

ल्यू, टिमोथी टिंगफांग, २८८, २९५

व

वकील, १०७; —और असहयोग, १६५
 वर्धा, —में सादा जीवन और अहिंसाकी भावना, २३३
 वजीरी, ६३
 वणाट शास्त्र, २८२
 वत्सला, ९
 'वन्दे मातरम्', —और उस्मानिया विश्व-विद्यालय, ३४२
 वयस्क मताधिकार, ३२३
 वर्मा, भाणिकलाल, —पर अत्याचार, ४६०
 वर्मा, हरसरन, २०५, २३२
 वर्ल्ड डोमिनियन, —में गांधीजीकी मिशनरियोंके साथ हुई भेंटका काल्पनिक चित्रण, १८४ पा० टि०
 वाजपेयी, २५८
 वाडिया, सोफिया १६०
 वात्सल्याची प्रसाददीक्षा, १४५ पा० टि०, १६२
 वामनचन्द, ३२५
 वार्नर ली, ४८४
 वासर्हि-सन्धि, —और हिटलरका उत्थान, २२७
 विटरटन, अर्ल, १६८
 विद्यार्थी, —और असहयोग, १६५; —और चरखा, १४८; —और रचनात्मक कार्य, १४७; —और राजकोट सत्याग्रह, १७३; —और सविनय अवज्ञा, १४८; —[थियों] द्वारा अण्णामलै विश्व-विद्यालयमें हड़ताल, ५०९-१०; —द्वारा अण्णामलै विश्वविद्यालयमें हड़ताल और अहिंसा, ५०९-१०; —द्वारा त्रावणकोर-में हड़दंग, २०
 विद्यार्थी, गणेशशंकर, —की मृत्यु साम्प्रदायिक दंगेमें, ४८६
 विद्यार्थी, प्रभुदयाल, १८३, ३१५

विलियम्स, ७२

विलियम्स, रशत्रुक, ४९०, ४९१

वीरावाला, दरबार, १४१, ५१५

वू, वार्ड० टी०, २८८ पा० टि०, २९५

वेद, ८९

वैद्य, काशीनाथ राव, ३४१, ३४२

वैद्य, मथुराप्रसाद, —पर अत्याचार, ४६०

व्यासजी, ४२४

व्हाई द विलेज मूवमेण्ट, ४००

व्हाट वार मोन्स, ३२७

व्हिच वे टु पीस, २६३ पा० टि०

श

शंकर, आर०, ३०९ पा० टि०

शंकरलाल, ३४८

शंकराचार्य, ३३०

शंघाई, —पर जापानियों द्वारा बम-वर्षा, २८८

शमशेरसिंह, ८, ४१, १६१, १७१, १७६, २०५, २२०, २५५

शम्भुशंकर, २८६

शम्मी, देखिए शमशेरसिंह

शर्मा, बालकृष्ण, ३७

शर्मा, विचित्र नारायण, २४९

शर्मा, हीरालाल, ३६, २०४, २८७, ४०२, ४६३

शस्त्रीकरण, —की पागलभरी होड़, १०४, ४३१

शान्ता, २१७

शान्तिनिकेतन, —ही भारत है, ३३०

शामलाल, १६, १९८, २५२

शास्त्री, धर्मदेव, १०१

शास्त्री, वी० एस० श्रीनिवास, १७, २१, ४९२, ५०७-८, ५१०.

शाह, कंचन सु०, १३८

शाह, चिमनलाल एन०, ३८, ९६, २०२, २३५, २६२

शाह, मुन्नालाल जी०, ११, १११, १३८,
२०२

शाह, शकरीबहन, ५६, ९६

शाह, शारदाबहन चि०, १०, ५६, ९६,
१७९, १९६, २८०, ३५१, ४२०,
४३२ पा० टि०

शिन्दे, जनरल, ३७९, ४१९

शिवली, २७

शिक्षा, —और कांग्रेसकी नीति, ४१०-१;
—और स्त्री-सम्मान, २७३; —की वर्धा
योजना, २३३ पा० टि०, २५७,
३७६, ४१०; —नयी तालीम, और उसमें
प्रयोग, १८७; —प्रौढ़, ३७६; —में
आमूल परिवर्तन जरूरी, ४१२

शुकदेवजी, २७६

शुक्ल, चन्द्रशंकर, २००

शुक्ल, दलपतराम, —का निधन, १२

शु. पी० सी०, २८८, २९५, २९८

शैली, २२५

शैतान, —और ईश्वर, ३२८

शौकत अली, १७४, २२९, २३०; —और

हिन्दू-मुस्लिम एकता, २२९-३०

श्यामजी सुन्दरदास, ४२

श्रमिक, —भूमिहीन, और चरखा, ६६

श्रीमन्नारायण, ३२५

श्रीलंका, —में बौद्ध प्रभाव, २०८

श्लेसिन, सोनजा, १०६, १२०, ५०२

स

संघ-व्यवस्था, —और मुस्लिम लीग, ४९०-
२; —और साम्प्रदायिक एकता, ४९१

संस्कृत, २६, २७

संस्कृति, —चीनी, २८९, २९३; —हिन्दू

और इस्लामी, ३५८-९,

सत्य, —और अहिंसा, ५०-१

सत्यवती, २३२

सत्याग्रह, ५, १८१, २७७, ४७३; —अन्तिम
अस्त्रके रूपमें, ४८९; —और देशी
राज्य, ३३२-४; —और यहूदी, १५३-
६; —और सविनय अवज्ञा, ४६, ४८,
४९, ४५०; —कमजोरोके लिए,
४२८; —का मर्म, १८१; —के लिए
कष्टसहनकी क्षमता जरूरी, ४८०,
४८३; —जीवनका एक तरीका,
४५०; —दक्षिण आफ्रिकामें, १८६,
२२६; —ब्रिटिश भारतमें, ४६१;
—राजकोटमें, १७३; देखिए 'सविनय
अवज्ञा' भी

सत्याग्रही, १३, ४६; —और त्याग, १६६;
—और कष्ट-सहनकी अपरिमित क्षमता,
४९३; —और साधन तथा साध्य,
२१८

सप्रू, तेजबहादुर, २६

समाजवादी, —और उत्पादनके साधनोंका
सामूहिक स्वामित्व, १२५-६; —और
कांग्रेस, २१४-५; —और रचनात्मक
कार्यक्रम, ७५; —और हिंसा, १२६-
७; —और हिन्दू-मुस्लिम एकता,
२६६

समानता, —कानूनकी नजरमें, १००

सम्पूर्णानन्द, २९४, ४०३

सरकार, नलिनी रंजन, २४०

सरधार, —में बन्दिओंके साथ अमानुषिक
बर्ताव, ४९८-९

सरस्वती, १९, ४२, १४२, २३२, २६२,
३८९, ३९०

सरूपबहन, देखिए पंडित, विजयलक्ष्मी

सर्वोच्च सत्ता, —और देशी राज्य, ३९०-३,
४४४; —का देशी राज्योंकी प्रजाके
प्रति कर्तव्य, ३६६; —का राजकोटकी
जनताके प्रति कर्तव्य, ३८२-३,
४०५; देखिए 'देशी राजा' भी

सवजी, ७४

सविनय अवज्ञा, १३१; —और अहिंसा, ४६, ४९; —और रचनात्मक कार्यक्रम, २२२; —और विद्यार्थी, १४८; —और सत्याग्रहके बीच अन्तर, ४८, ४९, ४५०; —का स्थगन, २३८; —के दौरान ज्वत् की गई जमीनें और उन्हें लौटानेवाला विधेयक, ३९-४०
 सहकारी आन्दोलन, ३२६-७
 सांगली, —में दकनकी रियासतोंकी जनताका सम्मेलन, ५०३-४
 साम्प्रदायिक एकता, —और संघ-व्यवस्था, ४९१; —स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिए जरूरी, १९४
 साम्प्रदायिक निर्णय, —के प्रति रोमन कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटोंका रुख, १८४
 साम्यवादी, —और उत्पादनके साधनोंका सामूहिक स्वामित्व, १२५-६; —और कांग्रेस, १२३-६; —और हिंसा, १२६-७; —और हिन्दू-मुस्लिम एकता, २६६
 साराभाई, मृदुला, २५५, २५६, २६३, ३३५, ३६०, ३७१, ३७८, ४६२, ४७३, ४७७, ५१८
 साहित्य, —में अश्लीलता, ७९
 सिख, —और कृपाण, २
 सिंह, रायकुमार, २३
 सिबैस्टियन, १८२
 सियानी, —में प्रजामण्डलके कार्यकर्ताओंकी पिटाई, ४८२-३
 सीकर, —के कैदियोंकी रिहाई, ३१०, ३११; —के रावराणा, ३८६; —में संकट, ३११
 सीता, —पवित्रताका आदर्श, ३३०
 सीतारमय्या, पट्टाभि, २५१, २५४, ३९६, ४९०, ४९१
 सीमाप्रान्त अपराध विनियमन अधिनियम, ६२

सुन्दर प्रसाद, ४८७
 सुरेशसिंह, ४६९
 सुलताना, ४६९
 सूरदास, २७
 सेंट-जॉन, सर डब्ल्यू० बीकम, ३३१, ३३६, ३६२, ३७०, ३८६, ४५१; —और जयपुरमें सविनय अवज्ञा, ३९८, ४४४; —की चुडगरसे भेंट, ३४९, ३८७-९; —को पदसे हटानेकी माँग, ३८९; —द्वारा जमनालाल बजाज और जयपुर राज्य प्रजामण्डल का विरोध, ३६६, ३७२
 सेगाँव, —में बीमारियाँ, ९४
 सेलम, —में मद्य-निषेध, १५१, २४३-४
 सेसिल रॉथ, १५७
 सोप्टेकर, ९
 सोमाभाई, ६
 सोलन, —और क्रीसस, ११६
 स्काउट, —और कवायद, २५७-९
 स्टीवेन्सन, ३०६
 स्टेट्समैन, ३०४, ३०७, ३६८, ४५६
 स्पीगल, मार्गरेट, २०२, २३१
 स्मट्स, जनरल, ३३
 स्मिथ, डॉ०, २२२
 स्मिथ, सेलिस्टीन, २३३
 स्वदेशी, —और खादी, ९७; —की परिभाषा, ४७७-८
 स्वराज्य, —और कताई, २८३; —और कांग्रेस में भ्रष्टाचार की समाप्ति, १०६; —और खादी, ९७, १३८-९, १४८-९, २७५; —और ग्रामोद्योग, २८३; —और रचनात्मक कार्यक्रम, १३१, २६९; —और सविनय अवज्ञा, २६८-९; —और साम्प्रदायिक मनमुटाव, ३६३; —और हिंसा, ३१५, ३३४; —की परिभाषा, ४७७-८

ह

हकसर, कैलाश नारायण, —के विचार
प्रजामण्डलोंके बारेमें, ३९२

हरध्यानसिंह, ८७

हरिजन, १, २१, ५४, ७८, ८०, ८९, १०१,
१०२, १०७, १३५, १४१, १५९, १६३,
१७१, २०१, २०३, २१४, २४३,
२६४, २७२, २७७, ३३४, ३३५, ३६१,
३७८, ३८४, ३९४, ३९६, ४१६,
४२२, ४२८, ४५४, ४५५, ५०७

हरिजन, ३२, ९८, ९९, ४३३; —उ० प०
सीमाप्रान्तमें, ९६; —[१] का उद्धार,
८२

हरिजन आश्रम, ३५३

हरिजनबन्धु, २००, २६७

हरिजन-सेवक, २०३

हरिजन सेवक संघ, ४२७

हसन अब्दाल, ११०

हाँज, रेवरेंड, ३३०

हॉडसन, एच० वी०, २६५

हॉफमेयर, १८७

हॉवहाउस, एमिली, —द्वारा युद्धके दौरान
बोअर लोगों की मदद, २९७

हार्डीकर, डॉ०, २६४

हार्वे, मेजर, —के विचार प्रजामण्डलोंके
बारेमें, ३९२

हॉलैंड, —में लाठी-चार्ज, ४०५

हाशा, एमिल, ७७ पा० टि०

हिगोरानी, आनन्द तो०, ६०, १६५

हिगोरानी, विद्या आ०, ६०, १६५

हिंसा, —और कांग्रेसी, १२४; —और समाज-
वादी, १२६-७; —और साम्यवादी,
१२६-७

हिगिनबॉटम, श्रीमती, ४६५

हिटलर, एडॉल्फ, १५, ३४, १३२, १८८,
११२, २२६, २२७, ३८७; —द्वारा

यहूदियोंपर अत्याचार, १५४-५, ३०५-
६, ४२२

हिन्द स्वराज्य, ६६, १०७

हिन्दी/हिन्दुस्तानी, —और उर्दू, २५-७;
—कांग्रेस के कामकाजकी भाषा, २५;
—के विरुद्ध आन्दोलन, २६४; —मद्रास-
के विद्यालयों में, २६० पा० टि०,
२६४; —राष्ट्रभाषाके रूप में, २४३;
—सीखनेकी खुदाई खिदमतगारोंको
सलाह, ४

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, —द्वारा उर्दू और
देवनागरी लिपि में लिखी जानेवाली
हिन्दीकी परिभाषा तथा हिन्दुस्तानीकी
कांग्रेसवाली परिभाषा एक समान, २७

हिन्दुस्तान टाइम्स, ३६८, ३९६, ३९८,
४५३, ४५४

हिन्दू, ५१५, ५१८

हिन्दू, २६, २७, ३५, ८९, ९०, ९३,
३५५, ३९८; —और संस्कृतका
अध्ययन, ४२५

हिन्दू-धर्म, २७; —और अस्पृश्यता, १५३;
—और ईसाई-धर्म, ४६७

हिन्दू महासभा, २६८, ३४२; —और
हैदराबादमें सविनय अवज्ञा, ४५०-१

हिन्दू-मुस्लिम एकता, २२९-३०; —और
खुदाई खिदमतगार, ८२, ८९-९०;
—और महिलाएँ, २५४; —और शौकत-
अली, २२९; —और समाजवादी,
२६६; —और साम्यवादी, २६६;
—स्वराज्यकी अनिवार्य शर्त, ६५-६

हिन्दू-मुस्लिम समस्या, ३२, ३४२, ३५४;
—और कांग्रेस, २६६; —पर जाकिर
हुसेनकी यादी, २९४

हिन्दू सिविल लिबर्टीज यूनियन, हैदराबाद,
२६८

हिसार, —में अकाल, १३५

हुसेन, जाकिर, १७४, ३०८, ४०३; —द्वारा

हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर यादी, २९४

हूटन, सर्जन-जनरल, ४६६

हेगची ताओ, डॉ०, १३५; —और जन-

शिक्षा आन्दोलन, ८२

हैबर, बिशप, २७९

हैदराबाद, —में सत्याग्रह, २६८; —में

सत्याग्रह और बाहरके स्वयंसेवक,

२६८-९; —में सत्याग्रह और रचना-

त्मक कार्य, २६९; —में सत्याग्रहका

स्थगन, २६८, २६९, २७४, ३४१-२,

४५०, ४८९; —में हिन्दू-मुस्लिम

समस्या, ३४२

हैदराबाद राज्य कांग्रेस, ४८७, ४९७;

—और सत्याग्रहका स्थगन, ४५०-१;

—की गतिविधियाँ, २६८

हैदरी, अकबर, २७४, ३२२, ३४१, ४८७,

४९७

हैरिसन, अगाथा, ४७, ९२, १०५, १३६,

१३७, २४८, २७६; —की वाइसरायसे

भेंट, १७८

होम्स, जॉन हेन्स, २७७

**PRESIDENT'S
SECRETARIAT**

LIBRARY